ॐ

अभिनवनिघंटु.

द्रव्याभिधान

जिसको अनेक प्राचीन और नवीन निघंट और कोशोंसे

संकलनकर

श्रीपाठकज्ञातीय माथुर कन्हैयालालतनुज

पं. दत्तराम चौबेने

निर्माण करा.

ABHINAVANIGHANTU

OR

HINDU SYSTEM OF MEDICINE.

COMPILED AND TRANSLATED

FROM

SANSKRIT BOOKS ON MEDICINE, CHEMISTRY &c.,

WITH THE ORIGINAL TEXTS

BY

PANDIT DATTARAM CHAUBE.

मुम्बय्यां

तत्त्वविवेचकनाम्नि मुद्रणागारे मुद्रितम्.

मूल्य २॥ रुपा.

संवत् १९५६.

प्रस्तावना.

प्रियवाचकवृंद !

आजकल अधिकतर वैद्यकका प्रचार हो रहाहै, परंतु जिसके विना कदापि चिकित्सक (वैद्य) नहीं होसके, ऐसे निघंटुकी अवतक आवश्यकता बनीहुई है । यद्यपि इस आवश्यकताके दूर करनेको जो एक दो छोटे बडे निघंटु छपेभीहैं, परंतु वो अतितृषामें ओसकी बूंदके समानही हैं । इस आवश्यकताके पूर्ण करनेको मैंने इस अभिनवनिघंटु [कि जिसके गुणोंको इसका नामही प्रकाश कर रहाहै] छापनेका उद्योग कराहै । विना द्रव्योंके गुणदोष जाने रोगीके चिकित्साक्रमकी प्रवृत्ति नहीं होसकी इसीसे लिखाहै ।

वैद्येन पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्याणामगुणागुणाः ।
तदायत्तं हि भैषज्यं तज्ज्ञाने स्यात्क्रियाक्रमः ॥

अर्थात् वैद्यको प्रथम द्रव्योंका गुणागुण जानना चाहिये, कारण कि, उन औषधोंके आधीन औषधी आदिका बनानाहै । और उस ज्ञानके आधीन क्रियाक्रम कहाहै । तथा इसी निघंटमें प्रथम लिखाहै ।

निघंटुना विना वैद्यः विद्वान् व्याकरणं विना ।
अनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयो हास्यस्य भाजनम् ॥

अर्थात् निघंटुके विना वैद्य, व्याकरणके विना विद्वान्, और विना अभ्यासके तीर [निसानेका] मारनेवाला ए तीनो अपनी हांसीके करानेवाले है ।

अब संक्षेपसें इसके विषयोंकोभी सुनिये । प्रथम निघंटकी आवश्यकता, फिर औषधीके ज्ञानकी आवश्यकता, उनके योग, मूर्खवैद्यकी औषधका त्याग, औषधके लक्षण, औषधका उत्तम, मध्यम, अधमत्व, जाननेको तीनप्रकारके देश, चारप्रकारके क्षेत्र, और उनसें उत्पन्न औषध, फिर पार्थवादि पांचप्रकारके क्षेत्र कहकर उनसे प्रकट औषधोंके गुण तथा उन क्षेत्रोंके देवता, फिर वृक्षोंको उत्पत्ति, और ब्राह्मणादि भेद, उनके देनेका क्रम, फिर त्रिविध द्रव्य (औषध) जंगमादिभेद, अंकुरजन्य द्रव्यको त्रिविधत्व, लता आदि पांचभेद, वृक्षोंकी स्त्रीपुरुषादि संज्ञा, फिर वृक्षोंकी भूंक, प्यासका ज्ञान, तथा वृक्षादिमें पंचमहाभूतात्मकत्व कहकर अश्विन्यादि २७ नक्षत्रोंके वृक्ष, और जन्मनक्षत्रके वृक्षका औषधमें त्यागना, फिर औषधके लानेका मुहूर्त, और उखाडनेकी विधि, तथा त्यागने योग्य औषध, फिर उनके रखनेकी युक्ति, औषधोंके ग्रहण योग्य अंग, उक्तानुक्त नवीन और पुरानी औषधोंको कार्यपरत्व लेना, द्रव्योंकी परीक्षा, स्वभावसे हित और अहितकारी द्रव्य, संयोगविरुद्ध, औषध लेनेके संकेत, औषधोंकी प्रतिनिधि, प्रत्येक औषधके रस गुण वीर्य विपाकादि पंचपदार्थोंका वर्णन, प्रसंगवश दीपन पाचनादि गुण कहके फिर हरडआदि औषधोंको संस्कृत मूलके साथ संस्कृतनाम फिर यथाप्राप्त हिन्दी, राजपूतानी, बंगाली, उडिया, मरेठी, देशाई, कोंकणी, कान्हडी, गुजराती, पंजाबी, अरबी, फारसी, लाटिन, और इंग्रेजी नाम लिखकर फिर उस औषधका स्वरूप, उसके उत्पन्न होनेका स्थान, फिर उसके गुण, वीर्य, विपाकादि लिखकर प्रयोग, उसकी प्रतिनिधि, कई औषधोंमें यह लिखाहै कि यह औषध देहके अमुक अंगको अहित करतीहै, फिर उसके दर्पनाशक औषध, तथा अनेक मुख्य २ औषधोंके परमोत्तम फोटूके समान चित्रभी दीनेहै और उनके प्रत्येक अंग जाननेको १-२-३- इत्यादि अंक डालदीनेहै, कहीं २ औषधके नाममें अक्षरका फरक है, जैसें अजवायन, अजमायन तहां अजवा [मा] यन, ऐसा लिख दीनाहै । इसलेखसें पढनेवालेको समझना चाहियेकि अजमायनको अजवायनभी बोलतेहै । किसी २ शब्दके समझानेको इस शब्दको

( ) कोष्ठके चिन्हमें लिखाहै जैसे अभ्यास (महावरा) अर्थात् अभ्यास नाम महावरेका है । कहीं २ [ ] ऐसा ब्रासिटका चिन्ह दीनाहै । यह चिन्ह मूलसें जो विशेष अर्थ लिखा गया है उसके वास्ते और जहां हमने कोई अपनी तरफसें विशेषवार्त्ता लिखीहै उसपर दीनाहै । कहीं बहुतसे श्लोकोंका अर्थ " " हाफकुषी चिन्ह देकर लिखाहै, इसके बीचका जो अर्थ है वो प्रसंगवश प्रक्षिप्त श्लोक आगए हैं उनका है, मूलका नहीं है । बहुतसे स्थलोंमें ग्रंथ बढनेके भयसें विना मूलके केवल अर्थमात्रही लिखाहै परंतु उनमेंभी जो स्थलविशेष जानने योग्यहै उसको उसी पंक्तिमें जबरा अर्थात् मोटे अक्षरोंमें दिखायाहै। जैसें—+पार्थिवक्षेत्रकेलक्षण+ए मै अक्षर मोठे अक्षरमें, इसीप्रकार निघंटुकेबिना वैद्य तौ इसमें वैद्य ए दो अक्षर मोटे दिखाए गएहै । कहीं २ प्रसंगवश मूलसें विपरीत अर्थ लिखाहै, जैसें 'केन द्रव्येण संयुक्ता' इसमें द्रव्य शब्द पदार्थवाचकहै । परंतु हमने प्रसंगवश उसका अनुपान अर्थ कराहै, इसीप्रकार अनेकार्थमें ग्रंथकारके कमको पलटकर अकाराक्षरके क्रमसे लिखाहै कि जिसमें खोजनेके समय परिश्रम न होय । और कहीं २ सबकी समझमें जल्दी आयजावे इसवास्ते उरदूके शब्दभी इसमें ग्रहण करेहै । तथा प्रसंगकी शृंखला मिलानेको मूलकी व्याख्यामें विपरीतार्थभी करदीना है । अर्थात् जो प्रथम लिखने योग्य उसको पीछे और पीछे लिखने योग्यको प्रथम लिखाहै ।

फिर जो औषध अपने ग्रंथोमें (उपलब्ध) नहीं होती अर्थात् नहीं मिलती उनको अति परिश्रमके साथ प्राचीन ग्रंथोंसें संग्रहकर और उसकी नवीन टीका बनाकर लिखीहै, अथवा अन्यान्य भाषाओंसे संग्रह करके लिखी गईहै । फिर इसग्रंथकी साधारण अनुक्रमणिका लिखकर वनस्पति आदि हिन्दी शब्दोंकी अनुक्रमणिका फिर दूसरे अकाराक्षरक्रमसें लिखी है और हिंदी शब्दके आगे संस्कृतके नाम लिखदिने हैं कि जिसको हिन्दी नामसें औषधका निश्चय न होवे वो उसके आगे लिखे पत्रांकमें उसी संस्कृत औषधको देखकै उसी औषधकी अन्यान्य भाषाओंको देखकर औषधका निश्चय करसक्तेहैं । जैसें किसीको गिलोय हिंदी नामसें इसका बंगाली अथवा मराठी नाम देखनाहै तो प्रथम गिलोयके आगे गुडूची शब्द लिखाहै, उसको गुडूच्यादिवर्गमें गुडूचीके अर्थ बंगाली भाषामें गुलंच और मरेठी भाषामें गुलवेल लिखाहै, तो जो बंगाली अथवा मराठी जानतेहैं उनको उसी समय निश्चय-होजावेगा कि गिलोय नाम गुलंच अथवा गुलवेलका हिन्दीमें कहाहैं । बहुत कहांतक लिखे इत्यादि अनेक कारणोंसें यह **अभिनवनिघंटु** आजकलके छपे निघंटुओंसें कहीं बढ बढकर है ।

विद्वज्जनोंसें प्रार्थनाहै कि देखिये प्रत्येक कोश या निघंटु आदिका बनाना यह एकका कार्य नहींहै, इसमें अनेक विद्वज्जनोंकी सहायता अपेक्षित होतीहै, परंतु यह मेरी ढीटता समझिये-या-साहस कि इस दुस्तर कार्यको मैंने विना किसीकी सहायताके रचना प्रारंभ करके छापडाला, तौ अब भ्रातृगण ! विचारनेका स्थलहै ? कि तत्काल कापीके उतरकरको और अन्य ९ भाषाओंका संग्रह करना फिर विचारना और कापी लिखना फिर दो तीन दफे प्रूफ तपासना. इसमें कितना मानसिक परिश्रम होताहै । सत्यतो यह हैकि जिस महाशयने इस पुस्तक छापने छपवानेका कार्य करा होगा वो इस परिश्रमको जानता होयगा । (न हि वंध्या विजानाति गुर्वीप्रसववेदनाम्) । अतएव व्यग्रचित्त होनेसें जहां कहीं न्यूनाधिक वा विपरीत लेख लिखनेमें आय गया हो उसको कृपादृष्टिद्वारा संशोधन करकें पत्रद्वारा सूचित करदेवे तो मैं धन्यवादके साथ ग्रहणकर उस भूलको तृतीयावृत्तिमें ठीक करदूंगा । परंतु साथही यह कहेविनाभी नहीं रहा जाता कि बहुतसे खल और दुष्ट जो दूसरेके उत्कर्षको सहन नहीं करसक्ते वो भोज्यपदार्थमें नीमकी सींकके अन्वेषणका उदाहरण देकर इसकी निन्दा करनेको कटिबद्ध बैठेही होंगे, उन ग्रामसिंहोंसे हम थोडेही डरनेवालेहै । फिरभी सज्जन दुर्जनोंके प्रति सविनय प्रार्थनाहै कि इस ग्रंथको देखतेही निष्पक्षपात होकै प्रमाणयुक्त इसके भली बुरी होनेकी समालोचना करके हमको अवश्य भेजे, तो आपकी कृतज्ञताका अति अनुग्रहपूर्वक धन्यवादके साथ स्वीकार करा जायगा और पलटेमें धन्यवादका पत्र आपकी सेवामेंभी भेजनेमें आवेगा ।

दूसरी वार छापनेकी प्रस्तावना.

सबको विदित होय कि पहले दोहजार पुस्तक छपी उनकी ग्राहकगणोंने ऐसी चाहना प्रगट करी कि हाथोंहाथ सर्व पुस्तक निकलगई। फिरभी ग्राहक गणोंकी मांगके पत्र चले आते है। यद्यपि कलुषित चित्तवाले स्वार्थी ग्राहरूप कि जिनके हलक ही नहीं। उन दिवाकीर्तियोंने अपनी भर मगदूर इसके विक्रय होनेमें अनेक बाधा डाली, परंतु धन्य परमात्माको है कि जिसकी कृपाकटाक्षसे उनके मनोरथ ध्वस्तहुए और हमको दूसरे छापनेका सुअवसर मिला।

इसकें पहले पाठमें अवके जहांतहां मूल और टीका कतिपय अधिक पाठ बढाया गया और जिस २ देशभाषाके नाम प्रथम संस्करणमें नहीं आए वह अवके इसमें बढाए गएहै और अपूर्ववात यह दिखाई है कि अनेक औषधोंके ऊपर डाक्टर, हकीम और वैद्योंकी संमति उसी २ औषधके नीचे टिप्पनीमें डालदीगईहै. तथा औषधोंके चित्रभी पहलेकी अपेक्षा अवके दूने होगएहै। और अंतमें परिशिष्टभाग बढाया गयाहै इसमें बहुतसी औषध जो प्रथमसंस्करणमें रहगई उनका समावेश किया गया है।

इसप्रकार पहलेसे सवाया ड़ोढा आकार होगया और द्रव्यभी अधिक लगा है, परंतु लोभकी दृष्टि त्याग सबकी सुलभताके वास्ते कीमत वही २॥ अढाई रुपा रखाहै। यद्यपि इसके मुद्रण होनेमें बहुत बिलंब होगयाहै. परंतु क्याकराजाय मुंबईकी महामारीही इसके विलंब होनेका प्रधानकारणहै.

जिनके पास पहली छपी पुस्तक है यदि वह इसका परिशिष्ट भाग लेनेकी इच्छा करे तो चारआने भेजनेसे परिशिष्टभाग पा सकेंगे।

अव नीच अनीच दोनोंसे ही प्रार्थना करनेमें आतीहै कि इस ग्रंथकी यद्यपि रजस्टरी करायदीनीहै, तथापि "**काकः सर्वरसान्भुक्त्वा विनामेध्यंनतृप्यति**" इस वाक्यके चरितार्थ कर्ता मलमूत्र भक्षी पामरजन स्वभावके वशवर्ती हो व्यर्थ अपनेकु चरित्रोंका आदर्श न दिखावे। अन्यथा सन् १८६७ एकट २५ के अनुसार उनको तनमनधनसे पूर्ण कष्ट भोगना पड़ेगा। आगे आपकी मरजी.

आवश्यकीय प्रार्थना। ग्राहकगण, आपको विदित होकि आजकल बहुतसे दुकानदार जिनसे आप पुस्तक मंगाते है, प्राय हमारी पुस्तकके भेजनेमें आनाकानी करते है, और बहुतसे तो यही लिख देते है कि अब पुस्तकही नहीं मिलती, अथवा छप रही है; अथवा कुछकी कुछ भेज देतेहै उनको उचित है कि इन धोकेवाजोसें बचनेकेवास्ते **पंडित दत्तराम चौबे** मानिकचौक मथुरावालेकी छापी पुस्तक भेजना इतना लिख देनेपर इन ग्रामसिंहोंका धोका, चोखेसे ओखा होजायगा। ठीक तो यह है कि आपलोग हमारी पुस्तक हमहीसे खरीदे तो फिर किसीवातका धोका न होगा।

आपका प्रियसुहृद्,

पंडित दत्तराम चौबे

मानिक चौक, मथुराजी.

---

१ जैसे **रसराजसुंदर** मंगानेपर रसराजमहोदधी, या रसरत्नाकर। तथा **भावप्रकाश** हमारा मंगानेपर लखनौका छपा भेजतेहै। **नपुंसकसंजीवन** मागनेपर नपुंसकसंजीवनी और अर्थदीपकके पलटे अर्थप्रकाश भेजतेहै।

अभिनवनिघंटुका दूसराभाग बराबर छप रहाहै।

सूचीपत्र

पंडित दत्तराम चतुर्वेदीकी खास पुस्तकोंका.

	किमत.	डा. मासूल.
१* **अजीर्णमंजरी**–भाषाटीकासह। इसमें सर्व प्रकारके अजीर्ण नाश करनेकी विधि और अंतमें कुछ अजीर्णनाशक चूर्णादिकभी कहे है। मथुराके शिला प्रेसकी छपी.	१॥ आ.	·।· आना.
२ **अभिनवनिघंटु**-भाषाटीकासह। यह निघंट हालके समयमें सब निघंटोंसें उत्तम है। इसमें एकएक औषधके नाम संस्कृत, हिंदी, राजपूतानी, बंगाली, उडिया, मरेठी, तामिल, कोंकणी, कान्हडी, देशी, गुजराती, पंजाबी, नेपाली, अरबी, फारसी, इंग्रजी और लाटिन आदिमें यथा प्राप्त दीने गए है। अनेक औषधोंके चित्रभी दिते है। फिर अनेक औषधोंपर हकीम और डाक्टरोंकी संमती लीखी है; तथा अनेक औषध जो अन्यनिघंटुओंमें नहीं मिलती जैसे सालसा, सालमभिश्री, सनाय, कालादाना, चाह, तमाखू आदि, वह सब इसमें मौजूद है	२॥ रु.	३ आने.
३ **अमृतकीबूँद**–गानेकी अनेक रागरागिनी आदिका अनूठासंग्रह है	·॥· आ.	·।· आना.
४ **अर्घदीपक**–मूल संस्कृत भाषाटीकासह। तेजीमंदीके चुटकले इसमें लिखे है। ज्योतिषी पंडितोंको लेने योग्य है...	२ आ.	·।· आना.
५ **आतिशबाजी**–हिन्दीभाषामें कि जिस्मे लडकोंके खेलखिलौने सुर्री, पटाके, महताब, चांतारे, फुलझरीआदि अनेक वस्तु बनानेकी तरकीब लिखी है ...	१ आ.	·।· आना.
६* **कालज्ञान**–भाषाटीकासह	२ आ.	·।· आना.
७* **कुटुंबचिकित्सा**–हिन्दीभाषाका इसको अनेक यूनानी किताबोंसे हिन्दीमे तर्जुमा करके बनाई है। इसके ३ खंड है। इसमेंभी यूनानी रीतिसे औषधोंका बनाना और प्रत्येक बिमारीका मालजा उत्तमताके साथ वर्णन करा है। मुंबईका छपा... ...	१ रुपाया.	२ आना.
८* **ज्ञानभैषज्यमंजरी**–भाषाटीकासह। आधे श्लोकमें वेदांत फिर आधे श्लोकमें औषधोंद्वारा प्रत्येक रोगकी चिकित्सा वर्णन करी है	३ आ.	·।· आना.
९ **चरकसंहिता**–मूलसंस्कृत और हिन्दी भाषाटीका। यद्यपि यह ग्रंथ मुंबई और मथुरामें छप चुका है परतु हमने इसका मूल और टीका बहुत दुरुस्त कराहि। छः खंड छप चुके है नीचे लिखी कीमतसे भेजे जाते हैं—		
चरकनिदानस्थानसटीक	४ आ.	·।· आना.
चरकविमानस्थानसटीक	६ आ.	·।· आना.
चरकशारीरस्थानसटीक	६ आ.	·।· आना.
चरकइन्द्रियस्थानसटीक	४ आ.	·।· आना.
चरककल्पस्थानसटीक	६ आ.	·।· आना.
चरकसिद्धिस्थानसटीक	६ आ.	·।· आना.
१०* **चर्याचन्द्रोदय**–सटीक	१॥। रु.	४ आने.

११ **चिकित्साचन्द्रोदय**-हिन्दीभाषा—यह ग्रंथ हालमें करावादीन जुकाईका हिन्दी अक्षरोंमें तर्जुमा करके छापा है। इसमें शरवत, अर्क, सफूफ, तिला, मरहम आदि ऐसी कौनसी वस्तु है जो इसमें नहीं लिखी और ऐसी बिमारी ही कौनसी है कि जिसका मालजा इस ग्रंथमें नकहा हो । यह ७०० सौ सफे और अंदाजन ढाई तीन हजार चित्रविचित्र नुसखोंसे लवालवभराहुआ दवाइयोंका खजाना है, वस इसीसे इसकी जखामतको आपजानगए होंगे ... ... २। रु. ४ आने.

१२ **चिकित्साचक्रवर्त्ती**-अकबर पातशाहनिर्मित मुजरबात अकबरीका तर्जुमा है। यह ग्रंथ प्रथम २ हजार छपा सो, हाथोहाथ विकगया। अब दूसरे फिर उत्तम सुधारेके साथ छपा हैं इसमें भी फकीरी लटके सैकडों भरे हैं ... ... १ रुपया २ आने.

१३ **चिकित्साचिमन**-तिव्वेसहावीका हिन्दी भाषांतर है... ... ... ३ आ. ॰॥॰ आना.

१४ **चिकित्सारत्न**-दफतरे हिकमतका हिन्दी तर्जुमा ... ... २ आ. ॰॥॰ आना.

१५ **तर्पण**-नित्योपयोगी देवऋषिपितृश्वरोंका तर्पण है ... ... ॰॥॰ आ. ॰॥॰ आना.

१६ **ध्रुवलीला**-कि जिसमे अनेक अनूठे रागरागिनीयोंमें पांच वर्षके ध्रुवलालवालका अद्भुत चरित्रवर्णन कराहै ... ... १ आ. ॰॥॰ आना.

१७ **नपुंसकसंजीवन**-प्रथम भाग मूल संस्कृत भाषाटीकासह, इसका परिचय इसका नामही देरहाहै ... ... ६ आ. ॰॥॰ आना.

१८ **नपुंसकसंजीवनका**-दूसरा भाग हकीमी मतसे ... ... ६ आ. ॰॥॰ आना.

१९* **नाडीदर्पण**-सटीक ... ... ६ आ. १ आना.

२०* **नाडीप्रकाश**-भाषाटीका मथुराका छपा ... ... १॥ आ. ॰॥॰ आना.

२१ **नरसीकाभात**-गानेही योग्य; हिन्दी भाषामें, इसमें अपने भक्तकी टेक रखनेको प्रभूनें साहूकारका रूप धारण करके भातकी अद्भुत वस्तुसमधीको देकर सबको आश्चर्ययुक्त करदीना हे ... ... १ आ. ॰॥॰ आना.

२२ **पंचपक्षी**-भाषाटीकासह । यह ज्योतिषमें प्रश्न कहनेका अपूर्व ग्रंथ है ... २ आ. ॰॥॰ आना.

२३ **पथ्यापथ्य**-भाषाटीकासह। रोगमात्रकी पथ्य और कुपथ्य तथा छः ऋतुओंके पथ्यापथ्यको बताताहै ... ... १० आ. २ आना.

२४* **परीक्षाचिमन**-हिन्दीभाषा-जिसमें नाडी आदिकी अष्टविधपरीक्षा कहीहै। २ आ. ॰॥॰ आना.

२५ **पहाडेकी बडी पुस्तक**-जिसमें ओलम, बारखडी, सिद्धो, नामे, मिले अक्षर और सब पहाडे तथा हुंडीरसीद लिखनेकी रीतिभी है ... ... ८। आ. ॰॥॰ आना.

२६ **पावससुंदरी**-भाषा वर्षातमें गानेकी कजली मलार ठुमरी आदिकासंग्रह है १ आ. ॰॥॰ आना.

२७ **पाकरत्नाकर**-भाषा जिसमें कंद मिश्री बरफी पेडा लड्डू बालूसाही आदि अनेक प्रकारके पकवान बनानेकी विधि लिखी है; छापाशिला ... ... ६ आ. १ आना.

२८ **प्राणाचार्य**-हिन्दी भाषामें अपूर्व वैद्यकका भंडार है । अनेक भिषग्ध्रुव (मूर्खवैद्यों) को चातुरी वितरणकर सर्व गुणागणालंकृत (चुस्तऔर चालाक) बनानेवाला है । प्रथम दर्शनकीन्यौछावर... ... ... ४ आ. ॰॥॰ आना.

२९ **भावपंचासिका**-कविताके करनेवाले और सीखनेवालोंको अवश्य लेने योग्य. २ आ. ॰॥॰ आना.

३० **भावप्रकाश**-हिन्दीभाषाटीकासह। इसमें पांच हजार श्लोकात्मक पाठ अधिक है, सर्वत्र छपे हुए भावप्रकाशोंसे कहीं चढवढ कर कहै । यह वैद्यमात्रको अवश्य लेने योग्य है । मुंबईका छापा और सुनहरी जिल्द बंधे हुए की कीमत ... ... ८ रु. १० आना.

३१ **मथुरादर्पण**–भाषाटीकासंयुक्त मथुरा और माथुरोंके प्रभावको बतानेवाला. — १ आ. ·॥· आना.

३२ **मथुरामहात्म्य**–मूलसंस्कृत खुलीसंची मुंबईका छापा ... ... — ८ आ. १ आना.

३३ **यूनानके हकीम**–हकीमी सिखलानेमें पूरे उस्ताद देखो किस प्रकारकी चिकित्सा लिखते हे। एकदफे आप नजरतो करिये ... ... — २ आ. ·॥· आना.

३४* **योगचिंतामणि**–भाषाटीकासह छापा लेथो... ... ...:. — १० आ. २ आना.

३५ **रमलनवरत्न**–भाषाटीकासह, रमलशास्त्र पढनेकी पहली पुस्तक है और इसमें बडीभारी सारणी इसके साथलगी हुई है कि प्रश्न कहनेमें विलंब न होने पावे ... — १० आ. १॥ आना.

३६ **रसकौत्वक**–अर्थात् अमृतकी दूसरी बूंद। गानेकी अद्भुत पुस्तक है ... — १ आ. ·॥· आना.

३७ **रसराजसुंदर**–भाषाटीकासंयुक्त, अनेक अद्भुत रस (वसंततिलक, वसतकुसुमाकर) और रसायन (चंद्रोदय, मृगांक, रूपरस, तामेश्वर, वगआदि) बनानेका सबसे बडा भारी ग्रंथ है। आजपर्यंत इतना बडा ग्रंथ कहीं न छपा और न अब छपेगा ... ... — ३। रु ४। आना.

३८ **राधाकृष्णगणोद्देशदीपिका**–संस्कृत मूल, श्लोकबद्ध। इसमें प्रियाप्रीतमके सर्व परिवारका वर्णन है ... ... — २ आ. ·॥· आना.

३९ **रेलपचीसी**–जिसमेंरेलवर्णनके २५ कवित्त एकसेएक चटकी लेहे... ... — ·॥· आ. ·॥· आना

४० **लंडनके डाक्टर**–इंग्रेजी अनेक पुस्तकोंका सार लेकर इसकी रचना करी गई है। आजतक डाक्टरीकी पुस्तक छपी उनसबसे यह उत्तम है कि जिसमे रोगका कारण निदान और यत्न अत्यंत चतुराईके साथ वर्णन करा हे। प्रथमाककी कीमत ... ... — ६ आ. ॥· आना.

४१ **ललितफाग**–बृजकी परम चित्रविचित्र होरी सूरदास आदि प्राचीन महात्मोंकी बनाई हुइयोंका संग्रह है .. .. — २ आ. ·॥· आना.

४२ **वैद्यरहस्य**–भाषाटीकासह। असलमें यह ग्रंथ यथानाम तथा गुणयुक्त है... — २ रु. ४ आना.

४३ **वैद्यावतंस**–निघंटु लोलिंबराजका बनाया छोटेसे में बडीबात है ... ... — २ आ. ॥· आना.

४४ **बृहन्निघंटुरत्नाकर**–भाषाटीकासह, प्रथमखंड ... ... — ३ रु. ५ आना.

,,	,,	,,	द्वितीयखंड	३ रु. ५ आना.
,,	,,	,,	तृतीयखंड	३॥ रु. ६ आना.
,,	,,	,,	चतुर्थखंड	२॥ रु. ३ आना.
,,	,,	,,	पंचमखंड	५ रु. ८ आना.
,,	,,	,,	षष्ठखंड	४ रु. ६ आना.

४५* **शार्ङ्गधर**–भाषाटीकासह। सबसे बडी पुस्तक, इसमे निदानभी साथ लगा है. — ३ रु. ६ आना.

४६ **संतानदीपिका**–सटीक, ज्योतिष संतान होने न होनेके फलको बताती है. — २ आ. ·॥· आना.

४७* **सारस्वत, चंद्रकीर्त्तिटीकासह** ... ... — १ रु. ३ आना.

४८* **सारस्वतमाधवी**–टीकासह. यह टीका प्रथम दुष्प्राप्यथी उत्तरार्द्ध पूर्वार्धसह. — २ रु. ३ आना.

४९ **सीहर्फी**–बुल्लाशाह फकीरकी बनाई वेदांतकी शैर देखने योग्य. ... — ·॥· आ. ·॥· आना.

५० **स्वप्नप्रकाशिका**–सटीक. ... ... — २ आ. ·॥· आना.

५१ **हंसराजनिदान**–सटीक. ... ... — १ रु. ३ आना.

॥ श्रीशंवंदे ॥

अभिनवनिघंटुकी अनुक्रमणिका

हरीतक्यादिवर्गः

पुष्पवर्गः

धात्वादिवर्गः

धान्यवर्गः

शाकवर्गः

अभिनवनिघंटुके

हिन्दीशब्दोंकी अकारादि अनुक्रमणिका ।

१ हिंदीकोशके अक्षरोंका संकेत **वृ.** वृक्ष, **क्षु**, क्षुप, **ल.** लता, **गु.** गुल्म, **शा.** शाखीवृक्ष, **प्र.** प्रसर, **पा.** पादप, ए चिन्ह वृक्षादिकोंकी जातिके जानने के निमित्त लिखेहैं ।

ई।

नंबर १ हरड का वृक्ष.
पत्रांक २४



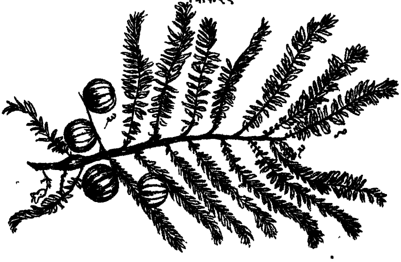
१ पत्ते. २ फूल. ३ फल. ४ सूखे फल.

नंबर २ बहेडे का वृक्ष.
पत्रांक २५



१ पत्ते. २ फल.

नंबर ३ आवले का वृक्ष.
पत्रांक २६



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

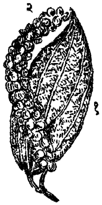
१-२-३ इत्यादि अंक वृक्षके ऊपर डाले हैं जैसें हरडके पत्तेपर १ फूलपर २ और फलपर ३ सो जानोगे.

नंबर ४ कालेजीरेका वृक्ष.
पत्रांक ३६



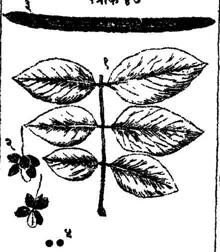
१ पत्ते. २ फूल.

नंबर ५ कालीमिरच
पत्रांक ३२



१ पत्ते. २ फल.

नंबर ६ अमलतास किरवाळेवृक्ष.
पत्रांक ४७



१ पत्ते. २ फूल. ३ फली. ४ बीज.

नंबर ७ मैनफलका वृक्ष.
पत्रांक ४९



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

अभि० निघण्टुके नंबरोंमें भूल होगइ है. जैसे अफीम और इलायचीमें ११का अंक है
परंतु १४का और १९का अंक होना चाहिये

नंबर ८ मालकांगनी का वृक्ष.

पत्रांक ५०



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर ९ चोक (पीलेदूधकीकटेरी)

पत्रांक ५२



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल. ४ बीज.

नंबर १० धाय का वृक्ष.

पत्रांक ५४



१ पत्ते. २ फल.

नंबर ११ बावची नगदबावचीकावृक्ष.

पत्रांक ५७



१ पत्ते. २ फूल. ३ बीज.

नंबर १२ भांग का क्षुप.



१ पत्ते. २-३ कली.

नंबर १३ पोस्त और अफीम का क्षुप.



१ पत्ता. २ फूल. ३ फल.

नंबर १४ इलायची का वृक्ष.



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर १५ तज या दालचिनी का वृक्ष.



१ पत्ते. २ फूल.

नंबर१६ बेलका वृक्ष.
पत्रांक ९०



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल. ४ बीज

नंबर १७ अरनी अगेथका वृक्ष.
पत्रांक ९२



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल

नबर१८ छोटीकटेरी.
पत्रांक ९४



१ [illegible] ३फल.

नंबर१९ गोखरूकाझाड.
पत्रांक ९४



१ पत्ते. २फूल. ३-४ फल

नबर २० अंड तथा एरंड का वृक्ष

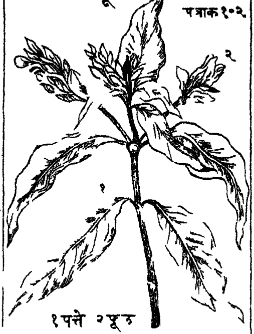
पत्राक ९७



१ पत्ते २ फूल

नबर २१ अडूसा तथा बासा

पत्राक १०२



१ पत्ते २ फूल

नबर २२ धत्तूर का वृक्ष

पत्राक १०२

१ पत्ते

२ फूल

३ फल



नंबर २३ नीम का वृक्ष.

पत्रांक १०३



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर २४ निर्गुंडी तथा सह्मालू का दरखत.

पत्रांक १०७



१ पत्ते. २ फूल.

नंबर २५

कोयल तथा गिरकर्णी.

पत्रांक १०७



१ पत्ते. २ फूल. ३ फली. ४ बीज.

नंबर २६

पत्रांक १०८



१ पत्ते. २ फूल. ३ फली. ४ इंद्रजो.

नंबर २७ कंजा तथा करंजा

पत्रांक १०८



१पत्ते. २फूल.३फल. ४बीज.

नंबर २८ लताकरंज. सागरगोटा.

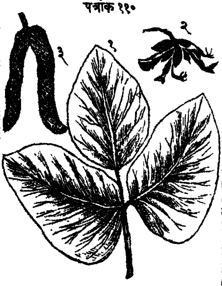
पत्रांक १०९



१पत्ते. २फूल. ३फल. ४बीज.

नंबर २९ कौंच वा किवाँछ.

पत्रांक ११०



१पत्ते. २फूल. ३फली.

नंबर ३० बांसका वृक्ष.



१पत्ते
२फूल.

पत्रांक ११४

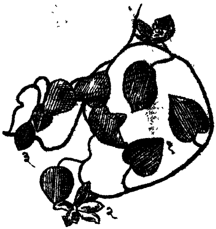
नंबर ३१ पाढ वा पाठाकी वेल.

पत्रांक १२०



१ पत्ते. २ फूल.

नंबर ३२ निसोथ. पत्रांक १२१



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर ३३ इंद्रायन फरफेंदू.

पत्रांक १२२



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर ३४ सरफोका.

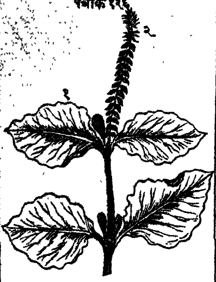
पत्रांक १२४



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर ३५ ओंगा वा चिरचिरा.

पत्रांक १२६



१ पत्ते. २ डाली.

नंबर ३६ मकोय वा चिरपोटन.

पत्रांक १३२



१ पत्ते. २ पत्तेके ऊपर आया हुवा फल. ३ फूल

नंबर ३७ गोभी.

पत्रांक १३८



१ पत्ते. २ फूल.

नंबर ३८ अगस्तिया का वृक्ष.

पत्रांक १४५



१ पत्ते. २ फूल. ३ फली

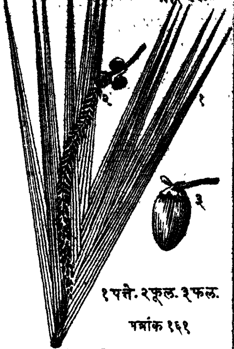
नंबर २९ आंब.

पत्रांक १५७



१ पत्ते. २फूल.(मौर) ३फल.

नं ४० नारियल.



१ पत्ते. २फूल. ३फल.

पत्रांक १६१

नंबर ४१. कैथ.

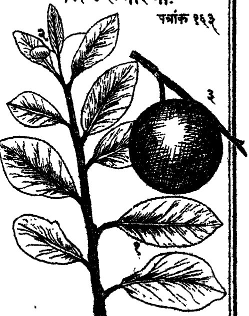
पत्रांक१६२



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर ४२. नारंगी.

पत्रांक १६३



१ पत्ते. २ फूलकीकली. ३ फल.

नंबर ४३ बिजोरा वृक्ष

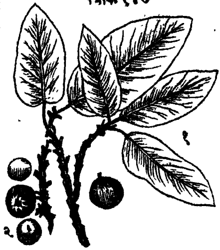
पत्रांक १७३



१ पत्ते. २ फल.

नंबर ४४ गूलर वृक्ष.

पत्रांक १४७



१ पत्ते. २ फल.

नंबर ४५ सेमर का वृक्ष.

पत्रांक १५३



१ पत्ते. २ फूल. ३ डोडा. ४ बीज.

नंबर ४६ कुचला

पत्रांक १६५



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल. ४ बीज.

नंबर ४७ कृष्णसारिवा.
(अनंतमूल.)



पत्रांक १२९

१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर ४८ कटुका. (कुटकी)
पत्रांक ४७



१ पत्ते. २ फूल

नंबर ४९ कीटमारी.
परिशिष्टमें देखो.



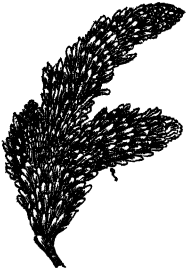
१ पत्ते.

…र ५० आत्रिप्प (शरीफा.सीताफल)
परिशिष्टमें देखो.



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नंबर ५१ राल पत्राक ७८



१ पत्ते

नंबर ५२ शालवृक्ष

पत्राक १४८



१ पत्ते २ फूल

नंबर ५३ रास्ना

पत्राक ४९



१ पत्ते २ फूल

नंबर ५४ राई

पत्रांक १९९



१ पत्ते २ फूल

नंबर ५५ रेवतचीनी (पीतमूली)

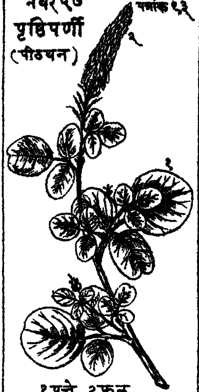
पत्रांक ९२



१ पत्ते २ फूल.

नंबर ५७ पृष्ठिपर्णी (पीठवन)

पत्रांक ९३



१ पत्ते. २ फूल.

नंबर ५६ पेरुक (सफरी.)

परिशिष्ट में देखो.



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नं. ५८ करनफल, पाथी लौंग.



पत्रांक ७८

१ पत्ते. २ फूल.

नंबर५९ हींगकावृक्ष-

पत्रांक २९



१ पत्ते- २ फूल-

नंबर ६० हरिद्रा (हलदी)

पत्रांक ४६



१ पत्ते. २ फूल.

नं-६१ द्राक्षा-दाख (मुनक्का-अंगूर)

परिशिष्टमें देखो.



१ पत्ते- २ फल.

नंबर ६२ चित्रक कावृक्ष (चीता)

पत्रांक ३५



१ पत्ते. २ फूल.

नंबर ६३ वाराही कंद (गेंठी)

परिशिष्टमे देखो



१ पत्ते २ फूल ३ जड

नंबर ६४ यष्ठी (मुलहटी)

परिशिष्टमे देखो



१ पत्ते २ फूल

नंबर ६५ महाराष्ट्री मरेठी)

परिशिष्टमे देखो



१ पत्ते २ फूल

नंबर ६६ गजपीपल.

परिशिष्टमे देखो.



१ पत्ते २ फूल ३ फल


नंबर ६७ कमल.
पत्रांक १३९
१ पत्ते २ फूल


नंबर ६८
केशर
पत्रांक ८०
१ पत्ते
२ फूल
३ जड


नंबर ६९ चोबचीनी.
परिशिष्टमे देखो
१ पत्ते २ फूल


नंबर ७० शतावरी
१ पत्ते २ जड
पत्रांक ११९

नंबर ७१. कालादाना.

परिशिष्टमें देखो.



१ पत्ते. २ फूल.

नंबर ७२ जमालगोटा.

परिशिष्टमें देखो.



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल. ४ बीज

नंबर ७३ खुरासानी अजवायन.

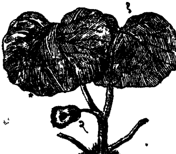
परिशिष्टमें देखो.



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

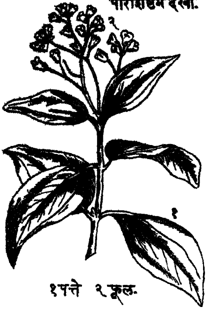
नंबर ७४ अदूरख

परिशिष्टमें देखो.



१ पत्ते. २ फूल.

नंबर ७५. दालचीनी.
परिशिष्टमें देखो.



१ पत्ते २ फूल.

नंबर ७६ आम्रातक (आमडा)



परिशिष्टमें देखो.

१ पत्ते. २ फल

नंबर ७७ कदली (केला)
परिशिष्टमें देखो



१ पत्ते. २ फूल. ३ फल.

नबर ७८ कर्कटशृंगी (काकडासिंगी)
परिशिष्टमें देखो.



१ पत्ते. २ फूल.

बाकी तसवीर इस ग्रंथके दूसरे भागमें आवेगी.

श्रीशम्बन्दे

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः

अथ अभिनवनिघंटु प्रारम्भः ।

मंगलाचरण.

श्रीकृष्णं विहरंतमद्य विविधं वृन्दावने राधया
श्रीतातं रमया प्रणम्य च सदा श्रीकृष्णलालाभिधम्
कुर्वेऽनेकमहौषधीगुणगणागारेभ्य आकृष्य च
ग्रंथेभ्योऽभिनवं निघंटुमधुना श्रीदत्तरामाभिधः

निघंटुकी आवश्यकता.

निघंटुनाविनावैद्यःविद्वान्व्याकरणंविना ।
अनभ्यासेनधानुष्कस्त्रयोहास्यस्यभाजनम् ॥

अर्थ-बिना निघंटुके **वैद्य**, व्याकरणके बिना **विद्वान्** (पंडित) और बिना अभ्यास (महावरे) के **धानुष्क** (तीरका निसाना मारनेवाला) ए तीनो **हास्य** नाम **हांसीके** योग्य है अर्थात् अपनी हांसी करानेवाले हैं ।

यद्यपि वैद्यकशास्त्र **त्रिस्कंध** (हेतु लिंगौषधात्मक) हैं-परंतु इसमेंभी **औषधका** जानना वैद्यको अत्यंतही आवश्यक है. जैसें **चरकमें** लिखा है ।

औषधंह्यनभिज्ञातंनामरूपगुणैस्त्रिभिः ।
विज्ञातंवापिदुर्युक्तंयुक्तियाह्येनभेषजम् ॥

अर्थ-जो **औषधी** नाम, रूप, और गुणोंकरके **अनभिज्ञात** (नहीं जानीगई) हैं, अथवा जों जानकरभी **दुर्युक्त** कहिये मात्रा, काल, देश, बल, अग्निबलादिकोंके विचारानुसार नहीं दीनी गई । अथवा मिथ्यायोग और अतियोगोंकरके युक्त जो औषधिहै वो **अनर्थकारीहै** । इसीसें जो युक्ति (तजवीज) से **बाह्य** औषधी है वो **भेषज** नहीं कहलाती-औरभी लिखा है.

यथाविषंयथाशस्त्रंयथाग्निरशनिर्यथा ।
तथौषधमविज्ञातंविज्ञातममृतंयथा ॥

अर्थ-जो **औषधी** नाम, रूप, और गुणोंकरके **अविज्ञात** कहिये नहीं जानी गई वो-विष, शस्त्र, अग्नि, और वज्रपातके सदृश तत्काल **प्राण** हरण करनेवाली है । एवं जो नाम, रूप, और गुणोंकरके **विज्ञात** (जानी गई) है, वो **अमृतके समान** जरा मरण आदिको दूर करेहै । इसीसें औषधोंके योगोंके ज्ञाताकोही **सर्वोत्तम वैद्य** कहाहै-यथा—

योगमासान्तुयोविद्याद्देशकालोपपादितम् ।
पुरुषंपुरुषंवीक्ष्यसविज्ञेयोभिषक्तमः ॥ ९२ ॥

अर्थ-जो प्राणी प्रत्येक पुरुषके देह, बल, प्रकृति,

सत्व, सात्म्य, दोषबल, व्याधिबल, और अवस्थाके अनुसार इन औषधोंके नाम, रूप अभिज्ञान करके तथा देशविशेष-कालविशेष (ऋतुविशेष) के ज्ञानपूर्वक-इन देशकालमें कहेहुए योगोंको अर्थात् मात्राकी कल्पना करके अथवा एक औषधको दूसरी औषधमें मिलाकर अथवा क्वाथ आदि बनाकर वा पीनेकी विधि इत्यादि प्रयोगोंको जानता है वह भिषक्तम अर्थात् सर्वोत्तम वैद्य जानना ।

इस श्लोकके कहनेसें यह तात्पर्य है कि जो केवल औषधोंके नाम रूप मात्रको जाने अथवा जो केवल इनके प्रयोगमात्रको जानता है उसको वैद्य नहीं कहते किंतु जो नाम, रूप, गुण और प्रयोग दोनोंको जानता है उसीकी वैद्यसंज्ञा है । इसवास्ते वैद्यको औषधोंके नाम, रूप, गुण, और प्रयोगविधि सर्वथा जानने योग्य हैं ।

तहां औषधोंके जाननेका प्रयत्न.

ओषधीर्नामरूपाभ्यांजानंतेह्यजपावने ।
अविपाश्चैवगोपाश्चयेचान्येवनचारिणः॥९३॥

अर्थ-ओषधीके नाम (जिस नामसें मनुष्य जान जावे) और रूप (उस औषधको वृक्ष, पत्ते, फूल, फलादि) को वनमें बकरी चरानेवाले; भेडोंके चरानेवाले; गौके चरानेवाले (ग्वारिया) इसी प्रकार अन्य जो वनवासी संन्यासीआदि हैं वो जानते है यह चरकमें लिखा है ।

गोपालास्तापसाव्याधायेचान्येवनचारिणः ।
मूलाहाराश्चयेतेभ्योभेषजव्यक्तिरिष्यते ॥

अर्थ-सुश्रुतकेमी भूमिप्रविभागविज्ञानीयाध्यायमें कहा है कि ग्वारिया, तपस्वी, व्याध (भील चुआड) और जो वनमें रहनेवाले माली काछी, संन्यासीआदि हैं, तथा जो कंदके भोजन करनेवाले हैं उनसें ओषधोंका ज्ञान वैद्यको प्राप्त हो सक्ता है । राजनिघंटुमेंभी लिखा है जैसें

आभीरगोपालपुलिन्दतापसाः
पान्थास्तथान्येपिचवन्यपारगाः ।
परीक्ष्यतेऽपोविविधौषधाभिधा
रसादिकत्मानिततःप्रयोजयेत् ॥ ९५ ॥

अर्थ-आभीर (ग्वारिया, ग्वाल, अहीर), गोपाल (गौ भैंसके चरानेवाले), पुलिन्द (म्लेच्छ, गौण, चुआड, धागड), तपस्वी (जो वनमें तपस्या करा करते हैं), पांथ (जो नित्य रास्ता चला करते हैं अर्थात् पथिक वा बटोही), तथा अन्य जो वनके जाननेवाले (माली, काछी, भीलआदि हैं) इनसें प्रथम अनेक प्रकारकी औषधोंके नाम और रसादि लक्षणोंको निश्चय करके फिर उनको वैद्य प्रयोगमें योजना करें ।

नामज्ञान और रूपज्ञानसें वैद्य नहीं होता.

ननामज्ञानमात्रेणरूपज्ञानेनवापुनः ।
औषधीनांपरांप्राप्तिकश्चिद्वेदितुमर्हति ॥९६॥

अर्थ-केवल नाममात्र जाननेसें वा केवल रूप जानने मात्र करके औषधोंकी परम प्राप्ति अर्थात् उनके कर्मका प्रभाव और गुणाधिक्यको कोई नहीं जान सके । इसीसें बकरी और भेड आदिके चरानेवालोंको तत्ववेत्तापना नहीं हैं । तो तत्ववेत्तापना किसको हैं? तहां कहते हैं ।

योगविन्नामरूपज्ञस्तासांतत्वविदुच्यते ।
किंपुनर्योविजानीयादौषधीःसर्वथाभिषक् ॥

अर्थ-जो औषधोंके योग (औषधोंके मिलाने) को तथा नाम और रूपको जानता है, उनको आयुर्वेदके ज्ञाता तत्ववेत्ता अर्थात् यथार्थवेत्ता कहते हैं । और जो प्रत्येक पुरुषको देखकर देश कालमें कहे योग ज्ञानको तथा औषधोंके रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभावादिकोंको सर्वथा जानता हो उस वैद्यको तत्ववेत्ता कहनेमें क्या कहना है ? अर्थात् वो तो तत्ववेत्ता है ही ।

योगादपिविषंतीक्ष्णमुत्तमंभेषजंभवेत् ।
भेषजंचापिदुर्युक्तंतीक्ष्णंसंपद्यतेविषम् ॥९८॥

अर्थ-तीक्ष्ण (प्राण हरण करनेवालाभी) विषयोग (दोष, धातु, अवस्था, अग्निबल, बल, शरीरप्रकृति, सत्व, सात्म्य, व्याधिबल, इत्यादिको विचारके द्रव्यांतरके साथ मिलाकर, देश, काल, मात्राके अनुरूप प्रयोग) सें उत्तम (सात्म्य और पथ्य तथा रोगीको हितकारी) औषधरूप हो जाता

है [किंतु वह तीक्ष्णविष प्राणोंको नहीं हरण करे] और उत्तम औषधीभी है परंतु उसको विपरीततासैं देवे तौं वो प्राणोंके नाश करनेमें घोर विषरूप हो आती है ।

तस्माद्भिषजायुक्तंयुक्तिबाह्येनभेषजम् ।
धीमतार्किचिदादेयंजीवितारोग्यकांक्षिणा ॥

अर्थ–ऊपर कहेहुए कारणसैं युक्ति बाह्य (विना उस औषध देनेके नियम जाने) वैद्यकी दीनीहुई भी औषधको जो अपने जीनेकी और आरोग्यकी इच्छा करनेवाला बुद्धिमान् पुरुषहै वो किंचिन्मात्रभी न लेवे । [अर्थात् भलेही वैद्यहो और उसके पास परमोत्तम औषधी क्योनहो परंतु जबतक उसकी देनेकी मात्राके नियमोंको न जानता हो न लेवे । यदि लेयगा तो जीवन और आरोग्यता दोनोंसैं हाथ धो बैठेंगा.]

कुर्यान्निपतितोमूर्ध्निसशेषंवासवाशनिः ।
सशेषमातुरंकुर्यान्नत्वज्ञमतमौषधम् ॥ १०० ॥

अर्थ–मस्तकके ऊपर इन्द्रका वज्रपात गिराहुआभी कदाचित् इस पुरुषको जीवित रखता है । अर्थात् मारता नहीं है–परंतु मूर्खकी दीहुई औषध रोगीके प्राणोंको कदाचित् नहीं छोडे । अर्थात् सर्वथा रोगीके प्राण लेती है । इसी वास्ते मूर्खकी दीहुई औषधको रोगी सर्वथा त्याग देवे । परंतु हम इस हिंदुस्थानमें जहां देखतें हैं तहां प्रायः मनुष्य–मूर्ख वैद्य, मूर्ख हकीम, मूर्ख डाकुटरकोही औषध करते है और अपने प्राणोंको तथा धनादि सर्वस्वको उनके अर्पण कर देतेहैं । इत्यादि प्रमाणोंसैं यह सिद्ध हुआ कि जो वैद्य औषधोंके गुण, रूप, और योगोंको नहीं जाने वो सर्वथा निंदित है, उसकेहाथकी औषध प्राण नाशके समय भी न लेवे । इससैं मुख्य कर्त्तव्य औषधोंकी परीक्षा करनाही वैद्यका कार्य है । इस वास्ते हम औषधपरीक्षाका क्रम और उस क्रमके जाननेसैं पूर्व कौन २ वस्तुकी अवश्यकता है सो एक प्रणालीके साथ लिखते हैं ।

औषधके लक्षण.

वैद्योव्याधिंहरेद्येनतद्द्रव्यंप्रोक्तमौषधम् ।
तथाद्दशमवश्यंस्याद्रोगघ्नंतादृशंशृणु ॥ १ ॥

अर्थ–वैद्य जिससैं रोगोंको हरण करे उस द्रव्यको औषध कही है । रोगनाशक औषध जैसी लेनी चाहिये उसको हम कहते हैं ।

प्रशस्तदेशेसंजातंप्रशस्तेहनिचोद्धृतम् ।
अल्पमात्रंबहुगुणंगंधवर्णरसान्वितम् ॥ २ ॥
दोषघ्नमग्लानिकरमधिकंमविकारियत् ।
समीक्ष्यकालेदत्तंचभेषजंस्याद्गुणावहम् ॥३॥

अर्थ–जो उत्तम स्थानमें प्रगट हुई हो और उत्तम दिनमें उखाडी गई हो । एवं जो थोडीसी देनेपर बहुत गुण करे । जिसमें उत्तम गंध आती हो और रस करके परिपूर्ण हो [सूखी सडी न हो] वातादि दोषोंके नाश करनेवाली और सेवन करते समय ग्लानि [नफरत] न करे । कदाचित् अधिक मात्रा दे दीनी जाय तो विकार न करे । तथा देश कालको विचारके दीनी गई हो ऐसी औषधी गुणकारी होती है । अब यह लिख आएहै कि उत्तम 'स्थानमें प्रगट हुई औषध लेवे' इस वास्ते औषधके स्थाननिर्णय करनेको देशभेदको कहते है ।

देश.

भूमिदेशस्त्रिधाऽनूपोजांगलोमिश्रलक्षणः ॥

अर्थ–भूमिदेश तीन प्रकारका है, अनूप, जांगल, और मिश्रलक्षण ।

अनूपदेशकेलक्षण.

नदीपल्वलशैलाढ्यःफुल्लोत्पलकुलैर्युतः ।
हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः ॥५ ॥
शशवाराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः ।
प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्योनीलसस्यफलान्वितः ॥६॥
अनेकशालिकेदारकदलीक्षुविभूषितः ।
अनूपदेशोज्ञातव्योवातश्लेष्मामयार्त्तिमान् ॥

अर्थ–नदी, तलैया, पर्वत इन करके युक्त, फूलेकमलोके समूहकरके युक्त–हंस, सारस, जलमुर्गाबी, चकवा चकवी करकेसेवित, शशा, सूअर, भैंसा, रुरु, रोहि इनके समूहसैं आकुल, अतिवृक्षों और पुष्पोंकरके युक्त, नीलीदूब, और फलोंसैं युक्त, अनेक प्रकारके शालिधान्योंकेखेत, केलाकेवृक्ष, ईख इनसैं विभूषित इत्यादि लक्षणोंसैं युक्त अनूपदेश जानना

यह वात और कफके रोगोंको पैदा करनेवाला है। जैसे कश्मीर-तिब्बत-काबुल है ।

जांगलदेशकेलक्षण.

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः ।
शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कंधुसंकुलः ॥ ८॥
हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखरसंकुलः ।
सुस्वादुफलवान्देशोवातलोजांगलःस्मृतः॥

अर्थ-जो देश आकाशके समान शुभ्र और ऊंचाहो, जिसमें थोडे जलाशय (वावडी कूआ- आदि) और जहां तहां थोडे वृक्षहो तथा छोंकरा करील, बेल, आक, पीलू, और बेर इत्यादि- वृक्षोंकरके संकुलित, तथा हरिण-एण (कालाहरिण) रीछ, चीता, रोज, और गधा, ए अधिकहो एवं स्वादु (मीठे) फलप्रगटहो, उसदेशको वातकर्त्ता जांगलदेश जानना ।

बहूदकनगोऽनूपःकफमारुतरोगवान् ।
जांगलोऽल्पांबुशाखीचपित्तासृङ्मारुतोत्तरः॥

अर्थ-ग्रंथांतरमें लिखाहे कि जिस देशमें जल और पर्वत अधिकहो, वो कफ और वादीकेरोग करता अनूपदेशहै । एवं जिसमें जल और वृक्ष थोडेहों वो पित्त, रुधिर और वादीकेरोग करनेवाला जांगलदेशहै ।

साधारणदेशकेलक्षण.

संसृष्टलक्षणोयस्तुदेशःसाधारणोमतः ।
समाःसाधारणेयस्माच्छीतवर्षोष्णमारुताः ।
समतातेनदोषाणांतस्मात्साधारणोवरः ॥ ११

अर्थ-अनूपदेश और जांगलदेशके मिलेहुए लक्षणवाला साधारणदेश जानना । इसमें सरदी, वर्षा, गरमी, और पवन ए समान रहतेहै । इसीसें वातादिदोषभी सम रहतेहैं, अतएव साधारणदेश सबमें उत्तम कहाहै ।

उचितेवर्त्तमानस्यनास्तिदुर्देशजंभयम् ।
आहारस्वप्नचेष्टादौतद्देशस्यकृतेसति ॥१२॥

अर्थ-सुश्रुत कहताहै कि जो प्राणी उचित आहार विहार करताहै उसको दुष्टदेशका कुछ भय नहीं है, अतएव जिस देशमें रहे उसी देशके अनुसार आहार, विहार, निद्रा, और चेष्टा करनी चाहिये ।

यस्यदेशस्ययोजंतुस्तज्जंतस्यौषधंहितम् ।
देशादन्यत्रवसतस्तत्तुल्यगुणमौषधम् ॥१३॥
स्वेदेशेनिचितादोषाअन्यस्मिन्कोपमागताः
बलवंतस्तथानस्युर्जलजाःस्थलजास्तथा ॥

अर्थ-वृद्धवाग्भट कहतेहैं कि जिसदेशका जो प्राणी है उसको उसीदेशकी प्रगटहुई औषध हितकारी होतीहै, और अपनेदेशको त्यागके जो अन्यदेशमें रहते हैं उनको उसदेशके तुल्य गुणकारी औषध देवे । अपनेदेशमें संचितदोष, दूसरेदेशमें कुपितहुएहोवे तो वो बली नहींहोते, उसीप्रकार जलदेशके स्थलमें और स्थलदेशके जलमें हीनबली जानने ।

क्षेत्रभेद.

क्षेत्रभेदंप्रवक्ष्यामिशिवेनाख्यातमंजसा ।
ब्राह्मंक्षात्रंचवैश्यीयंशौद्रंचेतियथाक्रमात् ॥

अर्थ-अब हम शिवके कहे क्षेत्रभेदको कहतेहै । क्षेत्र चार प्रकारकाहै; जैसें १ ब्राह्मक्षेत्र, २ क्षात्रक्षेत्र, ३ वैश्यक्षेत्र, और ४ शौद्रक्षेत्र, इनके लक्षण नीचे भाषामें लिखते हैं ।

१ **ब्राह्मक्षेत्र**-जिस पृथ्वीमें ढाकके वृक्ष और जल अधिक हो और कुशा अधिक होती हो, सुंदर सपेद मृत्तका (मिट्टी) करके युक्त हो उसको शिवने ब्राह्मक्षेत्र कहाहै अर्थात् उस पृथ्वीकी ब्राह्मण संज्ञा है ।

२ **क्षात्रक्षेत्र**-जिस पृथ्वीका लालवर्ण हो, पर्वत, सिंह, व्याघ्र आदिके समूहों करके युक्त तथा घोर शब्द करनेवाले पशु, पक्षी और खैर आदिके वृक्षोंसें घिर रहाहो उसको शिवने क्षात्र अर्थात् क्षत्रीक्षेत्र कहाहै ।

३ **वैश्यक्षेत्र**-जिस पृथ्वीका वर्ण सुवर्णके समान पीला हो, और सुवर्णके कणसे जिसमें मिलें तथा सिद्ध-किन्नर-देवताओंकरके सेवित ऐसी पृथ्वीकी वैश्यक्षेत्र संज्ञा कहीहै ।

४ **शौद्रक्षेत्र**-जिस पृथ्वीका रंग काला होवे,

और अनेक प्रकारकी घास उग रहीहो, जिसमें तृण और बबूलके वृक्ष अधिक हो तथा अनेक प्रकारके धान्योंकी उत्पत्ति करके क्षेती करनेवालोंको प्रसन्न करनेवाली हो उस पृथ्वीको शिवने **शौद्रक्षेत्र** अर्थात् शूद्रसंज्ञक जानना।

चतुर्विधक्षेत्रोंसे प्रगट द्रव्यके गुण.

द्रव्यंक्षेत्रादुदितमनघंब्राह्मतस्सिद्धदायि क्षेत्रादुत्थंवलिपलितजिद्विश्वरोगापहारि। वैश्याज्जातंप्रभवतितरांधातुलोहादिसिद्धौ शौद्रादेतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकं-द्राक्॥ १६॥

अर्थ–ब्राह्मक्षेत्रसें उत्पन्न हुई द्रव्य (औषधी) सिद्ध दाता जाननी। क्षत्रीक्षेत्रकी वली पलित (बुढापे) को और संपूर्ण संसारके रोगोंको नष्ट करेहै। वैश्यक्षेत्रकी प्रगट औषधी धातु लोह आदिकी सिद्धीमें अर्थात् रसायन आदि कर्ममें प्राह्य है। एवं शूद्रसंज्ञक क्षेत्रसें जो प्रगटहुईहै वह औषधी अखिल रोगोंको तत्काल दूर करनेवाली जाननी।

ब्रह्मा, इन्द्र, कुबेर, और पृथ्वी ये क्रमसें पूर्वोक्त ब्राम्हादि क्षेत्रोंके देवता हैं यह प्रथम शिवने कहाहै। अब वह प्रत्येक क्षेत्र पंचभूतो करके पांचप्रकारका है उनको कहते हैं।

१ पार्थिवक्षेत्रके लक्षण–जो पृथ्वी पीलेरंगके गोल कंकर और पत्थरोंसे रमणीकहो तथा उस पृथ्वीका रंगभी पीलाहो, और जिसमें उत्तम मृग डोलतेहों तथा वह खेत चौकोन होवे और वृक्षभी प्राय उसमें पीले रंगके फूलदार होवें, तथा वह जमीन करडी हो उसको **पार्थिव** अर्थात् **पृथ्वी-**संबंधी खेत जानना।

२ आप्यक्षेत्रके लक्षण–जो खेत–आधे चंद्रमाके आकार हो और वर्ण–सपेद कमलके समान पत्थरोंसे युक्त हो। और जो नदी नद आदि जलाशयोंकरके व्याप्त उस क्षेत्र (क्षेत) को **आप्य** अर्थात् **जलतत्वसबंधी** क्षेत्र जानना।

३ तेजसक्षेत्रके लक्षण–जो खेत–खदिर (खैर) आदि वृक्षोंसे व्याप्त हो और बहुतसे वांसके वृक्ष हो–तथा उस क्षेत्रका आकार त्रिकोण (तिकोना) हो और लाल पत्थर होवे उस क्षेत्रको **तेजस** अर्थात् **अग्नितत्वसंबंधी** खेत जानना।

४ वायवीयक्षेत्रके लक्षण–जो क्षेत धूसरे रंगका और धूंएके रंगके पत्थरोंकरके युक्त हो तथा वह षट्कोण अर्थात् छःकोनेवाला हो और शीघ्रगामी मृगादि पशुओं करके युक्त तथा शाक (तरकारी) और तिनकाओंसैं व्याप्त एवं जिसमें रूखे वृक्ष होवे उस क्षेत्रको **वायवीय** अर्थात् **पवनतत्वसंबंधी** क्षेत्र जानना।

५ अंतरीक्षसंबंधीक्षेत्रके लक्षण–जिस क्षेत्रका वर्ण अनेक प्रकारका हो तथा वह क्षेत्र गोल होवे तथा सपेद पर्वतोंसैं व्याप्त और ऊंचा होवे, और जो स्थान देवताओंके वास योग्य हो उसको शिवने **अंतरीक्ष** क्षेत्र अर्थात् **आकाशतत्वसंबंधी** खेत कहाहै।

पंचविधक्षेत्रोंसैं प्रगट द्रव्यके गुण.

द्रव्यंव्याधिहरंबलातिशयकृत्स्वादुस्थिरं पार्थिवं स्यादाप्यंकटुकंकषायमखिलंशी-तंचपित्तापहम्। यत्तिक्तंलवणंचदीप्य-मरुजिच्चोष्णंचतत्तैजसं वायव्यंतुहिमो-ष्णमम्लमबलंस्याद्माभसंनीरसम्॥ १७॥

अर्थ–जो द्रव्य (औषधी) **पृथ्वीसंबंधी** क्षेत्रसें प्रगटहुई है और जिसमें पृथ्वीतत्व अधिक है वो रोगनाशक और अत्यंत बलकारी तथा स्वादिष्ट और स्थिर जाननी। एवं संपूर्ण **आकाशसंबंधी** द्रव्य चरपरी, कषेली, और शीतल तथा पित्तके नाश करनेवाली जाननी। तथा जो औषधी कड़वी निमकीन अग्निके दीप्त करनेवाली रोगनाशक और गरम होवों **तेजस** अर्थात् **अग्नितत्वसंबंधी** जाननी। और वायवीय कहिये **पवनसंबंधी** द्रव्य यावन्मात्र हो वो तर और गरम है तथा खट्टी और निमकके रसरहित है। उसी प्रकार आकाशसंबंधी द्रव्य यावन्मात्र है वो सब नीरस है अर्थात् उनमें कीसी-प्रकारका रस नहीं है।

पांचक्षेत्रोंके देवता–ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, और सदाशिव ये क्रमसें पृथ्वी आदि पांचोंक्षेत्रोंके पांच **अधिदेवता हैं अर्थात्** मालिक हैं।

वृक्षोंकी उत्पत्ति–जिससमय पहले वीर गरुडने युद्धमें संपूर्णदेवताओंकी सेनाको जीतके अमृतके कलशको शीघ्र हरण करा, उससमय उस कलशमेंसें जो अमृतके कणका पृथ्वीमें जहां तहां गिरे उन्हीं कणकाओंसें ये संपूर्ण वृक्षादिक उत्पन्न हुए इनका स्वामी चंद्रमा है.

तहां जो उत्तम विप्रादि क्षेत्रमें प्रगटहुए है वो ब्राह्मणादि कहलाते है और क्षत्रीआदि क्षेत्रके प्रगट क्षत्री कहाते है। इसप्रकार प्रत्येक क्षेत्रोंके अनुसार उनके विप्रादिभेद है उन्हेंमें वैद्यको कदाचित् मोह न होजावे इस वास्ते उनके लक्षण कहते है।

वृक्षोंमें ब्राह्मणादिभेद–वृक्षोंके पत्ते, फूल, डंडी, और शाखा ये सपेदहोवे उसको **ब्राह्मण** जातिका वृक्ष जानना। और पूर्वोक्त पत्ते, फूल, डंडी, और शाखा इनके अत्यंत लाल होनेसें **क्षत्री** जातिका वृक्ष जानना। एवं पीळे होनेसें **वैश्य** और पत्रपुष्पादिक जिस वृक्षके काळे होवे उसको **शूद्र** जातिका वृक्ष जानना।

ब्राह्मणादि देनेकाक्रम.

विप्रादिजातिसंभूतान्विप्रादिष्वेवयोजयेत् ।
गुणाढ्यानपिवृक्षादीन्प्रातिलोम्यंनचाचरेत्॥

अर्थ–ब्राह्मण जातिमें उत्पन्न वृक्षादि (औषधों) को विप्रादिकोंमें देवे, अर्थात् **ब्राह्मण** जातिकी औषधी ब्राह्मणको, **क्षत्री** जातिकी क्षत्रीको, **वैश्य** जातिकी वैश्यको, और **शूद्र** जातिकी औषधी शूद्रको वैद्य देवे। गुणयुक्त भी वृक्षोंको प्रतिलोम न करे, अर्थात् ब्राह्मण जातिकी औषधीको क्षत्री वैश्य और शूद्रको न देवे इसीप्रकार शूद्र जातिकी औषधी ब्राह्मण, क्षत्री आदिको न देनी चाहिये।

द्रव्यभेद.

किंचिद्दोषप्रशमनंकिंचिद्धातुप्रदूषणम् ।
स्वस्थवृत्तौमतंकिंचित्त्रिविधंद्रव्यमुच्यते ॥

अर्थ–कोई द्रव्य वातादि दोषोंको शमन करनेवाली है, कोई रस रक्तादि धातुओंको दूषित करनेवाली है और कोई द्रव्य स्वस्थवृत्तिमें अर्थात् आरोग्य प्राणीको हितकारी है। इसप्रकार इस संसारमें जितनी द्रव्य हैं सब तीनप्रकारकी हैं।

तत्पुनस्त्रिविधंज्ञेयंजांगमौद्भिदपार्थिवम् ॥

अर्थ–फिर वही द्रव्य जंगम, औद्भिद, और पार्थिवके भेदसें तीनप्रकारकी है.

१ **जंगमद्रव्य**–सहत, गोरस (दूध, दही) जीवोंका पित्ता, वसा, मज्जा, रुधिर, मांस, विष्ठा, मूत्र, चमडा, वीर्य, हड्डी, स्नायु (नस), सींग, नख (नाखून), खुर, बाळ, रोम, और रोचन ये **जंगमें** (मनुष्य) पशु पक्षी आदिसें ग्रहण करे जाते है।

२ **पार्थिवद्रव्य**–सोंना, चाँदी, रांगा, ताँबा, लोहा, जस्ता, शीशा, कीटी, शिलाजीत, बालू रेत, चूना, मनसिल, हरिताळ, चंद्रकांत आदि मणि (मोती, मूंगा, हीरा, वैक्रांत) निमक (सैंधवादिक) गेरू, खडिया, मृत्तिका, रसोत, इत्यादि **पृथ्वीसंबंधी** द्रव्य ग्रहण करी जाती हैं। ये **भौमद्रव्य** कहलाती हैं।

३ **औद्भिदद्रव्य**–पृथ्वीको फाडकर जो निकले उनको **औद्भिद** द्रव्य कहते है। जैसे वृक्षादि वो औद्भिद द्रव्य चार प्रकारकी है, जैसे–१ वनस्पति, २ वीरुध, ३ वानस्पति, और ४ ओषध.—

१ **वनस्पति**–जो विनाफूलके फले उनको **वनस्पति** कहते है जैसे–वड, पीपर, गूलर, पाखर आदि [ये वनोंके पति होनेसें **वनस्पति** कहलाते हैं.] २ **वीरुध**–जो फलफूलवाली होकर लता (वेल) स्तंब (गुच्छा) और गुल्म [छोटेसें वृक्षमेंसें अनेक डाली फूटकर सघनता] करके युक्त हो उनको **वीरुध** कहते है जैसे-पानकी गिलोयकी वेल, धमासा, अडूसा आदि जानने [जो लताओंके फैलनेसें वढकर वहुतसी जमीनको घेर लेवे उसको वीरुध कहते है]

१ जैसे—मक्खियोंसें सहत, गौसे घी, दूध, मोर, मछली आदिका पित्ता, सूअरकी चरबी, खटमलका रुधिर, वीरवहूटीका मांस, गौ और बालक आदिका मल मूत्र, मृग वाघ आदिका चमडा, हाथी आदिका दांत, मृग आदिके सींग, सिंह वाघ आदिके नाखून, घोडेके खुर, सुरेगौके पूंछके बाल, बकरीके रोम, मृगकी कस्तूरी, गौआदिका गोरोचन।

ये चरकमें लिखा है। ३ वानस्पति-जो फूल आनकर फले उनको वानस्पति कहते हैं। और भाषामें उनको वनास्पति कहते हैं वो आम, जामन, नींबू, नारंगी, केला आदि जानने। बहुतसे आमआदि वृक्षोंमें फूलही आताहै फल नहीं लगते वो दूषित जानने वास्तवमें आमआदि फलवानही होते हैं [फूल फल करके प्रधान जो वनस्पति वृक्षहै वोही वानस्पत्य कहलाते हैं]. ४ ओषधी-जो फलके पाक होनेसें नष्ट हो जावे उनको ओषधी कहते हैं। जैसें गेंहूं, चना, जौं, चावल, आदि जानने [ओषधी यह शब्द उषदाहे धातुसें बनताहै, इसीसे जो पंचभूतोंकी अग्निसें फलके पकनेके पश्चात् ग्रहण करी जावे उनको ओषधी कहीहै.]

सुश्रुतभी लिखता है कि प्राणियोंका मूल आहार, और बल, वर्ण तथा ओज ये छःरसोंके आधीन हैं। वो छःहो रस द्रव्यके आश्रय हैं। द्रव्य ओषधीनके आश्रय है। वो ओषधी दो प्रकारकी है एक स्थावर, दूसरी जंगम, तिनमें स्थावर चार प्रकारकी हैं, और जंगमभी चार प्रकारकी है. इनमें स्थावरके भेद कह आएहैं अब चतुर्विध जंगमोंको कहतेहैं। जैसे-जरायुज, अंडज, स्वेदज, और उद्भिज। तहां पशु, मनुष्य, व्यालादिक जरायुज हैं। पखेरू, सर्प, विच्छुआदि अंडज हैं। कृमि, कीट, जूँआ, लीख स्वेदज हैं। इसीप्रकार इन्द्रगोप (वीरबहुटी) मेंडका आदि उद्भिज हैं।

इस जगेभी प्राणियोंके आहार द्रव्यता करके ओषधी दोप्रकारकी कही है किंतु ओषधी सर्वथा दोप्रकारकी नहीं है। क्योंकि सुश्रुतकारनेही उसीजगे लिखाहै कि-सुवर्ण, चांदी, मणि, मोती, मूंगा, मनसिल, मिट्टी और खिपडा आदि पार्थिव द्रव्य हैं। तथा पवन, पवनरहित, धूप छायां, चांदनी, अंधकार, सरदी, गरमी, वर्षा, दिन, रात्रि, पखवारा, महिना, ऋतु, अयन, और संवत्सर (वर्ष) ये कालकृत द्रव्यहैं। ये दोषोंके स्वभावसेंही संचय कोप और नाशके हेतुरूप प्रयोजनवाले जानने।

यद्यपि प्रवातादिक ओषधी जो सुश्रुतमें कही हैं वो चरकमें नहीं लिखी इससें मनुष्य ये न समझे कि ये कालकृतादि ओषधोंकी चरकमें न्यूनता है। इनके न लिखनेका कारण यह है कि ये जो पवन धूप आदि कालकृत ओषधी हैं वो पांचभौतिकत्व करके मूर्तमान न होनेसें वैद्य इनका प्रयोग नहीं करसक्ता है इसीसें ये नहीं कहीं।

औद्भिदद्रव्यमें ग्रहण करनेयोग्य-मूल (जड) छाल, सार, निर्यास (गोंद), नाडी, स्वरस, नवीन पत्ते, खार, दूध, फल, फूल, भस्म, तेल, कांटे, पत्ते, शुंग (कली), कंद, और प्ररोह (अंकुर) ये वनस्पति आदि चतुर्विध उद्भिद गणसें वस्तु लीनी जाती हैं। इसप्रकार चरक, सुश्रुत, और वाग्भटादि प्राचीन ग्रंथोंमें ओषधी चार प्रकारकी लिखीहै-परंतु आधुनिक ग्रंथोंमें ओषधीके पांच भेद मानेहैं जैसें लिखाहै।

द्रव्यंयदंकुरजमाहुरार्यास्तत्तेपुनः पंचविधंवदंति। वनस्पतिश्चापिसएववानस्पत्यक्षुपोवीरुधौषधीश्च ॥ २१ ॥

अर्थ-जो ओषधी अंकुरसें प्रगट हुईहैं वो पांच प्रकारकी है, जैसें १ वनस्पति, २ वानस्पति, ३ क्षुप, ४ वीरुध, और ५ ओषधी।

ज्ञेयस्सोत्रवनस्पतिःफलतियःपुष्पैर्विनातैःफलं वानस्पत्यइतिस्मृतस्तनुरसौह्रस्वःक्षुपःकथ्यते। यावेल्यत्यगमादिसंश्रयवशादेषातुवल्लीमता शाल्यादिः पुनरौषधिःफलपरीपाकावसानान्विता ॥ २२ ॥

अर्थ-विना फूलके फले उसको वनस्पति कहते हैं। फूलकर फिर फले उसको वानस्पति जानना। और जो छोटा और पतला वृक्ष होवे उसे क्षुप कह-

१ कटेरी अंड आदिकी जड लीनी जातीहै। नीम आदिकी छाल, खैर आदिका सार, बबूर आदिका गोंद, अडूसे आदिका खार, थूहर आदिका दूध, आम आदिके फल, गुलाब आदिके फूल, सरसों आदिका तेल, गोखरू आदिके कांटे, बड आदिके पत्ते, और उसकी कली, दूब आदिके अंकुर, पीपलकी छालकी भस्म, जमीकंद रतालू इत्यादि कंद, ये सब ग्रहण करे जातेहैं।

तेहैं । तथा जो वृक्षआदिका सहारा लेकर फैल जावे उसको वेल्ली (वेल) कहते हैं । और फलके पकनेसैं जो नष्ट ही जावे वो औषधी है जैसैं चावल ।

ग्रन्थांतरका प्रमाण.

औषध्यःपञ्चधाख्यातालतागुल्माश्चशाखिनः। पादपाप्रसराश्चैवतेषांवक्ष्यामिलक्षणम्॥२३॥

अर्थ–ओषधी पांच प्रकारकी है, जैसैं १ लता, २ गुल्म, ३ शाखी, ४ पादप, और ५ प्रसर, इनके लक्षण आगेके श्लोकोंमें कहताहूं ।

लतादिकोंके लक्षण.

गुडूच्याद्यालताःप्रोक्तागुल्माःपर्पटकादयः। आम्राद्याःशाखिनोज्ञेयावटाश्वत्थादिपादपाः। कंटकार्यादिकाःसर्वाःप्रसराइतिकीर्तिताः॥

अर्थ–गिलोय [आदि शब्दसैं सोमवल्ली इन्द्रायन] आदि **लता** अर्थात् **वेल** कहलाती हैं । पित्तपापडा [आदि शब्दसैं जवासा अडूसा सरफोका] आदिकी **गुल्म** संज्ञाहै । आम [आदि शब्दसैंनीबू, नारंगी, अमरूद] आदिको **शाखी**, अर्थात् **शाखावाले** जानना । और वड पीपर आदिको **पादप** कहते हैं। एवं कटेरी [आदि शब्दसैं दूब, सांठ,] आदिकी **प्रसर** संज्ञाहै. ये संज्ञा इस निघंटके प्रत्येक औषधके नामके पश्चात् हम लिखेंगे कि जिस्सैं प्रत्येक वैद्यको मालूम हो जावे और सहजहीमें औषधको पहचान लेवे ।

वृक्षोंकी स्त्री, पुरुष, और नपुंसकसंज्ञा.

स्त्रीपुंनपुंसकत्वेनत्रैविध्यंस्थावरेष्वपि। शृणुवक्ष्यामितल्लक्ष्मव्यक्तमत्रयथाक्रमम्॥

अर्थ–स्थावर अर्थात् वृक्षादिकोंमेंभी स्त्री, पुरुष, और नपुंसक ये तीन भेद है, इन तीनोंके लक्षणमें इस जगे क्रमसैं कहताहूं उनको सुन ।

स्त्रीसंज्ञक लक्षण–ईख, बांस, वृक्ष, लता, आदि शब्दसैं पादप और शाखावाले इनके गुद्दे शाखा, फल, फूल, पत्ते, ये चिकने और लंबे विस्तृत परमसुंदर होवें उन वृक्षोंको स्त्रीसंज्ञक पंडित जन जाने।

पुरुषसंज्ञकके लक्षण–और जिस वृक्षके फूल पत्ते आदि न बहुत वडे हों न बहुत छोटे हों किंतु मोटे और करडे होवे उस वृक्षकों पुरुषसंज्ञक विद्वानोंने कहाहै.

नपुंसकसंज्ञकवृक्षके लक्षण–जिन वृक्षादिकी शाखा, फल, फूल, पत्ते आदिमें पुरुष और स्त्री दोनों केसे लक्षण मिलते हो और यह संदेह होवे कि यह वृक्ष पुरुष है अथवा स्त्री है तथा यह निश्चय न होवे कि यह अमुक जातिका वृक्ष है । उसको विद्वान् जन **नपुंसक** जातिका वृक्ष कहते हैं।

स्त्री, पुरुष, और नपुंसक ओषधीका गुणागुण–यावन्मात्र **पुरुषसंज्ञक** ओषधी है वो इस प्राणीमात्रको आरोग्य कर्त्ता और बलके बढानेवाली हैं । **स्त्रीसंज्ञक** ओषधी दुर्बल और अल्पगुण करनेवाली स्त्रियोंको जाननी, और **नपुंसकसंज्ञक** औषधी किसीको हितकारी नहीं है ।

किसी वैद्यका यह मतहै कि **स्त्रीजाति**की औषधी स्त्रियोंको गुण करती हैं और **नपुंसक** ओषधी नपुंसकोको गुण करेहै । तथा स्त्री, पुरुष, और नपुंसकको सदैव और सर्वत्र पुरुषसंज्ञक औषधी गुण करनेवाली होती हैं ।

वृक्षोंके भूंख प्यासके लक्षण.

क्षुत्पिपासाचनिद्राचवृक्षादिष्वपिलक्ष्यते। मृज्जलादानतस्त्वाद्येपर्णसंकोचितोन्तिमा।

अर्थ–**क्षुधा** (भूंख), **पिपासा** (प्यास), **निद्रा** (नींद) ये वृक्षादिकोंमेंभी दीखनेमें आतेहै जैसे–मिट्टी जलके ग्रहण करनेसैं वृक्षोंकी भाय अर्थात **भूंख प्यास** जानी जाती है । और पत्तोंके संकोच हो जानेसे अर्थात् आपसमें पत्तोंके चिपट जानेसैं वृक्षोंकी अंत्यावस्था अर्थात् **निद्रायुक्त** जानना ।

स्थावरोंमें पंचभूतात्मकत्व.

यत्काठिन्यंसोक्षितिर्योद्रवांभस्तेजस्तूष्माववृद्धैतेयत्सवातः। यद्यच्छिद्रंतन्नभस्थावराणामित्येतेषांपंचभूतात्मकत्वम्॥२७॥

अर्थ–वृक्षोंमें जो **काठिनता** (करडापना) है वह **पृथ्वी**का अंश है। और **आर्द्रता** (गीलापना) **जल**का अंश है । गरमपना **अग्नि**का भाग है । और वृक्षोंका बढना है सो **पवन**का भागहै । तथा वृक्षोंमें जो छिद्र होतेहैं वो **आकाश**का

नाम है । इस प्रकार वृक्षोंको पंचभूतात्मकत्व है, अर्थात् वृक्षोंमें पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश पांचों तत्व रहते हैं ।

अब कहते है कि जहां एक वस्तुके अनेक नाम हैं, जैसे-शिवा नाम हरडका और आमलेका है, उसी प्रकार समंगा नाम मजीठ और लजालूका है, उसी प्रकार श्याम नाम पीपल, प्रियंगु और सारिवाका है-तो वैद्यको उस जगह प्रकरण-वीर्य और रस आदि योगोंको विचारके लेना उचित है; अर्थात् इस योगमें कौनसी औषध लेनेसें प्रयोग ठीक बैठता है यह विचारके डालनी चाहिये ।

नक्षत्रोंके वृक्ष-अ. कुचला, भ. आवला, कृ. चोंक, रो. जामुन, मृ. खैर, आ. कालीअगर, पुन. वांस, पु. पीपल, आश्ले. नागकेशर, म. वड, पूर्वा फा. पलास, उ. फा. पाखर, ह. पाढ, चि. बेल, स्वा. कोह, वि. विकंकत, अनु. मौलसिरी, ज्ये. आहुली, मू. शाल, पूर्वाषा. जलवेत, उत्तराषा. अमलतास, श्र. आक, ध. शमी (छोंकरा), श. करंब, पू. भा. आम, उ. भा. नीम, और रे. महुआ, ये २७ वृक्ष क्रमसें अश्विनी आदि नक्षत्रोंके अधिपती हैं ।

जन्मनक्षत्रके वृक्ष ग्रहणमें दोष.

यस्त्वेतेषामात्मजन्मर्क्षभाजां
मर्त्यःकुर्याद्भेषजादीन्मदांधः ।
तस्यायुर्ध्यंश्रीकलत्रंचपुत्रं
नश्यत्येषांवर्द्धतेवर्द्धनाद्यैः ॥ २८ ॥

अर्थ-जो प्राणी मदांध होकर इन अपने जन्मनक्षत्रके वृक्षकी औषधी आदि करता है उसकी आयु, धन, स्त्री और पुत्र, नष्ट होतेहैं । तथा आत्मनक्षत्र अधिपति वृक्षके जलादि सिंचनद्वारा बढानेसें आयु, धन, स्त्री और पुत्रादिकी वृद्धि होती है । इसवास्ते वैद्यको उचित है कि रोगीका जन्मनक्षत्र पूंछ लेवे उसके नक्षत्रका जो वृक्ष अधिपति होवे उसको चिकित्सामें न लेवे ।

आग्नेयाविंध्यशैलाद्याःसौम्योहिमगिरिःस्मृतः
अंतस्तदौषधानिस्युरनुरूपाणिहेतुभिः ॥२९॥
अन्येष्वपिप्ररोहंतिवनेपूपवनेषुच ॥

अर्थ-विंध्याचल आदि जो पर्वत हैं उनमें अग्निका अंश अधिक है, और हिमालय पर्वत सौम्य अर्थात् शीतल है, इसीसें इन विंध्याचल और हिमालय पर्वतमें प्रगट होनेवाली औषध हेतुओंकरके उन्ही २ के अनुसार जाननी अर्थात् विंध्याचल पर्वतकी औषधी गरमवीर्यवाली और हिमालयकी शीतवीर्य औषधी हैं । ये केवल पर्वतोंमें ही नहीं होती, किंतु अन्य वनोंमें उपवनोंमें भी औषध प्रगट होतीहैं वो भी उसी २ क्षेत्रके अनुसार वीर्यवान् जाननी ।

औषधि ग्रहणका मुहूर्त.

भैषज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलभेद्व्यंगलग्ने ।
शुक्रेन्द्वीज्येविदिचदिवसेचापितेषांरवेश्च ।
शुद्धेरिष्फेद्युनमृतिगृहेसत्तिथौनोजनेर्भे ३०

अर्थ-लघु (ह. अश्वि. पु. अभि.) मृदु (मृ. रे. चि. अनु.) चर (स्वा. पुन. श्र. ध. श.) और मूल इन नक्षत्रोंमें शु. चं. बृ. बु. और सूर्य ए द्विस्वभावलग्न (मि. क. ध. मी.) में स्थित हो, तथा इन्ही शुक्रचंद्रादिके वारमें, लग्नसें १२. ७. ८ गृह पापोंकरके रहित ऐसे शुभ समयमें भैषज्य (औषधका लाना, बनाना और व्यवहार करना आदि) शुभ है ।

औषध ग्रहणकी विधि.

यतध्वमुत्खातशुचिप्रदेशजा
द्विजेनकालादिकतत्ववेदिना ।
यथायथंचौषधयोगुणोत्तराः
प्रत्याहरंतेयमगोचरानपि ॥ ३१ ॥

अर्थ-प्रथम झाड बुहारके पवित्र करी भूमिमें शुभाशुभ कालादि तत्वके जाननेवाला ब्राह्मण यथायोग्य गुणयुक्त (जैसी औषध लेनी चाहिये उसीके योग्य) छिपीहुई औषधोंकोंभी लावे । अर्थात् प्रथम पृथ्वीकी शुद्धि करके देश, काल, औषधके कच्चे, पक्के और उसका कौनसा अंग लेना इसका विचार करके जो वृक्ष और पर्वतादिकोंमें छिपी हुईभी हो उनके द्विज (वैद्य) लावे । सो क्रम आगे लिखते हैं ।

औषध ग्रहणका मंत्र.

येनत्वांखनतेब्रह्मायेनत्वांखनतेभृगुः ।
येनेन्द्रोयेनवरुणोह्युपचक्रमकेशवः ॥ ३२ ॥
तेनाहंत्वांखनिष्यामिसिद्धिंकुरुमहौषधिः ।
विप्रःपठन्निमंमंत्रंप्रयतात्मामहौषधीं ।
खात्वाखादिरकीलेनयथावत्तांप्रयोजयेत् ३३

अर्थ–ब्राह्मण 'येनत्वां' इस मंत्रको पढता हुआ एकाग्रचित्तसैं खैरकी लकडीसैं जडको खोदकर औषधको उखाड लावे, और पत्रपुष्पादिक लेने होय तो इसी मंत्रसैं प्रार्थनापूर्वक ग्रहण करे । परंतु मंत्रशास्त्रमें लिखा है कि पहले दिन रूखडीकों सायंकालके समय गंध पुष्प नैवेद्य आदिसैं विधिपूर्वक पूजन करकैं निमंत्रण दे आवे, और दूसरे दिन प्रातःकाल आयकर पूर्वोक्त मंत्रसैं उसको उखाड लावे । परंतु यह मुहूर्तादिक विधि सहर, ग्रामके समीपस्थ वनोंकी है । और जहां घोर जंगल है और दुष्ट जीवोंका भय है वहां पर वैद्य इस विधिको त्याग देवे, जल्दी अपना प्रयोजन करलेवे । औषध सेवनका काल और उसके सेवन करनेकी विधि आगे इस भागकी समाप्तिमें लिखैंगे ।

औषध ग्रहणकी विधि.

गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे ।
आदित्यसंमुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ३४
साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादुत्तराश्रितम् ।

अर्थ–औषध लानेके निमित्त प्रातःकाल उठ स्नान आदिसैं पवित्र हो, उत्तम दिन (अर्थात् उत्तम तिथि, नक्षत्र, योग, करण और लग्नमें) वनमें सूर्यके सन्मुख खडा हो मौनपूर्वक श्रीशिवको हृदयमें प्रणाम कर [जांगलदेश और अनूपदेशको त्याग] साधारण पृथ्वीमे जो प्रगट हुई तथा उत्तरदिशामे स्थित औषधको प्रसन्न चित्तहो ग्रहण करे अर्थात् उखाडे, कोई उत्तराभिमुख होकर औषधको उखाडे ऐसा कहतेहैं ।

त्याज्य औषधी.

वल्मीककुत्सिताऽनूपश्मशानोषरमार्गजाः ।
जंतुवह्निहिमव्याप्तानौषध्यःकार्यसाधिकाः॥

अर्थ–सांपआदिकी बांबी, दुष्टपृथ्वी, जलप्रायस्थान, श्मशान (जहां मुरदे जलाए जावे, या गाडे जावे), ऊषरजमीन और मार्ग (रास्ता) इनमें प्रगट होनेवाली औषध तथा जो (दीमक आदि) कीडोंकी खाई, आगसैं पजरी हुई, सरदीकी मारी, लूं आदि गरमीसैं पजरी हुई, ऐसी औषध कार्यसाधक नहीं हो । अतएव एसे स्थानकी विगडीहुई औषधोंको नहीं लानी चाहिये ।

औषध रखनेकी विधि.

धूमवर्षानिलक्लेदैःसर्वर्त्तुष्वनभिद्रुते ।
ग्राहयित्वागृहेन्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

अर्थ–अनेक प्रकारके औषध संग्रहको धूंआ वर्षा (वारिश) हवा और गीलापन वा सीडसे किसी ऋतुमें न विगडने पावे एसे उत्तमस्थानमें सावधानीके साथ रखे ।

१ अपने ग्राममैं उत्तरदिशा लेनी चाहिये ।

१ कापोती रूखडी सांपकी वमई पर उगीहुई ले, यह उस दिव्यौषधीका प्रभाव है । वह उसी स्थानकी वीर्यवान् होतीहै । परंतु अन्य औषध न लेवे । हमारे यहां औषध प्राय पंसारी अत्तार आदिसैं लेतेहैं परंतु उनको जिस औषधसे प्राय अधिक काम पडताहै उसको जानते है, वाकीमे गडवड । दूसरे यहां वैद्य क्या हकीम, अहेरिया आदिसैं औषध खरीदतेहै वह अहेरिया आदि भली बुरी पृथ्वीकी परीक्षा क्यो करने लगे, फिर मित्रहो शास्त्र, वैद्यकोहीं औषध लानेकी आज्ञा देताहै और औषधज्ञाता कोही उत्तम वैद्य लिखाहै फिर औषधपरीक्षा सहज नहींहै सो वैद्यराजजी घरमें बैठे २ ज्ञान लेवेंगे । महात्मारामजी यदि आप वैद्यवनना चाहोतो घडी दोघडी वनकी हवा खाइये ।

२ जडी बूंटियोंको डोरीमें बांधके लटकाय देवे, पत्ते आदिको और फूलोंको किसी शीशे आदिमें रखे, बीजोको बोतलमें, चूर्णको शीशीमें छालआदिके टुकडोंको कपडोमें बांधके, तेल घृत आदिको कुप्पी-या-चिकनी हांडीमें, लंबी और भारीवस्तुओंको तक्ते आदि पर रखे इसप्रकार सबको यथायोग्य पात्रमें रख उनपर नाम लिख देवे कि जिस्से मकानभी सजकर सुंदर दीखने लगे और औषधी विखरें नहीं ।

औषध रखनेका उपाय.

शीतमृत्भांडफलकशङ्कुविन्यस्तभैषजं ।
प्रशस्तायांदिशिशुचौभेषजागारमिष्यते ॥

अर्थ–औषधोंको कपडेके टुकडोंमें मिट्टीके पात्र (इमरतबान) हांडी, चीनीके पात्र, प्याले, प्याली, सकोरा, गगरा, मांट और शीशेकी बोतल, शीशा, सीसी, गिलास, रकेबी आदि। **फलक** (तक्ता, पट्टी, चौकी, संदूक, आलमारी), शंकु (कील, मेख, खूंटी, इत्यादि) में रखी हैं। औषधी जिसमें ऐसा **औषधालय** पूरब या उत्तर दिशा और पवित्रस्थानमें होना चाहिये।

शरद्यखिलकार्यार्थंग्राह्यंसरसमौषधम् ॥
विरेकवमनार्थंतुवसंतान्तेसमाहरेत् ॥ ३७ ॥

अर्थ–संपूर्ण कार्योंके वास्ते रसयुक्त औषध **शरदृतुमें** (आश्विन और कार्तिकमें) **ग्रहण** करनी चाहिये। और वमन विरेचनके वास्ते **वसंतऋतु** (फागन चैतमें) औषधी ग्रहण करे। कोई **वसंतांतके** कहनेसें ज्येष्ठ आषाढमें लेनेकी आज्ञा देते हैं। कोई **ग्रीष्ममें** मंजरीमें, **वर्षाऋतुमें** वृक्षोंके पत्ते और छालमें, और **वसंतऋतुमें** वृक्षोंकी जडमें **रस** रहता है, अतएव इनको उसी उसी ऋतुमें लेवे तो गुणकारी हो। और कोई आचार्य प्रावृट्, वर्षा, शरद्, हेमंतु, वसंत और ग्रीष्म इन ऋतुओंमें क्रमसें जड, पत्ते, छाल, दूध, गोंद, और औषधोंके फल लेवे ऐसा कहेहैं। परंतु यह मत ठीक नहीं है, क्योंकि जग सौम्य और आग्नेयके भेदसें दो प्रकारकाही है। इसीसें **सौम्य** औषध आश्विनमें और **आग्नेय** औषध वसंतऋतुमें लेनाही ठीक है।

अतिस्थूलजटायाःस्युस्तासांग्राह्यास्त्वचो-
भुवम् ॥
गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ।
महांतियेषांमूलानिकाष्ठगर्भाणिसर्वतः ।
तेषांतुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिसर्वशः ॥३८॥
न्यग्रोधादेस्त्वचाग्राह्यासारःस्याद्बीजकादितः । तालीसादेस्तुपत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः ॥ ३९ ॥
क्वचिन्मूलंक्वचित्कंदःक्वचित्पत्रंक्वचित्फलम् ।
क्वचित्पुष्पंक्वचित्सर्वंक्वचित्सारःक्वचित्त्वचः॥
चित्रकंसूरणंनिंबोवासाचत्रिफलाक्रमात् ॥
धातकीकंटकारीचखदिरः क्षीरपादपः ॥४१॥

अर्थ–लंबी और मोटी जडवाले (**बड पीपल** आदि) की **छाल** लेंनी, जिनकी छोटी **जडहो** (जैसे कटेरी धमासा आदि) उनके **सर्व अंग** अर्थात् जड, पत्ता, फूल, फल और शाखा सब लेवे, [कोई कहताहै कि बडे वृक्षोंके जडकी छाल ले, और छोटी वनस्पतियोंकी जड मात्र ले], और जगेमी लिखाहै कि जिनकी बडी जड है और चारोंओर छालसें लिपटेहुएहैं उनका **बक्कल** ले, और छोटी जडवालोंका **पंचांग** ले। तहां बड आदिकी **छाल** ले, बिजेसार आदिका **सार**, तालीस आदिके **पत्ते**, और त्रिफला आदिके **फल** लेने चाहिये। किसीकी जड, किसीका कंद, किसीका पत्र, किसीका फल, किसीका फूल, किसीका पंचांग, किसीका सार, और किसी औषधकी **छाल**, लेंनी चाहिये। तहां चित्रककी **छाल**, सूरनका **कंद**, नीमके और बांसे आदिके **पत्ते**, त्रिफलेके **फल**, धायके **फूल**, कटेरी आदिका **पंचांग**, खैरका **सार** और दूध जिनसे निकले ऐसे **वृक्षोंकी छाल** लेनी चाहिये।

१ पवित्र स्थान कहनेका यह प्रयोजन है कि वैद्यका **औषधालय** बाहर भीतरसे मिट्टी, गोबर, सपेदी आदिसें लिपा पुता होवे। मैलाकुचेला न हो। चित्रविचित्र औषधोंसें सुशोभित पटावमें उंचा हो कि जिसमें पवन आनेजाने की रोक न हो, चित्राम होरहा हो, उजले बिछैया बिछेहों, उजले पडदा पडेहों, तसवीर और झाड फानूस लगेहों, यथा स्थानपर मेज, कुरसी, टेबिल, संदूक, आलमारी, रखी हो। अनेक प्रकारके खिलौने पुस्तक आदिसे सुसज्जित होवे, अपने स्थानपर घडी रखीहो। यह आजकलके **औषधालयोंकी सजावट** है परंतु जो वैद्य साधारण है उनको केवल स्थानकी उज्ज्वलता अवश्य रखनी चाहिये।

क्वचिन्निंबस्यगृह्णीयात्पत्राभावेत्वचामपि ॥
बालंफलंतुबिल्वस्यपक्कमारग्वधस्यच ॥४२॥

अर्थ–कहीं नीमके पत्तोंके अभाव (न मिलने) में छालभी लेलेवे, वेलका कच्चाफल और अमलतास आदिका फल पक्का लिया जाताहै ।

अंगेऽनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलंसमम् ॥
पात्रेऽनुक्तेमृदःपात्रंकालेऽनुक्तेत्वहर्मुखम् ४३

अर्थ–जहां औषधका अंग न कहाहो वहांपर उसकी जड लेनी । जहां औषधोंकी तोल नहीं कही तहां सब समान भाग ले । जहां पात्र नहीं कहाहो वहांपर मिट्टीका पात्र लेवे । और जहां लेनेका काल नहीं कहा तहां प्रातःकाल जानना ।

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु ।
विनाविडंगकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः
पुराणंतुप्रशस्तंस्यात्तांबूलंकांजिकंतथा ॥
शुष्कंनवीनद्रव्यंतुयोज्यंसकलकर्मसु ॥४५॥
आर्द्रंतुद्विगुणंयुंज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः ॥
गुडूचीकुटजोवासाकूष्मांडश्चशतावरी ४६
अश्वगंधासहचरःशतपुष्पाप्रसारिणी ॥
प्रयोक्तव्याःसदैवार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ४७
वासानिंबपटोलकेतकबलाकूष्मांडकंदीवरी
वर्षाभूकुटजाश्वकंदसहिताःसापूतिगंधामृताः
पैंद्रीनागबलाकुरंटकपुरोक्षत्राम्रतासर्वदा
सार्द्रापवतुनक्वचिद्द्विगुणिताःकार्येषुयोज्याबुधैः ॥ ४८ ॥
घृतंतैलंचपानीयंकषायंव्यंजनादिकम् ॥
पक्त्वाशीतीकृतंचोष्णंतत्सर्वस्याद्विषोपमम्

अर्थ–संपूर्ण कर्मोंमें सब औषध नवीन लेवे, परंतु वायविडंग, पीपल, गुड, धान्य (गैहूं , चावल आदि) घी और सहत ए सब पुरानें लेवे, नए न लेय । पान और कांजी ए पुरानें लेना उत्तम है [तथा मंडूर अनारदाना कपूर एभी पुराने लेने] । सूखी और नवीन द्रव्य सर्व कर्ममें लेनी । और जो औषधी गीली है उसको दूनी लेवे, यह सर्वत्र निश्चय है । असगंध, कटसैरया (पियावांसा), सौंफ, प्रसारणी, ए औषध सदैव गीली ले, परंतु दूनी कदाचित् न करे । अडूसा, नीम, पटोलपत्र, केतकी, बला (खिरेटी), पेठा, नीलाकमल, सतावर, सांठ (गदहपूर्ना), इन्द्रजौ, कंद, प्रसारणी, गिलोय, इन्द्रायण, नागबला (गुलसकरी), पियावांसा, गूगल, सौंफ [हींग, अदरख, ईख] और आंमले, ए आर्द्र होनेपरभी बुद्धिमान् वैद्य कार्यमें दूने न लेवे । घृत, तेल, जल, काढा और भोजनके पदार्थ (दालभात, साग, रोटी) इनको एकवार सिद्ध करके शीतल होनेपर फिर यदि गरम करे तो विषतुल्य होजाते है, इस वास्ते दूसरे गरम न करे ।

द्रव्योंकी परीक्षा.

सूक्ष्मास्थिमांसलापथ्यासर्वकर्मणिपूजिता ।
क्षिप्तांभसिनिमज्जेद्याभल्लातक्यस्तथोत्तमाः॥
वराहमूर्द्धवत्कंदोवाराहीकंदसंज्ञकः ॥
सौवर्चलंतुकाचाभंसैंधवंस्फटिकप्रभम् ५१
सुवर्णच्छविकंज्ञेयंस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् ॥
इंद्रपुष्पप्रतीकाशामनोह्वाचोत्तमामता ॥५२॥
श्रेष्ठंशिलाजतुज्ञेयंप्रक्षिप्तंनविशीर्यते ॥
तोयपूर्णेकांस्यपात्रेप्रतानेनविवर्द्धते ॥ ५३ ॥
कर्पूरस्तुवरःस्निग्धपलासूक्ष्मफलावरा ॥
श्वेतचंदनमत्यंतंसुगंधिगुरुपूजितम् ॥ ५४ ॥
रक्तचंदनमत्यंतंलोहितंप्रवरंमतम् ।
काकतुंडनिभःस्निग्धोगुरुःश्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥
सुगंधिलघुरूक्षंचसुरदारुवरंमतम् ॥
सरलंस्निग्धमत्यर्थंसुगंधिचगुणावहम् ॥५६॥
अतिपीताप्रशस्तातुज्ञेयादारुनिशाबुधैः ॥
जातीफलंगुरुस्निग्धंसमंशुभ्रांतरंवरम् ॥५७॥

---

१ सर्वाणिचार्द्राणिनवौषधानिसुवीर्यवंतीनिवदंति धीराः । सर्वाणिशुष्काणितुमध्यमानिशुष्काणिजीर्णानिच निष्फलानि ॥ १ ॥ वासककुटजगुडूचीवासाकूष्मांडकाक्षिप्रसपर्णी । इत्यादितुनित्यार्द्रागुणवच्छुष्कंयदातदाद्विगुणम् ॥ २ ॥

मुद्वीकासोत्तमाज्ञेयायास्याद्गोस्तनसंनिभा ॥
करमर्दफलाकारामध्यमासाप्रकीर्त्तिता॥५८॥
खंडंतुविमलंश्रेष्ठंचंद्रकांतसमप्रभम् ॥
गव्याज्यसदृशंहव्यंगंधंमधुतरंमतम् ॥ ५९ ॥

अर्थ-हरड छोटी और मोटी छालकी उत्तम होती है । जो जलमें गेरनेसें डूब जावे वो भिलावा उत्तम होताहै । वाराहके मस्तकके समान जो कंद हो वह वाराही कंद कहाता है । कांचके समान संचरनोन उत्तम होताहै । स्फटिकमणिके समान चमकना सैंधानिमक उत्तमहै । सोनामक्खी सुवर्णके समान पीला उत्तम होता है । मनसिल इन्द्रपुष्पके समान उत्तम होतीहै । उत्तम शिलाजीत वो है जो गिरनेपर फैले नहीं । और जलपूर्ण कांसेके पात्रमें डालनेसे तंतु तंतुसे छूटें । कषेले स्वादकी और चिकनी कपूर उत्तम होतीहै । छोटे फलकी इलायची उत्तम होती है । जिसमें अत्यंत सुगंध आतीहो और भारी हो वो सफेदचंदन उत्तम है । अत्यंत लाल लालचंदन उत्तम होताहै । जो कौएके मुखके समान स्निग्ध और भारी ऐसा अगर उत्तम होताहै । जिसमें सुगंध आतीहो, हलकी, रूक्ष ऐसी देवदार उत्तम होतीहै । अत्यंत चिकनी और सुगंधित ऐसी सरल (छड) उत्तम होताहै । अतिपीली दारुहलदी पंडितोंने उत्तम कहीहै । भारी, चिकना, गोल और तोडनेपर भीतरसें सपेद निकले ऐसा जायफल उत्तम होता है । गौके थनोंके आकार मुनक्कादाख उत्तम होती है । और करौंदा फलके समान कोनेवाली करोंदीदाख मध्यम है । जो चंद्रकांतिके समान सपेद और निर्मलहो वह खांड उत्तम होतीहै । गौके घीके समान रुचिकारी और सुगंधदार सहत उत्तम होता है ।

स्वभावसें हितकारी.

शालीनांलोहितःशालिःषष्टिकेषुचषष्टिकः ॥
शूकधान्येष्वपियवोगोधूमःप्रवरोमतः ॥६०॥
शिंबीधान्येवरोमुद्गोमसूरआढकीतथा ॥
रसेषुमधुरःश्रेष्ठोलवणेषुचसैंधवः ॥ ६१ ॥
दाडिमामलकंद्राक्षाखर्जूरंचपरूषकम् ॥
राजादनंमातुलुंगंफलवर्गेषुशस्यते ॥ ६२ ॥
पत्रशाकेषुवास्तूकंजीवंतीपोतिकावरा ॥
पटोलंफलशाकेषुकंदशाकेषुसूरणम् ॥ ६३ ॥
एणःकुरंगोहरिणोजांगलेषुप्रशस्यते ॥
पक्षिणांतित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येषुरोहितः ६४
हरिणस्ताम्रवर्णःस्यादेणःकृष्णतयामतः ॥
कुरंगस्ताम्रउद्दिष्टोहरिणःकृत्तिकोमहान् ६५
जलेषुदिव्यंदुग्धेषुगव्यमाज्येषुगोभवम् ॥
तैलेषुतिलजंतैलमैक्षवेषुसिताहिता ॥ ६६ ॥

अर्थ-शाली चावलोमें लाल चावल उत्तम होतेहै । षष्टिक चावलोमें सांठी (बारीक) चावल उत्तम, शूक (कांटेवाले) धान्योंमें जौ और गेंहूं उत्तम है । शिंबी (फली) के धान्योंमें मूंग, मसूर, अरहर, उत्तम है । रसोंमें मीठारस, निमकोंमें सैंधानिमक, फलवर्गोंमें अनार, आंवले, दाख (अंगूर), खिजूर (छुहारे), फालसे, खिरनी, और बिजौरा उत्तम है । पत्तेके सागमें वथुएका साग, जीवंती, पोई, ए उत्तम है । फलके सागोंमें परवल, कंदके सागोंमें सूरण (जमींकंद), जंगली जीवोंमें काला, लाल और चितकबरा हिरण उत्तम है । पखेरुओंमें तीतर और लवा, एवं मछलियोंमें रोहू मछली श्रेष्ठ है । तांबेके रंग हिरण कहाताहै । काले हिरणको एण कहते है । और कुछ २ लालरंगके हिरणको कुरंग बोलते है । जलोंमें आकाशका जल उत्तम है । दूधोंमें गौका दूध उत्तम है, घृतोंमें गौका घृत श्रेष्ठ है । तेलोंमें तिलीका तेल उत्तम है, और जितने ईखके पदार्थ हैं उनमें मिश्री उत्तम है ।

स्वभावसें अहित.

शिंबीषुमाषान्ग्रीष्मर्त्तौलवणेष्वौषरंत्यजेत् ॥
फलेषुलकुचंशाकेसार्षपंनहितंमतम् ॥ ६७ ॥
गोमांसंग्राम्यमांसेषुनहितंमहिषीवसा ॥
मेषीपयःकुसुंभस्यतैलंत्याज्यंचफाणितम् ६८

अर्थ-सेम (फलीयोंके) अन्नमें उडद अहितकारी है, ऋतुओंमें ग्रीष्मऋतु, निमकोंमें ऊषरका निमक अर्थात् रेहका निमक त्याज्य है । फलोंमें कटहर, सागोंमें सरसोंका साग हितकारी नहीं है ।

ग्रामसंचारी जीवोंके मांसोंमें गौका मांस, वसाओंमें भैंसकी वसा हितकारी नहींहै । दूधोंमें भेडका दूध, और तेलोंमें कसूम (करड) का तेल, और मिठाइयोंमें फाणित (राव) त्याज्य है।

संयोगविरुद्ध.

मत्स्यमानूपमांसंचदुग्धयुक्तंविवर्जयेत् ॥
कपोतंसर्षपस्नेहभर्जितंपरिवर्जयेत् ॥ ६९ ॥
मत्स्यानिक्षौविकारेणतथाक्षौद्रेणवर्ज्जयेत् ।
सक्तून्मांसपयोयुक्तानुष्णैर्दधिविवर्जयेत् ॥
उष्णैर्भौऽम्बुनाक्षौद्रंपायसंकृशरान्वितम् ।
रंभाफलंत्यजेत्तक्रदधिबिल्वफलान्वितम् ॥
दशाहमुषितंसर्पिःकांस्येमधुघृतंसमम् ॥
कृतान्नंचकषायंचपुनरुष्णीकृतंत्यजेत् ॥७२॥
पक्वन्नबहुमांसानिविरुध्यंतेपरस्परम् ॥
मधुसर्पिर्वसातैलंपानीयंवापयस्तथा ॥ ७३ ॥

अर्थ–मछलीका मांस और जलसमीप रहनेवाले जीवोंका मांस दूधकेसाथ भक्षण करना संयोगविरुद्ध है। कपोत (कबूतर) अथवा (कबूतरका भेद पिंडु कियाके) मांसको सरसोंके तेलमें भूंनना संयोगविरुद्ध है । मच्छीको मिठाईके साथ अथवा सहतके साथ खाना वार्जित है । मांस और दूधयुक्त सत्तू नहीं खाना। एवं गरम पदार्थोंके साथ दही खाना त्याज्य है। गरम पदार्थ और वर्षाके जलयुक्त सहत त्याज्य है। खिचडीके साथ खीर खाना वार्जित है । छाछ, दही और बेलफल इनके संग केलेकी गहर न खाय । कांसेके पात्रमें दसदिन धरारहा ऐसा घी खाना निषेध है । घी सहत बराबर मिले हुए खाना बुरा है, भोजनके पदार्थ और काढेको फिर दूसरे गरमकरके खाना त्याज्य है। तथा बहुतसे मांसोंको मिलानेसैं वो आपसमें एकसैं दूसरा विरुद्ध हो जाताहै । एवं सहत, घी, वसा, तेल, इनको पानी अथवा दूधके साथ मिलाना सयोगविरुद्ध हो जाताहै ।

भेषजग्रहणमें संकेत.

लवणंसैंधवंप्रोक्तंचंदनंरक्तचंदनम् ॥
चूर्णलेहासवस्नेहाःसाध्याधवलचंदनैः ॥७४॥
कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचंदनम् ।
अंतःसंमार्जनेज्ञेयाह्यजमोदायवानिका ॥
बहिःसंमार्जनेसैवविज्ञातव्याजमोदिका ॥
पयःसर्पिःप्रयोगेषुगव्यमेवहिगृह्यते ॥
शकृद्रसोगोमयकोमूत्रंगोमूत्रमुच्यते ॥ ७६ ॥

अर्थ–जहां केवल लवण लेना लिखाहै तहां सैंधानिमक लेना, चंदनकी जगह लालचंदन लेना । तथा चूरन, अवलेह, आसव और तेल ए सपेदचंदन डालके बनावे । काढा और लेप इनमें बहुधा लालचंदन लेना । अंतःसंमार्जन (जो खानेसै पेटको शुद्ध करे) ऐसी औषधोंमें अजमोदके स्थानमें अजमायन लेनी । और बाहिःसंमार्जन (जो देहके ऊपर लगायीजाने आदिसै देहको शुद्ध करे) ऐसी औषधियोंमें अजमोदके स्थानमें अजमोदही डालना । जहां केवल दूध और घी मात्र लेना लिखा है उस जगे गौके दूधका घी लेवे, जहां शकृतरस अर्थात् लीद गोवर आदिका रस लेना कहा है वहांपर गौके गोवरका रस ले । जहां केवल मूत्र लेना कहाहै वहांपर गोमूत्र डालना चाहिये ।

औषधप्रतिनिधि.

चित्रकाऽभावतोदंतीक्षारःशिखरिजोऽथवा
अभावेधन्वयासस्यप्रक्षेप्यातुदुरालभा ॥७७॥
तगरस्याप्यभावेतुकुष्टंदद्याद्भिषग्वरः ॥
मूर्वाभावेत्वचाग्राह्याजिंगिनीप्रभवाबुधैः ॥७८
अहिंस्रायाअभावेतुमानकंदःप्रकीर्तितः ॥
लक्ष्मणायाअभावेतुनीलकंठशिखामता ७९
बकुलाऽभावतोदेयंकल्हारोत्पलपंकजम् ॥
नीलोत्पलस्याभावेतुकुमुदंदेयमिष्यते ॥८०॥
जातीपुष्पंनयत्रास्तिलवंगंतत्रदीयते ॥
अर्कपर्णादिपयसोह्यभावेतद्रसोमतः ॥ ८१ ॥
पौष्कराभावतःकुष्टंतथालांगल्यभावतः ॥
स्थौणेयकस्याभावेतुभिषग्भिर्दीयतेगदः ॥८२

१ जैसें हिंगाष्टक चूर्णमें अजमोद लेना कहाहै वहांपर अजमायन डालनी चाहिये तो ठीक २ गुण करे ।

चविकागजपिप्पल्यौपिप्पलीमूलवत्स्मृता ॥
अभावेसोमराज्यास्तुप्रपुन्नाटफलंमतम्॥८३॥
यदिनस्याद्दारुनिशातदादेयानिशाबुधैः ॥
रसांजनस्याभावेतुसम्यग्दार्वीप्रयुज्यते॥८४॥
सौराष्ट्र्यभावतोदेयास्फटिकातद्गुणाजनैः ॥
तालीसपत्रकाभावेस्वर्णतालीप्रशस्यते॥८५॥
भार्ङ्ग्यभावेतुतालीसंकंटकारीजटाऽथवा ॥
रुचकाभावतोदद्याल्लवणंपांशुपूर्वकम् ॥ ८६॥
अभावेमधुयष्ट्यास्तुधातकींचप्रयोजयेत् ॥
अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्यमिष्यते॥८७॥
द्राक्षायदिनलभ्येतप्रदेयंकाश्मरीफलम् ॥
तयोरभावेकुसुमंबंधूकस्यमतंबुधैः ॥ ८८ ॥
लवंगकुसुमंदेयंनखस्याभावतःपुनः ॥
कस्तूर्यभावेकंकोलंक्षेपणीयंविदुर्बुधाः ॥८९॥
कंकोलस्याप्यभावेतुजातीपुष्पंप्रदीयते ॥
सुगंधिमुस्तकंदेयंकर्पूराभावतोबुधैः ॥९०॥
कर्पूराभावतोदेयंग्रंथिपर्णविशेषतः ॥
कुंकुमाभावतोदद्यात्कुसुंभकुसुमंनवम् ९१
श्रीखंडचंदनाभावेकर्पूरंदेयमिष्यते ॥
अभावेत्वेतयोर्वैद्यःप्रक्षिपेद्रक्तचंदनम् ॥९२॥
रक्तचंदनकाभावेनवोशीरंविदुर्बुधाः ॥
मुस्ताचातिविषाभावेशिवाभावेशिवामता ॥
अभावेनागपुष्पस्यपद्मकेशरमिष्यते ॥
मेदाजीवककाकोलीऋद्धिवृद्धिद्वयेपिवाऽसति ॥
वरीविदार्यश्वगंधावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ॥
वाराह्यश्चतथाभावेचर्मकारालुकोमतः ॥
वराहीकंदसंज्ञस्तुपश्चिमेगृष्टिसंज्ञकः ॥ ९५ ॥
वाराहीकंदएवान्यश्चर्मकारालुकोमतः ॥
अनूपसंभवेदेशेवराहइवलोमवान् ॥ ९६ ॥
भल्लातकासहत्वेतुरक्तचंदनमिष्यते ॥
भल्लाताभावतश्चित्रंनलश्चेक्षोरभावतः ॥९७॥
सुवर्णाभावतःस्वर्णमाक्षिकंप्रक्षिपेद्बुधः ॥
श्वेतंतुमाक्षिकंज्ञेयंबुधैरजतवद्भवम् ॥ ९८ ॥
माक्षिकस्याप्यभावेतुप्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम् ॥
सुवर्णमथवारौप्यंमृतंयत्रनलभ्यते ॥ ९९ ॥
तत्रकांतेनकर्माणिभिषक्कुर्याद्विचक्षणः ॥
कांताभावेतीक्ष्णलोहंयोजयेद्वैद्यसत्तमः २००
अभावेमौक्तिकस्यापिमुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत्॥
मधुयत्रनलभ्येततत्रजीर्णगुडोमतः ॥ १ ॥
मत्स्यंड्यभावतोदद्युर्भिषजःसितशर्कराम् ॥
अलंभवेसितायास्तुबुधैःखंडंप्रयुज्यते ॥
क्षीराभावेरसोमौद्गोमासूरोवाप्रदीयते ॥ २ ॥
अत्रप्रोक्तानिवस्तूनियानितेषुचतेषुच ॥
योज्यमेकतराभावेपरंवैद्येनजानता ॥ ३ ॥

अर्थ–चित्रकके अभाव (न मिलने) में **दंती** ले अथवा ओंगाका क्षार मिलावे । **धमासेके** अभावमें **जवासा** डाले । **तगरके** अभावमें **कूठ** लेना । **मूर्वाके** अभावमें **जिंगनीकी** त्वचा लेय **अहिंस्राके** अभावमें **मानकंद** लेवे । **लक्ष्मणा औषधके** अभावमें **मोरसिखा** मिलावे । **मोरसिखीके** अभावमें **लालकमल** नीलाकमल डाले । **नीलेकमलके** अभावमें **कमोदनी** (बघोंला) का फूल ले । जहांपर **चमेलीका** फूल न मिले तहां **लौंग** डाले । जहां **आक** आदिका दूध न मिले उस जगे आकआदिके पत्तोंका **रस** निकालके कार्य करे । **पुहकरमूलके** और **कलियारीके** अभावमे **कूठ** लेवे । **थूनेरके** अभावमें वैद्य **कूठ** मिलावे । जहां **पीपरामूल** न मिले वहां **चव्य** और **गजपीपल** डालनी । **बावचीके** अभावमें **पमारके** बीज लेवे । **दारुहलदीके** अभावमें **हलदी, रसोतके** अभावमें **दारुहलदी, सोरठी** मिट्टीके अभावमें **फिटकरी, तालीसपत्रके** अभावमें **स्वर्णतालीस, भारंगीके** अभावमें **तालीस,** अथवा **कटेरीकी** जड, **रुचक** (चौहार) के अभावमें **रेहका** निमक ले । **मुलहटीके** अभावमें **धातकीपुष्प** ले । **अमलवेतके** अभावमें **चूका, दाखके** अभावमें **कंभारीका फल, दाख** और **कंभारी** दोनोंके अभावमें **बंधुकका** फूल, **नखद्रव्यके** अभावमें **लौंग, कस्तूरीके** अभावमें **कंकोल, कंकोलके**

अभावमें चमेलीका फूल, कपूरके अभावमें सुगंधमोथा अथवा कपूरके अभावमें गठौना देवे। केशरके अभावमें कसूमके नए फूल ले, श्रीखंड (सपेद चंदन) के अभावमें कपूर देवे। केशर और चंदनके अभावमें लालचंदन ले। लालचंदनके अभावमें नई खस ले। अतीसके अभावमें नागरमोथा। हरडके अभावमें आंवला। नागकेशरके अभावमें कमलकी केशर ले। मेदा, महामेदाके अभावमें सतावर। जीवक ऋषभकके अभावमें विदारीकंद। काकोली, क्षीरकाकोलीके अभावमें असगंध और ऋद्धिवृद्धिके अभावमें वाराहीकंद डाले। वाराहीकंदके अभावमें चर्मकारालु, "वाराहीकंदकी पश्चिमके देशोंमें गृष्टि (गेंठी) कहतेहैं। और वाराही कंदकाही भेद चर्मकारालु जानना यह अनूप देशमें उत्पन्न होता है और इसके उपर सूअर केसे बाल होते हैं।" भिलाएके अभावमें लालचंदन, अथवा भिलाएके अभावमें चित्रक, ईखके अभावमें नरसल, सुवर्णके अभावमें सोनामक्खी, चांदीके अभावमें रूपामक्खी ले। दोनों माक्षिकोंके अभावमें स्वर्णगेरू, सुवर्णभस्म और चांदीकी भस्मके अभावमें कांतलोहकी भस्म ले। कांतलोहके अभावमें तीक्ष्ण (खेरी) लोह, मोतीके अभावमें मोतीकी सीप, जहां सहत न मिले उसजगे पुराना गुड, मिश्रीके अभावमें सपेद बूरा ले। सपेदबूरेके अभावमें सपेदखांड ले। दूधके अभावमें मूंगका रस ले अथवा मसूरका रस लेवे। इस कहीहुई प्रतिनिधि एकके अभावमें वैद्य उसकी दूसरी औषध मिलावे, जैसें चित्रकके अभावमें दंती और दंतीके अभावमें चित्रक लेवे। इसीप्रकार औरभी जानना।

रसवीर्यविपाकाद्यैःसमंद्रव्यंविचिंत्यच ॥
युंज्याद्विविधिमन्यत्तद्द्रव्याणांतुरसादिवित्॥
योगेयदप्रधानंस्यात्तस्यप्रतिनिधिर्मतः ॥
वस्तुप्रधानंतस्यापिसदृशंनैवगृह्यते ॥ ५ ॥
व्याधेरयुक्तंयद्द्रव्यंगणोक्तमपितत्त्यजेत् ॥
अनुक्तमपियुक्तंयद्योजयेत्तद्रसादिवित् ॥६॥

अर्थ-रस वीर्य विपाकज्ञाता वैद्य यदि किसी रोगकी कोई औषध न मिले और जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही है तो उस द्रव्यके रस वीर्य विपाकादिकोंके समान दूसरी औषधको विचार कर प्रयोगमें मिलावे। केवल इस प्रतिनिधिके भरोसेंही न रहे। अब कहतेहैं कि प्रयोगमें जो औषधी अप्रधान हैं उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषध मिलावे। और जो प्रधान औषधी है उसकी प्रतिनिधि नहीं लीजाती। (जैसें मंजिष्ठादि काढेमें अन्य पीपल त्रिफला आदि अप्रधान औषध हैं उनके अभावमें उसकी प्रतिनिधि औषध मिलाय दे; परंतु मुख्य मजीठकी प्रतिनिधि नहीं लीनी जावेगी)। जो प्रयोगमें कहीहुई औषध रोगको अहितहै उसको उस गणमेंसें निकाल डाले। और जो रोगकी नाशक है परंतु उसका उस गणमें पाठ नहीं कहा हो तो रसादिवित् वैद्य उसमें मिलाय देवे। आगे इसी निघंटमें हम जो प्रतिनिधि लिखेंगे वो इनसे पृथक् है।

द्रव्यगतपंचपदार्थ.

द्रव्येरसोगुणोवीर्यंविपाकःशक्तिरेवच ॥
पदार्थाःपंचतिष्ठंतिस्वंस्वंकुर्वंतिकर्मच ॥ ७ ॥
रसाःस्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः ॥
षड्द्रव्यमाश्रितास्तेचयथापूर्वंबलावहाः॥८॥
तत्राद्यामारुतंघ्नंतित्रयस्तिक्तादयःकफम् ॥
कपायतिक्तमधुराःपित्तमन्येतुकुर्वते ॥ ९ ॥
येरसावातशमनाभवंतियदितेषुवै ॥
रौक्ष्यलाघवशैत्यानिनतेहन्युःसमीरणम् १०
येरसाःपित्तशमनाभवंतियदितेषुवै ॥
तीक्ष्णोष्णलघुताचैवनतेतत्कर्मकारिणः ॥११
येरसाःश्लेष्मशमनाभवंतियदितेषुवै ॥
स्नेहगौरवशैत्यानिनतेहन्युःकफंतदा ॥ १२ ॥

अर्थ-द्रव्य (औषध) मे रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति, ए पांच पदार्थ रहते हैं-ए अपने २ कर्मोंको करेहैं।

रस-स्वादु, खट्टा, लवण, कडुआ, चरपरा और कषेला ए छःरस द्रव्यों (औषधों) में रहते हैं।

इनमें पहलेसें दूसरा हीनबल है। जैसे सबसें बली मिष्टरस और सबसें निर्बल कषेला रस यह वाग्भट कहता है। तहां पहले तीन (स्वादु, अम्ल और लवण) ए वादीको नष्ट करतेहैं और तिक्त, कटु, कषाय, ए तीनों कफको दूर करे। एवं कषाय, तिक्त और मधुर ए पित्त नष्ट करतेहैं। बाकीके अम्ल, कटु और कषाय ए पित्तको करतेहैं। जो रस वादीके शमन करनेवालेहैं–परंतु उनमें रौक्षता (रूखापन), लाघव (हलकापन) और शीतलता ए गुण होवेंगे वो वादीको कदाचित् नाश नहीं करनेके। जो रस पित्तके शमन करनेवाले हैं यदि उनमें तीक्ष्णता, उष्णता और लघुता ए गुण होयगे तो वो पित्तको नाश नहीं करेंगे। इसीप्रकार जो रस कफनाशक है उनमें यदि स्नेह (चिकनाई), गौरव (भारीपना) और शीतलता गुण होवेंगे तो वो कफको नष्ट नहीं करनेके।

मधुररसके गुण.

मधुरोहिरसःशीतोधातुस्तन्यबलप्रदः॥
चक्षुष्योवातपित्तघ्नःकुर्यात्स्थौल्यमलक्रमीन्
रसेषुप्रवरश्चापिस्निग्धःप्रीत्यायुषोर्हितः॥
बालवृद्धक्षतक्षीणवर्णकेशेंद्रियौजसाम्॥१४॥
प्रशस्तोबृंहणःकंठ्योगुरुःसंधानकृन्मतः॥
विषघ्नःपिच्छिलश्चापिस्निग्धःप्रीत्यायुषोर्हितः

अर्थ–मिष्टरस शीतल, धातु और स्तनसंबंधी दूध और बलको बढावे, नेत्रोंको हित, वातपित्तनाशक, यह स्थूलता, मलसंग्रह और कृमिरोगको करेहै। सब रसोंमें (मीठा रस) श्रेष्ठ है। चिकनाई, प्रीति, आयु, बालक, वृद्ध, क्षतक्षीण, वर्ण, केश (बाल), इन्द्री और ओज इनको हितकारी है। बृंहण (पुष्टाई करता), कंठको शुद्ध करे, भारी और टूटेको जोडनेवाला, विषनाशक, पिच्छलता (गिलगिलापन) इनको करेहे।

अतियुक्तमधुर रसके अवगुन.

सोऽतियुक्तोज्वरश्वासगलगंडार्बुदक्रमीन्।
स्थौल्याग्निमांद्यमेहांश्चकुर्यान्मेदःकफामयान्॥१६॥

अर्थ–यदि मिष्टरसका अत्यंत सेवन करें तो ज्वर, श्वास, गलगंड, अर्बुद, कृमिरोग, स्थूलता, मंदाग्नि, प्रमेह, तथा मेद और कफके रोगोंको करेहै।

अम्लरसके गुण.

रसोऽम्लःपाचनोरुच्यःपित्तश्लेष्मास्रदोलघुः
लेखनोष्णोबहिःशीतःक्लेदनःपवनापहः १७
स्निग्धस्तीक्ष्णःसरःशुक्रविबंधानाहदृष्टिहा।
हर्षणोरोमदंतानामक्षिभ्रूविनिकोचनः॥१८॥

अर्थ–अम्ल (खट्टा) रस–पाचक, रुचिकारी, पित्त, कफ, रुधिरका करनेवाला, हलका, लेखन, गरम, स्पर्श करनेसें शीतल, क्लेदनकारी और वादीको नाश करेहै। स्निग्ध, तीक्ष्ण, सर (दस्तावर) वीर्य, विबंध, अफरा, नेत्रदृष्टि इनको नष्ट करनेवाला। रोमांच, दांतोंको हर्षदाता है। एवं नेत्र-भोहोंको संकोचन करताहै।

अतियुक्तअम्लरसके अवगुण.

सोऽतियुक्तोभ्रमंकुर्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान्
कंडुपांडुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् १९

अर्थ–अत्यंत खट्टे रसके सेवन करनेसें भ्रम, प्यास, दाह, तिमिर, ज्वर, खुजली (खारिश) पीलिया, वीसर्प, सूजन, विस्फोट और कुष्ठरोग इनको करेहै।

लवणके गुण.

लवणःशोधनोरुच्यःपाचनःकफपित्तदः॥
पुंस्त्ववातहरःकायशैथिल्यमृदुताकरः॥
चक्षुर्नास्यास्यजलदः कपोलगलदाहकृत् २०

अर्थ–लवण अर्थात् निमकीन रस मलको शुद्ध करे। रुचिकारी, पाचन, कफपित्तका देनेवाला, पुरुषार्थ और वादीको हरनेवाला, देहमें शिथिलता (ढीलापना) और नम्रता करेहै। नेत्र, नाक, मुख, इनमें जलका लानेवाला, एवं कपोल (गाल) और गलेमें दाह करेहै।

अतियुक्त लवणके दोष.

सोतियुक्तोक्षिपाकास्रपित्तकोठक्षताविकृत्॥
बलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः॥२१॥

अर्थ–अत्यंत निमक खानेसें नेत्रपाक, रक्त-

पित्त, कोठ और क्षतादिरोगोंको करे । गुजलट, सपेदवाल, बालोंका उड जाना, कुष्ठ, वीसर्प और प्यास इनको करैहै ।

कटुरसके गुण.

कटुरुष्णश्चतीक्ष्णश्चविशदोवातपित्तकृत् ॥
श्लेष्महृल्लघुराग्नेयःकृमिकंडूविषापहः ॥२२॥
रूक्षःस्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्यापकर्षणः
अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिव्हाश्चोद्वेजकोमतः
दीपनःपाचनोरुच्योनासिकाशोषणोभृशम्॥
क्लेदमेदोवसामज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः ॥
स्रोतःप्रकाशकोरूक्षोमेध्योवर्चोविबंधकृत् ॥

अर्थ-कटु (चरपरा) रस गरम, विशद (फैलनेवाला) वातपित्तकर्त्ता, कफ हरणकारी, हलका, इसमें अग्निका अंश अधिक है । कृमि, कंडु और विषरोगको दूर करे, रूखाहै । स्त्रीके दूधको सुखाता है; मेदा और स्थूलताको हरण करता; आंसू लानेवाला; नाक, मुख, नेत्र और जीभको उद्वेग करता; दीपन, पाचन, रुचिकारी, अत्यंत नाकको सुखानेवाला; क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, मल और मूत्रोंका सुखानेवाला । छिद्रोंको खोलनेवाला, रूखा, बुद्धिवर्द्धक और मलको रोकनेवाला है ।

अतिसेवितकटुरसके दोष.

सोऽतियुक्तोभ्रांतिदाहमुखताल्वोष्ठशोषकृत्
कंठादिपीडामूर्च्छांतर्दाहदोबलकांतिहृत्२५

अर्थ-कटु (तीक्ष्ण) रसके अत्यंत सेवन करनेसैं भ्रांति, दाह करे, मुख, तालु, होठ, इनको सुखावे । कंठमें पीडा करे, मूर्च्छा और अंतर्दाहको करे, तथा बल और कांतिको हरण करे है ।

तिक्तरसके गुण.

तिक्तःशीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफान्जयेत्। कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः२६
रुच्यःस्वयमरोचिष्णुःकंठस्तन्यविशोधनः ।
वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरूक्षणोलघुः ॥

अर्थ-तिक्त (कडवा) रस शीतल, प्यास, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ, कृमि, कुष्ठ, विष, उत्क्लेद, दाह और रुधिरकी बिमारी इनको नाश करे । आप अरुचिकारीभी होकर अरुचि वालेको रुचि प्रगट करे । कंठ और स्त्रीके दूध दोनोंको शोधन करैहै । वातकारी, अग्निबढावे, नासिकाको सुखावे, रूखा और हलका है ।

अतिसेवितातिक्तरसके दोष.

सोऽतियुक्तशिरःशूलमन्यास्तंभश्रमार्तिकृत्
कंपमूर्च्छातृषाकारी बलशुक्रक्षयप्रदः ॥२८॥

अर्थ-तिक्तरसके अत्यंत सेवनसैं मस्तकशूल, गरदनका स्तंभ, श्रम, पीडा, कंप, मूर्च्छा और तृषा इन रोगोंको करे, बल और शुक्रका क्षय करनेवाला है ।

कषेलेरसके गुण.

कषायोरोपणोग्राहीस्तंभनःशोधनस्तथा ।
लेखनःपीडनःसौम्यःशोषणोवातकोपनः ॥
कफशोणितपित्तघ्नोरूक्षःशीतोलघुर्मतः ।
त्वक्प्रसाधनआमस्यस्तंभनोविषदोमतः ॥
जिह्वायाजाड्यकृत्कंठस्रोतसांचविबंधकृत्

अर्थ-कषेला रस रोपण (घावको भरनेवाला) मलबद्धक, अंगोंको स्तंभनकारी, व्रणको शोधनकर्त्ता, व्रणादि पर उठेहुए मांसको छीलनेवाला, पीडनकर्त्ता, शीतल, चंद्रमासे उत्पन्नहुआ है, और व्रण मज्जादिकोंको शोष करता, वादीको कुपित करैहै; कफ, रुधिर और पित्तको नाश करे, रूक्ष, शीतल और हलका है; त्वचाको सुधारनेवाला, आमका स्तंभक, फैलनेवाला, जीभको जड करता, कंठ और छिद्रोंको रोकनेवाला है ।

अतिसेवितकषेलेरसके दोष.

सोतियुक्तोग्रहाध्मानहृत्पीडाक्षेपणादिकृत् ॥

अर्थ-कषेले रसका अत्यंत सेवन करना ग्राही, अफरा, हृदयकी पीडा और क्षेपण (गिरना) इत्यादि रोगोंको करे ।

पूर्वोक्त रसोंमें विचित्रता.

मधुरंश्लेष्मलंप्रायोजीर्णशालियवादृते ।
मुद्गाद्गोधूमतःक्षौद्रात्सितायाजांगलामिषात्
अम्लंपित्तकरंप्रायोविनाधात्रींचदाडिमम् ।
लवणंप्रायशोक्ष्णेषिनेत्रयोःसैंधवंविना ॥ ३३ ॥

प्रायःकटुतथातिक्तमवृष्यंवातकोपनम् ॥
शुंठीकृष्णारसोनानिपटोलममृतांविना॥३४॥

अर्थ–यावन्मात्र मीठे रसके पदार्थ हैं सब कफकारी हैं, परंतु उनमें पुराने चावल, जौ, मूंग, गेंहू, सहत, सपेदबूरा, वा मिश्री और जंगली जीवोंका मांस ए कफकारी नहीं हैं । खट्टे पदार्थ सब पित्त करता हैं, परंतु उनमें आंवले और अनार ए पित्त नहीं करते । निमक सब नेत्रोंको बिगाडनेवाले हैं, परंतु उनमें सैंधानिमक नेत्रनाशक नहीं है । और प्राय चरपरे और कडवे पदार्थ सब अवृष्य और वातको कुपित करनेवाले है, परंतु उनमें सोंठ, पीपल, लहसन, परवल और गिलोय ए अवृष्य और वात कुपित कर्त्ता नहीं है। चरकमेंभी लिखाहै जैसें–

पिप्पलीनागरंवृष्यंकटुचावृष्यमुच्यते ॥
प्रायशःस्तंभनंप्रोक्तं कषायमभयांविना॥३५॥
सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणाःषड्रससंभवाः ॥
रसानांयोगतस्तुस्यादन्यएवगुणोदयः ॥३६॥
संयोगाद्विषतांयातिसममाज्येनमाक्षिकम् ॥
अमृतत्वंविषंयातिसर्पदष्टस्यवैयथा ॥ ३७ ॥

अर्थ–पीपल, सोंठ ए वृष्य हैं; बाकी सब चरपरे पदार्थ अवृष्य है । हरडके सिवाय सब कषेले पदार्थ स्तंभक हैं ।

ए सामान्यता करके छः रसोंसैं उत्पन्न गुण कहेहैं–परंतु परस्पर रसोंके संयोग होनेसै उनमें और २ ही गुण प्रकट हो जातेहैं । जेसें अमृतके सदृश घीमें समान भाग सहत मिलानेसैं विष (जहर) हो जाताहै, एवं दूधआदि अमृत पदार्थ सांपके डसनेसैं विषरूप होजाते हैं ।

गुण.

लघुर्गुरुस्तथास्निग्धोरूक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात्॥
नभोभूवारिवातानांवह्नेरेतेगुणाःस्मृताः ३८

अर्थ–लघु, गुरु, स्निग्ध, रूक्ष और तीक्ष्ण, ए क्रमसैं आकाश, पृथ्वी, जल, पवन और अग्निके गुण हैं ।

लघुआदि पदार्थोंके धर्म.

लघुपथ्यंपरंप्रोक्तंकफघ्नंशीघ्रपाकिच ॥
गुरुवातहरंपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकिच ॥ ३९ ॥
स्निग्धंवातहरंश्लेष्मकारिवृष्यंबलावहम् ॥
रूक्षंसमीरणकरंपरंकफहरंमतम् ॥ ४० ॥
तीक्ष्णंपित्तकरंप्रायोलेखनंकफवातहृत् ॥

अर्थ–लघु (हलका) पदार्थ अत्यंत पथ्य, कफनाशक, शीघ्र पचनेवाला है । गुरु (भारी) पदार्थ वात हरणकर्त्ता, पुष्टिकारी, कफकारी और देरमें पचे । स्निग्ध (चिकना) पदार्थ वातहरै, कफकरे, वृष्य और बल बढाताहै । रूक्ष (रूखा) पदार्थ वादीकरे और अत्यंत कफ हरण कर्त्ताहै । तीक्ष्ण (तीखा) पदार्थ प्राय पित्तकरता, लेखन (छीलनेवाला) और कफवातका हरण करैहै ।

सुश्रुतोक्त बीस गुण.

सुश्रुतेतुगुणाएतेविंशतिस्तान्ब्रुवेशृणु ॥४१॥
गुरुर्लघुःस्निग्धरूक्षौतीक्ष्णःश्लक्ष्णःस्थिरस्सरः
पिच्छिलोविशदःशीतउष्णश्चमृदुकर्कशौ ॥
स्थूलःसूक्ष्मोद्रवःशुष्कआशुर्मंदःस्मृतागुणाः
श्लक्ष्णोहिंविनापिस्यात्कठिनोऽपिहिचिक्कणः
स्थिरोवातमलस्तंभीसरस्तेषांप्रवर्त्तकः ।
पिच्छिलस्तंतुलीबल्यःसंधानःश्लेष्मलोगुरुः
क्लेदच्छेदकरःख्यातोविशदोव्रणरोपणः ।
शीतस्तुह्लादनःस्तंभीमूर्च्छातृट्स्वेददाहजुत्
उष्णोभवतिशीतस्यविपरीतश्चपाचनः ।
स्थूलःस्थौल्यकरोदेहेस्रोतसामवरोधकृत् ॥
देहस्यसूक्ष्मच्छिद्रेषुविशेद्यत्सूक्ष्ममुच्यते ॥
द्रवःक्लेदकरोव्यापीशुष्कस्तद्विपरीतकः ४७

---

१ लघु, गुरु, द्रव्य, रसोंमें जानना. जैसे लिखाहै-
गुर्वादयो गुणा द्रव्ये पृथिव्यादौ रसाश्रये ।
रसेषु व्यपदिश्यंते साहचर्योपचारतः ॥
अर्थात् गुरु, लघु आदि गुण द्रव्यमें पृथ्वी आदि रसोंके आश्रित हैं, इसीसें साहचर्यके उपचारसैं वो गुण रसोंमें माने जातेहैं ।

आशुराशुकरोदेहेधावत्यंभसितैलवत् ।
मंदःसकलकार्येषुशिथिलोऽल्पोऽपिकथ्यते ॥

अर्थ– सुश्रुतमें ए बीस गुण है, उनको कहताहूं–गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष, तीक्ष्ण, श्लक्ष्ण, स्थिर, सर, पिच्छल, विशद, शीत, उष्ण, मृदु, कर्कश, स्थूल, सूक्ष्म, द्रव, शुष्क, आशुकारी, और मंद । तहां लघु, गुरु, स्निग्ध, रूक्ष, तीक्ष्ण गुणोंको कह चुकेहैं-अब बाकीके गुणोंको कहतेहै । **श्लक्ष्ण** पदार्थ चिकनाईके विनाभी कठोर होनेपर चिकना होताहै । जैसें–घोटा-हुआ पत्थर । **स्थिर** पदार्थ वात और मलको रोकताहै । **सर**पदार्थ वातमलको निकालता है । **पिच्छल** (मलाईके सदृश) पदार्थ तंतु (रेशे) वाला, बलकारी, भारी टूटेको जोडनेवाला, कफकर्त्ता क्लेद और छेदनकर्त्ता जानना । **विशद** (फैलनेवाला) पदार्थ व्रणको भरेहै । **शीतल** पदार्थ सुखकर्त्ता, रुधिर आदिके बहनेको रोकनेवाला, मूर्च्छा, प्यास, पसीने और दाहको दूर करेहै । **गरम** पदार्थ शीतल पदार्थके विपरीत गुणवाला है, और पाचकहै । **स्थूल** पदार्थ देहको मोटा करे और छिद्रोंको बंद करताहै । जो देहके छोटे २ छिद्रोंमें प्रवेश करे (धसजावे) उसको **सूक्ष्म** पदार्थ कहतेहैं । **द्रव** पदार्थ क्लेदकारी व्यापकहै । और **शुष्क** पदार्थ इससे विपरीत गुणवालाहै । **आशुकारी** पदार्थ देहमें शीघ्रता करे, जैसें-तेल जलमें जल्दी तैर जाताहै । और मंद पदार्थ सब कार्योंमें शिथिलता करे इसको अल्पभी कहतेहैं ।

अब गुणके प्रसंगसैं दीपनादिक गुणोंकोभी लक्षणसहित लिखते है ।

पचेन्नामंवह्निकृद्यद्दीपनंतद्यथामिसिः ॥
पचेत्वामंनवह्निंचकुर्याद्यत्तद्धिपाचनम् ४९
नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचनः ॥
नशोधयतियद्दोषान्समान्नोदीरयत्यपि ५०
समीकरोतिविषमान्शमनंतद्यथाऽमृता ॥
कृत्वापाकंमलानांचभित्त्वाबंधमधोनयेत् ॥
तच्चानुलोमनंज्ञेयंयथाप्रोक्ताहरीतकी ॥ ५१ ॥
पक्तव्यंयदपक्त्वैवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम् ॥
नयत्यधःस्रंसनंतद्यथास्यात्कृतमालकम् ५२
मलादिकमबद्धंयद्बद्धंवापिंडितंमलैः ॥
भित्वाऽधःपातयतियद्भेदनंकटुकीयथा॥५३॥
विपक्वंयदपक्वंवामलादिद्रवतांनयेत् ॥
रेचयत्यपितज्ज्ञेयंरेचनंत्रिवृतायथा ॥ ५४ ॥
अपक्वंपित्तश्लेष्माणंबलादूर्ध्वंनयेत्तुयत् ॥
वमनंतद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा ॥ ५५ ॥
स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसंचयम् ॥
देहसंशोधनंतत्स्याद्देवदालीफलंयथा ॥५६॥
दीपनंपाचनंयत्स्यादुष्णत्वाद्द्रवशोषकृत् ॥
ग्राहीतच्चयथाशुंठीजीरकंगजपिप्पली॥५७॥
रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत्
वातकृत्स्तंभनंतत्स्याद्यथावत्सककटुंटुकौ॥५८॥

अर्थ–जो द्रव्य आमको न पचावे और जठराग्निको दीपन करे वो **दीपनऔषधी** है । जैसे-**सोंफ** । और जो आमको पचावे और अग्निको दीपन करे उसको **पाचन औषध** कहतेहै । जैसैं–**नागकेशर** । और जो आमको पचावे तथा अग्निको दीप्त करे उसको **दीपनपाचन** कहतेहैं । जैसै–**चित्रक** । जो द्रव्य दोषोंको वमन विरेचनादि कर्मोंसैं शोधन न करे और जो समान दोषहैं उनको बढावेभी नहीं, एवं जो दोष विषम (न्यूनाधिक) हो रहे हो उनको समान करदेवे उसको **शमन** [संशमन] औषधी कहतेहै । जैसे–**गिलोय** । जो औषध अपक्क वात, पित्त, कफ, मलोंका पाक करके

१ यहांपर यह शंका होतीहै कि जो अग्निको प्रदीपन करेहै वो आमको कैसै नही पचाती ? तहां कहतेहै कि **दीपन द्रव्य** उतनीही अग्निको दीपन करैहै कि जिस्से अन्न भोजन करनेकी इच्छा होतीहै, परंतु आम पचानेकी सामर्थ्य नहीं रखती, जैसे छोटे दीपककी अग्नि केवल प्रकाश (उजेला) मात्र करेहै किंतु टोकनीके चावलोंको नहीं पकासक्ती । फिर शंका होतीहै कि जो अग्निको दीपन नहीं करे वो आमको कैसे पचाती है? तहां कहते है कि जैसै अंगीठीके अंगारे अन्नको पचाते हैं परंतु दीपकके समान सर्वत्र प्रकाश नहीं करते, इसी रीतिसै **पाचन द्रव्य** आमको पचानेकी सामर्थ्य रखती है, दीपनकी नहीं ।

और वातके बंधको तोड फोडकै मलोंको नीचे गेर देवे, उसको, अनुलोमन औषधी जाननी। जैसे-हरड। जो कोठेमें चिपटेहुए पकाने योग्य मलादिक हैं उनको विना पकाएहीं नीचे लावे अर्थात् दस्त करावे, उसको स्रंसन औषधी कहतेहैं। जैसें-अमलतास। जो वातादि दोषोंकरके अबद्ध (ढीले) और बद्ध (बंधेहुए) वा वादीसें मेंगनीके समान हुए मलादिकोंको भेद (तोड) कर गुदाके मार्गसें नीचे गेरे उसको भेदन औषध कहते हैं। जैसें-कुटकी। जो पके अथवा कच्चे मलादिकको पतला करदे और गुदद्वारा नीचे गेरे, उसको रेचन औषध कहतेहै। जैसें-निसोथ। जो पके नहीं ऐसे पित्त और कफको बलपूर्वक मुखके द्वारा होकर निकाले (वमन करावे) वो वमनसंज्ञक है। जैसें-मैनफल। जो स्वस्थानमें संचित मलोंको ऊपरके भागमें लाकर (मुखनासिकाद्वारा) बाहर निकाले, अथवा उस संचयको अधोभाग (गुदा लिंग भगद्वारा) बाहर निकाले, वो देहसंशोधक है। जैसे-देवदाली (बंदाल, सोंनैया, घंघरबेल) जो दीपन पाचन है और गरम होनेके कारण देहकी द्रवता (तरी) को सुखाय देवे, उसको ग्राही औषध कहतेहै। जैसे-सोंठ, जीरा और गजपीपल। जो रूक्ष, शीतल, कषेले और लघुपाकी होंनेके कारण प्रतिलोमवात करदेवे। वो स्तंभन औषध है। जैसें-कूडा और सोनापाठा।

श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात्
छेदनंतद्यथाक्षारामरिचानिशिलाजतु ॥५९॥
धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेचयम्॥
लेखनंतद्यथाक्षौद्रंनीरमुष्णंवचायवाः ॥६०॥
यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजीकरंहितत् ॥
यथाश्वगंधामुसलीशर्कराचशतावरी ॥६१॥
यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिः स्याच्छुक्रलंहितदुच्यते
यथानागबलाद्याःस्युर्बीजंचकपिकच्छुजम् ॥
दुग्धंमाषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच ॥
प्रवर्त्तनीस्त्रीशुक्रस्यरेचनंबृहतीफलम् ॥
जातीफलंस्तंभकंस्यात्कालिंगंक्षयकारिच ६४
रसायनंतुतज्ज्ञेयंयज्जराव्याधिनाशनम् ॥
यथाऽमृतारुदंतीगुग्गुलुश्चशिलाजतु ॥६५॥
पूर्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकंचगच्छति ॥
व्यवायितद्यथाभंगाफेनंचाहिसमुद्भवम् ६६
संधिबंधांस्तुशिथिलान्यःकरोतिविकाशितत्
विशोष्यौजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ ॥
बुद्धिंलुंपतियद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते ॥
तमोगुणप्रधानंचयथामद्यंसुरादिकम् ॥६८॥
व्यवायिचविकाशिस्यात्सूक्ष्मंछेदिमदाव-
हम् ॥ आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतं-
विषम् ॥ ६९ ॥
निजवीर्येणयद्द्रव्यंस्रोतोभ्योदोषसंचयम् ॥
निरस्यतिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा ॥७०
एतानिजनकानिस्युरेचकानिचरेतसः ॥६३॥

अर्थ-जो परस्पर मिले कफादि दोषोंको अपनी शक्तिसें तोड फोडकर अलग २ कर देवे, उसको छेदन औषध कहतेहैं। जैसें-खार (जवाखारादि), कालीमिरच और शिलाजीत। जो द्रव्य रसादि धातु और वातादि दोषोंको सुखायके देहको लटाय डाले, उस औषधको लेखन कहतेहैं। जैसें-सहत, गरम जल, बच, और जौ। जिस द्रव्यके भक्षणसें स्त्रियोंमें यह पुरुष हर्षको प्राप्त हो अर्थात् मैथुन करनेका उत्साह हो वो वाजीकर औषध जाननी। जैसें-असगंध, मूसली, मिश्री, और सतावर। जिससें शुक्र (वीर्य, मनी) की वृद्धी हो उसको शुक्रल कहतेहैं। जैसें-नागबला आदि और कौंछके बीज। दूध, उडद, भिलाएकी मिंगी, और आमले ए अपने २ प्रभावसें शीघ्र रसादि उत्पादनपूर्वक शुक्रको प्रगट करे और उसके अधिक होनेसें रेचन अर्थात् निकालनेवाले हैं। स्त्रीका (स्मरण, कीर्त्तन, दर्शन, संभाषण, स्पर्शन, चुंबन, आलिंगन और मैथुन ए संपूर्ण अथवा एक २) शुक्रको प्रवृत्त करें। कटेरीका फल वीर्यका रेचक है। जायफल

१ 'मलादिक' इसमें जो आदिशब्द है उससें कफ पित्त जानने।

१ 'यथामृतारुदंतीच' इतिपाठांतरम्।

वीर्यका स्तंभन करता है। और इन्द्रओ शुक्रको बढ करते हैं। और द्रव्य देहकी वृद्धावस्था और ज्वरादि रोगोंको दूर करे उसको रसायन औषधी कहते हैं। जैसें-हरड, दंती, गूगल और शिलाजीत। जो द्रव्य प्रथम अपकही अपने गुणोंसें सब देहमें व्याप्त होकर फिर पचे, वो व्यवायी औषधी है। जैसें-भांग और अफीम। जो धातु (सकलशरीरस्थ वीर्यो) सें ओजको शोषण करके देहके संधिबंधनोंको शिथिल (ढीला) कर देवे, उसको विकाशी औषध जानना। जैसें-सुपारी और कोदों। जो द्रव्य बुद्धिका लोप करे और तमोगुण प्रधानहो उसको मदकारी (मादक) औषध जानना। जैसें-मद्य (दारू) सुरादिक। जो व्यवाई, विकाशी, कफनाशक, मादक, अधिक अग्नि गुणवाला और प्राणनाशक वह योगवाही औषध कहाती है। जैसें-विष (वत्सनाभ शृङ्गिकादिक)। जो द्रव्य अपने वीर्य करके देहके छिद्रोंसे वातादि दोषसंचयको निकाले उसको प्रमाथी औषध कहतेहै। जैसें-काली मिरच और बच।

पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यंरुध्वारसवहाःशिराः ॥
धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यंदियथादधि॥७१॥
विदाहिद्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्यात्तथातृषाम् ॥
हृदिदाहंचजनयेत्पाकंगच्छतितच्चिरात्॥७२॥
गृह्णातियोगवाहिद्रव्यंसंसर्गिवस्तुगुणान् ।
पच्यमानंयथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादि

अर्थ-जो द्रव्य अपने पिच्छल गुणकरके भारीपनेसें रसवाहिनी २४ शिराओंको रोककर शरीरको भारी करदे उस पदार्थको अभिष्यंदी कहतेहै। जैसे-दही। दाहकद्रव्य-खट्टीडकार और तृषाको करेहैं। तथा हृदयमें दाह करे और पाक इसका बहुत जल्दी होताहै। योगवाही जो द्रव्य होतीहै वह संसर्गी (जो उसमें अन्य वस्तु मिलीहै उसके) गुण दोषोंको करे और उसी प्रकारका उसका पाक होय। जैसें-सहत, जल, तेल, घी, पारा, और लोह आदि ए योगवाही औषध हैं।

वीर्य.

उष्णशीतगुणोत्कर्षात्तत्रवीर्यंद्विधास्मृतम् ॥
यतस्सर्वमग्निसोमीयंदृश्यतेभुवनत्रयम् ॥७४॥
उष्णंवातकफौहन्यात्कुरुतेतत्तुतेजसम् ॥
शीतंवातकफार्तंकान्कुरुतेपित्तहृत्परम् ७५
तत्रोष्णंभ्रमतृड्ग्लानिस्वेददाहाशुपाकताम्
शमंचवातकफयोःकरोतिशिशिरंपुनः
ल्हादनंजीवनंस्तंभंप्रसादंरक्तपित्तयोः ॥७६॥

अर्थ-उष्ण (गरम) और शीत (शीतल) गुणके उत्कर्षसें पंडितोंनें वीर्य दो प्रकारका माना है, इसका यह कारण है कि संपूर्ण जगत् अग्नि और सोमात्मक दीखता है, तीसरे प्रकारका नहींहै। [हमारी समझमें दोष भी वात और पित्त दोही मुख्य है]। वीर्योंके गुण-उष्णवीर्य वात कफको नाश करे, और अत्यंत गरमी तथा बुढापेका करनेवालाहै। और शीतवीर्य, वातकफके विकारोंको करे और पित्तको हरण करेहै, यह वाग्भटमें कहाहै। अन्य आचार्य कहतेहैं कि उष्णवीर्य भ्रम, तृषा, ग्लानि, पसीने, दाह, शीघ्रपाकता और वातकफको शमन करताहै। एवं शीतवीर्य ल्हादन (आनंद) जीवन, स्तंभन, रक्तपित्तकी स्वच्छताको करताहै।

विपाक.

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरसांतरम् ॥
रसानांपरिणामांतेसविपाकइतिस्मृतः॥७७॥
मिष्टःपटुश्चमधुरमम्लोऽम्लंपच्यतेरसः
कटुतिक्तकषायाणांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः ॥

अर्थ-जठराग्नि (पेटकी अग्नि) के योगसें जो रस प्रगट होकर फिर उस रसके पचनेसें जो परिणाम (मीठा, खट्टा आदि) होताहै, उसको विपाक (परिपाक-पकना) ऐसा कहते है। तहां

१ वाग्भट कहताहै "त्रिधा रसानां पाकस्यात्स्वाद्वम्लकटुकात्मकः" अर्थात् रसोंका पाक स्वादु, अम्ल, और कटु तीन प्रकारका होता है। "प्रायःपदेन व्रीही स्यात् स्वादुरम्लो विपाकतः" उपर जो ३९ के श्लोकमें 'पाकस्यात्प्रायशः कटुः' इसमें प्रायशब्द रखनेसै यह प्रयोजन है कि कहीं कहीं उक्त नियमके विपरीतभी पाक होताहै। जैसें मिष्ट चावलोंका पाक खट्टा होताहै इस जगे व्रीही (चावल) मीठेहैं तो मीठाही पाक होना चाहिये। सो न हुआ, किंतु खट्टा हुआ यही विपरीतता है। इसीप्रकार हरड कषेलीहै सो इसका कटुपाक होना चाहिये, परंतु मीठा होताहै। इसीप्रकार सोंठकाभी कटुपाकको जगह मीठा पाक होताहै।

विपाक तीन प्रकारका है। मीठा, खारी और खट्टा, तहां मीठे और खट्टे रसवाले पदार्थका पाक मीठाही होताहै । और खट्टे पदार्थका खट्टा होताहै । एवं कटु (चरपरा) कडवा और कषेले रसोंका पाक कटु (चरपरा) ही होता है ।

श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः ॥
अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः॥७९॥
कटुःकरोतिपवनंकफपित्तंचनाशयेत् ॥
विशेषएवरसतोविपाकानांनिदर्शितः ॥८०॥

अर्थ-अब विपाकोंके गुण कहतेहैं । मधुरपाकी द्रव्य कफ करेहै और वातपित्तको हरण करे, अम्लपाकी द्रव्य पित्त करे, और वातकफको नष्ट करे । और कटु पाकी द्रव्य वात करे तथा कफपित्तको नाश करनेवाला है । यह विपाक विशेष करके रससें दिखाया है ।

प्रभाव.

रसादिसाम्येयत्कर्मविशिष्टंतत्प्रभावजम् ॥
दंतीरसाद्यैस्तुल्यापिचित्रकस्यविरेचनी ॥
मधूकस्यचमृद्वीकाघृतंक्षीरस्यदीपनम् ॥८१॥
प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः ॥
समाऽपिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् ८२
कचित्तुकेवलंद्रव्यंकर्मकुर्यात्प्रभावतः ॥
ज्वरंहंतिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा ॥८३॥

अर्थ-जो समान (यकसा) रसवाली अनेक औषधमें किसी एकका जो विशेष [illegible] है वो कर्म उस औषधका प्रभाव जानना । जैसें-दंती और चित्रक दोनों रस वीर्य विपाकादिक गुणोंमें तुल्यभी हैं-परंतु दंती जैसी विरेचक है ऐसी चित्रक नहीं है । दंतीमें जो विशेष शक्ति रहती है उसीसें वो दस्त करातीहै । उसी शक्तिको प्रभाव कहतेहैं । उसी प्रकार महुआ और दाख ए दोनों रसादि गुणोंमें समान हैं । परंतु दाखमें विरेचनशक्ति अधिक है । तथा घी-दूधके समान गुण होनेपरभी अग्निको दीपन करनेकी अधिक शक्ति रखताहै । आमले-लकुच (बडहर) के समान गुण होनेपरभी त्रिदोष शांतिकारक है, किंतु बडहर इससें विपरीत है । किसी जगह केवल द्रव्यविशेष[illegible] विशेष प्रभाव [illegible] नेमें आता है । जैसे-सहदेईकी ज[illegible] नेसें ज्वर दूर होय ।

इसीसें अनेक प्रकारकी औषधोंके योगोंके फलमें उनका स्वभाव (प्रभाव) ही ग्रहण करना; रस, गुण, वीर्य, विपाकादि रूपका हेतु (कारण) विचार नहीं करना चाहिये । जैसे सुश्रुत कहताहै ।

अमीमांस्यान्यचिंत्यानिप्रसिद्धानिस्वभावतः
आगमेनोपयोज्यानिभेषजानिविचक्षणैः
प्रत्यक्षलक्षणफलाप्रसिद्धाश्चस्वभावतः
नौषधीर्हेतुभिर्विद्वान्परीक्षेतकदाचन
सहस्रेणापिहेतूनांनाम्बष्टादिर्विरेचयेत्
तस्मात्तिष्ठेत्तुमतिमानागमेनतुहेतुभिः ॥ इति

अर्थ-"बहुतसी जगह हेतुवादवशवर्त्ती नहीं होना"
"शास्त्रानुसार औषध व्यवस्था करना उचितहै, का-"
"रण कि संपूर्ण द्रव्योंके गुण अमीमांस्य (अकथनीय)"
"अचिंत्य (अचिंतनीय) तथा स्वभावसेंही प्रसिद्ध हैं ।"
"उन औषधोंको चतुरवैद्य शास्त्रद्वाराही वर्त्ते ।"
"जिस औषधके फल प्रत्यक्षसें मिलतेहैं इसी प्रकार"
"जिसका जैसा स्वरूप शक्तिमान् स्वभावसें प्रसि-"
"द्धहै । उसके विषयमें और प्रकारसें हेतु दिखायके"
"विपरीत गुणोंकी कल्पना कदाचित विद्वान् परी-"
"क्षामें न करे । जैसे हजार हेतु दिखाने परभी"
"अंबष्टादि गणमें विरेचन शक्ति नहीं उपस्थित"
"होवेगी । इसीसे बुद्धिमान् वैद्य हेतुवादको त्यागके"
"शास्त्रोक्त विधिका अनुवर्त्तन करे ।"

विरुद्धगुणसंयोगेभूयसाल्पंहिजीयते ॥
रसंविपाकस्तौवीर्यंप्रभावस्तान्व्यपोहति८४

अर्थ-जहां औषधोंके गुणसंयोगोंकी आपसमें विरुद्धता आन पडतीहै वहां प्राय अल्पको बलवान् जीत लेताहै, जैसें रसको विपाक जीत लेताहै । और रस विपाकको वीर्य और रसवीर्य विपाकको प्रभाव जीत लेताहै । इसका तात्पर्य यह है कि किसी रोगीको ऐसी औषधी दीनी जिसमें अनेक औषधी अनेक गुण विशिष्ट होवे. तो उसमें जो औषध, रस, वीर्य, विपाक और प्रभावमें अधिक

होगी वो सबके गुणोंको दावकर सबके ऊपर अपने गुणको करेगी ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ मिश्र-
वर्गः समाप्तः ॥

अथ हरीतक्यादिवर्गः
प्रारंभः

इस प्रकार रस, गुण, वीर्य, विपाक और प्रभावोंके स्वरूपको कहकर किस २ द्रव्यमें कौन २ रस, वीर्य, विपाक और प्रभाव है, उनके ज्ञानके वास्ते प्रत्येक औषधगत रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभावोंको कहतेहैं । तहां प्रथम हरडकी उत्पत्ति, नाम, लक्षण और गुणादिकोंको कहतेहैं ।

दक्षंप्रजापतिस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः ॥
कुतोहरीतकीजातातस्यास्तुकतिजातयः १
रसाःकतिसमाख्याताःकतिचोपरसाःस्मृताः
नामानिकतिचोक्तानिकिंवातासांचलक्षणम्
केचवर्णागुणाःकेचकाचकुत्रप्रयुज्यते ॥
केनद्रव्येणसंयुक्ताकांश्चरोगान्व्यपोहति २
प्रश्नमेतद्यथापृष्टंभगवन्वक्तुमर्हसि ॥
अश्विनोर्वचनंश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत् ॥४॥

अर्थ–स्वस्थ (रोगरहित वा प्रसन्नचित्त) प्रजापति दक्षसें अश्विनीकुमार बोले, हे प्रभो! हरड कहासें उत्पन्न हुई और इसकी कितनी जातीहैं । और कितने रस तथा कितने उपरस है । और उन प्रत्येकके कितने २ नाम तथा उन औषधोंका क्या २ लक्षण है । और उनके कौन २ वर्ण (रंग), कौन २ गुण और कौनसी औषध किस २ स्थल (रोगों) में दीनी जाती है । और किस द्रव्य (अनोपान) के साथ वो कौन २ से रोगोंको नष्ट करेहै? हे भगवन्! यह हमारे प्रश्नके अनुसार आप कहिये । इसप्रकार अश्विनीकुमारोंके वाक्यको सुनके दक्षप्रजापति बोले ।

उत्पत्ति.

पपातबिंदुर्मेदिन्यांशक्रस्यपिबतोऽमृतम् ॥
ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी ॥५॥

अर्थ–इन्द्रके अमृत पीनेके समय अमृतकी बूंद (उसके कटोरेसें झलक कर) पृथ्वीमें गिरी, उससें सात जातकी हरड उत्पन्न हुई ।

हरीतक्यभयापथ्याकायस्थापूतनाऽमृता ॥
हैमवत्यव्यथाचापिचेतकीश्रेयसीशिवा ॥
वयस्थाविजयाचापिजीवंतीरोहिणीतिच ॥

अर्थ–हरीतकी, अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हैमवती, अव्यथा, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, वयस्था, विजया, जीवंती और रोहिणी ये हरडके १५ संस्कृत नाम है । हिन्दी भाषामें हरड, हड, हर्र कहतेहै । बंगालमें हरीतकी इस संस्कृत नामसेहीं प्रसिद्ध है । मरेठीमें हिरडा, हरडे; कर्नाटकमें आणिले; गुजरातीमें हरडा ता कडुकाई; फारसीमें हलेलज, अस्फर, हलेलेजर्द कहतेहैं । इंग्रेजीमें टरमिनेलिआ केबुला Terminalia Chebula कहतेहैं । हरड शाखी वा वानस्पती जातिके वृक्षका फल है । इसकी उत्पत्ति प्राय शरद (बर्फान्) और पर्वती देशोंमें है । इसके दो दो पत्ते सामने सामने और मोटे तथा अमरूद वृक्षके समान और कोमल तथा लाल रंगके होतेहैं । इसका फूल बारीक मोरके सदृश होताहै । तथा फल १ या १॥ इंच लंबा होता है । इसको सुखानेसें इसके ऊपरकी छाल सूख कर खडी पांच रेखा हो जातीहैं । जब

१ आगे हम नामका आदि अक्षर लिखेंगे । जैसे-सं. से संस्कृत, हिं. हिंदी. बं. बंगाली, म. मरेठी, क. कर्नाटक, गु. गुजराती, फा. फारसी, इं. इंग्रेजी ला. सैं. लाटिन् इत्यादि–इनसे बुद्धिमान् समझ लेवेंगे.

हमारे संस्कृतमें जो औषधोंके नाम है वो सब सार्थक है, निरर्थक नहीं है । जैसे–सब रोगोंको हरतीहै इससें हरडका नाम हरीतकी है । रोगके भयसें रहित करे इसीसे हरडको अभया कहाहै । पथ्यरूप होनेसे पथ्या नामहै । देहको बुढापेसे बचाती है इसीसे इसका नाम कायस्था है । अमृततुल्य गुण करनेसें अमृता नाम कहाहै । और हिमालय पर्वतमें इसकी पैदाइस होनेसें हैमवती नाम कहाहै । इसीप्रकार किसी नामसे औषधीके गुण जाने जातेहै । किसीसें उत्पत्ति, किसीसें उसका स्वरूप जाना जाताहै ।

यह वृक्षके ऊपर कचा रहता है तब अनीदार कांटा और धारयुक्त होताहै । बडीहरड तोलमें २ सें ५ तोलेतककी होतीहै । और वीचकी कि जिनको हर्रा कहतेहैं वो वजनमें $\frac{1}{2}$ सें लेकर १ तोले तककी होतीहैं । यह त्रिफलेमें गेरीजातीहैं । मात्रा १० रत्तीसें ले ३॥ मासेपर्यंत है । तीसरी छोटी (जंगी) हरड होतीहै । ये साधारण जुल्लाबमें लीनी जातीहै । मात्रा ३॥ माससे लेकर ७ मासेपर्यंत, और इसके भीतर लंबा बीज निकलता है । हरड जैसी नवीन होयगी ऐसीहीं अधिक गुणवाली होती है । और प्रयोगोंमें हर्रके फलकी छाल लेनी चाहिये । चित्रनंबर १ देखो ।

सप्तजाति.

विजयारोहिणीचैवपूतनाचामृताऽभया ॥
जीवंतीचेतकीचेतिपथ्यायाःसप्तजातयः ॥७

अर्थ–विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवंती और चेतकी, ए हरडकी सात जाती हें ।

विंध्याद्रौविजयाहिमाचलभवास्याच्चेतकीपूतना सिन्धौस्यादथरोहिणीतुविजयाजाताप्रतिस्थानके । पंपा[1]यामसृताभयाचजनितादेशेसुराष्ट्राह्वये जीवंतीतिहरीतकीनिगदितासप्तप्रभेदाबुधैः ॥

अर्थ–विंध्याचल पर्वतपर विजया नामकी हरड पैदा होतीहै । पूतना और चेतकी ए दो जातिकी हरड हिमालय पर्वतमें होतीहै । रोहिणी हरड सिंधुदेशमें होतीहै । और विजया नामकी हरड प्रतिस्थानक देशमें होती हैं । अमृता और अभया, पंपा (किसकिंधाके समीप) में, एवं जीवंती और हरीतकी नामकी हरड सौराष्ट्र देशमें होतीहै । ये पंडितोंने सात भेद कहेहैं ।

लक्षण.

अलाबुवृत्ताविजयावृत्तसारोहिणीस्मृता ॥
पूतनास्थिमतीसूक्ष्माकथितामांसलाऽमृता ८
पंचरेखाऽभयाप्रोक्ताजीवंतीस्वर्णवर्णिनी ॥
त्रिरेखाचेतकीज्ञेयासप्तानामियमाकृतिः ॥९॥

[1] चम्पायाममृतेति पाठान्तरम् ।

अर्थ–जो घीयाके समान लंबी होकर गोल होय उसको विजया हरड जाननी और जो गोल है वो रोहिणी है । पतली और रेखा (लकीर) वाली पूतना है । और मोटी तथा रेखावाली अमृता कहीहै । जिसमे पांच रेखा हों वो अभया है । सुवर्णके समान पीली जीवंती है और तीन रेखावाली चेतकी हरड जाननी । यह सातों प्रकारकी हरडोंका स्वरूप है ।

सातोंके पृथक् पृथक् प्रयोग.

विजयासर्वरोगेषुरोहिणीव्रणरोहिणी ॥
प्रलेपेपूतनायोज्याशोधनार्थेऽमृताहिता॥१०॥
अक्षिरोगेऽभयाशस्ताजीवंतीसर्वरोगहृत् ॥
चूर्णार्थेचेतकीशस्तायथायुक्तंप्रयोजयेत् ११

अर्थ–सर्व रोगोंमें विजया हरड देनी । व्रण (घाव) को अंकुर लानेवाली रोहिणी है । लेपमें पूतनाको डाले । शोधन (जुल्लाब आदि) में अमृता लेनी हित है । नेत्ररोगमें अभया उत्तम है । और जीवंती सर्व रोग हरण करनेवाली है । चूर्णमें चेतकी हरड डाले । इसप्रकार इनको यथायोग्य प्रयोगोंमें मिलावे ।

चेतकीद्विविधाप्रोक्ताश्वेताकृष्णाचवर्णतः ॥
षडंगुलायताशुक्लाकृष्णात्वेकांगुलास्मृता १२
काचिदास्वादमात्रेणकाचिद्गंधेनभेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेनदृष्ट्याऽन्याचतुर्द्धाभेदयेच्छिवा ॥ चेतकीपादपच्छायामुपसर्पंतियेनराः॥
भिद्यंतेतत्क्षणादेवपशुपक्षिमृगादयः ॥ १४ ॥
चेतकीतुधृताहस्तेयावत्तिष्ठतिदेहिनः ॥
तावद्भिद्येतवेगैस्तुप्रभावान्नात्रसंशयः ॥१५॥
नृपादिसुकुमाराणांकृशानांभेषजद्विषाम् ॥
चेतकीपरमाशस्ताहितासुखविरेचनी ॥१६॥

अर्थ–चेतकी जातिकी हरड दो प्रकारकी होतीहै । एक सपेद, दूसरी काली । तिसमें छः अंगुल लंबी सफेद (बडी हरड) और १ अंगुलकी काली (छोटी, जिसको जंगी हरड कहते) हैं । कोई हरड, खानेसैं दस्त लातीहैं । कोई सूंघनेसैं, कोई छूनेसैं और कोई देखनेमात्रसैं ही दस्तोंको लातीहै । इसप्रकार इसमें चार प्रकारकी भेदन

शक्ति है। जो प्राणी **चेतकी** नामक हरडके दरखतके नीचे जाकर खडे होते हैं, उन पशु, पक्षी और मृगादिकोंको तत्क्षण दस्त होने लगते हैं। **चेतकी हरडको** प्राणी जबतक हाथमें लिये खडा रहेगा तबतक उसको उस हरडके प्रभावसें बराबर दस्त होते रहेंगे [सुन्तेहै ऐसे दरखत (वृक्ष) पहले काबुलके राज्यमें थे, परंतु अब नष्ट होगए] इस तीव्र हरडको सुकुमार (नाजुक) मनुष्य, कृश और जो औषधसें द्वेष करतेहैं उनको कदाचित् हाथमें नहीं लेनी चाहिये, परंतु यह चेतकी परमोत्तम हितकारी और सुखपूर्वक विरेचन करनेवाली है।

सप्तानामपिजातीनांप्रधानंविजयास्मृता ॥
सुखप्रयोगासुलभासर्वरोगेषुशस्यते ॥१७॥

अर्थ–सातों जातिकी हरडोंमें **विजया** हरड प्रधान है। इसका प्रयोग सुखकारी और सुलभ (सर्वत्र मिलवी जाती) है तथा सर्व रोगोंमें देना कहा है।

रस, गुण, वीर्य और विपाक.

हरीतकीपंचरसाऽलवणातुवरापरम् ।
रूक्षोष्णादीपनीमेध्यास्वादुपाकारसायनी ॥
चक्षुष्यालघुरायुष्याबृंहणीचानुलोमिनी ।

अर्थ-हरडमें (मिष्ट, अम्ल, कटु, तिक्त और कषाय) पांच रस्स हैं. परंतु **लवण** रस नहीं है और **कषेला रस बहुत है। गुण** । रूक्ष (रूखी) है **दीपनादि गुणों**मे दीपनी, मेध्य, रसायनी, नेत्रोंको हितकारी, हलकी, आयुकर्त्ता, बृंहणी और अनुलोमनी है। **वीर्य** उष्ण (गरम) है। **विपाक** (पाक) इसका मीठा है ।

प्रयोग.

श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरकृमीन् १९

१ द्रव्योंके रस, गुण, वीर्य, विपाक, इस ग्रंथमें संलग्न नहीं लिखे–इसका कारण यहहै कि, जहां कहीं संस्कृत मूलके विपरीत अर्थ लिखाहै वो संगति मिलानेके वास्ते आगे पीछे लिख दीनाहै–जैसे (रूक्षोष्णा दीपनी) इस जगे हमने रूक्षका रूखा अर्थ लिखकर उष्ण वीर्य इस जगे लिखनेका अर्थ संगति मिलानेको गुणके पश्चात् वीर्यकी जगह लिखाहै ।

वैस्वर्यग्रहणीरोगविबंधविषमज्वरान् ।
गुल्माध्मानतृषाच्छर्दिहिक्काकंडूहृदामयान्॥
कामलांशूलमानाहंप्लीहानंचयकृत्तथा ॥
अश्मरीमूत्रकृच्छ्रंचमूत्राघातंचनाशयेत् २१

अर्थ–श्वास, खाँसी, प्रमेह, बवासीर, कोढ, सूजन, उदर, कृमी, स्वरभंग, संग्रहणी, कोष्ठबद्धता, विषमज्वर, गुल्म, अफरा, तृषा, वमन, हिचकी, खुजली, हृदयके रोग, कामला, शूल, अनाह, तापतिल्ली, यकृत् (कलेजा), पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्रघात, इन सब रोगोंको नाश करे । अर्थात् इन रोगोंपर हरड देवे ।

स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहृत्कफहृत्त्वसा ।
कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा ॥
पित्तकृत्कटुकाम्लत्वाद्वातकृन्नकथंशिवा ।
प्रभावाद्दोषहंतृत्वंसिद्धंयत्तत्प्रकाश्यते ॥२३॥
हेतुभिःशिष्यबोधार्थंनापूर्वंक्रियतेऽधुना ॥
कर्मान्यत्वंगुणैःसाम्यंदृष्टमाश्रयभेदतः ॥
यतस्ततोनेतिचिंत्यंधात्रीलकुचयोर्यथा ॥

अर्थ–हरडको वातादि दोष हरणमें कारण कहते है–जैसें इसमें मिष्ट, कटु और कषेले रसोंके होनेसें हरड **पित्त** हरण करेहै, तथा कटु, तिक्त और कषेले रसोंके होनेसें हरड **कफ**को नाश करतीहै । और खट्टे रसके होनेसें हरड **वादी**को हरण करेहै । "तीखी और खट्टे रसवाली होनेसें हरड **वात** और **पित्त**को किसप्रकार प्रगट नहीं करती? ऐसी शंका होनेपर कहतेहैं । **समाधान** । हरडोंमें स्वाभाविक प्रभावके कारण दोषोंका हरणकर्तृत्व जो सिद्ध है उसका इस जगे हम शिष्योंके समझानेके वास्ते कारण दिखायकर प्रकाश करतेहैं । परंतु कुछ अपूर्व (नवीन) रचकर नहीं दिखातेहै । जैसे–आंमले और बडहर ए दोनों रस और गुणोंमें समान होने परभी जुदे जुदे कार्यको करेहैं ऐसा देखनेमे आताहै । तथा गुण समान होनेपरभी गुणोंके आश्रय भेदसें उनके कार्य भिन्नभिन्न है । उसीप्रकार हरडमेंभी तीक्ष्ण और खट्टे रसके आश्रय भेदसें **पित्त** और **वादी**को उत्पन्नकर्तृत्वपना नहींहै । इसप्रकार विचार लेना चाहिये"।

पथ्यायामज्जनिस्वादुःस्नाय्यामम्लोव्यवस्थितः ॥ वृंतेतिक्तस्त्वचिकटुरस्थिस्थस्तुवरोरसः ॥ २५ ॥

अर्थ-हरडकी मज्जामें मिठा रस है। नसोंमें खट्टा रस है। डंडीमें कडुआ और छालमें चरपरा, तथा उसकी हड्डी (आंटों) में कषेला रस रहताहै।

उत्तमकी परीक्षा.

नवास्निग्धाघनावृत्तागुर्वीक्षिप्ताचयांभसि ॥ निमज्जेत्साप्रशस्ताचकथितातिगुणप्रदा २६ नवादिगुणयुक्तत्वंतथैकत्रद्विकर्षता ॥ हरीतक्याःफलेयत्रद्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥२७॥

अर्थ-जो हरड नवीन, चिकनी, घन, गोल और भारीहो, तथा जलमें गेरनेसें डूब जावे, वो हरड उत्तम गुणकारी है। जिस हरडके फलमें नवीनादि ऊपर कहेहुए गुण हो, और तोलमें भी दोकर्ष अर्थात् दो तोलेकी होवे ए दोनों गुण हो उसको श्रेष्ठ जाननी।

चर्वितावर्द्धयत्यग्निंपेषितामलशोधिनी ॥ स्विन्नासंग्राहिणिपथ्याभृष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत्

अर्थ-हरडको चबाकर खानेसे अग्निको बढावे, पीसके खानेसें मलको शोधन करे (अर्थात् दस्त करावे)। औटाई हुई हरड मलबद्धक, और भुनी हरड वातादि तीनों दोषोंको हरण करेहै।

उन्मीलिनीबुद्धिबलेंद्रियाणाम्।
निर्मूलिमीपित्तकफानिलानाम् ॥
विस्रंसिनीमूत्रशकृन्मलानाम्।
हरीतकीस्यात्सहभोजनेन ॥ २९ ॥

अन्नपानकृतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् हरीतकीहरत्याशुभुक्तस्योपरियोजिता ॥ ३०

अर्थ-भोजनकेसाथ सेवन करी हरड बुद्धि, बल करे, इन्द्रियोंको प्रकाशित करनेवाली; कफ, पित्त और वादीको निर्मूल (नाश) कर्त्ता; मल, मूत्र और मलोंको निकालनेवाली है। अन्नपानके दोष तथा वात, पित्त और कफके दोषोंको भोजन करनेके पश्चात् सेवन करनेसें हरड तत्काल हरण करे।

अनुपान.

लवणेनकफंहंतिपित्तंहंतिसशर्करा ॥ घृतेनवातजान्रोगान्सर्वरोगान्गुडान्विता

अर्थ-निमकके साथ कफको, मिश्रीके साथ पित्त, घृतके साथ वादीके रोग, और गुडके साथ खाई हुई हरड सर्व रोगोंको दूर करेहै।

षड्ऋतुमें सेवन.

सिंधूत्थशर्करागुंठीकणामधुगुडैःक्रमात् ॥ वर्षादिष्वभयाप्राश्यारसायनगुणैषिणा ॥३२

अर्थ-वर्षाऋतुमें सेंधेनिमकके साथ, सरदमें मिश्रीके साथ, हेमंतमें सोंठके साथ, शिशिरमें पीपलके साथ, वसंतमें सहतके साथ, एवं ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ हरड रसायनगुणोंकी इच्छावालेको सेवन करनी चाहिये।

हरडके बीज.

बीजंशिवायाश्चक्षुष्यं पाचनंगुरुवातहृत्। पित्तंदाहंकासश्वासं नाशकंसंप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-हरडके भीतरकी गुठली नेत्रोंको हितकारी, पाचक, प्रबलवात, पित्त, दाह, खांसी और श्वासकी नाशक कहीहै।

वर्जित.

अध्वातिखिन्नोबलवर्जितश्च।
रूक्षःकृशोलंघनकर्षितश्च ॥
पित्ताधिकोगर्भवतीचनारी।
विमुक्तरक्तस्त्वभयांनखादेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ-मार्ग चलनेसें थका, दुर्बल, रूक्षप्रकृति, कृश, लंघन (उपवासादिद्वारा) क्षीणदेह, पित्तप्रबल, धातुवाला, गर्भवती स्त्री और जिसका रुधिर निकाला गया इतने मनुष्योंको हरडभक्षण (खाना) निषेध है [ज्वरवाले प्राणीको पीली हरडसे बचना चाहिये]।

औषधके प्रयोगमें हरडके फलकी छाल लेनी। मात्रा इसकी ४ मासेकी है। अधिक सेवन करनेसें उपद्रव करे तो इसका दर्पनाशक सहत है। अर्थात् सहतको चाटे तों हरडके उपद्रवोंकी शांति होय।

यदि **हरड** न मिले तो इसकी प्रतिनिधीमें निसो-थ-आंवले और कावली हरड लेवे* ।

बहेडा.

विभीतकस्त्रिलिंगःस्यात्राक्षःकर्षफलस्तुसः॥
कलिद्रुमोभूतवासस्तथाकलियुगालयः ॥३४
विभीतकंस्वादुपाकंकषायंकफपित्तनुत् ॥
उष्णवीर्यंहिमस्पर्शंभेदनंकासनाशनम् ॥ ३५
रूक्षंनेत्रहितंकेश्यंकृमिवैस्वर्यनाशनम् ॥
विभीतमज्जातृट्छर्दिकफवातहरोलघुः ॥
कषायोमदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्गुणः ॥३६

अर्थ–विभीतक, विभीतकी, अक्ष, कर्षफल, कलिद्रुम, भूतवास और कलियुगालय, ए **सं.** नाम है, **हिं. बं.** बहेरा और बहेडा, **म.** बेहेडा, **ता.** तानिकाईक, **कों.** वेहेला, **का.** तोरे, **गु.** बेहेडां, **फा.** बलेलज और बलेलय, **ला.** टरमीनेलिया बेलेरिका Terminalia Bellerica, **इं.** Belleric myrabolum. ये शाखीजातिके वृक्षका फल है । बहेडेके दरखत ऊंची जमीनमें होतेहै । **पत्ते** इसके महुएके समान होतेहैं । और **फूल** बहुत बारीक होताहै । **फल** जायफलसें कुछएक बडे होतेहैं । और हिंदुस्तानमें प्राय सर्वत्र होताहै । तंत्रशास्त्रमेंभी इसको बहुतसे प्रयोगोंमें कहाहै । इसका उत्तम फल १ तोलेका होताहै । मथुरा और वडी कोशीकी रास्तेमें इसके बहुत दरखत है । दूसरे नंबरका **चित्र** देखो । **रस** इसका मीठा, **पाक** कषेला है । इसीसें कफ पित्तको हरण करेहै । उष्ण **वीर्य**, शीतल **स्पर्श**, **गुणोंमें** भेदक, खांसीनाशक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, बालोंको उत्तम और दृढ करता । **आमयिक प्रयोगोंमे** कृमिरोग और स्वरभेदको नष्ट करे । बहेडेकी **मज्जा**, तृषा, छर्दि, कफ, वातको हरण करे, और हलकी कषेली । तथा मद (अमल) करती है तथा विषैल है । इसीप्रकार **आमलेकी मज्जाके** गुण जानने । **प्रयोगमें** बहेडेके फलकी छाल लीनी जातीहै । **मात्रा**

---

* **हरडका** फल जिस वक्त बहुत छोटा जीरेके समान होताहै उस समय **हलीलेजीरा** नामसे बोला जाताहै । जब जौके बराबर होजातीहै उसको **हलेलेजवा** (जवाहरड) और जब दाखके बराबर बडी होतीहै तब **हलेलेजंगी** (जंगीहड) अथवा **हलेले हिन्दी** । और जब आधी पकके पिलास देने लगेहै उसको हलेले–इं. **चीनी** । इससे भी अधिक पकजाय उसको हलेले–इं. **अस्फर** । और जब सब पकजातीहै तब हलेले–इं. **काबुलीनामसे** विख्यात होतीहै । इन छःजातकी हरडोंमें हलेले जीरा, हलेले जंगी और हलेले काबुली ए तीन जातकी साधारण रीतसे वर्ती जातीहै । **मखजन** ।

हरडको १ ड्रामकी मात्रासे दिनमें दोवार देनेसे दस्त और एंठन दूर होजातीहै । यह **डा० डीमक** कहता है:—

हरडोंमें सैंकडे पीछे ४५ टका टेनिक ऐसिड रहताहे, इसके सिवाय थोडा गोलिक एसिड और भूरा पीले रंगका रंग रहताहै । **डा. स्टेन हाउस** :—

छः छोटी हरडोंका क्वाथ कर देय तो ४–५ उत्तम जुलाब होकर उससे पेटमें शूल, उलटी अथवा किसीप्रकारके दुष्ट असर नहीं होते । इस क्वाथमें थोडीसी तज डाल दीनी जाय तो मिश्र अधिक स्वादिष्ट होजाय, इसवास्ते कि ग्राही गुणोंके कारण वह जुलाबमें उपयोगी होताहै । इतनाही नही परंतु माजूफलके बदले पिचकारी मारनेमें उसीप्रकार घावोंके धोनेमें उसका पानी उपयोगमें आय सक्ताहै । **डा. वोरिंगः**—

हरडका क्वाथकर दरदवाले बवासीरके मस्से और स्त्रियोंकी गुह्येन्द्रियमेंसे अधिक प्रवाह निकलता होय तो उसमें बहुतही उत्तम असर करैहै ।

दो मासेकी है। इसके दर्पनाशक सहतका सर्बत है। और प्रतिनिधि इसकी छोटी हरड कहीहै*।

आमला.

त्रिष्यामलकमाख्यातंधात्रीत्रिष्यफलाऽमृता
हरीतकीसमंधात्रीफलंकिंतुविशेषतः॥
रक्तपित्तप्रमेहघ्नंपरंवृष्यंरसायनम्॥ ३८॥
हंतिवातंतदम्लत्वात्पित्तंमाधुर्यशैत्यतः॥
कफंरूक्षकषायत्वात्फलंधात्र्यास्त्रिदोषजित्
यस्ययस्यफलस्येहवीर्यंभवतियादृशम्॥
तस्यतस्यैववीर्येणमज्ञानमपिनिर्दिशेत्॥४०

अर्थ–आमलक, आमलकी, धात्री, त्रिष्यफला और अमृता, इतने संस्कृत नाम है। हिं० आमला, आंमरो, बं. आमलकी, म. आंवळे, आंवली, का. नेल्लि, गु. आमली, ता. उसरकाय, फा. आमलज, आमलय, ला. फाइलेन्थस Phyllanths कहतेहैं। यह शाखी जातिके वृक्षका फल होताहै और हिंदुस्थानमें सर्वत्र मिलता है। आवलेके दो भेद हैं। एक बागी (बागमें होनेवाला) दूसरा जंगली। इनमे बागी उत्तम होता है। यह शरदृतुमें फलताहै। आंवले काशी (बनारस) के बहुत बडे और उत्तम होतेहै। इसके पत्ते छोटे २ इमलीके समान होतेहै। इसकी डालियोंपर छोटे २ राईके दाने २ से पीले २ फूल होतेहै। और उत्तम फल माह फागनके महिनेमें आतेहैं। पथरीली जमीनमें होताहै। फल सुपारीके बराबर गोलेके आकार होतेहै। परंतु काशीके आवलें बहुत बडे और सर्वत्र प्रसिद्ध है। इस फलके ऊपर बहुत बारीक रेखासे छः विभाग किये हुए होतेहै। और भीतर कठोर गुठली होतीहैं। उसमेंभी छः कोनेसे होतेहै। इसका अत्तारलोग मुरब्बा बहुत बनाते है।

इसके रस, गुण, वीर्य और विपाकादि सब हर-

* हिंदुस्थानी वैद्य बहेडेको माही और किंचिन्मात्र दस्तावरभी मानतेहैं। इसे गले और छातीकी पीडामें देते हैं। प्राय इसके फलकी ऊपरकी छाल प्रयोगमें अधिक लीनी जायतो यह सुस्ती उत्पन्न करेहै, और कई वखत सूजनके ऊपर घिसकर लगातेहै।

यूनानी वैद्य इसे वद्धक, पाचक, खुलासा दस्त लानेवाला, बदहजमी और सफरा (पित्त)से जो मस्तकपीडा होय कि जिस्से आंख दूखनी आयजातीहै उसपर लेप करनेमें परमोपयोगी है।

इंग्रेजी डाक्टरभी अपने हिन्दुस्तानकी वनस्पति औषधोंके लिखनेके समय और २ औषधके सदृश फलके भीतरकी छाल लेनेकी प्रशंसा करतेहै।

कर्नल डुरीके मतानुसार इस वृक्षके थडमें चोट मारनेसे जो गोंद निकलेहैं वह मोमबत्तीके समान जलेहै, परंतु डा. डीमक इस मतके अनुकूल नहींहै।

इन्डियन एनलस ऑफ् मेडिकल सायन्सकी पुस्तक २ पत्र ७०९ में लिखाहै कि इस फलकी ऊपरकी छाल जैसे खानेसे मी. सी. ई. रेकोडके हाथ नीचे रहनेवाले चार मनुष्योंको विषका असर हुआथा, और उसके चिन्ह अत्यंत भयंकर थे परंतु इतनीही ईश्वरकी कृपा हुई कि किसीकी मृत्यु न हुई।

आंख दूखने आईहोय तो बहेडेको सहतमें घिसके लगावे या लेप करे तथा जलंधर, दस्त, बवासीर, कोढ और खांसीकी बिमारीमे लेतेहैं। इति चक्रदत्त। सुश्रुतसंहितामें बहेडेको मेदनाशक और शुक्रदोष (वीर्यके यावन्मात्र विकारहै कि जिनसे वीर्य बिगड रहाहै उनको सुधारनेवाला) वर्णन कराहै।

फलके ऊपरकी छाल स्तंभक है और त्रिफलाके चूर्ण बनायवेमें बहुत उपयोगी गिनी जायहै।

चरकसंहितामें बहेडा ज्वरहर (ज्वरको काढनेवाला) और विरोचनोपग (मल विसर्जन करनेवाला) गिनतहै।

सुश्रुतसंहितामें बहेडेको मेदनाशक, शुक्रदोषहर, बिगडेहुए दोषका निकालनेवाला कहा है। फलके ऊपरकी छाल दस्त बंद करनेवाली हैं तथा त्रिफला बनानेमें इसको डालतेहैं।

डके समान जानने । विशेषता इतनी है कि रक्तपित्त और प्रमेहकों नाश करे, वीर्यवर्द्धक और रसायन है, इसमें खट्टे रस होनेके कारण वातको हरण करे । मधुर और शीतल गुणोंकरके पित्तको रूखे और कषेले गुणोंसे कफको, इस प्रकार आमरा त्रिदोषनाशक है ।

वैद्योंके अवश्य जानने योग्य यह वार्त्ता है कि जिस २ वृक्षादिकोंके फलमें जैसा २ वीर्य है, वैसा वैसाही उसकी गुठलीमें जानलेना । **प्रयोगमें** आंवलेके फलकी छाल लेतेहै । **मात्रा** इसकी ४ माशेकी है । इसके **अवगुण**का नाशक **सहत** है अर्थात् आंवले कोई प्रकारका उपद्रव करे तो उसके ऊपर सहत खाय और इसकी **प्रतिनिधि**में हरड या आमलेका रस लेवे ।

शुष्कंधात्रीफलंतिक्तमम्लंपाकेकटुस्मृतम् ।
कषायंमधुरंकेश्यभग्नसंधानकृन्मतः ॥

अर्थ-सूखे आमले कडवे, खट्टे और पाकमें चरपरे, कसेले और मीठे है । बालोंको बढावे तथा टूटी हड्डीको जोडनेवाले है ।

त्रिफळा.

पथ्याबिभीतधात्रीणांफलैःस्यात्त्रिफलासमैः।
फलत्रिकंचत्रिफलासावराचप्रकीर्तिता ॥
त्रिफलाकफपित्तघ्नीमेहकुष्ठहरासरा ।
चक्षुष्यादीपनीरुच्याविषमज्वरनाशिनी ॥

अर्थ-हरड, बहेडा, आंवला, तीनोंकी छाल समान लेना, इसको **त्रिफला** कहते है । तथा फलत्रिक, वरा [और जितने वराके संस्कृतमें पर्यायवाचक शब्द है । जैसें-श्रेष्ठा, अग्रा सब त्रिफलाके जानलेने] हिंदुस्तानकी सर्व भाषाओंमें यह **त्रिफलाके** नामसेंही प्रसिद्ध है. त्रिफलामें बडी हरडका वक्कल डाले, कोई त्रिफलाका प्रमाण इस प्रकार कहतेहै कि एक हरड, दो बहेडे और ४ आंवले लेना इसको त्रिफला कहतेहै सो यहभी ठीक है । **फारसीमें** इसको **इतरीफल** कहते है ।

गुण । त्रिफला कफ, पित्त, प्रमेह, कुष्ट, इनको हरणकरे, सर (कफपित्तादि दोषोंको दस्तके मार्गसे निकालनेवाला) नेत्रोंको हितकारी, अग्निदीपन करता, रुचिकरता और विषमज्वरकों नाश करेहै ।

सोंठ.

शुंठीविश्वाचविश्वंचनागरंविश्वभेषजम् ॥
ऊषणंकटुभद्रंचशृंगबेरंमहौषधम् ॥ ४३ ॥
शुंठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघुः ।
स्निग्धोष्णामधुरापाकेकफवातविबंधनुत् ॥
वृष्यास्वर्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान् ।
हंतिश्लीपदशोथार्शआनाहोदरमारुतान् ॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठंतोयांशपरिशोषियत् ॥
संगृह्णातिमलंतत्तुग्राहिशुंठ्यादयोयथा ॥ ४६
विबंधभेदनीयातुसाकथंग्राहिणीभवेत् ॥
शक्तिर्विबंधभेदेस्याद्यतोनमलपातने ॥ ४७ ॥

अर्थ-शुंठी, विश्वा, विश्व, नागर, विश्वभेषज, ऊषण, कटुभद्र (यानी चरपरे पदार्थोंमें श्रेष्ट) शृंगबेर और महौषध इतने संस्कृत नाम हैं । और जितने संस्कृतमें नागर और लोकवाचक शब्द है वो सब सोंठके नाम जानलेने । **हिं.** सोंठ, सूंठ कहते है । **बं.** सुंठ, **म.** सुंठ, **गु.** शुंठ्य, **तै.** शोंठी और २ हिंदुस्तानकी भाषाओंमें इसीनामसें प्रसिद्ध है । फारसीमें **जंजबील**, इंग्रजीमें **ड्राई जंजर** Dryginger कहते है ।यह गुल्म अथवा औषध जातकी वनस्पतीका **कंद है** । पूरव आसाम आदि मुल्कसें आतीहै इसकी अनेक जाति है, परंतु इनमें घाडकी सोंठ उत्तम होतीहै । जिसमें रेसे (तुष) अधिकहो उसको **न लेवे** । मोटी वेरेसेकी तोडनेमें नरम और सपेद जो होतीहै वो **लेनी** चाहिये ।

सोंठका **रस** चरपरा है, **गुणों**में स्निग्ध और हलकी, **वीर्य**में उष्ण, **विपाक**में मीठी है । **गुण** । रुचिकारी, आमवातकी नाशक, पाचन करता, कफवातको और मलादिकके रुकनेको नाश करता, बलकारक, तथा सर (मलादिक प्रवर्त्तक), वमन, श्वास, शूल, खांसी, हृदयके रोग, श्लीपद, शोथ, बवासीर, अफरा, उदर और वादीके रोग इनको नष्ट करे । जो संपूर्ण द्रव्य

१ यद्यपि बहुतसी औषधोंमें दो दो तीन तीन आदि कई रस होतेहै । परंतु मुख्य रस एकही होता है । जैसें **हरडमें** यद्यपि **पांचरस है**, परंतु मुख्य कषेला एकही रस है । इसीप्रकार और जगहभी जानों ।

अधिक परिमाण करके आग्नेय गुण विशिष्ट है। और जलांशशोषक हैं वो मलको संग्रह (जमा) करताहै। जैसे सोंठ आदि संग्राहीहैं। "शंका। जो विबंध (अर्थात् वायुप्रभृतिद्वारा मलके रुकने) को दूर करेहै अतएव वो किसप्रकार ग्राहक होसक्ती है?। इसका समाधान यह है कि, सोंठमें विबंध भेदकी शक्तीहै किंतु मळ निकालनेकी शक्ति नहींहै।"

उष्णांभसापीतममुष्यचूर्णं तूर्णंसशूलाम-
विनाशनंस्यात्। मेधासमृद्धिंवितनोति-
नित्यं शिरोगलस्थंहरतेचशैत्यं॥

अर्थ–सोंठके चूर्णको गरम जलके साथ फांकेतो पीडायुक्त आमवातको नाशकरे, बुद्धिको बढावे और शिरके तथा गलेकी शरदीको नष्ट करे।

मात्रा इसकी दो मासेकीहै, इसके दर्पनाशक कपूर और सहत कहेहैं। सोंठके अभावमें अदरख डालना चाहिये।

अदरक.

आर्द्रकंशृंगबेरंस्यात्कटुभद्रंतथार्द्रिका।
आर्द्रिकाभेदिनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता॥
कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा
येगुणाःकथिताःशुंठ्यास्तेपिसंत्यार्द्रकेखिलाः
भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम्॥
अग्निसंदीपनंरुच्यंजिव्हाकंठविशोधनम् ५०
कुष्ठपांड्वामयेकृच्छ्रेरक्तपित्तेव्रणेज्वरे॥
दाहेनिदाघशरदिनैवपूजितमार्द्रकम् ॥५१॥

अर्थ–आर्द्रक, शृंगवेर, कटुभद्र, आर्द्रिका, ए संस्कृत नाम है। हिं. अदरक-ख, बं. आदा, म. आलें, क. अल्ल, गु. आदु. फा. जंजवीलतर अ. जंजबीळ रतव, इं. जिंजर Ginger, ला. जंजीवर आफीसिनेली Gingiber officinale कहेतेहैं.

यह गुल्म जातिकी वनस्पतीका कंद है। रेतली जमीनमें और जलके किनारे बहुत होताहै। इसका रस (जायका) कटु (चरपरा); गुण तीक्ष्ण, रूक्ष, भेदक, भारी, अग्निदीपक; वीर्य उष्ण; पाक मीठा, एवं वातकफका नाशक है। जितने गुण सोंठमें कहेहैं वो सब अदरकमेंभी मौजूदहैं। प्रयोग। भोजनके प्रथम सैंधानिमक और अदरखका सदैव सेवन करना पथ्य है। अग्निको दीपन करे, रुची प्रगट करे, एवं जिव्हा और कंठको शोधन करेहैं।

निषेध। कुष्ठ, पांडु, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, व्रण, ज्वर, दाह इन रोगोंमें तथा गरमियोंमें और सरद ऋतुमें अदरकसेवन वर्जित है। अदरककी मात्रा दो मांशेकी है। और प्रतिनिधी तथा दर्पनाशक ए सोंठके समान जान लेने अर्थात् परस्पर प्रतिनिधि हैं।

पीपल.

पिप्पलीमागधीकृष्णावैदेहीचपलाकणा
उपकुल्योषणाशौंडीकोलास्यात्तीक्ष्णतंडुला
पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी॥
अनुष्णाकटुकास्निग्धावातश्लेष्महरीलघुः५३
पिप्पलीरेचनीहंतिश्वासकासोदरज्वरान्॥
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान्॥५४॥
आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरुः॥
पित्तप्रशमनीसातुशुष्कापित्तप्रकोपिणी ५५
पिप्पलीमधुसंयुक्तामेदःकफविनाशिनी॥
श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्द्धिनी॥
जीर्णज्वरेऽग्निमांद्येचशस्यतेगुडपिप्पली॥
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पांडुकृमिरोगनुत्
द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजांमतः॥

अर्थ–पिप्पली, मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला, कणा, उपकुल्या, उषणा, शौंडी, कोला और तीक्ष्णतण्डुला, ए. संस्कृत नाम है। हिं. पीपल, पीपर, बं. पिपुल, म. पिंपळी, क. हिप्पली, गु. लींडीपीपल, पीपर, तै. पिप्पलु, फा. फिलफिल दराज, अ. दार फिलफिल, इं. लॉंग पेपर Long pepper कहतेहै. ये गुल्म जातिकी औषधका फल है। हिंदुस्थानमें, माळवे आदि देशोमें बहुत होतीहै। और पसारी गंधीलोगोंकी दुकानमें बहुत मिलती है। पीपल दो प्रकारकी होतीहै–छोटी और बडी। इनमें छोटी पीपल अधिक गुण करतीहै, परंतु छोटीके भ्रमसे कच्ची छोटी न लेनी। किंतु पुरानी पीपल लेनी।

गुण। पीपल अग्निदीपन करता, बलकारक, पाक इसका मीठा है। रसायन, गरम नहीं है। स्वाद

(आयका) चरपरा है । स्निग्ध, वात, कफ हरणकर्त्ता और हलकी गुणवाली है । दस्त कराती है । श्वास, खांसी, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गोला, बवासीर, तिल्ली, शूल और आमवात इनको नष्ट करे । **गीलीपीपल** कफकारी, स्निग्ध, शीतल, मीठी, भारी और पित्तको शांत करनेवाली है । और **सूखीपीपल** पित्तको कुपित करतीहै । **पीपलके चूर्णको** सहतमें मिलायके खायतो मेद, कफ, श्वास, खांसी, ज्वर इनको हरण करे । बलकारक, मेधा और अग्निको बढावे । पीपलके चूर्णको **गुडमें** मिलायकें सेवन करे तो जीर्णज्वर, मंदाग्नि, खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृदयरोग, पांडु और कृमिरोग इनको दूरकरे । एकभाग पीपलके चूर्णमें दोभाग पुराना गुड मिलाकर गुडपिप्पली देनी चाहिये । **मात्रा** पीपलकी १ मासेकी है ।

इसकी **प्रतिनिधि** कालीमिरच और सोंठ है । इसके **दर्पनाशककर्त्ता** गुलाबके फूल और पीलाचंदन है ।

मरिच.

मरिचंवेल्लजंकृष्णमूषणंधर्मपत्तनम् ॥
मरिचंकटुकंतीक्ष्णंदीपनंकफवातजित्॥ ५८॥
उष्णंपित्तकरंरूक्षंश्वासशूलकृमीन्हरेत् ॥
तदार्द्रंमधुरंपाकेनात्युष्णंकटुकंगुरु ॥
किंचित्तीक्ष्णगुणंश्लेष्मप्रसेकिस्यादपित्तलम्

अर्थ-मरिच, वेल्लज, कृष्ण, उपण और धर्मपत्तन ए संस्कृत नाम है । **हिं.** कालीमिरच, गोलमिरच, **बं.** मरिच, **म.** मिरें, **क.** मेणसु, **तै.** मरिया-मरियन, **अ.** फिलफिले अस्वदक. **गु.** मरी, तिखां, **फा.** फिलफिले, अस्वद, स्याहगिर्द, **इं.** ब्ल्याक पेपर, Pepper, **ला.** पाईपर निग्रम् Piper Nigrum कहतेहै । यह गुल्मजातिकी औषधका फल है । कालीमिरच दो प्रकारकी प्राय देखनेमें आतीहै । एक पूरवी और दूसरी दक्खनी; इनमें **दक्षणीमरिच** उत्तम होतीहै । और कोई धुलीहुइ मिरचोंको सपेद मिरच कहतेहै । परंतु सपेद मिरचकी जातिही पृथक् है ।

मिरचका **रस** चरपरा है । **गुण** तीक्ष्ण, अग्निदीपक, कफ वात हरणकरता, उष्णवीर्य, अतएव पित्तकर्त्ता, रूक्ष, श्वास, शूल और कृमिरोगको दूर करेहै । **आर्द्र** (गीली) कालीमिरच पाकमें मधुर, अत्यंत गरम नहींहै, चरपरी और भारी है । किंचित् तीक्ष्ण गुणविशिष्ट, कफनिःसारक, और पित्तकर्त्ता नहीं हैं ।

श्लेष्मजालासिसदृशासन्निपातज्वरांतकम् ॥
पित्तरक्ताविरोधीचहिक्काहंतिसमीरजाम् ॥
ग्रंथिगंडापचीकर्णशूलंचकवलीकृतम् ॥
समस्तनेत्ररोगघ्नंसितयासर्पिषायुतम् ॥
गोमूत्रयावशूकाभ्यांलेपाद्विस्फोटकुष्ठनुत् ॥
दर्पघ्नंशर्करासर्पिःक्षीरंक्षौद्रंचशालयः ॥

अर्थ-मिरच कफके जाल काटनेको तलवारके समान हैं । सन्निपात ज्वरको नाश करता, रक्तपित्तको बढानेवाली, वादीकी हिचकीको दूर करतीहैं गांठ, गलगंड, अपची, कानका शूल, इनको नष्ट करे । कालीमिरच, कचीखांड और घी इनकों मिलाके खायतो समस्त नेत्ररोगोंको नष्ट करे । कालीमिरचके साथ जौं मिलाय गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे विस्फोट [खाज] और कोढको दूर करे ।

इसकी **मात्रा** १ मासेकी है । यदि सेवन करनेसे अवगुण करेतो मिश्री, घी, दूध, सहत और चांवल ए सब इसके **दर्पनाशक** जानने । मिरचकी **प्रतिनिधिमें** पीपल लेनी चाहिये ।

सितमरिच.

सितमरिचंशीतोत्थं, सितवल्लीजंचबालकंबहुलम् । धवलंचंद्रकमेतन्मुनिनामगुणाधिकंचवश्यकरम् ॥
कटूष्णंश्वेतमरिचंविषघ्नंभूतनाशनम् ॥
अवृष्यंदृष्टिरोगघ्नंयुक्त्याचैवरसायने ॥

अर्थ-सितमरिच, शीतोत्थ, सितवल्लीज, बालक, बहुल, धवल, चंद्रक, ए सात नाम **सपेद मिरचके** हैं । **गुण** । वश्यकरता, चरपरी, गरम, विषनाशक भूतनाशक, बलनाशकर्त्ता, दृष्टिरोगनाशक और युक्तिपूर्वक रसायनके गुण करेहै । इसके अन्य प्रतिनिधि आदि कालीमिरचके सदृश जान लेने ।

१ बहुतसें प्राचीन वैद्योंकी अनुमती है कि पीपल कामदेवको प्रबल करती है ।

एक लालमिरच होतीहै वो विलायती मिरच है। उसके गुणागुण हमारे औषधरत्नाकर निघंटमें अर्थात् अभिनवनिघंटु देखो।

त्रिकटु.

विश्वोपकुल्यामरिचंत्रयंत्रिकटुकच्यते ॥
कटुत्रिकंतुत्रिकटुत्र्यूषणंव्योषउच्यते ॥६०॥
त्र्यूषणंदीपनंहंतिश्वासकासत्वगामयान् ॥
गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान्६१

अर्थ–सोंठ, पीपल और मिरच ए तीनों वस्तु समान लेना, इनके त्रिकटु, कटुत्रिक [त्र्यूष], त्र्यूषण और व्योष ए **संस्कृत**के नाम है। **हिंदी** भाषामें **त्रिकुटा** कहतेहै। **गुण**। त्रिकुटा दीपन हैं और श्वास, खांसी, त्वचा (चमडी) के रोग, गोला, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद और पीनसरोग इनको नाश करेहैं।

पीपरामूल.

ग्रंथिकंपिप्पलीमूलमूषणंचटकाशिरः ॥
दीपनंपिप्पलीमूलंकटूष्णंपाचनंलघु ॥ ६२ ॥
रूक्षंपित्तकरंभेदिकफवातोदरापहम् ॥
आनाहप्लीहगुल्मघ्नंकृमिश्वासक्षयापहम् ६३

अर्थ–ग्रंथिक, पिप्पलीमूल, ऊषण और चटकाशिर, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** पीपरामूल, **बं.** पिपुलमूल, **म.** पिंपळमूळ, **क.** हिप्पलियबेरु, **गु.** पीपलीमूलना गंठोडा, **फा.** फिलफिलमोया. **अ** असलुल् फिलफिल, **तै.** पिप्पली वेरु, **इं.** पाईपर रूट Piper Root, **ला.** पाईपर ओफिसीनेरम् कहतेहै। यह पीपलीकी जडकी गांठ टुकडे २ होतीहै। यह बारीक और मोटी दो प्रकारकी होतीहैं। परंतु मोटी बहुत जल्दी घुन जातीहै। इस वास्ते नई पुरानी देखकर लेनी।

गुण। पीपरामूल–दीपन, चरपरा, पाचन, हलका, रूक्ष, पित्तकर्त्ता, भेदी (दस्तावर), कफ, वात, उदर, अफरा, प्लीह, गोला, कृमि, श्वास और क्षय, इनको नष्ट करेहै।

चतुरूषण.

त्र्यूषणंसकणामूलंकथितंचतुरूषणम् ॥
व्योषस्यैवगुणाःप्रोक्ताअधिकाश्चतुरूषणे ६४

अर्थ–पूर्वोक्त त्रिकुटामें पीपरामूल मिलानेसें उसको **चतुरूषण** कहते हैं। इस चतुरूषणमें त्रिकुटेके समानही गुण हैं।

चव्य.

भवेच्चव्यंतुचविकाकथितासातथोषणा ॥
कणामूलगुणंचव्यंविशेषाद्गुदजापहम्॥६५॥

अर्थ–चव्य, चविका, ऊषणा, ए **सं.** नाम, **हिं.** चव्य, **बं.** चइ, **म. गु.** चवक, **ला.** चवीका ऐक्सवर्धीआई कहते है। यह क्षुपजातिकी **लकडी** है। और सर्वत्र प्रसिद्ध है। चव्य पीपरामूलके समान गुण करेहै। विशेषकरके बवासीरको दूर करेहै। इसकी छाल लेनी। **मात्रा** १ मासेकी है।

गजपीपल.

चविकायाःफलंप्राज्ञैःकथितागजपिप्पली ॥
कपिवल्लीकोलवल्लीश्रेयसीवशिरश्चसा॥६६॥
गजकृष्णाकटुर्वातश्लेष्महृद्वह्निवर्धिनी ॥
उष्णानिहंत्यतीसारंश्वासकंठामयकृमीन् ॥

अर्थ–चव्यके फलको विद्वान् गजपीपल कहतेहै। **सं.** कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर और गजकृष्णा, **हिं.** गजपीपर, **गु.** गजपिंपळी, **बं.** गजपीपुल, **म.** मीरवेलीला, मोठी पिंपळी (सिंहली), **क.** गजहिप्पली, **तै.** पेद्दापिप्पलु, **ला.** सींडापसस आफिसीनेलीस कहतेहै। **गुण**। गजपीपल–चर्परी, वात कफनाशक, अग्निवर्द्धक और गरम है। **प्रयोग**। अतिसार, श्वास, कंठरोग और कृमिनाश करे। इसके फलकी ६ रत्तीकी **मात्रा** है।

सिंहली पीपल.

"सैंहलीसर्पदंडाच सर्पागीब्रह्मभूमिजा।
पार्वतीशैलजामूलं लंबबीजातथोत्कटा।
अद्रिजासिंहलस्थाच लंबदंताचजीवला।

---

१ लालमिरचको **इं.** कापसीकम् Capcicum कहते हैं। **गुण**। गरम और वात हरण कर्त्ता। **मात्रा** आधारत्तीसें लेकर २॥ रत्तीपर्यंत है।

१ इसकी बेल बडी कठोर होती है। कोई काली मिरचके वृक्षका भाग, कोई गजपीपरकी जड, और कोई इसकी बेल पृथक् मानते है।

जीवालाजीवनेत्राच कुरवीषोडशाह्वया ।
सैंहलीकटुरुष्णाच जंतुघ्नीदीपनीपरा
कफश्वाससमीरार्त्तिशमनीकोष्ठशोधिनी ॥"

अर्थ-सैंहली, सर्पदंष्ट्रा, सर्पांगी, ब्रह्मभूमिजा, पार्वती, शैलजामूल, लंबबीजा, उत्कटा, अद्रिजा, सिंहलस्था, लंबदंता, जीवला, जीवाला, जीवनेत्रा और कुरवी, ए सोलह नाम सिंहली पीपलके हैं। यह सिंहलद्वीपके पहाडोंमें होतीहै। इसका रंग, रूप सांपके समान होताहै। और लंबे २ बीज होतेह। **गुण**। सिंहलीपीपर चरपरी, गरम, कृमिनाशक, अग्निदीपनी, कफ, श्वास और वादीकी पीडाको दूर करे तथा कोठेको शुद्ध करतीहै।

वनपीपल.

"वनादिपिप्पल्यभिधानयुक्तं सूक्ष्मादिपिप्पल्यभिधानमेतत् । क्षुद्राचपिप्पल्यभिधानयोग्यं वनाभिधापूर्वककणाभिधानम् ॥
वनपिप्पलिकाचोष्णातीक्ष्णरुच्याचदीपनी
आमाभवेद्गुणाढ्यातुशुष्कास्वल्पगुणास्मृता"

अर्थ-वनपिप्पली, सूक्ष्म पीपली, क्षुद्रपिप्पली। विपिनपिप्पली, इत्यादि इस **वनपीपलके** अनेक नाम हैं। **म.** रानपिंपली, **क.** काडिप्पली कहते है। **गुण**। वनपीपली गरम है, तीक्ष्ण, रुचिकर्ता, अग्निदीपनकर्त्ता है, वनपीपल **कच्ची** गुणकर्त्ता होतीहै। और सूखीमें अल्पगुण होतेहैं।

चित्रक (चीता).

चित्रकोऽनलनामाचपीठोव्यालस्तथोषणः ॥
चित्रकःकटुकःपाकेवह्निकृत्पाचनोलघुः ॥६८
रूक्षोष्णोग्रहणीकुष्ठशोथार्शःकृमिकासनुत् ।
वातश्लेष्महरोग्राहीवातार्शःश्लेष्मपित्तहृत् ॥

अर्थ-चित्रक, अनलनामक (यावन्मात्र अग्निके संस्कृतमें नाम है सब चित्रकके जानलेने। जैसे-अनल, अग्नि, वह्नि, इत्यादि) तथा पीठ, व्याल और ऊषण, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं**. चित्रक, चीता, चितरक, **बं.** चिता, **म.** चित्रक, **का.** चित्रमूल, **तै.** चित्रमूलम्, **ता.** शिवपु, चित्रिर, **गु.** चित्रो, **अ.** शीतरज. **फा.** वेख बरंदा, **इं.** प्लंबिगो कोइलेऐसो Plumbago coera and roulasc. यह क्षुप जाति की वनस्पति है। हिंदुस्थानमें सर्वत्र होतीहै।

गुण। चित्रकका पाक चरपरा है [जायकाभी तीक्ष्ण है.] अग्निवर्द्धक, पाचन, हलकी, रूक्ष, गरम और ग्राही है। **प्रयोग**। ग्रहणी, कुष्ठ, सूजन, बवासीर, कृमिरोग, खांसी, वात, कफ, वातार्श और पित्तश्लेष्माको नाश करे। यदि शिकामें पक्क करके लेप करे तो सफेद कुष्ठ, खुजली, तिल्ली, अंडवृद्धि और उरुस्तंभको दूर करे। इसके **प्रतिनिधिमें** पीपरामूल अथवा अकरकरा लेवे। **प्रयोगमें** इसकी छाल ले। **मात्रा** ४॥ मासेकी है। इसके दर्पनाशक रूमीमस्तंगी और पीला चंदन कहाहै।

पंचकोल.

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः ॥
पंचभिःकोलमात्रंयत्पंचकोलंतदुच्यते॥ ७० ॥
पंचकोलंरसेपाकेकटुकंरुचिकृन्मतम् ॥
तीक्ष्णोष्णंपाचनंश्रेष्ठंदीपनंकफवातनुत् ॥
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नंपित्तकोपनम् ॥७१॥

अर्थ-पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ ए पांचों द्रव्य कोल २ अर्थात् आठ २ मासे ले, इसको **पंचकोल** कहतेहैं। पंचकोलका **रस** और **पाक** चरपरा है। रुचिकारी, तीक्ष्ण, उष्ण, वीर्य, पाचन और कफवात, गोला, प्लीहा, उदर, अफरा, शूल, इनको नष्ट करे और पित्तको कुपित करेहै।

षडूषण

पंचकोलंसमरिचंषडूषणमुदाहृतम् ॥
पंचकोलगुणंतत्तुरूक्षमुष्णंविषापहम् ॥७२॥

अर्थ-पंचकोलमे कालीमिरच मिलानेसें **षडूषण** कहाताहै। षडूषण गुणोंमें पंचकोलके समान है, विशेष करके रूक्ष, गरम और विषनाशक है।

अजमायन.

यवानिकोग्रगंधाचब्रह्मदर्भाऽजमोदिका ॥
सैवोक्तादीप्यकादीप्यातथास्याद्यवसाह्वया॥
यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णाकटुकालघुः॥
दीपनीचतथातिक्तापित्तलाशुक्रशूलहृत् ॥
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् ७४

अर्थ-यवानिका, उग्रगंधा, ब्रह्मदर्भा, अजमोदिका, दीप्यका, दीप्या और यवसाव्हय (यवपर्याय), ए संस्कृत नाम है। हिं. अज [मा] वायन, बं. यमानी, योयन्, म. ओंवा, क. ओंडु, गु. यवान, जवाइन, वोवी, अजमों, तै. वामु, ता. अमन, फा. नानखां, अ. कमून मुलूकी, इं. ओमम्प्लन्, ला. टाईकोटीस, ये क्षुपजातिकी वनस्पतिके बीज हैं। साग आदिमें डाली जातीहै । गुण । अजमायन पाचन, रुचिकर्त्ता, तीक्ष्ण, गरम, हलकी, दीपनकर्त्ता, स्वादमें चरपरी और कडवी, पित्तकर्ता, वीर्य और शूलको हरण करे वादी, कफ, उदर, अफरा, गोला, प्लीह और कृमिरोगको दूर करे। *

अजमोदा.

अजमोदाखराश्वाचमयूरोदीप्यकस्तथा ॥
तथाब्रह्मकुशाप्रोक्ताकाखोलीचसमस्तका ॥
अजमोदाकटुस्तीक्ष्णादीपनीकफवातनुत् ॥
उष्णाविदाहिनीहृद्यावृष्याबलकरीलघुः ॥
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजोहरेत् ॥

अर्थ-अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कालोली और समस्तका, इतने संस्कृत नाम है। हिं. अजमोद, बं. वनयमानी, म. अजमोदा, गु. अजमो, तै. आजमोदा, फा. वजुल्क, रप्स तुख्यकरप्स, इं. एप्यंग्रेवियोलेन्स, सेलेरीसीड, कहतेहै, यह अजमायनका भेद है। और वनमें बहुत होतीहै इसीसे इसको वनयवानी कहतेहैं।

गुण। अजमोदका रस चरपरा और तीक्ष्ण है। अग्निदीपनी, कफवातके रोगोंका नाशक, उष्ण वीर्य, दाहकर्त्ता, हृदयको हितकारी, वृष्य, बलकारी, हलका, नेत्ररोग, कफविकार, वमन, हिचकी और वस्ति (मसाने) की पीडाको दूर करेह। इसकी प्रतिनिधि सोंफ है। अथवा पर्वती अजमोद है। प्रयोगमें इसके फलकी मात्रा ९ मासेकी है। और दर्पनाशक काहुकेफूल, और मस्तंगी है। †

* मि० डुड्—कहताहै कि, अजमायनमें मिरचां अथवा राईकी तीक्ष्णता, चिरायतेकी कडवास और हींगका एठन बंद करना, वादीका काढना, यह तीन गुण एकत्र रहतेहै।

अजमायनका तेल—संधिवातके दरदमें संधियोंके ऊपर लगानेमें आताहै।

मि० लिन्सडेल—कहताहै कि, अजमायनका तेल काढनेके लिये ३ सेर दुचली हुई अजमानमें १५ सेर पानी डालके मद्यसंधानकी विधिसे १० सेर पानी काढना चाहिये।

इंग्रजी औषधोंमें—अजमायन गरम, पेटके दर्दको नष्ट करता, तथा शूलको वैठारनेवाली गणना करी जायहै। पेटके भीतरका वायगोला, मरोडा, वदहजमी, दस्त वगेरह बिमारियोंमें यह अमूल्य-कीमती इलाज निकल पडताहै। विशूचिका (हैजा) की बिमारीमें यद्यपि स्वल्प असर करेहै, परंतु तोभी सेवन करनेसे फायदा होताहै।

देशी वैद्य—केवल अजमायन अथवा उसको सेंधानिमक, हींग और हरडके साथ देनेसे पेटका मरोडा दूर करेहैं। और इसप्रकार मानतेहै कि, इससे शरीरमेंसे निकलताहुआ प्रवाह बंद होयहै और इससे धोवेका पानी, अंजन वगेरह बनानेमें वर्त्ता जाता है।

युनानी हकीम—फेफडेके गलेकें पासकी नली सूजगई होय और कफ अधिक निकलता होय तो बंद करनेके लिये अजमायन देनेकी अनुमति देतेहैं, और अजमायनको पीस उसकी पुलटिश बांधनेसे दरद बिलकुल नष्ट होजाताहै।

† **डा० वीडी**—इसविषयकी टीका करता हुआ लिखता है कि, अजमोद वदहजमी और दस्तकी बिमारीमें अत्यंत उपयोगी है। तथा खराब स्वादवाली दवा अजमोदके पानीके साथ देनेसे उलटी आनेकीसी शंका नही होय। इससे ये सब दवा पेटमें शूल होनेकीसी शंका होनेको बंद करे इससे लार अधिक निकलतीहै। इससे पेटके अंदर पाचक करनेवाला प्रवाहीभी अधिक निकले और पेटका शूल नष्ट होजाय और पाचनशक्ति बढे। गलेके भीतरकी सूजनपरभी अजमोदको अन्यग्राही पदार्थके साथ मिलायके देवे।

चरकसंहितामें—अजमोदको शूलप्रशमन और दीपनीय (भूंख प्रदीप्त) करनेवाला वर्णन करा है।

सुश्रुतसंहितामें—इसको वातकफनाशक, अरुचिनाशक, दीपन, गुल्मशूलनाशक और आमपाचक कहाहै।

खुरासानी अजमायन.

पारसीकयवानीतुयवानीसदृशीगुणैः ॥७७॥

अर्थ–पारसदेशकी अजमायनको किरमानी अजमायन या खुरासानी अजमायन कहतेहैं । म. किरमणि ओवा, सुरवंदीचें फूल, अ. तुख्मइप्स, फा. बजुल्बंज, बंगदीवाना कहतेहैं । यह सपेद और लाल उत्तम होतीहै । इसमें अजमायनके समान सब गुण है । परंतु विशेषकरके पाचनी, ग्राही, मादक (मस्तीकरता) और भारी है ।

धीचक्षुर्मांद्यकृत्कर्णगौरवोत्पादनीपरा ।
कंठग्रहंचमनसोविक्षेपंवितनोतिच ॥
रक्तनिष्ठीवनंसर्वपीडामाशुव्यपोहति ।
विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरु ॥

अर्थ–बुद्धि और नेत्र इनको मंद करे, कानोंमें भारीपना, कंठना रुकनना, चित्तका चलायमान होना, इनको करे । तथा रुधिरका गेरना और सर्व प्रकारकी पीडाओंको नष्ट करे । विशेष करके पाचनी रुचिकारी, ग्राही, मादक और भारी है । **प्रयोगमें** इसके फलकी मात्रा आधे तोलेकी है ।

जीरक (जीरा, कालाजीरा, कलौजी.)

जीरकोजरणोजाजीकणास्याद्दीर्घजीरकः ॥
कृष्णजीरःसुगंधश्चतथैवोद्गारशोधनः ॥७८॥
कालाजाजीतुसुषवीकालिकाचोपकालिका
पृथ्वीकाकारवीपृथ्वीपृथुकृष्णोपकुंचिका७९
उपकुंचीचकुंचीचबृहज्जीरकइत्यपि ॥
जीरकत्रितयंरूक्षंकटूष्णंदीपनंलघु ॥
संग्राहिपित्तलंमेध्यंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ८०
ज्वरघ्नंपाचनंवृष्यंबल्यंरुच्यंकफापहम् ॥
चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मछर्द्यतिसारहृत् ८१

अर्थ–जीरक, जरण, अजाजी, कणा, तथा दीर्घजीरक, ए सब **सपेद जीरेके** पर्यायवाचक शब्द हैं । कृष्णजीर, सुगंध, उद्गारशोधक, ए सब **काले-जीरेके** नाम हैं । कालाजाजी, सुषवी, कालिका, उपकालिका, पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथुकृष्णा उपकुंचिका, उपकुंची, कंची और बृहज्जीरक ए सब **कलौजीके** संस्कृत नाम है । **म.** सपेद जीरेको, पांढरे जिरें, जिरें, **क.** बिळियजीरगे, काले जीरेको काळें जिरे, **क.** करिजीरगे, कलौजी, **क.** मेंकरिजीदुजीरगे, **तै.** जिलकरर कहतेहै । **बं** शुक्लजीरा, कृष्णाजीरा और कलौजी कहतेहे । **गु.** धोळुंजीरुं, कालीजीरी और कलौंजी जरुं. **फा.** कमूनी शोनीजत, हब्ब असवद, **इं.** कम्मिनन् सीड Cumminon-seed कहतेहैं । यहभी क्षुपजातिकी वनस्पति हैं और सर्वत्र प्रसिद्ध है । कालाजीरा काबुलके राज्यमें तथा हिंदुस्थानके उत्तरी पहाडोंमें होताहै ।

गुण । तीनो प्रकारके जीरे रूक्ष, कटु (चरपरे), गरम, अग्निदीपक, हलके, संग्राहक, पित्तकर्त्ता, स्मरणशक्तिवर्द्धक (भूलके रोगको दूर करनेवाले), गर्भाशय (जरायु) शोधक, ज्वरनाशक, पाचक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, रुचिकारक, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी ।

प्रयोग । वादीसें पेटका फूलना, गोलेका रोग, बमन और अतिसारको नष्ट करे [इसके चूर्णको सिर्काके साथ पीवे तो मिट्टीखानेके रोगोको दूर करे, दांतोंसें कुचल कपडेसें रस छानकें अंजन करे तो नेत्रोंका नाखूना विकार दूर हो, शूल, अजीर्णको नष्ट करे, और पकाशयको बल देताहै] **प्रयोगमें** इसके फलकी २ मासेकी **मात्रा** कही है उसके उपद्रवका नाशक **कतीरा** है और अजमायन इसकी **प्रतिनिधि** है । *

१. किसीके मतसें जीरा पांच प्रकारका है । जैसें–१ साधारण जीरा, २ कालाजीरा, ३ स्याहजीरा, ४ कलौजी, ५ शंखजीरा.

* **यूनानी हकीम**—सफेद जीरेको खुशबूदार, पेटकी ऐंठन नष्टकर्त्ता, और ग्राही गिनतेहैं । इसमेंसे वह आंख धोनेका पानी बनातेहैं कि जो उनके मतानुसार नेत्रका तेज बढाताहै । और छातीके दर्दमेंभी उसको वर्त्ततेहैं । और इस्से मूत्र अधिक आताहै, तथा पेटके जीव (कीडे) निकलजातेहै ऐसा मानतेहैं । गर्भस्थानमें सूजन आयकर अधिक दर्द होताहोय तो इस जीरेके पानीमें स्त्रीको वैठारनेकी प्रशंसा करतेहैं । इसीप्रकार

धान्यक (धनिया).

धान्यकंधानकंधान्यंधानाधानेयकंतथा ॥
कुनटीधेनिकाछत्राकुस्तुंबुरुवितुन्नकम् ॥८२॥
धान्यकंतुवरंस्निग्धमवृष्यंमूत्रलंलघु ॥
तिक्तंकटूष्णवीर्यंचदीपनंपाचनंस्मृतम् ॥८३॥
ज्वरघ्नंरोचकंग्राहिस्वादुपाकित्रिदोषनुत् ।
तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यकृमिप्रणुत् ॥
आर्द्रंतुतद्गुणंस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ८४

अर्थ-धान्यक, धानक, धान्य, धाना, धानेयक, कुनटी, धेनिका, छत्रा, कुस्तुंबुरु और वितुन्नक, ए **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** धनिया, **बं.** धनियां, **म.** धणे, **को.** कोथिंबन्या, **तै.** कोथमीलुं, **गु.** धाणा, **फा.** कजबुर, कश्नीज, **अ.** तुख्मे कसनीज, **इं.** कोरिएन्डर Coriander कहतेहैं । इसकीभी क्षुपजाति है और सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

गुण । धनियेका **रस** कषेला, चिकना, बलनाशक, मूत्रकारी, हलका, कडुआ, चरपरा, उष्णवीर्य, दीपन, पाचन, ज्वरघ्न, रोचक, ग्राही, इसका **पाक** मिष्ट, और त्रिदोष, तृषा, दाह, वमन, श्वास, खांसी, कृशता और कृमिरोगको नाश करेहै । कच्चाधनिया (कोथमीर)भी धनियेके समान गुण करेहै, स्वादु है और विशेष करके पित्तको नाश करेहै।प्रयोगमें इसके फलकी २ मासेकी मात्रा है।*

शतपुष्पा (सोंफ, सोआ).

शतपुष्पाशताह्वाचमधुराकारवीमिसिः ॥
अतिलंबीसितच्छत्रासंहिताछत्रिकापिच८५
छत्राशालेयशालीनौमिश्रेयामधुरामिसिः ॥
शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृद्दीपनीकटुः ८६
उष्णाज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ।
मिश्रेयातद्गुणाप्रोक्ताविशेषाद्योनिशूलनुत् ॥
अग्निमांद्यहरीहृद्याबद्धविट्कृमिशूलहृत्
रूक्षोष्णापाचनीकासवमिश्लेष्मानिलान्हरेत्

अर्थ-शतपुष्पा, शताह्वा, मधुरा, कारवी, मिसि, अतिलंबी, सितच्छत्रा, संहिता और छत्रिका, इतने **संस्कृत** नाम हैं । **हिं.** सोंफ, **बं.** शुलफा, मौरी, **म.** बाळंतशोप, वडी सोप, **क.** कासब्बसिगे, **गु.** वरीयाली, **फा.** एजयानज, एजयाना, बादियां, **इं.** पीम्पेनेल अनीसम् Pimpenella anisum

---

इस जीरेको पीस पुलटिश बनायके बांधनेसे बाहर निकलेहुए **मस्से** और अत्यंत दरद करनेवाली **बवासीर** जाती रहतीहै ।

पंजाबप्रांतमें—जीरेसे मूत्र अधिक उतरे तथा स्तनमें दूध अधिक उत्पन्न होताहै ऐसा मानतेहैं ।

इंग्रेजी औषधोंमें—इसे पाचक और पेटकी ऐंठन नष्टकर्त्ता कहाहै । और उसको पेटमें वायगोळा, पेटफूलनेकी ऐंठन, बदहजमी और आतडोंका शूल होता होय तो यह उपयोगी गिनतेहैं ।

चरकसंहितामें—जीरेको शूलप्रशमन (शूलनष्टकर्ता) मानतेहैं ।

सुश्रुतसंहितामें—इसको वातकफनाशक, अरुचिनाशक, दीपन, गुल्मशूल और आमको नष्ट करेहै (अर्थात् सूजन, शूल और आमपडतीको बंद करनेवाला है) ।

* **यूनानी हकीम**—धनियेको औषधके तरह पेटकी पीडा नष्ट करता, पिसाव अधिक लानेवाला, पाचक और कामोद्दीपन करनेवाला मानतेहै । और बदहजमीमें अनेकवार देनेकी अनुमति देतेहै । और उसको दरद नष्ट कर नींद लानेवाला, छातीमेंसे कफको निकालनेवाला, पेटको पीडा नष्ट करता समझतेहैं । वह, धनियेंका पानी बनातेहै कि जिससे आंख धोनेसे, शीतला निकले होय तो आंखको ईजा पहुचती रुकेहै ऐसा मानतेहैं और बहुत मुद्दतसे आंख दूखने आई होय उसको आराम होयहै और इसतरहभी मानतेहै कि धनियेसे केफी पदार्थोका (मदकारी पदार्थोंका) मद कम होताहै । जोके चूनके साथ धनियेको पीसके पुलटिश बनायके बांधनेसे बहुत दिनकी सूजन उतर जायहै ।

चरकसंहितामें—धनियेको तृषानिग्रहण और शीतप्रशमन (सरदी बंद करता) कहाहै ।

सुश्रुतसंहितामें—इसे सर्वज्वरनाशक, दीपक, दाहनाशक, अरुचिनाशक और उलटी बंद करनेवाला कहाहै ।

कहते है । छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा और मिशी ए संस्कृत नाम हैं । हिं॰ सोआ, बनसौंफ, बं. मौरी, म. बडीशेप, का. कासव्वसिगे, गु. सुवा. फा. वजुलतवा, तुख्मशिस, कहते हैं । ए दोनों औषध प्रसिद्ध है । चैत्र वैशाखमें ये फूलती है । और दूर २ तक इसकी सुगंध जाती है ।

गुण । सौंफ हलकी, तीक्ष्ण, पित्तकर्त्ता, दीपन, चरपरी, गरम, ज्वर, बादी, कफ, व्रण, शूल, और नेत्रके रोगोंकों हरण करे है । सोआमेंभी सौंफके समान गुण है । विशेष करके योनिशूल, मदाग्नि, हृदयको हितकारी, मलकी बद्धता, कृमि और शूलको हरण करेहै । रूखी, गरम, पाचनी, खांसी, वमन कफ और वादी इनको हरण करेहै । *

मेथी वनमेथी.

मेथिकामेथिनीमेथीदीपनीबहुपत्रिका ॥
बोधिनीबहुबीजाचजातिर्गंधफलातथा ॥८९
वल्लरीचक्रिकामन्थामिश्रपुष्पाचकैरवी ।
कुंचिकाबहुपर्णीचापित्तजिह्वायुवुद्धिधा ॥
मेथिकावातशमनीश्लेष्मघ्नीज्वरनाशिनी ॥
ततःस्वल्पगुणाबल्यावाजीनांसातुपूजिता९१

अर्थ-मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, बोधिनी, बहुबीजा, जाति, गंधफला, बल्लरी, चक्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुंचिका और बहुपर्णी, ए संस्कृत नाम है । सब भाषाओंमेंभी मेथी नामसे प्रसिद्ध है । ता. वेनब्यम, गु. गदभ, फा. तुख्मेशमपीत, अ. बजरुल् हुल्बा, क. मेथयक, तै. मेतुलु, इंग्रेजीमे फेनुग्रीक, ला॰ ट्राइ गोनेला कहतेहैं । गुण । मेथी वायुनाशक, कफनाशक, ज्वरघ्न, रुचिप्रद, अग्निदीपक और रक्तपित्तप्रकोपक । वनमेथी इसकी अपेक्षा गुणोंमें न्यून (अल्प गुणवाली) है । घोडोंके वास्ते हितकारी । †

१ 'चकामन्था' इति पाठांतरम् ।

* चरकसंहितामें—सौफको प्रजास्थापन और शूलप्रशमनकर्त्ता कहीहै ।

सुश्रुतसंहितामें—सौफको कफसंशमन (कफनष्ट करता) मानीहै ।

हकीमलोग—सौफके पत्तोंको गरम मानतेहैं और इसके तेलको गरमतरीके राध पडगई होय ऐसी सूजनके ऊपर लगानेकी प्रशंसा करतेहै । प्रसव हुई स्त्रियोंको इसका क्काथ रुधिर शुद्ध करनेको उसीप्रकार गर्भस्थानकी शुद्धि होनेकेवास्ते देतेहै । तथा इसको पाचक और जठराग्नि प्रदीप्तकर्त्ता मानतेहै ।

हकीमलोग—सूआको पानीमें भिगोय फिर इस पानीको प्रसूता स्त्रियोंको पिलानेकी प्रशंसा करतेहैं, और उसको पेटकी पीडा नष्टकर्त्ता, मूत्र अधिक लानेवाला और पित्तका हरणकर, सूजन उतारनेवाला गिनतेहैं ।

चरकसंहितामें—सूआको रुधिरमेंसे पित्तको निकालनेवाला और स्तनोंके रुधिरको शुद्ध करनेवाला लिखाहै ।

† आयुर्वेदग्रंथोंमें—मेथीमें दर्द नष्ट करनेकी, पाचन करनेकी, उसीप्रकार कामोत्तेजन करनेकी शक्ति है । बदहजमी, अरुचि, स्त्रियोंका अतिसार और संधिवातके दरदमें खानेको मेथीमोदक वगेह नामसे उसके लड्डू बनानेकी विधि कहीहै और उसमें बहुतसे खुशबूदार पदार्थोंको एक एक भाग और सबकी बराबर मेथि लेनी कहीहै ।

यूनानी हकीम—मेथीके बीजोंको गरम, फोडे पकानेवाले, सुरक दस्त खुलासा लानेवाले, पित्त निकालनेवाले, और पुरानी खांसी तथा तिल्ली और कलेजा मोटा होगया होय ऐसे रोगोंमें अत्यंत गुणदाता मानतेहैं । बाहर और भीतरकी सूजनके लिये और जली हुई चमडी ऊपर तथा बाल झडतेहों उनके रोकनेको मेथीके पत्तोंकी पुलटिश बहुतही गुणकारी होयहै ।

प्राचीन ग्रीक वैद्य डायोसकोराइडीस—सूजनके दर्दोंमें मेथीके चूनकी पुलटिश बांधनेकी प्रशंसा करताहै ।

दक्खिनके वैद्य—मेथीके बीजोंको प्रथम अग्निपर सेकके फिर पानीमें, मिलाय एंठनके रोगमें देतेहैं

चंद्रशूर (हालो).

चंद्रिकाचर्महंत्रीचपशुमेहनकारिका ॥
नंदिनीकारवीभद्रावासपुष्पासुवासरा ॥९२
चंद्रशूरंहितंहिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ॥
असृग्वातगदद्वेषिबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥९३॥

अर्थ-चंद्रिका, चर्महंत्री, पशुमेहनकारिका, नंदिनी, कारवी, भद्रा, वासपुष्पा और सुवासरा, ए **संस्कृत** नाम है । **हिं.** हालों, आसालबीज, **बं.** हालिम, **म.** हलिम, अहाळीव, **गु.** असेरीओ, असेलियो, **फा.** तुख्मतरातजक, वझुलिशाद, **इं.** लीपीडीअम् सटीव्हम् Lepidium sativum कहते है । ये एकप्रकारके काले २ बीज होते है ।

गुण । **चंद्रशूर** हिचकी, वातकफ, अतिसार और वातरक्तरोगको हितकारी है । तथा बलकारक, और पुष्टिजनक (पुष्टी करता) है । [मूत्रकृच्छ्र, वीर्यवर्धक, कामदेवका उद्दीपन कर्ता है]। इसके बीजकी मात्रा ७ मासेकी है । इसकी प्रतिनिधिमें गंदना लेना, और इसके दर्पका नाशक **कतीरा** है । *

चतुर्बीज (चारदाना).

मेथिकाचंद्रशूरश्चकालाऽजाजीयवानिका ॥
एतच्चतुष्टयंयुक्तंचतुर्बीजमितिस्मृतम् ॥९४॥
तच्चूर्णभक्षितंनित्यंनिहंतिपवनामयम् ॥
अजीर्णंशूलमाध्मानंपार्श्वशूलंकटिव्यथाम् ॥

अर्थ-मेथी, हालो, कालाजीरा और अजमायन, ए चारों द्रव्य एकत्र मिलीहुईको **चारदाना** कहते हैं । इनके चूर्णका सेवनवादीके रोगको, अजीर्ण, शूल, अफरा, पसवाडेका शूल और कमरकी पीडाको नष्ट करे।

हिंगु (हींग).

सहस्रवेधिजतुकंबाह्लीकंहिंगुरामठम् ॥
हिंगुष्णंपाचनंरुच्यंतीक्ष्णंवातबलासहृत् ॥
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नंपित्तवर्द्धनम् ॥
स्त्रीपुष्पजननंबल्यंमूर्च्छापस्मारहृत्परम् ९६

अर्थ-सहस्रवेधि, जतुक, बाल्हीक, हिंगु और रामठ, ए **संस्कृत** नाम है । **हिं.** हींग, **बं. हिं, म.** हिंग, **क.** लेसु, **तै.** इंगु, **गु.** हींग, हिंगडो (वघारणी), **फा.** हिलतीस, अंगोजा, **इं.** आस्साफोयटी Arthex asafoetida कहते है । इसकी उत्पत्ति वाल्हीक देश (वलख जो काबूलके राज्यमें हैं तथा हिरात, खुरासान आदिमें होतीहै । यह एक वृक्षका गोंद हैं कि, जिसको इंग्रेजीमें (आर्थेक्स असाफेटीडा) कहते हैं । इसके पत्ते और कंदमें चीरा देकर निकालते है । इसकी अनेक जाति है, परंतु इनमें **हीराहींग** उत्तम होतीहैं । और वेचनेवाले पठान लोग जो इसको लातेहै, वो एक लहसनी हींग बनीहुई लाते हैं कि जिसके डालनेसे खानेके पदार्थका सर्वथा स्वाद विगड जाता है । और एक इसीका भेद **हींगडा** होताहै । जैनी लोग उसीको बरततेहैं । और हींगको अभक्ष मानते हैं । जैपूरके राज्यमें बहुत मिलता है ।

गुण । **हींग** गरम है, पाचन, रुचिकारी, तीक्ष्ण, [पित्तवर्द्धक, बलकारक, रजप्रवर्त्तक, हिंगके सेवन करनेसें वातकफ, शूल, गोला, उदर, कृमिरोग, मूर्च्छा, अपस्मार (मृगी) रोगको नष्ट करे ।] [चातुर्थक ज्वरको दूर करे, इसको सिर्केमें मिला-

---

सुश्रुतसंहितामें—मेथी पित्तशोणित और वादीनाशक है (अर्थात् पित्त काढकर रुधिरको सुधारनेवाली), बृंहण (पौष्टिक), स्तन्य (स्तनमें रुधिर शुद्धकर दूध उत्पन्न करता) मानाहै ।

यूनानी हकीम—मेथीको मूत्रल और आर्त्तवदोषहर मानतेहैं और संधिवातमें और प्रसूतमें स्त्रियोंकी भूँख मंद होगई होय तो मेथीके लड्डू खानेको कहतेहैं ।

* **मखजनउलअदवियाका बनानेवाला**–लिखताहै कि,हालोंके बीज अत्यंत गरम और उनके खानेसे पेशाब अधिक उतरताहै । और पुरुषार्थ बढे, पेटमें, तिल्लीकी गांठ मोटी होगई होय तो उसके जहांकी तहां बैठार देनेको उसीप्रकार शरदीसे होनेवाले और २ दरदोंके नष्ट करनेको हालोके बीज देनेकी आज्ञा देताहै ।

संस्कृत वैद्यकग्रंथोंमें—हालोंको कुव्वत देनेवाला और पाचनशक्ति सुधारनेवाला मिनहै ।

यकैं लेप करै तो बालोंके गिरनेको दूर करै.] इसके देनेकी मात्रा २ सें ४ रत्तीतककी है । *

वचा (वच).

वचोग्रगंधाषड्ग्रंथागोलोमीशतपर्विका ॥
क्षुद्रपत्रीचमंगल्याजटिलोग्राचलोमशा ॥
वचोग्रगंधाकटुकातिक्तोष्णावांतिवह्निकृत्
विबंधाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
अपस्मारकफोन्मादभूतजंत्वनिलान्हरेत् ॥

अर्थ—वचा, उग्रगंधा, षड्ग्रंथा, गोलोमी, शतपर्विका, क्षुद्रपत्री, मंगल्या, जटिला, उग्रा और लोमशा, ए **संस्कृत** नाम है । **हिं.** वच, घुड वच, **लो**सन जर्द, **तै.** वासा, **बं.** वच, **म.** वेखंड, **गु.** वज, **क.** विलीय वजे, **फा.** सवेबवा, अकारून्, **अ.** वदल वुज, **इं.** अकोरस केलोमस Acorus Calomus कहतेहै । यह **गुल्म** जातिकी वनस्पतिकी लकडी है । इसका काला रंग और सुगंधित होती है । कलकत्तेमें असल मिलती है और इधरके सहरोंमें पसारी लोग एक सफेद २ लकडी देते है । उसमें सर्वथा सुगंध नहीं है । परंतु सुगंधादि गणमें पाठ होनेसें सुगंधयुक्त ही ठीक है ।

गुण । वचमें उग्र सुगंधी होतीहै, **जायका** इसका चरपरा और कडवा है । उष्ण **वीर्य**, वमन और जठराग्निको बढावे । **आमयिक प्रयोग** । निबंध (नलादिकका बंधन), अफरा (पेटका फूलना), कफजन्य उन्माद रोग, अपस्मार (मृगी) और शूलरोग इनको नष्ट करै । वचका सेवन करना मलमूत्रको शुद्ध करै, भूतादि भय और वातक रोगोंको

* **संस्कृत वैद्यक ग्रंथोंमें**—हींगको वर्त्तनेके पहले भूँननेकी आज्ञा है और अपने देश जैसे वनस्पति खानेवाले लोगोंमें हींग पेटकी पीडा नष्ट करनेको मसालेमें डालनेको कहतेहे और ज्ञानतंतुओंके दर्दोंमें शूलके कम करनेको वर्त्तना लिखाहै परंतु इसप्रकार मानते हैं कि हींगका हमेश सेवन करनेसे भेजेवाली जगहमें आनेवाला ज्वर रुकताहै ।

यूनानी हकीम—हींगको कामोत्तेजक पदार्थोंमेंसे १ गिनतेहै, ये हकीम अनेक रोगोंमें देहके ऊपर लेप करने और खानेकी प्रशंसा कराकरतेहें ।

पुराने ग्रीक और **लाटिन लिखनेवाले उसीप्रकार अरबवाले** और **फारसी ग्रंथकार**-हींगको दो आतिकी कहतेहैं । एक **तैअब** (उत्तम) और दूसरी **मुनतीन** (दुष्ट दुर्गंधवाली) । इनमें पहली मीठी होतीहै और दूसरी लहसनी गंधदार । ये दोनो जुदे जुदे वृक्षोंसे प्रगट होतीहै । इन दोनोंमें एक वृक्षको **सफेदअंजूदन** (जो प्रथमजातकी हींगको प्रगट करेहं) नामसे बोलतेहै और दूसरीको **स्याहअंजूदन** (जो दूसरी जातिकी हींगको उत्पन्न करेहै) नामसे पहचानेहे ।

थिओफेस्टिस—अपनी वनस्पति इतिहासके छटे पुस्तकमें थर और मूलवाली दोनोंमेंसे उत्पन्न होनेवाली दो जातिकी हींगके विषयमें लिखतेहै कि जिसके वर्णनऊपरसे यूरोपमें हाल मिलनेवाली दो जातकी हींगसे मिली हुई आती हैं ।

मिलीअर—कहताहै कि प्रत्येक १०० भाग हींगमें ३७॥ भाग तेल, ३८॥ भाग गोंद और बाकीका थर (परत) और वनस्पतिसे बनी हींग होतीहै ।

डाक्टरी ग्रंथोंमें—हींगको शूल नष्ट करता, जाग्रत करता और पेटमेंसे कीडे निकालनेवाला मानतेहै, स्त्रियोंमें होनेवाले हिस्टिरियाके रोगमें उसीप्रकार श्वास, बडीभारी खांसी, और पेटमें वायुकरके पीडा होती होय उसके देनेकी आज्ञा देतेहै । छोटे २ बच्चाओंके फैंफडेकी सूजन अत्यंत बढगई होय और पेटमें कीडे होनेके सबब जब ज्ञानतंतूओंके ऊपर असर होय उस समय उन कीडोंको निकाल डालनेको अत्यंत उपयोगी कहीहै.

चरकसंहितामें—हींगको श्वासहर, दीपनीय, चेतनास्थापन और वातकफहर कहीहै ।

सुश्रुत संहितामें—हींगको कफहर, दीपन और गुल्मादि रोगहरणकर्ता कहीहै ।

दूर करे। प्रयोगमें इसकी लकडीकी छाल १ मासेकी मात्रा देवे।

खुरासानीबच.

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहैमवतीतिसा ॥
हैमवत्युदितातद्वद्वातंहंतिविशेषतः ॥ ९९ ॥

अर्थ-खुरासानीबच सपेद रंगकी इसका दूसरा नाम **हैमवती** है। हिंदीमें खुरासानी वा किरमानी बच कहतेहैं। **गुण**। खुरासानीबचमें सामान्य बचके समान गुण हैं। वादीको नाश करे यह विशेषता है।

महाभरीबच (कुलिंजन.)

सुगंधाप्युग्रगंधाचविशेषात्कफकासनुत् ॥
सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कंठमुखशोधिनी १००

अर्थ-सब प्राणी इसको महाभरी बच कहते हैं। और दूसरा नाम इसका कुलिंजन या. कुलीजन है। पानकी जडको कुलिंजन कहतेहैं। **फा.** खोलंजान, **अ.** ईर्कसोलिजान्, **इं.** ग्रेटर गेलंगाल, **ला.** अल्पिनिया अफिसीनेरम् कहते है। **गुण**। महाभरीबच सुगंधित होकरभी उग्र गंध, विशेष करके कफनाशक और खांसीको नाश करे। रोचक, कंठको सुधारनेवाली, एवं हृदय, कंठ और मुखको निर्मल करे। सब प्रकारकी बचकी **मात्रा** १ मासेकी है।

दूसरी बच सुगंधयुक्त मोटी गांठकी जिसको लोकमें महाभरी कहतेहैं उसके गुण.

स्थूलग्रंथिःसुगंधास्यात्ततोहीनगुणास्मृता १

अर्थ-मोटी गांठकी बच सुगंधयुक्त और कुलिंजनसे गुणोंमें हीन होतीहै।

चोबचीनी.

द्वीपांतरवचाकिंचित्तिक्तोष्णावह्निदीप्तिकृत्
विबंधाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
वातव्याधीनपस्मारमुन्मादंतनुवेदनाम् ॥
व्यपोहतिविशेषेणफिरंगामयनाशिनी ॥ ३ ॥

अर्थ-द्वीपांतरकी अर्थात् अन्य विलायतकी बच [जिसको चोबचीनी कहते हैं] **म.** चोपचीनी **ते** फिरंगीचक्का, **इं.** चाईनारुट् चक्का, **ला.** स्माईलाक्स चाईना, **फा.** एवन। **गुण**। **रसमें** किंचित कडवी, गरम, अग्निको दीपन करता, विबंध, अफरा, शूल, मलमूत्रको शोधन कर्ता, वातव्याधि, अपस्मार, उन्माद, देहकी पीडा, इनको दूर करे। विशेष करके फिरंगवात (गरमीके रोग)को नाश करेहै।

सुधामूली.

अमृताजीवनीजीवासुधामूल्यमृतोद्भवा।
प्राणदाप्राणभृत्प्रोक्तावीरकंदामताबुधैः ॥
दीपनीतुसुधामूलीशुक्रकृद्बलवर्धनी।
रक्तदोषहरीहृद्याकामसंजननीपरा ॥
रसायनीपरंवृष्यावयस्थापुष्टिदामता।

अर्थ-अमृता, जीवनी, जीवा, सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राणभृत् और वीरकंदा, ए बुद्धिमान् वैद्योंने सुधामूली (सालममिश्री) के नाम कहेहैं।

गुण। सुधामूली अर्थात् सालममिश्री अग्निको दीपन करे, वीर्यकारक, बल बढानेवाली, रुधिरके दोषोंको हरण करे, हृदयको हितकारि, कामदेवको प्रगटकर्त्ता, रसायनी, वृष्य, अवस्थाको स्थापन करता और पुष्टि करता है।

हाउबेर.

हाउबेर दो प्रकारका है। उनमें **पहला** फल मछलीके सदृश आमकीसी दुर्गंधतायुक्त, **दूसरा** पीपरके फल समान मछलीकीसी गंधका उन दोनोंके नाम और गुण।

हबुषावपुषाविस्रापराश्वत्थफलामता ॥
मत्स्यगंधाप्लीहहंत्रीविषघ्नीध्वांक्षनाशिनी ॥
हबुषादीपनीतिक्तामृदूष्णातुवरागुरुः ॥
पित्तोदरसमीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ॥
पराप्येतद्गुणाप्रोक्तारूपभेदोद्वयोरपि ॥ ९ ॥

अर्थ-**प्रथम** प्रकारके नाम-हबुषा, वपुषा और विस्रा। **दूसरे** प्रकारवालेके नाम-आश्वत्थफला, मत्स्यगंधा, प्लीहहंत्री, विषघ्नी, और ध्वांक्षनाशिनी। **हिं.** हाउबेर, **बं.** हपुषा, **क.** परङ्गहपे, **ला.** येवेटियनेरिफोलिया, **गुण**। **हबुषा** अग्निदीपक, कडवी, तिक्त, मृदु, गरम, कषेली और भारी है। यह पित्त, उदररोग, वायु, बवासीर, संग्रहणी, गोला और शूल रोगको नष्ट करे। **दूसरे** प्रकारका जो फल है, उसकेभी

इसीप्रकार गुण है । हवुषाके प्रतिनिधिमें खल्य लेनी चाहिये । जो आजकल सब पसारीलोग और अत्तारलोग हवुषा नाम करके द्रव्य देते हैं वह हवुषा नहीं है । वह कबाबचीनीका अथवा मिरचका डांठरा है ।

वायविडंग.

पुंसिक्लीबेविडंगःस्यात्कृमिघ्नोजंतुनाशनः ॥
तंडुलश्चतथावेल्लममोघाचित्रतंडुला ॥ ६ ॥
विडंगंकटुतीक्ष्णोष्णंरूक्षंवह्निकरंलघु ॥
शूलाध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबंधनुत् ॥ ७ ॥

अर्थ-विडंग, कृमिघ्न, जन्तुनाशन, तंडुल, वेल्ल, अमोघा और चित्रतंडुला, ए संस्कृत नाम है । हिं. वायविडंग, बं. विडंग, म. गु. वावडींग, कारकुनी, क. वायुवीडंग, ता. वायविलं, तै. वायुवीडंगमु, फा. विरंजकावली, ला. इंबेलियारीबीस Embeliaribes, इं. बेमेंग् ।

गुण । वायविडंग चरपरी, तीक्ष्ण, गरम, रूक्ष, अग्निकारक, लघु, किंचिन्मात्र कडवी, विषनाशक और प्रतिनिधारक है । आमयिक प्रयोग । यह शूल, अफरा, उदररोग, कफ, कृमि, वादी और मलबद्धको निवारण करे । इसके दर्पका नाशक कतीरा है । और प्रतिनिधिमें वाकलाकी फलीके बीज लेना । मात्रा २ मासेहै । *

* मीरमुहम्मद हुसेन—लिखताहै कि, वायविडंग खानेसे पेसावका रंग लाल होजाताहै इसवास्ते इसे ताजे दूधके साथ देनी चाहिये ।

डा. रोकसवर—उसका वर्णन करते समय लिखताहै कि, अनेकवार वायविडंग कालीमिरचके साथ मिलाकर पसारीलोग वेचदेतेहैं । वायविडंगके चूर्णकी मात्रा छोटे २ बालकको एक छोटी चमचीभरके दिनमें दो वखत और बडे मनुष्यको बडा चमचाभरके देनी चाहिये । इसका स्वाद उत्तम, कुछ २ कषेला और थोडी खुसबूदार होय है । छोटे बच्चोंको पिलानेके दूधमे वायविडंगके थोडे दाने मिलानेसे उनके पेटमें वादीका कोप नहीं होय ।

सुश्रुतसंहितामें—वायविडंगको शरीरमें शक्ति पैदा करनेको तथा वृद्धावस्थाका असर नहो आवे ऐसा करनेके वास्ते मुलहटीके साथ देनेकी प्रशंसा करीहै ।

चरकसंहितामें—वायविडंगको कृमिनाशक, कुष्टनाशक और शिरोविरेचन (नासिकासे जलकी निकालेवाला), गुल्म, शूलनाशक, खांसी, श्वास हरणकर्त्ता कहाहै ।

आजकलके लिखनेवालोंने—लिखाहै कि, वायविडंग पेटका दर्दनाशक है, पाचनशक्ति बढानेवाला, पेटके कीडे निकालनेवाला, वदहजमीनाशक और त्वचाके रोगनाशक है ।

यूनानी हकीम—वायविडंगको जुलावद्वारा पेटके विगाड निकालनेवाला गिनतेहैं । उसीप्रकार पेटके चपटे कीडे काढनेको सूखे वायविडंगके फल पीसकर नोवरसके भीतर उमरवाले बालकको १ चमचा भरके और बडी उमरके मनुष्योंको दो चमचे मक्खन और मिश्रीके साथ मिलायके देनेकी प्रशंसा करतेहैं ।

डा. रोयल्—कहताहै कि, इससे जुलाबभी लगताहै और पानीमें मिलायके देय तो पेटके कीडे निकल जातेहैं तथा मूलव्याधि (बवासीर)की विमारीमें वह देनेकी प्रशंसा करेहै ।

डा. डेकनूडोल्—कहताहै कि, इस बीजकी कुछ तीक्ष्णताका कारण उसके रहनेवाले खारी वासकी राल जैसा पदार्थ है ।

सुश्रुतसंहितामें—इस फलको दर्द (पित्तके बढनेसे शरीरके उपर छोटे २ फोडे उत्पन्न होतेहैं उनके) नष्ट करनेवाला कहाहै ।

इंग्रेजी ग्रंथकर्त्ताओंके—मतसे मूल और छालका स्वाद कडवा है । उसके गुण सिकोना (कौनैन जो एक वृक्षकी छालमेंसे निकलेहै) उस वृक्षके समान है; यह शीतल है । फल खांसी, सरदी और श्वासके रोगमें अत्यंत गुणकारी गिना गयाहै । फलके उपरकी छाल साबुदाना और माखनके साथ मिलायके दस्तकी विमारीमें अत्यंत फायदा करेहै । दूधमें मिलायके पीवे तो कामला और पित्तके अन्यरोगोंमें देतेहैं । यदि दस्त होनेके समय ज्यादे जोर पडता होय और आम पडती होय तो नींबूके रसके संग मिलायके खाय ।

तुंबुरु.

तुंबरुःसौरभःसौरोवनजःसानुजोंधकः ॥
तुंबरुप्रथितंतिक्तंकटुपाकेऽपितत्कटु ॥ ८ ॥
रूक्षोष्णंदीपनंतीक्ष्णंरुच्यंलघुविदाहिच ।
वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताकृमीन् ॥
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणिनाशयेत् ।

अर्थ-तुंबरु, सौरभ, सौर, वजन, सानुज और अंधक, ए संस्कृत नाम है। हिं. बं. तुंबरुफल, म. चिरफल, को. चिरफल, कालीमिरचके समान फटेमुखका होताहै।

गुण। तुंबरु कडवा, पाकके समय कटु, रूक्ष, गरम, अग्निदीपक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, लघु और विदाही। प्रयोग। यह वातश्लेष्मा, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरपीडा, देहका, भारीपना, कृमि, कोढ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र, इनको दूर करे। इसका फल लेना; मात्रा १ मासेकी है।

वंशलोचन.

स्याद्वंशरोचनावांशीतुगाक्षीरीतुगाशुभा ।
त्वक्क्षीरीवंशजाशुभ्रावंशक्षीरीचवैणवी १०
वंशजाबृंहणीवृष्याबल्यास्वाद्वीचशीतला ।
रूक्षाकषायपित्तघ्नीदुष्टशोणितशोधिनी ॥
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ।
हरेत्कुष्ठंव्रणंपांडुंदाहमुद्रातकृच्छ्रजित् ॥१२॥

अर्थ-वंशरोचन, वांशी, तुगाक्षीरी, तुगा, शुभा, त्वक्क्षीरी, वंशजा, शुभ्रा, वंशक्षीरी और वैणवी ए संस्कृत नाम हैं। हिं. बं. बंसलोचन, गु. वांसकपूर, फा. तबाशीर, तै. वंशरोचना, ला. बाबुणाएरंडीनेशिआ। यह मोटे और दृढबांसकेभीतरसें निकलता है। यह एक प्रकारका पत्थर है। जब बांसमें यह सफेद रस सूख जाता है तब वंशलोचनके कंकर बन जातेहैं।

गुण। वंशलोचन पुष्टिकारक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, स्वादु, शीतल, रूक्ष, कषेला, पित्तनाशक और रक्तदोषको हरण करें।

प्रयोग। वंशलोचनका सेवन करना तृषा, खांसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्तपित्त, कामला, कुष्ठ, व्रण, पांडु, दाह और वातजन्य मूत्रकृच्छ्रको दूर करे। मात्रा इसकी ६ रत्तीकी है।

तवाखीर.

तवक्षीरंपयक्षीरंयवजंगवयोद्भवम् ॥
अन्यद्गोधूमजंचान्यत्पिष्टिकातंडुलोद्भवम् ॥
अन्यच्चतालसंभूतंतालक्षीरादिनामकम् ॥
वनगोक्षीरजंश्रेष्ठंअभावेऽन्यदुदीरितम् ॥
तवक्षीरंतुमधुरंशिशिरंदाहपित्तनुत् ॥

अर्थ-तवक्षीर, पयक्षीर, यवज, गवयोद्भव, गोधूमज, तंडुलोद्भव, तालसंभूत और तालक्षीरादिनामक ए संस्कृत नाम है। हिं. तवाखीर, म. तवखीर, फा. तवासीर, इं. अरारोट, ला. कर्क्यमाणाष्टिफोलिया। सब तवाखीरोंमें वनकी गौके दूधसें जो बनता है वह उत्तम है। इसके अभावमें अन्य तवाखीर लेने। गुण। तवाखीर मधुर, शीतल और दाहनाशक है।

समुद्रफेन.

समुद्रफेनःफेनश्चडिंडीरोऽब्धिकफस्तथा ॥
समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलश्चसः ॥
कषायोविषपित्तघ्नःकर्णरुक्कफहल्लघुः ॥ १३ ॥

अर्थ-समुद्रफेन, फेन, डिंडीर, अब्धिकफ, हिं. बं. समुद्रफेन, गु. समुद्रफीण, का. कडलनागले, तै. सामुद्र नालिक, फा. कफे दरया, अ. जुबदुल बेहर, ला. सेपिया ओफिसीनेलीस्त, इं. कटल फीसबोन्। यहभी एक जातिका पाषाण है।

गुण। समुद्रफेन नेत्रोंको हितकारी, कृशकारी (शोषक) शीतल, कषेला और हलका, इसमें विषनाशक शक्ती है। यह कर्णकी पीडा और कफको नष्ट करे। इसकी मात्रा दो मासेकी है।

अष्टवर्ग.

जीवकर्षभकौमेदेकाकोल्यौऋद्धिवृद्धिके ॥
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः १४
अष्टवर्गोहिमःस्वादुर्बृंहणःशुक्रलोगुरुः ॥
भग्नसंधानकृत्कामबलासबलवर्द्धनः ॥
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ॥१५॥

अर्थ–जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि, ए आठ औषधोंके मिलनेसैं अष्टवर्ग चरकादि ऋषियोंने कहा है। **गुण** । अष्टवर्ग शीतल, स्वादु, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, भारी, टूटेहुए स्थानको जोडनेवाला, कामवर्द्धक, कफ प्रगट करता और बलकारक, एवं वायुजन्य रक्तपित्त, तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय इन सब रोगोंको नष्ट करे ।

जीवक ऋषभक.

जीवकर्षभकौज्ञेयोहिमाद्रिशिखरोद्भवौ ॥
रसोनकंदवत्कंदौनिःसारौसूक्ष्मपत्रकौ १६
जीवकःकूर्चकाकारऋषभोवृषशृंगवत् ॥
जीवकोमधुरःशृंगोह्रस्वांगःकूर्चशीर्षकः ॥
ऋषभोवृषभोधीरोविषाणीद्राक्षइत्यपि ॥
जीवकर्षभकौबल्यौशीतौशुक्रकफप्रदौ ॥
मधुरौपित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥१८

अर्थ–**जीवक** और **ऋषभक** ए दोनों प्रकारके उद्भिद (कलडी) हिमालय पर्वतकी शिखर (शृंग) पर प्रगट होतेहे। इन दोनोंका कद लहसनके कंदके समान होता है। सारहीन और छोटे २ पत्ते होतेहैं ।

इनमें **जीवक**, कूर्चक (बुहारी, झाडू)के आकारवाला और **ऋषभक** बैलके सींगके समान होताहे। जीवक, मधुर, शृंग, ह्रस्वांग, कूर्चशीर्षक, ए **जीवक**के **संस्कृत** नाम हे । ऋषभ, वृषभ, धीर, विषाणी, द्राक्ष, ए **ऋषभक**के संस्कृत नाम हे। **गुण** । जीवक और ऋषभक दोनों बलकर्त्ता, शीतलवीर्य और कफवर्द्धक, मधुर (जायका मीठा), पित्त, दाह, रुधिरविकार, कृशता, वादी और क्षयरोगको नष्ट करे ।

मेदा, महामेदा.

महामेदाभिधःकंदोमोरंगादौप्रजायते ॥
महामेदावनीमेदास्यादित्युक्तंमुनीश्वरैः १९
शुक्लार्द्रकनिभःकंदोलताजातःसुपांडुरः ॥
महामेदाभिधोज्ञेयोमेदोलक्षणमुच्यते ॥ २० ॥
शुक्लकंदोनखच्छेद्योमेदोधातुमिवस्रवेत् ॥
यःसमेदेतिविज्ञेयोजिज्ञासातत्परैर्जनैः ॥ २१
स्वल्पपर्णीमणिच्छिद्रामेदामेदोभवाध्वरा ॥
महामेदावसुच्छिद्रात्रिदंतीदेवतामणिः २२
मेदोयुगंगुरुस्वादुवृष्यंस्तन्यकफावहम् ॥
बृंहणंशीतलंपित्तरक्तवातज्वरप्रणुत् ॥ २३ ॥

अर्थ–महामेदा नामक कंद **मोरङ्गदेश** आदि स्थानोंमें प्रगट होताहे। जिस जगे **महामेदा** उत्पन्न होतीहे उसी जगे **मेदा** प्रगट होयहे । **महामेदा** देखनेमे सपेदरंग अदरखके कंदकेसमान **कंद** होताहै और इसकी पीलेरंगकी लता (बेल) चलतीहे। यह महामेदाके लक्षण कहे । अब **मेदा**के लक्षणोंको कहतेहे । **मेदा**कामी सपेद **कंद** होताहे । नखके छेदनेसें अर्थात छीलनेसे उसमेंसे **मेदा** (चरबी)के समान रस टपकता है । उसको मेदा जानना । स्वल्पपर्णी, मणिछिद्रा, मेदा, मेदोद्भवा, अध्वरा, [वा धरा] ए **सं.** मेदाके नाम। महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदंती, देवता और मणि इतने **संस्कृत** नाम महामेदाके हे । **गुण** । मेदा और महामेदा दोनों भारी, स्वादिष्ठ, वीर्य प्रगटकारी, स्तन्य (दूध) वर्द्धक, कफजनक, पुष्टिकारक, शीतल, रक्तपित्तनाशक, तथा वातज्वर शांति करे है ।

काकोली, क्षीरकाकोली.

जायतेक्षीरकाकोलीमहामेदोद्भवस्थले ॥
यत्रस्यात्क्षीरकाकोलीकाकोलीतत्रजायते ॥
पीवरीसदृशःकंदःक्षीरंस्रवतिगंधवान् ॥
सप्रोक्तःक्षीरकाकोलीकाकोलीलिंगमुच्यते ॥
यथास्यात्क्षीरकाकोलीकाकोल्यपितथाभवे-
त् । एषाकिंचिद्भवेत्कृष्णाभेदोऽयमुभयोरपि
काकोलीवायसोलीचवीराकायस्थिकातथा
साशुक्लाक्षीरकाकोलीवयस्याक्षीरवल्लिका ॥
कथिताक्षीरिणीधाराक्षीरशुक्लापयस्विनी ॥
काकोलीयुगलंशीतंशुक्रलंमधुरंगुरु ॥
बृंहणंवातदाहास्रपित्तशोषज्वरापहम् ॥२८॥

अर्थ–जिस देश और स्थानमें **महामेदा** उत्पन्न होतीहे उसी स्थानमे **काकोली** और **क्षीरका-**

कोली प्रगट होतीहै । **क्षीरकाकोलीका** कंद देख-नेमें **सतावरके** कंदके समान होताहै, तथा एकप्रकारका गंधयुक्त, इसमेंसे **रस** निकलताहै । **काकोली** किंचित् कालेरंगकी होतीहै । इन दोनोंमें इतनाहीं फरक है । काकोली, वायसोली, वीरा और कायस्थिका, इतने **संस्कृत** नाम **काकोलीके** हैं । **क्षीरकाकोली** सपेदरंगकी और इसके अन्य **संस्कृत** नाम ए हैः-वयस्था, क्षीरवल्लिका, क्षीरिणी, धारा, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी । **गुण** । दोनोंप्रकारकी **काकोली** शीतल, शुक्रकर्ता, मधुर, भारी, पुष्टिकारक और वायुनाशक, दाह, रक्तपित्त, शोष और ज्वररोग इनको नष्ट करै ।

ऋद्धि वृद्धि.

ऋद्धिर्वृद्धिश्चकंदौद्वौभवतःकोशयामले ॥
श्वेतलोमान्वितःकंदोलताजातःसरंध्रकः ॥
सएवऋद्धिर्वृद्धिश्चभेदमप्येतयोर्ब्रुवे ॥
तूलग्रंथिसमाऋद्धिर्वामावर्त्तफलाचसा ३०
वृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्तफलाप्रोक्तामहर्षिभिः ॥
ऋद्धिर्योग्यंसिद्धिलक्ष्म्योवृद्धेरप्याह्वयाइमे
ऋद्धिर्बल्यात्रिदोषघ्नीशुक्रलामधुरागुरुः ॥
प्राणैश्वर्यकरीमूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ३२
वृद्धिर्गर्भप्रदाशीताबृंहणीमधुरास्मृता ॥
वृष्यापित्तास्रशमनीक्षतकासक्षयापहा ३३
राज्ञामप्यष्टवर्गस्तुयतोऽयमतिदुर्लभः ॥
तस्मादस्यप्रतिनिधिंगृह्णीयात्तद्गुणंभिषक् ॥
मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वंद्वेऽपिचासति ॥
वरीविदार्यश्वगंधावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ॥

अर्थ-**ऋद्धि** और **वृद्धि** ए एक लताजातिके कंद है । ए **कोशयामल** देशमें उत्पन्न होतेहैं । इन कंदोंका **स्वरूप** सपेदरंगका ऊपर इसके रोमांचके सदृश बालसे होतेहै । और बीचबीचमें छिद्र होतेहैं । **ऋद्धि** और **वृद्धिमें** इतनाहीं फरक है कि इसका **फल** कपासकी गांठके आकार जैसे शंखमें आंटे होतेहैं, उसीप्रकारके बाईतरफ आंटे होयहै । योग्या, सिद्धि और लक्ष्मी, ए **संस्कृत** नाम हैं । **गुण** । **ऋद्धि** बलकारक, त्रिदोषनाशक, शुक्रजनक, मधुर, भारी, आयुवर्द्धक, ऐश्वर्यप्रद, मूर्च्छा और रक्तपित्तको नाश करे । **वृद्धि** गर्भप्रद, शीतल, पुष्टिकारक, मधुर, शुक्र उत्पन्नकर्त्ता, रक्तपित्तनाशक, क्षत, खांसी और क्षयको नाश करैहै ।

यह **अष्टवर्ग** राजादिकोंकोभी अति दुर्लभ है, अतएव **अष्टवर्गके** पलटेमें इनके समान गुणवान् द्रव्य लेनी चाहिये । यद्यपि पहलेही इस भावप्रकाश ग्रंथके पंचम मिश्रप्रकरणमें अष्टवर्गकी **प्रतिनिधि** लिख आएहैं, तथापि यहां फिर लिखतेहै । **मेदा, महामेदाके** स्थानमें **शतावर** । **जीवक, ऋषभकके** स्थानमें **विदारीकंद** । **काकोली, क्षीरकाकोलीके** स्थानमें **असगंध** और **ऋद्धिवृद्धिके** स्थानमें अर्थात् अभावमें **वाराहीकंद** डालना चाहियें ।

यष्टीमधु (मुलहटी.)

यष्टीमधुतथायष्टीमधुकंक्लीतकंतथा ॥
अन्यत्क्लीतनकंतत्तुभवत्युपमधूलिका ॥३६॥
यष्टीहिमागुरुःस्वाद्वीचक्षुष्याबलवर्णकृत् ॥
सुस्निग्धाशुक्रलाकेश्यास्वर्यापित्तानिलास्र-जित् ॥
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा ॥
शोषदाहारुचघ्नीचकासानाशुविनाशयेत् ३७

अर्थ-यष्टीमधु, यष्टीमधुक, क्लीतक, क्लीतनक, उपमधूलिका, इतने **संस्कृत** नाम है । **हिं.** मु[र]लहटी, मीठीलकडी, **तै.** यष्टीमधूकमु, **बं.** यष्टीमधु, **म.** जेठीमध, **गु.** जेठीमध, **फा.** रब्बुलसूस, **अ.** वेखमहक, **इं.** लीकरीसरूट्, Liquorice root कहतेहै । **मुलहटीकी** वेल हिमालयपर्वत, कोचीन, चीन तथा दक्षिणयूरपमें होतीहै ।

गुण । **मुलहटी** शीतल, भारी, मिष्ट, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक, वर्णको उज्ज्वल कर्त्ता, सुस्निग्ध, शुक्र उत्पन्नकर्त्ता, बालोंको बढानेवाली, स्वरभंगनाशक । **प्रयोग** । मुलहटीके सेवनसे व्रण, सूजन, विषदोष, वमन, तृषा, ग्लानि, क्षयरोग, वातपित्त,

शोष, दाह, अरुचि और खांसीका रोग ए नष्ट होय। इसकी लकडीकी मात्रा २ मासेकी है। *

बली यष्टीमधु.

अन्यक्लीतनमुकंतुमधुकंक्लीतनीयकम् ॥ मधुवल्लीचमधूलीमधुरनाममधुरसातिरसा॥ शोषापहाचसौम्यास्थलजाजलजाचसद्वि- धाभूता ॥ सामान्येममतेयंद्वादशसंज्ञाबहुज्ञधिया ॥ क्लीतनकंमधुकंरुच्यंबल्यंवृष्यंव्रणापहम् ॥ शीतलंगुरुचक्षुष्यंअम्लपित्तापहंपरम् ॥

अर्थ–दूसरा क्लीतन, मधुक, क्लीतनीयक, मधुवल्ली, मधूली, मधुरनाम, मधुरसा, अतिरसा, शोषापहा, सौम्या, स्थलजा और जलजा, ए बेलवाली मुलहटीके बारह **संस्कृत** नाम है। **गुण।** क्लीतन मधुक रुचकारी, बलकर्त्ता, वृष्य, व्रणनाशक, शीतल, भारी, नेत्रोंको हितकारी और अम्लपित्तका नाशक है।

वृष्यवल्ली (सालसा).

रागिनीसुरवल्लीचरक्तलावृष्यवल्लरी ॥ वृष्यवल्लरिकास्वाद्वीवृष्याबलकरीमता ॥ रसायनीपुष्टदात्रीमूत्रकृत्कार्श्यहारिणी ॥ उपदंशादिरोगाणांनाशिनीस्वेदकारिणी ॥ वर्णप्रसादिनीहृद्यारक्तदोषहरीपरा ॥

अर्थ–रागिनी, सुरवल्ली, रक्तला और वृष्यवल्लरी, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** भाषामें **सालसा** कहते है। **गुण।** **सालसा** स्वादु, वृष्य, बलकारी, रसायन, पुष्टकरता, मूत्रकरता, कृशता और उपदंश आदि रोगोंको नाशक, पसीने लानेवाला, देहके वर्णको सुंदर करता, हृदयको हितकारी और रुधिरके दोषोंको हरण करता इससें परे और नहीं हैं।

कबीला.

कांपिल्लःकर्कशश्चंद्रोरक्तांगोरोचनोऽपिच ॥ कांपिल्लःकफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ॥ हंतिरेचीकटूष्णश्चमेहानाहविषाश्मनुत् ॥

अर्थ–कांपिल्ल, कर्कश, चंद्र, रक्तांग और रोचन, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** कबी [मी] ला, **बं.** कामलागुडी, **म.** कपिला, **गु.** कपिलो, **फा.** कन्बिलाय, **अ.** किन्बीर, **इं.** कोमिला, **लं.** रोटलेरा टींकटोरिया। यह पर्वतीवृक्षके डालीपर गांठसी २ होतीहैं। इनमें लाल चूर्णसा निकलता है।

गुण। **कबीला** कफ, पित्त, कृमि, गोला, उदर, व्रण, प्रमेह, अफरा, विषदोष और पथरी इनको नष्ट करे। रेचक, चरपरा और गरम है। **मात्रा** ६ रत्तीकी है।

आरग्वध (अमलतास).

आरग्वधोराजवृक्षःशम्याकश्चतुरंगुलः ॥ आरेवतोव्याधिघातःकृतमालःसुवर्णकः ॥ कर्णिकारोदीर्घफलःस्वर्णांगःस्वर्णभूषणः ॥

* **सुश्रुतसंहितामें**—मुलहटीको कफहर, मेदहर, दीपक और गुल्मादिरोग हरणकर्त्ता कहाहै। **चरकसंहितामें**—इसको कांतिकारी, कंठको हितकारी, दाहप्रशमन, रक्तशुद्धिकर, तथा कंडुघ्न है। इसवास्ते इसको चिकनी शीतल और खांसीके रोगमें उपयोगी गिनतेहै।

मखजन उल् अदवियाका कर्त्ता—जडको वर्त्तनेके पहले उस जडकी छाल निकाल डालनेकी आज्ञा देताहै। और इसको गरम और, खुश्क व्रणको पकानेवाली, चिकनी, प्यास और खांसीको बैठानेवाली, तथा श्वासको और फैफडेके रोगमें असर करनेवाली मानताहै।

शेखउलर्रईस—कहताहै कि, सरदीके सबब जो पेटमें पीडा होती होय तो मुलहटीका क्वाथ देना चाहिये, और आंखकी रोशनी सुधारनेको इसके रसकी बूंद आंखमें डाले, माँथेमें यदि फुंसी होगईहोयतो मुलहटीके पत्तोंकी पुलटिश बांधे। और मर्दन करनेसे पैर और बगलसे निकलती वासको नष्ट करे।

महम्मद बिन अहमद और युहाना बिन शिरापिया—लिखताहै कि, इस क्षुपके बी अन्य अन्यभागोंसे बीज सबसे उत्तम प्रकारका असर करतेहैं। और बी बीज खास आब हवा वाले मुल्कमें (बसेरेमें) उत्पन्न होते हैं।

आरग्वधोगुरुःस्वादुःशीतलःस्रंसनोगुरुः ॥
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलनुत् ४०
तत्फलंस्रंसनंरुच्यंकुष्ठपित्तकफापहम् ॥
ज्वरेतुसततंपथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-आरग्वध, राजवृक्ष, शम्पाक, चतुरंगुल, आरेवत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णक, कर्णिकार, दीर्घफल, स्वर्णांग और स्वर्णभूषण, ए संस्कृत नाम। हिं. घनवहेरा, सोनालू, अमलतास, किरवारों, बं. सोंदाल, म. बाहवा, गु. गरमाळो, क. इग्गके, तै. रेलाकाया, फा. खियार शंबर, ला. काथरटोकर्पस फिस्चुला Cathartocurpus fistula कहते है। अमलतासका वृक्ष बडा होताहै, पत्ते बडे और कुमाशदार होतेहैं और आमने सामने उगतेहैं। फूल इसके पांच २ पंखडीके हरदीके समान पीले, प्रत्येक डालीपर बहुतसे होतेहैं। इसका फल (फली) एकफुट अथवा दोफुट लंबी होतीहै। भीतर इसके गूदा और इमलीकेसे चींआं निकलते है। इसका गूदा प्रयोगमें लिया जाताहै। चित्र नंबर ४ का देखो।

गुण। अमलतास भारी, शीतल और मिष्ट, उत्तम स्रंसन (कोष्ठस्थ मलादिकको ढीला करनेवाला)। ज्वर, हृद्रोग, रक्तपित्त, ऊर्द्धगतवायु और शूलरोगको नष्ट करे। अमलतासकी फली कोठेके मलादिकको शिथिल करे, रुचिकारी, कुष्ठ, पित्त और कफनाशक। अमलतास ज्वरमें सर्वथा पथ्य है। इसके द्वारा कोठेकी शुद्धि विलक्षण अर्थात् अद्भुत प्रकारकी होतीहै। [अनेक चमडीके रोगमें इसके पत्तोंकी मालिश आदि व्यवस्था करी जातीहै।] मात्रा ३॥ मासेसें लेकर १। तोलेतक है।*

कुटकी.

कट्वीतुकटुकातिक्ताकृष्णभेदाकटुंभरा ॥
अशोकामत्स्यशकलाचक्रांगीशकुलादनी ॥
मत्स्यपित्ताकांडरुहारोहिणीकटुरोहिणी ॥
कट्वीतुकटुकापाकेतिक्तारूक्षाहिमालघुः ॥
भेदनीदीपनीहृद्याकफपित्तज्वरापहा ॥
प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥४३॥

अर्थ-कट्वी, कटुका, तिक्ता, कृष्णभेदा, कटुंभरा, अशोका, मत्स्यशकला, चक्रांगी, शकुलादनी, मत्स्यपित्ता, कांडरुहा, रोहिणी और कटुरोहिणी, ए संस्कृत नाम। हिं. कुटकी, बं. कटकी, म. काळीकुटकी, गु. कडु, तै. काटक रोहिणी, फा. खर्वकेसियाह, इं. ब्लाकहेलीबोर, ला. हेलीबोरस नाइजर Helleborus niger कहते है। कुटकीकी जड प्रयोगमें लीनीजातीहै। यह औषधजातिकी रूखडी है।

गुण। कुटकीका रस कटु; पाकमें कडवी, रूक्ष, शीतल, हलकी, भेदक, अग्निदीपक और हृदयको हितकर्त्ता। कुटकी सेवन करनेसें कफ, पित्तज्वर, प्रमेह, श्वास, खांसी, रुधिरविकार, दाह, कुष्ठ और कृमिरोग ए नष्ट होय। मात्रा ५ रत्तीसें दो मासे तककी है।

चिरतिक्त (चिरायता).

किराततिक्तःकैरातःकटुतिक्तःकिरातकः ॥
कांडतिक्तोनार्यतिक्तोभूनिंबोरामसेनकः ४४

* मखजनउलअदवियाका कर्त्ता—लिखताहै कि, उत्तम जुलाब होनेके वास्ते अमलतासकी फलियोंको थोडी गरमकर उसका गूदा निकाल थोडे बदामरोगनके साथमें मिलानेसे छातीका दरद नष्ट होय। रुधिरकी गरमी अत्यंत न्यून होतीहै और इसका असर अत्यंत नाजुक होनेसे बालक तथा गर्भवती स्त्रीयोंके वास्तेभी हितकारी है। एकत्रहुए पित्तके दूर करनेको इसको इमलीके साथ मिलाना, संधिवातकी पीडा दूर करनेके लिये उस जगह चुपडे, ५ से ७ बीजोंको पीसके देनेसे उलटी होतीहै और फलीके ऊपरकी छाल, केसर, मिश्री और गुलाबजलके साथ पीसके देवे तो स्त्रियोंको तुरंत प्रसव होय। छाल और पत्तोंको तेलमें पीसकर फोडाके ऊपर लगानेसे फायदा होताहै।

चरक संहितामें—इसकी कंडु (खुजली) नाशक लिखाहै।

सुश्रुतसंहितामें—कफवातप्रशमन लिखाहै।

यूनानी वैद्य—पत्ते और फूलमें दस्त लानेवाला गुण रहताहै ऐसा कहतेहैं।

किराततिक्तोऽन्योनैपालःसोऽर्द्धतिक्तोज्वरांतकः
किरातःसारकोरूक्षःशीतलस्तिक्तकोलघुः ॥
सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्रदाहनुत् ॥
कासशोथतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ॥ ४६॥

अर्थ-सं. किराततिक्त, किरात, कटुतिक्त, किरातक, कांडतिक्त, नार्यतिक्त, भूनिंब और रामसेनक। एक प्रकारका चिरायता नेपालदेशमें होताहै । उसके **सं.** अर्द्धतिक्त, ज्वरांतक और नैपालनिंब, **हिं.** चिरायता, चिरेता, **बं.** चिराता, **म.** किराईत, **दे.** चिराईत, **कों.** काडेकिराइत, फूलकिराईत, **का.** नेलबेउचु, **गु.** करीआतुं, **तै.** नेलानेमु, **फा.** कसबुज़रीरा, **अ.** नेनिहाद, **इं.** चिरेटा Chiretta कहते हैं । यह क्षुपजातिकी वनस्पती है ।

गुण । चिरायता सारक (दस्तावर) रूक्ष, शीतल, कडवा और हलका । **प्रयोग ।** यह सन्निपातज्वर, श्वास, कफ, रक्तपित्त, दाह, खांसी, श्वास [शोथ], तृषा, कुष्ठ, ज्वर, व्रण और कृमिरोगको नष्ट करे । **मात्रा १** मासेकी है । **प्रतिनिधि** पीलाचंदन और केशर है ।

नेपालनिंब.

नेपालनिंबोनैपालस्तृणनिंबोज्वरांतकः ॥
नाडीतिक्तोर्धतिक्तस्स्यादिन्द्रारिःसन्निपातहा
नैपालनिंबोशीतोष्णोयोगवाहीलघुस्तथा ॥
तिक्तोतिकफपित्तास्रशोफतृष्णाज्वरापहा ॥

अर्थ-सं. नेपालनिंब, नैपाल, तृणनिंब, ज्वरांतक, नाडीतिक्त, अर्द्धतिक्त, इंद्रारि और संनिपातहा । **गुण । नैपालनिंब** शीतल, गरम, योगवाही, हलका, अत्यंत कडवा, कफ, रक्तपित्त, सूजन, प्यास और ज्वरको नष्ट करेहै ।

इन्द्रजौ.

उक्तंकुटजबीजंतुयवमिंद्रयवंतथा ॥
कलिंगंचापिकालिंगंतथाभद्रयवंस्मृतम् ॥
कचिदिंद्रस्यनामैवभवेत्तदभिधायकम् ॥
फलानींद्रयवास्तस्यतथाभद्रयवाअपि ॥४८॥
इंद्रयवंत्रिदोषघ्नंसंग्राहिकटुशीतलम् ॥
तिक्तंदाहहरंहन्तिरक्तपित्तप्रवाहिकाम् ॥
ज्वरातिसाररक्तार्शोवमिवीसर्पकुष्ठनुत् ॥
दीपनंगुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित् ॥

अर्थ-कुटजबीज, यव, इन्द्रयव, कलिंग, कालिंग, भद्रयव और किसी २ **कोश**में इन्द्रवाचक शब्द इसके पर्यायवाचक शब्द हैं ऐसा कहाहै । **हिं.** इन्द्रजौ, **का.** कोडसिंगेयबीज, **गु.** इंद्रजव, **फा.** लिसानुल, असाफीर, कुंजदुजबा, **ला.** राइट्यांडिसेंटेरिका, Wrightea antidysenterica कहते हैं । यह कुडावृक्षके बीज है ।

गुण । इन्द्रयव त्रिदोषनाशक, संग्राही, कटु, तिक्त, शीतल, अग्निदीपक और दाहनाशक है । **प्रयोग ।** इन्द्रजौके सेवन करनेसे रक्तपित्त, प्रवाहिका, ज्वर, अतिसार, कृमि, विसर्प, कुष्ठ, खूनीबवासीर, गुदाके कील, बादी, रुधिरके दोष, कफ और शूलरोग, ए दूर हो । **मात्रा** ५ रत्तीसे लेकर ३० रत्तीपर्यंत है । इसके **दर्पनाशक** घीयाके बीज है । और **प्रतिनिधी** नारियलकी गिरी है । *

* **आयुर्वेद**में—इन्द्रजौके वृक्षकी छाल और बीज बहुत प्राचीन कालसे जाने गएहैं । पेटकी पीडा और दस्तोमें छाल मुख्य इलाज गिना गयाहै । बीज ग्राही, ज्वरनाशक और पेटके जीव निकालनेवाले लिखेहैं ।

अरबी और फारसी ग्रंथोंमें—इन्द्रजौके बीजको ग्राही और पेटकी पीडानाशक मानेहै, और छातीके पुराने दर्दमें उसीप्रकार मरोडा और पेसाव अधिक आता होय तो उसमें देनेकी प्रशंसा करेहै । और वह पेशावकी थैलीमेंसे पथरीको पिगलायके निकालनेवाला है; पाचन शक्ति बढानेवाला और कामोत्तेजक मानतेहैं ।

डा० डीमक—कहताहै कि, इन्द्रजौ सहत और केशरके साथ मिलाय स्त्रियोंकी जननेन्द्रियमें रखे तो गर्भधारण करनेकी ताकत बढे, तथा प्रसवके समयभी इसके वर्त्तनेकी प्रशंसा करेहै ।

मदन (मैनफल).

मदनश्छर्दनःपिंडीराठःपिंडीतकस्तथा ॥
करहाटोमरुबकःशल्यकोविषपुष्पकः ॥५१॥
मदनोमधुरस्तिक्तोवीर्योष्णोलेखनोलघुः ॥
वांतिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणांतकः ॥
रूक्षःकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः ॥

अर्थ-सं. मदन, छर्दन, पिंड, नट, पिंडीतक, करहाट, मरुबक, शल्यक और विषपुष्पक, **हिं.** मैनफल, **बं.** मयनाफल, **उडियामें** पातर, **नेपालमें** मैदल, **ता.** मद्दुककृय, **तै.** वसंत काडेमिचेट्ट, **राजपूतानेमें** मैढल, **म.** गेलफल, **का.** वोनगेरणय मेणाहल, **गु.** मींढळ, **फा.** अजोजुलूक, **ला.** रेन्डीआ डयूमेटोरम् Randia dumetorum कहते है। मैनफलका वृक्ष मध्यम कदका होताहै। **पत्ते** लंबे और गोल खरदरे आमनेसामने होतहैं, इसका फूल पांच पंखडीका, रंग सफेद और पिलाई लिये होताहै। **फल** इसके अखरोटके समान होतेहै। **चित्र** नंबर पांचका देखो।

गुण। **मैनफल** मधुर, कडवा, उष्णवीर्य, लेखन, लघु, वमनकारक, प्रतिश्याय (मुख नाक आदिसे जलके गिरनेको) नाशक। रूक्ष, कफ, आनाह, सूजन, गोला, कुष्ठ, व्रण और विद्रधिरोग इनको नाश करे। **मात्रा** २ मासेकी है।

बडामैनफल.

वाराहोन्यःकृष्णवर्णोमहापिंडीतकोमहान् ॥
स्निग्धपिंडीतकश्चान्यःस्थूलवृक्षफलंतथा ॥
मदनौकथितौश्रेष्ठौकटुतिक्तरसान्वितौ ॥
छर्दनौकफहृद्रोगपक्वामाशयशोधनौ ॥

अर्थ-एक वाराहसंज्ञक काले रंगका बडा मैनफल होताहै। उसको महापिंडीतक कहते है, और एक स्निग्धपिंडीतक है, यह बडेभारी वृक्षका फल है। **गुण।** ए दोनो मैनफल कटु, तिक्त, रसवाले हैं। वमनकरानेवाले, कफ तथा हृदयरोगनाशक और पक्वाशय एवं आमाशयको शोधन करतेहैं।

रास्ना.

रास्नायुक्तरसारस्यासुवहारसनारसा ॥
पलापर्णीचसुरसासुगंधाश्रेयसीतथा ॥५३॥
रास्नामपाचिनीतिक्तागुरूष्णाकफवातजित् ॥
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥
कासज्वरविषाशीतिवातिकामयहिध्महृत् ॥

अर्थ-सं. रास्ना, युक्तरसा, रस्या, सुवहा, रसना,

मुसलमानी हकीम—बहुत दिनसे अतर देकर आनेवाले ज्वरमें तथा रक्तस्रावमें इसकी छाल बहुत वर्त्ततेहै। तथा बीजोको सेक गरम जलमें भिगोयदे, फिर इस पानीके पीनेसे आंतडोंके दरदमे फायदा होताहै इसप्रकार मानते है।

डा० करनाग्री—लिखताहै कि, १५ महिनेकी अवस्थामें एक बच्चेके मरोडेके वास्ते जब अन्य यत्न न चलसके तो इस कुडाके वृक्षकी छाल ५ रुपेभरको २॥ सेर पानीमें औटावे जब १। सेर जल बाकी रहे तब उतारके इसमेंसे १। रुपे भरकी मात्रासे दिनमे ४ वक्त प्रत्येक समय उसमें १ बूंद अफीमके अर्कको डालके देनेसे आराम हुआथा।

डा० उदयचंद्रदत्त—कहताहै कि, मरोडेकी बिमारीमें छालके बदले जडकी छालका सत्व काढके ३ ग्रेनकी मात्रासे आधीग्रेन अफीमके साथ मिलायके देनेसे बहुत फायदा होताहै।

तालीफ शरीफका कर्त्ता—लिखताहै कि, बीजोंको गरम जलमें भिगोय उस पानीके देनेसे दर्द करनेवाला अर्श कि जिसमेंसे रुधिर गिरता होय वह दूर होय।

सुश्रुतसंहितामें—बीज और छालको मूलव्याधि (बवासीर) नाशक, कंडुनाशक, स्तन्यशोधक, और आमातिसारनाशक वर्णन कराहै।

चरकसंहितामें—छाल और बीजको मूलव्याधिहर, कंडुनाशक, कृमिनाशक, वातविकारनाशक, स्तन्यशोधक और अर्शनिशूदन कहाहै।

रसा, एलापर्णी, सुरसा, सुगंधा और श्रेयसी. हिं. रासना, रायसन, बं. रास्ना, म. नावलीचा मूल्य, तै. रासनापुष्का, फा. जंजबीलशामी, इं. टीलोफोरा आस्थमेटीका । यह एकप्रकार वांदाके समान होतीहै, और केदारनाथमें प्रसिद्ध है। औषधमें इसका सर्वांश ग्रहण करा जाताहै ।

गुण। रास्ना आम (अपक्व अन्नरस)की पाचक, कडवी, भारी और गरम । यह वादी, कफ, सूजन, श्वास, वातरक्त, वातशूल, उदररोग, खांसी, ज्वर, विषरोग और अस्सीप्रकारकी वातव्याधि दूर करे है । मात्रा आधे मासेसे लेकर २ मासेपर्यंत है।

रास्नातुत्रिविधाप्रोक्तामूलपत्रतृणैस्तथा ॥
श्रेयोमूलदलौश्रेष्ठौतृणरास्नाचमध्यमा ॥

अर्थ–रास्ना तीन प्रकारकी होतीहै–१ मूल, २ पत्र, और ३ तृण । तहां मूल और पत्रवाली दोनों रास्ना उत्तम है और तृणरास्ना अधम है।

नाकुली (नाई).

नाकुलीसुरसानागसुगंधागंधनाकुली ॥
नकुलेष्टाभुजंगाक्षीसर्पांगीविषनाशिनी ॥
नाकुलीतुवरातिक्ताकटुःकोष्णाविनाशयेत् ।
भोगीलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् ॥

अर्थ–सं. नाकुली, सुरसा, नागसुगंधा, गंधनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, सर्पांगी [वा सूर्यांगी] और विषनाशिनी । हिं. नाई, म. मुंगुसवेल, गु. नोरवेल, सापसंद, फा. छोटाचांदा, क. विषमुगरी, ला. रोवाल कियासवैंटीना । औषधमें इसका सर्वांश ग्रहण करा जाता है।

गुण। नाकुली कषैली, चरपरी और गरम । यह सांपका विष, लूताविष (मकडी आदिका), विच्छू और मूंसा इनके विष, एवं विषमज्वर, कृमि तथा व्रण, इनको नष्ट करे । मात्रा दो मासेकी है ।

माचिका (मोइआ).

माचिकाप्रस्थिकांबष्ठातथाचांबालिकांबिका
मयूरविदलाकेशीसहस्राबालमूलिका॥५७॥
माचिकाम्लारसेपाकेकषायाशीतलालघुः ॥
पक्वातीसारपित्तास्रकफकंठामयापहा ॥५८॥

अर्थ–सं. माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा, अंबालिका, अंबिका, मयूरविदला, केशी, सहस्रा और बालमूलिका, हिं. मोइआ, बं. माचिका, म. आंबाडा, का. पुडोन, गु. नहानीपीलुडी.

गुण। मोइआका खट्टा रस, पाकमें कषैली, शीतल वीर्य और हलकी । पक्वातिसार, रक्तपित्त, कफ और कंठके रोगोंको दूर करे है । इस वृक्षका सर्वांश ग्रहण कराजाता है। मात्रा २ मासेकी है ।

तेजवती (तेजोवल्कल).

तेजस्विनीतेजवतीतेजोह्वातेजनीतथा ॥
तेजस्विनीकफश्वासकासस्यामयवातहृत् ॥
पाचन्युष्णाकटुस्तिक्तारुचिवह्निप्रदीपनी ॥

अर्थ–तेजस्विनी, तेजवती, तेजोह्वा और तेजनी ए संस्कृत नाम । हिं. बं. और मरेठीआदि सब भाषाओंमें तेजबल कहते हैं। ला. जेन्थाक्षीलम. रेहतसा, इस वृक्षकी छाल है। इसके फल कालीमिरचके समान होतेहै । यह सुगंध द्रव्य है। मात्रा १ मासेकी है।

गुण। तेजबल पाचक, गरम, कटु, तिक्त, रोचक और अग्निदीपक । तेजबलके सेवन करनेसे कफ, श्वास, खांसी, मुखरोग और वादी नष्ट होय ।

मालकांगनी.

ज्योतिष्मतीस्यात्कटभीज्योतिष्काकंगुनी-
तिचापारावतपदीपण्यालताप्रोक्ताककुंदनी।
ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित्
अग्न्युष्णावामनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥

अर्थ–ज्योतिष्मती, कटभी, ज्योतिष्का, कंगुनी, पारावतपदी, पण्यालता और ककुंदनी ए संस्कृत नाम है । हिं. मालकांगनी, बं. लताफट्की, म. मालकांगोणी, कों. करडकांगोणी, पिंगवी, का. कौगुएरडु, तै. वावंजी, गु. मालकांकणां, ला. सिलासृसपनिक्युलेटा । इसकी बेल होतीहै । गोलपत्ते कुछ २ अनीदार और थोडे कंगूरेदार होतेहैं। फूल छोटे, पांच पंखडीके और झूमकेदार होतेहैं, फलभी झूमकेदार चना अथवा मटरके समान बडा होताहै । इसके भीतर लाल रंगके छःबीज होतेहैं । चित्रनंबर ६ का देखो ।

गुण । मालकांगनीलता कटु, तिक्त, सर (वायुमलादिकोंको निकाले), अत्यंत उष्ण, वमनकारक, तीक्ष्ण, अग्निकारक, बुद्धिस्मृतिदायक, तथा कफवायुनाशक । *

कुष्ठ (कूठ).

कुष्ठरोगाह्वयंवाप्यंपारिभव्यंतथोत्पलम् ॥
कुष्ठमुष्णंकटुस्वादुशुक्रलंतिक्तकंलघु ॥
हंतिवातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान् ६२

अर्थ-जितने संस्कृतमें कुष्ठरोगके नाम हैं सब कुष्ठ औषधके जानने । तथा वाप्य, पारिभव्य और उत्पल, **हिं.** कूठ-ट, **बं.** कुड, **म.** कोष्ठ, **गु.** कठ, **फा.** कोश्वह, **अ.** कुस्तवहरी, **तै.** चंगल कुष्ठ, **इं.** कोस्तुरुट्, **ला.** सौसुरीआलेप्पा । इसका सुगंधादि गणमें पाठ है परंतु यह असल नहीं मिलता और सिंधुनदके किनारे होताहै ।

गुण । गरम, कटु, स्वादु, शुक्र उत्पन्नकर्त्ता, कडुआ और हलका । **प्रयोग** । वातरक्त, विसर्प, खांसी, कुष्ठ, वादी और कफ इनको नष्ट करें । इसकी जड छीनी जाती है । **मात्रा** ६ रत्तीकी है ।

पुहकरमूल.

उक्तंपुष्करमूलंतुपौष्करंपुष्करंचतत् ॥
पद्मपत्रंचकाश्मीरंकुष्ठभेदमिमंजगुः ॥ ६३ ॥
पौष्करंकटुकंतिक्तमुक्तंवातकफज्वरान् ॥
हंतिशोथारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत्

अर्थ-पुष्करमूल, पौष्कर, पुष्कर, पद्मपत्र और काश्मीर यह संस्कृत नाम है । **हिं.** गांठदार पुहकरमूल, **म.** पुष्करमूल, **गु.** पोकरमूल.

यह कूठकाही भेद है । **गुण** । यह कटु और तिक्त है । **प्रयोग** । वातकफज्वर, सूजन, अरुचि, श्वासरोग, इनको नष्ट करे । विशेष करके पसवाडेके दर्दको अत्यंत उपकारी है । **मात्रा** ६ छःरत्तीकी है । गांठवाला **पुहकरमूल** उत्तम होताहै । **कूठके** अभावमें इसको और इसके अभावमें **कूठको** डाले । †

* **युनानी हकीम**—मालकांगनीके बीज गरम, निद्रानाशक और कामोद्दीपक गिनतेहै । और वे संधिवात, लकवा, कुष्ठ और दूसरे शरदीसे प्रगट रोगोंमें वर्त्तनेमें उसीप्रकार बाहिर लगानेमें वर्त्ततेहैं, ऊपर लिखे रोगोंमें बीज प्रथम रोगके प्रारंभमें १ से प्रतिदिन एक २ वृद्धि क्रममें ५० तक बढाकर केवल अकेले अथवा अन्य गरम औषधके साथ मिलायके खानेकी प्रशंसा करतेहैं ।

सुश्रुत संहितामें—इसको व्रणशोधन और कुष्ठप्रशमन कहाहै ।

चरक संहितामें—इसको शिरोविरेचनकर्त्ता कहीहै । इसके पत्तोंके रससे जीभका जडत्व दूर होय । और उनसे पेसाव अधिक आवे तथा जलंधरकी व्याधिमें देनेसे सूजन न्यून होतीहै । उसीप्रकार जुलाब होय । पत्तोंका रस देनेसे स्त्रियोंका नष्ट हुआ ऋतुकाल फिर जारी होय ।

† **चक्रदत्त और शार्ङ्गधरमें**—इस जडको सुगंधदार और जाग्रतकर्त्ता कहाहै । और उसको खांसी, श्वास, ज्वर, बदहजमी और त्वचारोगमें देनेकी प्रशंसा करेहै ।

थिओके कसरुस नामक पुस्तकमें—लिखताहै कि, मीलिप्स सहरके सूर्यमंदिरमें ईसवी सन्के २४३ वर्ष पहले सालमें सिरिआके राजा सेलूकस और उसका भाई एन्टीओकस इन दोनोंने पुहकरमूलका होम कराथा ।

डायोस कोराइंडिस—लिखताहै कि, अरबसे आनेवाली वस्तुओंमें पुहकरमूल सबसे उत्तमसौगात प्रशंसाके योग्य है । यह सफेद रंगकी और हलकी होती है । और इसकी मीठी खुशबूदार वास आती है ।

तोफेतुल् मिजामीनमें—लिखाहै कि, यह जड हिंदुस्तानके किनारेसे आतीहै । और यह जिस वृक्षमेंसे उत्पन्न होयहै वह थडके विना और पोले पत्तोंका होताहै । इसकी ३ जाति है । ए तीनो गरम और खुश्क, पेशाव अधिक लाती है, पित्तको निकाल डाले कलेजेके दर्दको नष्ट करे, पेटके विगाडको दूर करे जंगम विष (सर्पादि) को उतारनेवाले, कामोद्दीपन करता, पेटके कीडे निकालनेवाला, और पेशावकी थेलीमें प्रगट होनेवाली, पथरीको पिलगायके निकाल देवे है ।

चोक.

कटुपर्णीहैमवतीहेमक्षीरीहिमावती ॥
हेमाह्वापीतदुग्धाचतन्मूलंचोकमुच्यते॥६५॥
हेमाह्वारेचनीतिक्ताभेदिन्युत्क्लेशकारिणी ॥
कृमिकंडूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत्॥६६॥

अर्थ–कटुपर्णी, हैमवती, हेमक्षीरी, हिमावती, हेमाह्वा और हेमदुग्धा ए **संस्कृत** नाम है। इस वृक्षकी जडको **चोक** कहतेहै । **हिं.** चोक, (सत्यानासीकटेरी), पिसोला, **बं.** चोक, **म.** पिंवळा धोतरा, **ता.** ब्रह्मदंडूचिरई, **कों.** पीतकांटेधोत्रा, **दे.** कडसराचोक, **का.** चिकिणिकेयभेद, **गु.** दारुडी, **इं.** मेक्सीकनथिसल्, **ला.** आरगेमोनी मेक्षीकाना । **स्वरूप** । यह क्षुपजातिका वृक्ष जंगलमे बहुत होताहै । **पत्ते** लंबे और कोनेवाले, उन कोनोंमे और पत्तोंके नीचे कांटे होतेहै और उन पत्तोंके बीचमें सफेद २ नस होतीहैं । **फूल** पीलेरंगका पृथक् पांच पांखडीका होताहै । **फलका** डोडा पांच हिस्सेवाला और कांटेयुक्त होताहै । इसके भीतरसे दारूके समान काले २ गोल चमकदार बीज निकलते है । इनमेंसे तेल निकलता है । **चित्र** नंबर ७ का देखो ।

गुण । रेचक कडवा और भेदक । इसका सेवन उत्क्लेश (वमन होनेकीसी इच्छा) को दूर करे, कृमि, खुजली, विषजन्यरोग, अनाह, कफ, रक्तपित्त और कुष्ठरोगको नष्ट करेहै । **मात्रा** १ मासो, इसके पत्ते और तेल प्रयोगमें लेते हैं ।

मखजन उल् अदवियामें—लिखाहै कि, यह जड, कामोत्तेजक, कुव्वत देनेवाला, दुष्ट हवासे उत्पन्न होनेवाली, विमारियोंमें अत्यंत उपयोगी है । दमाके रोगमें तथा मुद्दा खोलनेके काममें आतीहै ।

डा. इरविंग—लिखताहै कि, राजपूतानेमें अफीम उत्पन्न होने लगा उसके पहले इसको तमाकूकी तरह पीतेथे और उसका मुख्य उपयोग खुशबू और मालकी गठरीमें जीव न लगने पावे इसके दूर करनेको इसका वर्त्ताव करतेथे ।

मि. वेडन पोवेल्—कहताहै कि, पंजाबमें इसका चूर्ण करके पुराने नासूरपर घावमें जीव पडगएहो उसमें तथा दांतोंके दरदके वास्ते वर्त्ततेहैं । इसको सुखाय चूर्णकर सख्त छिलीहुई चमडी उपर जल्दी खुंडलानेको मल्हमके समान काम आताहै । और सुखाय चूर्णकर बाल धोनेमेंभी लीनो जातीहै। कोलेरा (हैजा) की विमारीमें १ ड्राम इलायची और ३ ड्राम कूट दोनोंको ४ औंस गरम जलमें भिगोयदे वह पानी १ औंसकी मात्रासे प्रत्येक आधे २ घंटेमें देना चाहिये तो अत्यंत उत्तम असर करताहै ।

डा. पोर्टर स्मिथ—कहताहै कि, पुष्कर्मूल जल्दी खुशबूदार जगानेवाला पदार्थ है और शूल तथा देहका खिचावआदि विमारियोंमें उपयोगी है । कस्मीरी कपडे (सालधुस्सों) मे कीडे न लगनेको कपडेके व्योपारी इसका उपयोग करतेहैं । सूखीहुइ-पुष्करमूलकी जड खुशबूदार हवा उत्पन्न करनेकेवास्ते जलातेहै । चीनके मुल्कमें इस जडके जलानेका अत्यंत सोख है, इसका खुशबूदार धूआ चीनाईलोग अपने त्रिबुद्धिदेवके पास जलातेहैं ।

सर जॉर्ज बर्डवुड्—कहताहै कि, इससे सफेद होनेवाले बाल काले होजातेहैं । और इसमें पेटकी पीडा, खराब हवाका असर, रोकना, ग्राही और नींद लानेका गुण है ।

चरकसंहितामें—इसको शुक्रशोधन, लेखनीय (धातुओंको पतलीकरता), शुक्रजनन (वीर्य उत्पन्नकर्त्ता) और हिचकीको नष्टकर्त्ता कहाहै ।

सुश्रुतसंहितामें—इसको योनिदोषहरणकर्त्ता और स्तन्यशोधन, वर्णप्रसादन (त्वचाका रंग सुधारनेवाला) तथा खुजली और दूसरे विकार दूर करनेवाला कहाहै ।

चक्रदत्तमें—लिखाहै कि, हरड, अजमायन, हींग और सौंठके साथ मिलायके खांसी, श्वास, ज्वर और जठराग्नि मंदमें देय तो ए सब रोग नष्ट होय ।

रेवतचीनी.

पीतमूलीचपीताचगंधनीमृदुरेचनी ॥
बल्याजीर्णहरीख्यातासातिसारविबंधनुत् ॥
आमवातमतीसारंमंदाग्निंचाप्यरोचकम् ॥
शीतपित्तंमलस्तंभंदुष्टव्रणविरोहिणी ॥

अर्थ–पीतमूली, पीता और गंधनी, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं.** रेवतचीनी, **बं.** रेओचिनि, **म.** रेवाचिनी, **अ.** रावन, **फा.** रेवन, **ला.** रेहेरेदिक्स, **इं.** रुबर्ब कहतेहे। रेवतचीनी नरम जुलाव करानेवाली और बलकर्त्ता। अजीर्ण, अतिसार, मलके बंध, आमवात, अतीसार, मंदाग्नि, अरुचि, शीतपित्त, मलका स्तंभ इनको दूर करे। और घावके ऊपर इसका चूर्ण बुरकनेसे उसको भरलाती है। यदि दस्त कराने होय तो वैद्य इसके द्वारा करावे. [बहुतसे धूर्त्त जो मंत्रशास्त्री (स्याने) बनतेहें और लडकोंकी झाडा फूंकी काम करते हे वो इसकी गोली बनायके अपनेपास रखतेहें और पेटकी बिमारीमें प्राय इसीकी गोली लडकोको देतेहें यह हमने आखो देखी है]। *

कर्कटशृंगी (काकरासिंगी).

शृंगीकर्कटशृंगीचस्यात्कुलीरविषाणिका ॥
अजशृंगीचरक्ताचकर्कटाख्याचकीर्तिता ॥
शृंगीकषायातिक्तोष्णाकफवातक्षयज्वरान् ॥
श्वासोर्ध्ववाततृट्कासहिक्कारुचिवमीन्हरेत् ॥

अर्थ–शृंगी, कर्कटशृंगी, कुलीरविषाणिका, अजशृंगी और रक्ता, तथा जो जो संस्कृतमें केकडेके नाम है सब इसके जानने। **हिं. म.** काकडासिंगी, **कों.** जंगली हरद्याचें फूल, **बं.** काकडाशृंगी, **गु.** काकडाशींग, **ला.** Rhus-succeedeneum=ऱ्हस-सक्सीडेनिअम्। यह एक वृक्षकी डालीनके ऊपर जीवोंके रहनेके वास्ते ऊचें २ टीलेसे होतेहै। और सींगके छिलकेके माफिक **फल** होताहै। बहुतसे पसारी और अत्तार सडीहुई हरडके छिलकेको काकडासिंगीके पलटेमें वेचते है।

गुण। यह कषेली, कडवी और गरम है। **प्रयोग**। कफ, वायु, क्षयरोग, ज्वर, श्वास, ऊर्ध्ववात, तृषा, खांसी, हिचकी, अरुचि और वमन होना इनको दूर करे। औषधके प्रयोगमें इसके फलकी १ मासेकी **मात्रा** है। †

कायफल.

कट्फलःसोमवल्कश्चकैटर्यःकुंभिकाऽपिच
श्रीपर्णिकाकुमुदिकाभद्राभद्रवतीतिच ६९
कट्फलस्तुवरस्तिक्तःकटुर्वातकफज्वरान् ॥
हंतिश्वासप्रमेहार्शःकासकंठामयारुचीः ७०

अर्थ–कट्फल, सोमवल्क, कैटर्य, कुंभिका, श्रीपर्णिका, कुमुदिका, भद्रा और भद्रवती, ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** कायफर-ल कहतेहे। **बं.** कटफल, कायछाल, **क.** किरुसिवनी, **म.** कुंभ्याची साल, **फा.**

* **यूनानी हकीम**—कहतेहे कि, पत्तों और इसकी डंडीका रस निकालके नेत्रोंमें बूंद टपकावे उसीप्रकार पेटमें मरोडा होता होयतो इसके तेलकी ३० बूंद बतासेमें डालके देयतो आराम होय। और रोगी तत्काल निद्रा लेनेलगे और दस्त खुलासा आताहै। मस्तकपीडा होयतो इस तेलके चुपडनेसे मस्तकका दुःख दूर होय। इस क्षुपका रस जो घाव न भरता होय उसपर लगानेसे घाव जल्दी भर आवे। इसकी ताजी जडको कुचलकर बिच्छूके डंकपर लगानेसे बिच्छूका जहर उतर जाय।

† **प्राचीनआयुर्वेदके ग्रंथोंमें**—काकडासिंगीको पौष्टिक, कफको निकालनेवाला, तथा खांसी, श्वास, ज्वर, अरुचि और पेटके दर्दोंको नष्ट करता लिखाहै।

मुसलमानग्रंथकार—इसको गरम, खुश्क और मुख्य करके बच्चोंके छातीके पुराने दर्दोंमें उसीप्रकार अजीर्णकी उलटी और दस्तोंकी बिमारीमें उपयोगी हे। इसीवास्ते ज्वरकी पीडामें इसके वर्त्ताव करनेकी प्रशंसा करेहे।

चरकसंहितामें—इसे कासहर तथा हिचकी बंदकर्त्ता कहीहै।

सुश्रुतसंहितामें—इसे जीवन, पौष्टिक, बृंहण और पित्तशोणितके चकत्तेनाशक मानतेहैं।

दारसिझयाना, ला. मीरीकासापीडा Myrica sapida. । उत्पत्ति । यह हिमालयकी तरफ एक प्रकारका बडा दरखत होताहै । उसकी छाल कायफलके नामसे विख्यात है और वर्त्तावमें आतीहैं ।

गुण । कषेला, कडवा और चरपरा । **प्रयोग ।** इसके द्वारा वातकफज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कंठरोग और अरुचि ए सब नष्ट होय । **मात्रा** २ मासे ।

भारंगी.

भार्गीभृगुभवापद्माफंजीब्राह्मणयष्टिका ॥
ब्राह्मण्यंगारवल्लीखरशाकाचहंडिका ॥
भार्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः
दीपनीतुवरागुल्मरक्तमुत्राशयेद्ध्रुवम् ॥
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ७२

अर्थ-भार्ङ्गी, भृगुभवा, पद्मा, फंजी, ब्राह्मणयष्टिका, ब्राह्मणी, अङ्गारवल्ली, खरशाका और हंडिका ए **संस्कृत** नाम है । **हिं.** भारंगी, भाड़ंगी, बभ्रनेटी, **बं.** बामुनहाटी, **म.** भारंग, **का.** किरुदेगु , **तै.** भण्ट भारंगी, **नैपाली** चूया, **ला.** क्लेरोडन्ड्रोन् Clerodendron । यह औषधजातिकी वनस्पति है ।

गुण । रूक्ष, कटु, तिक्त, रोचक, गरम, पाचक, हलकी, अग्निदीपिकारी और कषेली है । **प्रयोग ।** इसका सेवन रक्तगुल्म, सूजन, खांसी, कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वायु शांति करे । इसकी जड प्रयोगमें लीनी जातीहै । **मात्रा** १ मासेकी हैं । कोई २ आचार्य इसका सर्वांग ग्रहण करते हैं ।

पाषाणभेद.

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नोगिरिभिद्भिन्नयाजनी ॥
अश्मभेदोहिमस्तिक्तःकषायोबस्तिशोधनः
भेदनोबस्तिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः ॥
योनिरोगान्प्रमेहांश्चप्लीहशूलव्रणानिच ७४

अर्थ-पाषाणभेद, अश्मघ्न, गिरिभित्, भिन्नयाजनी और अश्मभेद, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** पखानभेद, **बं.** पाथरचूर, **म.** पाषाणभेद, **फा.** गोशाद, **अ.** अंतीभाना, **क.** आललेगया, **तै.** तेल्ला मुरुपिंडी, **ला** आयरीकास्युबोकोरस । पखानभेद दो प्रकारका है । एक वनस्पतियोंकी जड होय है उसको पाषाणभेद लकडी कहते हैं । दूसरा खनिज होताहै उसको पाषाणभेद पत्थर कहते है । (कार्बोनेट ऑफ् आयर्न एन्ड लाइम्) अजमानके पत्तेकोभी पाषाणभेदी कहतेहैं ।

गुण । **पखानभेद** कडवा, कषेला, बस्तिशोधक और भेदक (दस्तकर्त्ता) है । **प्रयोग ।** यह दोषज बवासीर, गोला, कठिनपथरी, हृद्रोग, योनिरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल और व्रणरोगको नष्ट करे । इसकी जड प्रयोगमें लेतेहै । **मात्रा** १ मासेकी है ।

धायके फूल.

धातकीधातुपुष्पीचताम्रपुष्पीचकुंजरा ॥
सुभिक्षाबहुपुष्पीचवह्निज्वालाचसास्मृता
धातकीकटुकाशीतामदकृत्तुवरालघु ॥
तृष्णातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित् ॥

अर्थ-धातकी, धातुपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुंजरा, सुभिक्षा, बहुपुष्पी और वह्निज्वाला, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** धायके फूल, धावईके फूल, **रा.** धावड्याका फूल, **बं.** धाइफूल, **म.** धायटीफूल, **गु.** धावडीनां फूल, **क.** धायिफूल, **तै.** धातुकी पुड़, **ई.** ग्रीसलीआ टोमेन्टोजा Grislea tomentosa. कहते है । यह क्षुपजातिकी वनस्पतिहै । पत्ते अनारके समान होते है और आमेसामे बराबर उगतेहैं । फूल गुलाबी तथा लालरंगके होतेहैं । छोटे छोटे आधेइंचके लंबे घंटाके आकारके और फल छोटी इलायचीके समान भीतरसे दो भाग और बीजवाले होतेहैं । **चित्र** नंबर ८ का देखो ।

गुण । **धायके फूल** कटु, शीतल, मादक, कषेले और हलके । **प्रयोग ।** तृष्णा, अतिसार, रक्तपित्त, विष, कृमि और विसर्परोग इनको निवारण करे । प्रयोगमें इसके फूल लिये जाते हैं । **मात्रा** १ मासेकी है ।

मजीठ.

मंजिष्ठाविकसाजिंगीसमंगाकालमेषिका ।
मंडूकपर्णीभंडीरीभंडीयोजनवल्ल्यपि ॥ ७७ ॥
रसायन्यरुणाकालारक्तांगीरक्तयष्टिका ।
भंडीतकीचगंडीरीमंजूषावस्त्ररंजिनी ॥ ७८ ॥

मंजिष्ठामधुरातिक्ताकषायास्वरवर्णकृत्।
गुरुरुष्णाविषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक्॥
रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्पव्रणमेहनुत्॥७९॥

अर्थ–मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, कालमेषिका, मंडूकपर्णी, भंडीरी, भंडी, योजनवल्ली, रसायनी, अरुणा, काला, रक्तांगी, रक्तयष्टिका, भंडीतकी, गंडीरी, मंजूषा और वस्त्ररंजनी, ए संस्कृत नाम। हिं. मजीठ, बं. मंजिष्ठा, म. मंजिष्ठ, ता. मंजिटी, फा. रुनास, अ. फुवह तुसिवग उरुकुस्सुवागीन, इं. मेडररुट्, ला. रुलीया Rulia। यह लताजातिकी औषधी है। बहुत लंबी बेल और पत्ते कुछ लंबे मेंडकके रंगके होतेहैं। इसकी उत्पत्ती नेपाल, अफगान और ग्रीकके मुल्कमें होतीहै। वहां इस्सें कपडे रंगतेहै। और यह खेतोंमें वोईजाती है, मजीठकी जड लालरंगकी होतीहै। यही प्रयोगमें लीनी जातीहै।

गुण। **मजीठ** मीठी, कडवी, कषेली, भारी और उष्णवीर्य है। **प्रयोग।** **मजीठ**के सेवन करनेसें स्वर और वर्ण उत्तम होय। एवं विषदोष, कफ, सूजन, योनिरोग, कर्णरोग, रक्तातिसार, कुष्ठ, रुधिरके दोष, वीसर्प, व्रण और प्रमेहरोग, इनको शमन करें। *

मजीठके भेद.

बौलस्त्रियौजनीकौंचिभाहिलीचचतुर्विधा।
मंजिष्ठाचैवसाप्रोक्ताविलोमेचोत्तमोत्तमा॥

अर्थ–बौल, त्रियोजनी, कौंची और भाहिली ए चारभेद मजीठके है। इसमें विलोम गिननेसें एक दूसरीसें उत्तम जाननी। जैसें भाहिलीसें कौंची, कौंचीसें त्रियोजनी और त्रियोजनीसें उत्तम बौलसंज्ञक मजीठ सर्वोपर है.

कसूम.

स्यात्कुसुंभंवह्निशिखंवस्त्ररंजकमित्यपि॥
कुसुंभमधुरंरूक्षंवह्निकृद्रोचनंमतम्॥
विण्मूत्रदोषशमनंकटूष्णंगुरुपित्तलम्
क्रमिहृद्वातलंकुच्छ्ररक्तपित्तकफापहम्॥८०॥

अर्थ–कुसुंभ, वह्निशिख और वस्त्ररंजक, ए संस्कृत नाम। हिं. कसूम, कर्ड, बं. कुसुमफूल, म. करड्याचें फूल, कसूम दो प्रकारका होताहै। एक कसूम, दूसरा वनकसूम। इसका बीज सपेद होता है। उसको हिं. कर्ड वा करड कहतेहैं। फा. गुलमास्फर, अ. अखरीज हब्बुलअस्फर, इं. आफिसिनल् कार्थेमस्, ला. कार्थेमसटिंटोरियस्।

गुण। **कसूम** मधुर, रूक्ष, अग्नि दीप्तकरता, रेचक, मलमूत्रके दोषोंको नष्ट करता, कटु, उष्ण, भारी, पित्त उत्पन्न करता, कृमिनाशक, वातको बढानेवाला, घोर रक्तपित्तनाशक, तथा कफशांतिकारक। इसके फूलकी मात्रा १ मासेकी है। †

लाख.

लाक्षापलंकषाऽलक्तोयावोवृक्षामयोजतुः॥
लाक्षावर्ण्याहिमाबल्यास्निग्धाचतुवरालघुः॥
अनुष्णाकफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत्
व्रणोरःक्षतवीसर्पक्रमिकुष्ठगदापहा॥
अलक्तकोगुणैस्तद्वद्विशेषाद्व्यंगनाशनः॥८२॥

अर्थ–लाक्षा, पलंकषा, अलक्त, याव, वृक्षामय

* **चक्रदत्त और शार्ङ्गधरमें**—धायके ग्राहक गुणोंके कारण उसको पीसके सहतके साथ मिलाय शूलके दर्दमें देना लिखतेहै। स्त्रियोंके यदि आर्त्तव अधिक जाता होय तो इस फूलके देनेकी आज्ञा देयहै। उसके दूसरे २ ग्राही गुणोंके वास्ते बाहरके भागपर पीसकर मालिश करनेमें आतीहै।

चरकसंहितामें—धायके फूलोंको पुरीषसंग्रहण, मूत्रविरंजनीय और जोगर्भवती होय तो गरमी देनेके वास्ते इस फूलको सावत देना कहाहै।

सुश्रुतसंहितामें—इसे पक्वातिसारनाशक, संधानीय, व्रण्य और पित्तको निकालनेवाला गिनतेहै।

† **मुसलमानी वैद्य**—कसूमके बीज (कर्ड) का तेल, संधिवात और लकवाकी विमारीमें देतेहैं अर्थात् लगातेहैं।

डा. पन्स्ली—कहताहै कि, सैंकडो प्राणी इस तेलको संधिवात और लकवेपर लगातेहैं। तथा दुष्ट नासूरपर चुपडतेहैं। जुलाबके वास्ते बीजोंको सहतमें पीसके देतेहैं।

और अलु, ए संस्कृत नाम । हिं. लाख, लाहीं, बं. लाहा, का. अरगू, तै. लाका, फा. लाक, अ. लुफ्, लुकमकसूल, इं. सेल्लाक, ला. कोकुस लासिफेरा Coccus laccifera; लाख यह वृक्षका रोग है । पीपलकी लाख उत्तम होतीहै । मात्रा १ मासेकी है । इसके दर्पनाशक मस्तंगी है । प्रतिनिधि रेवतचीनी है । विशेष गुण देखने होय तो हमारे द्रव्यरत्नाकरको देखो ।

गुण । लाख वर्णोत्पादक, शीतल, बलकारक, स्निग्ध, कषेली, हलकी और अनुष्ण । प्रयोग । कफ, रक्तपित्त, हिचकी, खांसी, ज्वर, घाव, उरःक्षत, वीसर्प, कृमि और कुष्ठरोग इनको नाश करे । अलक्तकि जिसको हिंदीमें महावर और मरेठीमें आलता कहते हैं । उसके गुण लाखके सदृश हैं । अधिकता यह है कि व्यंगरोगको नाश करे है ।

हलदी.

हरिद्राकांचनीपीतानिशाख्यावरवर्णिनी ॥
कृमिघ्नाहलदीयोषित्प्रियाहट्टविलासिनी ८३
हरिद्राकटुकातिक्तारूक्षोष्णाकफपित्तनुत् ॥
वर्ण्यात्वग्दोषमेहास्रशोथपांडुव्रणापहा ८४

अर्थ-हरिद्रा, कांचनी, पीता, वरवर्णिनी, कृमिघ्ना, हलदी, योषित्प्रिया, हट्टविलासिनी और जितने रात्रिके नाम संस्कृत हैं सब हलदीके जानने । हिं. हलदी, हरदी, बं. हरिद्रा, म. हळद, का. अरसिन, तै. पासुपु, गु. हलदर, फा. अरूकुल, सवागैन, जर्देचोब, इं. टरमेरीक Termeric, ला. करक्युमालोंगा । यह एक प्रकारका कंद है और मसालेमें गिरती है ।

गुण । हलदी कटु, तिक्त, रूक्ष, गरम और वर्णकर्त्री है । प्रयोग । सेवन करनेसें कफ, पित्त, त्वचाके दोष, प्रमेह, रक्तदोष, सूजन, पांडुरोग और व्रण ए नष्ट होवे । इसकी मात्रा २ मासेकी है । प्रतिनिधिमें दारुहलदी लेनी । और दर्पनाशक कपूर और नेत्रवाला है ।

वनहरिद्रा वनहरदी.

अरण्यहलदीकंदःकुष्ठवातास्रनाशनः ॥

अर्थ-वनहलदीका कंद-जंगली हलदी, म. रानहळद, गु. वनहलदर,-कोढ़ और वातरक्तको नाश करेहै । मात्रा २ मासेकी है ।

कपूरहलदी.

दार्वीभेदाम्रगंधाचसुरभीदारुदारुच ॥
कर्पूरापद्मपत्रास्यात्सुरीमत्सुरतारका ॥८५॥
आम्रगंधिर्हरिद्रायासाशीतावातलामता ॥
पित्तहृन्मधुरातिक्तासर्वकंडूविनाशिनी ॥८६॥

अर्थ-दार्वीभेदा, आम्रगंधा, सुरभीदारु, दारुकर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरीमत, सुरतारका, ए कपूरहलदीके संस्कृत नाम है । हिं. कपूरहलदी, आंबाहलदी, बं. आमआदा, म. आंबेहळद, क. हली अरसीन, तै. कारुपासुपु, इं. मेंगोजिंजर, ला. कर्क्यूमाएरोमेटिका कहते हैं । गुण । कपूरहलदी शीतल, वातकर्ता, पित्तको हरण करे, मीठी, कडवी और सर्वप्रकारकी खुजलियोंको नाश करे है । इसकी जड लेनी मात्रा २ मासेकी है ।

दारुहलदी.

दार्वीदारुहरिद्राचपर्जन्यापर्जनीतिच ॥
कटंकटेरीपीताचभवेत्सैवपचंपचा ॥ ८७ ॥
सैवकालीयकःप्रोक्तस्तथाकालेयकोऽपिच ॥
पीतद्रुश्चहरिद्रुश्चपीतदारुकपीतकम् ॥
दार्व्युष्णाकटुकातिक्तानेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥
मेहकंडुविसर्पघ्नीत्वग्दोषव्रणनाशिनी ॥
विषघ्नीस्वेदनीपित्तकफशोथविनाशिनी ८८

अर्थ-दार्वी, दारुहरिद्रा, पर्जन्या, पर्जनी, कटंकटेरी, पीता, पचंपचा, कालीयक, कालेय, पीतद्रु, हरिद्रु, पीतदारु और कपीतक ए संस्कृत नाम । हिं. दारुहलदी, बं. दारुहरिद्रा, का. मरनरिसिन, गु. दारुहलदर, तै. पासुपु, इं. पीकांक, ला. बेर्बेरिस Berberis कहतेहैं ।

गुण । उष्णवीर्य, कटु, तिक्त, विषघ्न, स्वेद उत्पन्न करता और कफपित्तनाशक । प्रयोग । नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग, प्रमेह, खुजली, विसर्प, त्वचाके दोष घाव और सूजन इनको दूर करें । मात्रा २ मासेकी है । इसकी लकडी लीनी जातीहै ।

रसांजन (रसौंत).

दार्वीक्वाथसमंक्षीरंद्वयंपक्त्वायदाघनम् ॥
तदारसांजनाख्यंतन्नेत्रयोःपरमंहितम् ॥८९॥
रसांजनंतार्क्ष्यशैलंरसगर्भंचतार्क्ष्यजम् ॥
रसांजनंकटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ॥
उष्णंरसायनंतिक्तंछेदनंव्रणदोषहृत् ॥९०॥

अर्थ-दारुहलदीके काढेकी बराबर गौका दूध मिलायकै औंटावे जब दोनों औंटकर गाढे होजावे तब उतारके सुखाय ले। इसको **रसांजन** (रसौंत) और रसवत कहतेहैं। **रसौंत** नेत्रोंको अत्यंत हितकारी है। इसके **संस्कृत**नाम तार्क्ष्यशैल, रसगर्भ और तार्क्ष्यज है। **हिं.** रसौंत, **म.** रसोत, **ला.** रसांजन, **तै.** रसांजनमु, **अ.** हुजुज, **गु.** रसवन्ती, **इं.** इक्सट्रेक् मबिरबिरस.

गुण। **रसौंत** कटु, उष्ण, कडवी और रसायन है। यह गाढेहुए कफ आदिको दूर करे। एवं विष, नेत्ररोग और घावको दूर करे। **मात्रा** १ मासेकी है।

बाकुची (बावची).

अवल्गुजोबाकुचीस्यात्सोमराजीसुपर्णिका।
शशिलेखाकृष्णफलासोमापूतिफलीतिच ॥
सोमवल्लीकालमेषीकुष्ठघ्नीचप्रकीर्त्तिता।
बाकुचीमधुरातिक्ताकटुपाकारसायनी ॥
विष्टंभहृद्धिमारुच्यास्रश्लेष्मास्रपित्तनुत्।
रूक्षाहृद्याश्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत्।
तत्फलंपित्तलंकुष्ठकफानिलहरंकटु।
केश्यंत्वच्यंवमिश्वासकासशोथामपांडुनुत्॥

अर्थ-अवल्गुज, बाकुची, सोमराजी, सुपर्णिका, शशिलेखा, कृष्णफला, सोमा, पूतिफली, सोमवल्ली, कालमेषी और कुष्ठघ्नी, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** बावची, **बं.** सोमराज, **म.** बावचा, **का.** वाडचिगे, **तै.** तिप्पतीगे, **ता.** वोगिविट्लू, **इं.** एसूक्यूलंटल्फाकुर्सो, **ला.** सोरालीआ कोरीलीफोलिआ Corylifolia कहतेहै। यह क्षुपजातिकी औषधी है, इसके पत्ते छोटे २ अरनीके समान कटे हुए गोल होतेहैं। फूलका गुच्छा बालके माफिक होताहै। इसी बालोंमें बावचीके दाने काले और चपटे प्रगट होतेहै। **चित्रनंबर** ९ देखो।

गुण। यह मधुर, तिक्त, पाकमें कटु, रसायन, विष्टंभनाशक, शीतल, रोचक, सर, कफनाशक, रक्तपित्तनाशक, रूक्ष और हृद्य। **प्रयोग**। **बाकुची** श्वास, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर और कृमिरोग इनको नष्ट करे। **बावचीका फल** पित्तकर्त्ता, बालोंको हितकारी, त्वचाको उत्तम करता और कटु। यह कुष्ठ, कफ, वादी, वमन, श्वास, खांसी, सूजन और पांडु इनको नष्ट करेहै। **प्रयोगमें** इसके बीज लिये जातेहैं। **मात्रा** १ मासेकी है। *

* **आयुर्वेदग्रंथोंमें**—बावचीके बीज गरम मानेहैं, और बहुतसे वैद्य इनको सरद और खुलासा दस्त लानेवाला, जागृत करता, तथा सेहवतको बढावेहै। कुष्ठ तथा रुधिरके विकारसे होनेवाले त्वचाके रोगमें इसका वर्तना लिखतेहैं। तथा पित्तविकार और पेटके कीडे काढनेमें भी इसका उपयोग करना लिखतेहैं।

डा. एनस्ली—कहताहै कि, यह बीज पेटमें मरोडा होता होय तो और कोढोंमें एवं और २ जबर्दस्त त्वचाके रोगोंमें वर्तनेसे बहुत उत्तम असर होताहै।

डा. भाऊदाजीने—इस बीजका कोढके रोगोंमें अत्यंत उपयोग कराहै और इसीसे उसको फते मिलीहै।

कलकत्तेका डा. कन्हैयालालदेव तथा **मुंबईका डा. लिस्बो**—इस बीजसे निकालेहुए तेलको सादा मरहमके साथ मिलायके कोढके रोगमें उपयोग करके कहताहै कि, "थोडे दिन कोढके दागोंपर लगानेसे उनका रंग सफेद मिटकर लाल पडगया। किसी २ के थोडा २ दरद मालूम होताहै। किसी २ समय उस दागमें छोटी २ फुंसी होजातीहै। यदि उनको किसीप्रकारकी ईजा न पहुचे तो थोडेही दिनमें सूख जावे और बीचमें काला दाग रहताहै। दागकी आसपाससे वह बढने लगताहै और धीरे २ कोढका संपूर्ण दाग निकल जाताहै। और ऐसाभी देखा गयाहै कि, इस तेलके लगानेसे कोढके नए दाग शरीरमें होनेवाले रुक गएहैं।"

पमाड-र.

चक्रमर्दःप्रपुन्नाटोदद्रुघ्नोमेषलोचनः ।
पद्माटःस्यादेडगजश्चक्रीपुन्नाटइत्यपि ॥
चक्रमर्दोलघुःस्वादुरूक्षःपित्तानिलापहः ।
हृद्योहिमःकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन्हरेत् ॥
हंत्युष्णंतत्फलंकुष्ठकंडूदद्रुविषानिलान् ॥
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनंकटुकंस्मृतम् ९७

अर्थ–चक्रमर्द, प्रपुन्नाट, दद्रुघ्न, मेषलोचन, पद्माट, एडगज, चक्री और पुन्नाट, ए **संस्कृत** नाम है । **हिं.** पमार–ड, चकवड, हरमल, **बं.** चाकुन्दा, **म.** टाकळा, **का.** चगचे, **दे.** तरवटा, **गु.** कुंवाडीओ, **तै.** तांटयमु, **फा.** संजिसवीया, **ला.** कश्या आलेटा Cassa कहतेहै । यह क्षुपजातिकी वनस्पति है, इसके फूल पीले होतेहैं और फली लगती है, उनमें काले रंगके बीज निकलतेहै ।

गुण । यह लघु, स्वादु, रूक्ष, पित्तवातनाशक, हृद्य, शीतल । **प्रयोग** । कफ, श्वास, कुष्ठ, दाद, कृमिरोग इनको नष्ट करें । **पमाडका फल** उष्ण और कटु, तथा कोढ, खुजली, दाद, विषरोग, वादी, गोला, खांसी, कृमि और श्वास इन सबको नष्ट करें ।

अतीस.

विषात्वतिविषाविश्वाशृंगीप्रतिविषारुणा ॥
शुक्लकंदाचोपविषाभंगुराघुणवल्लभा ॥९८॥
विषासोष्णाकटुस्तिक्तापाचनीदीपनीहरेत्॥
जीर्णज्वरातिसारामविषकासवमिकृमीन् ॥

अर्थ–विषा, अतिविषा, विश्वा, शृंगी, प्रतिविषा, अरुणा, शुक्लकंदा, उपविषा, भंगुरा और घुणवल्लभा, ए **संस्कृत** नाम है । **हिं.** अतीस, **बं.** आतइच, **म.** अतिविष, **गु.** अतिवखनीकली, **क.** अतीविषा, **तै.** अतिवासा, **ला.** एकोनाईटम् हैटरोफाइलम् Aconitum heterophyllum कहतेहैं । अतीस यह क्षुपजातिकी औषध है । यह करेलेके सागके समान होताहै । इसके नीचे कंद होताहै । वह तीन प्रकारका है ।

गुण । **अतीस** गरम, कटु, तिक्त, पाचनी और दीपन करता है । **प्रयोग** । जीर्णज्वर, अतिसार, आमवात, विष, खांसी, वमन और कृमिरोगको दूर करे । इसका चूर्ण ज्वरकी पाली बंद करनेमें कुनेनके समान है, ऐसा किसी आचार्यका मत है । **मात्रा** ५ रत्तीसें लेकर ३॥ मासेतक है ।

अतिसके भेद.

त्रिविधातिविषाज्ञेयाशुक्लाकृष्णातथारुणा ॥
रसवीर्यविपाकेषुनिर्विशेषगुणाचसा ॥

अर्थ–अतीस तीन प्रकारकी होतीहै–सपेद काली और लाल । तीनों रसवीर्य और विपाकमें समानहीं है । परंतु सपेद जातिकी उत्तम होतीहै ।

लोध–पठानीलोध.

लोध्रस्तिरिटकंचैवशाबरोगालवस्तथा ॥
द्वितीयःपट्टिकालोध्रःक्रमुकः स्थूलवल्कलः
जीर्णपत्रोबृहत्पत्रःपट्टीलाक्षाप्रसादनः ॥
लोध्रोग्राहीलघुःशीतश्चक्षुष्यःकफपित्तनुत्
कषायोरक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहृत् १

अर्थ–लोध्र, तिरिटक, शाबर और गालव, ए लोधके **संस्कृत** नाम । दूसरी जो लोध होतीहै उसको **पट्टिकालोध्र** कहतेहैं । उसके नाम पट्टिकालोध्र, क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, पट्टी और लाक्षाप्रसादन । **हिं.** लोध और पठानीलोध कहते हैं । **म.** लोध्र, **गु.** लोदर, पटियालोदर, **फा.** मुगाम, **ला.** सिम्प्लोकोस रासीमोसा । लोधवृक्षके जडकी छाल प्रयोगमें लीनी जातीहै ।

गुण । **लोध** ग्राही, हलकी, शीतल, नेत्रोंको हित, कफपित्तनाशक और कषाय । **प्रयोग** । रक्तपित्त, ज्वर, अतिसार और सोथरोग, इनको दूर करे । विशेषकरके इसमें विषनाशक गुण हैं । **मात्रा** ५ रत्तीसें लेकर ५ मासेतक । *

* **संस्कृतके ग्रंथोंमें**—लोधको शीतल और ग्राही मानतेहैं । और आंतडे, आंख और नासूरके घावमें उपयोगी गिनतेहैं । मसूडे नरम होगये होय अथवा उनमेसें रुधिर निकलता होय तो छालको क्वाथकर कुले करनेमें वर्ततेहै ।

लसुन (लहसन).

लशुनस्तुरसोनःस्यादुग्रगंधामहौषधम् ॥
अरिष्टोम्लेच्छकंदश्चयवनेष्टोरसोनकः ॥ २ ॥
यदामृतंवैनतेयोजहारसुरसत्तमात् ॥
तदाततोऽपतद्बिंदुःसरसोनोऽभवद्भुवि ॥ ३ ॥
पंचभिश्चरसैर्युक्तोरसेनाम्लेनवर्जितः ॥
तस्माद्रसोनइत्युक्तोद्रव्याणांगुणवेदिभिः ४
कटुकश्चापिमूलेषुतिक्तःपत्रेषुसंस्थितः ॥
नालेकषायउद्दिष्टोनालाग्रेलवणःस्मृतः ॥
बीजेतुमधुरःप्रोक्तोरसस्तद्गुणवेदिभिः ॥ ५ ॥
रसोनोबृंहणोवृष्यःस्निग्धोष्णःपाचनःसरः॥
रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरकोमतः ॥ ६ ॥
भग्नसंधानकृत्कंठ्योगुरुःपित्तास्रवृद्धिदः ॥
बलवर्णकरोमेधाहितोनेत्र्योरसायनः ॥ ७ ॥
हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-
विबंधगुल्मारुचिकासशोफान् ॥
दुर्नामकुष्ठानलसादजंतु-
समीरणश्वासकफांश्चहंति ॥ ८ ॥
मद्यंमांसंतथाम्लंचहितंलशुनसेविनाम् ॥
व्यायाममातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम् ॥
रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतान्निरंतरम् ॥ ९ ॥

अर्थ–लशुन, रसोन, उग्रगंधा, महौषध, अरिष्ट, म्लेच्छकंद, यवनेष्ट और रसोनक, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** लहसन, **बं.** रसुन, **म.** लसूण पांढरी, **का.** बिलियबेल्लुलि, **तै.** तेल्लावल्ली, **मु.** लसन, काजुवा, **गु.** लसण, **अ.** सूम, **फा.** शीर, **ई.** गार्लीक, **ला.** आल्यम सटाइवम्। इसकी क्षुपजाति है।

उत्पत्ति। जिससमय गरुडने इंद्रसैं अमृत हरण करा, उस समय अमृतकी बूंद गिरी उससैं इस पृथ्वीमें लहसन प्रगट हुई। छः रस हैं उनमेंसैं **पांचरस** इसमें विद्यमान है। एक **खट्टारस** नहींहे। इसीसैं इसको **रसोन** (एकेन रसेन ऊनः) कहतेहे। इसकी **जडमें** चरपरारस, **पत्तोंमें** कडवारस, **नालमें** कषेला, नालकी **अग्रभागमें** लवणरस और **बीजोंमें** मधुर रस है।

गुण। लहसन पुष्टिकारक, शुक्रजनक, स्निग्धोष्ण, पाचन, सर (कोष्ठस्थ वायुमलादिकका निकालनेवाला है)। **रसमें** कटुआ, तीक्ष्ण, **पाकमें** मधुर, टूटेहुए स्थानको जोडनेवाला, कंठको शुद्ध करता, बलवर्णको उत्कर्ष करता, स्मरणशक्तिवर्द्धक, तथा नेत्रोंको हितकारी और रसायन। **प्रयोग**। लहसनके सेवन करनेसैं हृदयरोग, अजीर्ण, ज्वर, कूखका दर्द, विबंध (मलोंका बद्ध होकर रहना) गुल्म, अरुचि, खांसी, सूजन, बवासीर, कोढ, मंदाग्नि, कृमिरोग, वादी, श्वास और कफ, इनको नष्ट

चक्रदत्तमें—ममूढोंकी पीडा नष्ट करनेको लोध, रसौत और नागरमोथाको मिश्र वर्तनेकी प्रशंसा करताहै।

अमृतसागरमें—लोध, मुलहटी, फुलाईफिटकरी और रसौत समान भाग ले पानीमें घिसके नेत्रोंपर लेप करे तो दूखते नेत्र अच्छेहों।

डा. शेक्सवरों—कहताहै कि, कलकत्तेमें इस वृक्षकी छाल रंगरेज लोग लालरंग रंगनेमें अधिक वर्ताव करतेहैं।

मुंबईके इलाकेमें—लोध अनेकजातके लेप बनानेमें वर्त्ततेहै और इससे भराहुआ रुधिर और गांठ पिंगल जातीहै ऐसा मानतेहैं।

डा. चार्लस और **कन्हैयालालदेव**—स्त्रियोंकी गुह्येन्द्रीयसे निकलतेहुए प्रवाहके लिये इसवृक्षकी छाल २० ग्रेन खांडकेसाथ मिलायके देनीकी तारीफ करतेहै।

चरकसंहितामें—छालको रक्तशुद्धिकर और स्तंभक मानतेहैं।

सुश्रुतसंहितामें—इसे मेदोहर, कफहर, योनिदोषहर, स्तंभक, व्रणशोधक, पक्वातिसारनाशक, रक्तपित्तहर और रक्तप्रदरनाशक वर्णन कराहै।

करे । इसकीनिधी सपेद प्याज है । और इसके दूसरेका नायाक मांस है ।

पथ्यापथ्य । लहसन खानेवाला प्राणी मद्य, मांस, खटाईको नित्य सेवन करे, यह हितकारी है । दंड, कसरत, धूपमें डोलना, क्रोध करना, अत्यंत जल पीना, दूध और गुड ए लहसन सेवन करनेवालेको अपथ्य है । ए त्याग देने चाहिये । *

गृंजन.

गृंजनंशिखिमूलंचयवनेष्टंचवर्त्तुलम् ।
ग्रन्थिमूलंशिखाकंदंकंदंडिंडीरमोदकम् ॥
गृंजनंकटुरुष्णंचकफवातरुजापहम् ।
रुच्यंचदीपनंहृद्यंदुर्गंधंगुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-गृंजन, शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्तुल, ग्रंथिमूल, शिखाकंद, कंद, डिंडीरमोदक, ए संस्कृत नाम । हिं. म. कालमूला, का. सेठीमूल, चडिकेयमूलंगी, म. रानगाजर, गु. अडवाऊ गाजर, फा. जईक, ई. वयारटरूट् । यह मूलीकाही भेद है । गृंजनशब्दसे जो गाजर लेतेहैं वह असत्य है ।

गुण । गृंजन चरपरी, गरम, कफवातके रोगनाशक, रुचिकारी, दीपन, हृदयको प्रिय, दुर्गंध और पेटके गोलेको नष्ट करे ।

पिंडमूल.

पिंडमूलगजीडंचपिंडिकंपिंडमूलकम् ।
पिंडमूलंकटूष्णंचगुल्मवातादिदोषनुत् ॥

अर्थ-पिंडमूल, गजीड, पिंडिक, पिंडमूलक, ए सं. । हिं. गोलमूली, का. बट्टमूलंगी ।

गुण । पिंडमूली चरपरी, गरम, गोला और वातादिदोषोंको नष्ट करेहै ।

गाजर.

गार्जरंपिंगमूलंचपीतकंचसुमूलकम् ।
स्वादुमूलंसुपीतंचनागरंपीतमूलकम् ॥
गार्जरंमधुरंरुच्यंकिंचित्कटुकफापहम् ।
अध्मानकृमिशूलघ्नंदाहपित्ततृषापहम् ॥

अर्थ-गार्जर, पिंगमूल, पीतक, सुमूलक, स्वादुमूलक, सुपीत, नागर और पीतमूलक, ए संस्कृत नाम । हिं गाजर ।

गुण । मधुर (मीठी), रुचिकारी, किंचिन्मात्र चरपरी, कफनाशक, अफरा, कृमि, शूल, दाह, पित्त और तृषा इनको दूर करे ।

द्वितीयरसोन.

रसोनोन्योमहाकंदोगृंजनोदीर्घपत्रकः ।
पृथुपत्रःस्थूलकंदोयवनेष्टोबलेहितः ॥

---

* हारीतसंहितामें—लहसनकी उत्पत्तिके बाबत एक कथा चली आतीहै-कि समुद्रमथनके पश्चात् अमृत निकलते समय देवासुरसग्राम हुआ उसवक्त गरुड अपनी चोंचमें अमृतकलशको पकड आकाशमें उडताहुआ चला जाताथा कि वेहोसीमें एक बूंद अमृतकी घडेसे झलक पृथ्वीमें गिरपडी जिस्से एक छोटासा क्षुप उगकर खडा होगया । फिर उसीस्थलमे १२ वर्षका घोर अकालपडा कि सब वनस्पति और घासफूस बिलकुल सूखगए तब तो ऋषियोंको अत्यत त्रास हुआ उन ऋषियोमें एक वृद्ध ऋषि था उससे चला नहीं जाताथा और उसके सब अग जीर्ण होगएथे वह हाथमें लकडी लेकर चलताथा । रास्ते चलनेसे थककर बैठ गया, मुखसे दात गिर गए इसवास्ते भूंखसे पीडितहो पृथ्वीमें जहाँ जहाँ फलके वृक्ष सुनता वहीं वहीं भटकताथा । इस प्रकार भटकते २ पुण्यजोगसे उसने छोटे २ क्षुप देखे वह हरे । काईके सदृशथे और उनके पास अत्यंत हरी घास उगरहीथी । यह वृद्धऋषि भूंखके मारे उसके पत्ते छःमहिने खाए । छःमहिनेके वाद जब सुकाल होगया तब छःमहिने औरभी खाए फिर १ महिनेतक इसके कंदको खाया । सुकाल होनेपर जब सब ऋषि एकत्र हुए तो यह पुराना ऋषिभी जवान होकर उनमें गया । इसे देखकर सब ऋषियोंको विस्मयहुआ और उस्से पूंछा तब प्रथम तौ उसने कहीं नहीं जब बहुत पूंछी तब उसने लहसनके पत्ते १ वर्ष खानेकी और १ महिने कद खानेकी हकीकत कह सुनाई । यह सुनके वह बडे प्रसन्न हुए परंतु उसके प्रथम छिपानेके नम क्षुपको शाप दिया कि लहसन ब्राह्मणमात्रको अभक्ष होजाय ।

गृंजनस्यमधुरंकटुकंदनालमप्युपदि-
शंतिकषायम् । पत्रसंचयमुशंति-
चतिक्तंसूरयोलवणमस्थिवदंति ॥

अर्थ–दूसरे लहसनको महाकंद, गृंजन, दीर्घपत्रक, पृथुपत्र, स्थूलकंद, यवनेष्ट और अवलेहित कहते हैं।

गुण। इसका कंद मीठा और चरपरा है। नाल इसकी कषेली है, पत्तेआदि कडवे हैं, और इसकी हड्डीमें लवण रस है।

पलांडु (प्याज).

पलांडुर्यवनेष्टश्चदुर्गंधोमुखदूषकः ॥
पलांडुस्तुगुणैर्ज्ञेयोरसोनसदृशोगुणैः॥११०॥
स्वादुःपाकेरसेऽनुष्णःकफकृन्नातिपित्तलः॥
हरतेकेवलंवातंबलवीर्यकरोगुरुः॥ १११ ॥

अर्थ–पलांडु, यवनेष्ट, दुर्गंध और मुखदूषक, ए संस्कृत नाम। हिं. प्याज, बं. पेयाज, म. कांदा, का. लोहिवीउल्ली, गु. डुंगरी, तै. नीरउल्ली, फा. अस्कील वसलुल्फार उनसल् अस्कीलुल अवियज, इं. एलियम Allium, इसकी क्षुपजाती है.

गुण। प्याज गुणोंमें लहसनके समान है। पाकमें मिष्ट, कफवर्द्धक, अधिक पित्तकर्त्ता नहींहै। गुरु, बलकारक, वीर्योत्पादक और वायुनाशक हैं।

राजपलांडु.

अन्योराजपलांडुःस्याद्यवनेष्टोनृपाह्वयः।
राजप्रियोमहाकंदोदीर्घपत्रश्चरोचकः॥
नृपेष्टोनृपकंदश्चमहाकंदोनृपप्रियः।
रक्तकंदश्चराजेष्टोनामान्यत्रत्रयोदश॥
पलांडुर्नृपपूर्वस्याच्छिशिरःपित्तनाशनः।
कफहृद्दीपनश्चैवबहुनिद्राकरस्तथा॥
वक्ष्यतेनृपपलांडुलक्षणंक्षारतीक्ष्णम-
धुरोरुचिप्रदः। कंठशोषशमनोतिदीप-
नःश्लेष्मपित्तशमनोऽतिबृंहणः॥

अर्थ–एक राजपलांडु होताहै उसके नाम–यवनेष्ट, नृपाह्वय, राजप्रिय, महाकंद, दीर्घपत्र, रोचक, नृपेष्ट, नृपकंद, महाकंद, नृपप्रिय, रक्तकंद और राजेष्ट ए तेरह नाम हैं।

गुण। राजपलांडु शीतल, पित्तनाशक, कफहरणकर्त्ता, दीपन और अधिक निद्रा करेहै। तथा राजपलांडु खारी, कडवा, मधुर, रुचिदायक, कंठके सूखनेको नाशक, अत्यंत दीपन, कफ, पित्तका शमनकर्त्ता और अत्यंत बृंहण है।

भल्लातक (भिलावा).

भल्लातकंत्रिषुप्रोक्तमरुष्कोऽरुष्करोऽग्निकः॥
तथैवाग्निमुखीभल्लीवीरवृक्षश्चशोफकृत् १२
भल्लातकफलंपक्वंस्वादुपाकरसंलघु।
कषायंपाचनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णंछेदिभेदनम्॥
मेध्यंवह्निकरंहंतिकफवातव्रणोदरम्।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरकृमीन्॥
तन्मज्जामधुरोवृष्योबृंहणोवातपित्तहा॥
वृन्तमारुष्करंस्वादुपित्तघ्नंकेश्यमग्निकृत् १५
भल्लातकःकषायोष्णःशुक्रलोमधुरोलघुः॥
वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान्॥
हंतिगुल्मज्वरश्वित्रवह्निमांद्यकृमिव्रणान्॥

अर्थ–भल्लातक, अरुष्क, अरुष्कर, अग्निक, अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष और शोफकृत, ए संस्कृत नाम है। हिं. भिलाए, भिलावा, बं. भेला, उड़िया भल्लिप, तै. शनकोट्टई, म. बिब्बा, बिब्वा, का. गोड्वी, केरवीज, दे. भिलामा, कों. बिबा, बिबे, तै. नाल्लजीडी, गु. भीलामुं, फा. बिलादर, अ. हबुलकल्ब, इं. मार्किंगनट, ला. सेमिकार्पस आनाकार्डीयम Semicarpus anacardium कहतेहैं।

गुण। पके भिलायेके फलका पाक स्वादु; रस हलका, कषेला, पाचक, स्निग्ध, भेदक, तीक्ष्णोष्ण, छेदन, भेदन, स्मरणशक्तिवर्द्धक और अग्निकारक। यह कफ, वायु, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, बवासीर, संग्रहणी, गोला, सूजन, अफरा, ज्वर और कृमिरोगनिवारक। इसकी मज्जा मीठी, वृष्य, बृंहण, वातपित्तनाशक। भिलायेकी डंडी स्वादु, पित्तनाशक और केशोंको बढानेवाली; तथा अग्निकर्त्ता। प्रयोग। भिलाया कषेला, गरम, शुक्रवर्द्धक, मधुर, हलका, वातकफोदर, अफरा, कोढ, बवासीर, संग्रहणी, गोला, ज्वर, सपेद–कुष्ठ, मंदाग्नि, कृमिरोग

और व्रण इनको दूर करे । इसके दर्पनाशक तिल और नारियलकी गिरी है । मात्रा १ फलकी है । परंतु किसीकी संमति है कि यह विष है इसवास्ते चार रत्तीसें लेकर ३॥ मासेतक है । *

भंगा (भांग).

भंगागंजामातुलानीमादिनीविजयाजया ॥
भंगाकफहरीतिक्ताग्राहिणीपाचनीलघुः ॥
तीक्ष्णोष्णापित्तलामोहमदवाग्वह्निवर्द्धिनी
मदनोद्दीपनीनिद्राजननीहर्षदायिनी ॥
धनुस्तम्भंजलत्रासंविषूचींचमदात्ययम् ।
प्रवृत्तिरजसाबह्वींहंत्यापत्यप्रसूतिकृत् १७

अर्थ-भंगा, गंजा [पत्रा], मातुलानी, मादिनी, विजया और जया, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** भांग, भंग, **बं.** सिद्धि, मां, **म. गु.** भांग, **तै.** जनपगितुलु, **ब्रह्मीमें** बिन, **फा.** कनब, जुजवआजम्, **ला.** क्यानाबीस इंडिका । **स्वरूप** । भांगकी क्षुपजाति है । इसके **पत्ते**, लंबे कंगुरेदार और नीमके पत्तेके समान होते हैं, परंतु नीमके पत्तोसें छोटे होतेहैं । प्रत्येक डालीपर तीन, पांच अथवा सात पत्ते होतेहैं । **भांग** और **गांजा** दोनों एकही वृक्षसें उत्पन्न होतेहै । **चरस**का रस इसी वृक्षमेंसें निकलता है । **चित्र** नंबर १० का देखो ।

गुण । कफनाशक, कडवी, ग्राही, पाचक, लघु, तीक्ष्ण, गरम, पित्तकारक, मोहकारक, मादक, अग्निवर्द्धक, कामोद्दीपक, निद्राजनक और हर्षदायक । **प्रयोग** । भांगके सेवन करनेसें धनुस्तंभवायु, जलत्रास, विषूचिका, मदात्यय और अधिक रजप्रवृत्ति निवारण होय । इसके द्वारा जरायुकी शिथिलता दूर होकर प्रसवबाधा दूर होय । **मात्रा** चाररत्तीकी है ।

गांजा.

गांजा आग्नेय, बलकारक, कामोद्दीपक, निद्राकारक, गर्भस्रावक, विकाशी, पीडानिवारक, आक्षेपनाशक और मादक है । कुत्ते और स्यार आदिके काटनेसें जो जलत्रास (जलको देखकर भोंकना) बाह्यायाम, अंतरायाम, विषूचिका, मदात्यय, शूल, अम्लपित्त, मंदाग्नि, अत्यंत रजोदर्शका रुधिर निकलना, इन सबके दूर करनेको इसे देवे **गांजे**मेंसे सत्त निकालतेहै । इसके गुण गांजेके समान है । गांजेकी **प्रतिनिधि**में गांजेका **सत्त** देना चाहिये । चरस और गांजा एक प्रकारका रस है । **मात्रा** आध रत्तीकी है । **इं.** इंडियन हिंप कहतेहैं ।

पोस्त.

तिलभेदःखसतिलःकासश्वासहरःस्मृतः ।
स्यात्खसखसफलोद्भूतंवल्कलंशीतलंलघु ॥

* **आयुर्वेदके ग्रंथोंमें**—यह फल तीखा, गरम, जागृतकरता, पाचक, ज्ञानतंतुओंको बलदाता और त्वचापर फोडा प्रगट करनेवाला गिनतेहै । इसको बदहजमी, बबासीर त्वचाके रोग और संधिके रोगमें वर्त्ततेहैं ।

हकीमलोग—इसे गरम और खुश्क गिनतेहै । इसीसे त्वचाके तमाम रोग, मृगी और संधिके दूसरे रोगोंमें १२ से २४ पर्यंत ग्रेनकी मात्रासे देना उपयोगी समझतेहैं । शरीरके बाहरी भागपर सरदीके सूजनपर इस रसके लगानेकी प्रशसा करतेहै ।

गोवाप्रांतोंमें—श्वासके रोगपर भिलाएको छाछमें मिलायकर देतेहै । तथा पेटकी कृमि निकालनेकेवास्तेभी वर्त्तते हैं । वहांके मनुष्य इसको औटायकर तेल निकालतेहैं । यह अत्यंत गरम होनेके कारण संधिवात और नसके हट जानेपर चुपडनेमे काम आतांहै । यदि इसमें कोई दूसरी औषधको मिलाय कर इसकी न्यून शक्ति न करे तो इससे चमडीके ऊपर छाला पडके फफोला उछर आवे ।

सुश्रुतसंहितामें—इसवृक्षकी छाल स्तमक और रोचक मानीहै । और फलका तेल त्वचाके ऊपर घाव करता और कृमिऊपर तथा ऊर्ध्ववातनाशकर्त्ता वर्णन कराहै ।

चरकमें—इस फलको दीपनीय (क्षुधा लगानेवाला), भेदनीय (दस्तावर), विदाही (जलन करनेवाला) और कुष्ठहर कहाहै ।

ग्राहितिक्तंकषायंचवातकृत्तत्कफापहम् ॥
धातूनांशोषकंरूक्षंमदकृद्वाग्विवर्द्धनम् ॥
मुहुर्मोहकरंरुच्यंसेवनात्पुंस्त्वनाशनम्॥१९॥

अर्थ-तिलभेद, खसतिल और खाखस, ए संस्कृत नाम। हिं. पोस्त, खसखसका फल, पोस्तके डोंड़े, रा. छूंतरा, बं. टेरीवृक्ष, कों. खसखसीचे झाडाचे फळाचें बोंड, फा. कोकनार, अ. अबुनास, ला. पापावरिसकाप्स्युले, इं. पोपी सीड।

गुण। पोस्तके डोडा शीतल, हलके, ग्राही (धारक), कडवे, कषेले, वादीकर्त्ता, कफघ्न, खांसीनाशक, धातुशोषक, रूक्ष, मादक, बोलनेकी शक्तिको बढानेवाले, मोहोत्पादक, रुच्य और पुरुषत्वके नाशक हैं। यह कफघ्न और शोषक होनेसें पीडाके स्थानपर इसके क्वाथसे स्वेदन करना हितकारी हो। मात्रा १० रत्तीकी है।

अफीम.

उक्तंखसफलक्षीरमाफूकमहिफेनकम् ॥
आफूकंशोषणंग्राहिश्लेष्मघ्नंवातपित्तलम् ॥
आक्षेपशमनंनिद्राजननंमदकारिच ॥
स्वेदनंवेदनाघ्नञ्चमूत्रातीसारनुत्परम् ॥
कासश्वासातिसारघ्नंशोणितस्रुतिवारणम् ॥
तथाखसफलोद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥२०॥

अर्थ-खसफलक्षीर, आफूक और अहिफेनक, ए संस्कृत नाम। हिं. अफीम, अमल, आफू, बं. अहिफेन, म. अफू, आफू, दे. कडवी, गु. अफीण, तै. नाल्लामंदु, क. अफेन, फा. अफयून, तिर्याक, अ. लबनुलक्खसखाश, ला. ओप्यस, इं. ओप्यम्, ग्रीकवाले ओपीआन कहतेहैं। यह मालवा, खानदेश, पटना और सिंध इनमें बहुत होय है। यह क्षुपजातिकी वनस्पति है। इसके फलमें चीरा देनेसे जो रस निकलता है उसको अफीम कहतेहैं। चित्रनंबर ११ देखो।

गुण। अहिफेन शोषक, ग्राही, कफनाशक, वातवर्द्धक, पित्तजनक, आक्षेप वातनाशक, निद्राकरता, मादक, स्वेदजनक और वेदनानाशक। प्रयोग। मूत्रातिसार, खांसी, श्वास, अतिसार और रक्तस्रावको निवारण करे। और विशेषकरके जो जो गुण पोस्तके डोडानमें हे वो वो गुण सब इस अफीममें हैं।

चतुर्विधमफेनंस्याज्जारणंमारणंतथा।
धारणंसारणंचैवक्रमाद्वक्ष्येतुलक्षणम् ॥
श्वेतंतुजारणंप्रोक्तंकृष्णवर्णंचमारणम्।
धारणंपीतवर्णंतुकर्बुरंसारणंतथा ॥
जारणंजारयेदन्नंमारणंमृत्युदायकम्।
धारणंचवयस्तंभंमारणंमलसारणम् ॥

अर्थ-अफीम चार प्रकारकी है-जारण, मारण, धारण और सारण। अब क्रमसें इनके लक्षण कहता हूं। सपेद रंगकी अफीम जारण है, कालेरंगकी मारण, पीलेरंगकी धारण और चित्रविचित्र रंगकी अफीम सारण है। तहां जारण अफीम भोजन करे अन्नको जारण करतीहै। मारण मृत्युकरे। धारण अवस्थाका स्तंभकरे और मारण अफीम मल तोड देती अर्थात् दस्तकरावे है। इसकी मात्रा १ मसूर अथवा दो मसूरके बराबर वा पावरत्तीकी है। इसके वेगमारनेवाले तवाशीर और घी है। प्रतिनिधि आसवच है।

खसखस.

उच्यंतेखसबीजानितेखाखसतिलाअपि ॥
खसबीजानिबल्यानिवृष्यानिसुगुरूणिच ॥
शमयंतिकफंतानिजनयंतिसमीरणम् ॥२१॥

अर्थ-खसबीज और खाखसतिल, ए संस्कृत नाम। हिं. खसखस, खसखसदाने, बं. पोस्तदाना, म. पोस्तबीज, फा. तुख्मेकोकनार, अ. हबुल्कोकनार, इं. पोपीसीड्स्, ला. पापावरसोम्निफरम्। यह पोस्तके बीज हैं। इसके तेलको मुसलमानी हकीम पौष्टिक पाकोमें डालते है।

गुण। खसखस बलकारक, शुक्रल, अत्यंतगुरु, कफघ्न और वातनाशक है।

सैंधव (सैंधानोन).

सैंधवोऽस्त्रीशितशिवंमणिमंथंचसिंधुजम् ॥
सैंधवंलवणंस्वादुदीपनंपाचनंलघु ॥ २२ ॥

अर्थ-सैंधव, शितशिव, मणिमंथ और सिंधुज ए संस्कृत नाम। हिं. सैंधानिमक, निमक, ला.

शोरी, म. सैंधव, गु. सींधालूण, तै. सिंदुउप्पु, फा. नमकसंग (लाहोरी निमक), अ. नमकसंग, इं. क्लोराइड ऑफ् सोडियम्। यह सिंधदेशके पहाडोंमेंसें निकलताहै ।

गुण । **सैंधानिमक** मीठा, अग्निदीपक, पाचन, लघु, स्निग्ध, रोचक, शीतल, बलकारक, सूक्ष्म, नेत्रोंको हितकारी और त्रिदोषनाशक है ।

शाकंभरी (सांभर).

स्निग्धंरुच्यंहिमंवृष्यंसूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत् ॥
शाकंभरीयंकथितंगुडाख्यंरौमकंतथा ॥२३॥
गुडाख्यंलघुवातघ्नमत्युष्णंभेदिपित्तलम् ॥
तीक्ष्णोष्णंचापिसूक्ष्मंचाभिष्यंदिकटुपाकिच

अर्थ–शाकंभरीय, रौमक और गुडाख्य–अर्थात् जितने गुडके नाम है सब साम्हर निमकके नाम है–ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** साम्हर निमक कहतेहैं । यह राजपूतानेके सांभर सरसें प्रगट होताहै ।

गुण । **सांभर** निमक, हलका, वातनाशक और अत्यंत गरम, भेदक, पित्तजनक, तीक्ष्णोष्ण, सूक्ष्म और अभिष्यंदी । यह पचनेके समय चरपरा है ।

समुद्र (पांगा).

सामुद्रंयत्तुलवणमक्षीवंवशिरंचतत् ॥
सामुद्रजंसागरजंलवणोदधिसंभवम् ॥२५॥
सामुद्रंमधुरंपाकेसतिक्तंमधुरंगुरु ॥
नात्युष्णंदीपनंभेदिसक्षारमविदाहिच ॥
श्लेष्मलंवातनुत्तिक्तमरूक्षंनातिशीतलम् ॥२६॥

अर्थ–सामुद्रलवणके अन्य नाम अक्षीव, वशिर, सामुद्रज, सागरज और लवणोदधिसंभव । **हिं.** पांगा, समुद्रनिमक, **बं.** करकचलवण, **म.** मीठ, **गु.** दरियाइलूण, मीठू, **तै.** उप्पु. **क.** वडागर लवण, **इं.** सॉल्ट, **अ.** मिलहशोरी कहतेहैं ।

गुण । समुद्रलवण पाकमें मधुर अथवा किंचित् कडवाई लिये, मधुर, भारी, दीपन, भेदी, अविदाही, कफवर्द्धक, वायुनाशक, तिक्त, अरूक्ष और अत्यंत शीतोष्ण नहीं है । यह समुद्रके जलसें बनाया जाताहै ।

विड (विरिआ, सोंचर).

विडंपाक्यंचकतकंतथाद्राविडमासुरम् ॥
विडंसक्षारमूर्ध्वाधःकफवातानुलोमनम् ॥२७॥
दीपनंलघुतीक्ष्णोष्णंरूक्षंरुच्यंव्यवायिच ॥
विबंधानाहविष्टंभहृद्रुग्गौरवशूलनुत् ॥२८॥

अर्थ–विड, पाक, कतक, द्राविड और आसुर, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** विरिआ संचरनिमक, कटीलानोन, **बं.** विड्लवण, **गु.** बीडलूण ।

गुण । **विड** निमक, क्षारगुणयुक्त, दीपन, हलका, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, रोचक और व्यवाई । यह कफ और वादीके अनुलोमन अर्थात् कफको ऊपरकी तरफ और वातको नीचेकी तरफ निकाले है । एवं विबंध, अफरा, विष्टंभ हरण करे और पीडा तथा देहके भारीपनेको दूर करे ।

सौवर्चल (चोहारकोडा).

सौवर्चलंस्याद्रुचकमक्षंपाक्यंचतन्मतम् ॥
रुचकंरोचनंभेदिदीपनंपाचनंपरम् ॥ २९ ॥
सुस्नेहंवातनुन्नातिपित्तलंविशदंलघु ॥
उद्गारशुद्धिदंसूक्ष्मंविबंधानाहशूलजित् ॥३०॥

अर्थ–सौवर्चल, रुचक, अक्ष और पाक्य ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** चोहारकोडा, कालानिमक, **बं.** सचललवण, **म.** पादेलोण, **फा.** निमकस्याह, **अ.** मलाअसवद, **तै.** नालुउप्पु, **इं.** ब्लॅकसॉल्ट, **ला.** अॅन् आक्वा सोडिअम् क्लोराइड् ।

गुण । **कालानिमक** रोचक भेदक, अग्निदीप्तिकारक, अत्यंत पाचक, स्नेहयुक्त, वायुनाशक, विशद, हलका, सूक्ष्म, डकारकी शुद्धि करता, पित्तको अधिक नहीं बढावे, एवं विबंध, अफरा और शूलरोग नष्ट करे । यह हिमालयपर्वतके सक्षार जलसें लवण बनाया जाताहै ।

रेहगवा (रेहकानिमक).

औद्भिदंपांशुलवणंयज्जातंभूमितःस्वयम् ॥
क्षारंगुरुकटुस्निग्धंशीतलंवातनाशनम् ॥३१॥

अर्थ–औद्भिद, पांशुलवण वो है जो खारीजमीनमेंसें स्वयं प्रगट होताहै, इसे **रेहगवानोन** बोलतेहैं । यह क्षारगुणयुक्त, भारी, कटु, स्निग्ध, शीतल और वायुनाशक है ।

कचिया लवण.

नीलकाचोद्भवंकाचतिलकंकाचसंभवम् ।
काचसौवर्चलंकृष्णालवणंपाकजंस्मृतम् ॥

काचोत्थंहृग्यगंधंचतत्काललवणंतथा ।
कुरुविंदंकाचमलंकृत्रिमंचचतुर्दश ॥
काचादिलवणंरुच्यंईषत्क्षारंचपित्तलम् ।
दाहकंकफवातघ्नंदीपनंगुल्मशूलहृत् ॥

अर्थ–नील, काचोद्भव, काचतिलक, काचसंभव, काच, सौवर्चल, कृष्णलवण, पाकज, काचोत्थ, हृग्गंध, तत्काललवण, कुरुविंद, काचमल और कृत्रिम, ए चौदह नाम संस्कृत हे । हिं. काचिया-निमक, म. वांगडखार कहते हैं ।

गुण । रुचकारी, किंचित् खारा, पित्तकर्त्ता, दाहकारी, कफवातनाशक, दीपन, गोला और शूलको नाश करे ।

द्रोणीलवण.

द्रोणेयंवार्द्धेयंद्रौणीजंवारिजंचवार्द्धिभवम् ।
द्रोणीलवणंद्रोणंत्रिकटुलवणंचवसुसंज्ञम् ॥
द्रोणेयंलवणंपाकेनात्युष्णमविदाहिच ।
भेदनंस्निग्धमीषच्चशूलघ्नंचाल्पपित्तलम् ॥

अर्थ–द्रोणेय, वार्द्धेय, द्रौणीज, वारिज, वार्द्धिभव, द्रोणीलवण, द्रौण और त्रिकटुलवण ए आठ सं. नाम है । हिं. वरतनका निमक कहाता है, यह खार लगनेसे मिट्टीके वरतनोंमें प्रगट होताहै ।

गुण । द्रोणीलवण पाकमें अत्यंत गरम नहीहै, न बहुत दाह करे, भेदन कुछ २ स्निग्ध, शूलनाशक और अल्पपित्त करताहै ।

औषरलवण.

औषरकंसार्वगुणंसार्वसंसर्वलवणमूषरजम् ।
सांभारंबहुलवणंक्षारंचमिश्रकंनवधा ॥
औषरंतुपटुक्षारंतिक्तंवातकफापहम् ।
विदाहिपित्तकृद्ग्राहीमूत्रसंशोषकारिच ॥

अर्थ–औषरक, सार्वगुण, सार्वस, सर्वलवण, ऊषरज, सांभार, बहुलवण, क्षार और मिश्रक ए नौ नाम संस्कृत । हिं. खारी निमक, म. बोदकहन, फा. बोरेअर्मनी, इं. कार्बोनेट ऑफ् सोडा कहते है ।

गुण । ऊपर जमीनका निमक खारी कडवा, वातकफनाशक, दाहकर्त्ता, पित्तकारी, ग्राही और मूत्रका सुखानेवाला है ।

चनाखार.

चणकाम्लकमत्युष्णंदीपनंदंतहर्षणम् ॥
लवणानुरसंरुच्यंशूलाजीर्णविबंधनुत् ॥ ३४॥

अर्थ–चनाखारको संस्कृतमें चणकाम्ल और चणकलवण कहतेहैं । हिं. चनाखार, चनकळोनी, म. हरभरेची आंब, गु. चणानो खार कहतेहैं । इसके बनानेकी विधि अन्यत्र लिखेंगे ।

गुण । यह अत्यंत गरम, अग्निदीपक और दांतोंको हर्षकर्त्ता है । इसका स्वाद खट्टा और निमकीन है । यह शूल, अजीर्ण और विबंधको नष्ट करेहै ।

जवाखार, सज्जी, सोरा.

पाक्यक्षारोयवक्षारोयावशूकोयवाग्रजः ॥
स्वर्जिकापिस्मृतःक्षारःकापोतःसुखवर्चकः
कथितःस्वर्जिकाभेदोविशेषज्ञैःसुवर्चिकः ॥
यवक्षारोलघुःस्निग्धःसुसूक्ष्मोवह्निदीपनः
निहंतिशूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥
पांड्वर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् ३५
स्वर्जिकाल्पगुणातस्माद्विशेषाद्गुल्मशूलहृत्॥
सुवर्चिकास्वर्जिकावद्बोद्धव्यागुणतोजनैः ३६

अर्थ–पाक्यक्षार, यवक्षार, यावशूक और यवाग्रज, ए संस्कृत नाम । हिं. जवाखार, बं. यवक्षार, म. जवाखार, अ. नुतरून्, इं. कार्बोनेट ऑफ् पोट्याश । स[1]ज्जीमी एकप्रकारका खार है । इसको संस्कृतमें सर्जिका, कापोत और सुखवर्चक कहते है । और एक प्रकारका क्षार होताहै उसको सुवर्चिक अर्थात् सोरा, गु. सुरोखार, तै. चिटलु मस्ममु, इं. नाइटर, सॉल्टपिटर, अ. अबकेर कहतेहैं । यह भी सज्जी-काही भेद है ।

गुण । जवाखार हलका, स्निग्ध, अत्यंत सूक्ष्म, अग्निदीपक । यह शूल, वादी, आम, कफ, श्वास, गलेका रोग, पांडुरोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, अफरा, प्लीहा और हृदयरोग इनको दूर करे । सज्जीके गुण । सज्जी जवाखारकी अपेक्षा अल्प गुणवाली

१ सज्जीको म. साजीक्षार, गु. साजीखार, फा. संजार कलिया, अ. कलीवसब्बुल असफर, इं. कार्बोनेट् ऑफ् सोडा, ला. केरोनसीलम् फिदिंब.

है। परंतु गुल्म और शूलरोगको अधिक गुण करेहै। और क्षीरामें सज्जीके समान गुण है। (परंतु मूत्रकृच्छ्रको दूर करेहै। और जलको शीतल करे.)

नरसार (नौसद्दर).

औष्ट्रं वा माहिषंवाथगोपुरीषंभस्मतांगतम्।
क्षारपाकविधानेन नृसारः सिद्धमुच्यते॥

अर्थ-ऊंट, भैंस अथवा गौके गोवरकी भस्मको पाक विधिके साथ पचानेसें नौसद्दर प्रगट होताहै। परंतु एक नौसद्दर मनुष्य और सूकरकी विष्ठाद्वारा पंजाबमेंसें निकलता है (यहभी एकप्रकारका तीव्र-क्षार है.) म. नवसागर, गु. नवसार, बं. निशादल, अ. नवशादर खुरासानी, ला. आमोनियम् क्लोरीडम्।

सुहागा.

सौभाग्यंटंकणंक्षारोधातुद्रावकमुच्यते।
टंकणंवह्निकृद्रूक्षंकफघ्नंवातपित्तकृत्॥ ३७॥
कासघ्नोबलकृत्प्रोक्तःस्त्रीपुष्पजननोभृशम्।
व्रणघ्नोरेचकश्चैवमूढगर्भनिवर्तकः॥ ३८॥

अर्थ-सौभाग्य, टंकण, क्षार, धातुद्रावक ए संस्कृत नाम। हिं. सुहागा, बं. सोहागा, म. टांकणखार, गु. टंकण पाटियो, टंकण कुलियो, तै. एलीगार, फा. तींगार, अ. बुरग, इं. बोराक्ष।

गुण। सुहागा अग्निकर्ता, रूक्ष, कफको हरण-करे, तथा वातपित्तको करेहै। तथा खांसीको नष्टकरे बल बढावे, स्त्रियोंकें पुष्पको प्रगट करे, व्रणनाशक, रेचक, मूढगर्भको निकालनेवाला है।

क्षारद्वय और क्षारत्रय.

स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारद्वयमुदाहृतम्॥
टंकणेनयुतंतत्तुक्षारत्रयमुदीरितम्॥
मिलितंतुकृगुणकृद्विशेषाद्गुल्महृत्परम्॥ ३९

अर्थ-सज्जीखार, और जवाखार ए क्षारद्वय कहातेहैं। इनमें सुहागा मिलनेसें क्षारत्रय कहातेहैं। ए मिलेहुएभी अपने २ गुणोंको करतेहैं और विशेष-करके गोलेके रोगको हरणकर्ता जानने।

क्षाराष्टक.

पलाशवज्रिशिखरिचिंचार्कतिलनालजाः॥
यवजःस्वर्जिकाचेतिक्षाराष्टकमुदाहृतम्॥
क्षाराएतेऽग्निनातुल्यागुल्मशूलहराभृशम्॥

अर्थ-पलास (ढाक), थूहर, ओंगा (चिरचिरा), इमली, आक, तिलनाल, इनका खार और जवा-खार, सज्जीखार, ए आठ खारोंके मिलनेसें क्षारा-ष्टक कहाता हैं। ए आठो क्षार अग्निके तुल्य दाहक और गोला, शूलरोगको हरण करतेहैं।

चुक्र (चूका).

चुक्रंसहस्रवेधिस्याद्रसाम्लंशुक्तमित्यपि॥
चुक्रमत्यम्लमुष्णंचदीपनंपाचनंपरम्॥४०॥
शूलगुल्मविबंधामवातश्लेष्महरंपरम्॥
वमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यहृत्॥

अर्थ-चुक्र, सहस्रवेधी, रसाम्ल, शुक्त, ए संस्कृत नाम हैं। हिं. चूका कहते हैं।

गुण। चूका अत्यंत खट्टा गरम, अग्निदीपक, पाचक। प्रयोग। शूल, गोला, विबंध, आमवात और कफको हरण करे तथा दस्तावर है। वमन, तृषा, मुखकी विरसता, पीडा और मंदाग्निको दूर करे है।

इति श्रीमाथुरकृष्णलालपाठकतनुजदत्त-रामनिर्मितअभिनवनिघंटौ माथुरीभाषाटी-कायां हरीतक्यादिवर्गः प्रथमः॥

कर्पूरादिवर्गः

कर्पूर. (कपूर).

पुंसिक्लीबेचकर्पूरःसिताभ्रोहिमवालुकः॥
घनसारश्चंद्रसंज्ञोहिमनामापिसंस्मृतः॥ १॥
कर्पूरःशीतलोवृष्यश्चक्षुष्योलेखनोलघुः॥
सुरभिर्मधुरस्तिक्तःकफपित्तविषापहः॥ २॥
दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गंध्यनाशनः॥
आक्षेपशमनोनिद्राजननोघर्मवर्द्धनः॥
वेदनाहारकःकामशांतिकृच्छुक्रमेहहृत्॥
कर्पूरोद्विविधःप्रोक्तःपक्वापक्वप्रभेदतः॥
पक्वात्स्वपूरतःप्राहुरपक्वंगुणवत्तरम्॥ ३॥

अर्थ-कर्पूर, सिताभ्र, हिमवालुक, घनसार तथा

जितने चंद्रमाके और हिमके संस्कृत नाम हैं वे सब कर्पूरके जानने। हिं. कपूर, बं. कर्पूर, म. कापूर, गु. बरास कपुर, तै. कर्पूरामूं, फा. काफूर, इं. कॅम्फर Camphor कहतेहैं।

यह कपूर तीन प्रकारका है-भीमसेनी, पत्री और चीनिआ। ए तीनों आजतक बराबर व्यवहारमें आतीहै। यह इब्नखुर्दा, चीन, हिंदुस्थान, इनमें प्रगट होताहै। हिंदुस्थानमें एक केलेकी जातिसें प्रगट होताहै। उसको कपूरकेला कहतेहैं। कानसूरजाहरको बरासभी कहतेहैं। उसमें प्रगट होनेसें यह बरासकर्पूर कहातीहै। बरास वा (भीमसेनी) कपूरका बडा भारी दरखत होताहै। एक वृक्षमेंसें अनुमान ६ सेर सवाछःसेर निकलेहै और उसीजगे १४० रुपे सेर विकजातीहै। दूरसें आतीहै और खर्चा अधिक पडताहै। इसीसें इसकी अधिक प्रशंसा है।

गुण। **कपूर** (बरास वा भीमसेनी) शीतल, बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, हलकी, सुगंधित, मधुर, दुर्गंधनाशक, कडवी, आक्षेपवातनाशक, निद्राको प्रगटकर्त्ता, पसीने बढानेवाली, वेदनानाशक, कामवेगको शांतिकर्त्ता। **प्रयोग।** इसके सेवन करनेसें पित्त, कफ, विषदोष, दाह, तृषा, मुखकी विरसता, मेदरोग और शुक्रप्रमेह, इनको दूरकरे। इस कर्पूरकेभी दो भेद हैं। एक **पक्क** (पका हुआ) और दूसरा **अपक्क** (कच्चा)। इन दोनोंमें **अपक्ककर्पूर** विशेष गुणकारी है। इसकी **मात्रा** ४ रत्तीकी है। इसके **अभावमें** सुगंधित मोथा लेना चाहिये। *

कर्पूरकी परीक्षा.

स्वच्छंभृंगारपत्रंलघुतरविशदंतोलनेतिक्कंचेत् स्वादेशैत्यंसुहृद्यंबहलपरिमलामोदसौरभ्यदायि। निःस्नेहंदार्ढ्यपत्रंशुभतरमितिचेद्राजयोग्यप्रशस्तं कर्पूरंचान्यथाचेद्बहुतरमलंस्फोटदायिप्रयाति॥

अर्थ-भंगरेके पत्तोंके समान छोटे २ टुकडे, अत्यंत हलके और तोलमें अधिक चढे, खानेसें कडवा लगे, शीतल, हृदयको प्रिय, जो अत्यंत सुगंधिकी लपट देनेवाला, चिकनाईरहित, कठोर पत्रका ऐसा शुभ **कर्पूर** राजाओंके योग्य है। इससें विपरीत प्राय फोडे और घावको प्रगट करनेके वास्ते कहाहै।

शिरोमध्यंतलंचेतिकर्पूरस्त्रिविधःस्मृतः। शिरस्तंभाग्रसंजातंमध्यंपर्णतलेतलम्॥

अर्थ-वृक्षके शिर, मध्य और तल इन तीन भागोंके होनेसें **कपूर** तीन प्रकारका है। जो वृक्षके ऊपरके भागमें हो वह **शिर** है। मध्यमें **मध्य** और पत्तेके नीचे जो होवे वो **तलसंज्ञक** कपूर जानना। स्तंभके गर्भमें स्थित जो कपूर वो **श्रेष्ठ** है। और **स्तंभके** बाहर होनेवाली **मध्यम** जाननी। जो स्वच्छ और कुछ २ हलदीके समान पिरास लियेहो, वो **मध्य** है और जो करडी, सपेद और रुखाई लियेहो वो **बाह्यज** (अधम) जाननी।

एक **पत्रीकपूर** होतीहै। यह एक छोटे क्षुपजातिके वृक्षके पत्तोंसें निकलतीहै। यह वृक्ष **चीन**-देशमें होताहै इस वृक्षसें **ब्रह्माके** मुल्कके मनुष्य औटायके कपूर निकालतेहैं। यह भीमसेनी कपूरकी अपेक्षा भारी है। परंतु हवामें रखनेसें बहुत जल्दी उडजाताहै। और इसमें दोना मरुएके वृक्षके समान गंध आतीहै। और चीनाईलोग इसको **नागाई** कहतेहैं।

चीनिआकपूर.

चीनकश्चीनकर्पूरःकृत्रिमोधवलःपटुः॥

---

* **मखजनउलअदवियाका कर्त्ता**—कपूरके वर्णन करनेमें ऐसा लिखताहै कि, एकसमय हुगलीमें मकान बननेको बडे २ लकडोके गठ्ठे आएथे उनके चीरनेमें एकके भीतर कपूर निकलाथा।

देशीवैद्य—भीमसेनीकपूरको साधारण कपूरके बनिस्बत बहुतजल्दी कामोत्तेजक मानतेहैं।

मुसलमीनग्रंथकर्त्ता—इसे शीतल और भेजे तथा हृदयको जागृतकर्त्ता मानतेहैं; तथा अनेकप्रकारके रोगोंमें मर्दनेकी प्रशंसा करतेहैं। परंतु नेत्ररोगमें लेनेको वर्जित करतेहैं।

मेघसारस्तुषारश्चद्वीपकर्पूरजःस्मृतः ॥
चीनाकसंज्ञःकर्पूरःकफक्षयकरःस्मृतः ॥४
कुष्ठकंडूवमिहरस्तथातिक्तरसश्चसः ॥

अर्थ—चीनक, चीनकर्पूर, कृत्रिम, धवल, पटु, मेघसार, तुषार, द्वीपकर्पूरज ए संस्कृतनाम। हिं. चीनिआकपूर कहतेहैं। यह बरास और पत्रीकपूर दोनोंसें हलकी है और बजारमें बहुत सस्ती मिलतीहै।

इसको पक्क (पकी) कपूर कहतेहै, यह भी एक-वृक्षसें निकलती है। इसीसें देवमंदिरोंमें आरती करतेहैं। और बहुतसें हिंदुस्थानके पामरजन इसको उडायकर स्वच्छकर लेतेहै, फिर ईसीको भीमसेनीकपूरके नामसे बेचतेहै। भाइहो, इन दुष्टोंके जालसें बचो मथुरा, काशी, दिल्ली, आगरा, लखनौ, इनमें इसको ठगलोग बेचकर भोरेभोरे मनुष्योंको ठगतेहै। होशयार! होशयार!!

चिनिआ कपूरके गुण। यह कफ, कोढ, खुजली और वमनको हरण करता है और इसका आयका कडवा है।

कस्तूरी.

मृगनाभिर्मृगमदःकथितस्तुसहस्रभित् ॥५॥
कस्तूरिकाचकस्तूरीवेधमुख्याचसास्मृता ॥
कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानैपालीमध्यमाभवेत् ॥६॥
कामरूपोद्भवाकृष्णानैपालीनीलवर्णयुक् ॥
काश्मीरदेशसंभूताकस्तूरीह्यधमामता ॥७॥
कामरूपोद्भवाकृष्णानैपालीनीलवर्णयुक् ॥
काश्मीरीकपिलच्छायाकस्तूरीत्रिविधास्मृता

अर्थ-मृगनाभि, मृगमद, सहस्रभित्, कस्तूरिका, कस्तूरी, वेधमुख्या इतने संस्कृत नाम है। हिं. कस्तूरी, बं. मृगनाभि, म. कस्तूरी, तै. कास्तूरी, फा. मुश्क, अ. मिश्क, इं. मस्क Musk, ला. मोस्कसस्।

कस्तूरी तीन प्रकारकी है। एक तो कामरू देशमें होती है, वह उत्तम है, नैपालकी कस्तूरी मध्यम है और कश्मीर देशकी कस्तूरी अधम होती है। तहां कामरूदेशकी कस्तूरी काले रंगकी, नैपालकी नीले रंगकी और कश्मीरकी कस्तूरी कपिल (भुरे) रंगकी होतीहै।

१ साधारण कपूरमें चनाखार, इलायची और मीया आदि डालके इसका फूल उडाय लेतेहै।

कस्तूरीके भेद.

साप्येकाखरिकाततश्चतिलकाश्चैयाकुलित्था-
परा पिंडान्यापिचनायिकेतिचपरायापंच-
भेदाभिधा।

अर्थ-खरिका, तिलका, कुलित्था, पिंडा और नायिका, इसप्रकार कस्तूरी पांच प्रकारकी है।

चूर्णाकृतिस्तुखरिकातिलकातिलाभा कौल-
त्थबीजसदृशीचकुलत्थकाच। स्थूलाततः-
किंयदियंकिलपिण्डिकाख्या तस्याश्चकिं-
चिदधिकायदिनायकासा ॥

अर्थ-चूर्णके समान खरिका कस्तूरी होतीहै। तिलकवृक्षके समान तिलका, कुल्थीके बीजके समान कुलत्था, इससे भी कुछ मोटी पिंडिका और पिंडिकासेंभी अधिक मोटी नायका कस्तूरी जाननी।

कस्तूरीकी परीक्षा.

स्वादेतिक्तापिंजराकेतकीनाम्।
गंधंधत्तेलाघवंतोलनेच ॥
याप्सुन्यस्तानैववैवर्ण्यमीयात्।
कस्तूरीसाराजभोग्याप्रशस्ता ॥

अर्थ-जो खानेसे स्वादमें कडवी, रंगमें पीली, केतकीपुष्पके सदृश गंध आवे, तोलमें हलकी हो और जलमें डारनेसे उसका रंग न पलटे, वो कस्तूरी उत्तम राजाओंके भोगने योग्य है।

यागंधंकेतकीनामपहरतिमदंसिंधुराणांच-
वर्णे स्वादेतिक्ताकटुर्वालघुरथतुलितामर्दि-
ताचिक्कणास्यात्। दाहंयानैतिवह्नौशिमि-
शिमितिचिरंचर्मगंधाहुताशे साकस्तूरीप्र-
शस्तावरमृगतनुजाराजतेराजभोग्या ॥

अर्थ-जो कस्तूरी केतकीके फूलोंकीसी गंधको देवे, और वर्ण (रंग) में हाथियोंके मदको

भुरावे, अर्थात् हाथीके मदके समान रंगवाली जिसका जायका कडवा, या चरपरा हो, तोलमें हलकी अर्थात् बहुत चढें, मसलनेसें चिकनी होवे, अग्निमें डालनेसें जले नहीं, किंतु बहुत देरतक झिमिझिम शब्द करे, और चमडे जलानेकीसी वास आवे, वह मृगनाभिकी कस्तूरी राजभोग्य उत्तम कही है ।

दुष्टकस्तूरीके लक्षण.

**याक्लिग्धाधूमगन्धावहतिविनिहितापीतता-
यावसोन्तर्निःशेषंयानिविष्टाभवतिहुतवहेभ-
स्मसादेवसद्यः।याचन्यस्तातुलयांकलयति-
गुरुतांमर्दितारूक्षतांच ज्ञेयाकस्तूरिकेयंखलु-
कृतमतिभिःकृत्रिमानैवसेव्या ॥**

अर्थ-जो देखनेमें चिकनी, जिसके धूंएमें गंध आवे, कपडेमें बांधनेसें कपडा पीला हो जावे, और अग्निमें डालनेसें तत्काल जलकर सब भस्म (खाक) हो जावे, और तोलमें भारी होवे अर्थात् थोडी चढे, और मीडनेसें रूखी हो जावे ऐसी कस्तूरी बुद्धिमान् कृत्रिम अर्थात् बनाई हुई जाने । इसको कदाचित् सेवन नहीं करनी । परंतु यदि देखतेहैं तो प्राय ऐसीही कस्तूरी सर्वत्र बिक रहीहै । इस निघंटके पढनेवालोंसें प्रार्थना है कि आपलोग कस्तूरी स्वयं लेवे अथवा औरको दिलावें तो इस परीक्षाके अनुसार लेवे ।

**करतलजलमध्येस्थापनीयामहद्भिः
पुनरपितदवस्थंचिंतनीयंमुहूर्त्तम् ।
यदिभवतिचरक्तंतज्जलंपीतवर्णं
नभवतिमृगनाभिःकृत्रिमोयंविकारः ॥**

अर्थ-कस्तूरीको हथेलीमें रखजल डाले फिर देखे कि यदि वह जल पीले या लाल रंगका होगयाहै तो समझना कि यह कस्तूरी नहीं है, बनावटी कस्तूरी है ।

**कस्तूरिकाकटुस्तिक्ताक्षारोष्णाशुक्रलागुरुः
कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गंध्यशोषहृत् ८**

गुण । कस्तूरीका रस चरपरा, कडवा और कुछ खारी है । उष्ण वीर्य, वीर्यको पुष्ट करे, भारी कफ, वात, विष, वमन, सरदी, दुर्गंध और शोष रोगकों हरण करे ।

आक्षेपवातको हरण करे, पसीने लावे, काम दीपन करे, हिचकीको नष्ट करे, मूत्र लावे, बल करे और कुछ २ मद करता है ।

**श्रीखंडंचतवाशीरंदर्पघ्नमुभयंस्मृतम् ॥
प्रतिनिध्यंवरंख्यातंमात्रास्याद्रक्तिकाद्वयम् ।**

अर्थ-कस्तूरीके दर्पको नाश करनेवाले चंदन और तवाखीर है । और यदि कस्तूरी न मिले तो इसकी प्रतिनिधिमें अंबर डालना चाहिये और कस्तूरीकी मात्रा २ रत्तीकी है ।

मुष्कदाना.

**लताकस्तूरिकातिक्तास्वाद्वीवृष्याहिमालघुः
चक्षुष्याच्छेदिनीश्लेष्मतृष्णाबस्त्यास्यरोग-
हृत् ॥ ९ ॥**

अर्थ-लताकस्तूरी (मुश्कदाना-वेदमुष्क) कडवी, मिष्ठ, वीर्य पुष्टकर्त्ता, शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी और छेदक है । प्रयोग । यह कफ, तृषा, बस्तिरोग और मुखरोग, इनको निवारण करे । इसकी मात्रा ७ मासेकी है । प्रयोगमें इसके बीज लिये जातेहैं ।

गोरासाखमेदबांडी.

**गंधमार्जारवीर्यंतुवीर्यकृत्कफवातहृत् ॥
कंडूकुष्ठहरंनेत्र्यंसुगन्धंस्वेदगन्धनुत् ॥ १० ॥**

अर्थ-गंधमार्जारवीर्य (जवादिया कस्तूरी) वीर्यकर्ता, कफवातहरता, खुजली, कोढ, पसीने और दुर्गंध इनको हरण करे । तथा नेत्रोंको अत्यंत हितकारी है ।

चंदन.

**श्रीखंडंचंदनंनस्त्रीभद्रश्रीस्तैलपर्णिकः ॥
गंधसारोमलयजस्तथाचंद्रद्युतिश्चसः ॥११॥
स्वादेतिक्तंकषेपीतंछेदेरक्तंतनौसितम् ॥
ग्रंथिकोटरसंयुक्तंचंदनंश्रेष्ठमुच्यते ॥ १२ ॥**

१ कस्तूरीकोभी बनाकर बेचते हैं, और बांटतेभीहैं; परंतु लोगभी जगहो आपक्यो व्यर्थ विश्वासमें आनकर इस रोगकारिणी प्राणनाशिनीको लेतोहों जल्दी त्यागी २ पटको फैंको ।

चंदनंशीतलंरूक्षंतिक्तमाह्लादनंलघु ॥
श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत् ॥

अर्थ–श्रीखंड, चंदन, भद्रश्री, तैलपर्णिक, गंधसार, मलयज और चंद्रद्युति, ए संस्कृत सपेद चंदनके नाम हैं । गु. सुक्खड कहते हैं, का. वेदपंचगंध, प्राय हिंदुस्थानकी सर्व भाषाओंमें चंदन नामसें प्रसिद्ध है । फा. सफेद संदल, अ. संदले अबियद, इं. 'सांडल वुड्, ला. संटेलं एल्बं Santalum album कहते हैं ।

यह शाखीजातका वृक्ष है और हिंदुस्थानमें बहुत होताहै । *

उत्तम चंदन । जो स्वादमें कडवा, घिसनेमें पीला, तोडनेमें लाल और रूपमें सपेद, तथा गांठ और खोंतर करके युक्त ऐसा चंदन उत्तम कहाहै ।

गुण । चंदन शीतल, रूक्ष, कडवा, आनंददायक, हलका है । **प्रयोग** । श्रम, शोष, विष, कफ, प्यास, रक्तपित्त और दाह इनको दूर करे । चंदनकी लकडीकी ४ मासेकी मात्रा है । प्रतिनिधि इसकी कपूर है ।

उत्तम चंदनके लक्षण.

श्रेष्ठंकोटरकर्परोपकलितंसुग्रंथिसद्गौरवम्
छेदेरक्तमयंतथाचविमलंपीतंचयद्घर्षणे
स्वादेतिक्तकटुःसुगंधबहुलंशीतंयदल्पंगुणे
क्षीणंचार्धगुणान्वितंतुकथितंतच्चन्दनंमध्यमं

अर्थ–जिसमें खोतरहो और उसके ऊपर वक्कल चढाहुआ गांठदार भारीहो, तोडनेमें लाल और उज्ज्वल, घिसनेमें पिलाई लिएहो, खानेमें कडवा और चरपरा होवे, अत्यंत सुगंधयुक्त और शीतल ऐसा चंदन उत्तम होताहै । और जो इन गुणोंकरके रहित है तथा क्षीण है वो अर्ध गुणयुक्त मध्यम चंदन जानना ।

चंदनंद्विविधंप्रोक्तंवेट्टसुक्काडिसंज्ञकम् ।
वेट्टंतुसार्द्रंविच्छेदंस्वयंशुष्कंतुसुक्काडि ॥

अर्थ–चंदन दोप्रकारका है–एक वेट्ट दूसरा सुक्काडि । इनमें जो गीला और छिद्ररहित होवे वो वेट्टसंज्ञक, और स्वयंशुष्क (सूखे) को सुक्काडि, कहते हैं ।

मलयाद्रिसमीपस्थाःपर्वतावेट्टसंज्ञिकाः ।
तज्जातंचंदनंयत्तुवेट्टवाच्यंकचिन्मते ॥

अर्थ–मलयाचल पर्वतके समीप जो पर्वत हैं उनकी वेट्ट संज्ञा है । उन वेट्टसंज्ञक पर्वतोंमें चंदन होताहै इसीसे किसीके मतसें वो वेट्ट संज्ञक कहाता है ।

वेट्टचंदनके गुण.

वेट्टचंदनमतीवशीतलं दाहपित्तशमनं
ज्वरापहम् । छर्दिमोहतृषिकुष्ठतैमि-
रोत्कासरक्तशमनंचतिक्तकम् ॥

अर्थ–वेट्ट चंदन अत्यंत शीतल, दाह, पित्त, ज्वर, वमन, मोह, तृषा, कोढ, तिमिररोग, खांसी और रुधिरविकारको दूर करे और खानेमें कडवा है ।

सुक्काडि चंदनका गुण.

सुक्काडिश्चंदनंतिक्तंकफकृत्पित्तास्रदाहनुत् ।
शैत्यंसुगंधिदंचार्द्रंशुष्कलेपेतदन्यथा

* **दत्तकृत मेटरिया मेडीकामें**—तीनप्रकारकी चंदनकी लकडी वर्णन करीहैं । जैसे श्रीखंड (सफेदचंदन), पीत (पीलाचंदन) और रक्तयानी (लालचंदन)। इनमें लालचंदनकी लकडी ग्राही और पौष्टिक मानेहै । सूजनमें शीतलता करनेको उसीप्रकार मस्तक दूखता होय तो घिसके लगानेकी तारीफ करेहै । बहार लगानेसे यह सफेद चंदनसे अधिक शीतलता करेहैं और भीतर देनेमें उससे न्यून गुण करेहै ।

शकाउल अस्कमका कर्त्ता—लिखताहै कि, यदि पित्तके दस्त होतेहोय तो सफेद चंदनकी लकडी घिसके पिलावे, और दस्तमें रुधिर आता होय तो लालचंदन घिसके मिलाना, और दस्तमें रुधिर आता होय तो लालचंदन घिसके पिलाना और पित्तरुधिर दोनों आते होय तो दोनों चंदन घिसके पिलावे । रुधिरकी वमन आदि रोगोंमें लालचंदनको दूधमें पीसके और जूंओंके रोगमें सहतके साथ पीसकर देनेकी प्रशंसा करेहैं ।

अर्थ-सुखाहि चंदन कडवा, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, दाह इनको दूर करे । शीतल, सुगंधकर्ता, ए गीले चंदनके गुण हैं । और सूखे चंदनके गुण इससे विपरीत जानने ।

पीतचंदन.

कालीयकंतुकालीयंपीताभंहरिचंदनम् ॥
हरिप्रियंकालसारंतथाकालानुसार्यकम् ॥
कालीयकंरक्तगुणंविशेषाद्व्यंगनाशनम् १४॥

अर्थ-कालीयक, कालीय, पीताभ, हरिचंदन, हरिप्रिय, कालसार और कालानुसार्यक, ए संस्कृत नाम हैं । हिं. कलंबक, पीलाचंदन कहते हैं । म. पिंवलाचंदन, फा. संदलअबियज, ला. सेन्टेलम् फ्लेभम् Santalum Flauam

गुण । पीलेचंदनमें लालचंदनके समान सब गुण हैं । विशेषकरके व्यंगको नाश करेहै ।

लालचंदन.

रक्तचंदनमाख्यातंरक्तांगंक्षुद्रचंदनम् ॥
तिलपर्णंरक्तसारंतत्प्रवालफलंस्मृतम्॥१५॥
रक्तंशीतंगुरुस्वादुच्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत् ॥
तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ १६॥

अर्थ-रक्तचंदन, रक्तांग, क्षुद्रचंदन, तिलपर्ण, रक्तसार और प्रवालफल, ए संस्कृत नाम । हिं. लालचंदन, गु. रतांजळी, तै. एरगंध पुवेक, ता. सेनूशांडनम, फा. संदलसुर्ख, अ. संदल अहमर, ला. टीरोकार्पस लिमम, इं. रेड सांडल वुड ।

गुण । लालचंदन शीतल, भारी, स्वादु, कडवा । प्रयोग । वमन, तृषा, रक्तपित्त, ज्वर, व्रण, विष, इनको दूर करे । नेत्रोंको हितकारी, वीर्य पुष्ट करता है ।

वक (पतंग).

पतंगंरक्तसारंचसुरंगंरंजनंतथा ॥
पट्टरंजकमाख्यातंपत्तूरंचकुचंदनम् ॥ १७ ॥
पतंगंमधुरंशीतंपित्तश्लेष्मव्रणास्रनुत् ॥
हरिचंदनवद्वेद्यंविशेषाद्दाहनाशनम् ॥ १८ ॥
चंदनानितुसर्वाणिसदृशानिरसादिभिः ॥
गंधेनतुविशेषोऽस्तिपूर्वंश्रेष्ठतमोगुणैः १९

अर्थ-पतंग, रक्तसार, सुरंग, रंजन, पट्टरंजक, पत्तूर और कुचंदन, ए संस्कृतनाम हैं । हिं. पतंगकी लकडी, भाल्ह, बं. वक, म. पतंगल, फा. अ. बकम्, ला. सीसाळपीनी आसापम्.

गुण । पतंग मधुर, शीतल, पित्त, कफ, व्रण, रुधिरविकार, इनको दूर करे । और सब गुण इसमें पीलेचंदनके समान जानने ।

शवर चंदन.

यो नातिपीतममलंकैरातंशवरचंदनंसुगंधम् ।
वन्यंचगंधकाष्ठंकिरातकांतंचशैलगंधंच ॥
कैरातकंशीतलतिक्तकंचश्लेष्मानिलश्रम-
पित्तहारि । विस्फोटपामादिकनाशनंचतृ-
षापहंतापविमोहनाशनम् ॥

अर्थ-शवर चंदन अत्यंत पीला नहीं होता कुछ २ पीला होताहै, उसके संस्कृतनाम कैरात, शवरचंदन, सुगंध, वन्यचंदन, गंधकाष्ठ, किरातकांत, और शैलगंध ।

गुण । कैरात अर्थात् शवर चंदन शीतल, कडवा, कफ, वात, परिश्रम और पित्तको नाशकरे । प्रयोग । विस्फोटक, खुजली आदि और तृषा, ताप तथा मोहको नष्ट करे । शवरचंदन कोंकण देशमें प्रसिद्ध है ।

बरबर चंदन.

बर्बरोम्लंबर्बरकंश्वेतबर्बरकंतथा ।
शीतंसुगंधिपित्तारिःसुरभिश्चेतिसप्तधा ॥
बर्बरंशीतलंतिक्तंकफमारुतपित्तजित् ।
कुष्ठकंडुव्रणान्हंतिविशेषाद्रक्तदोषजित् ॥

अर्थ-बर्बर, अम्ल, बर्बरक, श्वेतबर्बरक, शीत, सुगंध, पित्तारि और सुरभी ए सात सं. नाम हैं ।

गुण । बर्बर चंदन शीतल, कडवा, कफ, वादी और पित्तको नष्ट करे । प्रयोग । कोढ, कंडू, व्रण इनको और विशेषकरके रुधिरके विकारोंको दूर करे ।

हरिचंदन.

हरिचंदनंसुराहंहरिगंधंचंद्रचंदनंदिव्यम् ।
दिविजंचमहागंधंनंदनजंलोहितंचनवसंज्ञम्

हरिचंदनंतुदिव्यंतिक्तहिमंतदिहदुर्लभंमनु-
जैः । पित्तादोपिविलोपिचंदनवच्छ्रमहरंच
शोषहरम् ॥

अर्थ-हरिचंदन, सुराई, हरिगंध, चंद्रचंदन, दिव्य, शिविज, महागंध, नंदनज और लोहित ए ९ नाम हरिचंदनके हैं। गुण। हरिचंदन दिव्य, कडवा और शीतल है। यह चंदन मनुष्योंको प्राप्त होना दुर्लभ है। यह पित्तकी व्याधिको नष्ट करे, और सपेद चंदनके समान श्रम और शोषको हरण करता है। यहभी कोंकण देशमें प्रसिद्ध है।

चंदनानिसमानानिरसतोवीर्यतस्तथा ।
किंतुपूर्वगंधेनतत्राद्यंगुणवत्तरम् ॥

अर्थ-संपूर्ण चंदन रसोंमें और वीर्यादिमें समान हैं। परंतु पहला चंदन गंधमें सब चंदनोंसें श्रेष्ठ है।

अगर.

अगुरुप्रवरंलोहंराजार्हंयोगजंतथा ॥
वंशिकंकृमिजंचापिकृमिजग्धमनार्यकम् २०
अगुरूष्णंकटुत्वच्यंतिक्तंतीक्ष्णंचपित्तलम् ॥
लघुकर्णाक्षिरोगघ्नंशीतवातकफप्रणुत् ॥२१॥
कृष्णंगुणाधिकंतत्तुलोहवद्वारिमज्जति ॥
अगुरुप्रभवःस्नेहःकृष्णागुरुसमःस्मृतः ॥२२॥

अर्थ-अगुरु, प्रवर, लोह, राजार्ह, योगज, वंशिक, कृमिज, कृमिजग्ध और अनार्यक, ए संस्कृत नाम हैं। हिं. अगर, कालीअगर, अगरसत और सब हिंदुस्तानकी भाषाओंमें इसी नामसें प्रसिद्ध है। अ. फा. कशवेववा, ऊदगरकी कहते हैं। इं. ईगल-वुड, ला. एक्वीलेरिया, एगैलोका.

गुण। अगर गरम, कटु, त्वचाको हितकर, कडवी, तीक्ष्ण, पित्तकर, हलकी। प्रयोग। कान, नेत्रके रोग, सरदी, वादी, कफ इनको नष्ट करे। अगर दो प्रकारकी है-उसमें काली अगर गुणोंमें अधिक गुण करनेवाली है और यह लोहेके समान जलमें डूब जाती है। अगरका तेल कृष्णागरके समान गुण करता है। अगरका दर्पनाशक गुलाब है। मात्रा ३॥ मासेकी है। इसकी प्रतिनिधिमें चंदन, दाल-चिनी, केशर, वालछड और रूमीमस्तगी है।*

पीलीअगर.

अन्योगरुःपीतकश्चलोहवर्णप्रसादनम् ॥
अनार्यकमसारंचकृमिजग्धंचकाष्ठकम् ॥
काष्ठागरुःकटूष्णंचलेपेरूक्षंकफापहम् ॥

अर्थ-दूसरी जो अगर होतीहै, इसका लाल रंग देहके वर्णको स्वच्छ करेहै। पीतक, लोह, वर्णप्रसाद-न, अनार्यक, असार, कृमिजग्ध और काष्ठक ए काष्ठागरुके संस्कृत नामहै।

गुण। काष्ठागर चरपरी, गरम, लेपमें रूक्ष और कफनाशक है।

दाहागरु.

दाहागरुर्दहनागरुर्दाहककाष्ठंचवह्निकाष्ठंच ।
धूपागरुस्तैलागरुपुरंचपुरमथनवल्लभंचैव ॥
दाहागरुःकटुकोष्णंकेशानांवर्द्धनंचवर्णंच ।
अपनयतिकेशदोषानातनुतेसंततंचसौगंध्यं ।

अर्थ-दाहागरु, दहनागरु, दाहककाष्ठ, वह्निकाष्ठ, धूपागरु, तैलागरु, पुर और पुरमथनवल्लभ, ए आठ नाम संस्कृत, दाहागरके हैं।

गुण। दाहागर चरपरी, गरम, बालोंको बढानेवाली, देहके वर्णको उजला करे, बालोंके दोषोंको दूर करे और देहको सुगंधित करेहै। यह गुर्जरदेशमें प्रसिद्ध है।

मंगल्यागरु.

मंगल्यामल्लिकागंधंमंगलागरुवाचका ।
मंगल्यागरुशिशिरागंधाढ्यायोगवाहिका ॥

अर्थ-मंगल्या, मल्लिकागंध और यावन्मात्र मंगला-गरवाचक शब्द हैं ते सर्व मंगल्यागरुके नाम जानने।

---

१ चरकसंहितामें—अगरको शीतप्रशमन (सरदीनाशक) और खाँसी नष्टकर्त्ता मानीहै।

सुश्रुतसंहितामें—उसको वात, कफहर, वर्णप्रसादक (देहका रंग सुधारनेवाला), खुजलीनाशक और कुष्ठनाशक वर्णन कराहै। अगरकी लकडीको जलमें औटाय उस पानीके पीनेसे ज्वरमें लगनेवाली तृषा न्यून होतीहै और इसे मृगी उन्मत्त आदि रोगोंमें परमोपयोगी गिनते हैं।

गुण। मंगल्यागर शीतल, गंधवाली और योगवाही अर्थात् जैसे पदार्थके साथ मिले उसीकेसे गुण करने लगेहै।

देवदारु.

देवदारुस्मृतंदारुभद्रंदार्वीन्द्रदारुच ॥
मस्तदारुद्रुकिलिमंकृत्रिमंसुरभूरुहः ॥२३॥
देवदारुलघुस्निग्धंतिक्तोष्णकटुपाकिच ॥
विबंधाध्मानशोथामतंद्राहिक्काज्वरास्रजित्
प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकंडूसमीरनुत् ॥२४॥

अर्थ-देवदारु, दारु, भद्रदारु, दार्वी, इन्द्रदारु, मस्तदारु, द्रुकिलिम और कृत्रिम, सुरभूरुह, ए **संस्कृत** नाम, **म.** तेलियादेवदारु, **अ.** सजरतुलजीन, **तै.** देवदारुचेक्का, **हिन्दीकी** प्राय समस्त भाषाओंमें देवदारु इसी नामसे प्रसिद्ध है। **इं.** पाइनस देवदार Pinus Deodara कहतेहै।

गुण। लघु, स्निग्ध, कडवा और गरम तथा पाकके समय चरपरा है। **प्रयोग।** विबंध, अफरा सूजन, आम, तंद्रा, हिचकी, ज्वर, रुधिरके विकार, प्रमेह, पीनस, कफ, खांसी, खुजली और वादीको नष्ट करे।

देवदारुद्विधाज्ञेयंतत्राद्यंस्निग्धदारुकम् ॥
द्वितीयंकाष्ठदारुस्याद्वयोर्नामान्यभेदतः ॥
स्निग्धदारुस्मृतंतिक्तंस्निग्धोष्णंश्लेष्मवात-
जित्आमदोषविबंधार्शःप्रमेहज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-देवदारु दो प्रकारकी है-एक **स्निग्ध** अर्थात् चिकनी देवदारु और दूसरी **काष्ठदारु**। इन दोनोंके नाम एकही हैं। इनमें **चिकनी** देवदारु कडवी, चिकनी, गरम, कफवातनाशक, आमदोष, विबंध प्रमेह और ज्वरको नष्टकरे है। इसको दक्षिणमें **चीपडा देवदारु** कहतेहै।

देवकाष्ठंतुतिक्तोष्णंरूक्षंश्लेष्मानिलापहम् ।
भूतदोषापहंधत्तेलिप्तमंगेषुकालिकम् ॥

अर्थ-काष्ठदेवदारु कडवी, गरम, रूक्ष, कफवातनाशक, भूतदोष हरण करे और इसको देहमें लेप करनेसें देहको काला कर देतीहै।

देवदारुका भेद चीढ.

चीडाचदारुगंधाचगंधवधूर्गंधमादनीतरुणी ।
ताराचभूतमारीमंगल्यातुकपाटनीग्रहजित् ॥
चीडाकटूष्णाकासघ्नीकफार्त्तिदीपनीपरा ।
अत्यंतसेवितासातुपित्तदोषश्रमापहा ॥

अर्थ-चीडा, दारुगंधा, गंधवधू, गंधमादनी, तरुणी, तारा, भूतमारी, मंगल्या, कपाटनी, ग्रहजित् ए ९ नाम **संस्कृत** हैं। **हिं.** चीढ कहतेहैं।

गुण। चीढ चरपरा, गरम, खांसीनाशक, कफको नष्ट करे, अग्निको दीपन करे है। इसके अत्यंत सेवन करनेसें पित्तदोष और परिश्रम दूर होताहै।

धूप-सरल.

सरलःपीतवृक्षःस्यात्तथासुरभिदारुकः ॥
सरलोमधुरस्तिक्तोकटुपाकरसोलघुः ॥२५॥
स्निग्धोष्णःकर्णकंठाक्षिरोगरक्षोहरःस्मृतः
कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः २६

अर्थ-सरल, पीतवृक्ष और सुरभिदारुक ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** धूपसरल, छीट, **बं.** सरल काष्ठ, **इं.** लोंगलिव पाईन।

गुण। यह मधुर, कडवा, हलका, पाकमें कटु, इसके गोंदको गंधविरोजा कहतेहै। **प्रयोग।** इसके द्वारा कर्णरोग, कंठरोग, नेत्ररोग, कफ, वायु, पसीना, दाह, खांसी, मूर्च्छा और व्रणरोग एवं राक्षसभय दूर होवे।

तगर.

कालानुसार्यंतगरंकुटिलंलघुसंनतम् ॥
अपरंपिंडतगरंदंडहस्तीचबर्हिणम् ॥ २७ ॥
तगरद्वयमुष्णंस्यात्स्वादुस्निग्धंलघुस्मृतम्
विषापस्मारशूलाक्षिरोगदोषभयापहम् २८

अर्थ-कालानुसार्य, तगर, कुटिल और लघुसंनत, ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** तगर, **बं.** तगर पादुका, **म.** गांठ्या तगर, गोडे तगर, नेपालमें चम्मा कहतेहै। **फा.** असारून। यह एक प्रकारका सुगंधित तृण अल्मोडेके पहाडपर होता है। दूसरी एक प्रकारकी तगर और है। उसके नाम पिंडतगर, दंडहस्ति

और वांति । गुण । दोनों प्रकारकी तगर गरम, स्वादु, स्निग्ध और हलकी हैं । प्रयोग । तगरका सेवन विषदोष, अपस्मार, शूल, नेत्ररोग और वातादि दोषत्रयको नष्ट करे । मात्रा १॥ मासेसे ले ४॥ मासेतक है, और प्रतिनिधि वच, कचूर और सोंठ है । *

पद्माख.

पद्मकंपद्मगंधिस्यात्तथापद्माह्वयंस्मृतम् ॥
पद्मकंतुवरंतिक्तंशीतलंवातलंलघु ॥ २९ ॥
वीसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥
गर्भसंस्थापनंरुच्यंवमिव्रणतृषाप्रणुत् ॥३०॥

अर्थ–पद्मक, पद्मगंधि और पद्माह्वय (पद्मवाचक शब्द सब इसके पर्याय है), हिं. पद्माख–क, बं. पद्मकाष्ठ, क. पद्मक, तै. पद्मचेकवा, ला. प्रनस् पदम् और सब भाषाओंमें इसी नामसे प्रसिद्ध है । यह केदार और हिमालयपर्वतमें उत्पन्न होता है । कोई वैद्य इसको गुलाबका भेद मानतेहैं ।

गुण । पद्मकाष्ठ कषेला, कडवा, शीतल, वातकरता और हलका । प्रयोग । यह विसर्प, दाह, विस्फोट, कोढ, कफ, रक्तपित्त, वमन, व्रण और तृष्णाको नष्ट करे । तथा गर्भसंस्थापक और रुचिकर्ता ।

गुग्गुलु (गूगर).

गुग्गुलुर्देवधूपश्चजटायुःकौशिकःपुरः ॥
कुस्तालूखलकंक्षीबेमहिषाक्षःपलंकषः ॥३१॥
महिषाक्षोमहानीलःकुमुदःपद्मइत्यपि ॥
हिरण्यःपंचमोज्ञेयोगुग्गुलोःपंचजातयः ३२
भृंगांजनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः ॥
महानीलस्तुविज्ञेयःस्वनामसमलक्षणः ३३
कुमुदःकुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसंनिभः
हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपंचानांलिंगमीरितम् ॥
महिषाक्षोमहानीलोगजेंद्राणांहिताबुभौ ॥
हयानांकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरौपरौ ३५
विशेषेणमनुष्याणांकनकःपरिकीर्तितः ॥
अभावान्महिषाक्षश्चयतश्चैकैषांनृणामपि ३६
गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तोवीर्योष्णःपित्तलःसरः॥
कषायःकटुकःपाकेकटुरूक्षोलघुःपरः ॥३७॥
भग्नसंधानकृद्वृष्यःसूक्ष्मःस्वर्योरसायनः ॥
दीपनःपिच्छिलोबल्यःकफवातव्रणापचीः ॥
मेदोमेहाश्मवातांश्चक्लेदकुष्ठाममारुतान् ॥
पिडिकाग्रंथिशोफार्शोगंडमालाकृमीञ्जयेत्
माधुर्याच्छमयेद्वातंकषायत्वाच्चपित्तहा ।
तिक्तत्वात्कफजित्तेनगुग्गुलुःसर्वदोषहा ॥
सनवोबृंहणोवृष्यःपुराणस्त्वतिलेखनः ॥
स्निग्धःकांचनसंकाशःपक्वजंबूफलोपमः ४१
नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगंधिर्यस्तुपिच्छिलः ॥
शुष्कोदुर्गंधकश्चैवत्यक्तप्रकृतिवर्णकः ॥
पुराणःसतुविज्ञेयोगुग्गुलुर्वीर्यवर्जितः ॥ ४२॥
अम्लंतीक्ष्णमजीर्णंचव्यवायंश्रममातपम् ॥
मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यग्गुणार्थीपुरसेवकः ४३

अर्थ–गुग्गुलु, देवधूप, जटायु, कौशिक, पुर, कुस्तालू, खलक, महिषाक्ष और पलंकष, [प्लवंगम] इतने संस्कृत नाम हैं । हिं. गूगर–ल, बं. गुग्गुलु, म. गुगुल, गु. गुगल, क. इक्षोल, अ. मुषकिले अर्जक, फा. बोयमुदान, इं. बेडल्यम, ला. बाल सामाडेन्ड्रोन रोक्स बरघाई कहते हैं ।

गुगलका बडावृक्ष पर्वती जमीनमें होताहै । इसकी छाल वक्कल वक्कलसे उतरते हैं । पत्ते छोटे २ नीमके सदृश मिलेहुए परंतु इनमें अनी नहीं होती, फूल छोटे २ पांच २ पंखडीके मंजरीके बीच उगतेहैं । फल छोटे २ खिरनीके समान तीन धारवाले होते हैं । गूगलके वृक्षमेंसे गूगल गोंदकी जगहसे

* चरकसंहितामें—तगरको शरदी नष्टकर्त्ता, चेतनास्थापन (होसयारीकर्त्ता) कहीहै ।

सुश्रुतसंहितामें—तगरको वातकफहर, विषहर, वर्णप्रसादन और खुजली कुष्टनाशक वर्णन करीहै ।

निकलतीहै। गूगल नवीन लेना और प्रयोगमें शुद्ध करके डालनी चाहिये। *

गूगलकी पांच जाति हैं; जैसे—महिषाक्ष (भैंसागूगल) महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य तहां भौंराके समान काले रंगकी और भैंसाके नेत्रके समान चमकनेवाली तथा कज्जलसदृश महिषाक्ष (भैंसा) गूगल होती है; महानील गूगल अत्यंत नीले रंगकी होतीहै; कुमुदाख्य गूगलका रंग कुमुद (कमोदनी) के समान; पद्म गूगलका रंग मानिक रत्नके समान लाल; हिरण्याख्य गूगल सुवर्णके समान पीले रंगकी होतीहै। ए पांचोंके लक्षण कहे।

महिषाख्य और महानील जातिकी गूगल हाथियोंके वास्ते हितकारी है; कुमुद और पद्म नामकी गूगल घोडोंके रोगमें देवे, और मनुष्योंके वास्ते हिरण्य (सुवर्ण) संज्ञक गूगल देनी चाहिये। यदि सुवर्ण गूगल न मिले तो भैंसा गूगल लेवे ऐसा किसीका मत है।

गुण। गूगल विशद, कडवी, उष्णवीर्य, पित्तकर्त्ता, दस्तावर, कषेली, कटु और पाक इसका चरपरा है। रूक्ष, हलकी, टूटेहुए स्थानको जोडनेवाली, बलकर्त्ता, सूक्ष्म, स्वरको उत्तम करता, रसायन, अग्निदीपक और पिच्छल। प्रयोग। यह कफ, वादी, व्रण, अपची, मेदरोग, प्रमेह, पथरी, वायु, शरीरका क्लेद, कुष्ठ, आमवात, पिडका, गाठका रोग, सूजन, बवासीर, गंडमाला और कृमिरोगको नाश करे। यह मधुर होनेसें वादी, कषेली होनेसें पित्त, और कडवी होनेसें कफको नष्ट करे। अतएव गूगल त्रिदोषनाशक है।

नवीन गूगल पुष्टिकारक और बलवर्द्धक; पुरानी गूगल अत्यंत लेखन है। नवीन गूगलके ये चिन्ह है कि वो चिकनी, सुवर्णके समान उज्ज्वल, सुगंधित, पकी जामनके समान हो और पिच्छिल हो। पुरानी गूगल सूखी, दुर्गंधयुक्त, स्वाभाविक वर्णरहित और हीनवीर्य है।

पथ्य। गूगल सेवनके समय खटाई, मिरच आदि तीक्ष्ण, अजीर्णकर्त्ता पदार्थ, मैथुन करना, परिश्रम, धूपमें डोलना, मद्यपान, क्रोध करना, त्याग देवे।

जायंतेसुरपादपामरुभुविग्रीष्मेऽर्कसं-
तापिता शीतार्त्ताशिशिरेऽपिगुग्गुल-
रसंमुंचंतितेपंचधा। हेमाभंमहिषाक्ष-
तुल्यमपरंतत्पद्मरागोपमं भृंगाभं-
कुमुदद्युतिंचविधिनाग्राह्यंपरीक्षाततः॥

अर्थ—गूगलके वृक्ष मारवारदेशकी पृथ्वीमें होतेहैं। वो गरमियोंकी ऋतुमें सूर्यकी धूपसें संतापित हो और शिशिरऋतुमें सरदीके मारे पांचप्रकारके गूगल रसको छोडते हैं। जैसे सुवर्णके समान, महिषनेत्रोपम, पद्मरागके सदृश, भौंराके समान और कुमुदकी कांतिके सदृश, उस रसको विधिपूर्वक लेकर परीक्षा करे।

परीक्षा.

वह्नौज्वलंतितपनेविलयंप्रयान्ति
क्लिद्यन्तिकोष्णसलिलेपयसःसमानाः।
ग्राह्याःशुभाःपरिहरेच्चिरकालजाता-
नंगारवर्णसमपूयविगंधवर्णान्॥

* हिंदुस्थानी वैद्य—गूगलको प्रमेह और अन्य २ बिमारियोंमें घीके साथ मिलायके तथा खुजली आदि तथा दुष्ट नासूर और घावपर लगानेको नींबूके रस और नारियलके तेलके साथ मिलायके देनेकी प्रशंसा करतेहैं।

हकीम—गूगलको रुधिरशुद्धकर्त्ता, बलवर्द्धक और दस्तखुलासा लानेवाला मानतेहैं। तथा दूसरी सुगंधित द्रव्योंके साथ मिलाय संधिवात और अन्य संधिके रोग, त्वचारोग और मूत्रस्थानके रोगोंमें देनेको कहतेहैं।

चरकसंहितामें—गूगलको पुरिषविरंजनीय (मलका रंग बदलनेवाला), स्वरशुद्धकर, कफहर और मूत्रस्थान तथा फेंफडेकी बिमारीनाशकर्त्ता मानाहै।

सुश्रुतसंहितामें—गूगलको मेद और कफहर तथा योनिदोषहर मानाहै।

अर्थ–जो गूगल अग्निमें डालनेसें जल उठे, और धूपमें धरनेसें पिगल जावे, गरम जलमें डालनेसें गलकर जलके समान होजावे, इत्यादि लक्षणवाली गूगल उत्तम होतीहै। तहां तत्कालकी उत्पन्न हुईको वैद्य ग्रहण करे। और जो पुरानी है तथा जिसका रंग अंगारेके समान है, जिसमें राधके समान दुर्गंध आती हो वो निकृष्ट है। ऐसी गूगलको औषधमें नहीं लेनी चाहिये। गूगलकी मात्रा ३मासेकी है। दर्पनाशक कतीरा और केशर है। बहुत खाना इसका रूह और जिगरको नुकसान करे है।

कणगुग्गुल.

गंधराजःस्वर्णकणः सुवर्णः कणगुग्गुलुः।
कनकोवंशपीतश्चसुरसश्चपलंकषा ॥
कणगुग्गुलुःकटूष्णःसुरभिर्वातनाशनः।
शूलगुल्मोदराध्मानकफघ्नश्चरसायनः ॥

अर्थ–गंधराज, स्वर्णकण, सुवर्ण, कणगुग्गुलु, कनक, वंशपीत, सुरस और पलंकषा, ए कणगूगलके संस्कृत नाम हैं। गुण। कणगूगल चरपरी, गरम, सुगंधित, वातनाशक और रसायन है। प्रयोग। शूल, वायगोला, उदर, अफरा और कफको नष्ट करे है।

भूमिजगुग्गुलु.

गुग्गुलुश्चतृतीयोऽन्योभूमिजोदैत्यमेदजः।
दुर्गाल्हादाइडाजाताआशादिरिपुसंभवः ॥
मज्जाजोमेदजश्चैवमहिषासुरसंभवः
गुग्गुलुर्भूमिजास्तिक्तःकटूष्णःकफवातजित्।
उमाप्रियश्चभूतघ्नोमेध्यसारऽयदःसदा ॥

अर्थ–तिसरी भूमिजगूगल है उसके संस्कृत नाम–भूमिज, दैत्यमेदज, दुर्गाल्हादा, इडाजाता, आशादिरिपुसंभव, मज्जाज, मेदज और महिषासुरसंभव। गुण। भूमिजगूगल कडवी, चरपरी, कफवातको दूर करे, दुर्गाको परम प्रिय है। भूतनाशक, पवित्र और सदैव सुगंध देनेवाली है। यह काशीआदिमें प्रसिद्ध है।

सरलनिर्यासगुग्गुलु.

श्रीवासःसरलस्रावःश्रीवेष्टोवृक्षधूपकः ॥
श्रीवासोमधुरस्तिक्तःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः॥
पित्तलोवातमूर्धाक्षिस्वररोगकफापहः ॥
रक्षोघ्नःस्वेददौर्गंध्ययूकाकंडूव्रणप्रणुत्॥४५॥
स्वेदनश्चकफोत्सारीशोणितस्रुतिवारणः ॥
आक्षेपहरणोमूत्रजननोज्वरनाशनः ॥
वेदनाशमनोबल्यआमवातप्रशांतिकृत् ॥

अर्थ–श्रीवास, सरलस्राव, श्रीवेष्ट और वृक्षधूपक, ए संस्कृत नाम। हिं. सरलका गोंद, गुगरी, इसे चंद्रसभी कहतेहै। बं. टार्पिन् तेल, यह सरलवृक्षका गोंद हैं।

गुण। यह मधुर, कडवा, स्निग्धोष्ण, कषेला, दस्तावर, पित्तकर्त्ता, राक्षसादिके भयका नाशक, पसीने लानेवाला, कफको निकालनेवाला, मूत्रकर्त्ता, पीडानाशक और बलकारी। प्रयोग। इसके द्वारा वादी, मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभग, कफ, स्वेद, दुर्गंध, कृमि, खुजली, व्रण, रुधिरका गिरना, आक्षेपवायु, ज्वर और आमवात ए दूर हो ॥

राल.

रालस्तुशालनिर्यासस्तथासर्जरसःस्मृतः ॥
देवधूपोयक्षधूपस्तथासर्वरसश्चसः ॥ ४६ ॥
रालोहिमोगुरुस्तिक्तःकषायोग्राहकोहरेत् ॥
दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः ॥
ग्रहभग्नाग्निदग्धाश्रीशूलातीसारनाशनः ४७

अर्थ–राल, शालनिर्यास, सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप और सर्वरस, ए संस्कृत। हिं. रार, राल, बं. धुना, पंजाबमें राल अर्तु, क. सर्जरस, अ. कीवर, वा कहरुबा, ला. सोरिआ रोब्र्हा, इं. रेजीन कहते है। यह शालवृक्षका गोंद है। *

* मखजनउल्अद्वियामें—लिखाहै कि बिमार मनुष्यके मकानमें रालकी धूनी देना बहुतही फायदा करैहै। रालका वृक्ष जैसे जैसे बडा होताहै उसी उसी प्रकार उसकी लकडियोंके बीचमें राल अधिक जमती जायहै, और उस लकडीकी छाल गिरती जायहै। पुराने नासूरके घावपर रालकी मलहम लगाना अत्यंत उपयोगी है।

गुण । शीतल, भारी, कडवा, कषैला और ग्राहक । **प्रयोग** । यह वातादिदोष, रुधिरदोष, पसीने, विसर्प, ज्वर, व्रण, विपादिका, ग्रह, भग्नरोग, अग्निदग्ध, शूल और अतिसार रोगको दूर करे । **मात्रा** ७ रत्ती है । **प्रतिनिधि** इसका कुंदरु है और मिश्री इसके **दर्पनाशक** है ।

कुंदरु.

कुंदुरुस्तुमुकुंदः स्यात्सुगंधः कुंदइत्यपि ॥
कुंदुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यः कटुर्हरेत् ॥
ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफाऽनिलान् ॥

अर्थ–कुंदरु, मुकुंद, सुगंध और कुंद, ए संस्कृत नाम । **हिं.** कुंदरु, सुगंधद्रव्य, **बं.** कुंदुरुखोटी, **म.** शालईढीक, **क.** इडवोल, **गु.** किंदरु, शेशगुदर, **तै.** कुन्दुरुमू, **फा.** लोबान, **ला.** वटारिया इंडीका कहते है । यह शल्लकीका गोंद है ।

गुण । मिष्ट, कडवी, तीक्ष्ण, कटु और त्वचाको हितकर । **प्रयोग** । यह ज्वर, स्वेद, ग्रह, अलक्ष्मी, मुखरोग, कफ, वादी, दाह, प्रदर और पित्तसंबंधी पीडाको दूर करे । इसका लेप शीतलता करे है । **मात्रा** ६ रत्तीकी है । **प्रतिनिधि** दोनोवहमन अथवा रूमीमस्तंगी है । **दर्पनाशक** इसके उन्नाव है ।

शिलारस.

सिल्हकस्तुतुरुष्कः स्याद्यतोयवनदेशजः ॥
कपितैलंचसंख्यातस्तथाचकपिनामकः ॥४९
सिल्हकः कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः शुक्रकांति-
कृत् । वृष्यः कंठ्यः स्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ॥

अर्थ–सिल्हक, तुरुष्क, यवनदेशज, कपितैल, ए संस्कृतनाम । तथा जितने वानरवाचक शब्द है, सब इसके नाम हैं । **हिं.** शिलारस, दक्षिणमें पिंडतैल, **क.** पिंडतैल कहते हैं । **इं.** लिक्विडएम्बर ।

गुण । कटु, स्वादु, स्निग्धोष्ण, शुक्रल, कांतिकारक, बलकर और कंठशोधक । **प्रयोग** । **शिलारस** स्वेद, कोढ, ज्वर, दाह, ग्रह दोष, मूत्राघात, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और खुजली, इन सबको नष्टकरे । **मात्रा** ४ रत्तीकी है ।

जायफल.

जातीफलंजातिकोशंमालतीफलमित्यपि ॥
जातीफलंरसेतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरोचनंलघु ॥५१॥
कटुकंदीपनंग्राहिस्वर्यंश्लेष्मानिलापहम् ॥
निहंतिमुखवैरस्यंमलदौर्गंध्यकृष्णता ॥
कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः ॥५२॥
मूत्राघाताश्मरीमूत्रकृच्छ्रकंडूविनाशनः ॥

अर्थ–जातिफल, जातिकोश और मालतीफल ए संस्कृत नाम । प्राय हिंदुस्तानकी सर्व भाषाओंमें जायफल कहते हैं । **ता.** जोदिकराय, **तै.** जाजीकाया, **ब्रह्मी.** जादिक्षु, **अ.** जोजबूया, **फा.** जोज उलतीब, **इं.** नटमग, **ला.** मीरीस्टीका Myristica कहते हैं । इसका वृक्ष बडा होता है, उसके फल जामुनके समान बडे होतेहैं । इसकी छाल निकाल डालनेसैं लाल गुच्छा निकलताहै, उसको जावित्री जानना । थोडी देरमें उसका रंग पीला होजाताहै । इसके भीतर कठोर छालका बीज होताहै । उसके तोडनेसैं **जायफल** निकलता है । अर्थात् जायफल इस फलका बीज है ।

गुण । जायफल कडवा, तीक्ष्णोष्ण, रोचक, लघु, कटु, दीपन, ग्राही और स्वरशोधक है । **प्रयोग** । जायफलके सेवन करनेसैं वादी, कफ, मैलकी दुर्गंध और कृष्णवर्ण, कृमि, खांसी, वमन, श्वास, शोष, पीनस, हृद्रोग मूत्राघात, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और खुजली इनको नष्ट करे । **मात्रा** २ मासेकी है । **प्रतिनिधि** जावित्री है । यदि अधिक खानेसैं अवगुण करे तो इसके **दर्पनाशक** बनप्फसा और धनिया हैं ।

जावित्री.

जातीफलस्यत्वक्प्रोक्ताजातीपत्रीभिषग्वरैः
जातीपत्रीलघुःस्वादुःकटूष्णारुचिवर्णकृत् ॥
कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ५३
रक्तवैशद्यजननीतिक्तादौर्गंध्यनाशिनी ॥

अर्थ–जायफलकी त्वचाको **सं.** जातिपत्री कहतेहैं । **हिं.** जावित्री, **बं.** जायित्री, **म.** जायपत्री, कोंकणमें पत्री, **गु.** जावंत्री, **तै.** जाजीपत्री, **अ.**

बिसबाबह, फा. बजबार, इं. मेस, ला. मिरिस्टका औमस कहते हैं।

गुण। जावित्री हलकी, स्वादु, चरपरी, गरम, रुचिकारक, वर्णको उज्ज्वल करे। मुखको स्वच्छ करे, कडवी और दुर्गंधिनाशक है। **प्रयोग।** कफ, श्वास, खांसी, वमन, तृषा, कृमि, विषदोष, इन सबकों नष्ट करे। मात्रा ३॥ मासेकी है। प्रतिनिधि जायफल, दर्पनाशक गुलाबके फूल और अरबी बबूलका गोंद है।

लौंग.

लवंगंदेवकुसुमंश्रीसंज्ञंश्रीप्रसूनकम् ॥
लवंगंकटुकंतिक्तंलघुनेत्रहितंहिमम् ॥ ५४ ॥
दीपनंपाचनंरुच्यंकफपित्तास्रनाशकृत् ॥
तृष्णांछर्दितथाध्मानंशूलमाशुविनाशयेत् ॥
कासंश्वासंचहिक्कांचक्षयंक्षपयतिध्रुवम् ५५

अर्थ—लवग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञक और श्रीप्रसून ए संस्कृत नाम। हि. लौंग, बं लवग, गु. लवींग, तै. किरमुबेर, अ. करनफल, फा. मेहक, इं. कलव्ज, ला. काफिओफिईलस Cafyophyllus कहते हैं। यह यवद्वीप, वलीद्वीप, चीन, यूरप आदि स्थानोंमें यहांहैं आती है।

गुण। लौंग कटु, तिक्त, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, दीपन, पाचन, रुचिकारी। **प्रयोग।** कफ, पित्त, रुधिरके विकार तथा, वमन, अफरा, शूल, खांसी, श्वास, हिचकी और क्षयरोग, इनको शीघ्र दूर करे। मात्रा ३॥ मासेकी है। प्रतिनिधि दालचिनी, कुलिंजन और जायफल है। दर्पनाशक अरबी बबूलका गोंद है। यह रसयुक्त, नवीन, लंबी, लाल और कालरगकी तथा मोटी लौंग उत्तम होतीहै। यह प्राय मसालेमें डाली जातीहैं। *

इलायची बडी वा पूर्वी.

पलास्थूलाचबहुलापृथ्वीकात्रिपुटापिच ॥
भद्रैलाबृहदेलाचचंद्रबालाचनिष्कुटिः॥५६॥
स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृल्लघुः ॥
रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा॥
हृल्लासविषबस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत्॥

अर्थ—स्थूलएला, बहुला, पृथ्वीका, त्रिपुटा, भद्रैला, बृहदेला, चंद्रबाला और निष्कुटी ए संस्कृत नाम। हिं. बडी इलायची, लायची, बा. पूर्वीइलायची, बं. बडएलाइच, म वेलदोडा, थोरवेला, तै. पेद्दएलाकुलु, ता. एलम्, का. यरडूलकी, गु. एलची, अ. काकलेकीबर, फा. हैलकलां, ला. अमोमम् Amomum.

गुण। बडी इलायची रस और पाकमें कटु (चरपरी) अग्निकारक, हलकी, रूक्ष और गरम। **प्रयोग।** यह कफ, रक्तपित्त, खुजली, श्वास, प्यास, हृल्लास (उबाकी लेना), विषरोग, खासी, वमन, बस्तिराग, मुखरोग और शिररोग, इनको नष्ट करे। मात्रा १॥। दो मासे है। प्रतिनिधि छोटी इलायची, दर्पनाशक, गुलाबक फूल है।

* **हिंदुस्थानी वैद्य**—लौंगको गरम, पाचक, कफ नष्टकरता, कुपित आमको विठालनेवाला मानतेहैं। उसीप्रकार पेटकी एठन नष्टकर्ता, तथा प्यास बंद करनेको और वमन और वायुआदिके दूर करनेको औषधके तरीके देतेहै।

यूनानी हकीम—लवगको शुष्क और गरम गिनतेहै और देहके बाहरी भागमें लगानेको अथवा खानेमें आवे तो उसकी विषके असर न्यून करनेकी तथा मांथेके दूखनेके नष्टकरनेकी इसमें शक्ति है ऐसा मानतेहैं। तथा वह ऐसाभी मानतेहै कि इसके चूर्णको खाने या लगानेसे मसूडे मजबूत होतेहैं, श्वास सुगंधित निकलेहै, कफ बैठ जाताहै, तथा पाचनशक्ति बढेहै।

इंग्रजी औषधोंमें—लौंगको गरम, आमतकर्त्ता तथा पेटकी पीडा नष्टकर्त्ता मानाहै। तथा बदहज्मी और अन्य २ बिमारियोंमें और पदार्थोंके साथ मिलायके देतेहै। गर्भवती स्त्रियोंको यदि उलटी होती होय तो लवगको गरम जलमें भिगोयके वस जलके पिलानेकी प्रशसा करतेहै।

गुजराती [छोटी] इलायची.

सूक्ष्मोपकुंचिकातुत्थाकोरंगीद्राविडीत्रुटिः
एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत्
रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरीमता ॥५८॥

अर्थ-सूक्ष्मैला, उपकुंचिका, तुत्था, कोरंगी, द्राविडी और त्रुटि, ए संस्कृत नाम । हिं. गुजराती इलायची, छोटी इलायची, बं. छोट एलाइच, म. लघुवेला, एलदोडा, गु. एलचीकागदी, तै. एलाकु,-इसके भी नाम भाषाओंमें वडी इलायचीके समान है । अ. काकले सगीर-क्षीर, बबावहीलखुर्द, ला. इलेटिरिया । यह मलेवारमें बहुत होतीहै । चित्र नंबर ११ देखो ।

गुण । यह चरपरी, शीतल, हलकी और वायुनाशक । **प्रयोग** । यह कफ, खांसी, श्वास, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र रोगको शमन करे । **प्रतिनिधि** वडी इलायची, दर्प गुलाबके फूल वा मिश्री है ।

तज.

त्वक्पत्रंचवरांगंस्याद्भृंगंचोचंतथोत्कटम् ॥
त्वचंलघूष्णंकटुकंस्वादुतिक्तंचरूक्षकम् ५९
पित्तलंकफवातघ्नंकंडूमारुचिनाशनम् ॥
हृद्बस्तिरोगवातार्शःकृमिपीनसशुक्रहृत् ६०

अर्थ-त्वक्पत्र, वरांग, भृंग, चोच और उत्कट, यह संस्कृत नाम । हिं. तज कहते हैं । यह दालचीनीका भेद है । अर्थात् मोटी छालकी तज और वारीक छालकी दालचीनी कहाती है ।

गुण । तज हलकी, उष्ण, कटु, स्वादु, तिक्त, रूक्ष और पित्तकर्त्ता । **प्रयोग** । यह कफ, वादी, खुजली, आम, अरुचि, हृदयका रोग, वातार्श, कृमि, पीनस इनको हरण करे और शुक्रको क्षय करे ।

दालचीनी.

त्वक्स्वाद्वीतुगुडत्वक्स्यात्तथादारु-
सितामता ॥ उक्तादारुसितास्वाद्वी-
तिक्ताचानिलपित्तहृत् ॥ सुरभिःशु-
क्रलावर्ण्यामुखशोषतृषापहा ॥ ६१ ॥

अर्थ-स्वादुत्वक्, गुडत्वक् और दारुसिता, ए संस्कृत नाम । हिं. दालचीनी, बं. दारचीनी, ता. काक्काकरु उपट्टाई, तै. दारचीनी, अ. सलीखा, फा. मिटक्यावी, लुसाई ध्वाक, ध्विन, ई. सीनामम कहते है । दालचीनीका वडा भारी वृक्ष होताहै । इसकी छाल और तेल काममें आतेहैं । यह मलेवार, लंका और चीनकीतरफसें आतीहै । चित्र नंबर १२ का देखो ।

गुण । दालचीनी, मीठी, कडवी, सुगंधित, शुक्रजनक, तथा शरीरका उत्तम वर्णकर्त्ता । **प्रयोग** । यह वात, पित्त, मुखशोष और तृष्णा इनको दूर करे । **मात्रा** ६ मासे, **प्रतिनिधि** कुलीजन, सुगंधवाला, तालीसपत्र और तज, **दर्पनाशक** खांड और मिश्री है ।

पत्रज.

पत्रंतमालपत्रंचतथास्यात्पत्रनामकम् ॥
पत्रकंमधुरंकिंचित्तीक्ष्णोष्णंपिच्छिलंलघु ॥
निहंतिकफवातार्शोहृल्लासारुचिपीनसान् ॥

अर्थ-पत्र, तमालपत्र और जितने पत्रके पर्यायवाचक शब्द हैं सब पत्रजके जानने । हिं. पत्रज, तेजपात, बं. तेजपत्र, म. तमालपत्र, तमालपान, तै. आकुपत्री, क. पत्रक, फा. साजज, ला. सीनामोमी टमाला । इसको स्वादिष्ट करनेकेवास्ते औषधोंमें डालते हैं । इसके तालीसपत्रके पत्तोंसे मोटे पत्ते होतेहैं । दालचीनीके वृक्षके पत्तोंको पत्रज कहते हैं ।

गुण । पत्रज कुछ मधुर, तीक्ष्णोष्ण, पिच्छल और लघु । **प्रयोग** । यह कफ, वादी, बवासीर, उवाकी, अरुचि और पीनस रोगको दूर करे । **मात्रा** ३॥ मासे वा ४॥ मासेकी है । **प्रतिनिधि** वालछड, बहुत खाना इसका फैंफडेको नुकसान करताहै । इसके **दर्पनाशक** रूमीमस्तंगी है ।

नागकेशर.

नागपुष्पःस्मृतोनागःकेशरोनागकेशरः ॥
चांपेयोनागकिंजल्कःकथितःकांचनाह्वयः ॥
नागपुष्पंकषायोष्णंरूक्षंलघ्वामपाचनम् ॥
ज्वरकंडूतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥
दौर्गंध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥६४॥

अर्थ-नागपुष्प, नाग, केशर, नागकेसर, चांपेय, नागकिंजल्क और कांचनके जितने संस्कृतमें पर्यायवाचक शब्द है सब इसके जानने । **हिं.** नागकेशर, **बं.** नागेसर, **ता.** नागल, **फा.** नारमुष्क और सर्व हिंदुस्थानकी भाषामें इसी नामसैं प्रसिद्ध है । **ला.** मेसिआ फेरिआ । यह पुन्नाग नामक वृक्षके सूखे हुए गोलाकार फूल हैं । पुन्नागका बडा वृक्ष होताहै । मरेठीमें इसका उंडी कहते है ।

गुण । कषेला, गरम, रूक्ष, हलका और आमपाचक । **प्रयोग** । ज्वर, खुजली, तृषा, पसीने, वमन, हृल्लास, दुर्गंधि, कुष्ठ, वीसर्प, कफ, पित्त और विषदोष इनको नष्ट करे ।*

त्रिजातक.

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगंधित्रिजातकम् ॥
नागकेशरसंयुक्तंचातुर्जातकमुच्यते ॥ ६५ ॥
तद्वयंरोचनंरूक्षंतीक्ष्णोष्णंमुखगंधहृत् ॥
लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यंकफवातविषापहम् ॥६६

अर्थ-दालचीनी, बडी इलायची और तेजपात इन तीन द्रव्योंको **त्रिसुगंधि** और **त्रिजातक** कहते हैं । और इस **त्रिजातक**मे नागकेशर मिलानेसैं **चातुर्जात** कहते हैं ।

गुण । रोचक, रूक्ष, तीक्ष्ण, गरम, मुखकी दुर्गंधनाशक, लघु, पित्तकर्त्ता जठराग्निवर्धक, सुंदर वर्णकर्त्ता, कफनाशक, वातनाशक और विषहरण कर्त्ता है ।

केशर.

कुंकुमंघुसृणंरक्तंकाश्मीरंपीतकंवरम् ।
संकोचंपिशुनंधीरंबाल्हीकंशोणिताभिधम् ॥
काश्मीरदेशजेक्षेत्रेकुंकुमंयद्भवेद्धितत् ॥
सूक्ष्मकेशरमारक्तंपद्मगंधितदुत्तमम् ॥ ६८ ॥
बाल्हीकदेशसंजातंकुंकुमंपांडुरंमतम् ॥
केतकीगंधयुक्तंतन्मध्यमंसूक्ष्मकेशरम् ॥६९॥
कुंकुमंपारसीकेयन्मधुगंधितदीरितम् ॥
ईषत्पांडुरवर्णंतदधमंस्थूलकेशरम् ॥ ७० ॥

अर्थ-केशरके पर्यायवाचक नाम कुंकुम, घुसृण, काश्मीर, बाल्हीक और रक्तवाचक जितने **संस्कृत**में नाम है सब केशरके जानने । **हिं.** केशर, **बं.** कुंकुम, **तै.** कुकुमपुवु, **अ.** जरकीमास, **फा.** जाफरान्, **ला.** Crocusrotundus क्रोकस्रोटन्डस्, **इं.** सॅफ्रन । यह क्षुपजातिके फूलकी केशर है । नवीन लाल रंगकी तेज गंधवाली केशर **उत्तम** होती है ।

कश्मीर, बाल्हीक (बलख) और पारस ग्रीक (ईरान्) इन तीन देशोंमें केशर **उत्पन्न** होतीहै । इनमें **कश्मीर** देशमे जो केशर होतीहै वो बहुत छोटे २ बारीक बालोंकेसमान और कुछ २ रक्तवर्ण तथा कमलकी गंधके समान होतीहै । यह सब केशरोंसे **उत्तम** है । **बाल्हीक** अर्थात् **बलख** देशकी केशर पीले रंगकी और उसमें केतकीके फूलसमान सुगंध आतीहै, तथा बारीक होतीहै । यह **मध्यम** है । और **फारस** देश अर्थात् **ईरान्**की केशरकी गंध सहतके समान और इसका वर्ण कुछ २ पीला और इसके सब तंतु मोटे होतेहैं, यह **अधम** केशर है ।

अव्यक्तरक्तिमामोदिमर्दनात्कार्णिकात्मकम् ।
स्थिररागंकरेलग्नभग्नकेशरमुत्तमम् ।
हीनमिश्राग्निकाश्मीरंगरपांडुरकेशरम् ।
कुंकुमंकटुकंस्निग्धशिरोरुग्व्रणजंतुजित् ॥
तिक्तंवमिहरंवर्ण्यंव्यंगदोषत्रयापहम् ॥७१॥

अर्थ-जिसमें लाली कम हो, सुगंधयुक्त मीडनेसे कमलकी केशरके समान रंग हाथोंसें चिपट आवे वह केशर श्रेष्ठ है । और अग्निके रंगकी पीली केशर त्याज्य है इसमे विष होताहै ।

गुण । **केशर** चरपरी, स्निग्ध, कडवी, वमननाशक और देहके वर्णको उज्ज्वल कर्त्ता है । **प्रयोग** । मस्तकरोग, व्रण, कृमि (कीडा), व्यंग (झांई)

* **हिन्दुस्थानी वैद्य**—नागकेशरके सूखेहुए फूलोंको पीस घीके साथ मिलायके दूखते हुए बबासीर तथा पैरके तलुएमें होनेवाली जलन दूर करनेको इसकी प्रशंसा करतेहैं । तथा इस वृक्षकी छाल और जडको पानीमें भिगोयदे, इस पानीके पीनेसे पाचनशक्ति बढेहै । तथा बीजोंको दुचलके निकाले हुए तेलको संधिवातपर लगानेको कहतेहैं ।

इन रोगोंको नष्ट करे। मात्रा १ मासे। प्रतिनिधि तज और इसके दर्पनाशक अनेसूं (कमीसोफ) और सेवकी जवारिश है।

तृणकेशर.

तृणकुंकुमंतृणास्रंगंधितृणंशोणितंचतृणपुष्पं गंधाधिकंतृणोत्थंतृणगौरंलोहितंचनवसंज्ञम्
तृणकुंकुमंकटूष्णंकफमारुतशोफनुत्।
कंडूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नंभास्करंपरम् ॥

अर्थ–तृणकुंकुम, तृणास्र, गंधितृण, शोणित, तृणपुष्प, गंधाधिक, तृणोत्थ, तृणगौर और लोहित, ए नौ नाम **तृणकेशरके** है। यहभी कश्मीरमें होताहै। यह तिनकेकी जाती है। **गुण** । कटु और गरम है। वादी, सूजन, खुजली, पामा, कोढ, आमके दोष इनको दूर करे और देहमें कांति करे है।

गोरोचन.

गोरोचनातुमंगल्यावंद्यागौरीचरोचना ॥
गोरोचनाहिमावृष्यावश्यामंगलकांतिदा ॥
विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत् ॥

अर्थ–गोरोचना, मगल्या, वंद्या, गौरी और रोचना ए **संस्कृत** नाम है। **हिं.** गोरोचन, गौलोचन, **बं.** गोरोचना, **अ.** हजरुलवकर, **तै.** गोरोचनमु और प्राय समग्र हिंदुस्थानी भाषाओंमें इसी नामसे प्रसिद्ध है। **इं.** गौलस्टोन्, कहतेहैं। यह गौ अथवा बैलके पित्ताशयमेंसे कंकरके समान निकलता है। उसको **गोलोचन** कहते हैं। इसका रंग लाल, पीला, नारंगीके समान होताहै। इसको तोडनेसे एक ऊपर एक नीचे परत मालूम होताहै। यह कंकरी, सुपारीसें लेकर नीबूतक बडी होतीहै, परंतु कठोर नहीं होती। इसी प्रकार बकरीके और ऊंटके पेटमेंसेभी कंकरी निकलती है। **गुण** । **गोरोचन** शीतल (कडवा), बलकारक, वशीकरण कर्त्ता, मंगल और कांतिको देता है। विषनाशक और अलक्ष्मीको निवारण करे। **प्रयोग** । घावके रुधिर आनेको अथवा गर्भस्रावके रुधिर गिरनेको दूर करे। ग्रहजन्य तथा दोषजन्य उन्मादरोगको हरण करेहै। मात्रा ३ रत्तीतक है।

नख–नखी.

नखंव्याघ्रनखंव्याघ्रायुधंतच्चक्रकारकम् ॥
नखंस्वल्पंनखीप्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी ॥
नखद्रव्यंग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् ॥
लघूष्णंशुक्रलंवर्ण्यंस्वादुव्रणविषापहम् ॥
अलक्ष्मीमुखदौर्गंध्यहृत्पाकरसयोःकटुः ॥

अर्थ–नख, व्याघ्रनख, व्याघ्रायुध, चक्रकारक, ए नखके नाम है। म. नखला, फा. नाखून पर्रा, अ. अजफारुत्तिब्ब। छोटे नखको **नखी** कहते हैं। इसके पर्यायवाचक शब्द–हनु और हट्टविलासिनी। यह सुगंधित पदार्थ इसी नामसे प्रसिद्ध है। दोनोंके **गुण** । **नखद्रव्य** हलका, गरम, शुक्रोत्पादक, वर्णकर्त्ता; रसमें मिष्ट और पाकमें चरपरा, ग्रह और अलक्ष्मीनाशक। **प्रयोग** । व्रण और विषजन्यपीडा, मुखकी दुर्गंधआदि रोगोंको दूर करे।

नेत्रवाला.

वालंन्हीबेरबर्हिष्ठोदीच्यंकेशांबुनामच ॥
वालकंशीतलंरूक्षंलघुदीपनपाचनम् ॥
हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ७५

अर्थ–वाल, न्हीबेर, बर्हिष्ठ और उदीच्य तथा केशवाचक और जलवाचक सब शब्द इस नेत्रवालाके नाम जानने; ए **संस्कृत** नाम। **हिं.** नेत्रवाला, सुगंधवाला, **बं.** बाला, **गु.** वालो, **तै.** कार्टीवेळू, **क.** वालदबेरु, **फा.** असारूं, **इं.** एन्ड्रोमोगन्। यह एक प्रकारका सुगंधित तृण होताहै। परंतु पंसारी लोग इसकी जगह नाडीके सूखे सागको देतहैं। सो नहीं लेना चाहिये। **गुण** । शीतल, रूक्ष, हलका, दीपन और पाचक। **प्रयोग** । हृल्लास, अरुचि, विसर्प, हृदयरोग और आमातिसार, इनको दूर करे। मात्रा १ मासेकी है।

वीरण.

स्याद्वीरणंवीरतरुर्वीरंचबहुमूलकम् ॥
वीरणंपाचनंशीतंवांतिहृल्लघुतिक्तकम् ॥७६॥
स्तंभनंज्वरतृड्भ्रांतिमदजित्कफपित्तहृत्।
तृष्णास्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम् ॥

अर्थ–वीरण, वीरतरु, वीर और बहुमूलक,

ए संस्कृत नाम। हिं. वीरन, ब. व्याणातृण, म काळावाळा, तै. वळवाटीवेरु, क. वाळदवेस, ता. वेट्टवेर। यहभी एक सुगंधद्रव्य है। गुण। पाचक, शीतल, वमननाशक, हलका, कडवा, स्तंभक और कफपित्तनाशक। प्रयोग। ज्वर, मस्तपना, तृषा, रुधिरविकार, विषरोग, विसर्प, प्रबलदाह और व्रणरोग इनपर देवे। मात्रा १ मासेकी है।

उशीर (खस)

वीरणस्यतुमूलंस्यादुशीरंनलदंचतत् ॥
अमृणालंचसेव्यंचसमगंधिकमित्यपि ॥७८॥
उशीरंपाचनंशीतंस्तंभनंलघुतिक्तकम् ॥
मधुरंज्वरहृद्वांतिमदघ्नुत्कफपित्तहृत् ॥
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम्॥७९॥

अर्थ-वीरणतृणकी जडको उशीर अथवा खस कहते हैं। इसके पर्यायवाचक शब्द-उशीर, नलद, अमृणाल, सेव्य और समगंधिक कहतेहैं। हिं. खस, बं. व्याणारमूल, म पीलावाला, काला-वाला, वाळा, का वालदवेस, इं अंड्रोपोगन म्युरी केट्स। यह गांडर घासकी जड है। गुण। पाचक, शीतल, हलका, तिक्त, स्तंभन, मधुर और कफ-पित्तनाशक। प्रयोग। ज्वर, मद, तृषा, वीसर्प, विषदोष, तीव्र दाह और व्रणरोग इनको दूर करे। मात्रा १ मासेकी है।

जटामांसी.

जटामांसीभूतजटाजटिलाचतपस्विनी ॥
मांसीतिक्ताकषायाचमेध्याकांतिबलप्रदा ॥
स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत्॥८०

अर्थ-जटामासी, भूतजटा, जटिला, तपस्विनी और मासी, ए संस्कृत नाम है। हिं. ब जटामांसी, गु. वाळछड, फा. सुंबुल, अ. सुंबुलुत्तीब, क. बहुलगंध और सब भाषाओंमें इसीनामसे प्रसिद्ध है। ला नार्डोस्टीकस कहते है। इसका वृक्ष सुगंधदार होताहै। इसकी जड कुछ २ कडवी होतीहै। गुण। कडवी, कषली, स्मरणशक्ति बढानेवाली, बलकारक, कांतिप्रद, स्वादु शीतल, त्रिदोष और रूक्षतानाशक। प्रयोग। रुधिरके दोष, दाह अप-स्मार (मृगी), कोढ, ज्वर और अनेक प्रकारके चर्मरोग अर्थात् कोढरोग इनको दूर करे। प्रयो-गमें इसकी जड ६ रत्ती लीनी जाताहै। *

भूरि छरीला

शैलेयतुशिलापुष्पंवृद्धकालानुसार्यकम् ॥
शैलेयंशीतलंहृद्यंकफपित्तहरंलघु ॥
कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्रुदरक्तहृत् ॥८१॥

अर्थ-शैलेय, शिलापुष्प, वृद्ध और कालानुसा-र्यक ए संस्कृत नाम। हिं भूरिछरीला, छड, पत्थरका फूल, ब शैलज, म दगडफूल, का कलहू,

* मखजनमें—लिखाहै कि जटामासी पेटके विकार निकालनेवाली है, जाग्रतकरता, साफ पिसाब लानेवाली और पित्तको निकालनेवाली कहीहै। फेफडेकी बिमारीमें तथा ज्ञानतंतुओंके बलिष्ठ करनेको तथा हिस्टरियाके रोगमें देनेकी प्रशंसा करेहै। और इस प्रकार कहताहै कि इसके उपयोगसे मस्तकके बाल काले और लंबे होतेहैं।

डा. पेन्स्ली—कहताहै कि, इस पदार्थमेसे मस्तकमें डालनेका सुगंधित तेल निकलताहै, तथा रुधिर शुद्ध करनेको इसे खानेके वास्ते देतेहैं।

सरविलियम् ओश्शांगनेसी—जटामासीको वेलेरियन् दवाके पलटेमें वर्त्तनेकी तारीफ करताहै।

चरकसंहितामें—इसे विकृति चेतनास्थापन और उन्माद, अपस्मार तथा वादीके विकार ऊपर अक्सीर दवा मानतेहैं।

सुश्रुतसंहितामें—इसे वातकफ हरणकर्त्ता, वर्णप्रसादन, दुष्टखुजली नष्टकर्त्ता और पीडाशामक वर्णन करीहै।

अ. आश्नीना, फा. दवाळ। गुण। शीतल, हृदयको हितकारी, हलका और कफपित्तनाशक। प्रयोग। सुजली, कुष्ठ, पथरी, दाह, विषदोष और खूनी बवासीर आदि रोगोंको हरण करे। मात्रा ३॥ मासेसे ७ मासेतक है। प्रतिनिधि किरमानी अजमायन और दर्पनाशक सौफ है।

मुस्तक (मोथा).

मुस्तकंनस्त्रियांमुस्तंत्रिषुवारिदनामकम् ॥
कुरुविंदश्चसंख्यातोऽपरःक्रोडकसेरुकः ॥
भद्रमुस्तंचगुंद्राचतथानागरमुस्तकः ॥ ८२ ॥
मुस्तंकटुहिमंग्राहितिक्तंदीपनपाचनम् ॥
कषायंकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजंतुहृत् ८३
अनूपदेशेयज्जातंमुस्तकंतत्प्रशस्यते ।
तत्रापिमुनिभिःप्रोक्तंवरंनागरमुस्तकम्॥८४॥

अर्थ–मुस्तक, मुस्त, कुरुविन्द, क्रोड, कसेरुक और जितने मेघवाचक संस्कृतमें शब्द है सब इसके नाम हैं। हिं. मोथा, बं. मुथा, गु. मोथ, क. भद्र-मुस्त, तै. तुंगमुस्त, अ. सादकफी, फा. मुष्कजमीन, ला. साइपेरसरोटंडस Cyperus rotundus कहतेहै। भद्रमुस्तकके नाम भद्रमुस्ता, गुंद्रा, नागरमुस्तक, हिं. नागरमोथा। यह क्षुपजातीकी वनस्पती है। गुण। चरपरा, शीतल, ग्राही, कडवा, दीपन, कषेला और पाचक। प्रयोग। कफवृद्धि, रक्तपित्त, तृषा, ज्वर, अतिसार और क्रमिरोग आदि नष्ट करे। अनूप (जलप्राय पृथ्वी) में जो प्रगट होवे उसको मोथा कहते है। इसमेंभी मोथा और नागरमोथा दो भेद है। इनमें नागरमोथा प्रयोगमें लेना चाहिये। मात्रा ३ मासे, प्रतिनिधि पीपळामूल और दालचीनी है। दर्पनाशक सौफ, जीरेके बीज और चंदन है।

कर्चूर.

कर्चूरोवेधमुख्यश्चद्राविडःकल्पकःशठी ॥
कर्चूरोदीपनोरुच्यःकटुकस्तिक्तपवच॥८५॥
सुगंधिःकटुपाकःस्यात्कुष्ठार्शोव्रणकासनुत्
उष्णोलघुर्हरेच्छ्वासंगुल्मवातकफक्रमीन् ॥
गलगंडंगंडमालामपचींमुखजाड्यहृत्॥८६॥

अर्थ–कर्चूर, वेधमुख्य, द्राविड, कल्पक और शठी, ए संस्कृत नाम। हिं. कचूर, आंबियाह-लदी, बं. शठी, म. कचोरा, कों. नरकचोरा, का. हुलिअरासिन, पट्कचोरा, गु. कचोरा, कचुरी, तै. कचोरालु, अ. एरकुल काफूर, फा. अरंबार, इं. लांगजेडोरी, ला. करक्यूमा ओडोरीआ। कचूरके चपटे, गोल, रुपाके माफिक सुगंधवाले जडके टुकडे होतेहैं। यह एक हलदीकी जात है। मलेबार, मुंबई, थाना इत्यादि स्थानोंमें होतीहै। गुण। अग्निदीपक, रोचक, चरपरा, कडवा, सुगंधित, गरम और हलका। प्रयोग। कोढ, बवासीर, व्रण, खांसी, श्वास, गोळा, वादी, कफ, कृमि, गलगंड, गंडमाला, अपची और मुखकी जडता, इनको नष्ट करे। मात्रा ४ मासेकी है। प्रतिनिधि सतावर है। यह दिल और दिमागको अवगुण करेतो इसका दर्प-नाशक सपेद चंदन है।

वनसटी.

अन्यातुगंधापत्रास्यास्थूलास्यातिक्तदंतिका
वनजासटिकावन्यास्तवक्षीर्येकपत्रिका।
गंधपीतापलाशांतागंधाख्यागंधपत्रिका।
दीर्घपत्रागंधनिशावेदमुख्यासुपाकिनी।
गंधपत्राकटुस्वादुस्तीक्ष्णोष्णाकफवातजित्।
कासछर्दिज्वरान्हंतिपित्तकोपंकरोतिच।

अर्थ–दूसरी सटीके संस्कृत नाम गंधा, पत्रास्या, स्थूलास्या, तिक्तदंतिका, वनजा, सटिकावन्या, स्तव-क्षीर्या, एकपत्रिका, गंधपीता, पलाशांता, गंधाख्या, गंधपत्रिका, दीर्घपत्रा, गंधनिशा और सुपाकिनी, ए १४ नाम वनमें होनेवाली सटीके हैं। गुण। गंधपत्राका रस चरपरा, स्वादु, तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक। प्रयोग। खांसी, वमन, ज्वर, इनको दूर करे और पित्तको कुपित करेहै।

एकांगी.

मुरागंधकटीदैत्यासुरभिःशालपर्णिका ॥
मुरातिक्ताहिमास्वाद्वीलघ्वीपित्तानिलापहा
ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नीकुष्ठकासविनाशिनी ॥

अर्थ–मुरा, गंधकटी, दैत्या, सुरभि और शाल-पर्णिका ए संस्कृत नाम। हिं. कपूरकचरी,

एकांगी, बं. मुरामांसी, म. एकांगीमुरा, क. मुरे । यह कार्बाजातिकी सुगंधित वनस्पति गुजरातमें प्रसिद्ध है । गुण । कडवी, शीतल, स्वादु, हलकी और वातपित्तनाशक । प्रयोग । ज्वर, रुधिरके विकार, कोढ और खांसी इनको दूर करे । मात्रा छः रत्तीकी है ।

गंधपलाशी.

शठीपलाशीषड्ग्रंथासुव्रतागंधमूलिका ॥
गंधारिकागंधवधूर्वधूःपृथुपलाशिका ॥ ८८ ॥
भवेद्गंधपलाशीतुकषायाग्राहिणीलघुः ॥
तिक्तातीक्ष्णाचकटुकानुष्णास्यमलनाशिनी
शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा ८९

अर्थ–शठी, पलाशी, षड्ग्रंथा, सुव्रता, गंधमूलिका, गंधारिका, गंधवधू, वधू और पृथुपलाशिका, ए संस्कृत नाम है । हिं. गंधपलाशी वा छोटा कचूर, गु. कठ, म. कपूरकचरी, ला. करक्यूमा आरोमाटीका । यह क्षुपजातिकी वनस्पति है । इसकी जडको तोडनेसे कपूरकीसी सुगंध देतीहै । यह सुगंधद्रव्य कश्मीरमें प्रसिद्ध है । गुण । कषेली, ग्राही, हलकी, कडवी, तीक्ष्ण, कटु, अनुष्ण (उष्णतारहित) मुखके मलको दूर करनेवाली तथा प्रहदोषनाशक । प्रयोग । सूजन, खांसी, व्रण, श्वास, शूल और हिचकी इनको नष्ट करे । मात्रा ६ रत्तीकी है ।

प्रियंगु–गंधप्रियंगु.

प्रियंगुःफलिनीकांतालताचमहिलाह्वया ॥
गुंद्रागुंद्रफलाश्यामाविष्वक्सेनांगनाप्रिया ॥
प्रियंगुःशीतलातिक्तातुवरानिलपित्तहृत् ॥
रक्तातियोगदौर्गंध्यस्वेददाहज्वरापहा ९१
वांतिभ्रांत्यतिसारघ्नीरकजाड्यविनाशिनी ॥
गुल्मतृड्विषमेहघ्नीतद्वद्गंधप्रियंगुका ९२
तत्फलंमधुरंरूक्षंकषायंशीतलंगुरुम् ॥
विबंधाध्मानबलकृत्संग्राहिकफपित्तजित् ॥

अर्थ–प्रियंगु, फलिनी, कांता, लता, गुंद्रा, गुन्द्रफला, श्यामा, विश्वक्सेना, अंगनाप्रिय, ए तथा जितने औषाचक संस्कृत नाम है ते सब प्रियंगुके है । हिं. फूल प्रियंगु, बं. प्रियंगु, गंधप्रियंगु, म. गहूला, गु. घउला, क. नेर्पीलगु, तै. प्रेंकणपुचेट्ट, ला. प्रुनस् महालिब । गुण । प्रियंगुके फूल और गंधप्रियंगु दोनो शीतल, कडवे, कषेले, वातपित्तनाशक है । प्रियंगुके फल मधुर, रूक्ष, कषेले, शीतल और भारी है । प्रयोग । अत्यंत रुधिरके निकलनेको, दुर्गंधी, पसीना, दाह, ज्वर, वमन, भूंल, अतिसार, मुखकी जडता, गोला, तृषा, विषजन्यरोग और प्रमेह ए नष्ट होय । इसके फलका सेवन करना विबंध और अफरा इनके बलको बढावे, संग्राहक और कफपित्तनाशक । इसकी छालकी मात्रा १ मासेकी और फलकी मात्रा ६ रत्तीकी है ।

रेणुका.

रेणुकाराजपुत्रीचनंदिनीकपिलाद्विजा ॥
भस्मगंधापाण्डुपुत्रीस्मृताकौंतीहरेणुका ९४
रेणुकाकटुकापाकेतिक्तानुष्णाकटुर्लघुः ॥
पित्तलादीपनीमेध्यापाचिनीगर्भपातिनी ।
बलासवातकृच्चैवतृट्कंडूविषदाहनुत् ॥९५॥

अर्थ–रेणुका राजपुत्री, नंदिनी, कपिला, द्विजा, भस्मगंधा, पांडुपुत्री, कौंती और हरेणुका ए संस्कृत नाम । हिं. रेणुका, बं. रेणुक ता. मट्टी, ला. विटेक्स स्पेसियोजा, म. रेणुकबीज कहते है । रेणुकबीजोको बहुतसे वैद्य महदीके बीज और बहुतसे मनुष्य निर्गुंडीके बीज मानते है । इसकी आकृति काली मिरचके समान होतीहै । गुण । पाकमे चरपरी, रसमें कडवी, अनुष्ण, कटु (चरपरी), हलकी, पित्तकर्त्ता, अग्निकारक, स्मरणशक्तिवर्द्धक, पाचक, गर्भको गिरानेवाली, कफकर्त्ता और वादीको बढानेवाली है । प्रयोग । तृषा, खुजली, विषरोग और दाह इनको नष्ट करे ।

गठिवन.

ग्रंथिपर्णग्रंथिकंचकाकपुच्छंचगुच्छकम् ।
नीलपुष्पंसुगंधंचकथितंतैलपर्णकम् ॥ ९६ ॥
ग्रंथिपर्णतिक्तंतीक्ष्णंकटूष्णंदीपनंलघु ॥
कफवातविषश्वासकंडूदौर्गंध्यनाशनम् ९७

अर्थ–ग्रंथिपर्ण, ग्रंथिक, काकपुच्छ, गुच्छक, नीलपुष्प, सुगंध और तैलपर्ण, ए संस्कृत नाम है । हिं. गठिवन, गठोना, बं. गेठेला, र. गाठीवनामूल, चोरवेली, दे. गठोनाचा झाड कहते है । गुण ।

तिक्त, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, अग्निदीपक और लघु । प्रयोग । कफवृद्धि, वातवृद्धि, विषजन्यरोग, श्वास और खुजली इनको दूर करे । और इसमें दुर्गंधनाशक शक्ति है ।

स्थौणेयक.

स्थौणेयकंबर्हिबर्हंशुकबर्हं चकुकुरम् ।
शीर्णरोमशुकंचापिशुकपुष्पंशुकच्छदम् ९८
स्थौणेयकंकटुस्वादुतिक्तंस्निग्धंत्रिदोषनुत् ।
मेधाशुक्रकरंरुच्यंरक्षोघ्नंज्वरजंतुजित् ९९
हंतिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गंध्यतिलकालकान् ।

अर्थ-यह औषधी गठिवनके ही समान होतीहै । और कुछ २ गंध आती है, इसके संस्कृत नाम स्थौणेयक, बर्हिबर्ह, शुकबर्ह, कुकुर, शीर्णरोम, शुक, शुकपुष्प और शुकच्छद, हिं. थुनेर, म. थुनेर, पु. मरूठ, का. स्थौणजे कहते हैं । गुण । कटु, स्वादु, तिक्त, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधा, शक्तिवर्द्धक, शुक्र प्रगट कर्त्ता, रुचिकारक, राक्षसनाशक और कृमि (कीडा) नाश करे । प्रयोग । ज्वर, कुष्ठ, रुधिरदोष, तृषा, दाह, दुर्गंधी और तिलकालक (तिल) इनको दूर करे । मात्रा २ मासेकी है । *

भटेउर.

निशाचरोधनहरःकितवोगणहासकः १००
रोचकोमधुरस्तिक्तःकटुःपाकेकटुर्लघुः ।
तीक्ष्णोहृद्योहिमोहंतिकुष्ठकंडूकफानिलान्
रक्षोश्रीस्वेदमेदोऽस्रज्वरगंधविषव्रणान् ।

अर्थ-निशाचर, धनहर, कितव और गणहासक, ए संस्कृत नाम । हिं. भटेउर, यहभी गठिवनका भेद है । इसकी उत्पत्ति नैपाल देशमें है । गुण । रोचक, मधुर, कडवा, चरपरा, पाकके समयभी कटु, लघु, तीक्ष्ण, हृद्य, शीतल, राक्षसभयनाशक, शोभाका वढानेवाला है । प्रयोग । कोढ, खुजली, कफ, वादी, पसीना, मेदरोग, रुधिरविकार, ज्वर, दुर्गंध, विष और व्रणरोगको नष्ट करे । मात्रा २ मासेकी है ।

तालीशपत्र.

तालीसमुक्तंपत्राढ्यंधात्रीपत्रंचतत्स्मृतम् ॥
तालीसंलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासकासकफानिला-
न् । निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान्

अर्थ-तालीस, पत्राढ्य और धात्रीपत्र, ए संस्कृत नाम, हिं. तालीशपत्र, बं. तांबट, द्रा. पंनिभल, अ. तालीसफर, फा. जरनब, इं. टेकसमबेकटा, ला. टाक्सस बकटा Taxus baccata कहतेहै । यह हिमालय पर्वतपर उत्पन्न होताहै । इसके भूयआंवलेकेसे पत्ते होतेहैं । गुण । लघु, तीक्ष्ण, उष्ण, कफनाशक और वायुनाशक । प्रयोग । अरुचि, गोला, आम, मंदाग्नि और क्षयरोगको नष्ट करे ।

कंकोल.

कंकोलंकोलकंप्रोक्तंतथाकोशफलंस्मृतम् ।
कंकोलंलघुतीक्ष्णोष्णंतिक्तंहृद्यंरुचिप्रदम् ४
आस्यदौर्गंध्यहृद्रोगकफवातामयांध्यहृत् ।

अर्थ-कंकोल, कोलक और कोषफल, ए संस्कृत नाम, यह सुगंधित पदार्थ है । हिं. शीतलचीनी, बं. कांकला, कोई २ कबाबचीनी, गु. चणकबाव, इं. क्यूबेब पैपर, फा. कबाव, अ. कबाबे तथा हब्बउलउरुस कहतेहैं । इसकी वेल प्रथम चीनमें होतीथी परंतु अब हिमालयपर्वतमेंभी मिली हैं । गुण । हलकी, तीक्ष्ण, उष्ण, कडवी, हृदयको हितकारी, रोचक, मुखकी दुर्गंधतानाशक और कफनाशक । प्रयोग । हृदयरोग, वातव्याधि और नेत्ररोग इनको दूर करे । फारसी वैद्य इसको प्रमेह दूर करनेवाली कहतेहै । इसके फलकी मात्रा २ मासेकी है । यह मसानेको नुकसान पहुंचातीहै । दर्पनाशक मस्तंगी और चंदन हैं । प्रतिनिधी दालचीनी और छोटी इलायची है ।

गंधकोकिला गंधमालती.

स्निग्धोष्णाकफहृत्तिक्तासुगंधागंधकोकिला
गंधकोकिलयातुल्याविज्ञेयागंधमालती ॥

अर्थ-गंधकोकिलाको बंगालेमें घोडवच और गंधमालतीको गंधमात्रा कहतेहैं । गुण । ए दोनों

* मरूठ यह मारवाडमें प्रसिद्ध है.

द्रव्य स्निग्ध, गरम, कफनाशक, कडवी और सुगंधित है । मात्रा १ मासेकी है ।

लामज्जक.

लामज्जकंसुनालंस्यादमृणालंलयंलघु ॥
इष्टकापथकंसेव्यंनलदंचावदातकम् ॥ ६ ॥
लामज्जकंहिमंतिक्तंलघुदोषत्रयास्रजित् ।
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ७

अर्थ—लामज्जक खसकेसमान थोडा पीले रंगका तृण होताहै उसके नाम । लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लय, लघु, इष्टकापथ, सेव्य, नलद और अवदातक, बं. गंधवेणा, म. पिवळा वाळा. गु. अलवाळो । गुण । शीतल, कडवा, हलका, वात, पित्त, कफ और रक्तदोषनाशक । आमयिक प्रयोग । त्वचाके रोग, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह और रक्तपित्त रोगको दूर करे । मात्रा २ मासेकी है ।

एलवालुक.

एलवालुकमैलेयंसुगंधिहरिवालुकम् ।
एलवालुकमेलालुकपित्थंपत्रमीरितम् ॥ ८ ॥
एलवालुकटुकंपाकेकषायंशीतलंलघु ।
हंतिकंडूव्रणच्छर्दितृट्कासरुचिहृद्रुजः ।
बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगदक्रमीन् ॥ ९ ॥

अर्थ—एलवालुक—कंकोल अर्थात् शीतल चीनीके समान होताहै और उसमें कूठकीसी सुगंध आतीहै । उसके संस्कृत नामः—एलवालुक, ऐलेय, सुगंधि, हरिवालुक, एलालू और कपित्थपत्र, हिं. एलवा, बं. लालू, तै. कुतुखुडुम कहतेहैं । गुण । एलवालुक कषेला, शीतल, हलका और पाकमें कटु है । प्रयोग । खुजली, व्रण, वमन, तृषा, खांसी, अरुचि, हृद्रोग, कफ, विष, रक्तपित्त, कोढ, मूत्रकृच्छ्र और कृमिरोगको नाश करे । मात्रा १ मासेकी है ।

केवटी मोथा.

कुटन्नटंदासपुरंवालेयंपरिपेलवम् ॥
प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानिच ॥ ११० ॥
मुस्तावत्पेलवपुटंशुक्लाभंस्याद्वितुन्नकम् ।
वितुन्नकंहिमंतिक्तंकषायंकटुकांतिदम् ।
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकंडूविषव्रणनुत् ॥ ११ ॥

अर्थ—केवटी मोथा वितुन्नक वृक्षकी छाल है । वितुन्नकवृक्ष यह मोथेके समान होताहै और पेलवपुर थोडा सपेदरंगका होताहै । उसको सं. कुटन्नट, दासपुर, वालेय, परिपेलव, प्लव, गोपुर, गोनर्द और कैवर्तमुस्तक, हिं. केवटी, बा. कोमटी मोथा, बा. गुडतजी, बं. वेडटमुथा, गु. केवटी मोथ । गुण । वितुन्नक शीतल, कडवा, कषेला, चरपरा, कांतिकारी, विषघ्न और कफनाशक । प्रयोग । विसर्प, रक्तपित्त, कोढ और खुजली, इनको नाश करे । मात्रा १ मासेकी है ।

स्पृक्का.

स्पृक्कासृक्ब्राह्मणीदेवीमरुन्मालालतालघुः ।
समुद्रांतावधूःकोटिवर्षालंकायिकेत्यपि ॥
स्पृक्कास्वाद्वीहिमावृष्यातिक्तानिखिलदोषनुत् । कुष्ठकंडूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत् ॥

अर्थ—स्पृक्का-सुगंधित द्रव्य एक प्रकारका शाग है । इसको लोकमें लंकोदकपुरी कहते हैं । इसको सं. स्पृक्का, असृक्, ब्राम्हणी, देवी, मरुन्माला, लता, लघु, समुद्रान्ता, वधु, कोटि और वर्षालंकायिका, हिं. असवरग, बं. गंधपिडिम्, म. कर्पूवल्ली, तामिल भाषामें कारितुंब कहतेहैं । ये दो प्रकारकी होतीहै एकके पत्तोमें कपूरकी सुगंध आतीहै और दूसरेमें नहीं आती । गुण । स्वादु, शीतल, बलकारक, कडवी और सर्वदोषनाशक । प्रयोग । कुष्ठ, कंडू, विष, स्वेद, दाह, रक्तगत ज्वर और रुधिरके विकारको दूर करे ।

पर्पटी.

पर्पटीरंजनाकृष्णाजतुकाजननीजनी ।
जतुकृष्णाग्निसंस्पर्शाजतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १२
पर्पटीतुवरातिक्ताशिशिरावर्णकृल्लघु ॥
विषव्रणहरीकंडूकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ १३ ॥

अर्थ—पर्पटीको पद्मावती कहतेहैं । यह सुगंधिद्रव्य उत्तर देशमें होतीहै । सं. पर्पटी, रंजना, कृष्णा, जतुका, जननी, जनी, जतुकृष्णा, अग्निसंस्पर्शा, जतुकृत् और चक्रवर्तिनी, हिं. पपरी, पनडी वा पद्मावती, म. पापडी, रंगपासा—जंतुपासा,

कहतेहैं यह मालवेमें प्रसिद्ध है। इसको साल दुसाले आदि रेसमी या ऊनी कपडोंमें रखनेसें कसाई जानवर नहीं खाते। गुण। कषेली, कडवी, शीतल, वर्णकारक और हलकी। प्रयोग। विषदोष, व्रण, खुजली, कफ, पित्त, रक्तदोष और कुष्ठको दूर करे। मात्रा १ मासेकी है। *

नलिका.

नलिकाविद्रुमलताकपोतचरणानटी।
धमन्यंजनकेशीचनिर्मध्यासुषिरानली
नलिकाशीतलालघ्वीचक्षुष्याकफपित्तहृत्॥
कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकंडूज्वरापहा १५

अर्थ–नलिका औषधी उत्तराखंडमें प्रसिद्धहै। यह सुगंधित और मूंगाके आकार होतीहै। कहीं कहीं यचारी इस नामसे प्रसिद्ध है। सं. नाम नलिका, विद्रुमलता, कपोतचरणा, नटी, धमनी, अंजनकेशी, निर्मध्या, सुषिरा और नली। गुण। शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, कफको शांतिकर्त्ता और पित्तनाशक है। प्रयोग। कठोर पथरीरोग, वातरोग, तृषा, रुधिरके दोष, कुष्ठ, खुजली और ज्वर रोगको दूर करे। इसकी मात्रा १ मासेकी है।

प्रपौंडरीक.

प्रपौंडरीकंपौंडर्यंचक्षुष्यंपौंडरीयकम्।
पौंडर्यंमधुरंतिक्तंकषायंशुक्रलंहिमम्।
चक्षुष्यंमधुरंपाकेवर्ण्यंपित्तकफप्रणुत्॥१६॥
इति भावप्रकाशे कर्पूरादिवर्गः॥

अर्थ–प्रपौंडरीक सुगंधित द्रव्य है। इसको लोकमें पुंडेरि कहतेहैं। सं. नाम:–प्रपौंडरीक, पौंडर्य चक्षुष्या और पौंडरीयक, हिं. पुंडरिया। गुण। मधुर, तिक्त, कषेला, शुक्रकर्ता, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पकनेके समय मीठा, रंग निखारनेवाला, पित्तनाशक और कफ शांति करे।

इति श्रीभावप्रकाशे निघंटुराजे कर्पूरादिवर्गः

अथ गुडूच्यादिवर्गः प्रारंभः

गुडूची (गिलोय) की उत्पत्ति.

अथलंकेश्वरोमानीरावणोराक्षसाधिपः।
रामपत्नींबलात्सीतांजहारमदनातुरः॥ १॥
ततस्तंबलवान्रामोरिपुंजायापहारिणम्।
वृतोवानरसैन्येनजघानरणमूर्द्धनि॥ २॥
हतेतस्मिन्सुरारातौरावणेबलगर्विते।
देवराजःसहस्राक्षःपरितुष्टोऽतिराघवे॥ ३॥
तत्रयेवानराःकेचिद्राक्षसैर्निहतारणे।
तानिंद्रोजीवयामाससंसिच्यामृतवृष्टिभिः
ततोयेषुप्रदेशेषुकपिगात्रात्परिच्युताः।
पीयूषबिंदवःपेतुस्तेभ्योजातागुडूचिका॥५॥

अर्थ–एकसमय राक्षसोंका अधिपति लंकेश्वर रावण अभिमानीने कामपीडित हो श्रीरामचंद्रकी

* डा. वाइट—लिखताहै कि, गिलोय पाचनशक्तिको अधिक बढातीहै, इस वास्ते २॥) रुपे भर गिलोयको १। सेर शीतल पानीमें ३ घंटे भिगोयदे फिर इसको छान लेवे। इसमेंसे दिनमें तीनवार पीवे। गिलोयकी डंडीको कूटकर १५-२० ग्रेनकी मात्रासे देनेपर उलटी होतीहै तथा सांपके काटे हुवे मनुष्यको ऊपर लिखी मात्राके अनुसार २० मिंटके अंतरसे तीनवार देवे तो जहर उतर जाय।

हिंदुस्थानी वैद्य—बहुत दिनोंसे अंतर देकर आनेवाले तथा दूसरे प्रकारके ज्वरोंके रोकनेको तथा कामोद्दीपन करनेको गिलोयमें तज लौंग आदि गरम पदार्थ मिलायके देनेकी प्रशंसा करतेहै। कामला और संधिवातके रोगमेंभी उपयोगी मानतेहैं। गिलोयके पत्तोंको सहतके साथ पीस फोडेके ऊपर लेप करा जाता है। तथा तेलमें पीसकर मस्तकपर लगानेसे शरदीसे दूखता मांथा अच्छा होय। गिलोयसत्त्व मूत्रके रोगमें तथा तिल्लीकी गांठमें अत्यंत हितकारी है। संधिवातमें गिलोयको ओंटायके पिलावे तो इससे पेशाब अधिक होताहै।

पत्नी सीताको बलात्कारसैं हरण करी । तब बलवान् रामने, स्त्रीहरणकर्त्ता अपने शत्रु (रावण) को वानरोंकी सेनासहित संग्राममें पछाडा । जब वह बलगर्वित देवशत्रु रावण मरगया तब इन्द्र अत्यंत प्रसन्न हुआ और उस रणभूमिमें जो वानर राक्षसोंके हाथोंसैं मारे गएथे उनको अमृतकी वर्षाकरके जिवाता भया, उस समय उन बंदरोंके देहसैं उछटकर अमृतके कण जिस २ देशकी भूमिमें गिरे उनसैं यह गिलोय प्रगट हुई ।

गुडूचीमधुपर्णीस्यादमृताऽमृतवल्लरी ।
छिन्नाछिन्नरुहाछिन्नोद्भवावत्सादनीतिच ॥६
जीवंतीतंत्रिकासोमासोमवल्लीचकुंडली ।
चक्रलक्षणिकाधीराविशल्याचरसायनी॥७॥
चंद्रहासावयस्थाचमंडलीदेवनिर्मिता ।

अर्थ–गुडूची, मधुपर्णी, अमृता, अमृतवल्लरी, छिन्ना, छिन्नरुहा, छिन्नोद्भवा, वत्सादनी, जीवंती, तंत्रिका, सोमा, सोमवल्ली, कुंडली, चक्रलक्षणिका, धीरा, विशल्या, रसायनी, चंद्रहासा, वयस्था, मंडली और देवनिर्मिता, ए संस्कृत नाम । हिं. गिलोय, कन्नोजमें गुरुच, बं. गुलंच, म. गुलवेल, गरुडवेल, गरोळ, का. अमरदवल्ली, गु. गलो, पछाहमें गलाह्, मा. गिलवे, ता. सिंदी, लकोदी, तै. तिप्पतिगा, फा. गलो, इं. गुलांचा, ला. टिनोस्पोरे कार्डिफोलीआ Tinosporacordifolia कहतेहै । गिलोयकी बेल होतीहै । इसमें गुच्छेदार फूल और गुच्छेदार फल होताहै । पत्ते लंबाई लिये गोल और अनीदार । तथा गांठ २ पर दो भागवाले होते हैं । नीमके वृक्षकी गिलोय उत्तम होतीहै ।

गुण.

गुडूचीकटुकातिक्तास्वादुपाकारसायनी ॥
संग्राहिणीकषायोष्णालघ्वीबल्याग्निदीपनी।
दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्चपांडुताम् ९
कामलाकुष्ठवातास्रज्वरकृमिवमीन्हरेत् ।
प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् १०

अर्थ–गिलोय मधुर, कडवी, पकनेके समय स्वादुरसवाली, रसायन, ग्राहक, कषेली, उष्णवीर्य, हलकी, बलकारक, अग्निदीपनी और वातादि त्रिदोषनाशक है । आमयिक प्रयोग । आम, तृषा, दाह, धातुक्षीण, खांसी, पांडुरोग, कामला, कोढ, वात, रक्त, ज्वर, कृमिरोग, वमन, प्रमेह, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वादीकेरोग इन सबको नष्ट करे । गिलोयकी मात्रा ४ मासेकी है ।

गिलोयका सत्व.

सत्वंगुडूच्याःसुस्वादुपथ्यंलघुचदीपनम् ।
चक्षुष्यंधातुकृन्मेध्यंवयसःस्थापनंपरम् ।
त्रिदोषंवातरक्तंचपांडुतीव्रज्वरंतथा ।
वमिंजीर्णज्वरंपित्तंकामलांचप्रमेहकम् ।
अरुचिंश्वासकासौचहिक्कांचार्शःक्षयंचतत् ।
सदाहंमूत्रकृच्छ्रंचप्रदरंसोमरोगकम् ।
नाशयेदितिसंप्रोक्तंपित्तंमेहंसशर्करम् ।

अर्थ–गिलोयका सत्व स्वादिष्ट, पथ्य, हलका, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्धक, मेध्य, पवित्र अवस्थाको स्थापन करता और त्रिदोष, वातरक्त, पांडुरोग, तीव्रज्वर, वमन, जीर्णज्वर, पित्त, कामला, प्रमेह, अरुचि, श्वास, खांसी, हिचकी, बवासीर, क्षय, दाहयुक्तमूत्रकृच्छ्र, प्रदर, सोमरोग पित्तकी प्रमेह और शर्करा इन सबको दूर करेहै । गिलोयसत्व बनानेकी यह रीति है कि गिलोयके छोटे २ टुकडे कतरकैं कूट डाले, फिर जलमें डालकर चलनीसैं छानलेवे कि जिस्से तुस न रहें फिर रईसैं मथकर किसी चौरस लोहेके पात्रमें भरके रख देवे, दूसरे दिन नितरे हुए पानीको सावधानीके साथ निकालके फिर उसको सूखायलेवे पाकआदिमें या चूर्णमे जहां गिलोय डालना लिखाहै वहांपर इस सत्वको डालना चाहिये । *

* गिलोयकी बेल—पीपरके पत्तेके समान पत्रवाली होतीहै. और इसके कौने अधिक निकले हुए होतेहैं । चौमासेके मोसममें इसमें फूल आता है । पत्ते अधिक हरियाली लिये होतेहै, तथा चनेके बराबर गुच्छेदार हरे रंगका फल होताहै । परंतु पकनेपर काले रंगका होजायहै, और शरदी गरमीके मौसममें पत्ते फल नहीं रहते ।

कंदगिलोय.

अन्याकंदोद्भवाकंदामृतापिंडगुडूचिका।
बहुछिन्नाबहुरुहापिंडालुःकंदरोहिणी॥
कंदोद्भवागुडूचीचकटूष्णासन्निपातहा।
विषघ्नीज्वरभूतघ्नीवलीपलितनाशिनी॥

अर्थ-दूसरी कंदगिलोय अर्थात् कंदके समान गांठदार गिलोय होतीहै। इसके संस्कृत नाम कंदोद्भवा, कंदा, अमृता, पिंडगुडूचिका, बहुछिन्ना, बहुरुहा, पिंडालु और कंदरोहिणी है। गुण। कंदगिलोय कडवी, गरम, वली और पलितको नाश कर्त्ता। प्रयोग। संनिपात, विषम ज्वर और भूतबाधा इनको दूर करे।

पान.

तांबूलवल्लीतांबूलीनागिनीनागवल्लरी।
तांबूलंविशदंरुच्यंतीक्ष्णोष्णंतुवरंसरम्॥
वश्यंतिक्तंकटुक्षारंरक्तपित्तकरंलघु।
बल्यंश्लेष्मास्यदौर्गंध्यमलवातश्रमापहम्॥

अर्थ-तांबूलवल्ली, तांबूली, नागिनी, नागवल्लरी, ए संस्कृत नाम। हिं. पान, नागरवेलका पान, कों. पानवेल, गु. नागरवेल, फा. तंबोल, इं. बीटल-लीफ Betel-leaf कहते हैं। गुण। विशद, रोचक, तीक्ष्ण, गरम, कषेला, सर, वश्यकर्त्ता, कडवा, कटुक्षार रक्तपित्तकर्त्ता, हलका, बलकारक, कफनाशक, मुखकी दुर्गंधता नाशक, मैलनाशक, वादी हरणकर्त्ता और श्रमको शांत कर्त्ता। [बाकी इसके गुण दिनचर्यामें लिखआएहैं सो देखलेना]। पानकी प्रतिनिधि कुलिंजन है। और इसकी दर्पनाशक सुपारी है।

पानके भेद. सिरवाडीपान.

श्रीवाटीमधुरातीक्ष्णावातपित्तकफापहा।
रसाढ्यासरसाढ्याचिपाकेशिशिरास्मृता॥

अर्थ-सिरवाडी पान-मधुर, चरपरा, वात पित्त कफका नाशक, रसयुक्त, स्वादिष्ट, रुचिकारी और पाकके समय शीतल है।

अंबाडे पान.

स्यादम्लवाटीकटुकाम्लतिक्ता
तीक्ष्णातथोष्णामुखपाककर्त्री।
विदाहपित्तास्रविकोपनी च
विष्टंभदा वातनिबर्हिणी च॥

अर्थ-अंबाडा पान-खट्टा, चरपरा, कडवा तेज, गरम, मुखमें छाले करनेवाला, दाहकर्त्ता, रक्तपित्तको कुपित कर्त्ता, विष्टंभकारी और वातनाशक है।

सातसी पान.

सातसीमधुरातीक्ष्णाकटुरुष्णाचपाचनी।
गुल्मोदराध्मानहराश्चिरुचिकृद्दीपनीपरा॥

अर्थ-सातसीपान-मधुर, तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, पाचन, गोला, उदर, अफरा इनको दूर करै रुचिकारी और दीपनकर्त्ता है।

पुराने पान.

तत्पर्णजीर्णातिरसातिरुच्या सुगंधितीक्ष्णामधुरातिहृद्या। संदीपनी पुंस्त्वकरातिबल्या विरेचनी वक्त्रसुगंधकारिणी॥

अर्थ-पुराने पान-अतिरसयुक्त, अतिरुचिकारी, सुगंधित, तीक्ष्ण, मधुर, हृद्य, जठराग्निको दीपन कर्त्ता, पुरुषार्थ कर्त्ता, अतिबलकारी, विरेचनकर्त्ता और मुखको सुगंधित करनेवाले हैं।

मालवेके अंगरापान.

नाम्नान्याम्लसरासुतीक्ष्णमधुरारुच्याहिमादाहनुत् पित्तोद्रेकहरासुदीपनकरीबल्यामुखामोदिनी। स्त्रीसौभाग्यविवर्धनीमदकरीराज्ञांसदावल्लभा गुल्माध्मानविबंधजिच्चकथितासामालवेतुस्थिता॥

अर्थ-मालवेके अंगरापान, खट्टे, दस्तावर, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारी, शीतल, दाहनाशक, पित्तके बढनेको हरण कर्त्ता, जठराग्निदीपनकर्त्ता, बलकारी, मुखमें सुगंध कर्त्ता, स्त्रीकी सुंदरताको बढानेवाला, नशा लानेवाला और राजालोगोंको सदैव प्रिय, गोला, अफरा, विबंध, इनको जीतनेवाले हैं।

द्राविडके पोटकुलीपान.

अंध्रेपटुलिकानामकषायोष्णाकटुस्तथा
मलापकर्षाकंठस्यपित्तकृद्वातनाशिनी।

अर्थ-अंध्रदेश (द्रविड आदि देश) में जो पटुलिक पान होता है। वह कषेला, गरम, चरपरा, कंठके मलको निकालनेवाला, पित्तकर्त्ता और वातनाशक है ।

समुद्रदेशके पान.

व्हेसणीयाकटुस्तीक्ष्णाहृद्यादीर्घदलाचसा। कफवातहरारुच्याकटुर्दीपनपाचनी ॥

अर्थ-समुद्रके किनारेके पान व्हेसणिया कहातेहैं । वह चरपरे, तीक्ष्ण, हृद्य, बडे पत्तेवाले, कफवातनाशक, रुचिकारी, चरपरे, दीपन और पाचन हैं ।

नवीनपुराने पानोंके गुण.

सद्यस्त्रोटितभक्षितंमुखरुजाजाड्यापहंदोषकृद्दाहारोचकरक्तदायिमलकृद्विष्टंभिवांतिप्रदम्। यद्भूयोजलपानपोसितरसंतच्चेचिरात्रोटितंतांबूलीदलमुत्तमंचरुचिकृद्वर्ण्यंत्रिदोषार्त्तिनुत् ॥

अर्थ-तत्कालके तोडे हुए पान खाना, मुख रोगकरे, जडताको दूरकरे, वातादि दोष करे, दाह, अरुचि, रुधिरको बिगाडना, मलकर्त्ता, विष्टंभी और वमन करानेवाले हैं । यदि उनको बहुत दिन जलसें सिंचनादि द्वारा बढायके बहुतदिनमें तोडे वो पान उत्तम रुचिकारी, वर्णकर्त्ता और त्रिदोषनाशक जानने ।

कृष्णंपर्णंतिक्तमुष्णंकषायं धत्तेदाहंवक्रजाड्यंमलंच । शुभ्रंपर्णंश्लेष्मवातामयघ्नं पथ्यंरुच्यंदीपनंपाचनंच ॥

अर्थ-कालेरंगका पान कडवा, गरम, कषेला, दाहकारी, मुखको जडकरे और मैल करेहैं । सपेदरंगका पान कफवातरोगनाशक, पथ्य, रुचिकारी, दीपन और पाचन है ।

शिरापर्णंतुशैथिल्यंकुर्यात्तस्याःस्त्रहृद्रसः। शीर्णंत्वग्दोषदंतस्यतक्षितंचाशितंसदा ।

अर्थ-पानकी नस देहको शिथिलता करे और उन शिराओंका रस रुधिरको हरण करेहै । सडे और गले हुए पान सेवन करनेसें त्वचाके रोग (कुष्ठआदि) को करेहै । इस वास्ते पानकी नसको निकालकें खानाचाहिये ।

अनिनायमुखेपर्णंयःपूगंखादतेनरः । मतिभ्रंशोदरिद्रीस्यादंतेनस्मरतेहरिम् ।

अर्थ-जो प्राणी विनापान सुपारी खाताहै उसकी बुद्धि विगडजावे, दरिद्री और अंतमें हरिको नहीं स्मरण करे ।

बेल.

बिल्वःशांडिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि । श्रीफलस्तुवरस्तिक्तोग्राहीरुक्षोग्निपित्तकृत् । वातश्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचनः ॥

अर्थ-बिल्व, शांडिल्य, शैलूष, मालूर और श्रीफल, **हिं.** बेल, **गु.** वीली, **ता.** बिल्वपाह्याम, **म.** बेलफल, **क.** वेललु, **तै.** मिरीडी, **इं.** बेंगालर किन्स, **लॅ.** इगलमारमेलांज, **अ.** अनारहिंदी, **इं.** बेलफूट । यह वृक्ष मध्यम कदका होताहै । पत्ते एक डंडीमें तीन २ त्रिशूलके आकार होतहैं । फूल हराचार पंखडीका होताहै । फल अमरूदके समान बडा कठोर और गिरीवाला होताहै । गुण । कषाय, कडवा, ग्राही, रूक्ष, अग्निवर्द्धक, पित्तकर्त्ता, वातकफनाशक, बलकारक, लघु, उष्ण और पाचक । मात्रा ७ मासेकी है । बेलफल कच्चा प्रयोगमें लीना जाता है । बहुतसे बेलफलकी जगह बेलगिरी प्रयोगमें डालतेहैं । बेलकी प्रतिनिधि इमलीके बीज है और दर्पनाशक अजमायन है । *

* डाक्टर डीमक—कहताहै कि यह फल पौष्टिक और रुधिर शुद्ध करता जाना गया है, तथा इसे सेवन करनेसें हलकासा जुलाब होताहै, और पेटकी कब्जियत दूर होतीहै । छाल और जडका क्वाथ वारंवार आनेवाले ज्वरमें दिया जाताहै । यदि आंख दूखने आई होय तो पत्ते पीस इसकी पुलटिश बांधनेसे आराम होताहै । फल कच्चे होय तब उनको लेकर सुखाय लेवे फिर इनके भीतरका गूदा पीसकर शूलपर

गंभारी.

गंभारीभद्रपर्णीचश्रीपर्णीमधुपर्णिका ।
काश्मीरीकाश्मरीहीराकाश्मर्यःपीतरोहिणी
कृष्णवृंतामधुरसामहाकुसुमिकापिच ।
काश्मरीतुवरातिक्ताचवीर्योष्णामधुरागुरुः १५
दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोषजित् ।
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा १६
तत्फलंबृंहणंवृष्यंगुरुकेश्यंरसायनम् ।
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबंधनुत् ॥ १७ ॥
स्वादुपाकेहिमंस्निग्धंतुवराम्लंविशुद्धिकृत् ।
हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥१८॥

अर्थ-गंभारी, भद्रपर्णी, श्रीपर्णी, मधुपर्णिका, काश्मीरी, काश्मरी, हीरा, काश्मर्य, पीतरोहिणी, कृष्णवृंता, मधुरसा और महाकुसुमिका, ए संस्कृत नाम । हिं. कंभारी, खुमेर, बं. गांभारी, म. शिवण, दे. शिवणगंभारी, गु. सीवण कहतेहैं । गुण । कषेली, कडवी, उष्णवीर्य, मधुर दीपनी, पाचनी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, दस्तावर, भ्रमरोगनिवारक और शोषनाशक । प्रयोग । त्रिदोषज तृषा, आमका शूल, बवासीर, विष, दाह, ज्वररोग, इनको दूरकरे । गंभारीके फलके गुण । पुष्टिकारक, बलकारी, भारी, बालोंकी पुष्टितावर्द्धक, रसायन, रोगनाशक, शीतल, स्निग्ध, कषेला और खट्टा इन दोनों रसोंको शुद्धिका करनेवाला, पाकमें मधुर और वातपित्तनाशक । प्रयोग । तृषा, रुधिरकी क्षीणता, मूत्राघात, दाह, रक्तपित्त, क्षतक्षयादि रोगोंको नष्ट करे ।

पाडरि कठ पाडरि.

पाटलिःपाटलामोघामधुदूतीफलेरुहा ।
कृष्णवृंताकुबेराक्षीकालस्थाल्यलिवल्लभा ।
ताम्रपुष्पीचकथितापरास्यात्पाटलासिता ।
मुष्ककोमोक्षकोघंटापाटलिःकाष्ठपाटला२०
पाटलातुवरातिक्तानुष्णादोषत्रयापहा ।
अरुचिश्वासशोथास्रछर्दिहिक्कातृषाहरी२१॥
पुष्पंकषायंमधुरंहिमंहृद्यंकफास्रनुत् ।
पित्तातिसारहृत्कंठ्यंफलंहिक्कास्रपित्तहृत् ।

अर्थ-पाटलि, पाटला, मोघा, मधुदूती, फलेरुहा, कृष्णवृंता, कुबेराक्षी, काचस्थाली, अलिवल्लभा और ताम्रपुष्पी, यह एक प्रकारकी पाडरके सं. नाम । दूसरी सपेदरंगकी पाडर उसके सं. नाम मुष्कक, मोक्षक, घंटापाटलि और काष्टपाटला, है । हिं. पाडर और

देनेसे उत्तम असर करताहै । तथा पक्के फलका गूदा इमलीके रसमें मिलाय देनेसे शीतलता होतीह । वृक्षकी छालका क्वाथ हृदयकी धकधकी नरम करनेको काममें आताहै । तथा पत्ते श्वासरोगमें दीने जातेहैं ।

डा० ग्रीन—कहताहै कि पक्के फलके गूदेका सरबत बनावे और नित्य प्रातःकाल पीवे तो बदहज्मी दूर होय । और कच्चेफलको ६ घंटे भूभलमें सेकके देनेसे दस्त और एंठन दूर होय । रुधिरके बिगाडमें इसका गूदा ५) रुपेभर लेवे, उसमें ५ से ७॥ रुपेभर जल और थोडीसी मिश्री और बरफ डालके दिनमें २ से ३ वखत देनेसे उत्तम गुण करेहै, तथा दस्त और पेटकी एंठनकोभी यह मेल अत्यंत उत्तम करता है ।

मख्जनमें—लिखा है कि बेलके पत्तोंका रस दस्तकी कब्जियत और ज्वरकी बिमारीमें सहतके साथ मिलायके और कामलामे कालीमिरचके साथ मिलायके देतहैं । वह बेलफलको ग्राही, पाचक और कुव्वत देनेवाला मानतेहै, तथा इसके सेवनसे बवासीर उत्पन्न होयहै, इस वास्ते सदैव मिश्रीके साथ मिलायके देनेकी प्रशंसा करताहै । अधपके फलोंको आगमें भून उनका गूदा मिश्री और गुलाबजलके साथ मिलायके प्रातःकाल भोजन करनेके प्रथम सेवन करनेसे दस्तोंको बंद करे है ।

चरकसंहितामें—बेलफलको बवासीरनाशक, सूजन उतारनेवाला और दस्तमें आम पडती होय तो उसको बंद करनेको बेलकी गिरी अत्यंत उपयोगी मानते हैं ।

सुश्रुतसंहितामें—इसको रक्तातिसारनाशक और पित्तशामक गिनेहैं ।

कठपाडर, बं. पारुल, म. श्वेतपाडळ, गु. काकच कहते हैं । गुण । कषेली, कड़वी, अनुष्ण और त्रिदोषनाशक, । प्रयोग । अरुचि, श्वास, सूजन, रुधिरके विकार, वमन, हिचकी और प्यास, इनको दूर करे । पाडलाका फूल कषेला, मधुर, शीतल, हृदयको हित, कफनाशक और रक्तविशोधक । प्रयोग। पित्तातिसाररोगको हरण करे और कंठको सुधारे । पाडरका फल । रक्तपित्त और हिचकियोंको नाश करे ।

अरनी.

अग्निमंथोजयःसस्याच्छ्रीपर्णीगणिकारिका ।
जयाजयंतीतर्कारीनादेयीवैजयंतिका ॥२३॥
अग्निमंथःश्वयथुनुद्वीर्योष्णःकफवातहृत् ।
पांडुनुत्कटुकस्तिक्तस्तुवरोमधुरोऽग्निदः २४

अर्थ–अग्निमंथ, जय, श्रीपर्णी, गणकारिका, जया, जयंती, तर्कारी, नादेयी और वैजयंतिका, ए संस्कृत नाम । हिं. अरनी, अगेथु, गणियारी, म. थोर एरण, टांकला, नरवेल, गु. अरणी, तै. नेलीचेट्ट, क. नरुवल, ऐरणा, ता. नेलीचेट्टु, ला. क्लीरोडेड्रम, इस वृक्षके पत्ते आमनेसामने होते हैं और वो अनीदार होते हैं । उनके जडमेंसें एक २ छोटा २ पत्ता निकलता है । इसका फूल सपेद पांच पंखडीका बाहरके आच्छादनसे ढका हुआ इसमें पांच पुरुष केशर और एक स्त्रीकेशर होती है । फल बहुत छोटे २ गोल २ होते हैं । चित्र नंबर १२ का देखो । गुण । अरनी उष्णवीर्य, चरपरी, कड़वी, कषेली, मधुर, अग्निवर्धक, कफनाशक और वातनाशक है । प्रयोग । सूजन और पांडुरोगको दूर करे है ।

छोटी अरनी.

क्षुद्राग्निमंथस्तपनाविजयागणकारिका ।
अरणिर्लघुमंथश्च तेजोमंथस्तनुस्त्वच ।
अग्निमंथद्वयंचैवतुल्यंवीर्यरसादिषु ।
तत्प्रयोगानुसारेणयोजयेत्स्वमनीषया ।

अर्थ–छोटी अरनीको संस्कृतमें क्षुद्र अग्निमंथ, तपन, विजया, गणकारिका, अरणी, लघुमंथ, तेजोमंथ और तनुत्वच कहते हैं । गुण । दोनों अरनी वीर्यमें और रसादिकमें तुल्य इसवास्ते जहां जैसा प्रयोग होय उसीके माफिक लेना । छोटी अरनीको मरेठीमें नरवेल कहतेहे तथा टाकली, नरवेलर, का. तक्री कहतेहैं ।

सोनापाठा.

स्योनाकःशोषणश्चस्यान्नटकट्वङ्गटुण्टुकाः ।
मंडूकपर्णपत्रोर्णशुकनासकुटन्नटाः ॥ २५ ॥
दीर्घवृन्तोऽरलुश्चापिपृथुशिंबःकटंभरः ।
स्योनाकोदीपनःपाकेकटुकस्तुवरोहिमः २६॥
ग्राहीतिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासप्रणाशनः ।
टुण्टुकस्यफलंबालंरूक्षंवातकफापहम् २७ ॥
हृद्यंकषायंमधुरंरोचनंलघुदीपनम् ।
गुल्मार्शःकृमिहृत्प्रौढंगुरुवातप्रकोपनम् २८

अर्थ–स्योनाक, शोषण, नट, कट्वंग, टुंटुक, मंडूकपर्ण, पत्रोर्ण, शुकनास, कुटंनट, दीर्घवृन्त, अरलू, पृथुशिम्ब और कटंभर, ए संस्कृत नाम, हिं. सोनापाठा, अरलू, टैंटू, बं. सोना, म. टिंडा, का. शोणा, शोण्डिलमर, ता. पन, तै. पेद्दामानू, पं. मुलिन, उडी. फणफणा, नै. करुमकंद, ला. ओरोक्स इंडिकम् । गुण । अग्निदीपक, पाक चरपरा, सवादमें कषेला, शीतल, ग्राही, तिक्त और त्रिदोषनाशक । प्रयोग । इसको खांसीमें देना चाहिये । टैंटुका कच्चा फल रूखा, वातकफनाशक, हृद्य, कषेला, रोचक, हलका और अग्निदीपक । गोला, बवासीर और कृमिरोगको हरण करे और इसका पकाफल भारी और वातको कुपित कर्ता है ।

दूसरा स्योनाक.

स्योनाकःपृथुशिंबोऽन्योभल्लकोदीर्घपत्रकः ।
पीतवृक्षश्चटैंटूकभूतसारोमुनिद्रुमः ।
निस्सारःफल्गुवृंताकःपूतिपात्रावतंशकः ।
कटुकर्षणपीतागोजंबूकःपीतपादकः ।
वातारीपीतकःशोणःकुनटश्चाविरोचनः ।
भ्रमरेष्टोबर्हिजंघोनेत्रनेत्रमिताभिधः ।
स्योनाकयुगलंतिक्तंशीतलंचत्रिदोषजित् ।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नंसंनिपातज्वरापहम् ॥

अर्थ-स्योनाक, पृथुशिंब, भल्लक, दीर्घपत्रक, पीतवृक्ष, टेंटूक, मूलसार, मुनिद्रुम, निस्सार, फल्गु-वृंताक, पूतिपात्र, अवतंशक, कटुकर्षण, पीताग, अंबूक, पीतपादक, वातारी, पीतक, शोण, कुनट, विरोचन, भ्रमरेष्ठ और बर्हिजंघ, ए दोनों स्योनाकोके ३३ नाम हैं । इसमें ११ नाम प्रथम लिख आए है । गुण । दोनों स्योनाक कडवे, शीतल, त्रिदोषके नाशक, पित्त, कफ अतिसार, सन्निपात और ज्वर इनको दूर करतेहै ।

बृहत्पंचमूल.

श्रीफलःसर्वतोभद्रापाटलागणिकारिका ।
स्योनाकःपंचभिश्चैतेःपंचमूलंमहन्मतम्॥२९
पंचमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफवातनुत् ।
मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम् ॥३०

अर्थ-बेल, गंभारी, पाढर, अरनी और स्योनाक, इन पांच वृक्षोंकी जडको बृहत् (बडा) पंचमूल कहतेहैं । गुण । बृहत्पंचमूल कडवा, कषेला, वातकफनाशक, मधुर, गरम, हलका और अग्निदीपक है । प्रयोग । खांसी श्वासको दूर करे ।

शालपर्णी.

शालपर्णीस्थिरासौम्यात्रिपर्णीपीवरीगुहा ॥
विदारिगंधादीर्घांगीदीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥ ३१
शालपर्णीगुरुश्छर्दिज्वरश्वासातिसाराजित्॥
शोषदोषत्रयहरीबृंहण्युक्तारसायनी ॥
तिक्ताविषहरीस्वादुःक्षतकासकृमिप्रणुत् ३२

अर्थ—शालपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिगंधा, दीर्घांगी, दीर्घपत्रा और अंशुमती, ए संस्कृत नाम । हिं. सरिवन, बं. शालपानि, म. शालवण, रानगांजा, रानभाल, का. भूइसेवरा, मुरुलुबोने, गु. शालवण, समेरवो, तै. शीयाकुपना, उडि. शारपाणी, ला. डेसमोडियम् गेंगेटीकम् कहतेहैं । इसका वृक्ष अनुमान चार फूटके उंचा होतहि । और पत्ते तीन २ शालके समान परंतु कुछ २ लंबे और बहुत सुंदर दीखतेहैं । गुण । पुष्टिकारक, रसायन, कडवी, विषघ्न, मीठी और त्रिदोषनाशक है । प्रयोग । वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष, क्षतकास (घावकी खांसी) और कृमिरोगको दूर करे । यदि इसकी जड न मिले तो सर्वांग लेना । मात्रा १ मासेकी है ।

पृष्ठपर्णी (पिठवन).

पृष्ठपर्णीपृथक्पर्णीचित्रपर्ण्यंहिपर्ण्यपि ॥
क्रोष्टुविन्नासिंहपुच्छीकलशीधावनीगुहा ३३
पृष्ठपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णामधुरासरा ।
हन्तिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृट्कृमीः ३४

अर्थ—पृष्ठपर्णी, पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अहिपर्णी, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी और गुहा, ए संस्कृत नाम । हिं. पिठवन, बं. चाकुले, म. पिठवण, कों. भाल, डवला, नवरी, दे. भद्रसेंवरा, उडि. क्रष्टपर्णी, तै. कोलाकुपना, का. सेवरा, नरियलवोने, पिटौनी, गु. पृष्टिपर्णी, महानो समेरवो, गंधसमेरवो, ला. डेरिया पीकटा कहतेहैं । इसके पत्ते सिंहकी पूंछके माफिक लंबे चित्रविचित्र होतेहैं । गुण । त्रिदोषनाशक, बलकारक, उष्ण, मधुर और दस्तावर । प्रयोग । दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा और वमनको दूर करे । मूलके अभावमें सर्वांग ग्रहण करे । मात्रा १ मासेकी है ।

वरहंटा-डा (वार्त्ताकी).

वार्त्ताकीक्षुद्रभण्टाकीमहतीबृहतीकुली ॥
हिंगुलीराष्ट्रिकासिंहीमहोष्ट्रीदुःप्रधर्षिणी ३५
बृहतीग्राहिणीहृद्यापाचनीकफवातहृत् ॥
कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥
उष्णाकुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमांद्यजित्

अर्थ—वार्त्ताकी, क्षुद्रभंटाकी, महती, बृहती, कुली, हिंगुली, राष्ट्री और दुःप्रहर्षिणी, ए संस्कृत नाम । हिं. कटाई, वरहंटा-डा, बं. बृहती, व्याकुड, म. डोरली, गु. उभी रिंगणी, का. हेग्गुलु, बनभंटी, तै. पेद्दामुलंगा, ता. चेरुचूंट, फा. बस्तरगार, ला. सोलानम् इंडीकम् कहतेहैं । वह ऊंट कटेरा है । इसका वृक्ष खडा हुआ और बैंगनके समान होताहै और इसीको बडीकटेरी कहतेहैं । गुण । ग्राही, हृद्य, पाचक, वातश्लेष्मनाशक, कटु, तिक्त और उष्ण । प्रयोग । अरुचि, ज्वर, श्वास, कुष्ठ, शूल, खांसी,

मंदाग्नि, मुखकी विरसता और मलादिको निवारण करे । इसकी जडके अभावमें पंचांग लेना । मात्रा १ मासेकी है ।

कटेरी (कंटकारी).

कंटकारीतुदुःस्पर्शाक्षुद्राव्याघ्रीनिदिग्धिका
कंटालिकाकंटकिनीधावनोबृहतीतथा ॥३७
क्षुद्रायाक्षुद्रभद्राख्याबृहतीतिनिगद्यते ॥
श्वेताक्षुद्राचंद्रहासालक्ष्मणाक्षेत्रदूतिका ॥
गर्भदाचंद्रभाचंद्रीचंद्रपुष्पाप्रियंकरी ॥
कंटकारीसरातिक्ताकटुकादीपनीलघुः॥ ३९
रूक्षोष्णापाचनीकासश्वासज्वरकफानिला
निर्हंतिपीनसंश्वासपार्श्वपीडाहृदामयान् ॥
तयोःफलंकटुरसेपाकेचकटुकंभवेत् ॥
शुक्रस्यरेचनंभेदितिक्तंपित्ताग्निकृल्लघु ॥४१॥
हन्यात्कफमरुत्कण्डूकासमेदकृमिज्वरान्
तद्वत्प्रोक्तासिताक्षुद्राविशेषाद्गर्भकारिणी ॥

अर्थ—कंटकारी, दुःस्पर्शा, क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका, कंटालिका, कंटकिनी, धावनी और बृहती, ए संस्कृत नाम । हिं. कटेरी, बडीकटेरी, भटकटैया, रेंगनी, राजपूतानेमें, कटाली, कट्याली, बं. कंटकारी, म. रिंगणी, का. नेलगुळ्ळ, गु. भोरींगणी, तै. श्वटीमुलंजा, उडि. कंटमारिष, ला. सोलानम् इंडीकम् कहतेहैं । यह क्षुपजातिकी वनस्पति है । कटेरीका दरखत पृथ्वीमें फैला हुआ होताहै । नीले रंगका फूल होताहै । और फल पीले रंगका गोल बेरसे कुछ छोटा होताहै । बृहती और कंटकारी इन दोनोंका साधारण नाम बृहती है । यह हेतु सुश्रुतने कहाहै । जैसेकि क्षुद्रा (कटेरी) और क्षुद्रभंटाकी इन दोनोंका साधारण नाम बृहती है । सपेद कटेरीके नाम । चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, क्षेत्रदूतिका, गर्भदा, चन्द्रभा, चन्द्री, चन्द्रपुष्पा और प्रियंकरी । हिं. सपेदकटेरी, म. श्वेतरिंगणी, का. बिलियनेलगुळ्ळ कहतेहैं ।गुण । कटेरी दस्तावर, स्वाद कडवा, चरपरा, दीपन, हलकी, रूक्ष, गरम और पाचक । प्रयोग । खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वादी, पीनस, श्वास, पार्श्वपीडा और हृदयरोग आदिको दूर करे । फलके गुण । दोनोंका फल स्वादमें और पाकमें चरपरा, वीर्यरेचक, भेदक, कडवा, पित्तकर्त्ता, अग्निवर्द्धक, लघु और कफवायुनाशक । प्रयोग । खुजली, खांसी, कृमि और ज्वरादि रोग निवारण करे । सपेद कटेरी गर्भकर्त्ता है । इसीको लक्ष्मणा कहतेहै । परतु सुश्रुतने शारीरक भागमें लक्ष्मणाके अन्यही लक्षण कहेहैं । तथा इसी भावप्रकाशमें आगे पृथक् कहीहै । परंतु गुणोंमें दोनों समान है । इसकी जड लेनी और जड न मिले तो पंचांग लेना । मात्रा १ मासेकी है ।

गोखरू (गोक्षुर).

गोक्षुरःक्षुरकोपिस्यात्त्रिकण्टःस्वादुकंटकः
गोकंटकोगोक्षुरकोवनशृंगाटइत्यपि ॥ ४३ ॥
पलंकषाश्वदंष्ट्राचतथास्यादिक्षुगंधिका ।
गोक्षुरःशीतलःस्वादुर्बलकृद्वस्तिशोधनः ॥
मधुरोदीपनोवृष्यःपुष्टिदश्चाश्मरीहरः ॥
प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ४५

अर्थ—गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकटक, स्वादुकंटक, गोकंटक, गोक्षुरक, वनशृंगाट (वनके सिंघाडे), पलंकषा, अश्वदंष्ट्रा और इक्षुगंधिका, ए संस्कृत नाम । हिं. गोखरू, बं. गोक्षुरी, म. गोखरूं, वेहिली, सराटी, का. दोड्डनेग्गिलु, तै. पालेरु, उडि. गोखरा, अ. वजर उलखलक, फा. तुख्मखारखसक, ला. पेडाल्यम म्यूरेक्ष कहतेहैं । गोखरू बडा और छोटा ऐसें दो प्रकारका है । एक खडा और दूसरा पृथ्वीपर फैला होय है । तहां बडा गोखरू ऊंट कटेरेके समान क्षुपजातिका वृक्ष होताहै । पत्ते इमलीके समान बारीक होतेहैं । और डालियोंपर रुआँ तथा थोडे २ अंतरपर गांठ होतीहैं । इन्हीं गांठोंपरसें पत्ते और फूल निकलतेहैं । फूल सोंफके समान पीलेरंगके होतेहै । फल छोटे, गोल तथा कांटेदार होतेहैं । प्रत्येक फलकी बाजूपर पांच २ कंगूरे और उन प्रत्येक कंगूरोंपर दो दो कांटे तथा भीतर एक बीज रहताहै । चित्रनंबर १३ का देखो । गुण । शीतल, स्वादु, बलकारक, बस्तिशोधक, मधुर, दीपन, शुक्रजनक, वायुनाशक और पुष्टकारी है । प्रयोग । पथरी, प्रमेह, श्वास, खांसी, बवासीर

और कठिन हृदयरोग इनपर देवे । गोखरूका साग वृष्य, कडवा और छिद्रोंको शुद्ध करता। प्रयोगमें इसकी जड वा फल वा पंचांग लीना जाताहै। मात्रा १ मासेकी है। *

छोटागोखरू.

क्षुद्रोपरोगोक्षुरकस्त्रिकंटकःकंठीषडंगोबहुकंटकःक्षुरः । गोकंटकःकंटफलःपलंकषाक्षुद्रक्षुरोभक्षटकश्चणद्रुमः ॥ स्थलशृंगाटकश्चैववनशृंगाटकस्तथा। इक्षुगंधःस्वादुकंटःपर्यायाःषोडशस्मृताः ॥ स्यातामुभौगोक्षुरकौसुशीतलौबलप्रदौतौमधुरौचबृंहणौ । कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौरसायनौतत्रबृहद्गुणोत्तरः ॥

अर्थ–दूसरा **क्षुद्र** (छोटा) गोखरू होताहै उसके नाम–गोक्षुरक, त्रिकंटक, कंठी, षडंग, बहुकंटक, क्षुर, गोकंटक, कंटफल [कंटकफल], पलंकष, क्षुद्रक्षुर, भक्ष [कं] टक, चणद्रुम, स्थलशृंगाट, वनशृंगाट, इक्षुगंध, स्वादुकंटक, ए छोटे गोखरूके सोलह नाम है । **गुण** । दोनों गोखरू शीतल, बलकर्ता, मीठे, बृंहण । **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह और दाहको नाश करे तथा रसायन है । इन दोनोंमें **बडा गोखरू** कि जिसको दक्षिणीगोखरू कहतेहैं वो लेना चाहिये । दोनों गोखरूओंकी **दर्पनाशक** बदाम तथा नारियलका घी है । और **प्रतिनिधी** खीरेके बीज हैं । **मात्रा** इसकी छः मासेकी है ।

लघुपंचमूल.

शालपर्णीपृष्ठपर्णीवार्ताकीकंटकारिका ॥ गोक्षुरःपंचभिश्चैतैःकनिष्ठंपंचमूलकम् ॥४६ पंचमूलंलघुस्वादुबल्यंपित्तानिलापहम् । नात्युष्णंबृंहणंग्राहिज्वरश्वासाश्मरीप्रणुत् ॥

अर्थ–शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटीकटेरी, बडीकटेरी और गोखरू । इन पाचोंका नाम **लघुपंचमूल** है । **लघुपंचमूलके गुण** । हलका, स्वादु, बलकारी, वातपित्तनाशक, अति उष्णतारहित और पुष्टिकारी है । **प्रयोग** । **लघुपंचमूल** ज्वर, खांसी, पथरी आदिरोगोंको दूर करे ।

दशमूल.

उभाभ्यांपंचमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम् । दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः । तंद्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ४८

अर्थ–लघुपंचमूल और बृहत्पंचमूल, इन दोनोंको मिलानेसें **दशमूल** कहाताहै । **दशमूल** त्रिदोषको नष्टकरे । **प्रयोग** । श्वास, खांसी, मस्तकरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, अफरा, पसवाडेकी पीडा और अरुचि इनको दूर करेहै ।

जीवंती (डोडी) का साग.

जीवंतीजीवनीजीवाजीवनीयामधुस्रवा ॥ मंगल्यनामधेयाचशाकश्रेष्ठापयस्विनी ॥ ४९ जीवंतीशीतलास्वादुःस्निग्धादोषत्रयापहा॥ रसायनीबलकरीचक्षुष्याग्राहिणीलघुः ॥५०

अर्थ–जीवंती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा, मंगल्यनामधेया, शाकश्रेष्ठा और पयस्विनी ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** डोडी, **बं.** जीवंती, **म.** लहान हरणवेल, **का.** किरिय दाले, **गु.** मिठीखरखोडी कहतेहै । यहभी क्षुप जातकी **कहडी** है । इसकी डाली तोडनेसें दूधके माफिक रस नि-

* **चरकसंहितामें**—गोखरूको मूत्रविरेचनीय, शुक्रदोषहर और शोथहर मानतेहैं ।

सुश्रुतसंहितामें—इसको श्लेष्मसंशमन, पित्तशमन और मूत्रदोषनिवारक मानाहै ।

यूनानी हकीम—पत्ते और जडका क्वाथ मूत्र अधिक करनेको देतहैं, और उसके बीज अन्य रोगोमें तथा जलंधर और प्रमेहके रोगमें देना कहतेहैं । वह गोखरू तथा उसके वृक्षको शीतल, पेशाव वढानेवाला, पौष्टिक और कामोत्तेजक मानेहैं ।

अन्यसंहितावाले—इसकी छालको और पत्तोंको कफहर, दीपन, गुल्मशूलनाशक और कृमिहर कहतेहैं ।

कवला है । फल कंटूरीके समान ऊपरसैं पतला और नीचे मोटा होता है । गुण । शीतल, स्वादु, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, रसायनी, बलकारक, नेत्रोंको हितकर्ता, ग्राही और हलकी । प्रयोग । रक्तपित्त, क्षय, दाह और ज्वरदोषको दूर करे । इसका फल लिया जाताहै । मात्रा ४ मासेकी है ।

दूसरी बडी जीवंती.

जीवंत्यन्यावृहत्पूर्वापुत्रभद्राप्रियंकरी ।
मधुराजीवपृष्ठाचवृहज्जीवायशस्करी ॥
एवमेववृहत्पूर्वारसवीर्यबलान्विता ।
भूतविद्राविणीज्ञेयावेगाद्रसनियामिका ॥

अर्थ-दूसरी जीवंती, बडी जीवंती कहातीहै । उसके संस्कृत नाम-पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा जीवपृष्ठा, वृहज्जीका और यशस्करी । गुण । जो गुण छोटी जीवंतीमें हैं वही रस, वीर्य और बल बडीमें जानने । यह भूतबाधाको दूर करे और तत्काल पारेको बंधन (बांधने) वाली है ।

स्वर्णजीवंती.

हेमाहेमवतीसौम्यातृणग्रंथिर्हिमाश्रया ।
स्वर्णपर्णीसुजीवंतीस्वर्णजीवासुवर्णिका ॥
हेमपुष्पीस्वर्णलतास्वर्णजीवंतिकाचसा ।
हेमवल्लीहेमलतानामान्यस्याश्चचतुर्दश ॥
स्वर्णजीवंतिकावृष्याचक्षुष्यामधुरातथा ।
शिशिरावातपित्तासृग्दाहजिद्बलवर्द्धिनी ॥

अर्थ-हेमा, हेमवती, सौम्या, तृणग्रंथि, हिमाश्रया, स्वर्णपर्णी, सुजीवंती, स्वर्णजीवा, सुवर्णिका, हेमपुष्पी, स्वर्णलता, स्वर्णजीवंतिका, हेमवल्ली और हेमलता ए चौदह नाम स्वर्णजीवंतीके है । हिं. पीळीजीवंती, क. होगहाळे । गुण । स्वर्णजीवंती वृष्य, नेत्रोंको हितकारी, मीठी, शीतल, वातपित्त, रुधिरके विकार और दाह इनको दूर करेहै । तथा बलको बढातीहै ।

डोडी.

विषमुष्टिःकेशमुष्टिःसुमुष्टिरणुमुष्टिकः ।
क्षुपडोडिसमाख्यकोमुष्टिपंचाभिधःस्मृतः ॥
विषमुष्टिःकटुस्तिक्तोदीपनःकफवातहृत् ।
कंठामयहरोरुच्योरक्तपित्तार्तिदाहकृत् ॥

अर्थ-विषमुष्टि, केशमुष्टि, सुमुष्टि, अणुमुष्टिक और डोडीक्षुप ए पांच नाम मुष्टि अर्थात् डोडीके हैं । गुण । विषमुष्टि अर्थात् डोडी चरपरी, कडवी, दीपन, कफवातनाशक, कंठरोगको हरण कर्ता, रुचिकारी, रक्तपित्तको और दाहको करेहै ।

अन्याडोडी.

अन्याडोडीतुजीवंतीशाकश्रेष्ठासुखालिका ।
बहुपर्णीदीर्घपत्रासूक्ष्मपत्राचजीवनी ॥
डोडीतुकटुतिक्तोष्णादीपनीकफवाताजित्
कंठामयहरारुच्यारक्तपित्तार्तिदाहनुत्
रक्तपित्तंक्षयंहंतिदाहहृत्स्वरशोधनी ॥

अर्थ-दूसरी जो डोडी होतीहै उसको जीवंती, शाकश्रेष्ठा, सुखालिका, बहुपर्णी, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मपत्रा और जीवनी कहतेहै । का. कडसिगे कहतेहैं । गुण । डोडी चरपरी, कडवी, गरम, दीपनी, और कफवातके रोगोंको, कंठके रोगोंको, रक्तपित्तकी पीडा और दाहको दूर करे, तथा रुचिको प्रगट करती है । बहुतसैं वैद्य जीवंतीके नामसैं डोडी लेतेहैं सो महाभूल है ।

मुद्गपर्णी.

मुद्गपर्णीकाकपर्णीसूर्यपर्ण्यल्पिकासहा ॥
काकमुद्गाचसाप्रोक्तातथामार्जारगंधिका ५१
मुद्गपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वादुश्चशुक्रला ।
चक्षुष्याक्षतशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत् ।
दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यर्शोऽतिसारजित् ॥

अर्थ-मुद्गपर्णी, काकपर्णी, सूर्यपर्णी, अल्पिकासहा, काकमुद्गा और मार्जारगंधिका ए संस्कृत नाम है । हिं. मुगवन, बं. मुगानि (वनमाषा), म. रानमुग, का. काहेसरु, गु. जंगली मग, तै. कारु पेसारा, ला. फेशि पोलस्स कहतेहैं । यहभी क्षुपजातिकी वनस्पति है । इसके मूंगकेसे पत्ते होतेहैं । और इसमें बिल्ली जानवरकीसी दुर्गंध आती है । यह एक प्रकारकी वनकी मूंग है ।

गुण । शीतल, रूक्ष, कडवी, स्वादु, शुक्रजनक, नेत्रोंको हितकारी, ग्राही, हलकी और त्रिदोषनाशक । प्रयोग । घाव, सूजन, ज्वर, दाह, संग्रहणी, बवासीर, अतिसार, खासी, वातरक्त और क्षय आदिरोगको दूर करे । इसका पंचांग लिया जाताहै । मात्रा २ मासेकी है ।

माषपर्णी.

माषपर्णीसूर्यपर्णीकांबोजीहयपुच्छिका ॥
पांडुलोमशपर्णीचकृष्णवृतामहासहा ॥५३॥
माषपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलास्रकृत् ।
मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्रजित् ॥

अर्थ-माषपर्णी, सूर्यपर्णी, कांबोजा, हयपुच्छिका, पांडु लोमशपर्णी, कृष्णवृता और महासहा ए संस्कृत नाम । हि. मषवन, बं माषानी (वनमाष), म रानउडीद, तै. रानोडिदु, का. काउदु, गु जगली अडद, ता. मेजिआ । यह क्षुप जातिकी वनस्पती है । यह वनके उडदका क्षुप है । इसकी जड बडी कठोर होती है । डडी काले रगकी होतीहै । पत्तोपर रुए होतीहैं और पीले होतेहै । गुण । शीतल, कडवी, रूक्ष, शुक्रजनक, बलकर्त्ता, रुधिरकर्त्ता, मधर और ग्राही । प्रयोग । सूजन, वातपित्त, ज्वर और रुधिरके विकारोंको दूर करे । इसका सर्वांग ग्रहण करा जाताहै । मात्रा २ मासेकी है ।

अष्टवर्गःसयष्टीकोजीवंतीमुद्गपर्णिका ॥
माषपर्णीगणोऽयंतुजीवनीयगणःस्मृतः ॥५५॥
जीवनोमधुरश्चापिनाम्नासपरिकीर्तितः ॥
जीवनीयगणःप्रोक्तःशुक्रकृद्बृंहणोहिमः ॥५६॥
गुरुर्गर्भप्रदःस्तन्यकफकृत्पित्तरक्तहृत् ॥
तृष्णाशोषंज्वरंदाहंरक्तपित्तंव्यपोहति॥५७॥

अर्थ-पूर्वोक्त अष्टवर्ग (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि) और मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवती और मुलहटी, इन बारह औषधोंको जीवनीय गण कहतेहै । और इनमेंसे ऋद्धिवृद्धिको निकालकर बाकीकी दश द्रव्योंको जीवनीय दशक कहतेहैं । यह भी जीवनीय गणमें गिना जाताहै । गुण । जीवनीयगण मधुर, शुक्रकर्त्ता, बृंहण, शीतल, भारी, गर्भकर्त्ता, स्तनोंमें दूध बढानेवाला, कफकारी और रक्तपित्तको हरण करे । प्रयोग । तृषा, शोष, ज्वर, दाह और रक्तपित्त, इनको दूर करे ।

सपेदअरड, लालअरड

शुक्लएरंडआमंडश्चित्रोगंधर्वहस्तकः ॥
पंचांगुलोवर्द्धमानोदीर्घदंडोऽप्यदंडकः ॥५८
वातारिस्तरुणश्चापिरुबूकश्चनिगद्यते ॥
रक्तोऽपरोरुबूकःस्यादुरुबूकोरुबूतथा ॥ ५९ ॥
व्याघ्रपुच्छश्चवातारिश्चंचुरुत्तानपत्रकः ॥
एरंडयुग्ममंमधुरमुष्णंगुरुविनाशयेत् ॥ ६० ॥
शूलशोथकटीबस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ॥
ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ॥६१
एरंडपत्रंवातघ्नकफकृमिविनाशनम् ॥
मूत्रकृच्छ्रहरंचापिपित्तरक्तप्रकोपनम् ॥ ६२ ॥
वातार्यग्रदलंगुल्मबस्तिशूलहरंपरम् ॥
कफवातकृमीन्हन्तिवृद्धिंसप्तविधामपि॥६३॥
एरंडफलमत्युष्णंगुल्मशूलानिलापहम् ।
यकृत्प्लीहोदराशोंघ्नंकटुकंदीपनंपरम् ।
तद्वन्मज्जाचविड्भेदीवातश्लेष्मोदरापहः ॥

अर्थ-श्वेत एरंडके नाम-शुक्ल (सादा) एरंडको आमड, चित्र, गधर्वहस्तक, पचांगुल, वर्द्धमान, दीर्घदड, व्यडक, वातारि, तरुण और रुबूक । हिं अड, अरड, अडीआ, रा. एरडोली, बं शुक्ल एरड, भ्यारेन्डा, म एरड, का एरडू आडलके, गु. एरडो, तै आमुडामु, अ खरुप, फा. वेदअजीर, तुरकीमें करकच, ला. रिसिनस् Ricinus, इं. केस्टाइल कहतेहै । लाल एरंडके नाम रुबूक, उरुबूक, रुबू, व्याघ्रपुच्छ, वातारि, चचू और उत्तानपत्रक । हिं. लालअड, बं. लोहित एरड । अडका वृक्ष मजरीयुक्त, पुष्प हस्तपर्ण और चित्रविचित्र फलवाले होतेहैं । इसके प्रत्येक डोडेमें तीन ३ अडी निकलती है और वो डोडा कांटेवाले अथवा बिना-कांटेकेभी होते हैं । और उनके ऊपर बहुतसे दर्मासे ३ होतेहैं । चित्रनंबर १४ देखो ।

गुण । दोनों प्रकारके अरंड मधुर, गरम और भारी । अंडके पत्ते वातनाशक, कृमिनाशक और रक्तपित्तको कुपितकर्त्ता । अंडके फल(अंडी) अत्यंत गरम, वातनाशक, चरपरे और अत्यंत अग्नि-दीपक हैं । प्रयोग । दोनों प्रकारके अंड शूल, सूजन, कमर और मस्तकरोग, उदररोग, ज्वर, ब्रध्न (बद), श्वास, कफवृद्धि, अफरा, खांसी, कोढ और आमवात रोगोंको नाश करे । अंडके पत्ते मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे, इसके आगेके कोमल २ पत्ते गोला, बस्तिशूल, कफ, वादी, कृमि और सात प्रकारकी अंडवृद्धिको दूर करे । गोला, शूल, यकृत, प्लीहा, उदररोग और अर्श-रोग इन रोगोंमें फल देना चाहिये । अंडकी मज्जा भेदक, वादी, कफ और उदररोगको नष्ट करे । प्रयोगमें इसकी जड, पत्ते, तेल और बीज लिये जातेहै । मात्रा २ मासेकी है ।

त्रीणिषण्नवबीजानिमधुनाक्तमशोलिहन् ।
देहशुद्धिलभेद्देहीरेचनात्कफवातयोः ॥
निद्राप्रदंकज्जलमंजनस्यात्त्रिदोषक-
द्रूभयताक्ष्यतुल्यम् । अहृद्यमत्यंतकृतं-
कतीरात्वमुष्यदर्पप्रहृतीरयंति ॥
बदवमूलकबीजंस्यान्निर्गुंडीबीजमित्यपि ।

अर्थ-अंडीके तीन बीज, वा छः बीज, अथवा नौ बीजोंको पीस सहतमें मिलायके चाटे तो कफ और वातको रेचनकर इस प्राणीकी देहशुद्धि होवे । अंडीको लोहेकी सलाईमें छेदके जलायकर कज्जल पाडे तो जिसको नीद न आतीहो उसको नीद आवे । और त्रिदोषरूप सांपके मारनेको गरुडके समान है । यह अत्यंत हृदयको अप्रिय है । इसके दर्पको नाश कर-नेवाला कतीरा है । और प्रतिनिधि मूलीके बीज अथवा निर्गुंडीके बीज है ।

बडा अंड.

स्थूलैरंडोमहैरंडोमहापंचांगुलादिकः ।
स्थूलैरंडोगुणाढ्यःस्याद्रसवीर्यविपाकिषु ॥

अर्थ-स्थूलएरंड, महाएरंड और महापंचांगुल, इत्यादिक इस बडे अंडके नाम हैं । म. थोर एरंड कहते है । यह बडा अंड रस, वीर्य और विपाकमें पहले अंडके समान गुणवाला जानना ।

सपेदलालआक.

अलर्कोगणरूपःस्यान्मन्दारोवसुकोऽपिच ॥
श्वेतपुष्पःसदापुष्पःसबालार्कःप्रतापसः ॥६५
रक्तोऽपरोऽर्कनामास्यादर्कपर्णोविकीरणः ॥
रक्तपुष्पःशुक्लफलस्तथास्फोटःप्रकीर्तितः॥६६
अर्कद्वयंसरंवातकुष्ठकंडूविषव्रणान् ।
निहंतिप्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरशकृत्कृमीन् ॥
आलर्ककुसुमंवृष्यंलघुदीपनपाचनम् ॥
अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम्॥६८
रक्तार्कपुष्पंमधुरंसतिक्तम्
कुष्ठकृमिघ्नकफनाशनंच ॥
अर्शोविषहंतिचरक्तपित्तम्
संग्राहिगुल्मेश्वयथौहितंतत् ॥ ६९ ॥
क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णंस्निग्धंसलवणंलघु ॥
कुष्ठगुल्मोदरहरंश्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ ७० ॥
अर्कमूलंकफोत्सारिस्वेदनंवामनंतथा ।
श्वासकासप्रतिश्यायानतीसारंप्रवाहिकाम्॥
रक्तपित्तंशीतपित्तंग्रहणींचाप्यसृग्दरम् ।
नाशयेत्कफजान्रोगान्विषकीटसमुद्भवम् ॥

अर्थ-श्वेतअर्कके नाम अलर्क, गणरूप, मदार, वसुक, श्वेतपुष्प, सदापुष्प, बालार्क और प्रतापस, हिं. सपेदआक, सपेद अकौआ, पूरवमें मदार, बं. श्वेतआकद, म. रुई, का. यके, गु. आकडो, तै तेलाजल्लेडे, फा. ख़ुर्क, अ. उषर, ला. केलोट्रोपीस जाइगाटिया calotropis gigautea । रक्तार्कके नाम-अर्कपर्ण, विकीरण, रक्तपुष्प, शुक्लफल और स्फोट । हिं. आक, अकौआ, आकडा और सब नाम श्वेत आकके समान जानने । गुण । दोनों आक दस्तावर और वायुनाशक । प्रयोग । इनके सेवन करनेसें कोढ, खुजली, विष, व्रण, तिल्ली, गोला, बवासीर, कफ, उदररोग और मलकी कृमि नष्ट हो । सपेद आकका फूल बलकारक, हलका, अतिदीपन और पाचक । प्रयोग । इससे अरुचि,

प्रसेक (मुखसैं लारका बहना) बवासीर, खांसी और श्वास ए दूर होवैं । लाल आकका फूल-मधुर, कडवा, कफनाशक और संग्राही । प्रयोग । यह कोढ, कृमि, विष, रक्तपित्त, गोला और सूजनरोगमें देवे । आकका दूध कडवा, गरम, स्निग्ध, निमकीन, रसयुक्त और श्रेष्ठविरेचक है । इसके द्वारा कोढ, गोला और उदररोग नष्ट होय । आककी जड कफको निकालनेवाली, पसीने लानेवाली और वमनकारक । प्रयोग । इसके सेवन करनेसैं, श्वास, खांसी, सरेकमां, अतिसार, प्रवाहिका, रक्तपित्त, शीतपित्त, संग्रहणी, प्रदर और कफजन्य समस्त व्याधियोंको दूर करे । इसको घिसकर लेप आदि करनेसैं विच्छू आदिके विषको दूर करे । *

राजार्क.

राजार्कोवसुकोलर्कोमंदारोगणरूपकः
काष्ठीलश्चसदापुष्पोंशेयोश्चवसुसंमितः ॥

* चक्रदत्तमें—लिखताहै कि आककी जड़की छाल देनेसे देहके भीतरका प्रवाही अधिकताके साथ निकलैहै । त्वचाके रोगमें तथा पेटके भीतरके अवयव मोटे होगए होय तथा पेटके जीव, खाँसी, जलंधर आदिरोगोंमें उत्तम असर करताहै ।

आकका दूध देनेसे तीव्र जुलाब लगताहै और देहमें लगानेसे चमडी लाल हो जाती है । इसके फूल पाचनशक्ति वढानेवाले, कुव्वत देनेवाले, पेटका दर्दनाशक निश्चय करे गएहैं । तथा खाँसी, श्वास, सरेकमां और अहचिमें देतेहैं । इसकी जडकी छाल आकके दूधमें भिगोयकै सुखाय लेवे फिर इस छालको आगमें डालके इसकी धूनी श्वासरोगमें लेनेसे खाँसी जाती रहे । श्लीपद और अंडवृद्धिके रोगमें जडकी छाल छाछमें पीसके लगानेसे आराम होय ।

मीरमुहम्मद हुसेन—कहताहै आकका दूध त्वचाको लाल करके ब्लिस्टर (फफोला) उठानेवाला, कफको काढनेवाला, वालोंको नष्ट करता तथा समग्र जातके दूध सदृश रसोंमें सबसे अधिक तेज गिना जाताहै । औषधके तरहसे दादको मिटावे, बवासीरको जडसें खोयदे और दांत पोले पडगए होय और दर्द होता होय तो इसका दूध सहतके साथ मिलायके उसमें थोडीसी रुई भिगोयके दांतके नीचे रखा जाता है ।

मीर अबदुल् हमीद—आकके दूधको कोढके रोगमें तथा कलेजा और तिल्ली बढगई होय तो देनेकी सलाह देता है, उसके देनेकी यह रीति है कि, नाजके दानोंको उसमें भिगोयके सुखायले इने खानेको देय । संधिका दर्द और सूजनके ऊपर लगानेको दूध साधारण इलाज तरीके वर्त्तावमें आताहै । तथा पत्ते थोडेसे सेककर उसी काममें आतेहैं । शरीरके जिस भागमें लकवा मार गया होय उसी भागपर पत्ते तेलमें सेककर उस तेलको लगावे, घावमें अंकुर न आता होय तो सूखे पत्तोंका चूर्ण बुरकनेसे बहुत जल्दी अंकुर भर आताहै ।

डा० पन्सली—कहताहै कि आकके पत्ते और जड आदिमेंसे जो दूधके समान रस निकलताहै वह सुखानेके वाद देनेसे बहुत जल्दी जुलाब लाता है । और शरीर सुधारनेवाला जाना गयाहै । तथा तामिलवैद्य इसे सफेद कोढमें अत्यंत गुणकारी गिनते हैं ।

मि० प्लेफेर—लिखताहै कि छालमें शरीर सुधारनेका, जागृत करनेका और शरीरमेंसे विगाड निकालनेका गुण है ।

डा. डीमक—कहताहै कि छालकी वनिस्वत दूध या रसको सुखायके देनेसे अधिक और उत्तम असर करताहै ।

डा. डंकनके मतसे इसमें उलटी लानेका गुण रहताहै ।

चरकसंहितामें—इसको भेदनीय, पसीने लानेवाला, वमन लानेवाला, कफहर, योनिदोषहर, आस्थापन (पिचकारी मारनेका उपयोगी) तथा इसके बीज मूत्र लानेवाले निश्चय करे गएहैं ।

सुश्रुतसंहितामें—इसको कृमिहर, व्रणशोधन और वातविकारनाशक कहाहै ।

राजार्कः कटुतिक्तोष्णः कफमेदोविषापहः ।
वातकुष्ठव्रणान्हन्तिशोफकंडूविसर्पनुत् ॥

अर्थ-राजार्क, वसुक, अलर्क, मंदार, गणरूपक, काष्ठील और सदापुष्प ए आठ नाम हैं । गुण । राजार्क-चरपरा, कडवा, गरम, कफ, मेदा, विष, बादी, कोढ, सूजन, खुजली और विसर्परोग इनको नष्ट करे ।

श्वेतमंदार.

श्वेतमंदारकस्त्वन्यःपृथ्वीकुरबकःस्मृतः ।
दीर्घपुष्पःसितालर्कोदीर्घात्यर्कशराह्वयः ॥
श्वेतमंदारकोत्युष्णस्तिक्तोमलविशोधनः ।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान्हंतिकृमीनत्यंतदारुणान् ॥

अर्थ-एक सपेद मंदार होताहै उसको पृथ्वी, कुरबक, दीर्घपुष्प, सितअलर्क, दीर्घ और अतिअर्क ए पांच नाम है । सपेदमंदार गरम, कडवा, मलको शोधन कर्ता, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, इनको तथा अत्यंत दारुण कृमियोंको नष्ट करे ।

सेहुंड.

सेहुंडःसिंहतुण्डःस्याद्वज्रीवज्रद्रुमोऽपिच ॥
सुधासमंतदुग्धाचस्नुकूस्त्रियांस्यात्स्नुहीगुडा
सेहुंडोरेचनस्तीक्ष्णोदीपनःकटुकोगुरुः ॥
शूलमष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान्
उन्मादमोहकुष्ठार्शःशोथमेदोऽश्मपांडुताः ॥
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषंहरेत् ॥७३॥
उष्णवीर्यस्नुहीक्षीरंस्निग्धंचकटुकंलघु ॥
गुल्मिनांकुष्ठिनांचापितथैवोदररोगिणाम् ॥
हितमेतद्विरेकार्थेयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥७४॥

अर्थ-सेहुंड, सिंहतुंड, वज्री, वज्रद्रुम, सुधा, समंतदुग्धा, स्नुक्, स्नुही और गुडा, ए संस्कृत नाम । हिं. थूहर, सैंहुड, बं. सिजवृक्ष, मनसागाछ, म. निवडुंग, दे. सावर, गु. थोर, क. निवडुंग, तै. चेमुडु, फा. लादनाम, अ. जकुम्, इं. युफोर्व्या कहतेहैं । थूहर छः प्रकारकी होतीहै । कांटेवाला थूहर, तिधारा थूहर, चौधारा थूहर, नागफनी थूहर, खुरासानी थूहर और विलायती थूहर, इनमें खुरासानी थूहरका दूध जहरीला है । इसके सेवन करनेसें दस्त और उलटी होतीहै । तथा दाह होकर मृत्यु होयहै । इसको बादीके रोगपर तथा संधियोंके दरदपर चुपडनेसे तत्काल अपना फायदा दिखाताहै । और बाकी दूसरी जातिके थूहर यकृत, तिल्लीकी गांठके गलानेके वास्ते देतेहैं । तथा इसके पत्ते फोडा पकनेको उसपर बांधतेहैं । थूहर सात उपविषोंमें हैं । इसका वृक्ष लंबा होताहै, पत्ते दो दो अंगुल लंबे होतेहैं । इसके चारों तरफ कांटे होतेहै । गुण । रेचक, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, कटु और भारी । प्रयोग । इसके सेवन करनेसे शूल, अष्ठीलिका, अफरा, कफगोला, उदररोग, बादी, उन्माद, मूर्च्छा, कोढ, बवासीर, सूजन, मेदरोग, पथरी, पांडुरोग, व्रण, सूजन, ज्वर, तिल्ली, विष और दूषीविष ए दूरहों । थूहरका दूध । उष्णवीर्य, स्निग्ध, कटु और हलका । प्रयोग । यह गोला, कुष्ठ और उदररोग ग्रस्तकेवास्ते हितकारी विरेचन है । और जो बहुत दिनके रोगी हैं उनको हितकारी है । इसके दूधकी मात्रा १ मासेकी है ।

तिधारा थूहर.

स्नुहीरन्यस्त्रिधारःस्यात्तिस्रोधारास्नुहीश्चस ।
पूर्वोक्तगुणवानेषविशेषाद्रससिद्धिदः ॥

अर्थ-दूसरी त्रिधार, तिस्रोधारा स्नुही है इसके गुण पूर्वोक्त थूहरके समान हैं, परंतु विशेषकरके रससिद्धी अर्थात् पारदका बद्धक है ।

शातला.

शातलासप्तलासाराविमलाविदुलाचसा ॥
तथानिगदिताभूरिफेनाचर्मकषेत्यपि ॥७५॥
शातलाकटुकापाकेवानलाशीतलालघुः ।
तिक्ताशोथकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तजित् ॥

अर्थ-शातला, सप्तला, सारा, विमला, विदुला, भूरिफेना और चर्मकषा, ए संस्कृत नाम । हिं. सातला, बं. सिजविशेष, म. पीतनिवडुंग, दे. शिकेकाई, कों. शेरवृक्ष, का. चळिळसोनुळी, हिरियचटकनल, गु. सीकेकाई, चीकाखोई, ला. एकेशिआ कानसीना-यह भी थूहरका भेद है । इसमेंसें पीलेरंगका दूध निकलता है । स्वरूप । यह

काँटेवाली बेल खैरके पत्तेके समान पत्ते होते है। फूल पीला होताहै। उसमें चपटी फली लगतीहै। और यह रीठेकी जगह वर्त्ती जातीहै। इसके भीतर काले बीज होतेहैं। गुण। पाकमें कटु, वातकारी, शीतल, हलकी और कडवी। प्रयोग। सूजन, कफ, अफरा, पित्त, उदावर्त्त और रक्तदोषको दूर करे। इसके दूधकी मात्रा २ मासेकी है। इसको बाल साफ करनेके वास्ते माथेमें डालते हैं।

कंथारी.

कंथारीकंथरीकंथादुर्धर्षातीक्ष्णकंटका। तीक्ष्णगंधाक्रूरगंधादुःप्रवेशाष्टकाभिधा॥ कंथारीकटुतिक्तोष्णाकफवातनिकृंतनी। शोफघ्नीदीपनीरुच्यारक्तग्रंथिरुजापहा॥

अर्थ-कंथारी, कंथरी, कंथा, दुर्धर्षा, तीक्ष्णकंटका, तीक्ष्णगंधा, क्रूरगंधा, दुःप्रवेशा, ए आठ नाम कंथारीके हैं। गुण। कंथारी चरपरी, कडवी, गरम, कफवात और सूजनको नाश करे। जठराग्निको दीपन करे। रुचिकारी, रुधिरविकार, गांठकी पीडाको दूर करे है।

कलिहारी.

कलिहारीतुहलिनीलांगलीशक्रपुष्पिका॥ विशल्याग्निशिखानंतावह्निवक्त्राचगर्भनुत्॥ कलिहारीसराकुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित्॥ सक्षाराश्लेष्मजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच॥ तीक्ष्णोष्णाकृमिहृल्लघ्वीपित्तलागर्भपातिनी॥

अर्थ-कलिहारी, हलिना, लांगली, शक्रपुष्पिका, विशल्या, अग्निशिखा, अनंता, वह्निवक्त्रा और गर्भनुत्, ए संस्कृत नाम। हिं. कलियारी, करिहारी, कलहिंस, बं. ईशलांगला, म. कललावी, दे. कलावी, क्रो. खड्यिानाग, का. लांगुली, लांगुलिका, राकागारि, गु. कलगारी, इं. बुल्फसेन, ला. एकोनाइटम् नेपिलम् कहते है। यह सात उपविषोंमें एकप्रकारका विष है। गुण। दस्तावर, क्षारगुणविशिष्ट कफनाशक, कडवी, चरपरी, कषेली, तीक्ष्ण, उष्ण, कृमिघ्न, हलकी, पित्तवर्द्धक और गर्भस्रावकारक। प्रयोग। कोढ, सूजन, बवासीर, व्रण और शूलरोगको नष्ट करे। इसकी जड प्रयोगमें लेते हैं। मात्रा ६ रत्तीकी है।

सपेद और लाल कनेर.

करवीरःश्वेतपुष्पःशतकुंभोऽश्वमारकः॥ द्वितीयोरक्तपुष्पश्चचंडातोलगुडस्तथा॥७९ करवीरद्वयंतिक्तंकषायंकटुकंचतत्॥ व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम्॥ वीर्योष्णंकृमिकंडुघ्नंभक्षितंविषवन्मतम्॥ ८०

अर्थ-करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुंभ, अश्वमारक, ए श्वेतकरवीरके नाम। हिं. सपेद कनेर, बं. श्वेतकरवी, म. श्वेतकणेर, का. बाकर्णालिगे, गु. धोलीकणेर, इं. ओलीआंडर कहतेहैं। रक्तपुष्प, चंडात, लगुड, ए रक्तकरवीरके संस्कृत नाम। हिं. लालकनेर, बं. रक्तकरवी, म. तांबडीकणेर, का. केंगणलिंग. गु. रातीकणेर, तै. कानेरचेट्टु, अ. सुमुल, फा. खरजेहरा. इं. अलियंडर। कनेर चार जातिकी है। एक सपेद फूलकी, दूसरी लाल फूलकी, तीसरी पीले फूलकी और चौथी गुलाबी फूलकी होती है। यहभी सात उपविषोंमें एकप्रकारका उपविष है। गुण। दोनों कनेर कडवी, कषेली, कटु और उष्णवीर्य। प्रयोग। व्रण, नेत्रपीडा, कोढ, घाव, कृमि और खुजली आदिरोगको दूर करे। और इसको भक्षण करे तो विषके समान प्राण हरण करे।

पीलीकनेर और कालीकनेर.

पीतकरवीरकोऽप्यपीतप्रसवःसुगंधिकुसुमश्च। कृष्णस्तुकृष्णकुसुमश्चतुर्विधोऽयंगुणेतुल्यः॥

अर्थ-पीली कनेरका फूल पीला होताहै। उसको सुगंधिकुसुमभी कहतेहैं। और काली कनेरका फूल कालेरंगका होताहै। इसप्रकार चारप्रकारकी कनेर है। परंतु कालेरंगकी कनेर हमने नहीं देखी अलबत्ते गुलाबीरंगकी तो देखीहै।

धतूरा.

धत्तूरधूर्तधुत्तूराउन्मत्तःकनकाह्वयः॥ देवताकितवस्तूरीमहामोहीशिवप्रियः॥८१॥ मातुलोमदनश्चास्यफलेमातुलपुत्रकः॥ धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत्॥८२॥ कषायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशकः॥ उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकंडूकृमिविषापहः॥८३॥

अर्थ—धत्तूर, धूर्त, धतूरा, उन्मत्त, देवता, कितव तूरी, महामोही, शिवप्रिय, मातुल और मदन इतने और जितने संस्कृतमें सुवर्णवाचक शब्द हैं सब धतूरेके संस्कृत नाम जानने । इसके फलको मातुलपुत्रक कहतेहैं । हिं. धतूरा, बं. धुतुरा, म. धोतरा, धोत्रा, का. मदकुणिके, तै. नाल्लाउम्मीते, अ. जोजअलासिल, फा. तातूरह, इं. इस्टेमुनियम, ला. इस्ट्रेमुनियाई कहतेहैं । स्वरूप । धतूरेके पत्ते मध्यम कदके होते हैं। फूल सपेद लंबे आकारका होताहै । उसके पांच विभाग होतेहैं । उसमें पांच पुंकेशर और एक स्त्रीकेशर होतीहै । उसकी बाहरकी ढकनेकी पांखडी पांच लीलेरंगकी होतीहैं । फल गोलाकार, कांटेदार, ऊपर टोपीवाला और भीतर बहुतसे मिरचकेसे बीजवाला होताहै । चित्र नंबर १४ का देखो । गुण । मादक (मस्तकर्त्ता) वर्णकर्त्ता, अग्निकारक, वातजनक, कषेला, मधुर, कडवा, गरम, भारी, विषनाशक, पीडानिवारक, निद्राकर्त्ता, मूत्रवर्धक । नेत्रके ऊपर चारों ओर इसका लेप करनेसे नेत्रका तारा फैलताहै । प्रयोग । ज्वर, कुष्ठ, कफकी वृद्धि, खुजली, जूंआ, लीख, आदि कीडा और व्रण इनको नष्ट करे । [इसका धूम्रपान करैतो तत्काल श्वासको दूर करैहै ।] यहभी उपविषोंमे है । प्रयोगमें इसके पत्ते और फल तथा फलके बीज लिये जातेहैं । मात्रा १ रत्तीकी है ।

कार्पासमज्जावर्पघ्नोनस्येप्राशोबुधैःस्मृतः ।
क्षीरंस्वभावोष्णमथाज्यपानम् ।
दर्पघ्नमेतस्यबुधावदन्ति ॥

अर्थ—धतूरेके दर्पनाशक अर्थात् मदके दूर करनेवाले, बिनोलेकी मिंगी है । उसको जलमें पीसके नाश देवे, और पिलावे तथा तत्कालका दुहाहुआ दूध और घी मिलायके पिलावे । यह रुधिरको बिगाडताहै ।

कालाधतूरा.

कृष्णधत्तूरकःसिद्धःकनकःसचिवःशिवः ।
कृष्णपुष्पोविषारातिःक्रूरधूर्त्तश्चकीर्तितः ॥

अर्थ—काले रंगका धतूरा सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, विषाराति और क्रूरधूर्त्त कहलाताहै । ए काले धतूरेके संस्कृत नाम है । कान्हडीमें करिय मदकुणिके कहतेहै ।

राजधतूरा.

राजधत्तूरकश्चाऽन्योराजधूर्त्तोमहाशठः ।
निश्रेणिपुष्पकोभ्रांतोराजस्वर्णःषडाह्वयः ॥
सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्च-
संतिधत्तूराः । सामान्यगुणोपेतास्ते-
षुगुणाढ्यस्तुकृष्णकुसुमःस्यात् ॥

अर्थ—एक राजधतूरा होताहै उसको राजधत्तूर, राजधूर्त, महाशठ, निश्रेणि, पुष्पक, भ्रांत, राजस्वर्ण ए छः नाम है । सपेद-नीले-काले-लाल-और पीले फूलके धतूरे होतेहैं इन सबमें सामान्य गुण है परंतु इनमें काले फूलका धतूरा अत्यंत गुणकारी है ।

अडूसा.

वासकोवासिकावासाभिषङ्मातास्व
सिंहिका ॥
सिंहास्योवाजिदंतास्यादाटरूषोऽटरूषकः ॥
आटरूषोवृषस्ताम्रःसिंहपर्णश्चसस्मृतः ॥
वासकोवातकृत्स्वर्यःकफपित्तास्रनाशनः ॥
तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघुःशीतस्तृडर्त्तिहृत् ॥
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ॥८६॥

अर्थ—वासक, वासिका, वासा, भिषङ्माता, सिंहिका, सिंहास्य, वाजिदंत, आटरूष, वृषताम्र और सिंहपर्ण, ए संस्कृत नाम । हिं. अडूसा, रूसा, वांसा, बं. वासक, म. अडूलसा, का. आडसोगे, तै. आडासारं, आडापाकु, तै अघडोडे, गु. अरडूसी, ला. आधाटोडा वासीका । स्वरूप । यह क्षुपजातकी वनस्पति है । उचाईमें गजडेढ गजका होताहै । इस वृक्षके लंबे पत्ते अनीदार आमे सामे चक्करमें होते हैं । फूल सपेदरंगका नागफेनके समान और फल मोगराकी कलीके समान होताहै । इसमेंसें पिस्तेके समान चारबीज निकलतेहैं और वो चपटे होतेहैं । चित्रनंबर १५ देखो । अडूसा काले रंगका दूसरा होताहै । उसमे फूल काले रंगका लगताहै । यह बडा उत्कट है । १० वर्षकी अवस्थावालेसें कम उमरवालेको नहीं देना । गुण । वातकारक, स्वर-

शोषक, कडवा, कषेला, हृद्य, हलका और शीतल । प्रयोग । कफवृद्धि, रक्तपित्त, तृषारोग, श्वास, खांसी, ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ और क्षयरोग, इनको दूर करे दांतोंको मजबूत करैहै । इसके पत्ते और फूल, प्रयोगमें लिये आतेहैं । मात्रा ४ मासेकी है । *

पित्तपापडा.

पर्पटोवरतिक्तश्चस्मृतःपर्पटकश्चसः ॥
कथितःपांशुपर्यायस्तथाकवचनामकः ॥८७॥
पर्पटोहंतिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ॥
संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः ८८

अर्थ-पर्पट, वरतिक्त, पर्पटक और जितने संस्कृतमें पांशुके और कवचके पर्यायवाचक नाम हैं सब इसके जानने । हिं. पित्तपापडा, दवनपापडा, बं. क्षेतपापडा, गु. खडसलीओ, पीठपपडो, अ. शाहतरज, फा. शाहतरा कहतेहैं । कों. थरमरे, उत्क. जडपांपुडी, इं. जस्टिसयाप्रोकंबेन्स, ला. फुमेरियापार्वीफ्लोरा । स्वरूप । यह क्षुपजातिकी वनस्पति है । इसका क्षुप बहुत छोटा होताहै । गुण । संग्राही, शीतल, कडवा, दाहनाशक, वातकर्त्ता और हलका । प्रयोग । रक्तपित्त, भ्रमरोग, तृषा (प्यास) और कफज्वर इनको दूर करे । मात्रा काढेमें १ मासे पांच रत्तीसें लेकर २॥ तोलेतककी है । चूर्णआदिमें ९ मासे लेसें २१ मासेपर्यंत लेने ।

विपक्षोनिंबुकंक्षौद्रंवदलपथ्यासनायच ।
विरेकविषयेग्राह्यानीममानानचापरे ॥

अर्थ-पित्तपापडेके मदको मारनेवाला नींबूका रस और शहत है । प्रतिनिधि इसकी मकईसनाय और हरड है । यदि इसको जुलाबमें देना होय तो इसकी जो मात्रा कही है उससें आधी लेवे ।

नीम (निंब).

निंबःस्यात्पिचुमर्दश्चपिचुमंदश्चतिक्तकः ॥
अरिष्टःपारिभद्रश्चहिंगुनिर्यासइत्यपि ॥८९॥
निंबःशीतोलघुर्ग्राहीकटुपाकोऽग्निवातनुत् ॥
अहृद्यःश्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत् ॥
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत् ॥९०॥
निंबपत्रंस्मृतंनेत्र्यंकृमिपित्तविषप्रणुत् ॥
वातलंकटुपाकंचसर्वारोचककुष्ठनुत् ॥९१॥
निंबफलंरसेतिक्तंपाकेतुकटुभेदनम् ॥
स्निग्धंलघूष्णंकुष्ठघ्नंगुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ९२

अर्थ-निंब, पिचुमर्द, पिचुमंद, तिक्तक, अरिष्ट, पारिभद्र और हिंगुनिर्यास, ए संस्कृत नाम । हिं. नीम, बं. निम, म. कडुनिंब, का. बेव, गु. लिंबडो, कों. बालंतनिंब, क. बेउ, तै. वेपा, टोयवेपु, ता. वेपुम् मरम, अ. अजाद दरख्त, फा. दरख्तहक, इं. निम्ब ट्री, ला. आकाडीरेकटा इंडीका कहतेहैं । स्वरूप । नीम दो प्रकारका होता है-कडवा और मीठा । इनमें औषधोपयोगी कडवा नीम है । इसका वृक्ष बडा होताहै, पत्ते छोटे, उनकी कोर कंगनीदार और अनीदार होतीहैं । फूल सपेद छोटा पांचपखंडीका तथा झूमकेदार होतेहै । फल अर्थात निबौरी खिरनीके माफिक होती है । इसका बीज उष्णप्र है । लकडी पीलें रंगकी होतीहै । यह वसंतऋतुमें फूलताहै । नंबर १६ का चित्र देखो । गुण । शीतल, हलका, ग्राही, पाकके समय कटु, अग्नि और वातको हरण करे, हृदयको अप्रिय श्रमको शांति करे [कोई रूक्ष, भेदीभी कहता है ।] प्रयोग । तृषा, खांसी, ज्वर, अरुचि, कृमि, व्रण, पित्त, कफ, वमन, कुष्ठ, हृल्लास और प्रमेहरोगको नष्ट करे । नीमके पत्ते नेत्रोंको हितकारी, कृमिनाशक,

* राजनिघंटमें—लिखाहै कि अडूसेके वृक्षकी छालमें कडवास है और छाल पत्तोंको दीपन, रोचक और आमनाशक वर्णन करेहैं । और इन गुणोंके कारण यह पुरानी संग्रहणी और कफके ऊपर दिया जाताहै । छालका क्वाथ दोसे लेकर तीन औंसकी मात्रामें देनेसे बदहज्मी दूर होतीहै ।

देशी वैद्य—इस छालको ज्वरकी बिमारीमें और नाताकतीमें पौष्टिक विधिसे वर्त्ततेहैं । और प्रसव होनेके बाद स्त्रियोंको इस वृक्षकी छाल तथा पत्तोंका क्वाथ करके पिलानेकी तारीफ करतेहैं ।

पित्तनाशक, विघ्न, वातकर्ता, पाकमें„कटु, सर्व प्रकारकी अरुचिनाशक और कोढरोगको नष्ट करे। नीमके फल (निंबौरी) खानेमें कडवी और पाकके समय कटु, दस्त करानेवाली, स्निग्ध, उष्ण, हलकी तथा कोढ, गोला, बवासीर, कृमि और प्रमेहरोगको नष्ट करे । इसकी छाल और कहीं पत्ते प्रयोगमें लिये जाते है। मात्रा २ मासेकी है। *

मीठानीम

कैडर्योऽन्योमहानिंबोरामणोरमणस्तथा ।
गिरनिंबोमहारिष्टशुक्तशालोलकाह्वयः ॥
कैडर्यःकटुकस्तिक्तःकषायःशीतलोलघुः ।
संतापशोषकुष्ठास्रकृमिभूतविषापहः ॥

अर्थ-एक महानिंब कैडर्य संज्ञक है, उसके रामण, रमण, गिरिनिंब, महारिष्ट, शुक्तशाल और अलकाह्वय ए संस्कृतमें नाम है । हिं. मीठानीम, कढीनीम, म. गोडनिंब, का. कयाहेबेळ, फालित महानिंबु कहते हैं। गुण। कैडर्य अर्थात् मीठानीम चरपरा, कडवा, कषेला, शीतल और हलका है । प्रयोग। संताप, शोष, कोढ, रुधिरविकार, कृमि- रोग और विषबाधाको दूर करे । [कोई कहताहै कि दाह, बवासीर, शूल, सूजन, भूतबाधा इनकोभी नष्ट करताहै ।]

वकायन (महानिंब).

महानिंबःस्मृतोद्रेकारम्यकोविषमुष्टिकः ॥
केशमुष्टिर्निंबकश्चकार्मुकोजीवइत्यपि ॥९३॥
महानिंबोहिमोरूक्षस्तिक्तोग्राहीकषायकः ॥
कफपित्तभ्रमच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् ॥
प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः ९४

अर्थ-महानिंब, द्रेका [नेता], रम्यक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निंबक, कार्मुक और जीव ए संस्कृत नाम । हिं बकाय [इ] न, ब बोकानिम, म. वकाणनिंब, कवड्यानिंब, गु बकान, ता मालाइवेतु वावेण्यम्, क महाबेव, तै गगरा विच्चटू , ला मेलिया एझेडेरेक । गुण । शीतल, रूक्ष, कडवी, ग्राही और कषेली । प्रयोग । कफपित्त, भ्रमरोग, वमन, कोढ, हृल्लास, रक्तदोष, प्रमेह, श्वास, गुल्म और बवासीर, इन सब रोगोंको वकायन दूर करे ।

* आयुर्वेदमें—नीमका वर्णन नीचे लिखेप्रमाण है । नीमकी छाल पाचक, कडवी और ग्राही है । इसके पत्तोंको गेंहूके चूनकी पुलटिश बनानेमें लेनेसे फोडेकी गाठ बैठ जातीहै । पत्तोंको पीस शीतलाके घावोंपर लगानेसे उत्तम फायदा होताहै । पत्तोंका रस पीनेसे पेटके कीडे निकल जातेहै । और कामला तथा शरीरपर होनेवाले गूमडा (गाठ या फोडो) पर दीने जातेहैं ।

वाग्भटमें—दुष्ट नासूरपर नीमके पत्ते और तिल पीसकर इसकी पुलटिश बांधनेकी तारीफ करीहै । तथा नीमके फल (निंबौरी) को जुलाब और पेटके कीडे निकालनेको लिखाहै । निंबौरीका तेल गाठवाले फोडे और कोढपर बहुत उत्तम असर करैहै ।

इंग्रजी औषधोंमें—नीमकी छाल ज्वरनाशक, और पत्ते त्वचारोगनाशक गिने गएहैं । तथा घावपर नीमके पत्तोंको औटायके उस पानीसे सेक करनेको कहतेहै । तथा उससे सूजन आएबिना जल्दीसे पककर अंकुर आय जाताहै । कौनैनके बदले ज्वरके ऊपर तथा सन्निपातपर नीमकी छालको पानीमें भिगोयके पिलानेकी प्रशंसा करतेहैं ।

मेजर डीमक—लिखताहै नीमके वृक्षमेंसे कभी २ अपनेआप रस झडने लगताहै । वह पुराने घावपर और नासूरपर अद्भुत गुण करताहै । उसके पत्तोंका क्वाथ औटायको पिलानेसे कोलरा (हैजा) के रोगमें फायदा हुआथा, पत्तोंका रस तिजारीज्वर, बदहजमी और संधिके रोगमें काम आताहै ।

चरकसंहितामें—नीमको दीपनीय और खुजलीनाशक गिनाहै ।

सुश्रुतसंहितामें—इसको कफवातहर और शरीरके किसी भागपर सूजन आनेकर जलन होती होय उसके दूर करनेवाला मानतेहैं । कोमल फलको प्रमेहके रोगमें उपयोगी गिनतेहैं । तथा ज्वरकी गरमी दूर करता कहतेहैं ।

फरहद (पारिभद्र).

पारिभद्रोनिंबतरुर्मंदारःपारिजातकः॥
पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदःकृमिप्रणुत् ॥
तत्पत्रंपित्तरोगघ्नंकर्णव्याधिविनाशनम् ९५

अर्थ-पारिभद्र, निंबतरु, मंदार और पारिजातक, ए संस्कृत नाम। हिं. फरहद, बं. पालिंदामादार, का. पांगरा, हरिवाल, तै. मुख्यमेतिचेट्टू, द्रा. पंजीर, ता. मुराक, गु. पांडेरवा, ला. एरिथ्रिनाइंडिका। गुण। वादी, कफ, सूजन, मेदरोग और कृमिरोगको नाशकरे, इसका पत्र पित्तके रोगोंको और कर्णपीडाको दूर करे। इसकी छाल तथा स्वरस प्रयोगमें लेते है। मात्रा २ मासेकी है।*

कचनार (कांचनार).

कांचनारःकांचनकोगंडारिःशोणपुष्पकः॥
कोविदारश्चमरिकःकुद्दालोयुगपत्रकः ९६
कुंडलीताम्रपुष्पश्चाश्मंतकःस्वल्पकेशरी॥
कांचनारोहिमोग्राहीतुवरःश्लेष्मपित्तनुत्॥
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगंडमालाव्रणापहः॥
कोविदारोऽपितद्वत्स्यात्तयोःपुष्पंलघुस्मृतम्
रूक्षंसंग्राहिपित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत् ॥९८॥

अर्थ-कांचनार, कांचनक, गंडारी और शोणपुष्पक, ए संस्कृत नाम। हिं. कचनार, बं. लालकांचन, म. रक्तकंचन, का. कावनू, कोचाले, ता. देवकांचन, गु. कंचनवृक्ष, कांचनार, ला. बोहीनीआवेरीगेटा कहतेहैं। कोविदार, मरिक [चमरिक], कुद्दाल, युगपत्रक, कुंडली, ताम्रपुष्प, अश्मंतक और स्वल्पकेशरी, यह कचनारका भेद कोविदार है इसके संस्कृत नाम हैं। हिं. सपेद-कचनार, बं. श्वेतकांचन। स्वरूप। ये दोनो प्रकारकी औषधी पादपजातिकी है। वृक्ष बडा होताहै, और पत्ता बीचमेंसे फटा हुआ होताहै। मुंबईमें इस पत्तेमें तमाखू भरके पीनेकी बीडी बनातेहैं। गुण। शीतल, ग्राही, कषेली, पित्तकफनाशक। प्रयोग। कृमि, कुष्ठ, गुदभ्रंश, गंडमाला और व्रणको दूर करे। सपेद कचनारके-कोविदारके समान गुण है। इन दोनोंके फूल हलके, रूखे और संग्राही। रक्तपित्त, प्रदर, क्षय और खांसीरोगको नष्ट करे। इन दोनोंकी छाल प्रयोगमें लेनी। मात्रा २ मासे। कचनारकी फलीका साग होताहै और कचनारके रसकी पुट देनेसें सुवर्णकी भस्म होतीहै।

सहजना (शोभांजन.)

शोभांजनःशिग्रुतीक्ष्णगंधकाक्षीवमोचकाः
तद्बीजंश्वेतमरिचंमधुशिग्रुःसलोहितः॥९९॥
शिग्रुःकटुःकटुःपाकेतीक्ष्णोष्णोमधुरोलघुः॥
दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारस्तिक्तोविदाहकृत्॥
संग्राहीशुक्रलोहृद्यःपित्तरक्तप्रकोपनः॥
चक्षुष्यःकफवातघ्नोविद्रधिश्वयथुकृमीन्॥
मेदोपचीविषप्लीहगुल्मगंडव्रणान्हरेत्॥
श्वेतःप्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषाद्दाहकृद्भवेत्॥
प्लीहानंविद्रधिंहंतिव्रणघ्नः पित्तरक्तहृत्॥
मधुशिग्रुःप्रोक्तगुणोविशेषाद्दीपनःसरः॥
शिग्रुवल्कलपत्राणांस्वरसःपरमार्तिहृत्॥
चक्षुष्यंशिग्रुजंबीजंतीक्ष्णोष्णंविषनाशनम्॥
अवृष्यंकफवातघ्नंतन्नस्येनशिरोर्तिनुत्॥५॥

अर्थ-शोभांजन, शिग्रु, तीक्ष्णगंधक, अक्षीव और मोचक ए संस्कृतनाम। हिं. सहजना, रा. सोहिजना, बं. सजिणा, म. शेवगा, दे. सेगट, कों. शेगवा, का. नुग्गी, गु. सरगवा। तै. मुलंगा, ता. मोरंग, ला. होर्सरेडीश ट्री। इसके तीन भेद है-श्याम, श्वेत और लाल। सहज-

* डा० पेरूसली—कहताहै फरहदके वृक्षकी जडका रस पुराने नासूर तथा पत्तोंकी पुलटिस उसीप्रकार त्वचारोगके फोडे नष्ट करनेको वर्त्तावमें लीनी जातीहै।

डा० गिब्सन—फरहदके बीजमेंसे निकलेहुए तेलकी त्वचाके रोग और संधिवातके रोगमें वर्त्तनेकी प्रशंसा करताहै।

चरकसंहितामें—फरहदके तेलको लेखनीय (धातु पतली करता मानाहै)।

सुश्रुतसंहितामें—उसको कफवातप्रशमन, रक्तशोधन, कुष्ठघ्न तथा कफमेदोनिवारक मानेहैं।

नेके बीजको श्वेतमरिच कहतेहैं । और लालरंगके सहजनेको मधुशिग्रु कहतेहैं । **गुण** । कटु रस और इसका पाकभी कटु है । तीक्ष्ण, गरम, मधुर, ह[illegible]न, रोचन, रूक्ष, क्षारीगुणयुक्त, कडवा, दाह[illegible] संग्राही, शुक्रकर्त्ता, हृदयको प्रिय, नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्तको कुपित करताहै । **प्रयोग** । वादी, कफ, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदरोग, अपची, विष, प्लीहा, गोला, गंडमाला और व्रणको नष्ट करे। **सपेदसहजना**भी पूर्वोक्त गुणोंको करेहै। अधिक गुण ये हैं कि दाह करे और प्लीहा, विद्रधि, व्रण और रक्तपित्त रोगको दूर करेहै । **मधुशिग्रु** अर्थात् लाल सहजना पूर्वोक्त गुण करे। विशेषता यह है कि, दीपन और दस्तकारी । सहजनेकी **छाल** और पत्तोंका **स्वरस** घोर पीडाको दूर करे । **सहजनेके बीज** तीक्ष्ण, गरम, विषनाशक, बलनाशक और वातकफनाशक, इसकी **नस्य** शिरपीडाको शांति करतीहै । इसकी **छाल** तथा **फली** प्रयोगमें लीनी जातीहै । **मात्रा** ४ मासे । *

* **हिंदुस्थानी वैद्य**—सहजनेको गरम, तीक्ष्ण, मूत्रवर्धक और त्वचापर लगानेसे चमडीको लाल [illegible]वाला जानतेहैं । सहजनेके बीजोकोभी गरम मानतेहैं । और उसको **श्वेत मरीच**के नामसे बोलतेहैं ।

हारीतसंहितामें—सहजनेकी दो जात कहीहैं—लाल और सफेद । चमडीको लाल करनेमें लालकी अपेक्षा सफेद अधिक गुणवाला है । तथापि भीतरी खानेके उपयोग करनेको लालजातका अधिक पसंद आताहै । तथा यह कलेजा और तिल्लीकी गांठ मोटी होगई होय तो इसको देतेहै । शरीरके भीतरी भागमें गहरी सूजन होय तो जडकी छालका क्वाथ करके सूजनके ऊपर सेक करनेको काम आतीहै । तथा पेशावकी थैलीमें पथरीके वास्तेभी परमोपयोगी है । इस वृक्षका गोंद तिलके तेलकेसाथ मिलायके कानमें टीस मारती होय तो डालनेसे आराम होताहै ।

मुसलमान ग्रंथकार—लिखतेहैं कि सहजनेके फूल गरम है और उनके देनेसे सरदी मिटजातीहै, सूजन उतर जायहै, पाचनशक्ति बढतीहै, पिसाव अधिक उतरताहै । तथा पिशाबकी थैलीमें पथरीका उत्पन्न होना बंद होताहै । तथा श्वासके रोगमें उत्तम फायदा करेहै । जडका चूर्ण डालके बनी हुई पुलटिश बांधनेसे सूजन बिलकुल उतर जातीहै । परंतु चमडीमें खुजाल चलकर पीडाको उत्पन्न करेहै । इसकी **फली** सागमें तथा कढीआदिमें डालतेहै, और इसका अचारभी बनातेहैं । इसके सेवन करनेसे पेटमें कीडे कदापि नहीं पडते ।

डा० ऐन्स्ली—कहताहै कि सहजनेके वृक्षकी जड २० ग्रेनकी मात्रासे लकवाकी बिमारी तथा वारंवार आनेवाले ज्वरमें दियाजाय है । तथा मृगी और स्त्रियोंके होनेवाली हिस्टीरियाकी बिमारीमें उत्तम असर करताहै । बीजमेंसे निकालाहुआ तेल संधिवातके रोगमें संधियोंके ऊपर चुपडते हैं । खिचाव अथवा शूल होता होयतो इसकी जडका क्वाथ करके उससे सेक करा जाताहै । **जपान**की विलायतमें इसकी जडको जलंधरके रोगमें देतेहै ।

डा० रीड—कहताहै कि सहजनेके पत्ते, छाल और जडमें खिचाव बंद करनेकी शक्ति है । पत्तोंका **रस** निकाल उसमें काली मिरचोंको पीस **मिरगी आनेवाले**के नेत्रोंको चुपडतेहैं । तथा **निमक** मिलायके छोटे २ बच्चोंके पेट **अफर** आनेपर दिया जायहै । फोडेपर पत्तोंको पीसके बांधनेसे जल्दी पकताहै । छाल और जीरा चावलके जलमें पीसके मुखमें रखे तो मसूडोंका फूलना और दांतोंमें टीस मारना न्यून होतीहै । **पत्तों**को गरमकर नासूर और नहरूआपर बांधा जायहै । माथेके दूखनेपर इस वृक्षका गोंद कनपटी तथा वद और गुह्येन्द्रियके रोगमें लेप करा जायहै ।

चरकसंहितामें—इस वृक्षकी छाल और जडको शिरोविरेचन और पसीने निकालनेवाली मानाहैं।

सुश्रुतसंहितामें—इसको कफमेदनिवारक, मस्तकशूलनाशक और गुल्मविद्रधिनाशक माना गयाहै ।

कोयल (अपराजिता.)

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्विष्णुक्रांताऽपरा-
जिता ॥
अपराजितेकटूमेध्येशीतेकंठ्येसुदृष्टिदे ॥
कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रणविषापहे ॥
कषायेकटुकेपाकेतिक्तेचस्मृतिबुद्धिदे ॥

अर्थ–आस्फोता, गिरिकर्णी, विष्णुक्रांता और अपराजिता ए संस्कृतनाम । हिं. सफेद और नीली कोयल [इ] ल, बं. श्वेत और नील अपराजिता, म. गोकर्णीचें बीज, सुपनी, का. विष्णुकाके, गु. गरणी, तै. नीलगंठुना, ला. कलीटोरिआ टरनेट्या कहतेहैं । गुण । कडवी, स्मरणशक्तिको बढानेवाली, शीतल, कंठको शुद्धि करता, दृष्टिको प्रसन्नताकारक, त्रिदोषनाशक, कषेला, कडवा, पचनेमें कटु, बुद्धिदाता और विषघ्न । प्रयोग । कुष्ठ, शूल, आम, शोथ और व्रणरोगको दूर करे ।

सम्हालू (सिंदुवार.)

सिंदुवारःश्वेतपुष्पःसिंदुकःसिंदुवारकः ॥
नीलपुष्पीतुनिर्गुंडीशेफालीसुवहाचसा ॥
सिंदुकःस्मृतिदस्तिक्तःकषायःकटुकोलघुः॥
केश्योनेत्रहितोहंतिशूलशोथाममारुतान् ८
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीलापितद्विधा ॥
सिंदुवारदलंजंतुवातश्लेष्महरंलघु ॥ ९ ॥

अर्थ–सिंदुवार दो प्रकारका होताहै । तहां सिंदुवार, श्वेतपुष्प, सिंदुक और सिंदुवारक ए श्वेत सिंदुवारके संस्कृत नाम । नीलपुष्पी, निर्गुंडी, शेफाली और सुवहा ए नीलसिंदुवारके संस्कृत नाम । सिंदुवारको हिं. सम्हालू, निर्गुंडी, मेउडी, सेंदुआरि, बं. निसिन्दा, म. निर्गुडी, निगडी, बनय, को. निगूड, का. करियलोकि, गु. नगोड, नगड, तै. तेलावावीली, ता. नोकूची, द्रा. सान्सालि, पं. वणालहरी, फा. पंज, ला. वाइटेक्स निगंडी vitex nigundi कहतेहैं । स्वरूप । निर्गुंडीके वृक्षकी प्रत्येक डालियोंमें लंबे और पतले तीन तीन अथवा पांच पांच पत्ते होतेहैं । फल आमके मौरके समान गुच्छादार और आंफलीरंगका होताहै । निर्गुंडीके बीजोंको बहुतसे वैद्य रेणुकबीज कहतेहैं । दोनो प्रकारकी निर्गुंडीमें सम्हालूके पत्ते नीमके पत्तेसे कुछ २ चौडे और कंगनी तथा अनीदार होतेहैं । और काले रंगके सम्हालूको निर्गुंडी कहतेहैं । इसके पत्ते अरहरके पत्तेके समान और मखमलके सदृश बहुत नरम और गिलगिले होतेहैं । पुस्तक या कपडेमें रखनेसे उनमें कीडा नहीं लगे । चित्र नंबर १७ का देखो । गुण । स्मरणशक्तिदाता, कडवा, कषेला, चरपरा, हलका, बालोंको हितकारी, नेत्रोंको गुणकारी । प्रयोग । शूल, श्वास, आमवात, कृमि, कोढ, अरुचि और कफज्वरको दोनों प्रकारका सम्हालू दूर करे । इसकी जड लेनी चाहिये । मात्रा २ मासेकी है । सम्हालूके पत्ते कृमि आदि कीडे और वातकफनाशक हैं ।

कर्त्तरीनिर्गुंडी.

निर्गुंडीकर्त्तरीयुक्तातिक्ताकट्वीकफास्रजित् ।
शूलंक्षयंतथावातंकुष्ठंकंडूंचनाशयेत् ॥

अर्थ–एक कर्त्तरी निर्गुंडी होतीहै । म. कात्रीनिगुड कहतेहैं । यह कडवी, चरपरी, कफ और रुधिरविकारको नाश करे । तथा शूल, क्षय, बादी, कोढ और खुजलीको दूर करतीहै ।

वनकी निर्गुंडी.

अरण्यजातुनिर्गुण्डीहितापित्तज्वरंजयेत् ।
वर्ण्याविषंचवातंचगृध्रसींचनियच्छति ॥
पर्णंतुकटुकंचास्याअग्निसंदीपनंलघु ।
कृमीन्कफंतथावातनाशकंवर्त्ततेखलु ॥
तत्पुष्पंकटुकेचोष्णंतिक्तंजंतुकफापहम् ।
प्लीहगुल्मंतथावातंकुष्ठंशोथंचनाशयेत् ।
नाशकंचारुचिप्रोक्तंकंडूंहरतिसत्वरम् ॥

अर्थ–वनकी निर्गुंडी पथ्य है । पित्तज्वर, विषरोग, बादी, गृध्रसीवात इनको नष्ट करे । देहके वर्णको उजला करे । इसके पत्ते चरपरे, अग्निको दीपनकारी और हलके हैं । ये कृमि, कफ, वातको नष्ट करे । इसके फूल चरपरे, गरम, कडवे और कृमि, कफको तथा तिल्ली, गोला, बादी, कोढ, सूजन, अरुचि और खुजली इनको तत्काल नाश करेहैं ।

कूडा (कुटज.)

कुटजःकूटजःकौटोवत्सकोगिरिमल्लिका ॥
कालिंगःशक्रशाखीचमल्लिकापुष्पइत्यपि ॥
इंद्रोयवफलप्रोक्तोवृक्षकःपांडुरद्रुमः ॥
कुटजःकटुकोरूक्षोदीपनस्तुवरोहिमः ॥ ११ ॥
तिक्तसंग्राहकःप्रोक्तस्त्वग्दोषज्वरनाशनः ॥
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥

अर्थ–कुटज, कूटज, कौट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कालिंग, शक्रशाखी, मल्लिकापुष्प, इन्द्रयवफल, वृक्षक और पांडुरद्रुम, ए संस्कृत नाम । हिं कूडा, कोरै [आ] या, ता. वेपलेइ, बं. कुडची, म. श्वेतकुडा, का. कोडसिगेयमरनू , तै. अके-लूधांगल कुष्ठ, फा. तिवाज, ला. पॉंगामिआ ग्लाब्रा pongamia glabra कहतेहैं । **गुण** । कटु, रूक्ष, अग्निदीपक, कषेला, शीतल, तिक्त और संग्राही । **प्रयोग** । बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ-जतृष्णा, त्वचाके दोष, ज्वर, आम और कुष्टरो-गको दूर करे । इसके बीजोंको **इन्द्रयव** कहतेहैं । कूडाकी **मात्रा** इन्द्रजवके समान है ।

कंजा (करंज.)

करंजोनक्तमालश्चकरंजश्चिरबिल्वकः ॥
घृतपूर्णकरंजोऽन्यःप्रकीर्यःपूतिकोऽपिच १३
सचोक्तःपूतिकरंजःसोमवल्कश्चसस्मृतः ॥
करंजःकटुकस्तीक्ष्णोवीर्योष्णोयोनिदोषहृत्
कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणकृमिकफापहः ॥
तत्पत्रंकफवातार्शःकृमिशोथहरंपरम् ॥
भेदनंकटुकंपाकेवीर्योष्णंपित्तलंलघु ॥ १५ ॥
तत्फलंकफवातघ्नंमेहार्शःकृमिकुष्ठजित् ॥
घृतपूर्णकरंजोऽपिकरंजसदृशोगुणैः ॥ १६ ॥

अर्थ—करंज, नक्तमाल, करंज और चिरबि-ल्वक, ए संस्कृत नाम । हिं. कंजा, करंजुवा, कटकरंजा, रा. कणगच, बं. डहरकरंज, म. करं-जाचे वृक्ष, चोपडाकरंज, क. नापसीय मरनू, तै. कंज, ला. पीनगेम्याग्लेब्रा कहतेहैं । दूसरा घृत-करंज होताहै । उसको घृतपूर्ण करंज, प्रकीर्य, पूतिक, पूतिकरंज और सोमवल्कल संस्कृतमें कहतेहैं । हिं॰ घोराकरंज, बं. नाटाकरंज, म॰ चोप-डाकरंज, का॰ तपक्षियमरनु । **स्वरूप** । कंजा शाखीजातिका वृक्ष है । इसके **पत्ते** गोल, आगेसे अनीदार और गुच्छेदार सपेद पुष्प होताहै । परंतु पत्ते केसूलाकी कलीके आकारके होतेहैं फली लंबी और चपटी होतीहै । फलको फोडनेसे भीत-रसे बदामी रंगका चपटा बीज निकलताहै । यह प्राय नदीके किनारे बहुत होताहै । एक २ डालीमें पांच पांच सात सात पत्ते होतेहै । चित्र नंबर १८ का देखो । **गुण** । कटु, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, योनिके दोष हरण कर्त्ता है । **प्रयोग** । कुष्ठ, उदावर्त्त, गोले-का रोग, बवासीर, व्रण, कृमिरोग और कफ इनको नष्ट करे । कंजेके पत्ते भेदी, कटुपाकी, उष्णवीर्य, पित्तकर्त्ता और हलके । **प्रयोग** । कफवात, बवा-सीर, कृमि, सूजनको दूर करे । कंजेके फल कफ-वातनाशक, प्रमेह, बवासीर, कृमि और कोढको दूर करे । घृत करंजकेभी गुण कंजेके समान जानने । प्रयोगमें कंजाके बीज, तेल, छाल और पत्ते लीने जातेहै । **मात्रा** २ मासेकी है ।

उदकीर्यस्तृतीयोऽन्यःषड्ग्रंथाहस्तिवारुणी
मर्कटीवायसीचापिकरंजीकरभंजिका ॥१७॥
करंजीस्तंभनीतिक्तातुवराकटुपाकिनी ॥
वीर्योष्णावमिपित्तार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥

अर्थ–तीसरा करंजका भेद उदकीर्य है । उसके पर्याय शब्द-षड्ग्रंथा, हस्तिवारुणी, मर्कटी, वायसी, करंजी और करभंजिका । हिं. अरारी करंजी, करंजिया, म. थोर करंज कहतेहैं । **गुण** । स्तंभन-कर्त्ता, कडवी, कषेली, पाकके समय कटु, उष्णवीर्य । **प्रयोग** । वमन, पित्तकी बवासीर, कृमि, कोढ और प्रमेहको दूर करे । इसके पत्ते और बीज प्रयोगमें लिये जाते हैं । **मात्रा** २ मासेकी है ।

ज्ञेयोमहाकरंजोन्यःषड्ग्रंथोहस्तिवारिणी ।
उदकीर्णोविषघ्नीचकाकघ्नीमदहस्तिनी ॥
अंगारवल्लीशार्ङ्गेष्टामधुमत्तावमायिनी ।
हस्तिरोहणकश्चैवज्ञेयोहस्तिकरंजकः ॥
सुमनःकाककुंडीचमदमत्तश्चषोडश ।

महाकरंजस्तीक्ष्णोष्णकटुकोविषनाशनः ॥
कंडूविचर्चिकाकुष्ठत्वग्दोषव्रणनाशनः ॥

अर्थ-महाकरंज, षड्ग्रंथ, हस्तिवारिणी, उदकीर्ण, विषघ्नी, काकघ्नी, मदहस्तिनी, अंगारवल्ली, शार्ङ्गेष्ठा, मधुमत्ता, अवमायिनी, हस्तिरोहण, हस्तिकरंजक, सुमन, काकमंडी और मदमत्त, ए सोलह संस्कृत नाम है । हिं. बड़ाकरंज कहतेहैं । का. हिरियहलुगितु कहतेहैं । गुण । महाकरंज तीक्ष्ण, गरम, कड़वा, विषनाशक । प्रयोग । खुजली, विचर्चिका, कुष्ठ, त्वचा (चमड़ी) के दोष और व्रणको नष्ट करेहै ।

प्रकीर्णोरंजनीपुष्पःसुमनाःपूतिकर्णकः ॥
पूतिकरंजःकैडर्यःकलिमालश्चसप्तधा ॥
अन्योगुच्छकरंजःस्निग्धदलोगुच्छ-
पुष्पकोनंदी ॥
गुच्छीचमात्रिनंदीसानंदोदंतधावनोवसवः
करंजोकटुतिक्तोष्णोविषवातार्त्तिकृंतनः ॥
कंडूविचर्चिकाकुष्ठस्पर्शत्वग्दोषनाशनः ॥

अर्थ-प्रकीर्ण, रजनीपुष्प, सुमना, पूतिकर्णक, पूतिकरंज, कैडर्य और कलिमाल, ए सात नाम पूतिकरंज अर्थात् जिस करंजमें दुर्गंध आतीहै उसके है । म. घाणेरा करंज, का. वाहवडुलिगितु । एक गुच्छकरज होताहै, उसके संस्कृत नाम स्निग्धदल, गुच्छपुष्पक, नंदी, गुच्छी, मात्रिनंदी, सानंद और दंतधावन ए आठ नाम है । गुण । दोनों करंजे चरपरे, गरम, उष्ण, विषविकार, वादीके विकार, खुजली, विचर्चिका, कोढ और त्वचाके दोषोंको दूर करे ।

रीठाकरंज.

रीठाकरंजिकस्त्वन्योकुच्छलोगुच्छपुष्पकः ॥
रीठागुच्छफलोरिष्टोमंगल्यःकुंभबीजकः ॥
प्रकीर्यःसोमवल्कश्चफेनिलोरुद्रसंज्ञकः ॥
रीठाकरंजस्तिक्तोष्णःकटुस्निग्धश्चवातजित्
कफघ्नःकुष्ठकंडूतिविषविस्फोटनाशनः ॥

अर्थ-एक रीठाकरंज होताहै उसके नाम गुच्छल, गुच्छपुष्पक, रीठा, गुच्छफल, अरिष्ट, मंगल्य, कुंभबीजक, प्रकीर्य, सोमवल्क और फेनिल ए ११ नाम संस्कृतमें रीठाकरंजके हैं । गुण । कड़वा, गरम, चरपरा, चिकना, वातनाशक, कफघ्न। प्रयोग । कोढ, खुजली, विषविकार और विस्फोटक रोगको नष्ट करे ।

लताकरंज.

लताकरंजोदुःस्पर्शोवीराख्योवज्रबीजकः ॥
धनदाक्षःकंटकिफलःकुबेराक्षश्चसप्तधा ॥
लताकरंजपत्रंतुकटूष्णंकफवातनुत् ॥
तद्बीजंदीपनंपथ्यंशूलगुल्मव्यथापहम् ॥

अर्थ-लताकरंज, दुःस्पर्श, वीराख्य, वज्रबीजक, धनदाक्ष, कंटकिफल और कुबेराक्ष ए सात नाम संस्कृतमें है । हिं. लताकरंज, बं. कांटाकरंज, म. सागरगोटा, का. करांजिकातिरिगिच्छि, गु. कांचका, काकचीया, ता. गुचेपिक्का, इं. बोंडक । स्वरूप । इसका वृक्ष मध्यमकदका होताहै। एक इंचके अनुमान लंबे और गोल पत्ते और मिले हुए आमे सामे उगतेहैं । डालीके पिछाडीके भागपर छोटे २ और टेढे कांटे होतेहै । फूल मंजरीमें भरपूर पीलेरंगका होताहै । और उसकी पांच पंखडी होतीहै । उनमें चारतो मध्यमें फीके रंगकी और पांचवीपर लाल छांटे होतेहैं । मध्यमें पुरुष और स्त्रीकेसर होतीहै । उसके फलपर कांटे होतेहैं । उसमें सीपके समान दो परत होतेहैं । उनमें १ अथवा २ बीज होतेहैं । इसकी गरी सपेद और कड़वी होतीहै । चित्र नंबर १८ देखो । गुण । लताकरंजके पत्ते चरपरे और गरम तथा कफवातको जीते । उसके बीज दीपन, पथ्य, शूल और गोलेकी पीडाको नष्ट करे । अन्यत्र लिखा है कि ज्वरमें पेटकी वादी और उलटी आदिपर इसका बीज दीना जाताहै । मात्रा १ मासेकी है ।

घूंघची (गुंजा.)

श्वेतारक्तोच्चटाप्रोक्ताकृष्णलाचापिसास्मृता
रक्तासाकाकचिंचीस्यात्काकनंतीचरक्तिका
काकादनीकाकपीलुःसास्मृताकाकवल्लरी ॥
गुंजाद्वयंतुकेश्यंस्याद्वातपित्तज्वरापहम् ॥
मुखशोषभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशनम् ॥

वेमामयहरेत्पूर्वमवल्यकंडूव्रणंहरेत् ॥
कर्णौमुखशुक्ककुष्ठानिरक्ताचधवलापिच ॥ २१ ॥

अर्थ–गुंजा दो प्रकारकी है। एक सपेद, दूसरी रक्त। यहां सपेद गुंजाको उच्चटा और कृष्णला कहतेहैं। और लालकों काकचिंची, काकनती, रक्तिका (रत्ती), काकादनी, काकपीलू और काकवल्लरी, ए संस्कृत नाम हैं। हिं. सपेद और लाल घुंघची, चिरमिठी, गुंज, चोटली, बं. श्वेतकुच, लालकुच, म. गुंज, का. गुलुगुजे, एरडु, गु चणोठी, तै. गुलुविंदे, फा. चश्मेखरूस, अ हब्बशुर्ख, उर्दि रत्ती, ला आमस प्रीकेटोरिअस कहतेहे। **स्वरूप**। चिरमीठीके इमलीके समान लंबे पत्ते होतेहै। और स्वादमें मीठे होतेहै। फूल सपेद भूरेरंगका होताहै। फल बबूलकी फलीके समान होताहै। इसमेंसें घूंघची निकलती है। घूंघची सपेद और लालके भेदसे दोप्रकारकी है। इसमें सपेद घूंघची विगडकर काली पडजातीहै। और लाल घूंघचीकी वेल बहुत कम होतीहै। इसकी जड मुलहटीके समान मीठी होतीहै। इसीसे बहुतसे पसारी और अत्तार लोग मुलहटीके एवजमें घूंघचीकी जड दे देतेहै। घूंघचीभी सात उप-विषोंमें एक प्रकारका उपविष गिनी जाताहै। **गुण**। दोनों प्रकारकी घूंघची बालोंको हितकारी, बलकारक, और शुक्र प्रगटकर्त्ता है। **प्रयोग**। वातपित्तज्वर, मुख-शोष, भ्रमरोग, श्वास, तृष्णा, मदरोग, नेत्ररोग, खुजली, व्रण, कृमि और इन्द्रलुप्त, इन रोगोंपर दोनों प्रकारकी घूंघची देनी चाहिये। प्रयोगमें इसकी जड, पत्ते और बीज लिये जातेहै। **मात्रा** १ रत्तीसे लेकर ३ रत्तीपर्यंत है। *

कोंछ (कपिकच्छू)

कपिकच्छूरात्मगुप्तावृष्याप्रोक्ताचमर्कटी ॥
अजराकंडुराव्यंगादु स्पर्शाप्रावृषायणी ॥
लांगलीशूकशिंबीचसैवप्रोक्तामहर्षिभि ॥
कपिकच्छुर्भृशंवृष्यामधुराबृंहणीगुरु ॥ २३ ॥
तिक्तावातहरीबल्याकफपित्तास्रनाशिनी ॥
तद्बीजंवातशमनंस्मृतंवाजीकरंपरम् ॥ २४ ॥

अर्थ–कपिकच्छू, आत्मगुप्ता, वृष्या, मर्कटी अजरा, कडूरा, व्यंगा, दु स्पर्शा, प्रावृषायणी, लांगली और शूकशिंबी ए संस्कृत नाम। हिं. काछ, कोच, किवाच, ब आलकुशी, म. कहिलीचें बीज कपास

१ किसी २ पुस्तकमें उच्चटाके स्थानमें घाट ऐसा पाठ दियाहै। अर्थात् उच्चटा नाम सपेद घुघची का नहींहै। उच्चटा एक दूसरी औषधी है कि जिसको उटंगन कहतेहै।

* **चक्रदत्तमें**—गुंजा अर्थात् चिरमिठा दो जातकी कहाहे। लाल और सफद। चिरमिठीके बीज विषैल है अर्थात् खानेसे जहरका असर करतेहै। तथा ज्ञानतंतुके रोगमें लिये जातहै। तथा त्वचारोग और नासूरपर लेप करा जाताहै। घूघचीकी जड वमन लानेवाली है।

मुसलमान हकीम—चिरमिठीको गरम, पौष्टिक ओर कामोत्तेजक मानतेहै।

डाक्टर लोग—चिरमिठीकी जडका उपयोग मुलहटीके प्रतिनिधिमें करतेहैं।

डा० ऐन्स्ली—कहताहै कि चिरमिठीकी जड मुलहटीके समान हुबहु मिलीहुई होतीहै कि पसा-लेमें उसको मुलहटीके पलटेमें वेचतेहै।

मि० मोहीदीन सरीफ—लिखताहे कि चिरमिठीकी डालीमें पत्तेसेभी अधिक मिठास होताहै। तथा उसमेंसे सत्व काढना होय तो निकलसक्ताहै।

मि० वेकर—कहताहै कि चिरमिठीका पानी नेत्रमें डालनेसे आंखका कनजक्टाई वा परदा सूजकर उसमेंसे राध निकलना सुरू होताहै। इसवास्ते आंखके रोगमें उसका उपयोग नहीं करना। सफेद चिरमिठीकी जड मीठी होतीहै वह खासीके रोगमें बहुत उपयोगी जानी गईहै।

मि० ल्यूनन—कहताहै कि पत्तोंको सहतमें पीसके सूजनके ऊपर लेप करा जाताहै। उसी प्रकार पीसकर मिश्रीके साथ चाबनेसे खासी कम होजाताहै। सफेद चिरमिठी जहरीली है, इसवास्ते इसके खानेसे वमन ओर खिचाव होताहै, और कभी २ मृत्युभी होतीहै।

चरकसंहितामें—सफेद घूंघची दाहशांतिकर्त्ता, पित्तशामक मानीहै।

कुहिरी, बं. आलकुशी, कौ. आजकुहिली, गु. कवचा, कौचा, तै. पिल्लीअडगु, ता. पुनाईक कालि, कौहेज, ला. डोलीकीप्युरिन् कहतेहैं । स्वरूप कौंचकी बेल चातुर्मासमें बहुत होतीहै । डंडी तीन पत्तेवाली होतीहै । फूल काला जामुनके रंगका आकारमें केसूलाके फूलसें मिलता हुआ झुमेदार होताहै । फली एक डंडीमें दो और इमलीके कतारेके आकारसें कुछ १ मिली हुई होतीहैं । इसके पत्ते और फलके रुआं देहमें लगनेसें बडीभारी खुजली होने लगतीहै । इसकी फलीमें इमलीके माफिक चीयाँ निकलतेहैं । इनको कौंचके बीज कहतेहैं । चित्र नंबर ३० का देखो । गुण । अत्यंत वृष्य, मधुर, बृंहणी (पुष्टिकारक), गुरु, तिक्त, वातनाशक, बलकारी, कफनाशक, रक्तपित्तको शांतिकर्त्ता, व्रणदोषनाशक और श्वासकासनिवारक । कौंछके बीज वादीको शांति करता, अत्यंत वाजीकरणकर्त्ता हैं । प्रयोगमें इसकी जड, पत्ते और बीज लिये जातेहैं । मात्रा १ मासेकी है । *

रोहिणी.

मांसरोहिण्यतिरुहावृत्ताचर्मकरीकृशा ॥
प्रहारवल्लीविकशावीरवल्यपिकथ्यते ॥
स्यान्मांसरोहिणीवृष्यासराक्षोषत्रयापहा ॥

अर्थ—मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकरी, कृशा, प्रहारवल्ली, विकशा और वीरवल्ली [ती], बं. चामारकशा और हिंदुस्थानकी अन्य भाषाओंमें इसी नामसें प्रसिद्ध है । गुण । मांसरोहिणी वृष्य, दस्तावर और त्रिदोषको नष्ट करनेवाली है ।

चिल्ह (चिल्हक.)

चिल्हकोवातनिर्हारःश्लेष्मघ्नोधातुपुष्टिकृत् ॥
आग्नेयोविषवद्यस्यफलंमत्स्यनिषूदनम् ॥२६॥

अर्थ—चिल्हककी हिंदीमें चिल्ह कहतेहैं । पर्वती इसको गंधारी कहतेहैं । यह वातका नाशक, कफघ्न, आग्नेय और धातुपुष्टि करता । इसका फूल विषके समान गुणकारी है । इस फलके द्वारा धीवरलोग मछलियोंको मारतेहैं । मात्रा २ मासेकी है ।

टंकारी.

टंकारीवातजित्तिक्ताश्लेष्मघ्नीदीपनीलघुः ।
शोथोदरव्यथाहंत्रीहितापित्तविसर्पिणाम् ॥

अर्थ—टंकारी वा तंकारी, म. फापटी कहतेहै । बं. टेपारी और टेकारी कहतेहैं । इसका छोटासा क्षुप वैंगनके वृक्षके समान होताहै । यह महाबलेश्वर आदि पर्वतोंमें मिलतीहै । गुण । वातनाशक, कडवी, कफघ्न, अग्निदीप्तकर्त्ता और हलकी । प्रयोग । सूजन, उदररोग और विसर्परोगवालोंको हितकारी है । मात्रा २ मासेकी है ।

बेंत (वेतस.)

वेतसोनम्रकःप्रोक्तोवानीरोवंजुलस्तथा ॥
अभ्रपुष्पश्चविदुलोरथशीतश्चकीर्त्तितः ॥२८॥
वेतसःशीतलोदाहशोथार्शोयोनिरुक्प्रणुत् ।
हंतिवीसर्पकृच्छ्राश्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥

अर्थ—वेतस, नम्रक, वानीर, वंजुल, अभ्रपुष्प, विदुल और शीत ए संस्कृत नाम है । हिं. बेत, बेंत, बं. वेत्र, का. बेडिसु, बेसयभेदवु, गु. नेतर, तै. पीपारुवा, फा. बेत, अ. खलाफ, ला. केलेमसूरोटन्, इं. रोटाकेन कहतेहैं । गुण । बेंत शीतल, वातनाशक और कफको शांति करताहै । प्रयोग । दाह, सूजन, बवासीर, योनिकी पीडा, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त और पथरीको दूर करे । इसकी कोंपल और पत्ते लिये जातेहैं । मात्रा २ मासेकी है ।

* यूरोपियन डाक्टर—कौंचकी जडको ज्ञानतंतुओंकी पुष्टकर्त्ता मानतेहैं, तथा लकवेकी बिमारीमें और पेटकी कृमि निकालनेको फलीके ऊपरके बाल (रूंआ) सरबतमें मिलायके सहतके समान गाढाकरके वर्त्ततेहैं । परंतु देशीवैद्य फलीके ऊपरके रूंआका उपयोग नहीं करते ।

वेस्टइंडियन टापुओंमें—इस वृक्षकी जडका क्वाथ पेशाब अधिक लानेवाला और गुरदेको साफ करनेवाला मानतेहैं । तथा इसका मलहम बनायके श्लीपदपर लेप करतेहैं । पत्तोंको नासूरपर लगातेहैं और बीज कामोत्तेजक है । यह कौंचका बीज विच्छूके विषको दूर करताहै ।

वेत्रोवेतसोयोगिदंडःसुवंडोमृदुपर्वकः ।
वेत्रपंचविधःशैत्यकषायोभूतपित्तहृत् ॥

अर्थ–वेत्र, वेत, योगिदंड, सुवंड, मृदुपर्वक, ए सं. नाम है । गुण । पांच प्रकारका वेत शितल और कषेला है । भूतबाधा और पित्तको हरण करे ।

जलवेतस.

निकुंचकःपरिव्याधोनादेयोजलवेतसः ॥
जलओवेतसःशीतःकुष्ठहृद्वातकोपनः ॥३०॥

अर्थ–निकुंचक, परिव्याध, नादेय और जलवेतस, ए सं. नाम । हिं. जलवेत, म. परेल, का. वंजालु, बैंसैयमरनु, गु. जलजंबवा कहतेहैं । गुण । शीतल, वातप्रकोपक और कुष्ठनाशक ।

समुद्रफल (इज्जल.)

इज्जलोहिज्जलश्चापिनिचुलश्चांबुजस्तथा ॥
जलवेतसवद्वेद्योहिज्जलोऽयंविषापहः ॥३१॥

अर्थ–इज्जल, हिज्जल, निचुल और अंबुज, ए सं. नाम, हिं. समुद्रफल, यह तीन धारवाला बडीइलायचीके समान फल है । जूरी दूर करनेमें कौनेनके समान है । इसके वृक्षको मुंबई प्रांतमें तिवर कहतेहैं । गुण । इसके गुण जलवेतके समान है । अधिकता यह है कि विषघ्न है । इसका फल प्रयोगमें लिया जाताहै । मात्रा १ मासेकी है ।

ढेरा (अंकोल.)

अंकोटोदीर्घकीलःस्यादंकोलश्चनिकोचकः ॥
अंकोटकःकटुस्तीक्ष्णःस्निग्धोष्णस्तुवरोलघुः
रेचनःकृमिशूलामशोफग्रहविषापहः ॥
विसर्पकफपित्तास्रमूषकाहिविषापहः ॥३३॥
तत्फलंशीतलंस्वादुश्लेष्मघ्नंबृंहणंगुरु ॥
बल्यंविरेचनंवातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥३४॥

अर्थ–अंकोट, दीर्घकील, अंकोल और निकोचक ए सं. नाम । हिं. ढेरा, टेरा, बं. धल आंकोर, म. आंकुल, का. अंकुले, तै. उडीके, गु. अंकोल, इं. एलेनूजियम् लेमारकीआय कहतेहैं । गुण । कटु, तीक्ष्ण, स्निग्धोष्ण, कषेला, हलका, रेचक और विषघ्न । प्रयोग । कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहपीडा, विसर्प और कफजन्य रक्तपित्तरोग इनको दूर करे । इससें सांप और मूंसेका विष दूर हो । इसका फल शीतल, स्वादु, कफनाशक, पुष्टिकारी भारी, बलकर्त्ता और रेचक है । प्रयोग । यह वातपित्तजन्य दाह, क्षयरोग, रक्तदोष, इनको निवारण करे । *

बलाचतुष्टय.

बलावाट्यालिकावाट्यासैववाट्यालकापिच
महाबलापीतपुष्पासहदेवीचसास्मृता ॥३५॥
ततोऽन्यातिबलाऋष्यप्रोक्ताकंकतिकाचसा
गांगेरुकीनागबलाझषाह्रस्वगवेधुका ॥ ३६ ॥
बलाचतुष्टयंशीतंमधुरंबलकांतिकृत् ॥
स्निग्धंग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥
बलामूलत्वचश्चूर्णंपीतंसक्षीरशर्करम् ॥
मूत्रातिसारंहरतिदृष्टमेतन्नसंशयः ॥ ३८ ॥
हरेन्महाबला कृच्छ्रंभवेद्वातानुलोमनी ॥
हन्याददतिबलामेहंपयसासितयासमम् ॥३९॥

अर्थ–बला चार प्रकारकी है । तहां बला, वाट्यालिका, वाट्या, ए तीन संस्कृत नाम सपेद बलाके है । हिं. बरियाला, बीजबंद वा खिरेटी, बं. श्वेतबेडेला, म. चिकणा, कौं. चिकडनकडी, का. बेणेंगरग, गु. बलदाणा अथवा खपाट, तै. मुर्पिडी, ला. अबुटीलन् इंडीकम् कहतेहै । महाबला, पीतपुष्पा और सहदेवी ए तीन नाम पीतबलाके

* मिस्तर मोहीदीन सरीफ—कहताहै कि अंकोलके वृक्षकी जडकी छाल ५० ग्रेनकी मात्रामें देनेसे उलटी होतीहै उसके ओछी मात्रा देनेसे ज्वर उतर जाताहै । छाल बहुत कडवी है । यह त्वचापर बहुतही असर करतीहै । जडका रस जुलाब लाताहै और पेटके कीडोंको निकाल देताहै । जलंधरके रोगमेंभी देतेहैं । तथा जडको पीसके सांपके जहर उतारनेमें काम आतीहै ।

डा० सखाराम अर्जुन—कहताहै कि संधिवातके दर्द न्यून करनेको पत्तोंकी पुलटिस बनानेको कामों आयहै ।

है। हिं. सहदेई, बं. झांजोकाबेला, का. वेणेमरगमेद, पेटारी, वेल्हुई वे कहते हैं। सहदेई, फूलोंके भेदसे चार प्रकारकी है। अतिबला, ऋष्यप्रोक्ता और कंकतिका ए तीन अतिबलाके नाम। हिं. कंग [घ] ई, ककहिया, कंघी कहते हैं। गांगेरुकी-नागबला, ऱ्हस्वा और गवेधुका, ए चार सं. नाम नागबलाके है। हिं. गुलसकरी वा गंगेरन कहतेहैं। का. तुप्पटी, बहगरुके। बलाचतुष्टयकी छाल, पत्ता और बीज प्रयोगमें लिये जातेहैं। गुण। चारों प्रकारकी बला शीतल, मधुर, बलकारक, कांतिप्रद, स्निग्ध और ग्राही। प्रयोग। चारों प्रकारकी बलाओंकी जडकी छालके बारीक चूर्णको मिश्री मिले दूधके साथ सेवन करनेसैं मूत्रातिसाररोग नष्ट होय। महाबला मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे। तथा वायु, अनुलोम होवे अर्थात् वादीको गुदाद्वारा निकाले। दूध मिश्रीके साथ अतिबला सेवन करनेसैं प्रमेहरोग दूर होय। मात्रा २ मासेकी है।

लक्ष्मणा.

पुत्रकाकाररक्तात्पबिंदुभिर्लाञ्छितासदा॥
लक्ष्मणापुत्रजननीबस्तगंधाकृतिर्भवेत्॥
कथितापुत्रदाऽवश्यंलक्ष्मणामुनिपुंगवैः॥

अर्थ–लक्ष्मणा, पुत्रजननी और पुत्रिका, ए संस्कृतनाम है। कौं. हरंकय, गु. हनमानवेल कहतेहै। इसकी आकृति और गंध बकरेके समान होतीहै। और इसके पत्तोंपर लाल २ रुधिरकी बूंद होतीहै। गुण। यह त्रिदोषनाशक, मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलकारक और रसायन। प्रयोग। सेवन करनेसैं अवश्य गर्भोत्पत्तीके अवरोधको दूर करे।

स्वर्णवल्ली.

स्वर्णवल्लीरक्तफलाकाकायुःकाकवल्लरी॥
स्वर्णवल्लीशिरःपीडांत्रिदोषान्हंतितुग्धदा॥

अर्थ–स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु और काकवल्लरी, ए संस्कृतनाम। हिं. स्वर्णवल्ली नामसैं प्रसिद्ध है। म. सोनवेली, सोनुली। गुण। स्वर्णवल्ली मस्तकपीडा और त्रिदोषको दूर करे तथा स्त्रीकैं दूधको करेहै।

कपास (कार्पासी.)

कार्पासीतुंडकेरीचसमुद्रांताचकथ्यते॥
कार्पासकीलघुःकोष्णामधुरावातनाशनी॥
तत्पलाशंसमीरघ्नंरक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम्॥
तत्कर्णपीडकानादपूयस्रावविनाशनम्॥
तद्बीजंस्तन्यदंवृष्यंस्निग्धंकफकरंगुरु॥४३॥

अर्थ–कार्पासी, तुंडकेरी और समुद्रांता ए संस्कृत नाम। हिं. कपास, रा. वण, कुपास, रुई, बं. कार्पास, म. कापसी, का. हत्ती, तै. पत्तीचेट्टु, अ. कुतुन, फा. कुतुनपुंबेदाना, ला. गोसिपियम्, इं. काटन्। गु. वण कहतेहैं। कपास दो प्रकारकी होतीहैः पहली पीलेफूलकी और दूसरी लालफूलकी। गुण। हलकी, किंचित् उष्ण, मधुर और वातनाशक। प्रयोग। इसके सेवन करनेसैं तृषा, दाह, चित्तकी वेकली, परिश्रम, भ्रम और मूर्च्छा, इनको दूर करे। कपासके पत्ते वायुनाशक, रक्तजनक है। प्रयोग। सेवन करनेसैं कानका घाव, कर्णनाद और कानसैं राधके बहनेको दूर करे। कपासके बीज स्तनोंमें दूध प्रगट करे, वृष्य, स्निग्ध, कफकर्त्ता और भारी है। कपासके बीजोंको म. सरक्या और फलको बोंड कहतेहैं

कालीकपास.

कृष्णकार्पासिकाकट्वीचोष्णाहृद्रोगनाशिनी॥
कृमिमलंचामवातंउदरंचार्शकंहरेत्॥

अर्थ–काली कपासका स्वाद चरपरा और गरम है और हृदयरोग, कृमि, मल, आमवात, उदर, बवासीर, इनको दूर करे। इसको संस्कृतमें कृष्णांजनी तथा कृष्णकार्पासी कहतेहैं।

वनकपास.

वनजारण्यकार्पासीभारद्वाजीवनोद्भवा॥
भारद्वाजीहिमारुच्याव्रणशस्त्रक्षतापहा॥
रक्तरोगंचवातंचनाशयेदितिनिश्चितम्॥

अर्थ–वनजा, अरण्यकार्पासी, भारद्वाजी और वनोद्भवा ए संस्कृत नाम। हिं. वनकपास, रा. नांदणवण, म. रानकापसी, का. काडहत्ती कहतेहैं। गुण। यह शीतल, रुचिकारी, व्रण और शस्त्रके घावको दूर करे, रुधिरविकार और वादीको दूर करे।

वांस (वंश.)

वंशस्त्वक्सारकर्मारत्वचिसारस्तृणध्वजः ॥
शतपर्वाशतफलीवेणुमस्करतेजनाः ॥ ४४ ॥
वंशःसरोहिमःस्वादुःकषायोबस्तिशोधनः ॥
छेदनःकफपित्तघ्नःकुष्ठास्रव्रणशोथजित् ४५
तत्करीरःकटुःपाकेरसेरूक्षोगुरुःसरः ॥
कषायःकफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तलः ॥
तद्यवास्तुसरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ॥
वातपित्तकराउष्णाबद्धमूत्राःकफापहाः ॥

अर्थ–वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, शतफली, वेणु, मस्कर और तेजन ए **संस्कृत** नाम, **हिं. बं.** वांस-श, **म.** बांबू, **कौं.** वेळू, **का.** यरडुविदिर, **तै.** वेभेमुकु, **ता.** मंगिल्, **फा.** कसब, **इं.** बँबूकेन, **ला.** बँबूसावलगेरिश् कहतेहैं । **स्वरूप** । वांसके डंडे बडे समूहमें उगते-हैं । उसकी डंडीमें कांटे होतेहै, और गांठके ठिकाने भालेके समान लंबे पत्तेकी डाली निकलतीहै । **फूल** घासके फूलकी समान होताहै । **चित्र** नंबर २१ का देखो । **गुण** । दस्तावर, शीतल, स्वादु, कषेला, बस्तिशोधक, छेदक, कफपित्तनाशक, कोढ, रक्त-दोष, व्रण और सूजन इनको दूर करे । वांसके **अंकुर** अर्थात् .वांसकी **कोपल** कटु, तथा पाक-मैंभी कटू, रूक्ष, भारी, दस्तावर, कषेली, कफ-जनक, स्वादु, विदाही और वातपित्तकर्त्ता है । वांसके **चावल** दस्तावर, रूक्ष, कषेले, पाकके समय कटु, वातपित्तकर्त्ता, गरम, मूत्ररोधक और कफना-शक हैं । वांसकी **कोपल, छाल और चावल** प्रयोगमें लीने जातेहै । **मात्रा** २ मासेकी है ।

रंध्रवंश–वांसका भेद.

अन्यस्तुरंध्रवंशःस्यात्त्वक्सारःकीचकाह्वयः
मस्करोवादनीयश्चसुषिराख्यःषडाह्वयः ॥
वंशोत्वक्लौकषायौचकिंचित्तिक्तौचशीतलौ
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःपित्तदाहास्रनाशनौ ॥

अर्थ–दूसरा रन्ध्रवंश है उसको त्वक्सार, कीचक, मस्कर, वादनीय, सुषिराख्य, ए छः नाम हैं । ए पोले वांस होतेहैं । **गुण** । दोनों प्रकारके **वांस** खट्टे, कषेले, कुछ कडवे और शीतल हैं । **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्र प्रमेह, बवासीर, पित्तदाह और रुधिरके विकारको दूर करतेहैं ।

विशेषोरंध्रवंशस्तुदीपनोजीर्णनाशनः ।
रुचिकृत्पाचनोहृद्योशूलघ्नोगुल्मनाशनः ॥

अर्थ–अब पोले वांसके विशेष गुण कहतेहे कि, रंध्रवंश दीपन, अजीर्णनाशक, रुचिकारी, पाचन, हृदयको हित, शूलनाशक और गुल्मनाशक है ।

नल.

नलःपोटगलःशून्यमध्यश्चधमनस्तथा ॥
नलस्तुमधुरस्तिक्तःकषायःकफरक्तजित् ॥
उष्णोहृद्बस्तियोन्यर्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ॥

अर्थ–नल, पोटगल, शून्यमध्य और धमन, ए संस्कृत नाम । **हिं.** नरसल, **बं.** नल, **म.** देवनल, देवनाल, **गु.** नाली, **कच्छी** आंची, **तै.** मुंगुण्डुरु, **इं.** इंडियन डोबेको, **ला.** लोविलिया, निकोटिया निफोलिया कहतेहै । **गुण** । मधुर, तिक्त, कषाय, कफनाशक, रुधिरदोषनिवारक और गरम । **प्रयोग** । हृदयरोग, बस्तिपीडा, योनिरोग, दाह और पित्तविस-र्पको दूर करे । इसके डंडी, पत्ते प्रयोगमें लेतेहैं । **मात्रा** २ मासेकी है ।

बडानरसल.

अन्योमहानलोवन्योदेवनालोनलोत्तमः ।
स्थूलनालःस्थूलदंडःसुरनालः सुरद्रुमः ॥
देवनालोतिमधुरोवृष्यईषत्कषायकः ।
नलस्यादधिकेवीर्येशस्यतेरसकर्मणि ॥

अर्थ–दूसरा महानल, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूलनाल, स्थूलदंड, सुरनाल और सुरद्रुम ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** बडानरसल, **म.** थोरदेवनल, **का.** हिरियदेवनाल कहते है । **गुण** । **बडानरसल** मधुर, वृष्य, कुछ कषेला । यह नरसलवीर्यमें उत्तम है और पारे आदि रसकर्ममें लिया जाताहै । इसकी जड और कोपल प्रयोगमें लेतेहैं । **मात्रा** २ मासेकी है ।

(सरपता) रामशर.

भद्रमुंजःशरोबाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः ॥
मुंजोमुंजातकोबाणःस्थूलदर्भःसुमेखलः ॥४६

अर्थ-भद्रमुंज, शर, बाण, तेजन और चक्षुर्वेष्टन, ए सं. नाम, हिं. रामशर, सरपता, म. थोरमुंजतृण, का. रामसपु, सरगीलु, ए बडीमूंजके नाम हैं।

मूंज.

मुंजद्वयंतुमधुरंतुवरंशिशिरंतथा ॥
दाहतृष्णाविसर्पाममूत्रकृच्छ्राक्षिरोगजित् ॥
दोषत्रयहरंवृष्यंमेखलासूपयुज्यते ॥ ५० ॥

अर्थ-मुंज, मुंजातक, बाण, स्थूलदर्भ और सुमेखल, ए **संस्कृत** नाम । हिं. मूंज, म. मोल, तै. मुंजगड्डि, अग्निस्फुलिंग कहते हैं । **गुण** । दोनों मूंज अर्थात् सरपता और मूंज-मधुर, कषाय, शीतल, त्रिदोषनाशक, वृष्य और मेखला (जो कमरमें कसी जातीहै) उसमें काम आताहै । इसीकी जेवरी बनतीहै। **प्रयोग** । दाह, तृषा, विसर्प, आम, मूत्रकृच्छ्र और नेत्ररोगको दूर करे । इसकी जड और पत्ते प्रयोगमें लिये जातेहैं । **मात्रा** २ मासेकी है ।

कांस (काश.)

काशःकाशेक्षुरुद्दिष्टःसस्यादिक्षुरसस्तथा ॥
इक्ष्वालिकेक्षुगंधाचतथापोटगलःस्मृतः ५१
काशःस्यान्मधुरस्तिक्तःस्वादुपाकोहिमःसरः
मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्रक्षयपित्तजरोगजित् ॥

अर्थ-काश, काशेक्षु, इक्षुरस, इक्ष्वालिका, इक्षुगंधा और पोटगल, ए **संस्कृत** नाम, हिं. कांस, बं. केशे, म. कसई, कौं. कसाड, दे. कौस, का. काजलु, तै. रेलु, गु. कांसडा, ला. कुइस्क कारवेटा कहते हैं । **गुण** । मधुर, कडवे, पकनेके समय स्वादिष्ठ, शीतल, सर, तृप्तिकर, शुक्रजनक, बलकारक, रुचिकर्त्ता, परिश्रमनाशक और शोषको दूर करे । **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तकी क्षीणता और पित्तके रोग इन सबको दूर करे ।

अन्योनिशिमिसिर्गुंडाअश्वालोनीरजःशरः ।
निशिर्मधुरशीतःस्यात्पित्तदाहक्षयापहः ॥

अर्थ-एक जलका कांस होताहै उसके **संस्कृत** नाम-निशि, मिसि, गुंडा, अश्वाल, नीरज और शर। म. लहानकाडंसू, का. किरियकागच्छु । **गुण** । मीठा, शीतल, पित्त, दाह और क्षयरोगको दूर करे ।

दर्भौद्वौचगुणेतुल्यौतथापिश्वसितोधिकः ।
यदिश्वेतकुशप्राप्त्याभावेत्वपरंयोजयेद्भिषक् ॥

अर्थ-यद्यपि कुश और डाभ दोनों गुणोंमें तुल्य है तथापि सितदर्भ अर्थात् कुशा गुणोंमें अधिक है । यदि कुशा न मिले तो उसके पलटेमें डाभ लेवे ।

गुंद पटेरे (गुंद्र.)

गुंद्रःपटेरकोरच्छःशृंगवेराममूलकः ॥
गुंद्रःकषायोमधुरःशिशिरःपित्तरक्तजित् ॥
स्तन्यशुक्ररजोमूत्रशोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥

अर्थ-गुंद्र, पटेरक, अच्छ और शृंगवेराममूलक, ए **संस्कृत** नाम । हिं. पटेरे, का. आपू, म. गुंद्रपटेर, पानीयगवत । **गुण** । कषेला, मधुर, शीतल, रक्तपित्तनाशक, स्तनोंमें दूधकर्त्ता, शुक्र, रज और मूत्र इनको शुद्ध करनेवाला, तथा मूत्रकृच्छ्रनाशक ।

मोथीतृण (एरका.)

एरकागुंद्रमूलाचशिबिर्गुंद्राशरीतिच ॥
एरकाशिशिरावृष्याचक्षुष्यावातकोपिनी ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥

अर्थ-एरका, गुंद्रमूला, शिबि, गुंद्रा और शरी, ए **संस्कृत** नाम । हिं. मोथीतृण, बं. होगला, म. एरका, पालनव्हाळा । **गुण** । शीतल, बलकारी, नेत्रोंको हित और वादीको कुपित करेहैं । **प्रयोग** । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह और रक्तपित्तको दूर करे ।

कुसा (कुश.)

कुशोदर्भस्तथाबर्हिःसूच्यग्रोयज्ञभूषणः ॥

अर्थ-कुश, दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र और यज्ञभूषण, ए **संस्कृत**नाम । हिं. कुसा, म. पांढरीकुशी, का. बिलियकुशशी, तै. कुश दुर्वालु, कौं. दाम, ला. एंड्रोपोगन ।

डाभ (दर्भ.)

ततोऽन्योदीर्घपत्रःस्यात्क्षुरपत्रस्तथैवच ॥
दर्भद्वयंत्रिदोषघ्नंमधुरंतुवरंहिमम् ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णाबस्तिरुक्प्रदरास्रजित्

अर्थ-एक प्रकारका कुश उसके पर्याय-दीर्घपत्र और क्षुरपत्र, हिं. डाभ-डाभ, का. कुचइर्भु,

उव्हाकुशि, द्रा. दामभा कहतेहैं । गुण । कुशा और दाभ दोनों त्रिदोषनाशक, मधुर, कषेले और शीतल। प्रयोग । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, बस्तिरोग, प्रदररोग और रुधिरके विकारको दूर करे ।

रोहिषतृण.

कतृणंरौहिषंदेवजग्धंसौगंधिकंतथा ॥
भूतीकंव्यामपौरंचश्यामकंधूमगंधिकम् ५७
रौहिषंतुवरंतिक्तंकटुपाकंव्यपोहति ॥
हृत्कंठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान्

अर्थ–कत्तृण, रोहिष, देवजग्ध, सौगंधिक, भूतिक, व्यामपौर, श्यामक और धूमगंधिक, ए संस्कृतनाम । हिं. रोहिस सोधिआ, गंधेज-ल, घास, बं. रामकर्पूर, म. सुगंधरोहिषतृण, का. किरुगंजणी, तै. कामांचि गड्डि, उडि. पालखरि, अ. अजरवर, फा. खलालमामून कहतेहैं । गुण । कषाय, तीक्ष्ण, पाकके समय चरपरा है । प्रयोग । हृदयरोग, कंठरोग, रक्तपित्त, शूल खांसी और कफज्वरको दूर करे ।

बडा रोहिषतृण.

अन्यद्रोहिषकंदीर्घदृढकांडोदृढच्छदम् ॥
द्राघिष्ठंदीर्घनालश्चतिक्तसारश्चकुत्सितम् ॥
दीर्घरोहिषकंतिक्तंकटूष्णंकफवातजित् ॥
भूतग्रहविषघ्नश्चव्रणक्षतविरोपणम् ॥

अर्थ—बडे रोहिष तृणके संस्कृत नाम-दीर्घरोहिष, दृढकांड, दृढच्छद, द्राघिष्ठ, दीर्घनाल, तिक्तसार और कुत्सित । म. मोठे सुगंधरोहिसतृण, का. वादुरोहिस, हिरियगंजणी कहतेहैं । गुण । बडारोहिष कडवा, चरपरा, गरम, कफवातनाशक, भूतबाधा, ग्रहदोष, विषविकार इनको दूर करे, तथा फोडा और घावको रोपण कर्त्ता है ।

भूस्तृण.

गुह्यबीजंतुभूतीकंसुगंधंजंबुकप्रियम् ॥
भूतृणंतुभवेच्छत्रामालातृणकमित्यपि ॥
भूतृणंकटुकंतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरेचनंलघु ॥
विदाहिदीपनंरूक्षमनेत्र्यंमुखशोधनम् ॥
बलघ्नंबहुविट्कंचपित्तरक्तप्रदूषणम् ॥६०॥

अर्थ–गुह्यबीज, भूतीक, सुगंध, जंबुकप्रिय, छत्रा और मालातृणक, ए संस्कृतनाम । हिं. बं. गंधवाण, म. पाण्यांतील वाळा, तथा वास, द्राविडमें परिमलद गंजणी, ला. एंड्रोपोगन । गुण । कटु, तिक्त, तीक्ष्ण, गरम, रेचक, हलका, विदाही, अग्निदीपक, रूक्ष, नेत्रोंको अहितकारी, मुखशोधक, बलनाशक, भेदक और रक्तपित्तको कुपित करताहै । इसकी जड प्रयोगमें लीनी जातीहै । मात्रा १ मासेकी है ।

मंथानकतृण.

मंथानकस्तुहरितोदृढमूलस्तृणाधिपः ॥
स्निग्धोधेनुप्रियोदोग्धामधुरोबहुवीर्यकृत् ॥

अर्थ–मंथानक, हरित, दृढमूल और तृणाधिप ए संस्कृतनाम । म. मुरेगवत, मारवेलु, का. मारवल्ली । गुण । स्निग्ध, गौओंको प्रिय, दूध उत्पन्नकर्त्ता, मधुर और अत्यंतवीर्यकारी है ।

वंशपत्रीतृण.

वंशपत्रीवंशदलाजीरिकाजीर्णपत्रिका ॥
वंशपत्रीसुमधुराशिशिरापित्तनाशिनी ॥
रक्तदोषहरारुच्यापशूनांदुग्धदायिनी ॥

अर्थ–वंशपत्री, वंशदला, जीरिका और जीर्णपत्रिका ए संस्कृतनाम । म. वेणुपत्रीगवत, का. विदिरियेले, यथाहुल्लु । गुण । मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रुधिरदोष हरणकर्त्ता, रुचिकारी और पशुओंके थनोंमें दूध बढानेवाला ।

पल्लीवाहतृण.

पल्लीवाहोदीर्घतृणःसुपत्रस्ताम्रवर्णकः ॥
अदृढःशाकपत्रादिपशूनामबलप्रदः ॥

अर्थ–पल्लीवाह, दीर्घतृण, सुपत्र, ताम्रवर्णक, अदृढ, शाकपत्रादि ए संस्कृत नाम । म. पोकती गवत तांबडे पातींचें, का. होते । गुण । दृढतारहित, पशुओंके बलको नाश करेहै ।

लवणतृण.

लवणतृणंलोणतृणं,
तृणाम्लपटुतृणंचह्याम्लकांडंच ।
पटुतृणकंक्षाराम्लं,
कषायस्तन्यमश्वबुद्धिकरम् ॥

अर्थ-लवणतृण, लोणतृण, अम्लतृण, पटुतृण और अम्लकांड ए संस्कृतनाम । म. लोणगवत, का. हुलुबुलु । गुण । खारी, खट्टा, कषेला, स्तन्य (दूध) नाशक और घोडेको पुष्ट करनेवाला ।

पण्यंध.

पण्यंधःकंगुणीपत्रःपण्यध्वापणधाचसा ।
पण्यंधासमवीर्यास्यात्तिक्ताक्षाराचसारिणी
तत्कालशस्त्रघातस्यव्रणसंरोपणीपरा ।
दीर्घामध्यातथाह्रस्वापण्यंधात्रिविधास्मृता
रसवीर्यविपाकेचमध्यमागुणदायिका ।

अर्थ-पण्यंध, कगुणीपत्र, पण्यध्वा, पणधा ए संस्कृत नाम । म. पेंधेगवत, पणधेतीणी, का. हण-जेमुरू । गुण । समानवीर्य, तिक्त, क्षार और दस्तावर है । तत्काल शस्त्रके धावको रोपणकर्त्ता है । पण्यंध तृण तीन प्रकारका है-दीर्घ, मध्य और न्हस्व । इनमें रस, वीर्य और विपाकमें मध्यम गुण दाता हैं ।

गुंड.

गुडःसुकांडगुंडस्याद्दीर्घकांडस्त्रिकोणकः ॥
छत्रगुच्छोसिपत्रश्चनीलपत्रस्त्रिधारकः ॥
वृत्तगुंडोपरोवृत्तोदीर्घनालोजलाश्रयः ॥
तत्रस्थूलोलघुश्चातस्त्रिधायंद्वादशाभिधः ॥
गुंडास्तुमधुराःशीताःकफपित्तातिसारहा ॥
दाहरक्तहरास्तस्यमध्येस्थूलांतराधिकः ॥

अर्थ-गुड, सुकांड, गुंड, दीर्घकांड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ, असिपत्र, नीलपत्र, त्रिधारक । दूसरा वृत्तगुंड, वृत्त, दीर्घनाल और जलाश्रय । इनमें एक लघु और दूसरा स्थूल इस प्रकार दोभेद हैं । म. गुंडावत, तिधारी, का. बलहातीनि, मुरुगेरु । गुण । मधुर, शीतल, कफपित्त और अतिसारको नष्ट करे दाह, रुधिरको दूर करे । दोनोंमें स्थूल गुंडातृण गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

चणिकातृण (घास.)

चणिकादुग्धदागौल्यासुनालाक्षेत्रजाहिमा ॥
वृष्याबल्यातिमधुराबीजैःपशुहितातृणैः ॥

अर्थ-चणिका, दुग्धदा, गौल्या, सुनाला और क्षेत्रजा ए संस्कृतनाम । म. चणेगवत, वर्णया गवत, का. चणगियहुलु । गुण । शीतल, वृष्य, बलकर्त्ता, बीज इसके अत्यंत मीठे और इसके तृण पशुओंको अत्यंत हितकारी हैं ।

उखलतृण.

अस्वलोभूरिपत्रश्चसुतृणश्चतृणोत्तमः ।
अस्वलोबलदोरुच्यःपशूनांसर्वदाहितः ॥

अर्थ-अस्वल, भूरिपत्र, सुतृण और तृणोत्तम, म. घोडेसर और जितारा गवत, तै. थोरसरू, का. हेथोरसु कहते हैं । यह बलकारी, रुचिकारी और पशुओंको सदैव हितकारी है ।

शूलीतृण (घास.)

शूलीतुशूलपत्रीस्यादशाखाधूमधूलिका ॥
जलाश्रयामृदुलतापिविलामहिषीप्रिया ॥
शूलीतुपिच्छलाकोष्णागुरुगौल्याबलप्रदा ॥
पित्तदाहहरारुच्यादुग्धवृद्धिप्रदायिनी ॥

अर्थ-शूली, शूलपत्री, अशाखा, धूमधूलिका, जलाश्रया, मृदुलता, पिविला और महिषीप्रिया ए संस्कृत नाम । म. सुलेगवत, का. सोगले, कहते है । गुण । पिच्छल, कुछ २ गरम, भारी, मिष्ट, बलकारी, पित्तदाहको हरणकर्त्ता, रुचिकारी और दूधको बढानेवाला ।

इक्षुदर्भ.

इक्षुदर्भःसुदर्भःस्यात्पत्रालुस्तृणपत्रिकाः ॥
इक्षुदर्भःसुमधुराःस्निग्धाईषत्कषायकाः ॥
कफपित्तहरारुच्यालघुसंतर्पणाःस्मृताः ॥

अर्थ-इक्षुदर्भ, सुदर्भ, पत्रालु और तृणपत्रिक ए संस्कृत नाम । म. अश्वालु, मुठेंगवत, का. कागविसभेद । गुण । इक्षुदर्भ मीठा, चिकना, किंचिन्मात्र कषेला, कफपित्त हरणकर्त्ता, रुचिकारी, हलका और इन्द्रियोंको तृप्त करता जानना ।

गोमूत्रतृण.

गोमूत्रिकारक्ततृणाक्षेत्रजाकृष्णभूमिजा ।
गोमूत्रिकातुमधुरावृष्यागोदुग्धदायिनी ।

अर्थ-गोमूत्रिका, रक्ततृणा, क्षेत्रजा और कृष्णभूमिजा ए लाल तृणके संस्कृत नाम । म. तांबेटी गवत, थोर शिपीगवत, का. गोडवी कहतेहै । लालतृण मधुर, वृष्य और गौओंके दूध बढानेवाला है ।

शिल्पिकतृण.

शिल्पिकाशिल्पिनीशीताक्षेत्रजाचमृदु-च्छदा ।
शिल्पिकामधुराशीतातद्बीजंबलवृष्यदम् ॥

अर्थ-शिल्पिका, शिल्पिनी, शीता, क्षेत्रजा और मृदुच्छदा ए संस्कृत नाम । म. लहान सीपीगवत, का. किरियासिपिगे कहतेहैं । **गुण** । मधुर, शीतल । शिल्पिके बीज बलकारी और वृष्य हैं ।

निश्रेणीतृण.

निःश्रेणिकाश्रेणिकानीरसोनावनवल्लरी ॥
निःश्रेणिकानीरसोष्णापशूनामबलप्रदा ॥

अर्थ-निःश्रेणिका, श्रेणिका, नीरसोना और वनवल्लरी ए निश्रेणी तृणके नाम है । म. निश्रेणीगवत, **कौ.** निरोषी । **गुण** । नीरस (रसरहित) गरम और पशुओंको निर्बल करतीहै ।

जरडीतृण.

गम्रोटिकासुनीलाचजरडीचजलाश्रया ॥
जरडीमधुराशीतासारणीदाहहारिणी ॥
रक्तदोषहरारुच्यापशूनांदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-गमोटिका, सुनीला, जरडी और जलाश्रया ए संस्कृतनाम । म. गौडालौणा गवत, जरडी, का. हक्लेयहुल्लु । **गुण** । मधुर, शीतल, दस्तावर, दाहनाशक, रुधिरके दोष दूर करे । रुचिकारी और पशुओंके दूध बढाता है ।

मज्जरतृण.

मज्जरःपवनःप्रोक्तःसुतृणःस्निग्धपत्रजः ॥
मृदुग्रंथिश्चमधुरोधेनुदुग्धकरःस्मृतः ॥

अर्थ-मज्जर, पवन, सुतृण, स्निग्धपत्रज और मृदुग्रंथि ए सं. नाम । म. पवनागवत, का. नले । **गुण** । मधुर और गौओंके थनोंमें दूधके बढानेवाला है ।

तृणाढ्य.

तृणाढ्यंपर्वतृणंपत्राढ्यंचमृगप्रियम् ॥
बलपुष्टिकरंरुच्यंपशूनांसर्वदाहितम् ॥

अर्थ-तृणाढ्य, पर्वतृण, पत्राढ्य और मृगप्रिय, ए संस्कृत नाम । म. मृगप्रिय, शेंडेगवत, का. सेंद । **गुण** । बल, पुष्टि और रुचिको करे, तथा पशुओंको सदैव प्रिय है ।

नीलदूर्वा.

नीलदूर्वारुहानंताभार्गवीशतपर्विका ॥
शष्पंसहस्रवीर्याचशतवल्लीचकीर्तिता ॥६१॥
नीलदूर्वाहिमातिक्तामधुरातुवराहरा ॥
कफपित्तास्रवीसर्पतृष्णादाहत्वजामयान् ॥

अर्थ-नीलदूर्वा, रुहा, अनंता, भार्गवी, शतपर्विका, शष्प, सहस्रवीर्या और शतवल्ली, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** नीलीदूब, हरीदूब, **कौ.** नीली हरियाली, **का.** हसुगरुके, **तै.** जरिकेगड्डी, **ता.** अरुगम् पुल्लु, **उत्क.** दुब्, **गु.** नीलीध्रो **इं.** कोपिंग् साइनोडन, कहतेहैं । **गुण** । शीतल, तिक्त, मधुर और कषाय । **प्रयोग** । कफजन्य रक्तपित्त, वीसर्प, तृषा, दाह और त्वचाकी बीमारियोंपर देवे ।

श्वेतदूर्वा.

दूर्वाशुक्लातुगोलोमीशतवीर्याचकथ्यते । श्वेतादूर्वाकषायास्यात्स्वाद्वीवर्ण्याचजीवनी ॥
तिक्ताहिमाविसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहहृत् ॥

अर्थ-श्वेतदूर्वा, गोलोमी और शतवीर्या, ए संस्कृत नाम, **हिं.** सपेददूब, **म.** पांढरी हरियाली, **का.** बिलियकरुके, **गु.** धोलीध्रो । **गुण** । कषेली स्वादु, बलकारक, जीवनीशक्तिसंपन्न, कडवी और शीतल । **प्रयोग** । विसर्प, रुधिरके दोष, तृषा, पित्त वृद्धि, कफवृद्धि और दाह आदि रोगोंको हरण करे ।

गांडरदूब (गंडदूर्वा.)

गंडदूर्वातुगंडालीमत्स्याक्षीशकुलाक्षकः ॥
गंडदूर्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणीलघुः ॥
तिक्ताकषायामधुरावातकृत्कटुपाकिनी ॥
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ६५

अर्थ-गंडदूर्वा, गंडाली, मत्स्याक्षी और शकुलाक्षक, ए संस्कृतनाम। हिं. गांडर दूब, म. गंडदूर्वा, गाढीहरियाली, का. मीनगत्ते कहतेहैं। गुण। शीतल, लोहद्रावक, ग्राही, लघु, तिक्त, कषाय, मधुर, वातजनक और पाकमें कटु। प्रयोग। दाह, तृषा, कफ, रुधिरके दोष, कोढ और पित्तज्वर इनको शांति करे।

विदारीकंद.

वाराहीकंदएवान्यैश्चर्मकारालुकोमतः।
अनूपसंभवेदेशेवाराहइवलोमवान्॥
विदारीस्वादुकंदाचसातुक्रोष्ट्रीसितास्मृता।
इक्षुगंधाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी॥
वाराहवदनागृष्टिर्बदरीत्यपिकथ्यते।
विदारीमधुरास्निग्धाबृंहणीस्तन्यशुक्रदा॥
शीतास्वर्यामूत्रलाचजीवनीबलवर्णदा।
गुरुपित्तास्रपवनदाहान्हंतिरसायनी॥६९॥

अर्थ-वाराहीकंदको कोई २ चर्मकारालुक कहतेहैं। यह नीची जगहमें होताहै। इस कंदकी गांठके ऊपर सूअरकेसे मोटे २ बाल होतेहैं। इसीसें इसको वाराहीकंद कहतेहैं। संस्कृतनाम-विदारी, स्वादुकंदा, सफेदविदारीको-क्रोष्ट्री, इक्षुगंधा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, वराहवदना, गृष्टि और बदरा, हिं. विदारीकंद, बिलारीकंद, म. भूयकोहले, का. नेलकुंबल, गु. फगवेलानोकंद, उत्क. भूइकरवारु, तै. नेलगुंबुडू, ला. आईपोमियाडिजिटेटा। गुण। मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, स्तनोंमें दूध करता, शुक्रकर्त्ता, शीतल, स्वरशोधक, मूत्रकर्त्ता, जीवनशक्तिसंपादक, बलकारक, रसायन, वर्णप्रद और भारी। प्रयोग। यह रक्तपित्त, वादी और दाहको नष्ट करे। वाराहीकंद और विदारीकंद एकही जातिके कंद हैं। इसीवास्ते इस मध्यदेशमें वाराही कंदकी प्रतिनिधिमें विदारीकंद डालते हैं।

क्षीरविदारी.

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगंधेक्षुवल्लरी॥
इक्षुवल्लीक्षीरकंदःक्षीरवल्लीपयस्विनी॥
क्षीरशुक्लाक्षीरलतापयःकंदापयोलता॥
पयोविदारिकाचेतिविज्ञेयाद्वादशाह्वया॥
ज्ञेयाक्षीरविदारीचमधुराम्लाकषायका॥
तिक्ताचपित्तशूलघ्नीमूत्रमेहामयापहा॥
क्षीरकंदोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालकः॥
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वयस्तंभीसनालकः॥

अर्थ-दूसरा क्षीरविदारी होताहै उसके संस्कृतनाम-इक्षुगंधा, इक्षुवल्लरी, इक्षुवल्ली, क्षीरकंद, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पयःकंद, पयोलता और पयोविदारिका। हिंदीमें दूधविदारी, अन्य भाषाओंमें क्षीरकंद। गुण। मधुर, खट्टा, कसेला, कडवा, पित्तशूल, मूत्ररोग और प्रमेह रोगको दूर करे। क्षीरकंद दोप्रकारका है-एक नालवाला, दूसरा विनानालका। इनमें विनानालका रोग हरणकर्त्ता है। और नालवालाक्षीरकंद अवस्थाको स्थापन करेहै।

मूसली (मूशलीकंद.)

तालमूलीतुविद्वद्भिर्मुशलीपरिकीर्तिता॥
सतालमूलीद्विविधाशुक्लाकृष्णाचवर्णतः॥
शुक्लाचाल्पगुणाकृष्णाकथिताचरसायनी॥
मुशलीमधुरावृष्यावीर्योष्णाबृंहणीगुरुः॥
तिक्तारसायनीहंतिगुदजान्यनिलंतथा॥७०॥

अर्थ-तालमूलीको वैद्यजन मूशलीकंद कहतेहैं। मूसलीका वृक्ष एक घासकी जातका है। उसका फूल पीला और कंद लंबा और चिकना होताहै। हिं. सफेद और काली मूसली, बं. तालमूली, म. मुसली, क. नेलताडी, तै. निलयतली गड्डु, ला. हाइपोक्सिस् आर्चि ओइडिस्। गुण। मधुर, बलकारक, उष्णवीर्य, पुष्टिकरता, भारी, कडवी, रसायन, वातनाशक और बवासीरको नष्ट करे।

मूसलीस्याद्द्विधाप्रोक्ताश्वेताचापरसंज्ञका।
श्वेतास्वल्पगुणोपेताअपराचरसायनी॥

अर्थ-मूसली दो प्रकारकी है। एक सफेद, दूसरी काली, इनमें सफेदमें थोडे गुण है और कालीमूसली रसायनी है अर्थात् इसमें अनेक गुण है।

शतावरी. महाशतावरी.

शतावरीबहुसुताभीरुरिंदीवरीवरी॥
नारायणीशतपदीशतवीर्याचपीवरी॥७१॥

महाशतावरीचान्याशतमूल्यर्द्धकंटिका ।
सहस्रवीर्याहेतुभ्रऋष्यप्रोक्तामहोदरी॥७२॥
शतावरीगुरुःशीतातिक्तास्वाद्वीरसायनी ॥
मेधाग्नीपुष्टिदास्निग्धानेत्र्यागुल्मातिसार-
जित् ॥ ७३ ॥
शुक्रस्तन्यकरीबल्यावातपित्तास्रशोथजित्॥
महाशतावरीमेध्याहृद्यावृष्यारसायनी ॥
शीतवीर्यानिहंत्यर्शोग्रहणीनयनामयान् ॥

अर्थ–शतावरी, बहुसुता, भीरु, इन्दीवरी, वरी, नारायणी, शतपदी, शतवीर्या और पीवरी, महाशतावरी । **हिं.** छोटीसतावर, शतमूली, सहस्रमूली, **म.** सांनीकांटेसैर, **बं.** किरियभासडी, **गु.** सतावल, एकलकंटो, **फा.** वूजीदां, **अ.** शकाकुलमिश्री, **ला.** आस्पागस, रासीमोसस् Aspagus racemosus कहतेहैं । **स्वरूप** । शतावरकी वेल होतीहै । इसके पत्ते सूएके सामने मिलते हुए बारीक होते हैं । फूल सपेद होताहै । **प्रयोगमें** इसकी जड लीनी जाती है । **महाशतावरीके** नाम–महाशतावरी, शतमूलीय, अर्द्धकंटिका, सहस्रवीर्या, महती, ऋष्यप्रोक्ता और महोदरी, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** बडीसतावर, **म.** शतावर, **का.** यरडु, आसडियगुण । सतावर मोटी और सपेद उत्तम होतीहै । **गुण** । शतावरी भारी, शीतल, कडवी, स्वादिष्ट, रसायन, मेधाको बढानेवाली, अग्निकारक, पुष्टिकर, स्निग्ध, नेत्रोंको हितकारी, वीर्यकर्ता, स्तनोंमें दूध करता, बलकारक, वातनाशक । **प्रयोग** । यह गोला, अतिसार, रक्तपित्त और प्रमेहरोगको शांतिकरे । इसके दर्पनाशक **बडहल और सहत है** । **मात्रा** ७ मासे, **बदल** इसकी बहमन सपेद है । **महाशतावरी** स्मरणशक्तिवर्द्धक, हृद्य, बलकारक, रसायन और शीतवीर्य । **प्रयोग** । बबासीर, संग्रहणी और नेत्ररोग शांति हो ।

असगंध (अश्वगंधा.)

गंधांताथाजिनामादिरश्वगंधाहयाह्वया ॥
वराहकर्णीवरदाबलदाकुष्ठगंधिनी ॥
अश्वगंधानिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा ॥
बल्यारसायनीतिक्ताकषायोष्णातिशुक्रला ।

अर्थ–वाराहकर्णी, वरदा, बलदा, कुष्ठगंधनी अश्ववाचक शब्द अंतमें और गंधादिशब्द जितनेहैं सब इसके पर्यायवाचक जानने । **हिं.** असगंध, नागौरीअसगंध, **म.** आसंध, **का.** अंगुर, आसंधिका, **गु.** आसोद, **तै.** पिल्लीआङ्गा, **इं.** विटरचेरी, **फा.** वेहमनबररी, **ला.** फिसेलिस् सोम्नीफरा Physalis somnifera कहतेहैं । **गुण** । असगंध बलकारक, रसायन, तिक्त, कषेली, गरम और अत्यंत शुक्रकर्त्ता है । **प्रयोग** । इसके द्वारा वादी, कफ, सपेदकोढ, सूजन, खईरोग, आमवात, व्रण, खांसी और श्वास ए नष्ट होय । असगंधकी जड प्रयोगमें लीनी जाती है । यह रास्नाके समान होतीहै । इसीसैं अत्तार और पसारी लोग असगंधके पलटेमें रास्नाकी लकडी देतेहै ।

पाठा.

पाठांबष्ठांबष्ठिकाचप्राचीनापापचेलिका ॥
एकाष्ठीलारसाप्रोक्तापाठिकावरतिक्तिका ॥
पाठोष्णाकटुकातीक्ष्णावातश्लेष्महरीलघुः ॥
तिक्तारुचिकरीचाम्लाभग्नसंधानकारिणी ॥
हंतिशूलज्वरछर्दीकुष्ठातीसारहृद्रुजः ॥
दाहकंडूविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ॥७८॥

अर्थ–पाठा, अंबष्ठा, अंबष्ठिका, प्राचीना, पापचेलिका-एकाष्ठीला, रसा, पाठिका और वरतिक्तिका ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** पाठ, **बं.** आकनादि, **म.** पहाडमूल, **गु.** कांटीउ, कालीपाट, **तै.** पाठचेट्ट, **उत्क.** पाकनविन्धि, **इं.** परोरूट, **ला.** सिसापिलोस परिरा । **स्वरूप** । इसकी वेल चातुर्मासमें होती है । पत्ते कुछ गुलाई लिये होतेहैं, उसके कोनोमेंसैं सपेद और बारीक मौरकेसमान **फूल** निकलताहै । तथा लालरंगके मकोयके समान **फल** होतेहैं । **चित्र** नंबर २२ का देखो । **गुण** । उष्ण, चरपरी, तीक्ष्ण, वातकफनाशक, हलका, कडवी, अरुचिनाशक, स्वादमें खट्टी और टूटेहुएको जोडनेवाली । **प्रयोग** । शूल, ज्वर, वमन, कुष्ठ, अतिसार, हृदयकारोग, दाह, खुजली, विषविकार, श्वास, कृमि, गोला और विषका घाव इनको दूर करे । इसकी जड आदि प्रयोगमें लीने आते हैं । **मात्रा** १ मासेकी है ।

निसोथसपेद.

श्वेतात्रिवृत्त्रिभंडीस्यात्रिवृत्तात्रिपुटापिच
सर्वानुभूतिःसरलानिशोत्रारेचनीतिच ॥७९॥
श्वेतात्रिवृद्रेचिनीस्यात्स्वादुरुष्णासमीरहृत्
रूक्षापित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा ॥८०॥

अर्थ–श्वेतत्रिवृत, त्रिभंडी, त्रिवृत्ता, त्रिपुटा, सर्वानुभूति, सरला, निशोत्रा और रेचनी. ए संस्कृत नाम । हिं. निसोथ, श्वेतपनिलर, बं. श्वेततेउडी, म. निसोत्तर, द्रे. तेड, का. तिगडे, तियड, गु. नसोतर, तै. तेलतिगडा, ता. फिवदइ, फा. तुर्बुद, इं. टरबीथरूट, ला. आईपोम्या टरपीथम Ipoma & turpethum कहतेहैं । स्वरूप । निसोथ दो प्रकारकी है–सपेद और काली। तहां कालीको दवामें नहीं डालना क्योंकि यह बडीतीव्र रेचक है। इसमे अमेरिकन् जलपकी जडके समान शक्ति है । इसकी वेल होतीहै, पत्ते मोटे होतेहै, फूल घंटेके आकारका सपेद और एक इंचके अनुमान लंबा होताहै । और काली निसोथका फूल नीले रंगका होता है । इसके डांढरेमें तीन रेखा होती है । फल कुछ लंबाई लिये सुपारीके समान होताहै । पकनेपर खिल जाता है और इसके भीतर चार काले बीज होतेहै । चित्र नंबर २३ का देखो । दर्पनाशक बदामरोगन तथा वर्जकतुना, प्रतिनिधी कालादाना और इन्द्रायनका गूदा है । गुण । रेचक, स्वादु, गरम, वातनाशक और रूक्ष । प्रयोग । पित्त, कफज्वर, पैत्तिक शोथ और उदररोग इनको दूर करे । इसकी वेलकी लकडी प्रयोगमें लेतेहैं । मात्रा १ मासेसैं लेकर ४॥ मासेतक है ।

श्यामनिसोथ.

त्रिवृच्छ्यामार्द्धचंद्राचपालिन्दीचसुषेणिका ॥
मसूरविदलाकोलकैषिकाकालमेषिका ॥८१॥
श्यामात्रिवृत्ततोहीनगुणातीव्रविरेचनी ॥
मूर्च्छादाहमदभ्रांतिकंठोत्कर्षणकारिणी ॥

अर्थ–श्यामात्रिवृत, अर्द्धचंद्रा, पालिन्दी [न्धी] सुषेणिका, मसूरविदला, कोलकै [कौ] षिका और कालमेषिका, ए संस्कृत नाम । हिं. कालीनिसोथ, श्यामपनिलर, बं. श्यामतेउडी, का. लोहिवीतियड, कैप्यनेयतिगडे कहतेहैं । गुण । कालीनिसोथ सपेदनिसोथकी अपेक्षा अल्पगुणवाली है । परंतु इसमें विरेचक शक्ति अति तीव्र है । प्रयोग । मूर्छा, दाह, मद, भौर और कंठको सुखानेवाली है । मात्रा १ मासेसे ३ मासेतक है ।

लघुदंती.

लघुदंतीविशल्याचस्यादुदुंबरपर्ण्यपि ॥
तथैरंडफलाशीघ्राश्येनघंटाघुणप्रिया ॥
वाराहांगीचकथितानिकुंभश्चमकूलकः ॥

अर्थ–लघुदंती, विशल्या, उदुंबरपर्णी, एरंडफला, शीघ्रा, श्येनघंटा, घुणप्रिया, वाराहांगी, निकुंभ और मकूलक, ए संस्कृत नाम । हिं. दंती, राजपूतानेमें दात्यूणी, गु. दातीमूल और सब हिंदुस्थानकी भाषामें इसी नामसैं प्रसिद्ध है । अ. हबुलंमुलुक, फा. दंद, इं. क्रोटनरूट Croton root कहते हैं । यह जमालगोटेके वृक्षकी जड है । इसके गूलरके समान पत्ते होतेहै और महुआके समान फूल होताहै ।

बृहद्दंती.

द्रवंतीसावरीचित्राप्रत्यक्पर्ण्यर्कपर्ण्यपि ॥
चित्रोपचित्रान्यग्रोधीप्रत्यक्श्रेण्याखुकर्ण्यपि
दंतीद्वयंसरंपाकेरसेचकटुदीपनम् ॥
गुदांकुराश्मशूलार्शःकंडूकुष्ठविदाहनुत् ॥
तीक्ष्णोष्णंहंतिपित्तास्रकफशोथोदरक्रमीन्

अर्थ–द्रवंती, वरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, अर्कपर्णी, चित्रोपचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यक्छ्रेणी [प्रेत्यक्श्रेणी] और आखुकर्णी, ए संस्कृत नाम । हिं. बडीदंती, का. एरडनेदंती, गु. मोटानेपाल, कहतेहै । इसके वृक्षके पत्ते अंडके समान होतेहै । गुण । दोनों प्रकारकी दंती वातादि दोषोंको निकालनेवाली, पाकमें और रसमें चरपरी, अग्निदीप्तिकारक, तीक्ष्णोष्ण है । प्रयोग । बवासीर, आमशूल, रक्तदोष, खुजली, कोढ, दाह, रक्तपित्त, कफशोथ, उदररोग और क्रमिरोग इनको दूर करे ।

क्षुद्रदंतीफल.

क्षुद्रदंतीफलंतुस्यान्मधुरंरसपाकयोः ॥
शीतलंसृष्टविण्मूत्रंगरशोथकफापहम् ।

गुण । छोटी दंतीकाफल खानेमें और पाकमें मीठा, शीतल, मलमूत्रको निकालनेवाला, विषजन्य शोथनाशक और कफनाशक है ।

जयपाल.

जयपालोदंतिबीजंविख्यातंतन्तिलीफलम् ॥
जयपालोगुरुःस्निग्धोरेचीपित्तकफापहः ॥

अर्थ–जयपाल, दंतिबीज और तन्तिलीफल, ए **संस्कृत** नाम । **हिं** जमालगोटा, अजेपाल, **बं.** जयपाल, **म.** जपाल, **कों.** जेपाल, मुगलानीअरंड, चंद्रज्योति नामक वृक्ष है उसीको जमालगोटा कहतेहैं । **गु.** नेपाळो, **अ.** हब्बसलातीन, **फा.** तुख्मवेदअंजीर, **इं.** क्रोटनसीड, **ला.** ओलियम क्रेटोनिस । यह वृहद्दंतीका फल है । **स्वरूप** । जमालगोटेके बीज छोटी अंडीके समान होतेहैं, इसको तोडनेसे भीतर हरे रंगकी जिव्हासी निकलती है वही वमनादि कराती है । **गुण** । जमालगोटा भारी, चिकना, दस्त करानेवाला और कफपित्तको नष्ट करता है । **प्रयोग**में बीज लिया जाताहै । सो शुद्धकराहुआ लेना [शोधनेकी विधि हमारे बनाए **रसराजसुंदर** ग्रंथमें लिखीहै] ।

कैश्चित्प्रतीचीभववैद्यवर्यैः ।
निराकृतःकोष्ठविघातकश्च ॥
सर्पिःपयस्तक्रमथाज्यपानं ।
दर्पघ्नमेतस्यबुधावदन्ति ॥

अर्थ–हकीमलोग जमालगोटेसें कोठेमें वर्म (सूजन) उत्पन्न होनेके कारण इसका देना वर्जित करतेहैं । कदाचित् किसीने इसको भूलसें खायलिया होय तो इसके **दर्पनाशक** घी, दूध, छाछ और केवल घृतपान कहेहैं ।

इन्द्रायण (इन्द्रवारुणी.)

ऐन्द्रीन्द्रवारुणीचित्रागवाक्षीचगवादिनी ॥
वारुणीचपराप्युक्तासाविशालामहत्फला ॥
श्वेतपुष्पामृगाक्षीचमृगैर्वारुमृगादनी ॥
गवादिनीद्वयंतिक्तंपाकेकटुसरंलघु ॥ ८९ ॥
वीर्योष्णंकामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् ॥
श्वासकासापहंकुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत् ॥
प्रमेहमूढगर्भामगंडामयविषापहम् ॥ ९० ॥

अर्थ–ऐन्द्री, इन्द्रवारुणी, चित्रा, गवाक्षी और गवादिनी, यह **छोटी** इन्द्रवारुणीके **संस्कृत** नाम । **हिं.** इन्द्राय [इ] न, फरफेंदू , इन्द्रारुण, **रा.** तसतुंबो, गुडतुंबो, **बं.** राखालशशा, **म.** लघुकांवडल, **को** इन्द्रावण, **दे.** घोडइन्द्रावण, घुलेइन्द्रावण, **फा.** हामेके, **गु.** इंद्रवरणुं, **तै** एतीपुच्छा, **अ.** हिंजल, **फा.** खुरपुजेतलख, **ला.** कोलोसिंथिस Colocynthis कहतेहैं । **स्वरूप** । इंद्रायनकी रेतली जमीनमें बेल होतीहै, **पत्ते** लंबे बीच २ में कटेहुए, **फूल** पीले रंगका पांच पंखडीका होताहै । **फल** संतरेके समान पीलेरंगका सुहामना होताहै । इसके भीतर **बीज** बहुत होतेहैं । व्रज भाषामें **फरफेंदू** कहतेहैं । **चित्र** नंबर २४ का देखो । इसके भीतरसें इलेटीरिअम् नामका सत्व निकलता है । **बडीइन्द्रवारुणीके** नाम । विशाला, महाफला, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगैर्वारु और मृगादनी । **हिं.** बडी इन्द्रफला, **म.** थोरकांवडल, **फा.** हिरियहामेके । इसका फूल सपेद और फल बडा होताहै । **गुण** । दोनों प्रकारकी **इन्द्रायण**–कडवी, पाकमें कटु, सर (दस्तावर) हलकी और गरम । **प्रयोग** । कामला, पित्त, कफ, प्लीहा, उदररोग, श्वास, खांसी, कोढ, गोला, गांठ, घाव, प्रमेह, मूढगर्भ, आम, गंडरोग और विषरोग इनको दूर करे । यह आम और कफके निकालनेमें, अद्वितीय है । **प्रयोगमें** इसके फलका गूदा लिया जाताहै । **मात्रा** ६ रत्तीसें लेकर दो मासेतकहै । यह खून और फेंफडेको नुकसान करेहै । **दर्पनाशक** कतीरा, बिहीदाना, मस्तंगी, निशास्ता है । **प्रतिनिधि** इसबंद, रसोत और निसोथ है । *

* **सुश्रुतसंहितामें**—इसको दस्तावर, दुष्टदोषहर, विषनाशक और व्रणरोपक मानतेहैं ।
आयुर्वेदके ग्रंथोंमें—इन्द्रायनको कडवा, तीखा और तीव्र-जुल्लाब लानेवाला वर्णन कराहै । तथा पित्तविकार, दस्तकी कब्जेयत, ज्वर और पेटके जीव निकालनेको यह दीनी आयहै । इसकी जडसे जुलाब लगताहै तथा कामला, कलेजेमें पानीका भरना, जलंधर, मूत्रस्थानकी व्याधी और संधिवातपर उत्तम असर करेहै ।

कृष्णबीज.

कृष्णबीजंश्यामबीजंस्मृतंश्यामलबीजकम् ॥
कृष्णबीजंसरंस्निग्धंशोथोदरहरंपरम् ॥
ज्वरंविष्टंभहारीचमस्तकामयनाशनम् ॥
उदावर्त्तकफेनाहेप्रयोज्यंबुद्धिमत्तरैः ॥

अर्थ–कृष्णबीज, श्यामबीज, श्यामलबीज, ए **संस्कृत** नाम। **हिं**. कालादाना, मिरचाई, **फा**. हब्बुलनील, **ला**. आईपोम्यासरोलिया कहतेहैं। **गुण**। दस्तावर, स्निग्ध। **प्रयोग**। सूजन, उदररोग, ज्वर, विष्टंभ, मस्तकपीडा, उदावर्त्त, कफरोग, और अनाह इन रोगोंमें देवे। **मात्रा** ४॥ मासे। **प्रतिनिधि** निसोथ अथवा इंद्रायन, **दर्पनाशक** सब यूष है।

यवासशर्करा.

यवासशर्कराप्रोक्ताबृंहणीपित्तनाशिनी।
ज्वरघ्नीदीपनीशीतारेचनीसापुरातना ॥
नार्याश्चापन्नसत्वायादुर्बलस्यतथाशिशोः।
रेचनार्थंप्रयोज्येयंक्षीणस्यस्थविरस्यच ॥

अर्थ–**यवासशर्कराको** हिंदीमें **शीरखिस्त** और **बं**. म्यानाक, कहतेहैं। यह खुरासानके जंगलमें उत्पन्न होतीहै। **गुण**। बृंहण, पित्तनाशक, ज्वरघ्न, क्षुधावर्धक और शीतवीर्य। **प्रयोग**। यह पुरानी दस्त करानेवाली होतीहै। गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीणदेह और वृद्ध इनको इसके द्वारा दस्तकराना हितकारी है।

स्वर्णमुखी (सनाय.)

स्वर्णपत्रीस्वर्णमुखीकल्याणीहेमपत्रिका ॥
रेचिकास्वर्णनीप्रोक्तारेचनीमलहारिणी ॥
मंदाग्नौविषमेजीर्णेप्लीहेबद्धगुदेतथा ॥
यकृतेपांडुरोगेचकामलाकफहृत्परा ॥

अर्थ–स्वर्णपत्री, स्वर्णमुखी, कल्याणी, हेमपत्रिका, रेचिका, स्वर्णनी, ए **संस्कृत** नाम। **हिं**. सनाय, सोनामुखी, **इं**. टिनेवेली सिना, **ला**. सिनाइंडीका, पलासकेसे और कबूतरकी जिव्हाके समान लंबे बारीक पत्ते, रंगमें कुछ २ पीली हो ऐसी **सनाय** उत्तम होतीहै। **गुण**। दस्त करानेवाली, मलको निकाले। **प्रयोग**। मंदाग्नि, विषमज्वर, अजीर्ण, प्लीह, बद्धगुद, कलेजेकेरोग, पांडुरोग, कामला और कफ इनको हरण करे। **मात्रा** २ तोलेकी हैं। **प्रतिनिधि**, निसोथ और **दर्पनाशक** विहीदाना और इसबगोल है।

नील. (नीली.)

नीलीतुनीलिनीतूलीकालदोलाचनीलिका ॥
रंजनीश्रीफलीतुत्थाग्रामीणामधुपर्णिका ॥
क्लीतकाकालकेशीचनीलपुष्पाचसास्मृता ॥
नीलिनीरेचनीतिक्ताकेश्यामोहभ्रमापहा ॥
उष्णाहंत्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् ॥
आमवातमुदावर्तंमेदेचविषमुद्धतम् ॥ ९३ ॥

अर्थ–नीली, नीलनी, तूली, कालदोला, नीलिका, रंजनी, श्रीफली, तुत्था, ग्रामीणा, मधुपर्णिका, क्लीतका, कालकेशी और नीलपुष्पा ए **संस्कृत** नाम। **हिं**. नील, लील, **म**. गुली, **गु**. गली, **का**. हिरिपनीली, **तै**. नीलीजेट्टु, **इं**. इंडीगो। **स्वरूप**। इसका वृक्ष मेथीके सागके समान होताहै, कि जिसमें लीलरंग निकलता है यह प्रसिद्ध है। **गुण**। यह रेचक, कडवी, बालोंको उत्तमकर्ता और गरम। **प्रयोग**। मूर्च्छा, भ्रम, उदररोग, प्लीहा, वातरक्त, वातकफ, आमवात, उदावर्त्त, मेदरोग और विषदोषकों नष्ट करे। जिसके

मुसलमानी ग्रंथकर्ता—इसके फलका सरबत जुल्लाब लानेवाला, बलगम काढनेवाला, जलंधर, कामला, पेटकी ऐंठन और श्लीपद नष्ट कर्त्ता मानतेहैं। गर्भाशयपर उसका असर होताहै। तथा इसकी धूनी जल्दी देनेसें नष्टहुआ आर्त्तव फिरसे जारी होताहै। इसके **बीजसेभी** जुल्लाब होताहै, तथा इसके वर्त्तनेसे बुढापेमें सफेदबाल होतेहुए रुकतेहैं। **आफ्रिकामुलकके** मनुष्य इस बीजको अत्यंत **पौष्टिक** मानतेहैं। तथा **केप ऑफ् गुड होपके** रहनेवाले इसके ताजे फलके रसको खांडके साथ मिलायके जलंधरके रोगमें पीतेहैं। तथा त्वचाके रंग पलटनेको लेप करतेहैं।

चरकसंहितामें तथा **सुश्रुतसंहितामें**—इस फलको विकारनाशक, संशोधन और पित्तकारी देनेमें उपयोगी मानतेहैं।

सपेद बाल होंगए हो वो प्रथम महदीके पत्ते पीसके लगावे तो बाल लाल होजावे, फिर उनपर नीलके पत्ते घीसके लगानेसें बाल हूबहू काले भौंराके माफिक हो जातेहैं । मात्रा २ मासे । *

महानीली.

अन्याचैवमहानीलीअमलाराजनीलिका ।
तुत्थाश्रीफलिकामेलाकेशार्हाभृशपत्रिका ॥
महानीलीगुणाढ्यास्याद्रंगश्रेष्ठासुवीर्यदा ।
पूर्वोक्तनीलिकादेषासगुणासर्वकर्मसु ॥

अर्थ–एक दूसरी महानीली होतीहै, इसके नाम–अमला, राजनीलिका, तुत्था, श्रीफलका, एला, केशार्हा और भृशपत्रिका । **हिं.** बडानील, **म.** वडिलनीली, **का.** हिरियनीली कहतेहैं । **गुण** । महानीली गुणवाली, रंगको उत्तम कर्त्ता, वीर्यदायिनी, छोटी नीलीसें यह सर्व प्रकार सब गुणोंमें उत्तम है ।

शरपुंख (सरफोका.)

शरपुंखःप्लीहशत्रुर्नीलीवृक्षाकृतिस्तुसः ॥
शरपुंखोयकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहः ॥
तिक्तःकषायःकासास्रश्वासज्वरहरोलघुः ॥

अर्थ–शरपुंख, प्लीहशत्रु, नीलवृक्षाकृति ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** सरफोका, **म.** शरपुंखा, उन्हाली, जंगली-कुलठी, रानटीनील, **गु.** शरपुंखा, **का.** येरड, कोग्गि, **तै.** प्रापाराचेट्टु, **ता.** कोल्लुक व केल्लापि, **ला.** टॅफ्रोसिया परपुरिया, tephrosia purporea **स्वरूप** । यह छोटा दो फूट ऊंचा क्षुपजातिहै । पत्ते मेथीके समान होतेहैं, फूल जामुनके आकार लाली लिये होतेहैं, फल इसका चपटा होकर रेसेके आकार जैसें ग्वारकी फली होतीहै ऐसा होताहै । इसके पत्तेको बीचमेंसें पकडकर तोडनेसें खांचा पडकर टूटता है । वर्षाऋतुमें यह बहुत होताहै । **चित्र** नंबर २५ का देखो । **गुण** । कडवा, कषैला और हलका । **प्रयोग** । यकृत (कलेजा), प्लीह (तिल्ली), गोला, व्रण, विष, खांसी, रुधिरके दोष, श्वास और ज्वरको नष्ट करे, इसका सर्वांश ग्रहण करा जाताहै । **मात्रा**२मासेकी है।

सपेदसरफोका.

शराभिधाचपुंखास्याच्छ्वेताद्यासितसायका।
शितपुंखाश्वेतपुंखाशुभ्रपंखाचपंचधा ॥
श्वेतात्वेषागुणाढ्यस्यात्प्रशस्ताचरसायने ।

अर्थ–शरपुंखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेतपुंखा और शुभ्रपुंखा ए पांच नाम **संस्कृत** हैं । **म.** कंट-उन्हली, **का.** मुलुग्गोगी । **गुण** । दोनों सरफोका गुणोंमें समान है, तथापि सपेदसरफोका अत्यंत गुणकारी और रसायन कर्ममें उत्तम है । *

कंठपुंखा.

अन्यातुकंठपुंखास्यात्कंठालुःकंठपुंखिका ॥
कंठपुंखाकटूष्णाचक्रिमिशूलविनाशिनी ।

अर्थ–एक कंठपुंखा, उसका **संस्कृत**में कंठालु और कंठपुंखिका कहतेहैं । **कंठपुंखा** चरपरा, गरम, कृमि और शूलको नष्ट करती है ।

* **डा० पेन्स्ली**—कहताहै कि नीलकी जडमें जहरके असर नष्ट करनेका और पत्तोंमें निर्बलता नष्ट करनेका गुण है । कलेजेकी सूजनऊपर नीलके पत्ते, सिर्फ अथवा सहतके साथ पीसकर देतहै । जडको पानीमें औटाय पथरीपर देतेहै । तथा पत्तोंको पीस पेडूपर चुपडनेसे पेशाब खुलासा आताहै । हेजाकी विमारीमें नीलका चूर्ण दिया जाताहै, तथा उस चूर्णको दुष्ट नासूरपर बुरकनेसे जल्दी अंकुर लेआताहै । कोमलडालीका रस सहतमें मिलाय छोटे २ बच्चोंके मुखमें होनेवाली गरमी दूर करनेको काममें आतीहै ।

मुसलमानी ग्रंथकर्त्ता—पारेकी किसी प्रकारकी दवाई खानेसे मुखमें होनेवाली गरमी नष्ट करनेको इस वृक्षकी डालीवगेरह औटाय उस पानीके कुल्ले करनेकी प्रशंसा करतेहै । तथा वे इस क्षुपको बडीभारी खांसी, फुप्फुस और गुरदेमें होनेवाली विमारियोंमें, हृदयका धवकारा और जलंधरके रोगमें अत्यंत उपयोगी मानतेहै ।

* **मीर मुहम्मद हुसेन**—कहताहै कि सरफोका १ भाग, तथा भांगके पत्ते दो भाग मिलायके देनेसे दूखती बवासीर नष्ट होतीहै । और कालीमिरचके साथ मिलायके देनेसे पिशाब अधिक उतरेहै तथा मुख्य करके प्रमेहको नष्ट करेहै ।

जवासा (यवास.)

यासोयवासोदुःस्पर्शोधन्वयासःकुनाशकः॥
दुरालभादुरालंभासमुद्रांताचरोदिनी ॥ ९५
गांधारीकच्छुराऽनंताकषायादुरविग्रहा ॥
यास.स्वादुःसरस्तिक्तस्तुवरःशीतलोलघुः॥
कफमेदोमदभ्रांतिपित्तास्रकुष्ठकासजित् ॥
तृष्णावीसर्पवातास्रवमिज्वरहरःस्मृत. ॥
यवासस्यगुणैस्तुल्याबुधैरुक्तादुरालभा ॥

अर्थ–यास, यवास, दु स्पर्श, धन्वयास और कुनाशक, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** जवासा, **बं.** यवासा, **का** तोरेइगुल, **गु** जवासो, **अ.** हाज, **फा** सुतर खार **ला.** अलहागी मोरोरम Alhagi maaro rum कहतेहै । जवासेका भेद दुरालभा उसके नाम दुरालभा, समुद्राता, रोदिनी, गाधारी, कच्छुरा, अनता, कषाया और हर [दुर] विग्रहा, **हिं.** धमासो, **बं** दुराला, **म** धमासा, वेलीकासुली, **का** वल्लीदुधवे कहतेहै । जवासा यह रेतली जमीन और तरीमें होता है। यह क्षुपजातिकी लकडी है । जड लबी और यह सर्वत्र मिलताहै । छोटे २ काटे होतेहै । तथा काटोके पास छोटे २ पत्ते होतेहै । और बहुत बारीक फल होतेहै। इसे ऊट और बकरी अधिक खातेहै । **गुण** । स्वादु, सर, कडवा, कषेला, शीतल और हलका । **प्रयोग** । कफ, मेदरोग, मद, भ्रमरोग, रक्तपित्त, कोढ, खांसी, तृषा, विसर्प, वातरक्त, वमन और ज्वर इनको दूर करे । दुरालभा अर्थात् धमासेके गुण जवासेके समान जानने । इसका **दर्पनाशक** कतीराहै । **प्रतिनिधि** हिंदीकोका । सर्वांग लेना **मात्रा** ६ मासेकी है । *

छोटाधमासा

अन्याक्षुद्रदुरालंभामरुस्थामरुसंभवा ॥
विशारदाजभक्षास्यादजादन्युष्ट्रभक्षिका ॥
कषायाफणिहच्चैवग्राहिणीकरभप्रिया ॥
करभादनिकाचेतिविज्ञेयाद्वादशाभिधा ॥
दुरालंभाद्वितीयाचगौल्याम्लज्वरकुष्ठनुत् ॥
श्वासकासभ्रमघ्नीचपारदेशुद्धिकारिका ॥

अर्थ–एक छोटा धमासा होताहै उसके **संस्कृत** नाम–क्षुद्रदुरालभा, मरुस्था, मरुसभवा, विशारदा, अजभक्षा, अजादनी, उष्ट्रभक्षिका, कषाया, फणिहृत्, ग्राहिणी, करभप्रिया और करमादनि ए बारह नाम है । **म** सान्हीवेलीकासुली, **का.** किरुवल्लीदुरुवे । **गुण** । छोटा धमासा मिष्ट, खट्टा और पारेका शुद्ध करताहै । **प्रयोग** । ज्वर, कुष्ठ, श्वास, खांसी और भ्रम (मार) रोगको नष्ट करे ।

अथाग्निदमनीवह्निदमनीबहुकटका ॥
वह्निकटारिकागुच्छफलाक्षुद्रफलाचसा ॥

* **आयुर्वेदके ग्रथोंमें**—जवासेका दस्त खुलासा लानेवाला, मूत्रवर्द्धक और कफका नाशक मानाहै । इसमेंस जो **सत्व** निकलताहै वह खांसीको नष्ट करेहै ।

हिकमतमें—इस क्षुपकी पुलटिश बांधनेंसे अथवा उसकी धूनी देनेसे बवासीर नष्ट होतीहै । इसका रस नेत्रकी दृष्टी नष्ट करेहै तथा चूर्णका वादीके रोगमें नाश दिया जाताहै । इसके पत्तोंमेंसे जो **तेल** बनताहै वह संधिवातपर लगाया जाताहै । तथा फूलको पीसके लेप करनसे बवासीर गिर जातीहै ।

मीर मुहम्मद हुसेन—लिखताहै कि खुरासान, मवारुनहर, करजस्तान और हमदनके मुल्कोंमें इस क्षुपको काट कपडेमें बांधके निचोडनेसे तुरजबीन नामक शकरके समान पदार्थ बनताहै । यह पदार्थ जौक पानीके साथ देनेसे दस्त खुलासा लाताहै । पित्तको निकाल डाले, कफको बैठाल देताहै, और रुधिरको शुद्ध करे । दूधके साथ देनेसे शरीरको पुष्ट करताहै और कामदेव बढेहै ।

चक्रदत्तमें—जवासेको मल शुद्धकर्ता, मूत्र लानेवाला और कफोत्सर्जक गिनाहै ।

सुश्रुतसंहितामें—जवासेको **उष्ट्रभक्षिका** नामसे वर्णन करता उसको कफमेदहर मूत्रकृच्छ्रहर और गुल्मनाशक गिनेहै । तथा उसी ग्रथमें उसको **गिरिकर्णिका** नामसे लिखताहुआ उसे वातपित्त सशमनकर्ता वर्णन कराहै ।

चरकसंहितामें—उसको सारक मानाहै, तथा छोटे २ बच्चाकी खांसीपर हरड, पीपर और दाखके चूर्णमें सहत और मक्खनके साथ देनेकी प्रशसा करेहै ।

विज्ञेयाक्षुद्रदुःस्पर्शाक्षुद्रघंटारिकातथा ॥
मर्त्येन्द्रमातादमनीस्यादित्येषादशाह्वया ।
कटूष्णाचाग्निदमनीरूक्षावातकफापहा ॥
रुचिकृद्दीपनीहृद्यागुल्मप्लीहापहाभवेत् ॥

अर्थ–अग्निदमनी, वन्हिदमनी बहुकंटका, वह्नि-कंटारिका, गुच्छफला, क्षुद्रफला, क्षुद्रदुःस्पर्शा, क्षुद्र-कंटारिका, मर्त्येंद्रमाता और दमनी ए दश संस्कृत नाम है। **म.** आगीदवण और अग्निदमनी, **का.** चित्तरटे। यह भी धमासेकाही भेद है। **गुण** । चरपरी, गरम, रूक्ष, वात कफनाशक, रुचि-कर्त्ता, दीपन, हृदयको हितावह। **प्रयोग**। यह वायगोलाको और प्लीह (तिल्ली) को दूर करे।

मुंडी महामुंडी.

मुंडीभिक्षुरपिप्रोक्ताश्रावणीचतपोधना ॥
श्रवणाह्वामुंडतिकातथाश्रवणशीर्षका ॥
महाश्रवणिकान्यातुसास्मृताभूकदंबिका ॥
कदंबपुष्पिकाचस्यादव्यथातितपस्विनी ॥
मुंडतिकाकटुःपाकेवीर्योष्णामधुरालघुः ॥
मेध्यागंडापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्त्तिपांडुनुत् ॥
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिहृत् ॥
महामुंडीचतत्तुल्यागुणैरुक्तामहर्षिभिः ॥ १

अर्थ–मुंडी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, श्रवणाह्वा, मुंडतिका और श्रवणशीर्षका। **दूसरी** जाति इसकी और होतीहै इसके नाम महाश्रवणिका, भूकदंबिका, कदंबपुष्पिका, अव्यथा और तपस्विनी। **हिं.** छोटी बडी गोरखमुंडी, **बं.** मुडुरी, भुंइकदम, **का.** क्रियोवोलतर, हिरियवोलतर, **तै.** वोडसर पुचेट्टु, **ता.** कोवल, **अ.** कमाफ्रयूस, **ला.** स्फिरेंथस् इंडिकम् कहतेहैं। **स्वरूप**। यह प्रसरजातिकी रूखडी है। काली जमीनमें तथा जलप्राय स्थानमें बहुत होतीहै। इसका **छत्ता** पृथ्वीमें फैला हुआ रहताहै। **फूल** गोल कनेरी रंगका होता है। **गुण**। पाकमें कडवी, उष्ण-वीर्य, मधुर, हलकी, स्मरणशक्तिवर्द्धक। **प्रयोग**। गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग, पांडु, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेदरोग और गुदाकी पीडाको निवारण करे। **महामुंडीके गुण** छोटीमुंडीके समान जानने। सर्वांग ग्रहण करना। **मात्रा** ६ मासेकी है।

ओंगा (अपामार्ग).

अपामार्गस्तुशिखरीह्यधःशल्योमयूरकः ॥
मर्कटीदुर्ग्रहाचापिकिणिहीखरमंजरी ॥ २ ॥
अपामार्गःसरस्तीक्ष्णोदीपनस्तिक्तकःकटुः ॥
पाचनोरोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः ॥
निहंतिहृद्रुजाध्मार्शःकंडुशूलोदरापचीः ॥

अर्थ–अपामार्ग, शिखरी, अधःशल्य, मयूरक, मर्कटी, दुर्ग्र [र्ग] हा, किणिही और खरमंजरी ए संस्कृतनाम। **हिं.** ओंगा, चिरचिरा, लटजीरा, **मा.** सुपेद आंधीझाडो, **रा.** अंधाहोली, **बं.** आपां, **म.** अघाडा, **का.** गुत्तरणे, **गु.** अघेडो, **तै.** दुच्चीणिके, **फा.** खारवासगोता, **इं.** चेळफलावर, **ला.** अचीरांथिस अस्पेरा Achyranthes aspera कहतेहै। **स्वरूप**। यह क्षुपजातिकी वनस्पति हैं और जंगलमें बहुत होताहै। **पत्ते** चौलाईके सागके समान होतेहैं। **फूल** और **फल** एक लंबी डंडीमें लगे हुए होतेहै वो कांटेके समान अनीवाले होतेहैं। यह कपडेमें चिमट जातेहैं। **चित्रनंबर२६ देखो**। **गुण**। दस्तावर, तीक्ष्ण, दीपक, कडवा, चरपरा, पाचक और रोचक। **प्रयोग**। वमन, कफ, मेदका रोग, वायु, हृद्रोग, अफरा, बवासीर, खुजली, शूल, उदररोग और अपची रोग शांति होय। **प्रयोगमें** सर्वांग लेना, **मात्रा** ४ मासेकी है।

लालओंगा.

रक्तोऽन्योवसिरोवृत्तफलोधामार्गवोऽपिच
प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली ॥
अपामार्गोऽरुणोवातविष्टंभीकफकृद्धिमः ॥
रूक्षःपूर्वगुणैर्न्यूनःकथितोगुणवेदिभिः ॥
अपामार्गफलंस्वादुरसेपाकेचदुर्जरम् ॥
विष्टंभिवातलंरूक्षंरक्तपित्तप्रसादनम् ॥

अर्थ–सं. रक्तापामार्ग, वसिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी और कपिपिप्पली, **हिं.** लाल-ओंगा, लाल [रक्त] चिरचिरा, **रा.** आंधीझाडा-लाल, **बं.** लालआपां, **म.** तांबडा आघाडा, **का.**

कॅपिगुत्तरणे, गु. रातो अधेडो । **गुण** । लालभोंगा, वातकारी, विष्टंभी, कफवर्द्धक, शीतल और रूक्ष । यह पहले भोंगाकी अपेक्षा गुणोंमें न्यून है । भोंगाके फल (चावल) खानेसे यह जीर्ण नहीं होते अर्थात् पचते नहींहै । और पाकमें चरपरे तथा ए चावल विष्टंभी, वातकर्त्ता, रूखे और रक्तपित्त दूर करनेवाले हैं । **मात्रा** ४ मासेकी है ।

तालमखाने.

कोकिलाक्षस्तुकाकेक्षुरिक्षुरः क्षुरकः क्षुरः ॥
भिक्षुःकांडेक्षुरप्युक्तः इक्षुगंधेक्षुबालिका ॥
क्षुरकःशीतलोवृष्यःस्वाद्वम्लःपित्तलस्तथा
तिक्तोवातामशोथाश्मतृष्णादृष्ट्यनिलास्र-
जित् ॥ ८ ॥

अर्थ-कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर, क्षुरक, क्षुर, भिक्षु, कांडेक्षु, इक्षुगंधा और इक्षुबालिका, ए **संस्कृत** नाम हैं। **हिं**. तालमखाने, **बं**. कुलेखाडा, **म**. विखरा, **कौं**. कोलिस्ता, कोलशी, **का**. कुलुगोलिके, **गु**. एखरो, **ला**. हाइग्रोफी, **तै**. गोवी, गोविमिडिचेट्टु, **उडि**. कुइलिरखा, **ला**. स्पाइनोसा कहतेहै । इसका छोटासा क्षुप होताहै । इसकी डालीमें गांठ और उनपर बहुतसे रुआं होतेहैं । यह तलाव आदिजलाई पृथ्वीमें होताहै । **गुण** । शीतल, बलकारी, स्वादु, अम्ल-पित्त प्रगटकर्त्ता और कडवे । **प्रयोग** । वादी, आमशोथ, पथरी, तृषा, अरुचि और वातरक्त रोगको दूर करे । **प्रयोग**में बीज, जड, पत्ता और भस्म लीनी जातीहै । **मात्रा** ६ मासेकी है ।

हडसंघारि.

ग्रंथिमानस्थिसंहारीवज्रांगीचास्थिशृंखला॥
अस्थिसंहारकःप्रोक्तोवातश्लेष्महरोस्थियुक्
उष्णःसरःकृमिघ्नश्चदुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित् ॥
रूक्षःस्वादुर्लघुर्वृष्यःपाचनःपित्तलःस्मृतः ॥
कांडत्वगूरहितमस्थिशृंखलाया
माषार्द्धविदलमकंचुकंतदर्द्धम् ॥
संपिष्टंतदनुलस्तिलस्यतैले
संपक्वंवटकमतीववातहारि ॥ ११ ॥

अर्थ-ग्रंथिमान्, अस्थिसंहारी, वज्रांगी और अस्थिशृंखला ए **संस्कृत** नाम । **हिं**. हडसंघारि, हडसंकरी, **बं**. हाडमांगा, **म**. हाडसंधी, **द्रे**. हाडसां-खल, **कौं**. तिधारीकांडवेल, **गु**. हाडसांकल कहते-है । **गुण** । वातकफनाशक, टूटीहड्डीका जोडने-वाला, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक, बवासीरना-शक, नेत्रोंको हितकारी, रूखा, स्वादु, हलका, बल-कारी, पाचक और पित्तकर्त्ता । इसकी छालको छील उस लकडीका चूर्ण १ मासे तथा गीले उड-दोंकी दाल छिलकारहित आधे मासे मिलावे, दोनोंको सिलपर बारीक पीस तिलके तेलमें इसकी मगौरी बनावे । ए मगौरी अत्यंत वातनाशक हैं । इस लताका सर्वांश ग्रहण करना । **मात्रा** २ मासेकी है ।

घीगुवार (घृतकुमारी.)

कुमारीगृहकन्याचकन्याघृतकुमारिका ॥
कुमारीभेदिनीशीतातिक्तानेत्र्यारसायनी ॥
मधुराबृंहणीबल्यावृष्यावातविषप्रणुत् ॥
गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरीहरेत् ॥
ग्रंथ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान् ॥

अर्थ-कुमारी, गृहकन्या, कन्या और घृतकुमा-रिका ए **संस्कृत** नाम । **हिं**. घीगुवार, ग्वारपाठौं, **बं**. घृतकुमारी, **म**. कोरकांड, **कौं**. कोरफड, **का**. लोलिसर, **गु**. कुंवार, **तै**. पिन्नगोरिटकलवंद, **फा**. दरख्तेसिन्न, **अ**. मुसब्बर, **ला**. आलोइ इंडीका Aloe Indica । **स्वरूप** । घीगुवार क्षुपजातिकी वनस्पति है । इसका क्षुप मैदानमें रेतली जमीनमें तथा जलके किनारे बहुत होताहै । इसके पत्ते लंबे और मोटे होतेहै, भीतर इनके घीके समान गूदा निकलता है और पत्तेके दोनों तरफ कांटे होतेहैं । और पत्तेके छोर अनीदार होतेहै । इसके बीचमें डंडा निकलता है उसमें लालरंगका फूल लगताहै । आजकल इसकी व्योपारियोंमें तीन जाति मिलती हैं । मक्का, जाफराबादी, तथा बार्ब-जोड, **चित्र** नंबर २७ का देखो । **गुण** । भेदक, शीतल, कडवी, नेत्रोंको हितकारी, रसायन, मधुर, पुष्टिकर्त्ता, बलकर्त्ता, शुक्रजनक, विषघ्न और वायुको नाश करे । **प्रयोग** । गुल्म, प्लीहा, यकृत्, अंडवृद्धि, कफज्वर, गांठ, अग्निदग्ध, विस्फोटक, रक्तपित्त

और त्वचाके रोग (कोढआदि) इनको दूर करे । प्रयोगमें इसका सूखा लेना । मात्रा ६ मासेकी है । [इसमें वेधकशक्ति है और घावको तथा नेत्ररोगको दूर करी है]

श्वेतपुनर्नवा.

पुनर्नवाश्वेतमूलाशोथघ्नीदीर्घपत्रिका ॥
कटुःकषायानुरसापांडुघ्नीदीपनीपरा ॥
शोफानिलगरश्लेष्महरीव्रणयोदरप्रणुत् १४

अर्थ—श्वेतपुनर्नवा, श्वेतमूला, शोथघ्नी और दीर्घपत्रिका, ए संस्कृत नाम । हिं विषखपरा, बं. श्वेतपुनर्नवा, म पुनर्नवा, पांढरी घेंटुली, का बिलियदुवेळकफिलु, गु साटोडी, ला. बोरहव्हिआ डीफ्युसा Boerhavia diffusa । स्वरूप । विसखपरा प्रसर जातिकी वनस्पति है । इसका क्षुप पृथ्वीपर फैलाहुआ होताहै । पत्ते गोल और किनारे उनके लाल होतेहै । और फूल छोटा सपेद रंगका होताहै । गुण । कटु, किंचिन्मात्र कषेली, अत्यत अग्निकारक और वायुनाशक । प्रयोग । पांडु, शोथ, वायुवृद्धि, कफाधिक्य, व्रदरोग, उदररोग, खांसी, हृदयरोग, बवासीर और शूलरोग इनको नष्ट करे । प्रयोगमें समस्त अंश ले । मात्रा २ मासे है ।

रक्तपुष्पापुनर्नवा.

पुनर्नवापरारक्तारक्तपुष्पाशिलाटिका ॥
सोथघ्निःक्षुद्रवर्षाभूर्वृषकेतु·कपिल्लकः ॥१५॥
पुनर्नवाऽरुणातिक्ताकटुपाकाहिमालघुः ॥
वातलाग्राहिणीश्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥

अर्थ—रक्तपुनर्नवा, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, शोथघ्नि, क्षुद्रवर्षाभू, वृषकेतु और कपिल्लक, ए संस्कृत नाम । हिं. सांठ, गदहपूर्ना, बं लालपुनर्नवा, म. तांबडीघेंटुली, का केंपिनबेळकफिलु, करियगण-जिले, गु रातीसाटोडी । स्वरूप । इसके पत्ते चौलाईके सागके समान होतेहै । फूल लालरंगका होताहै, यह ककरीली जमीनमें बहुत होतीहै । गुण । कडवी, पाकमें चरपरी, शीतल, हलकी, वातकर्ता और ग्राही । प्रयोग । कफ और रक्तपित्तको दूर करे । प्रयोगमें समस्त अंश लेवे । मात्रा २ मासे है ।

नीलीपुनर्नवा.

नीलापुनर्नवानीलाश्यामानीलपुनर्नवा
कृष्णाख्यानीलवर्षाभूर्नीलिनीस्यादभिधान्विता ॥ नीलापुनर्नवातिक्ताकटूष्णाचरसायनी
हृद्रोगपांडुश्वयथुश्वासवातकफापहा ॥

अर्थ—नीलापुनर्नवा, नीला, श्यामा, नीलपुनर्नवा, नीलकृष्णा, वर्षाभू, नीलिनी ए संस्कृत नाम । हिं नीलीसांठ, म कालीघंटुली, का करियबेळक-फिलु, होगणगितु । गुण । कडवी, चरपरी, गरम, रसायनी । प्रयोग । हृदयरोग, पांडुरोग, सूजन, श्वास, वादी और कफ इनको नष्ट करे ।

वसु

वसुकोथवसुःशैवोवसोथशिवमल्लिका ॥
पाशुपत शिवमल्लःसुरेष्टःशिवशेखरः ॥
सितोरक्तोद्विधाप्रोक्तोज्ञेयःसज्जनवाभिधः ॥
वसुकौकटुतिक्तोष्णौपाकेशीतौचदीपनौ ॥
अजीर्णवातगुल्मघ्नौश्वेतश्चैवरसायनः ॥

अर्थ—वसुक, वसु, शैव, वस, शिवमल्लिका, पाशुपत, शिव, सुरेष्ट, शिवशेखर इस प्रकार संस्कृत ९ नाम है । का यरकुगणजिले । वसु दोप्रकारका है — एक सपेद और दूसरा लाल, गुण । दोनों प्रकारके वसु चरपरे, कडवे, गरम, पाकके समय शीतल, दीपन । प्रयोग । अजीर्ण, वादी, गोलेका रोग इनको दूर करे, इन दोनोंमे सपेद वसु रसायन है ।

६ सर्पिणी

सर्पिणीभुजगीभोगीकुंडलीपन्नगीफणी ।
षडाभिधासर्पिणीस्याद्विषघ्नीकुचवर्द्धनी ॥

अर्थ—सर्पिणी, भुजगी, भोगी, कुंडली, पन्नगी, और फणी ए छ नाम सर्पिणी औषधीके संस्कृत है । इसकी वेल सांपके आकारवाली होतीहै । गुण । विषनाशक और कुचोंको बढानेवाली है ।

वृश्चिका.

वृश्चिकानखपर्णीचपिच्छलाप्यलिपत्रिका ।
वृश्चिकापिच्छलाम्लास्यादांत्रवृद्ध्यादिदो-
षनुत् ॥

अर्थ-वृश्चिका, नखपर्णी, पिच्छला और अलिपत्रिका ए संस्कृत नाम। हिं विछवा, म विंचुका, का. इंगुले, माससाहोत्र गत्रे। गुण। पिच्छल, खट्टी और आंतोंके बढनेके दोष आदिको दूर करे।

गंधप्रसारणी.

प्रसारणीराजबलाभद्रपर्णीप्रतापनी ॥
सरणीसारणीभद्राबलाचापिकटंभरा ॥१७॥
प्रसारिणीगुरुर्वृष्याबलसंधानकृत्सरा ॥
वीर्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा ॥

अर्थ-प्रसारणी, राजबला, भद्रपर्णी, प्रतापनी, सरणी, सारणी, भद्रा, बला और कटंभरा ए संस्कृत नाम। हिं पसरन, प्रसारनी, ब गंधभादुल्या, म चांदवेल, दे राजबला, का हेसरणे, गु नारी, तै गोन्तेमगोरुचेट्टु, ला. पिडेरिया फीटाडा। स्वरूप। यह प्रसरजातिकी वनस्पति है। गुण। भारी, शुक्रकर्त्ता, बलकारी, टूटेको जोडनेवाली, दस्तावर, उष्ण वीर्य, वायुनाशक, कडवी और कफनाशक। प्रयोग। वातरक्तरोगको शमन करे। इसकी लताका समस्त अंग लेना। मात्रा २ मासेकी है।

कृष्णसारिवा.

इन्द्रजंबूकवत्पत्रासुगंधाकलघंटिका ॥
कृष्णातुशारिवाश्यामागोपीगोपवधूचसा ॥
धवलाशारिवागोपीगोपकन्याकृशोदरी ॥
स्फोटाश्यामागोपवल्लीलतास्फोटाचचंदना
सारिवायुगलस्वादुस्निग्धंशुक्रकरंगुरु ॥
अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ॥
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ॥२१॥

अर्थ-सारिवा दो प्रकारकी है-काली और सफेद इन दोनों सारिवाओंका साधारण नाम श्यामा। इनमें कालीशारिवाके पत्ते जामुनके पत्तेके समान और सुगंधयुक्त होतहैं। सं कलघंटिका, गोपी और गोपवधू, हिं सरिवन, कालीसर, सालसा, करिआसाउ, ब. श्यामालता और अनंतमूल, म उपरसाल, उपलसरा, को उपटसुली, शेंबवेल, कावली, काष्ठकावली, सुगंधकावली, श्वेतकावली, गु उपलसरी, खनेडी, तै नीलतिग, उडि गुपापान मूल, इ. इंडियन सारसापरीला, ला हेमीडेसमस इंडिकस। यह दो प्रकारका है-सपेद और काला सपेद शारिवाकेभी पत्ते जामनके समान होते है। इस लताके भीतर दूधके समान वस्तु रहती है। इसक संस्कृतमें धवलाशारिवा, गोपी, गोपकन्या, कृशोदरी, स्फोटा, श्यामा, गोपवल्ली, लतास्फोटा और चंदना कहते है। हिं गौरीसर, गोरिआसाऊ। गुण। दानो शारिवा, स्वादु, स्निग्ध, शुक्रकर्त्ता, भारी, विषघ्न, त्रिदोषनाशक [पसीने लावे मूत्र लानेवाली, बलवर्द्धक, वृष्य और रसायन]। प्रयोग। मंदाग्नि, अरुचि, श्वास, खांसी, आमजन्यरोग, विषदोष रक्तप्रदर, ज्वरातिसार [उपदंशजन्य अनेक प्रकारके राग सब प्रकारके चर्मरोग, आमवात, वातरक्त और अविधिसे पारे खानेके रोग] इन सबको दूर करे। *

* वैद्य—सारिवाको रुधिर शुद्धकर्त्ता, पाचक और चिकनाहट तथा बदहज्मी, त्वचाके रोग और विस्फोटकके रोगोंमें वर्त्तनकी प्रशंसा करेहैं।

डा० ओशिगनेसी—कहताहै कि इसके देनेसे पेशाब अधिक उतरताहै। और पसीने अधिक आतेहै, पाचनशक्ति बढे, इससे भूख इतनी बढतीहै कि मैं अपने अस्पितालमें अधिक वर्त्तताहू तथा रोगी जन स्वयं अपने आप इसको मांगतेहैं। इस जडको सालसापरीलाके बदले वर्त्ततेहै तथा इसको सुखाय पीसके सहतके साथ मिलायके देनेसे सन्धिवातका रोग और फोडाफुंसी नष्ट होतेहै।

डा० पेन्स्ली—यह जड थोडी चिकनी और कडवी होयहै और तामिल वैद्य उसको पथरी

भंगरा (भृंगराज.)

भृंगराजोभृंगरजोमार्कवोभृंगएवच ॥
अंगारकःकेशराजोभृंगारःकेशरंजनः ॥२२॥
भृंगारःकटुकस्तिक्तोरूक्षोष्णःकफवातनुत्
केश्यस्त्वच्यःकृमिश्वासकासशोथामपांडुनु
दंत्यस्त्वीरसायनोबल्यःकुष्ठनेत्रशिरोर्तिनुत्॥

अर्थ—भृंगराज, भृंगरज, मार्कव, भृग, अगारक, केशराज, भृमार और केशरंजन ए संस्कृत नाम । हिं. भंगरा, भांगरा, भगरैया, बं. भीमराज म. माका, का. गरुगमूरु, गु. भांगरो, तै. भृगराज, गुंटगलगरा, अंग्रे. कलाकेशपुरा, अ. हजीज, फा. जमर्दर, ला. एक्लिप्टा प्रोस्ट्रेटा Eclipta prostrata । स्वरूप । भांगरेका क्षुप गीली जमीनमें होताहै । पत्ते करकरे और भालेके आकार होतेहैं । गुण । कटु, तीक्ष्ण, रूक्ष, उष्ण, वातकफनाशक, बाल त्वचा और दांतोंको हितकारी, रसायन और बलकारी । प्रयोग । कृमि, श्वास, खांसी, शोथ, आम का रोग, पांडु, कोढ, नेत्ररोग और शिरपीडापर देवे । केशराज (कुकरभांगरा) अर्थात् जिसको बंगालमें केशुरिया भीमराजका भेद कहतेहैं, यह क्षुप आतिहै । दोनों प्रकारके भागरे प्राय गुणोंमें समान है । परतु कहीं कहीं भांगरेकी अपेक्षा कुकरभांगरा अधिक गुण करताहै । इन दोनोंका सर्वांग लेना । मात्रा २ मासेका है । *

पीलाभगरा

पीतोऽन्यःस्वर्णभृंगारोहरिवासोहरिप्रियः ।
देवप्रियोवंदनीयः पवनश्चषडाह्वयः ॥

अर्थ—एक पीले पुष्पका भंगरा होताहै उसको स्वर्णभृंगार, हरिवास, हरिप्रिय, देवप्रियवंदनीय और पवन ए छ नाम है । गुण । सब भांगरोंके गुण समान है । परतु सबसे उत्तम काला भांगरा है ।

(शणहुली, शणई, चनशणई)

शणपुष्पीस्मृताघंटाशणपुष्पसमाकृतिः ॥
शणपुष्पाकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित्॥

अर्थ—शणपुष्पी, घंटारवा, शणसमाकृति, ए संस्कृत नाम । हिं. शणहुली, शणई, चनई, बं. वाणशणुइ, म. शणताग, रानताग, कों. खुलखुला खिळखिळा, का. गिलुगिची, द्रा. जसनकनर, तै. रत्नचेट्टु, ता. जेनप्पनर, अ. पन, फा. ठादना, ई. फ्लाक्स हेंप्, ला. क्रोटेलेरिया जुनसिया कहतेहै । यह सनके समान होतीहै । गुण । कटु, तिक्त, वमन

तथा पेशाबके रोगमें गौके दूधमें पीसके देतेहै । तथा यह रुधिर सुधारनेको तथा तेलका विगाड निकाल डालनेको जीरेके साथ देतेहै ।

युरोपियन डाक्टर—त्वचारोग, तथा जननेन्द्रियके रोगमें इसका क्वाथ करके देनेकी प्रशंसा करतेहैं । और अमेरिकाकी सारसापरेलाकी दवाके बनिस्बत् इसमें अधिक गुण है ऐसा कहतेहैं ।

इंग्रेजी औषधोंमें—इस जडीको पाचक, पिशाब बढानेवाली, पसीने लानेवाली, अशक्तता, विस्फोटक, पुरानी संधिवात और त्वचाके रोगमें फायदा करनेवाली मानतेहैं ।

* मखजन उल्अद्वियामें—भांगरेको कुव्वत देनेवाला, तिल्ली नष्टकर्त्ता, तथा बाल काले करनेवाला कहाहै ।

डा० रोक्सबरा—कहताहै कि पेटके विगार निकालनेको भांगरेका क्वाथ आधेप्यालेकी मात्रासे दिनमें दो वक्त दिया जाताहै ।

मिस्टर वुडके—मतसे यह क्षुप कलेजेके रोगमें वर्त्ताव करा जाताहै, तथा देशी मनुष्य पेटका विगाड काढनेको तथा पाचनशक्ति बढानेको भांगरेके रसकी अजमायनके समान अन्यसुगंधित पदार्थके साथ मिलायके देतेहैं । पत्तोंको कूटकर घाव तथा फोडेपर लगाया जाताहै । जडमें जुलाब करानेकी शक्ति है, इसी वास्ते इसको कलेजा तथा तिल्लीके रोगमें और जलंधरमें वर्त्ततेहै ।

सुश्रुतसंहितामें—भांगरेको कफशोथनाशक, श्वेतकुष्ठहर और केशरंजनकर्त्ता कहाहै ।

कारक और कफपित्तनाशक । इसके फल बीज आदि लेवे । मात्रा २ रत्तीकी है.

दूसरी शणपुष्पी.

द्वितीयाख्यासूक्ष्मपुष्पास्यात्क्षुद्रशणपुष्पिका
विष्टिकासूक्ष्मपर्णीचबाणाह्वात्सूक्ष्मघंटिका ॥
शणपुष्पीक्षुद्रतिक्ताबम्यारसनियामिका ॥

अर्थ–दूसरी सूक्ष्म पुष्पकी होतीहै, उसको क्षुद्रशणपुष्पिका कहतेहैं । तथा विष्टिका, सूक्ष्मपर्णी और सूक्ष्मघटिका ए पांच नाम । म फुणफुणा, छोटी शणपुष्पी, कडवी, वमन करानेवाली ओर पारदको बद्ध करतीहै ।

तीसरीशणपुष्पी.

तृतीयान्यावृत्तपर्णीश्वेतपुष्पामहासिता ॥
सामहाश्वेतघंटीचसामहाशणपुष्पिका ॥
महाश्वेताकषायोष्णाशस्तारसनियामिका ॥
कुतूहलेषुचप्रोक्तामोहनस्तंभनादिषु ॥

अर्थ–तीसरी वृत्तपर्णी, श्वेतपुष्पा, महासिता, महाश्वेतघटी और महाशणपुष्पिका ए संस्कृत नाम । का. चिक्कगिलुगुच्चि, मते काडविट्टि । गुण । महाश्वेता शणपुष्पी–कषेली, गरम ओर पारदको बधन करे । तथा मोहन, स्तभन आदि कौतुकोंमें ग्राह्य है ।

सण.

सणस्तुमाल्यपुष्पस्याद्वमनःकटुतिक्तकः ॥
निशावनोदीर्घशाखस्त्वक्सारोदीर्घपल्लवः ॥
सणस्त्वम्लः कषायश्चमलगर्भास्रपातनः ॥
वांतिकृद्वातकफनुज्ज्ञेयस्तीव्रांगमर्दजित् ॥

अर्थ–सण, माल्यपुष्प, वमन, कटुतिक्त, निशावन, दीर्घशाख, त्वक्सार और दीर्घपल्लव ए संस्कृत नाम । हिं. सन, म. ताग, सण । स्वरूप । यह क्षुपजाति है, पत्ते लंबे, फूल पीले रंगके, फल लंबा और पोला होताहै । इसके टाट, चरस निकालनेके वरत, सूतली आदि बनतेहैं । सन दो प्रकारका है, एक सण, दूसरा पट सन इनमें सन उत्तम होताहै । गुण । खट्टा, कषेला, मल, गर्भ और रुधिरको गिरानेवाला, वमन करनेवाला, तथा वातकफको दूर करे और तीव्र अंगदूखनेको भी दूर करे ।

त्रायमाण.

बलभद्रात्रायमाणात्रायंतीगिरिसानुजा ॥
त्रायंतीतुवरातिक्तासरापित्तकफापहा ॥
ज्वरहृद्रोगगुल्मार्शोभ्रमशूलविषप्रणुत् ॥

अर्थ–बलभद्रा, त्रायमाणा, त्रायती और गिरिसानुजा ए संस्कृत नाम । हिं. त्रायमाण, बं. बलाडुमुर और सब भाषाओंमें त्रायमाण नामसे ही प्रसिद्ध है । यह क्षुपजातिकी वनस्पति सिलहटआदि हिमालय पर्वतमें उत्पन्न होतीहै । हकीम इसको असफाक कहतेहैं । प्राय. इस वनस्पतिके फूल और तृणोंसे रेसमी कपडे रंगे जातेहै । गुण । कषेली, कडवी, सर, कफपित्तनाशक । प्रयोग । ज्वर, हृदयरोग, गोला, बवासीर, भ्रमरोग, शूल और विषजन्य पीडा दूर होवे । सर्वांग लेना चाहिये । मात्रा ४ मासेकी है ।

चुरनहार (मूर्वा.)

मूर्वामधुरसादेवीमोरटातेजनीस्रुवा ॥
मधूलिकामधुश्रेणीगोकर्णीपीलुपर्ण्यपि ॥२६
मूर्वासरागुरुःस्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत् ॥
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकंडूकुष्ठज्वरापहा ॥२७॥

अर्थ–मूर्वा, मधुरसा, देवी, मोरटा, तेजनी, स्रुवा, मधूलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी और पीलुपर्णी ए संस्कृत नाम । हिं. चुरनहार, बं. मूर्वा, म. मोरवेल, पत्रा, मोरवेल, कों. लघुमोरवेल, गु. मुरुपीलुडी मोरवेल, क मुहरासि, तै सांगा, कन्नौजमें मोरहरी, ला. क्लिमेटिस ट्राईलोबा कहतेहै । स्वरूप । यह घीगुवारके समान लंबा और मोटे पत्तेवाला क्षुप है । इसका रस मीठा होताहै तथा पत्ते चिकने होतेहैं । फल छोटा और मीठा होताहै । गुण । दस्तावर, भारी, स्वादु, कडवी । प्रयोग । रक्तपित्त, प्रमेह, सन्निपातकी तृषा, हृदयरोग, खुजली, कोढ और ज्वररोगको दूर करे । इसकी जड और पत्ते लेवे, मात्रा २ मासेकी है ।

कवैया (काकमाची.)

काकमाचीध्वांक्षमाचीकाकाह्वाचैववायसी
काकमाचीत्रिदोषघ्नीस्निग्धोष्णास्वरशुक्रदा।
तिक्तारसायनीशोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥
कटुर्नेत्रहिताहिक्काच्छर्दिहृद्रोगनाशिनी ॥

अर्थ–काकमाची, ध्वांक्षमाची, काकाह्वा और वायसी ए संस्कृत नाम । हिं. मकोय, कवैया, दा. पिरटीटन, मको, बं काकमाची, गुडकामाइ, म. लघुकावली, का. काके, कामोणी, गु. पीलुडी, अं. एनयुस्साळव, फा रोवातरीस, अं. नाइट्सेड्, ला. सोलेनम नाइग्रम कहते है । स्वरूप । यह क्षुपजातिकी वनस्पती है । पत्ते गोल, लंबे और अनीदार, फूल सफेद और छोटा तथा पाच पखडीका होताहै । फल चनेके समान बडा और गोल झुमेदार होता है । प्रथम हरा और पकनेपर लाल रंगका हो जाता है । चित्र नंबर २८ का देखो । गुण । त्रिदोषनाशक, स्निग्धोष्ण, शुक्रजनक, स्वरको सुधारनेवाली, कडवी, चरपरी, रसायन और नेत्रोंको हितकारी । प्रयोग । कोढ, बवासीर, सूजन, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन और हृदयरोग ए नष्ट होय । इसकी जड और पत्तोंका स्वरस लेना । मात्रा २ मासेकी है ।

कौआठोडी (काकनासा.)

काकनासातुकाकांगीकाकतुण्डफलाचसा ॥
काकनासाकषायोष्णाकटुकारसपाकयोः ॥
कफघ्नीवामनीतिक्ताशोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत्॥

अर्थ–काकनासा, काकांगी और काकतुण्डफला ए संस्कृत नाम, हिं. कौआठोडी–ठी, बं काकठूटी, म. थोर श्वेतकावली, का वडिल कहुडली । गुण । कषेली, गरम, स्वादिष्ट और पाकके समय चरपरी, कफघ्न, वमनकारक और कडवी । प्रयोग । सूजन, बवासीर, श्वित्र कुष्ठरोग नष्ट होय । इसकी जड आदि लेनी । मात्रा १ मासेकी है ।

मसी (काकजघा.)

काकजंघानदीकांताकाकतिक्तासुलोमशा ॥
पारावतपदीदासीकाकाचापिप्रकीर्तिता ३१
काकजंघाहिमातिक्ताकषायाकफपित्तजित् ।
निहंतिस्वरपित्तास्रज्वरकण्डूविषक्रमीन् ॥

अर्थ–काकजघा, नदीकांता, काकतिक्ता, सुलोमशा, पारावतपदी, दासी और काका ए संस्कृत नाम । हिं. मसी, बं. काकजघा, म. कांगावें झाड, जीरी, का चीलेच । गुण । शीतल, कडवी, कषेली, कफपित्तनाशक । प्रयोग । स्वरविगडाहुआ, रक्तपित्त, ज्वर, खुजली, विष और कृमि नष्ट होय । इसकी जडकी मात्रा ६ रत्ती है ।

काकादनी.

काकादनीकाकपीलुःकाकशिंबीचरक्तला ॥
ध्वांक्षादनीवक्रशल्यादुर्मोहावायसादनी ॥
काकतुंडीध्वांक्षनखीवायसीकाकदंतिका ॥
ध्वांक्षदंतीतिविज्ञेयास्तिस्त्रश्चदशधाभिधा ॥
काकादनीकटूष्णाचतिक्तादिव्यरसायनी ॥
वातदोषहरारुच्यापलितस्तंभनीपरा ॥

अर्थ–काकादनी, काकपीलु, काकशिंबी, रक्तला, ध्वांक्षादनी, वक्रशल्या, दुर्मोहा, वायसादनी, काकतुडी, ध्वांक्षनखी, वायसी, काकदंतिका और ध्वांक्षदंती ए १३ नाम है । गुण । काकादनी चरपरी, गरम, कडवी, दिव्यरसायनी, वातदोषनाशक, रुचिकर्त्ता तथा पलितरोगको स्तंभन करनेवाली है । सर्वांश लेना । मात्रा ४ मासे है ।

नागपुष्पी.

नागपुष्पीश्वेतपुष्पानागिनीरामदूतिका ॥
नागिनीरोचनीतिक्तातीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत्
विनिहंतिविषंशूलंयोनिदोषवमिक्रमीन् ॥

अर्थ–नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी और रामदूतिका ए संस्कृत नाम है । अन्य भाषाके नाम नहीं मिले । गुण । रुचिकर्त्ता, कडवी, तीक्ष्णोष्ण, कफपित्तनाशक । प्रयोग । विषके विकार, शूल, योनिके दोष, वमन और क्रमिरोगको दूर करे । इस क्षुपका सर्वांश ग्रहण करना । मात्रा २ मासे ।

मेंढासिंगी (मेषशृंगी.)

मेषशृंगीविषाणीस्यान्मेषवल्यजशृंगिका ॥
मेषशृंगीरसेतिक्तावातलाश्वासकासहृत् ॥
रूक्षापाकेकटुस्तिक्ताव्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत्॥

मेषशृंगीफलंतिक्तंकुष्ठमेहकफप्रणुत् ॥
दीपनंस्रंसनंकासकृमिव्रणविषापहम् ॥ ६५ ॥

अर्थ-मेषशृंगी, विषाणी, मेषवल्ली और अजशृंगिका ए संस्कृत नाम। हिं. मेंढासिंगी, बं. मेंढसिंगा, म. मेंढ [ढ] शिंगी, गु मरडासिंगी। गुण। रस इसका कडवा, रूखी और पचनेके समय कटु तथा तिक्त और वादी करे है। प्रयोग। श्वास, खांसी, व्रण, कफ, नेत्र दूखनेको दूर करे। मेंढासिंगीका फल-कडवा, दीपन और स्रसन। यह कोढ, प्रमेह, कफ, खासी, कृमि, व्रण और विषको नष्ट करे। मात्रा १ मासेकी। *

हसपदी.

हंसपादीहंसपदीकीटमातात्रिपादिका ॥
हंसपादीगुरुःशीताहंतिरक्तविषव्रणान् ॥
विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणीः ६६

अर्थ-हसपादी, हसपदी, कीटमाता और त्रिपादिका ए संस्कृत नाम, हिं लालरंगका लजालू, बं. गोयले लता, अ. शारुलजीन, फा, परस्याउशाने, अं. मेडनहेर, का. नविलडि। गुण। भारी और शीतल है। प्रयोग। रुधिरके विकार, विषविकार, घाव, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूतबाधा और अग्निरोहिणी, इन रोगोंको दूर करे। इसकी जडकी मात्रा ६ रत्तीकी है।

सोमलता.

सोमवल्लीसोमलतासोमक्षीरीद्विजप्रिया ॥
सोमवल्लीत्रिदोषघ्नीकटुस्तिक्तारसायनी ॥

अर्थ-सोमवल्ली, सोमलता, सोमक्षीरी और द्विजप्रिया ए संस्कृत नाम है। तै. पल्लटीजी, ला. सारकोष्टिमा ब्रवीस्टिग्मा। यह सोमलता नामसें ही प्रसिद्ध हिमालयमें होतीहै। इसकी अनेक जाति है परंतु सब १५ पत्तेवाली बेल होतीहैं। कृष्णपक्ष और शुक्लपक्षमें इसके पत्ते घटते बढते हैं। सुश्रुतमें इसके गुण बहुत कहेहैं। गुण। सोमवल्ली त्रिदोषको दूर करता, चरपरी, कडवी और रसायनी है।

अमरवेल.

आकाशवल्लीतुबुधैःकथितामरवल्लरी ॥
खवल्लीग्राहिणीतिक्तापिच्छिलाक्ष्यामयापहा
तुवराग्निकरीहृद्यापित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥

अर्थ-आकाशवल्ली, अमरवल्ली और खवल्ली ए संस्कृत नाम। हिं. अमरबेल, आकाशबौं, आकाशववरी, म. आकाशवेल, कौं. अंतर्वेल, का. नेदमुदवल्ली, तै. इन्द्रजाल, अ. अफ्तीमून। स्वरूप। यह लता है वृक्षोंके ऊपर पीले रंगकी सूतसी २ लटकती है इसकोही अमरवेल कहतेहै। यह जिस वृक्षपर होतीहै उसको नष्ट करदेतीहै। गुण। ग्राही, तिक्त, पिच्छल, कषेली, अग्निकारक और हृद्य। प्रयोग। पित्त, कफ, आम और नेत्ररोगको नष्ट करे। इसका सर्वांश लेना। मात्रा ४ रत्तीसें १॥ तोले। इसके दर्पनाशक सेव, कतीरा, बादामरोगन, प्रतिनिधी कालीनिसोथ है अथवा विशफायज है।

पातालगरुडी

छिलिहिंटोमहामूलःपातालगरुडाह्वयः ॥
छिलिहिंटःपरंवृष्यःकफघ्नःपवनापहः ॥

अर्थ-छिलिहिंट, महामूल, पातालगरुड ए संस्कृत नाम। हिं. छिरहिंटा, बं. पातालगुरुडी, म. तानीचा वेल, दे. वासनवेल, वासनी, वासनसडा, कों. पातालगरुडी, निवलीचावेले, मुहपाडळ और सीता, गु. पातालतुबडी। इसकी गिलोयके समान वेल होतीहै। गुजरातमें छोटे २ बालकोंको देते हैं। गुण। बलकारक, वातनाशक और कफघ्न। इसकी लताका समस्त अंश लेना। मात्रा २ मासेकी है।

वंदा.

वंदावृक्षादनीवृक्षभक्ष्यावृक्षरुहापिच ॥
वंदाकःस्याद्धिमस्तिक्तःकषायोमधुरोरसे ॥
मांगल्यःकफवातास्ररक्षोव्रणविषापहः ॥

---

* आर्यवैद्यक शास्त्रमें—यह मेंढासिंगी कानकी फुंसी नष्ट करनेको लेतेहै। तथा बच्चेके पेटमें होनेवाली ऐंठन आंतडोंका रोग और पेडके फूलनेमें वर्ती जातीहै।

सुश्रुतसंहितामें—इसको वातपित्तशामक और स्तंभक गिनाहै।

अर्थ-वंदा, वृक्षादनी, वृक्षभक्षा, वृक्षरुहा और जीवन्तिका ए संस्कृत नाम । हिं बांदा, बं. परगाछा बंदरा, म. बांडगुळ, को. वादे, दे बधक, बादगुड, गु. बुरी, तै. बदनिके, ला. लोरेन्थस लोंगिफ्लोरिअस । गुण । शीतल, कडवा, कषेला और मीठा है । कफनाशक, विषशामक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, श्रमहर, बलकारक, वृष्य और रसायन । वातरक्त और व्रणरोग आदिको दूर करे । इसका सर्वाङ्ग ग्रहण करना । मात्रा १ मासेकी है ।

वटपत्री.

वटपत्रीतुकथितामोहिनीरेचनीबुधैः ॥
वटपत्रीकषायोष्णायोनिमूत्रगदापहा ॥

अर्थ-हिं. वटपत्री, ब पातरकुचा, यह पाषाण भेदकी जाति है । इं लैकोपडियम् कहतेहै । मोह कर्त्ता, रेचक, कषेली, गरम, योनिरोग, मूत्रविकार, इनको दूर करै ।

हिंगुपत्री

हिंगुपत्रीतुकवरीपृथ्वीकापृथुकापृथु ॥
हिंगुपत्रीभवेद्रुच्यातीक्ष्णोष्णापाचनीकटु ॥
हृद्वस्तिरुग्विबंधार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥

अर्थ-हिंगुपत्री, कवरी, पृथ्वीका, पृथुका और पृथु ए संस्कृत नाम । हिं हींगपत्री, बं रादुनी, म. वाफळी, बहुफळी, फलहिंगु । यह क्षुपजातिकी वनस्पति है । गुण । रुच्य, तीक्ष्ण, गरम, पाचक और कटु । प्रयोग । हृदयरोग, बस्तिपीडा, विबध, बवासीर, कफ, गोला और वादीको नष्ट करे । सर्वाङ्ग लेना । मात्रा २ मासेकी है ।

वंशपत्री

वंशपत्रीवेणुपत्रीपिंडाहिंगशिवाटिका ॥
हिंगुपत्रीगुणाविज्ञैर्वंशपत्रीचकीर्तिता ॥४३॥

अर्थ-वंशपत्री, वेणुपत्री, पिंडा और हिंगुशिवाटिका, हिं कीडामारी वंशपत्री नामसेही विख्यात क्षुप जातिकी वनस्पति है । म. कीडेमाळी, अ स्नवाम, क कल्हत्ती, तै. चीमहींगवा । इसके और नाम नहीं मिले । गुण । वंशपत्री हिंगुपत्रीका भेद है अतएव इसमें हिंगुपत्रीके समान गुण हैं । इसके स्वरसकी मात्रा २ मासेकी है । *

मछेछी (मत्स्याक्षी)

मत्स्याक्षीबाह्लिकामत्स्यगधामत्स्यादनीतिच । मत्स्याक्षीग्राहिणीशीताकुष्ठपित्तकफास्रजित् । लघुस्तिक्ताकषायाचस्वाद्वीकटुविपाकिनी ॥

अर्थ-मत्स्याक्षी, बाल्हिका, मत्स्यगधा और मत्स्यादनी ए संस्कृत नाम । हिं मछेछी और अन्य सब हिंदुस्थानकी भाषाओंमें मत्स्याक्षी नामसे प्रसिद्ध है । गुण । ग्राही, शीतल, हलकी, कडवी, कषेली, स्वादु और पाकमें कटु । प्रयोग । कुष्ठ, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको निवारण करे । इसका पचांग लेना । मात्रा २ मासेकी है ।

सरहटी गडनी (सर्पाक्षी)

सर्पाक्षीस्यात्सुगंडालीतथानाडीकपालकः ॥
सर्पाक्षीकटुकातिक्तासोष्णाकृमिनिकृंतनी ॥
वृश्चिकोंदुरसर्पाणांविषघ्नीव्रणरोपिणी ॥४५॥

* मुसलमान ग्रंथकर्त्ता—कीडामारीको वायगोला, तथा बदहजमी नष्टकर्त्ता मानतेहे । तथा जानवरोंकी दवाईमें तथा ढोरोंपर मांखी बैठना दूर करनेको वर्त्तना लिखतेहै ।

डा० रोकसबरा—पेटमें ऐंठन होती होय तो तथा उलटी बद करनेको कीडामारी वर्त्तनेकी प्रशंसा कीहै ।

तामिल वैद्य—इस वृक्षके फल उलटी लानेवाला, शरीरको उत्तेजन देनेवाला, मूत्र अधिक लानेवाला और जठराग्निकी मदता होनेपर उपयोगी गिनेहैं ।

डा० पांडुरंग गोपाल—कहतेहैं कि ७ से ८ वर्षकी अवस्थावाले लडकेको, पेटके कीडे निकालनेको ३ रत्तीके बराबर कीडामारीकी मात्रा देनेसे बिना किसीप्रकार नुकसानके कीडे निकल जातेहैं ।

अर्थ-सर्पाक्षी, गन्धाली और नाडीकपाटक ए संस्कृत नाम । हिं. सरफोका, सरहटी और गन्धनी । गुण । कटु, तिक्त और उष्ण । प्रयोग । कृमिरोग, विच्छू, मूसा और सांप, इनके विषको नष्ट करे और व्रणको रोपण करे ।

शंखपुष्पी.

शंखपुष्पीतुशंखाह्वामांगल्यकुसुमापिच ॥
शंखपुष्पीसरामेध्यावृष्यामानसरोगहृत् ॥
रसायनीकषायोष्णास्मृतिकांतिबलाग्निदा ॥
दोषापस्मारभूताश्रीकुष्ठकृमिविषप्रणुत् ॥

अर्थ-शंखपुष्पी, मांगल्यकुसुमा और शंखवाचक समस्त शब्द शंखपुष्पीके नाम है। हिं. सखाहूली, बं. चोरकाचकी, म. शंखाहुली, शंखली, गु. शंखावली, गु. शंखावली कहतेहै । गुण । दस्तावर, स्मरणशक्तिवर्द्धक, बलकारक, मानसिकरोगनाशक, रसायन, कषाय, गरम, कांतिकारी, अग्निकारक और वीर्य प्रगटकर्त्ता । प्रयोग । त्रिदोष, मृगी, भूतादिदोष, अशोभा, कोढ, कृमि और विष इनको नष्ट करे । इसके सर्वांगका स्वरस ग्रहण करे । मात्रा ३ मासेकी है ।

अर्कपुष्पी

अर्कपुष्पीक्रूरकर्मापयस्वाजलकामुका ॥
अर्कपुष्पीकृमिश्लेष्ममेहपित्तविकाराजित् ॥

अर्थ-अर्कपुष्पी, क्रूरकर्मा, पयस्या और जलकामुका । हिं. अर्कपुष्पी, बं. वडक्षीरुइ, म. सूर्यफूलवल्ली, गु. सूरजमुखी । गुण । कृमि, कफ, प्रमेह और पित्तरोगको नष्ट करे । इसका सर्वांग लेवे । मात्रा २ मासेकी है ।

लजालू

लज्जालुःस्याच्छमीपत्रासमंगाजलकारिका॥
रक्तपादीनमस्कारीनाम्नाखदिरिकेत्यपि ४९
लज्जालुःशीतलातिक्ताकषायाकफपित्तजित्
रक्तपित्तमतीसारंयोनिरोगान्विनाशयेत् ॥

अर्थ-लजालु, शमीपत्रा, समंगा, जलकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी और खदिरिका । हिं. लजालु, लजावती, छुइमुइ, बं. लजावती, म. लाजरी, का. हिरके मुछिरे मुट्टुवट्टु, गु. रीसामणी, लजामणी कहतेहै । यह क्षुप जातिकी वनस्पती है । इसके छौंकरेकेसे पत्ते होतेहै, इसको उंगली लगातेही पत्ते सिमिटकर डाली गिरजातीहै । गुण । शीतल, कडवा, कषैला और कफपित्तनाशक । प्रयोग । रक्तपित्त, अतिसार और योनिरोगको नष्ट करे । सर्वांग लेना । मात्रा ३ मासे ।

दूसरा लजालू.

लज्जालुर्वैपरीत्यन्याअल्पक्षुपबृहद्दला ।
वैपरीत्यातुलज्जालुरभिधानेप्रयोजयेत् ।
लज्जालुर्वैपरीत्याह्वःकटुरुष्णःकफामनुत्
रसोनियामकोत्यतनानाविज्ञानकारकः ॥

अर्थ-दूसरा, विपरीत लजालू है इसको अल्पक्षुप बृहद्दल, कहतेहै । गुण । विपरीत लजालू चरपरा, गरम, कफ और आमको नष्ट करे । अत्यंत पारेका बद्धक और अनेक चमत्कार दिखानेवाला है ।

लजालूका भेद (अलंबुषा.)

अलंबुषाखरत्वक्चस्थामेदोगलास्मृता ॥
अलंबुषालघुःस्वादुःकृमिपित्तकफापहा॥५१

अर्थ-अलंबुषा, खरत्वक् और मेदोगला, यहभी लजालूका भेद है । गुण । लघु, स्वादु, कृमि और कफपित्त नाशक। इसकाभी सर्वांग लेना। मात्रा २ मासेकी है ।

दुद्धी.

दुग्धिकास्वादुपर्णीस्यात्क्षीराविक्षीरिणीतथा
दुग्धिकोष्णागुरूरूक्षवातलागर्भकारिणी ५२
स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तासृष्टमूत्रमलापहा ॥
स्वादुर्विष्टंभिनीवृष्याकफकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ-दुग्धिका, स्वादुपर्णी, क्षीरा और आविक्षीरणी, हिं. दुद्धी, दूधी, दुधिया, बं. क्षीरुइ, म. दुधी, खिल कुला, का. दुधनी, दूधुली, दाईली, गु. दुधेली, नागार्जुनी । गुण । गरम, भारी, रूक्ष, वातकर्त्ता, गर्भसंस्थापक, स्वादु, दुग्धयुक्त, कडवी, चरपरी, मृदु, निमकीन रसवाली, विष्टंभ और बलकारक । प्रयोग । मलमूत्रादिको निकाले, कफ, कुष्ठ और कृमिरोग नष्ट होय । इसका सर्वांग लेना । मात्रा २ मासेकी है ।

भूंइ आंवला (भद्रआंवला)

भूम्यामलकिकाप्रोक्ताशिवातामलकीतिच ॥
बहुपुत्राबहुफलाबहुवीर्याजटापिच ॥ ५४ ॥
भूधात्रीवातकृत्तिक्ताकषायामधुराहिमा ॥
पिपासाकासपित्तास्रकफकंडूक्षतापहा ५५

अर्थ–भूम्यामलकिका, शिवा, तामलकी, बहुपुत्रा, बहुफला और बहुवीर्या ए संस्कृत नाम। हिं भूयआंवला, अरआवला, बं. भूंईआंमला, म. भूयआंवली, गु भोंआंमली, का आर्दनेल्ली, तै नेलाउसीरके कहतेहै। गुण। वातकर्ता, कडवा, कषेला, मधुर और शीतल । प्रयोग। प्यास, खांसी, रक्तपित्त, कफ खुजली और घाव इनको दूर करे। इसके फल लेने। मात्रा २ मासेकी है।

ब्राह्मी–ब्रह्ममडूकी

ब्राह्मीकपोतवंकाचसोमवल्लीसरस्वती ॥
मंडूकपर्णीमांडूकीत्वाष्ट्रीदिव्यामहौषधी ॥
ब्राह्मीहिमासरातिक्तालघुर्मेध्याचशीतला ॥
कषायामधुरास्वादुपाकायुष्यारसायनी॥५७
स्वर्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपांडुमेहास्रकासजित् ॥
विषशोथज्वरहरीतद्वन्मंडूकपर्णिनी ॥ ५८ ॥

अर्थ–ब्राह्मी, कपोतवंका, सोमवल्ली आर सरस्वती ए संस्कृत नाम। हिं. ब्रह्मी, वरमी, ब. ब्राह्मीशाक, म. ब्राह्मी, अ ऑदेलग, फा जरनब, ला. हाइड्रोकोटाइल एसिआटिका Hy lrocotyle Asiatica कहते है। ब्रह्मीका भेद मडूकपर्णी है। उसके नाम, मडूकपर्णी, मांडुकी, त्वाष्ट्री, दिव्या और महोषधी, हिं मडुकपानी, ब्रह्ममांडूकी, बं थुलकुडी। ब्राह्मी और मंडूकपर्णी ए दोनो प्रसर आतिकी औषधी हैं। गुण। ब्राह्मी और मंडूकपर्णी दोनों शीतल, सर, कडवी, हलकी, स्मरणशक्तिवर्धक, कषाय, मधुर, पाकके समय स्वादिष्ट, आयुकर्त्ता, रसायन, स्वरशोधक। प्रयोग। कोढ, पाडु, प्रमेह, रक्तदोष, खांसी, विषदोष, सूजन और ज्वर ए दूरहो। इसके स्वरसकी मात्रा २ मासेकी है। ब्रह्मीका दर्पनाशक सफेद चदन और गुलाबजल है। तथा प्रतिनिधि दालचीनी है। मात्रा ३ मासेकी है।

गोमा

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्तिता ॥
द्रोणपुष्पीगुरुःस्वादुरूक्षोष्णावातपित्तकृत्॥
सतीक्ष्णलवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी ॥
कफामकामलाशोथतमकश्वासजंतुजित् ॥

अर्थ–द्रोणा, द्रोणपुष्पी और फलेपुष्पी ए संस्कृत नाम। हिं गोमा, बं गलघसिया, म. तुषा, कुभा, देवकुभा शेतवड, तै. गयस चेट्टु. गु. कुवा। गुण। गुरु, स्वादु, रूक्ष, गरम, वातपित्त कर्त्ता, तीक्ष्णलवण रसयुक्त, पाकके समय स्वादिष्ट कटु, दस्तावर। प्रयोग। कफ, आम, कामला, सूजन, तमक श्वास और कीटादि दूर हो। सर्वांग लेना। इसके रसकी मात्रा २ मासेकी है।

हुरहुर–ब्रम्हसोचली.

सुवर्चलासूर्यभक्तावरदाबदरापिच ॥
सूर्यावर्त्तारविप्रीताऽपराब्रह्मसुवर्चला ॥६१॥
सुवर्चलाहिमारूक्षास्वादुपाकासरागुरुः ॥
अपित्तलाकटु.क्षाराविष्टंभकफवातजित् ॥
अन्यातिक्ताकषायोष्णासरारूक्षालघुःकटुः
निहंतिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान्
विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपांडुताः ॥

अर्थ–सुवर्चला, सूर्यभक्ता, वरदा, बदरा, सूर्यावर्त्ता और रविप्रीता ए संस्कृत नाम। हिं. हुरहुर, हुलहुल, सोचली ब्रम्हसोचली. बं हुरहुरे, म. सूर्यफूलवल्ली गु. तलवणी कहते है। इसका दूसरा भेद है उसको ब्रह्मसुवर्चला कहते है। हिं. ब्रह्मसोचली। गुण। शीतल, रुक्ष, स्वादुपाकी, दस्तावर, भारी चरपरी, क्षारगुणयुक्त, पित्तकर्त्ता नहींहै। यह विष्टंभ, कफ और वादीको दूर करे। दूसरी जो ब्रह्मसुवर्चला या ब्रह्मसुवर्चला है वह कडवी, कषेली, गरम, दस्तावर, रुक्ष, हलकी और कटु। प्रयोग। कफजन्य रक्तपित्त, श्वास, खांसी, अरुचि, ज्वर, विस्फोट, कुष्ट, प्रमेह, रक्तदोष, योनिरोग, कृमि और पांडुरोग इनको दूर करे। इसके पत्र आदि लेने। मात्रा २ मासेकी।

वांझखखसा.

वंध्याकर्कोटकीदेवीकन्यायोगीश्वरीतिच ॥
नागारिर्नकदमनीविषकण्टकिनीतथा ॥६४॥
वंध्याकर्कोटकीलघ्वीकफनुद्व्रणशोधिनी ॥
सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी ॥ ६५॥

अर्थ–वंध्याकर्कोटकी, देवी, कन्या, योगीश्वरी, नागारि, नकदमनी और विषकंटकिनी, ए संस्कृत नाम । हिं. वांझखखसा, बांझखखसा, वनककोडा, म. वांझकटोली, का. बंजेमडवागलु, गु. फलवगरना कंटोला । गुण । हलकी, कफनाशक, व्रणशोधक, तीक्ष्ण और सांपकी तेजीको नष्टकरे । प्रयोग । विसर्प, रोग और विष नष्ट होय । इसका समस्त अंश लेना । मात्रा २ मासेकी है ।

भूइखखसा.

मार्कंडिकाभूमिवल्लीमार्कंडीमृदुरेचनी ॥
मार्कंडिकाकुष्ठहरीऊर्ध्वाधःकायशोधिनी ॥
विषदुर्गंधकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥

अर्थ–मार्कंडिका, भूमिवल्ली, मार्कंडी और मृदुरेचनी ए संस्कृत नाम । हिं. भूइखखसा, म भूइतरवड, कौं. सोनामुखी, दे. आहुली, तगडवल्ली, गु. धोली मीढीआवर कहते हैं । गुण । विरेचक, वमनकारक, विषघ्न, और दुर्गंधनाशक । प्रयोग । कोढ, खांसी, गोला और उदर रोग इनको शमन करे । इसकी मात्रा ६ मासेकी है । *

देवदाली.

देवदालीतुवेणीस्यात्कर्कटीचगरागरी ॥
देवतांडीवृत्तकोशस्तथाजीमूतइत्यपि ॥
पीतापराखरस्पर्शाविषघ्नीगरनाशिनी ॥६७॥
देवदालीरसेतिक्ताकफार्शःशोफपांडुताः ॥
नाशयेत्क्षामनीतिक्ताक्षयहिक्काक्रिमिज्वरान् ।
देवदालीफलंतिक्तंक्रिमिश्लेष्मविनाशनम् ॥
संस्रंगुल्मशूलघ्नमर्शोघ्नंवातजित्परम् ॥

अर्थ–देवदाली, वेणी, कर्कटी, गरागरी, देवतांडी, वृत्तकोश, और जीमूत ए संस्कृत नाम हैं । इसीका दूसरा भेद और है कि जिसको खरस्पर्शा, विषघ्नी और गरनाशिनी कहते है इसका रंग पीला होता है । हिं. सोनैया, वदाल, घघरबेल, देवदाली, म. देवडगरी, कौं. डबुरी, दे. विदाली, गु. कुकडवेल । स्वरूप । इसकी बेल होतीहै । फल गोल २ लगते हैं । गुण । कडवी और वमनकारक । प्रयोग । कफकी बवासीर, सूजन, पांडुरोग, क्षयरोग, कृमि और ज्वर इनको दूर करे । इसका फल कडवा, कृमिनाशक, कफघ्न, स्रसन और अत्यत वातनाशक, यह गोला, शूल और बवासीर इनको शांति करे । †

पनिसगा.

जलपिप्पल्यभिहिताशारदीशकुलादनी ॥
मत्स्यादनीमत्स्यगंधालांगलीत्यपिकीर्तिता ।
जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुक्रलालघुः ॥
संग्राहिणीहिमारूक्षारक्तदाहव्रणापहा ॥
कटुपाकरसारुच्याकषायावह्निवर्धिनी ॥

अर्थ–जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यादनी, मत्स्यगधा और लांगली । हिं. पनिसगा, जलपीपर, गंगतिरिया, बं श्वेतकांचडा, म जलपिंपल, का. होमुगुलु, गु. रतवेलीया । गुण । हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हित, शुक्र प्रगटकर्त्ता, हलकी सग्राही, शीतल, रूक्ष, पाकके समय कटु, रोचक, कषेली, अग्निवर्धक, तथा रक्तदाह और व्रणनाशक है । इसका सर्वांश लेना मात्रा २ मासेकी है ।

गोभी.

गोजिह्वागोजिकागोभीदार्विकाखरपर्णिनी ॥
गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीकफपित्तनुत् ॥

* संस्कृतके वैद्यग्रंथोंमें—भुइखखसेको कफ और रुकेहुए पित्तको निकालनेवाला, मस्तक सुधी करता, तथा साधारण रीतीसे शरीर स्वच्छ करनेको देतहे । सन्धिवातपर इसको अत्यत उपयोगी गिनतेहैं । इससे मुहांसे और फोडा नष्ट होजातेहैं, पेटकी कृमि निकल आतीहैं, तथा बवासीर होनेका भ्रम दूर होजाताहै ।

† हिन्दुस्थानी वैद्य—इस फलको अत्यत कडवा होनेके कारण उसे कितनेक औषधीके काथमें डालतेहैं । घोडेके पेटमें यदि कीडे पडगए होय तो इस फलको अन्य मसालोंके साथ खिलातेहैं ।

ह्यामयेहृत्कासास्रव्रणज्वरहरीलघुः ॥
कोमलातुवरातिक्तास्वादुपाकरसास्मृता ॥

अर्थ–गोजिव्हा, गोजिका, गोभी, दार्विका और खरपर्णिनी ए सं. नाम । हिं. गोभी, बं. गोजिया, म. पाथरी, कौं. घाडना, का. यनुनालगे, गु. गलजिभी, भोंपाथरी कहतेहै । चित्रनंबर ३५ का देखो । गुण । वादी, शीतल, ग्राहिणी, कफपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, हलकी, कोमल, कषेली, कडवी और पकनेमें स्वादिष्ट है । प्रयोग । प्रमेह, खांसी, रुधिर-विकार, व्रण और ज्वरको दूर करे । यह खानेकी गोभी नहीं है कि जिसका साग करा जाताहै । यह छोटे २ लंबे पत्तोंकी प्रसरजातिकी वनस्पति है । और ककरीली जमीनमें उगतीहै । इसका सर्वांश लेना । मात्रा २ मासेकी है ।

नागदमनी.

विशेयानागदमनीबलामोटाविषापहा ॥
नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेश्वरीतिच ॥७४॥
बलामोटाकटुस्तिक्तालघुःपित्तकफापहा ॥
मूत्रकृच्छ्रव्रणरक्षोनाशयेज्जालगर्दभम् ॥
सर्वग्रहप्रशमनीनिःशेषविषनाशिनी ॥
अयंसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा ॥ ७६ ॥

अर्थ–नागदमनी, बलामोटा, विषापहा, नागपुष्पी नागपत्रा और महायोगेश्वरी ए संस्कृत नाम। हिं. नागदौन, बं. नागदना, म. नागदवणी, गु. झीपटा कहतेहै। गुण। कटु, तिक्त, लघु, कफपित्तनाशक [क्षारगुण-विशिष्ट कफवातनाशक], पेटके अफरेको दूर करता, कोष्ठविशोधक, ग्रहशांतिकर्त्ता, अशेष विषनाशक, सर्वत्र जयकारक, धनदायक और सुमतिप्रदायक है । प्रयोग । मूत्रकृच्छ्र, व्रणरोग, जालगर्दभ और राक्षसभय इनको दूर करे । इसके पत्ते लेने । मात्रा ८ रत्तीकी है ।

वरवेल (वेल्लंतर.)

वेल्लंतरोजगतिवीरतरुःप्रसिद्धः
श्वेतासितारुणविलोहितनीलपुष्पः ।
स्याच्छमितुल्यकुसुमःशमिसूक्ष्मपत्रः
स्यात्कंटकीविजलदेशजपत्रवृक्षः ॥ ७७ ॥

वेल्लंतरोरसेपाकेतिक्तस्तृष्णाकफापहः ॥
मूत्राघाताश्मजिद्ग्राहीयोनिमूत्रानिलार्त्ति-
जित् ।

अर्थ–वीरतरुका दूसरा नाम वेल्लंतर है। यह वृक्ष चार प्रकारका होताहैः–एक सपेद फूलका, एक काले फूलका, एक लाल फूलका और एक लोहित (घोर लाल) रंगका । इन सब वृक्षोंमें कांटे होतेहैं और पत्ते शमी (छोकरा) केसे छोटे २ होतेहैं । यह वृक्ष उजाडमें होताहै । म. वेलतूर, गु. गलतोरा कहतेहैं । गुण । खानेमें तथा पाकमें कडवा, तृषानाशक, कफघ्न और ग्राही । प्रयोग । मूत्राघात, पथरी, योनिरोग, मूत्रपीडा और वादीके रोग इनको दूर करे। इसकी छाल लेनी । मात्रा २ मासे ।

नकछिकनी (छिक्कनी.)

छिक्कनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिक्किकाघ्राणदुःखदा
छिक्कनीकटुकारुच्यातीक्ष्णोष्णावह्नि-
पित्तकृत् ॥
वातरक्तहरीकुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ ७९ ॥

अर्थ–छिक्कनी, क्षवकृत्, तीक्ष्णा, छिक्किका और घ्राणदुःखदा ए सं., हिं. नकछिकनी, बं. हेचुटी, म. नाकशिंकणी, फा. वेख गाउजवी, अं. डफरक-कुडश कहतेहैं । गुण । कटु, रुचिदाता, तीक्ष्ण, गरम, अग्निकारी, पित्त प्रगटकर्त्ता, वातकफनाशक, मस्तक-विरेचक । प्रयोग । वातरक्त, कोढ, कृमिरोग और हंसलीके ऊपरके रोगोंको दूर करे ।

ककुंदर.

कुकुंदरस्ताम्रचूडःसूक्ष्मपत्रोमृदुच्छदः ॥
कुकुंदरःकटुस्तिक्तोज्वररक्तकफापहः ॥
तन्मूलमार्द्रनिःक्षिप्तंवदनेमुखशोषहृत् ॥

अर्थ–ककुंदर, ताम्रचूड [पीतपुष्प], सूक्ष्मपत्र [कुकुन्दु] और मृदुच्छद । हिं. ककुरबंदा, बं. कुकुसिमा, कुकुरसोंका, म. ककुरवंदा । गुण । कटु, तिक्त, ज्वर, रुधिरविकार और कफनाशक । इसके सेवन करनेसें रक्तपित्त, अतिसार और दाह शांति हो । इसका सर्व अंग लेना । मात्रा २ मासेकी ।

सुदर्शन.

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राह्वामधुपर्णिका ॥
सुदर्शनास्वादुरुष्णाकफशोफास्रवातजित् ॥

अर्थ-सं. सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्राह्वा [अर्थात् जितने संस्कृतमें चक्रके नाम हैं सब सुदर्शनके हैं], और मधुपर्णिका, हिं. सुदर्शन और सब हिंदुस्थानकी भाषाओंमें इसी नामसें प्रसिद्ध है । गुण । स्वादिष्ट, गरम, कफ, शोथ और वातरक्तको दूर करे।

मूसाकर्णी.

आखुकर्णीत्वाखुकर्णपर्णिकाभूदरीभवा ॥
आखुकर्णीकटुस्तिक्ताकषायाशीतलालघुः ॥
विपाकेकटुकामूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ-आखुकर्णी, आखुकर्ण, पर्णिका और भूदरीभवा । हिं. मूसाकर्णी, बं. इन्दूरकाणिपाना, म. लघु उंदिरकानी, दे. मोपनी, का. वलिइरुहे, गु. उंदरकनी कहतेहै । गुण । कटु, तिक्त, कषाय, शीतल हलकी और पाकमें चरपरी है । प्रयोग । मूत्रके रोग, कफरोग तथा कृमिरोगको दूर करे । इसका सर्वांश ग्रहण करना । मात्रा १ मासेकी ।

मोरशिखा (मयूरशिखा.)

मयूराह्वशिखाप्रोक्तासहस्राहिर्मधुच्छदा ॥
नीलकंठशिखालघ्वीपित्तश्लेष्मातिसारजित्

अर्थ-सहस्राहि, मधुच्छदा, मयूरशिखा और जितने मोरके नाम है, जैसे-नीलकंठशिखा, बर्हिशिखा इत्यादि, हिं. मोरशिखा, फा. असनाने, असलान् । गुण । हलकी और पित्त, कफ, तथा अतिसारको नष्ट करे । इसका सर्व अंश ग्रहण करना चाहिये ।

॥ इति श्रीअभिनवनिघंटौ माथुरीभाषाटीकायां गुडूच्यादिवर्गः ॥

पुष्पवर्गः

कमल.

वापुंसिपद्मंनलिनमरविंदंमहोत्पलम् ॥
सहस्रपत्रंकमलंशतपत्रंकुशेशयम् ॥ १ ॥
पंकेरुहंतामरसंसारसंसरसीरुहम् ॥
बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणिच ॥ २ ॥
कमलंशीतलंवर्ण्यंमधुरंकफपित्तजित् ॥
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥
विशेषतःसितंपद्मंपुण्डरीकमितिस्मृतम् ॥
रक्तंकोकनदंज्ञेयंनीलमिंदीवरंस्मृतम् ॥ ४ ॥
धवलंकमलंशीतंमधुरंकफपित्तजित् ॥
तस्मादल्पगुणंकिंचिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम्

अर्थ-पद्म, नलिन, अरविंद, महोत्पल, सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय, पंकेरुह, तामरस, सारस, सरसीरुह, बिसप्रसून, राजीव, पुष्कर और अंभोरुह, ए संस्कृत नाम, हिं. कमल, बं. पद्म, का. विलियतामरे, तै. कालावा, इं. लोटस् । गुण । शीतल, वर्णकर्त्ता, मधुर, कफपित्तनाशक और विषनाशक है । प्रयोग । प्यास, दाह, रुधिरविकार, विस्फोट और विसर्परोगको नष्ट करे । सपेदरंगके कमलको पुंडरीक और लालरंगके कमलको कोकनद और नीलेकमलको इन्दीवर कहतेहै । सपेदकमल शीतल, मधुर, कफशांतिकर और पित्तनाशक है । और लालकमल आदि गुणोंमें इससें न्यून है ।

लालकमल.

कोकनदमरुणकमलंरक्तांभोजंचशोणपद्मंच ।
रक्तोत्पलमरविंदंरविप्रियंरक्तवारिजंवसवः॥
कोकनदंकटुतिक्तंमधुरंशिशिरंचरक्तदोषहरं
पित्तकफवातशमनंसंतर्पणकारकंवृष्यम् ॥

अर्थ-कोकनद, अरुणकमल, रक्तांभोज, शोणपद्म, रक्तोत्पल, अरविंद, रविप्रिय और वारिज ए आठ सं. नाम है । क. केदावरे । गुण । लालकमल-कटु, तिक्त, मीठा, शीतल, रक्तदोषहरता, कफवात शमनकर्त्ता, इन्द्रियोंको तृप्तकारी और बलकारक है ।

नीलकमल.

उत्पलंनीलकमलंनीलाब्जंनीलपंकजम् ।
नीलपद्मंचबाणाह्वंनीलादिकमलाभिधम् ॥

नीलाब्जंनीलकमलमनुसुगंधिपित्तनाशकम् ।
रुच्यंरसायनमेवदेहदार्ढ्यकचोपचयम् ॥

अर्थ-उत्पल, नीलकमल, नीलाब्ज, नीलपंकज और नीलपद्म ए पांच नीले कमलके नाम हैं । क. करियतावरे । गुण । नीलाकमल-शीतल, स्वादु, सुगंधित, पित्तनाशकर्त्ता, रुचिकारी, रसायन, प्रयोगमें उत्तम, देहको दृढकर्त्ता और बालोंको बढानेवाला है ।

पद्मिनी.

मूलनालदलोत्फुल्लफलैःसमुदितापुनः ।
पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्बिसिन्यादिचसास्मृता ॥
पद्मिनीशीतलागुर्वीमधुरालवणाचसा ।
पित्तासृक्कफनुद्रूक्षावातविष्टम्भकारिणी ॥

अर्थ-मूल, नाल और पत्र आदि समुदायको पद्मिनी, बिसिनी, नलिनी, कमलिनी इत्यादि कहते-हैं । गुण । पद्मिनी-शीतल, भारी, मधुर, लवणरसयुक्त, रूक्ष और वातविष्टंभकर्त्ता है । प्रयोग । यह रक्तपित्त और कफको शांति करे ।

पद्मके नवपत्रादि.

संवर्तिकानवदलंबीजकोशस्तुकर्णिका ॥
किंजल्कःकेसरःप्रोक्तोमकरंदोरसःस्मृतः ॥
पद्मनालंमृणालंस्यात्तथाबिसमितिस्मृतम् ॥
संवर्तिकाहिमातिक्ताकषायादाहतृड्प्रणुत्
मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ॥
पद्मस्यकर्णिकातिक्ताकषायामधुराहिमा ॥
मुखवैशद्यकृल्लघ्वीतृष्णास्रकफपित्तनुत् ॥
किंजल्कःशीतलोवृष्यःकषायोग्राहकोऽपिसः
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित् ॥
मृणालंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रजिद्गुरु ॥
दुर्जरंस्वादुपाकंचस्तन्यानिलकफप्रदम् ॥
संग्राहिमधुरंरूक्षंशालूकमपितद्गुणम् ॥ १२ ॥

अर्थ-कमलके नवीनपत्तोंको संवर्तिका, बीजकोषको कर्णिका, केशरको किंजल्क, रसको (मधुक) मकरंद और नालको मृणाल, बिस (भसीडा) कहतेहैं । संवर्तिका (नवीनपत्र)-शीतल, तिक्त और कषाय । प्रयोग । दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, गुदाकी पीडा और रक्तपित्तको शांति करे । कर्णिका (बीजकोष)-तिक्त, कषेला, मधुर, शीतल, और हलका । प्रयोग । सेवन करनेसें मुखको शुद्धकर्त्ता तथा तृषा, रक्तदोष और कफ नष्टहो । कमलकी केशर-शीतल, वृष्य, कषेली, संग्राही, कफपित्त और विषको नाश करे । प्रयोग । सेवन करनेसें तृषा, दाह, खूनीबवासीर और सूजन शांति होय । कमलकी डंडी शीतल, वृष्य, भारी, जल्दी नहीं पचे, जीर्ण होनेपर स्वादु हो । प्रयोग । स्त्रीके स्तनोंमें दूध प्रगट करै, वायुवर्द्धक, कफकर्त्ता, संग्राही, मधुर, रूक्ष, पित्तजन्य, दाह और रक्तदोष नष्ट करे । तथा शालूक (कंद-भसीडा) डंडीके समान जानना ।

स्थलकमल.

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथापद्माचशारदा ॥
पद्मानुष्णाकटुस्तिक्ताकषायाकफवातजित् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मशूलघ्नीश्वासकासविषापहा ॥

अर्थ-पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा और शारदा ए संस्कृत नाम, हिं. गैंदेका फूल । गुण । अनुष्ण, कटु, तिक्त, कषाय, कफवात हरण कर्त्ता । प्रयोग । मूत्रकृच्छ्र, पथरी, शूल, श्वास, खांसी और विषके विकारोंको नष्ट करे ।

कोई (कुमुदनी.)

श्वेतंकुवलयंप्रोक्तंकुमुदंकैरवंतथा ॥
कुमुदंपिच्छिलंस्निग्धंमधुरंह्लादिशीतलम् ॥

अर्थ-सपेदको कुवलय, कुमुद और कैरव ए सं. । हिं. कमोदनी, कोई, बघोंला, बं. सुंदिपुष्प, गु. पोयणां, फा. नीलोफर । गुण । पिच्छल, स्निग्ध, मधुर, आल्हादजनक और शीतल ।

कुमुदिनी.

कुमुद्वतीकैरविकातथाकुमुदिनीतिच ॥
सातुमूलादिसर्वांगैरुक्तासमुदिताबुधैः ॥
पद्मिन्यायेगुणाःप्रोक्ताःकुमुदिन्याश्चतेस्मृताः

अर्थ-जडसहित सर्वांग कुमुदको कुमुदिनी कहतेहै । इसके पर्याय कुमुद्वती, कैरविका और कुमुदिनी । इसके गुण कमलनीके समान जानने ।

काई (जलकुंभी.)

वारिपर्णीकुंभिकास्याच्छैवालंशैवलंचतत् ॥
वारिपर्णीहिमातिक्ताकव्वीस्वाद्वीसराकटुः॥
दोषत्रयहरीरूक्षाशोणितज्वरशोषकृत् ॥
शैवालंतुवरंतिक्तंमधुरंशीतलंलघु ॥
स्निग्धंदाहतृषापित्तरक्तज्वरहरंपरम् ॥ १८

अर्थ-वारिपर्णी, कुंभिका ए संस्कृत नाम। हिं. जलकुंभी, बं. पाना। शैवाल और शेवल ए काईके नाम। इसको सिवारभी कहतेहैं। बं. शेहाला, फा. तुहिल, अंबाल। गुण। वारिपर्णी- शीतल, कडवी, लघु, स्वादु, सर, कटु, त्रिदोषनाशक, रूक्ष, रक्तज्वर और सूजनको दूर करे। काई (सेवार)- कषेली, तिक्त, मधुर, शीतल, हलकी और स्निग्ध। यह दाह, तृषा, पैत्तिक और रक्तगत ज्वरको निवारण करै। मात्रा २ मासेकी है। प्रतिनिधि जलकी कीच हैं। दर्पनाशक मायुलरोहां हैं।

सेवती गुलाब.

शतपत्रीतरुण्युक्ताकर्णिकाचारुकेशरा ॥
महाकुमारीगंधाढ्यालाक्षाकृष्णातिमंजुला ॥
शतपत्रीहिमाहृद्याग्राहिणीशुक्रलालघुः ॥
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्यातिक्ताकट्वीचपाचनी ॥

अर्थ-शतपत्री, तरुणी, कर्णिका, चारुकेशरा, महाकुमारी, गंधाढ्या, लाक्षा, कृष्णा, अतिमंजुला [सुशीता, शिवप्रिया, सुमना] ए संस्कृत नाम। हिं. गुलाब और सेवती। तहां सेवती सफेद फूलकी और गुलाब गुलाबी रंगका होताहै। गुलाबको फारसीमें गुल्सुर्ख, अ. वर्दे अहमर, क. येवडे कहते हैं। गुण। शीतल, हृदयको हितकारी, ग्राही, शुक्रजनक, हलका, त्रिदोषनाशक, रुधिरविकारको दूर करे, रंगको उज्ज्वल करे, कडवी, चरपरी और पाचनी है। गुलाबजीरेका दर्पनाशक मस्तंगी है। *

बसंती (नेवारी).

नेपालीकथितातज्ज्ञैःसप्तलानवमालिका ॥
वासंतीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयापजित् ॥

अर्थ-नेपाली, सप्तला, नवमालिका और वासंत ए संस्कृत नाम। हिं. नेवारी, फा. वीरवंती, गु. वटमोगरो। गुण। शीतल, लघु, कडवी, त्रिदोषघ्न और रक्तदोषनाशक है। †

वार्षिकी (वेल.)

श्रीपदीषट्पदानंदावार्षिकीमुक्तबंधना ॥
वार्षिकीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयापहा ॥
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नीतत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥

* अरबीफारसी ग्रंथोंमें—गुलाबकी अनेक जात कहीहैं-जैसेकि सफेद जंगलीगुलाब, लाल जंगलीगुलाब, लाल बगीचेका गुलाब, पीला जंगलीगुलाब, पीला बागीगुलाब, जंगली सफेद गुच्छादारगुलाब, और वर्द उलहमाक नामका गुलाब इत्यादि अनेक जातके गुलाबोंमेंसे तथा लाल गुलाबसे अतर निकलताहै। गुलाबकी कली फूलेहुए फूलके अपेक्षा अधिक ग्राही होनेसे दवाके तरीकेसे अपने देशमें वर्तनेमें आतीहै। तथा वह शीतल, खुश्क, पौष्टिक, दस्त लानेवाली और पित्त नष्टकर्त्ता मानी गईहै। इसके पुंकेशरको गरम और ग्राही मानतेहैं।

† मि० चुडके मतसे—इस फूलमें स्तनके दूधको बखेर देनेका गुण हदसे ज्यादे है, जिस वक्त स्तनमें गांठ पडगई होय अथवा पकती होय उस समय दो वा तीन मुट्ठीभर फूलोंको पीसके स्तनोंपर बांधे और दिनमें दोदफे पलट डाले तो २४ घंटेमें स्तनोंका दूध बिखर जाताहै। जंगलीनेवारीकी जड पित्त निकालनेको वर्तनेमें आतीहै, तथा इसका तेल मस्तकपर लगानेसे नेत्रकी दृष्टी बढतीहै।

चक्रदत्तमें—ताजे फलोंका रस नरम मस्सेपर लगाना लिखाहै तथा मुखमें छाले होगए होय तो इसके वर्तनेकी प्रशंसा करेहै।

मुसलमानी ग्रंथकार—नेवारीके फूलको पेटमेंके विगाड निकालनेवाला, पेटके कीडे नष्टकर्त्ता, मूत्र अधिक लानेवाला, तथा सिलके बरावको निकालनेवाला, तथा फूलोंको पीस आंख और अंकोड़ेकी नीचेके भागमें लगानेसे कामोद्दीपक कर्त्ता गिनतेहैं।

अर्थ–चौपदी, षट्पदानन्दा, वार्षिकी और मुक्तबंधन, हिं. बेल, म. साठही मोगराचा भेद, गु. उबारा। गुण। शीतल, लघु, कडवी, त्रिदोषनाशक। इसके सेवन करनेसें कान, नेत्र और मुखके रोग दूरहो। इसके तेलमें इसीके अनुसार गुण जानने।

चमेली (जाती स्वर्णजाती.)

जातिर्जातीचसुमनामालतीराजपुत्रिका ॥
चेतिकाहृद्यगंधाचसापीतास्वर्णजातिका ॥
जातीयुगंतिक्तमुष्णंतुवरंलघुदोषजित् ॥
शिरोक्षिमुखदंतार्तिविषकुष्ठानिलास्रजित् ॥

अर्थ–जाति, जाती, सुमना, मालती, राजपुत्रिका, चेतिका और हृद्यगंधा, पीलेरंगकी स्वर्णजाती कहातीहै। हिं. चमेली और पीलीचमेली, म. जाजी, चंबेली, क. मोगराचा भेदु। गुण। दोनों प्रकारकी चमेली गरम, कषेली, हलकी और दोष हरणकर्त्ता। इसके द्वारा मस्तक, नेत्र, मुख और दांतोंकी पीडा, विषजन्य रोग, कोढ, वादी और रुधिरके दोष दूर हों।

जुही. सुवर्णजुही.

यूथिकागणिकांबष्ठासापीताहेमपुष्पिका ॥
यूथीयुगंहिमंतिक्तंकटुपाकरसंलघु ॥
मधुरंतुवरंहृद्यंपित्तघ्नंकफवातलम् ॥
व्रणास्रमुखदंताक्षिशिरोरोगविषापहम् ॥

अर्थ–यूथिका, गणिका और अंबष्ठा, ए जुहीके नाम हे। और पीली होयतो उसको हेमपुष्पिका वा स्वर्णयूथिका कहतेहैं। और हिंदीमें जुही और पीलीजुही, का. यरडुमोल्ले, म. पांढरी व पिंवळी जुही, तै. जुइपुष्पालु। गुण। दोनों प्रकारकी जुही–शीतल, कडवी, पाकमें कटुरस, लघु, मधुर, कषाय, हृद्य, पित्तघ्न, वातकफवर्द्धक और विषघ्न है। प्रयोग। व्रण, रक्तदोष, मुख, दांत, नेत्ररोग और शिरपीडा शांति होय।

चंपा.

चांपेयश्चंपकःप्रोक्तोहेमपुष्पश्चसस्मृतः ॥
एतस्यकलिकागंधफलीतिकथिताबुधैः ॥
चंपकःकटुकस्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः ॥
विषक्रिमिहरःकृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥

अर्थ–चांपेय, चंपक और हेमपुष्प ए संस्कृत नाम, हिं. चंपा, म. चांपा, क. संपगे, तै. गमेरचेट्टू, ला. मिचेलिया चंपेका। गुण। कटु, तिक्त, कषाय, मधुर, शीतल, विषघ्न और कृमिनाशक। इसके द्वारा मूत्रकृच्छ्र, वातकफ, रक्तपित्त ए दूर हो।

मौलसरी (बकुल.)

बकुलोमधुगंधश्चसिंहकेसरकस्तथा ॥
बकुलस्तुवरोऽनुष्णःकटुपाकरसोगुरुः ॥
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदंतगदापहः ॥

अर्थ–बकुल, मधुगंध और सिंहकेशर ए संस्कृत नाम, हिं. मौल [र] सरी, गु. बोलसिरी, ता. मोगदम्, उडि. वउडकुडी, म. वगोळे, बकुली, क. करक, तै. पाघडा, इं. सुरीनाम मेडलर। गुण। कषाय, अनुष्ण, कटुपाकी और भारी है,। इसके सेवनसें कफ, पित्त, विष, चित्रकुष्ठ, दांतके रोग और कृमिरोग नष्ट होय।

बकुल (वृहद्बोलसरी.)

शिवमल्लीपाशुपतएकाष्ठीलोबुकोवसुः ॥
बुकोऽनुष्णःकटुस्तिक्तःकफपित्तविषापहः ।
योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥३०॥

अर्थ–शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक और वसु ए संस्कृत नाम। हिं. वृहद्बोलसिरी, बं. पद्मवक, गु. मोठी बोलसिरी। गुण। अनुष्ण, कटु, तिक्त, कफपित्तनाशक और विषघ्न। प्रयोग। योनिशूल, तृषा, दाह, कुष्ठ, सूजन और रक्तदोष इनपर देना चाहिये।

कदम (कदंब.)

कदंबःप्रियकोनीपोवृत्तपुष्पोहलिप्रियः ॥
कदंबोमधुरःशीतोकषायोलवणोगुरुः ॥
सरोविष्टंभकृद्रूक्षःकफस्तन्यानिलप्रदः ॥

अर्थ–कदंब, प्रियक, नीप, वृत्तपुष्प और हलिप्रिय, हिं. कदम, कदंब, म. राजकदम, क. कडउ, तै. कदंब चेट्टु, ला. एंथोसि फालस्केबंवा। गुण। मधुर, शीतल, कषेला, निमकीनरसयुक्त, भारी,

दस्तावर, विष्टंभी, रूक्ष, कफवर्द्धक, स्तनोंमें दूध प्रगटकर्त्ता और वातकर्त्ता है ।

कुजा (कूब्जक.)

कुब्जकोभद्रतरणिर्बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः ॥
महासहाकंटकाढ्यानीलालिकुलसंकुला ३२
कुब्जकःसुरभिःस्वादुःकषायानुरसःसरः ॥
त्रिदोषशमनोवृष्यःशीतहर्त्ताचसस्मृतः ॥

अर्थ–कुब्जक, भद्रतरणी, बृहत्पुष्प, अतिकेसर, महासहा, कण्टकाढ्या, नीला और अलिसंकुला ए सं. नाम है । हिं. कूजा, गु. कुंजडो । गुण । सुगंधित, स्वादु, किंचित्कषाय रस, दस्तावर, त्रिदोषशांतिकारी, बलकारी और शीतहर्त्ता ।

मल्लिका.

मल्लिकामदयंतीचशीतभीरुश्चभूपदी ॥
मल्लिकोष्णालघुर्वृष्यातिक्ताचकटुकाहरेत् ॥
वातपित्तास्यदृग्व्याधीकुष्ठारुचिविषव्रणान्

अर्थ–मल्लिका, मदयंती, शीतभीरु और भूपदी ए सं. नाम, गु. मोगरा । गुण । उष्ण, हलकी, बलकारक, कडवी और चरपरी । इसके द्वारा वादी, पित्त, मुखरोग, नेत्ररोग, कोढ, अरुचि, विष और व्रण नष्ट होय ।

माधवी.

माधवीस्याद्वासंतीपुंड्रकोमंडकोऽपिच ॥
अतिमुक्तोविमुक्तश्चकामुकोभ्रमरोत्सवः ॥
माधवीमधुराशीतालघ्वीदोषत्रयापहा ॥

अर्थ–माधवी, वासंती, पुंड्रक, मंडक, अतिमुक्त, विमुक्त, कामुक और भ्रमरोत्सव । हिं. माधवी, का. इंद्रगोवे । गुण । माधवी-मधुर, शीतल, हलकी और त्रिदोषनाशक ।

केवरा–सुवर्णकेतकी.

केतकःसूचिकापुष्पोजंबुकःक्रकचच्छदः ॥
सुवर्णकेतकीत्वन्यालघुपुष्पासुगंधिनी ॥३६॥
केतकःकटुकःस्वादुर्लघुस्तिक्तःकफापहः ॥
उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥

अर्थ–केतक, सूचिकापुष्प, जंबुक, क्रकचच्छद ए केवरेके नाम हैं । और सुवर्णकेतकी, लघुपुष्प और सुगंधिनी ए केतकीके नाम हैं । गुण । केवडा–कटु, स्वादु, लघु, तिक्त और कफनाशक । तथा केतकी गरम, कडवी और नेत्रोंको हितकारी ।

किंकिरात.

किंकिरातोहेमगौरःपीतकःपीतभद्रकः ॥
किंकिरातोहिमस्तिक्तःकषायश्चहरेदसौ ॥
कफपित्तपिपासास्रदाहशोषवमिक्रमीन् ॥

अर्थ–किंकिरात, हेमगौर, पीतक और पीतभद्रक, यह बंगाले आदिमें प्रसिद्ध है । यह लाल पियावांसेकाही भेद है । गु. राम बावल । गुण । शीतल, तिक्त, कषैला । यह कफ, पित्त, प्यास, रक्तदोष, दाह, शोष, बमन और कृमिरोगको दूर करे ।

कर्णिकार.

कर्णिकारःपरिव्याधःपादपोत्पलइत्यपि ॥
कर्णिकारःकटुस्तिक्तस्तुवरःशोधनोलघुः ॥
रंजनःसुखदःशोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ॥

अर्थ–कर्णिकार, परिव्याध और पादपोत्पल ए सं. नाम, हिं. कनेर, रा. कंडीर, बं. छोटासोंदाल, म. कणेर, क. वाकणलिंगे, तै. कनेरचेट्टु, फा. खरजेहरा, अ. सुमुल, ला. नीरीयं ओडोरम् । गुण । कटु, तिक्त, कषाय, शोधन (विरेचक और वमनकारक), लघु, रंजन, सुखप्रद । प्रयोग । सूजन, कफ, रक्तदोष, व्रण और कोढको दूर करे । *

---

* मद्रासका डा० बीडी और डा० शोटे—इन्होंने इस वृक्षकी कडवी और जुलाब लानेवाली छालको वारंवार आनेवाले ज्वरपर अनेकवार अनुभव कराहै । तथा उसका परिणाम संतोषकारक हुआहै । वह ताजी और सूखी छाल २॥ रुपेभर ले १२॥ रुपेभर दारूमें ८ दिनतक भीगी रहनेदे, फिर कपडेमें छान लेय, इस छनेहुए अर्कके १०–१५ बूंदकी मात्रासे दिनमें ३ समय देवे. यह अर्क ३०–६०

अशोक.

अशोकोहेमपुष्पश्चवंजुलस्ताम्रपल्लवः ॥
कंकेलिःपिंडपुष्पश्चगंधपुष्पोनटस्तथा ॥ ४०॥
अशोकःशीतलस्तिक्तोग्राहीवर्ण्यःकषायकः
दोषापचीतृषादाहकृमिशोषविषास्रजित् ॥

अर्थ–अशोक, हेमपुष्प, वंजुल, ताम्रपल्लव, कंकेलि, पिंडपुष्प, गंधपुष्प और नट ए अशोकपुष्पके नाम है । म. अरुपाळ, गु. आसोपालव । गुण । शीतल, तिक्त, ग्राही, वर्णकर्त्ता, कषेला है । यह वातादिदोष, अपची, तृषा, दाह, कृमिरोग, शोष, विष और रुधिरके विकार इनको दूर करे ।

बाणपुष्प.

अम्लातोऽम्लाटनःप्रोक्तस्तथाम्लातकइत्यपि
कुरंटकोवर्णपुष्पःसपबोक्तोमहासहः ॥
अम्लाटनःकषायोष्णस्निग्धःस्वादुश्चतिक्तक

अर्थ–अम्लात, अम्लाटन, अम्लातक, कुरंटक, वर्णपुष्प और महासह, यह गौडादिदेशमें बाणपुष्प इस नामसें प्रसिद्ध है और कोई बंगदेशी इसको आयला कहतेहैं । गुण । कषाय, उष्ण, स्निग्ध, स्वादु और तिक्त (कडवा) ।

कटसरैया.

सैरेयकःश्वेतपुष्पःसैरेयःकटसारिका ॥
सहाचरःसहचरःसचभिंद्यपिकथ्यते ॥
कुरंटकोत्रपीतेस्याद्रक्तेकुरवकःस्मृतः ॥
नीलेबाणाद्वयोक्तोदासीआर्त्तगलश्चसः ॥
सैरेयःकुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः
तिक्तोष्णोमधुरोऽनम्लःसुस्निग्धःकेशरंजनः

अर्थ–सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर और भिन्दी ए सं., हिं. कटसरैया, पियाबांसा, बं. झिंटी, झांटी, म. कोरांटा, का. गोरंटे, तै. गोरँटु कहतेहैं । कटसरैया तीन प्रकारकी है–पीलेरंगका कुरंटक, लालरंगका कुरबक और नीलवर्णकी कटशैरयाको दास और आर्त्तगल कहते हैं । गुण । तिक्त, उष्ण, मधुर, दांतोंको हितकरता, सुस्निग्ध और केशरंजक (बालोंको रंगनेवाला) । प्रयोग । कोढ, बादी, रुधिरके दोष, कफ, खुजली और विष नष्ट होय । समग्र अंग लेना । मात्रा २ मासे.

कुंद.

कुंदंतुकथितंमाध्यंसदापुष्पंचतत्स्मृतम् ॥
कुंदंशीतंलघुश्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहृत् ॥

अर्थ–कुन्द, माध्य और सदापुष्प, हिं. कुंद, का. सुरगि, गु. जेळर । गुण । शीतळ और हलका । इसके सेवन करनेसें शिरोरोग, विष और पित्त नष्ट होय ।

मुचुकुंद.

मुचुकुंदःक्षत्रवृक्षश्चित्रकःप्रतिविष्णुकः ॥
मुचुकुंदःशिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः ॥

अर्थ–मुचुकुंद, क्षत्रवृक्ष, चित्रक और प्रतिविष्णुक । गुण । शिरपीडा, रक्तपित्त और विष नष्ट करे । *

दूधकी बडी मात्रामें देनेसे जुलाब और उलटी होतीहै, तथा इससेभी अधिक मात्रा देनेसे जहरका असर करेहै ।

डा० शोर्ट—कहताहै कि बीजकी मिंगीका तेल देनेसे उलटी होतीहै, और जुलाब होताहै । वृक्षसें निकलाहुआ दूध अत्यत जहरीला है, बीजकी मिंगी बहुत कडवी होतीहै, इस कटसरैयाके खानेसे जीभके ऊपर गरमी मालूम होतीहै ।

आयुर्वेदके ग्रंथमें—कटसरैयाको कुव्वतदेनेवाला, पाचनशक्तिका सुधारनेवाला और इसके बीजोंको जलमें मिलायदे इस चिकने पानीके पीनेसे खांसी दूर होतीहै ।

मुसलमानी ग्रंथमें—इसके बीजको बहुत गरम, मूत्रवर्धक और पुरुषार्थ बढानेवाला मानाहै, तथा तिल्लीकी गांठ दूर करनेको और सरदीसे प्रगट बिमारियोंपर देनेकी अनुमत देतेहैं ।

* वाग्भटमें—लिखताहै कि इस वृक्षके फूलकी कली चांवलके धूममें पीसके मस्तकपर लेप करनेसे आधाशीशी दूर होय ।

तिलक.

तिलकःक्षुरकःश्रीमान् पुरुषश्छिन्नपुष्पकः ॥
तिलकःकटुकःपाकेरसेचोष्णोरसायनः ॥
कफकुष्ठकृमीन्बस्तिमुखदंतगदान्हरेत् ॥

अर्थ-तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, सुपुष्प और छत्रपुष्पक, यह तिलके फूलके समान तिलक नामसेंही प्रसिद्ध है। गुण। यह स्वादमें और पाकमें कटु, गरम और रसायन। प्रयोग। कफवृद्धि, कोढ, कृमि, बस्तिपीडा, मुखरोग और दांतरोगको हरण करे।

बंधूक.

बंधूकोबंधुजीवश्चरक्तोमाध्याह्निकोऽपिच ॥
बंधूकः कफकृद्ग्राहीवातपित्तहरोलघुः ॥

अर्थ-बंधूक, बंधुजीव, रक्त और माध्याह्निक, ए संस्कृत। हिं. गेजुनियां, दुपहरिया, म. दुपरी, गु. बपोरियो, अं. पेरोट पिटिस्-फिनिश्या। गुण। कफनाशक, ग्राही, वायुपित्तनाशक और लघु।

जपा. ओडहुल. सांखी.

औड्रपुष्पंजपाचाथत्रिसंध्यासारुणासिता ॥
जपासंग्राहिणीकेश्यात्रिसंध्याकफवातजित्

अर्थ-औड्रपुष्पा, जपा ए गुडहरके नाम तथा त्रिसंध्या, अरुणा और सिता, सांखीके नाम। म. जासवंद, गु. जासुद, अं. शुफ्लावर। गुण। गुडहरसंग्राही, बालोंको हित और सांखी कफवातको जीतेहै।

सेंदूरिया.

सिंदूरीरक्तबीजाचरक्तपुष्पासुकोमला ॥
सिंदुरीविषपित्तास्रतृष्णावांतिहरीहिमा ॥

अर्थ-सिंदूरी, रक्तबीजा, रक्तपुष्पा और सुकोमला, ए संस्कृत नाम। हिं. सिंदूरिया, जाफर, अं. आरनाटीं, ला. विक्साओरेमाना। गुण। शीतल, और विषघ्न तथा सेवन करनेसें रक्तपित्त, तृषा और वमनको निवारण करै।

अगस्तिया.

अथागस्त्योवंगसेनोमुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ॥
अगस्तिःपित्तकफजिच्चातुर्थकहरोहिमः ॥
रूक्षोवातकरस्तिक्तःप्रतिश्यायनिवारणः ॥

अर्थ-अगस्त्य, वंगसेन, मुनिपुष्प और मुनिद्रुम, हिं. अगस्तिया, हथिया, बं: वक, म. हदगा, गु. अगथियों, का. अगसेयमरनु, तै. अनीसे, ता. अगति, ला. लार्जफ्लावर्डएगेटी, ई. ग्रांडीफ्लोरा। स्वरूप। यह वृक्ष लंबा होताहै और इसपर पत्तेवाली वेल अधिक चढती हैं। पत्ते इमलीके समान छोटे होतेहैं। फूल सपेद, पीला, लाल और काला इस प्रकार चार जातका होताहै। वहकेसूलाके फूलके समान बांका और उत्तम होता है। इसकी लंबी, पतली और चपटी फली होती है। चित्र नंबर २८ का देखो। गुण। शीतल, रूक्ष, वातकर्त्ता और कडवा। इसके सेवनसें पित्त, कफ, चातुर्थिकज्वर और सरेकमा दूर हो। *

तुलसी सपेद और काली.

तुलसीसुरसाग्राम्यासुलभाबहुमंजरी ॥
अपेतराक्षसीगौरीशूलघ्नीदेवदुंदुभिः ॥५४॥
तुलसीकटुकातिक्ताहृद्योष्णादाहपित्तकृत् ॥
दीपनीकुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥
शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणैस्तुल्याप्रकीर्तिता ॥

अर्थ-तुलसी, सुरसा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमंजरी, अपेतराक्षसी, गौरी, शूलघ्नी और देवदुंदुभी ए तुलसीके पर्याय शब्द हे। म. तुलस, फा. रेहान, ला. ओसिमंसालवम् और सब भाषाओंमें प्राय इसी नामसें प्रसिद्ध है। गुण। कटु, तिक्त, हृद्य, उष्ण, दाहकारी, पित्तजनक और दीपन। प्रयोग। कोढ,

* मीर मुहंमद हुसेन—लिखताहै कि सरेकमां अथवा मस्तक दूखता होय तो इसके पत्तोंका रस निकाल नाकमें बूंद टपकावे तो छींक आनकर नाकमेसे पानी निकल जाय और मस्तकका भारीपन दूर होय। फूलका साग करके खातेहैं। छाल पाचनशक्ति बढानेको दीनी जातीहै। तथा पत्तोंको गरम जलमें भिगोय देवे इस पानीके पीनेसे जुलाब लगताहै। आंखमें जाला पड गया होयतो अगस्तियाके फूलका रस आंखमें डालनेसे फायदा होताहै।

मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, पसवाडेकी पीडा, कफ और वायु नष्ट होय । दोनों तुलसियोंके गुण समान हैं । इसके पत्तेका स्वरस लेना । मात्रा ३ मासेकी है ।

मरुआ.

मारुतोऽसौमरुवकोमरुन्मरुरपिस्मृतः ॥
फणीफणिज्झकश्चापिप्रस्थपुष्पःसमीरणः ॥
मरुदग्निप्रदोहृद्यस्तीक्ष्णोष्णःपित्तलोलघुः ॥
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥
कटुपाकरसोरुच्यस्तिक्तोरूक्षःसुगंधिकः ॥

अर्थ-मारुत, मरुवक, मरुत्, मरु, फणी, फणिज्झक, प्रस्थपुष्प और समीरण ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** मरुआ, **म.** सबजा, मर्वा, **तै.** इन्द्रजाड । **गुण** । अग्निवर्द्धक, हृद्य, तीक्ष्णोष्ण, पित्तकर्त्ता, लघु, **पाक**के समय कटुरस, रोचक, तिक्त, रूक्ष और सुगंधित । **प्रयोग** । इसके द्वारा कफ वादि, कुष्ठ, कृमि और विच्छुआदिका विष नष्ट होय ।

दवना.

उक्तोदमनकोदांतोमुनिपुत्रस्तपोधनः ॥
गंधोत्कटोब्रह्मजटोविनीतःकलपत्रकः ॥५७॥
दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगंधिकः ॥
ग्रहणाद्विषकुष्ठास्रक्लेदकंडूत्रिदोषजित्॥५८॥

अर्थ-दमनक, दांत, मुनिपुत्र, तपोधन, गंधोत्कट, विनीत और कलपत्रक, ए **संस्कृत**, **हिं.** दवना, दौना, **म.** दवणा, **क.** चित्तरेटे, **गु.** डमरो **तै.** साविन्रेचट्टू, **अं.** वर्मवुड । **गुण** । कषेला, कडवा हृदयको हितकारी, बलकारक और सुगंधित । **प्रयोग** । सेवन करनेसें विषविकार, कोढ, रुधिरविकार, क्लेद, खुजली और त्रिदोषको दूर करे ।

वर्बरी.

वर्बरीतुवरीतुंगीखरपुष्पाजगंधिका ॥
पर्णाशस्तत्रकृष्णेतुकठिल्लककुठेरकौ ॥५९॥
तत्रशुक्लेऽर्जकःप्रोक्तोवटपत्रस्ततोऽपरः ॥
वर्वरीत्रितयंरूक्षंशीतंकटुविदाहिच ॥ ६० ॥
तीक्ष्णंरुचिकरंहृद्यंदीपनंलघुपाकिच ॥
पित्तलंकफवातास्रकंडूकृमिविषापहम् ॥६१॥

अर्थ-वर्वरी, तुवरी, तुंगी, खरपुष्प, अजगंधिका और पर्णाश, यदि यह कालेरंगकी होय तो **कठिल्लक** और **कुठेरक** कहतेहैं । और सपेद रंगको **अर्जक** कहते हैं । और दूसरी जातिकेको **वटपत्र** कहतेहै । **सं. हिं.** वर्वरी, वनतुलसी, **म.** आजवला, पांढरा आजवला । ए तीनो प्रकारकी **वर्वरी**-रूक्ष, शीतल, कटु, विदाही, तीक्ष्ण, रुचिकारी, हृद्य, दीपन, **पक**नेमें हलकी, पित्तकर्त्ता कफनाशक और विषघ्न । इसके सेवन करनेसे वातरक्त, खुजली, कृमि ए नष्ट होय ।

॥ इति श्रीअभिनवनिघंटौ पुष्पादिवर्गः ॥

अथ वटादिवर्गः ॥

वटोरक्तफलःशृंगीन्यग्रोधःस्कंधजोध्रुवः ॥
क्षीरीवैश्रवणावासोबहुपादोवनस्पतिः॥ १ ॥
वटःशीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापहः ॥
वर्ण्योविसर्पदाहघ्नःकषायोयोनिदोषहृत्॥२॥

अर्थ-वट, रक्तफल, शृंगी, न्यग्रोध, स्कंधज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद और वनस्पति, ए. **संस्कृत** नाम। **हिं.** वड, **बं.** वट, **का.** आल, उड्डी, वोरू, **ता. तै.** मर्रील चेट्टु, **फा.** दरख्ते रेश **अं.** बनियंट्री । एक **नदीवट** होता है जिसको वटी और दुजावट्टु, तथा **का.** गालिआल कहतेहै । **गुण** । शीतल, भारी, ग्राही, कषेला, कफ और पित्तको दूर करे । देहका वर्ण उजला करे। **प्रयोग**। व्रणरोग, विसर्प और दाह इनको दूर करे । **नदीवटके गुण**। कषेली, मधुर, शीतल, पित्त, दाह, तृषा, श्रम, श्वास, वमन इनको दूर करे ।

पीपर.

बोधिद्रुःपिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशनः ॥
पिप्पलोदुर्जरःशीतःपित्तश्लेष्मव्रणास्रजित्
गुरुस्तुवरकोरूक्षोवर्ण्योयोनिविशोधनः ॥३॥

अर्थ-बोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** पीपल[र], **म.** पिंपल, **का.** अरलि । एक **पीपली** होतीहै उसके पत्ते छोटे होतेहै । **म.** अश्वत्थी, **का.** हेणअरलि । **तै.** राईचेट्टु,

फा. दरख्तलजा, अं. पोप्लर लीव्हड, फिगट्री । गुण । दुर्जर, शीतल, भारी, कषेला, रूक्ष, वर्णप्रकाशक, योनिशोधन कर्त्ता । पित्त, कफ, व्रण और रुधिरके विकारको दूर करे है । पीपलके गुण । मधुर, कषेला, रक्तपित्त, विष, दाहको दूर करे और गर्भिणीको हितकारी है ।

पारस पीपर.

पारीषोऽन्यःपलाशश्चकपिचूतः कमंडलः ॥
गर्दभांडःकंदरालःकपीतनसुपार्श्वकः ॥ ४ ॥
पारीषोदुर्जरःस्निग्धःकृमिशुक्रकफप्रदः ॥
फलेऽम्लोमधुरोमूलेकषायस्वादुमज्जकः ५

अर्थ-अब पीपरका भेद पारसपीपल है, उसके पर्याय कहते है-पारीष, पलाश, कपिचूत, कमंडल, गर्दभांड, कंदराल, कपीतन और सुपार्श्वक, हिं. पारसपीपल, गजहंडु, म. भेंड, का. वंगरली, ता. पोरिश। गुण । दुर्जर (पचे नहीं), स्निग्ध, कृमि, शुक्र और कफको करे । इसका फल खट्टा है और जडमें मीठा, तथा इसकी मज्जामे कषेलापन और मिठास है ।

वेलिया पीपल.

नंदीवृक्षोऽश्वत्थभेदःप्ररोहीगजपादपः ॥
स्थालीवृक्षःक्षयतरुःक्षीरीचस्याद्वनस्पतिः ॥
नंदीवृक्षोलघुःस्वादुःतिक्तस्तुवरउष्णकः ॥
कटुपाकरसोग्राहीविषपित्तकफास्रजित् ॥७

अर्थ-नंदीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी और वनस्पति ए संस्कृत नाम । हिं. वेलिया पीपल, तै. वट्टी चेट्टु । गुण । हलका, स्वादु, कडवा, कषेला, गरम, पकनेमें कटु, ग्राही, विषविकार, कफ और रुधिरके विकारको दूर करे । *

गूलर.

उदुंबरोजंतुफलोयज्ञांगोहेमदुग्धकः ॥
उदुंबरोहिमोरूक्षोगुरुःपित्तकफास्रजित् ॥
मधुरस्तुवरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः ॥ ८ ॥

अर्थ-उदुंबर, जंतुफल, यज्ञांग और हेमदुग्धक ए संस्कृत । हिं. गूलर-रा, ऊंमरो, बं. यज्ञडुमुर, म. उंबर, का. अत्ती, तै. वाडुचेट्टु, अ. जमीज, फा. अंजीरे आदम, ला. फाइकस् ग्लोमिरेटा, अं. केगट्री keg tree। एक नदी उंबर अर्थात् नदीका गूलर होताहै । इसके पत्ते और फल छोटे है । म. नदी उंबर, का. नारेअत्ति । गुण । शीतल, रूक्ष, भारी, मधुर, कषेला, वर्णकारक, कफ, पित्त और रुधिरके विकारोंको दूर करे । तथा व्रणको शोधन और रोपण करे । नदीका गूलर-रस वीर्य विपाकमें गूलरकी अपेक्षा कुछ न्यून गुणवाला है । गूलरकी त्वचाके गुण । शीतल, कषेली, व्रणनाशक, गर्भवतीके गर्भकी रक्षा करे और स्त्रीके स्तनोंमें दूध बढाती है ।

कठूमर.

काकोदुंबरिकाफल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥
मलयूस्तम्भकृत्तिक्ताशीतलातुवराजयेत् ॥
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपांडुर्शकामलाः॥ ९ ॥

अर्थ-काकोदुंबरिका, फल्गु, मलयू और जघनेफला, ए संस्कृत नाम, हिं. कठूमर, बं. डुमुर, म. कालाउंबर, का. काअत्ति । गुण । स्तंभनकर्त्ता, कडवी, शीतल, कषेली । प्रयोग । कफपित्तके विकार, व्रण, सपेद कुष्ठ, पांडुरोग, बवासीर और कामलाको नष्ट करे ।

पाक [ख]र.

प्लक्षोजटीपर्करीचपर्कटीचस्त्रियामपि ॥
प्लक्षःकषायःशिशिरोव्रणयोनिगदापहः
दाहपित्तकफास्रघ्नःशोथहारक्तपित्तहृत् ॥

अर्थ-प्लक्ष, जटी, पर्कटी और पर्करी ए संस्कृत नाम । हिं. पाक [ख]र, बं. पाकुड, म. पिंपरी, गु. पीपर्य, का. बसुरि, ला. फाईकस विरेन्स । एक छोटी पाखर होती है । उसके पत्ते बडीपाखरसें कुछ छोटे होतेहैं । का. बसुरी कहतेहैं । दोनोंके गुण । कषेली, शीतल । प्रयोग । व्रण, योनिके

* मि० वुड्--कहताहै कि इस वृक्षकी लकडी बहुत दृढ और बरीक दानेकी होनेसे, गाडी बग्घी बनानेमें तथा चरखपर चढायके चकई लट्टू आदि खिलौने बनानेमें परमोपयोगी है । जडोंमेसे चिकना पिलाई लिये रंग निकलताहै । उसको देशी वैद्य त्वचारोग, खुजली आदिमें लगातेहैं ।

रोग, दाह, पित्त, कफ, और रुधिरके विकार, सूजन और रक्तपित्तको हरण करे ।

शिरीष.

शिरीषोमण्डिलोभंडीभंडीरश्चकपीतनः ॥
शुकपुष्पःशुकतरुर्मृदुपुष्पःशुकप्रियः ॥ ११ ॥
शिरीषोमधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्चतुवरोलघुः ॥
दोषशोथविसर्पघ्नःकासव्रणविषापहः ॥ १२ ॥

अर्थ-शिरीष, मंडिल, भंडी, भंडीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प और शुकप्रिय ए संस्कृत नाम । हिं. सिरस, म. सिरसी, तै. दिरसन्, फा. दरख्तेजकरिया, अं. सुलतानुल असजार, ला. आल्बीझियालेबेक, बं. शिरीष । सिरसका फूल हरे-रंगका बहुतही नरम होताहै और प्रायः तोता पक्षी इसी वृक्षमें अपना घोंसुआ बनाताहै । गुण । मधुर, अनुष्ण, कडवा, कषेला, हलका । प्रयोग । वाता-दिदोष, सूजन, विसर्प, खांसी, व्रण और विषविका-रोंको नष्ट करे है ।

क्षीरवृक्ष और पंचवल्कल.

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः ॥
पंचैतेक्षीरिणोवृक्षास्तेषांत्वक्पंचवल्कलम् ॥
क्षीरवृक्षाहिमावर्ण्यायोनिरोगव्रणापहाः ॥
रूक्षाःकषायामेदोघ्नाविसर्पामयनाशनाः ॥
शोथपित्तकफास्रघ्नाःस्तन्याभग्नास्थियोजका
त्वक्पंचकंहिमंग्राहिव्रणशोथविसर्पजित् ॥
तेषांपत्रंहिमंग्राहिकफवातास्रनुल्लघु ॥
विष्टम्भाध्मानजित्तिक्तंकषायंलघुलेखनम् ॥

अर्थ-वड, गूलर, पीपल, पारिसपीपल और पाखर, ए पांच क्षीरीवृक्ष अर्थात् दूधवाले वृक्ष हैं । इन पांचोकी छाल (वकल) को पंचवल्कल कहते-हैं । गुण । क्षीरवृक्ष—शीतल, वर्णकर्त्ता, रूखे, कषेले, स्त्रीके स्तनोंमें दूध बढानेवाले, टूटी हड्डी आदिको जोडनेवाले हैं । प्रयोग । मेदरोग, विसर्प, सूजन, पित्त, कफ, रुधिरविकार, योनिरोग और व्रणरोग इनको दूर करतेहैं । पंचवल्कल—शीतल, ग्राही, व्रण, सूजन और विसर्पको दूर करे । इन पांचों-वृक्षोंके पत्ते शीतल, ग्राही, कषेले, हलके, कडवे, लेखन, कफ, वात, रुधिरविकार, विष्टंभ और अफ-राको नष्ट करें ।

शाल (सांखु).

शालस्तुसर्जकार्श्याश्वकर्णिकाःसस्यसंवरः
अश्वकर्णःकषायःस्याद्व्रणस्वेदकफक्रमीन्
व्रध्नविद्रधिबाधिर्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥

अर्थ-शाल, सर्जक, [कार्श्य] अश्वकर्णिका, सस्यसंवर ए संस्कृत नाम, हिं. सांखु, साल, सागोन कहतेहैं । म. शालवृण, गु. मोटागजना झाड, तै. एपचेट्टु, का. सजर दामर, ता. कुंगिलियम्, ला. शोरियारोबष्ट । गुण । अश्वकर्ण कषेला है, तथा व्रण स्वेद, कफ, कृमि, एवं वद्ररोग, विद्रधि, वेहरापना, योनिरोग और कानके रोगोंको दूर करे ।

शालभेद (सर्जक).

सर्जकोजककर्णःस्याच्छालोमरिचपत्रकः ॥
अजकर्णःकटुस्तिक्तःकषायोष्णोव्यपोहति ॥
कफपांडुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् ॥

अर्थ-सर्जक, अजकर्ण, शाल और मरिचपत्रक यह शालका भेद है । बं. झाजीशाल । गुण । अजकर्ण-कटु, तिक्त, कषाय, गरम । प्रयोग । कफ, पांडु, कर्णके रोग, प्रमेह, कोढ, विष और व्रणरोग इनको दूर करे ।

शालई.

शल्लकीगजभक्ष्याचसुवहासुरभीरसा ॥
महेरुणाकुंदुरुकीवल्लकीचबहुस्रवा ॥ १९ ॥
शल्लकीतुवराशीतापित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥
रक्तपित्तव्रणहरीपुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ २० ॥

अर्थ-शल्लकी, गजभक्ष्या, सुवहा, सुरभी, रसा, महेरुणा, कुंदुरुकी, वल्लकी और बहुस्रवा ए संस्कृत नाम । हिं. शालई, म. सालधीवृक्ष, गु. शालेडु, धूपेडो, का. तरीकु, ता. कुंलि, ला. बोस्वेलिया थेरीफेरा । गुण । कषेली, शीतल और पुष्टि करेहै । प्रयोग । पित्त, कफ, अतिसार, रक्तपित्त और व्रणको हरण करेहै ।

शीशव और कपिलवर्णशीशव.

शिंशिपापिच्छिलाश्यामाकृष्णसाराचसागु-
रुः ॥
कपिलासैवमुनिभिर्भस्मगर्भेतिकीर्तिता ॥२१
शिंशिपाकटुकातिक्ताकषायाशोषहारिणी ॥
उष्णवीर्याहरेन्मेदःकुष्ठश्वित्रवमिकृमीन् ॥
बस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासान्गर्भपातिनी ॥

अर्थ–शिंशिपा, पिच्छिला, श्यामा और कृष्णसारा, यह भारीहै। एक और भूरेरंगकी सीसोंको भस्मगर्भा कहतेहै। बं. शिशु, म. शिसव, तै. चेट्टु, ई. ब्लाकूवुड्, ला. डालवरजिया लेटिफोलिया। **गुण। सीसों**–चरपरी, कड़वी, कषैली, शोषहरणकर्त्ता, उष्णवीर्य। **प्रयोग।** मेदरोग, कोढ, चित्रकुष्ठ, वमन, कृमि, बस्तिके विकार, व्रण, दाह, रुधिरविकार और कफके विकारोंको दूर करे तथा गर्भको गिरातीहै।

कोह.

ककुभोर्जुननामाख्योनदीसर्जश्चकीर्तितः
इंद्रद्रुर्वीरवृक्षश्चवीरश्चधवलःस्मृतः ॥ २३ ॥
ककुभःशीतलोहृद्यःक्षतक्षयविषास्रजित् ॥
मेदोमेहव्रणान्हंतितुवरःकफपित्तहृत् ॥ २४

अर्थ–ककुभ, अर्जुननाम, नदीसर्ज, इन्द्रद्रु, वीरवृक्ष, वीर और धवल, ए संस्कृत नाम, हिं. कोह, बं. अर्जुन, म. अर्जुनसादडा, आपटा, तै. मद्दीचेट्टु, का. तारिमती, ला. सर्क्यूलिया मुरेन्से, कों. श्वेतवर्णवृक्ष, सारडोळ, गु. आसोदरो, क. अश्मर। **गुण। कोह**–शीतल, कषैला, हृदयको प्रिय, घाव, क्षय, विष और रुधिरविकारको दूर करे। **प्रयोग।** मेदरोग, प्रमेह, व्रणरोग और कफपित्तको दूर करे।

विजेसार.

बीजकःपीतसारश्चपीतशालकइत्यपि ॥
बंधूकपुष्पःप्रियकःसर्जकश्चासनःस्मृतः ॥
बीजकःकुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदकृमीन् ॥
हंतिश्लेष्मास्रपित्तंचत्वच्यःकेश्योरसायनः ॥

अर्थ–बीजक, पीतसार, पीतशालक, बंधूकपुष्प, प्रियक, सर्जक और असन ए संस्कृत नाम, हिं. विजेसार, आसन, बं. पियाल, म. बिबला, कों. असाणा, गु. बीयो, का. कमरकस, ला. टेरोकार्पस, मार्सुपियम्, तै. मद्दी, फा. कमरकस। **गुण। विजेसार**–कफ, रक्तपित्त इनको दूर करे, त्वचाको सुधारे बालोंको बढावे और रसायन है। **प्रयोग।** कोढ, विसर्प, श्वित्रकुष्ठ, प्रमेह, गुदाके रोग, कृमिरोग, इनको दूर करे।

खैर.

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदंतधावनः ॥
कंटकीबालपत्रश्चबहुशल्यश्चयज्ञियः ॥ २७ ॥
खदिरःशीतलोदंत्यःकंडूकासारुचिप्रणुत् ॥
तिक्तःकषायोमेदोघ्नःकृमिमेहज्वरव्रणान् ॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपांडुकुष्ठकफान्हरेत् ॥

अर्थ–खदिर, रक्तसार, गायत्री, दंतधावन, कंटकी, बालपत्र, बहुशल्य और यज्ञिक ए संस्कृतनाम, हिं. खैर, लालकत्था, म. कात, गु. खेरियो, क. कैंपिन खैर, तै. चवासु। **गुण। खैर**–शीतल, दाँतोंको हितकारी, कड़वा और कषेला है। **प्रयोग।** खुजली, खांसी, अरुचि, मेदरोग, कृमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, सपेदकोढ, आमवात, रक्तपित्त, पांडुरोग, कोढ और कफके विकारोंको दूर करे। खैरके बड़े २ वृक्ष होते है। उनमें छोटे २ और टेढे २ कांटे होते है। इसकी लकडीके यज्ञमें श्रुवा, श्रुची बनाय उनसे होम करते है और इसकी लकडीका कोला दारु (आतिशबाजी) में काम आताहै.*

श्वेतखदिर.

खदिरःश्वेतसारोऽन्यःकदरःसोमवल्कलः ॥
कदरोविषदोवर्ण्योमुखरोगकफास्रजित् ॥

---

* मदनपाल निघंटमें–लिखताहै कि इस वृक्षकी अत्यंत रंगकी लकडी और कच्ची फलियोंमेंसे औंटायके सत्व निकलताहैं, उसीको कत्था कहतेहैं। चिरायतेके पानीमें भिगोय उस पानीमें १०–१२ ग्रेन कत्था डालके बहुत दिनोसे अंतर देकर आनेवाली ज्वरकी बिमारीमें देनेसे बहुत उत्तम असर करताहै। रुधिरके विकारके कारण मसूढोंमेंसे रुधिर निकलता होय तो कत्थेको मसूडेके ऊपर मले, तथा खानेको देनेसे अत्यंत फायदा करताहै।

अर्थ-एक सपेदरंगका खैर होताहै उसके **पर्याय**-कदर, सोमवल्कल, **हिं.** पपरियाकत्थ और इसीको शुद्ध करके खैरसार बनातेहैं। **म.** पांढरा कात, **गु.** खैरियो, **तै.** चंडचेट्टु, **ला.** एकेश्याकेटेच्यु। **गुण।** सपेदकत्था-विशद, वर्ण्य, मुखरोग, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे।

दुर्गंधखदिर.

इरिमेदोविट्खदिरःकालस्कंधोऽरिमेदकः॥
इरिमेदःकषायोष्णोमुखदंतगदास्रजित्॥
हंतिकंडूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान्॥

अर्थ-इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कंध, अरिमेदक, ए **संस्कृत**नाम, **हिं.** दुर्गंध खैर। **गुण।** कषाय, गरम। **प्रयोग।** मुख और दांतके रोग, रुधिरविकार, खुजली, विषके रोग, कफ, कृमि, कुष्ट और विषजन्य व्रणोंको दूर करे।

रोहीतक.

रोहीतकोरोहितकोरोहीदाडिमपुष्पकः॥
रोहीतकःप्लीहघातीरुच्योरक्तप्रसाधनः॥

अर्थ-रोहीतक, रोहितक, रोही और दाडिमपुष्पक ए **संस्कृत**नाम। **हिं.** रोहेडा, **म.** रोहिडा. **का.** यरहुममुत्तलु, **तै.** मुलु मोदक चेट्टु, **ला.** टेकोमाअंडयुलेटा। यह कूटशाल्मलीकाही भेद है। सपेद और लाल फूलके कारण रोहितक दो प्रकारका है। जिसमें लाल फूलवालेको कूटशाल्मली कहतेहैं। **गुण।** **रोहीतक**-प्लीह, तिल्लीके रोगको नष्ट करे, रुचि करे और रुधिरका शोधन करे है।

बबूल.

बब्बूलःकिंकिरातःस्यात्किंकिराटःसपीतकः।
सप्तकथितस्तज्ज्ञैराभाषपदमोदिनी॥
बब्बूलःकफनुद्ग्राहीकुष्ठकृमिविषापहः॥

अर्थ-बब्बूल, किंकिरात, किंकिराट, सपीतक, और आभाषपदमोदिनी, ए **संस्कृत**नाम। **हिं.** बबूर, कीकर, **रा.** बंवल, **बं.** बावला, **म.** बांभूल, **गु.** बावल, **क.** पुलई, **तै.** बलवंत्तडु, **औ.** गुइडा, **अं.** एकश्याट्री। एक बबूलका भेद जालबब्बूल होता है। **गुण।** बबूर कफ नष्ट करे, ग्राही, कोढ, कृमि रोग और विषविकारोंको नष्ट करे। **बबूरके गोंदके गुण।** संग्राही, शीतवीर्य, पित्तघ्न, वातनाशक, भग्नसंधायक और रुधिरके स्रावको बंद करे। **प्रयोग।**

डा० एम्. रोसना—अनुभवके तरीके बहुत दुष्ट नासूर और कोढके दागोंपर कत्थेको बारीक पीस अन्य पदार्थोंके साथ मल्हममें मिलायके लगानेसे घावको जल्दी भर लावे।

चरक पुस्तकमें-खैरकी छालको कुष्टनाशक वर्णन कराहै, तथा **सुश्रुत**में उसको मेदहर, कुष्टनाशक और मेदशोषणकर्त्ता मानाहै। उन पुस्तकोंमें कत्थेको स्तंभक मानाहै। पत्तोंका क्वाथ करके देनेसे मूत्रस्थानके रोग नष्ट होतेहैं, और रुधिर शुद्ध होताहै। **हिंदुस्थानी मनुष्य** कत्थेको शीतल, ग्राही और पाचक गिनतेहैं। तथा गलेके भीतरके रोगोंमें मुखकी गरमी, फूले मसूडे, खांसी, दस्त और शूलके रोगोंमें उपयोगी मानतेहैं। पुराने नासूर, फोडे और गांठपर इसको पीसकर लेप करतेहैं। कत्थेको और दवाओंके साथ मिलायके देनेके वास्ते **शार्ङ्गधर**, **चक्रदत्त** और **भैषज्यरत्नावली** आदि ग्रंथोंमें बहुतसे योग वर्णन करेहै।

मुसलमानी ग्रंथोंमें—भी ऊपर कहेहुए सब गुण कत्थेमें मानेहै। खैरकी लकडीके प्राचीन गर्भमेंसे छोटे छोटे टुकडे और लकडीके लाल टुकडे मिलेहुए आतेहैं, उनको **खैरसार**के नामसे कहतेहैं। उस खैरसारका स्वाद मीठा और कषैला होताहै। तथा देशी दवाओंमें उसको छातीके रोगोंमें अत्यंत वेश कीमती माना गयाहै। इससे कफ जुदा होकर निकलताहै। कत्थ और हीराबोल ए दोनोंके योगको **काथबोल** कहतेहैं। तथा वह प्रसूत होनेकेबाद स्त्रियोंको कुव्वत आनेके वास्ते तथा स्तनमें दूध बढानेके लिये दिया जायहै।

रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदरको दूर करे । बं. गोंदको गंद कहतेहै । *

रीठा.

अरिष्टकस्तुमांगल्यःकृष्णवर्णोऽर्थसाधनः ॥
रक्तबीजःपीतफेनःफेनिलोगर्भपातनः ॥ ३३
अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नोग्रहजिद्गर्भपातनः ॥

अर्थ–अरिष्टक, मांगल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल और गर्भपातन, ए संस्कृत नाम । हिं. रीठा, म. रिठा, तै. कुकुड, गु. अरीठा, फा. फिंदकहिन्दी, अ. बुंदक, ला. सेपिंस्त इमार्जिनटस्, अं. सोपबेरी सोपनट्।यह वृक्ष विश्वपत्र, मंजरीकफूल और गुच्छफलवाला होताहै । गुण । रीठा–त्रिदोषनाशक, स्कंदादिग्रहोंको जीते और गर्भको गिराता है ।

जीयापोता.

पुत्रजीवोगर्भकरोयष्टीपुष्पोऽर्थसाधकः ॥
पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भदःश्लेष्मवातहृत् ॥
सृष्टमूत्रमलोरूक्षोहिमःस्वादुःपटुःकटुः ॥

अर्थ–पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टीपुष्प और अर्थसाधक ए संस्कृतनाम । हिं. जीयापोता, पिताजिया, बं. जीयापति, म. पुत्रजीववृक्ष, तै. कुंवरजुवि, ला. पुत्रंजीवा एक्सवुर्घिआई । गुण । भारी, बलकर्त्ता, गर्भदायक, कफवात हरण कर्त्ता, मलमूत्रको करनेवाला, रूखा, स्वादु, शीतल, निमकीन और चरपरा है ।

* **राजनिघंटमें**—लिखताहै कि बबूरकी फलियोंमेंसें कालारंग निकलताहै, औषध तरीके छालका सत्व चीकना और ग्राही तरहसे व्यवहारमें आताहै । जाडेमें आम पडती होय तो इसके पत्ते दिये जातेहै । फलियोंको खांसीके रोगमें देतेहैं । बबूलका गोंदभी बहुत उपयोगमें आताहै । तथा नरमडालियोंकी छाल अधिक रेसेवाली है । यह कागज बनायसके ऐसीहै ।

मखजनउल्अदवियाकाकर्त्ता—लिखताहै कि जिसको फारसीमें अमुधीलान् अथवा मुधीलान् कहतेहै कि वह पीलाईलिये सफेदरंगका चमकता और पानीमें सब पिगल जाताहै स्वच्छ चिकना मिश्रवनाने योग्य होना चाहिये ।

मुसलमानी हकीम—बबूलके गोदको दवाके तरीके उपयोग करतेहैं । और इसको छातीकी पीडा मिटानेवाला, कुव्वत देनेवाला और नम्रता देनेवाला मानाहै ।

इंग्रेजी दवामें—जो मतहै उससे कोई गुण नहीं मिलते बबूरकी फलियोंका रस निकालके उसका सत्व निकालतेहैं उसको फारसीमें तथा अरबीमें **अकाकिया** कहतेहैं । यह पदार्थ भारी, कठोर और खुशकारक और वासवाला होना चाहिये । इसके छोटे टुकडेको उजेलेमें देखा जायतो कुछ २ लीलास लिये दीखेहै । यदि वह टुकडा वडा होयतो इसका रंग काला दीखनेमें आताहै । यह शीतल, ग्राही और पाचक गिना जाताहै । आंखमेंसे अत्यंत कीचड अथवा राध निकलती होयतो इसको आंजतेहैं । इसे पानीमें गलायके मुखपर लगानेसे चमडीका रंग सुधारताहै । इसको अंडेकी सफेदीके साथ मिलायके जलीहुई चमडीपर लेप करनेसे उत्तम असर करताहै । **अकाकियाके** चूर्णको बुरकनेसे घाव होनेसे जो नस कटगईहै उनसे बहताहुआ रुधिर बंद होय ।

धन्वंतरिनिघंटमें—लिखाहै कि बबूलकी छाल अत्यंत ग्राही है, तथा पाचनशक्ति वढानेके लिये वैद्य देतेहै, तथा इंग्रेजी दवा ओकको छालके पलटेमें लीनी जातीहै । इसका काथ घाव धोनेमें वर्त्तनेसे जल्दी अंकुर लायके भर जाताहै । बबूरके गोंदमें लाल किरमका गोंद अत्यत गुणकारी गिना जाताहै । यह खांसी और संधिवातके सदृश रोगोंमें वर्त्ता जायहै, तथा पेशावमें शक्करके समान पदार्थ निकलता होय तो यह खाया जाताहै । जिस नासूरमेंसे पीले रंगका पानी वहता होय उसके वास्ते कोमल बबूलके पत्तोंकी पुलटिस अत्यंत गुण करेहै । फलीभी खांसीके रोगमें उपयोगी है **देशीलोक** बबूलके गोंदको तिलके साथ मिलायको खातेहैं ।

इंगुदी.

इंगुदोऽङ्गारवृक्षश्चतिक्तकस्तापसद्रुमः ॥
इंगुदःकुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रमीन् ॥
हन्त्युष्णश्चित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ॥

अर्थ—इंगुद, अंगारवृक्ष, तिक्तक, तापसद्रुम, ए संस्कृतनाम, हिं. हिंगोट, म. हिंगणबेट, बं. इंगि-मण, गु. इंगोरियो, तै. गरा, ला. बेलेनाईटिस् एक्स बुर्घिबाई, इं. डेतिल कहतेहै । गुण । गरम, कडवी, पकनेके समय चरपरी । प्रयोग । कोढ, भूता-दिबाधा, ग्रह, व्रण, विष, कृमिरोग, चित्रकुष्ठ और शूल इनको दूर करे । *

जिंगनी.

जिंगिनीझिंगिनीझिंगीसुनिर्यासाप्रमोदिनी ॥
जिंगिनीमधुरासोष्णाकषायाव्रणशोधिनी ॥
कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः ॥

अर्थ—जिंगिनी, झिंगिनी, झिंगी, सुनिर्यासा और प्रमोदिनी ए संस्कृतनाम । हिं. बं. जिंगनिया, म. मोय, सिमटी, गु. मोलेडु-मवेडी, का. ओरीय, मरम, ला. ओडिनावोडियर । गुण । मधुर, गरम, कषेली, कटु, निमकीन, व्रणको शोधन करे । प्रयोग । व्रण, हृदयरोग और वातातिसार इनको हरण करे ।

तमाल.

तमालःशालवद्दोषोदाहविस्फोटहृत्पुनः ॥

अर्थ—तमालको हिंदीमें श्यामतमाल वा पसेंदू कहतेहै । बं. तमालवृक्ष, इसमें शालके समान गुण जानने ।

तूणि.

तूणीतुन्नकआपीनस्तुणिकःकच्छकस्तथा ॥
कुठेरकःकांतलकोनंदिवृक्षश्चनंदकः ॥ ३८ ॥
तुणीरक्तःकटुःपाकेकषायोमधुरोलघुः ॥
तिक्तोग्राहीहिमोवृष्योव्रणकुष्ठास्रपित्तजित् ॥

अर्थ—तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कांतलक, नंदिवृक्ष और नंदक ए संस्कृतनाम । हिं. तून, बं. तुंदवृक्ष, म. नांदुरकी, को. नांदरुख । गुण । लालरंग, पाकमें चरपरी, कषेली, मधुर, हलकी, कडवी, ग्राही, शीतल, बलकर्त्ता । व्रण, कोढ और रक्तपित्तको दूर करे ।

भोजपत्र.

भूर्जपत्रःस्मृतोभूर्जचर्मीबहुलवल्कलः ॥
भूर्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ॥
कषायोराक्षसघ्नश्चमेदोविषहरःपरः ॥ ४० ॥

अर्थ—भूर्जपत्र, भूर्जचर्मी और बहुलवल्कल ए संस्कृतनाम । हिं. भोजपत्र, बं. भूर्जपत्र, इं. जेके-मोंटी, ला. विटधूला भोजपत्रा । गुण । यह कषेला है तथा भूतबाधा, कफ, कानके रोग, रक्तपित्त, राक्षस-नाशक, मेदरोग और विषको दूर करे ।

पलाश (ढाक).

पलाशःकिंशुकःपर्णोयज्ञियोरक्तपुष्पकः ॥
क्षारश्रेष्ठोवातहरोब्रह्मवृक्षःसमिद्वरः ॥ ४१ ॥
पलाशोदीपनोवृष्यःसरोष्णोव्रणगुल्मजित् ।
कषायःकटुकस्तिक्तःस्निग्धोगुदजरोगजित् ।
भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःक्रमीन्हरेत् ॥
तत्पुष्पंस्वादुपाकेतुकटुतिक्तंकषायकम् ।
वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहिशीतल
तृड्दाहशमकंवातरक्तकुष्ठहरंपरम् ॥
फलंलघूष्णंमेहार्शःक्रमिवातकफापहम् ॥
विपाकेकटुकंरूक्षंकुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ॥ ४५ ॥

अर्थ—पलाश, किंशुक, पर्ण, यज्ञिय, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातहर, ब्रह्मवृक्ष और समिद्वर ए संस्कृ-तनाम । हिं. पलास, ढाक, रा. छीला, केसूला, उडि. पराशु, ता. परसन्, गु. खाखरो, क. मुत्तलु, तै. मातुका चेट्टु, ला. डाउनी ब्रांच ब्युटिया । विवाह यज्ञादिकमें इसकी समिधा हवन करी जातीहैं । गुण । दीपन, बलकर्त्ता, दस्तावर, गरम, कषेला, चरपरा, कडवा, स्निग्ध । प्रयोग । व्रण, गोलेका और गुदाके रोगको नष्ट करे । तथा टूटे हाडको जोडे, वातादि-दोष, संग्रहणी, बवासीर और कृमि इनको हरण करे । पलासका फल । पाकमें स्वादिष्ट, कटु, तिक्त और

* सुश्रुतग्रंथमें—हिंगोटके फलके गूदेको मेदकफहर, योनिदोषहर और गुल्मनाशक मानाहै ।

कषैला, वातकारी, ग्राही, शीतल, कफपित्त, रक्तके विकार, मूत्रकृच्छ्र, तृषा, दाह, वातरक्त और कोढ इनको हरण करे । पलासके फूल । हलके, गरम, पाकमें चरपरे, रूखे । प्रयोग । प्रमेह, बवासीर, कृमि, वातकफ, कोढ, गोला और उदररोग इनको दूर करें ।*

सेमर.

शाल्मलिस्तुभवेन्मोचापिच्छिलापूरणीतिच
रक्तपुष्पास्थिरायुश्चकंटकाढ्याचतूलिनी ॥
शाल्मलीशीतलास्वाद्वीरसेपाकेरसायनी ॥
श्लेष्मलापित्तवातास्रहारिणीरक्तपित्तजित् ॥

अर्थ–शाल्मलि, मोचा, पिच्छिला, पूरणी, रक्तपुष्पा, स्थिरायु, कंटकाढ्या और तूलिनी ए संस्कृत नाम हैं । हिं. सेमर-ल, बं. शिमुल, म. सेमला, सांवर, गु. शीमलो, इं. बोम्बेक्स मलेबारीकम् Bombax Malabaricum कहतेहै । ते. बुरगचेट्टु, ता. पुला, उ. वोनरो, का. यवलवहमर, अं. सिल्क काट्री । स्वरूप । इसके बडे २ वृक्ष पर्वती, जमीनमें होतेहै, इस वृक्षको डालियोंपर कांटे होतेहैं, डाठेरेके छोरपर अनीदार पांच पांच पत्ते होतेहैं । फूल बडा कसूमी लालरंगका पांच पंखडीवाला होताहै इसमें बहुसी पुंकेशर स्त्रीकेशर होतीहैं । फल छोटा केळाके आकारका भीतरसें अत्यंत कुमासदार

* चरकमें—कफसंशमन, व्रणशोधन और कुष्ठप्रशमन वर्णन कराहै ।

चक्रदत्तमें—पलास (ढाक) को ग्राही तरीकेसे लगाना लिखाहै । तथा वर्त्तनेमें अन्यग्राही पदार्थ और सेंधेनिमकके साथ मिलातेहैं । यह योग आंखमें जाला झांईपडी होय तो वर्त्ता जायहै ।

मखजनउलअदवियाकाकर्त्ता—पलासके पत्तोको ग्राही, पौष्टिक और कामोत्तेजक कहताहै, और कहताहै, कि उसको फोडा, मुहासे आदि दूर करनेको लगातेहै । तथा पेटमें वाईके कारणसे एंठन होती होय, कृमि तथा बवासीरके रोगमें खानेकी प्रसंशा करताहै । सफेदजातके फूल ग्राही, मूत्रवर्धक, तथा काम उत्पन्नकर्त्ता मानतेहै, और पुलटिशके तरीके बांधनेसे सूजन उतर जातीहैं, पेशाब और रजोदर्शको अधिक करताहै ।

डाकटर पेनसली—कहताहै कि मदरासके इलाकेमें तामिलवैद्य पेटके गोल तथा चपटे कीडे निकालनेको पलासपापडोंका चूर्ण २॥ रुपे भरकी मात्रामें दिनमे २ दफे देतेहै ।

होरटस-मलवारीक्स—नामकी पुस्तकमें लिखाहै कि पलासकी छाल, सोंठकेसाथ मिलायके सांपकेकाटे प्राणीको देतेहै ।

डाक्टरसेरवुड—पलासकेबीज सोरेके साथ ओटायके देसीवैद्य पेशाबकी थैलीमें होनेवाली पथरीके वास्ते देतेहैं, हालमें इस वृक्षका गोंद इंग्रेजी दवाईमें वर्त्ता जाताहै । पलासपापडेको नीबूके रसमें पीसकर शरीरपर लगानेसे चमडी लाल होजाताहै और खुजली जाती रहै ।

डा० रोकसवर—कहताहै कि फूलकारस गरमीसे गाढा करके उसमें थोडीसी फिटकरी डालनेसे रंगनेके वास्ते रेवतचीनीके दूधसेभी अधिक चमक देनेवाला रंग आताहै । अतएव वह कहताहैकि सूखेफूलमेंसे काढाहुआ सत्व ताजेफूलकासा उत्तम नहीं निकले, यह सत्व बहुत दिन रखनेसे विगडता नहीहैं ।

सुश्रुत—उसको रक्तपित्तहर, तथा योनिदोषहर मानाहैं । गोंद एकसे दोरत्तीकी मात्रामें देनेसे अतिसार और पीलेरुधिरका दस्त बंद होताहै । बीजोको पीसके लगानेसे दाद जाती रहतीहै, मूत्र यदि कठिनतासे उतरता होय उससमय फूलको पानीमें ओटायके सेक करनेसे आराम होताहै । इस वृक्षके ऊपरकी लाखभी बहुत समय मिलीहुई आतीहै, इस वृक्षके लकडीकेकोले बंदूककी दारूके बनानेमें बहुत वर्त्ते जातेहैं । जडकीछाल निकालके उसके बडे मजबूत डोरे बनातेहैं और होली आदि त्योहारोंमें केसूके फूलका रंग बहुत वर्त्तनेमें आताहै ।

चरकमें—पलासपापडेको संधानीय (ग्राही), पुरीषसंग्रहण (मलग्रहकरनेवाला), तथा वेदना स्थापन कर्त्ता मानाहै । तथा सुश्रुतमें उसको योनिदोषहर तथा शुक्रशुद्धिकर (वीर्यको शोधनकर्त्ता) मानाहै ।

होताहै । चित्र २९ नंबरका देखो । गुण । शीतल रस और पाकमें स्वादिष्ट, रसायन, कफकारी, पित्त वादीका नाशक और रक्तपित्तको हरण कर्ताहै ।

मोचरस.

निर्यासःशाल्मलेःपिच्छाशाल्मलीवेष्टको-
ऽपिच ॥
मोचास्रावोमोचरसोमोचनिर्यासइत्यपि ॥
मोचास्रावोहिमोग्राहीस्निग्धोवृष्यः
कषायकः ॥
प्रवाहिकातिसारामकफपित्तास्रदाहनुत् ॥

अर्थ-सेमरके गोंदको शाल्मलीनिर्यास, पिच्छा, शाल्मलीवेष्टक, मोचरस, मोचास्राव और मोचनिर्यास ए संस्कृतनाम हैं । हिं. मोचरस, म. सावरीचा डींक । गुण । मोचरस-शीतल, ग्राही, स्निग्ध, वृष्य, कषैला । प्रयोग । प्रवाहिका, अतिसार, आमवात, कफ, रक्तपित्त और दाह इनको दूर करे ।

कूटशाल्मलि.

कुत्सितःशाल्मलिःप्रोक्तोरोचनः
कूटशाल्मलिः ॥
कूटशाल्मलिकस्तिक्तःकटुकःकफवातनुत्
भेदुष्णःप्लीहजठरयकृत्गुल्मविषापहः ॥
भूताबाहविबंधास्रमेदःशूलकफापहः ॥ ५१ ॥

अर्थ-कुत्सितशाल्मलि, विरोचन और कूटशालि, हिं. कालासेमर, म. कालीसांवरी । यह सेमरका भेद है । गुण । कडवा, चरपरा, दस्तावर और गरम है । प्रयोग । कफवातके रोग, प्लीह, उदर, यकृत (कलेजा), गोला, विष, भूतबाधा, अफरा, विबंध, रुधिरका विकार, मेदरोग, शूल और कफ इनको नष्ट करे ।

धौं (धव).

धवोधटोनंदितरुःस्थिरोगौरोधुरंधरः ॥
धवःशीतःप्रमेहार्शःपांडुपित्तकफापहः ॥
मधुरस्तुवरस्तस्यफलंचमधुरंमनाक् ॥ ५२ ॥

अर्थ-धव, धट, नंदितरु, स्थिर, गौर और धुरंधर ए संस्कृत नाम, हिं. धौ, बं. धाओयावृक्ष, म. धावडा । गुण । शीतल, मधुर और कषैला, प्रमेह, बवासीर, पांडुरोग, पित्त और कफको नष्ट करे । इसका फल कुछ २ मीठा है ।

धामिन.

धन्वंगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्षःसुतेजनः ॥
धन्वंगःकफपित्तास्रकासहृत्तुवरोलघुः ॥
बृंहणोबलकृद्रूक्षःसंधिकृद्व्रणरोपणः ॥ ५३ ॥

अर्थ-धन्वंग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष और सुतेजन, हिं. धामिन, बं. धाओयावृक्ष भेद, म. धामिणीचा वृक्ष, गु. धामण । गुण । कषैला, हलका, बृंहण, रूक्ष । प्रयोग । कफ, पित्त, रुधिर, खांसी, इनको हरण करे, संधिकर्त्ता, मिलानेवाला और व्रणरोपण कर्त्ताहै ।

करीर.

करीरःक्रकरीपत्रोग्रंथिलोमरुभूरुहः ॥
करीरःकटुकस्तिक्तःस्वेद्युष्णोभेदनःस्मृतः ।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ ५४ ॥

अर्थ-करीर, क्रकरीपत्र, ग्रंथिल और मरुभूरुह ए संस्कृतनाम । हिं. करील, म. घटु मारंगी, गु. केरडो । यह क्षुपजातिका वृक्ष उजाडमें बहुत होताहै, इसके फलको टैंटी कहतेहै । और फूल लालरंगका होताहै, यह अपत्रवृक्ष है । गुण । करील-चरपरा, कडवा, पसीना लानेवाला, गरम, भेदन (दस्तावर) । प्रयोग । बवासीर, कफ, आमवात, विष, सूजन और व्रणको दूर करे ।

सहोरा.

शाखोटःपीतफलकोभूतावासःखरच्छदः ॥
शाखोटोरक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित्

अर्थ-शाखोट, पीतफलक, भूतवास और खरच्छद ए संस्कृत नाम, हिं. सहोडा [रा]. बं. श्याओडा, म. सहोड, गु. साहोडा, ता. मारिणीके चेट्टू, ला. स्ट्रेब्ल्यूसासपर । गुण । रक्तपित्त, बवासीर और वातकफके अतिसारको दूर करे ।

वरना.

वरुणोवरुणःसेतुस्तिक्तशाकःकुमारकः ॥
वरुणःपित्तलोभेदीश्लेष्मकृच्छ्राश्ममारुतान्

निहंतिगुल्मवातास्रकृमीनुष्णोऽग्निदीपनः
कषायोमधुरस्तिक्तःकटुकोरूक्षकोलघुः ॥

अर्थ—वरुण, वरण, सेतु, तिक्तशाक और कुमारक ए संस्कृत नाम, हिं. वरना, बं. वरुण, म. वायवरना, कौं. हाडवर्णा, गु. वरणो, का. मदवसले, ता. मरळिगम, तै. उरुमट्टी, ला. क्रेटिवा रॉक्स बुर्घि आई। गुण। कषाय, मधुर, तिक्त, कटुक, रूक्ष, हलका, पित्तकर्त्ता, दस्तावर, गरम और अग्निदीपक है। प्रयोग। इसका फल, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वादी, गोला, वातरक्त और कृमि इनको नष्ट करे।

कटभी.

कटभीस्वादुपुष्पश्चमधुरेणुःकटुंभरः ॥
कटभीतुप्रमेहार्शोनाडीव्रणविषकृमीन् ॥५७॥
हंत्युष्णाकफकुष्ठघ्नीकटूरूक्षाचकीर्तिता ॥
तत्फलंतुवरंज्ञेयंविशेषात्कफशुक्रहृत् ॥५८॥

अर्थ—कटभी, स्वादुपुष्प, मधुरेणु और कटंभर, ए संस्कृत नाम, हिन्दीआदिभाषाओंमें कटभीनामसें प्रसिद्ध है। गु. वापुंगा, का. वेल्लाल, अ. केरिसट्री, ला. केरिहा आर्बोरिया। गुण। कटभी-गरम, कटु रूक्ष प्रमेह, बवासीर, नाडीव्रण (नासूर), विष, कृमि, कफ और कुष्ठ इनको नष्ट करे। कटभीका फल-कषेला और विशेष करके कफ शुक्रको हरण करैहै।

मोखावृक्ष.

मोक्षस्तुमोक्षकोऽपिस्याद्गोळीढोगोलिहस्तथा ॥
क्षारश्रेष्ठःक्षारवृक्षोद्विविधःश्वेतकृष्णकः ॥
मोक्षकःकटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णःकफवातहृत् ।
विषमेदोगुल्मकंडूवस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत् ॥६०॥

अर्थ—मोक्ष, मोक्षक, गोळीढ, गोलिह, क्षारश्रेष्ठ और क्षारवृक्ष, यह दोप्रकारका है एक—सपेद और दूसरा कृष्ण। हिं. मोखावृक्ष, बं. घंटापारुल, तै. मोकपु चेट्टु, गु. जघरियो बाकरो, ला. स्कीवी रासीटेनि ओइविस्। इस वृक्षने क्षार बनाया जाताहै, यह पहाडी दरक्ततडाकके समान होताहै। गुण। मोखावृक्ष कटुक-कडवा, ग्राही, गरम और कफवातनाशक। प्रयोग। विषविकार, मेद, गोळा, खुजली, बस्तिके रोग, कृमिरोग और शुक्रनाशक है।

डाढोगि (जलशिरीषिका).

शिरीषिकाठिण्ठिणिकादुर्बलांबुशिरीषिका ।
त्रिदोषविषकुष्ठार्शोहरीवारिशिरीषका ॥६१॥

अर्थ—शिरीषिका, ठिंठिणिका, दुर्बला और अंबुशिरीषिका, ए संस्कृत नाम, हिं. डाढोगि, म. जलशिरिसी, गु. जळसरसडिओ कहतेहै। गुण। त्रिदोष, विष, कुष्ठ, बवासीर इनको जलशिरीषिका दूर करे।

छोकरा (शमी).

शमीशक्तुफलातुंगाकेशहंत्रीफलाशिवा ॥
मंगल्याचतथालक्ष्मीःशमीरःसाऽल्पिकाईरिता ॥ ६२ ॥
शमीतिक्ताकटुःशीताकषायारेचनीलघुः ॥
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित्स्मृता

अर्थ—शमी, शक्तुफला, तुंगा, केशहंत्रीफला, शिवा, मंगल्या, लक्ष्मी, शमीर और अल्पिका ए संस्कृत नाम। हिं. छोंकरा, बं. शाइबावला, म. शमी, गु. खीजडी, तै. समीड, उ. शुमी, इं. स्पंटट्री, ला. प्रोसोपिस स्पाइसिजेरा, का. बनि। यह छोटेबडेके भेदसे दोप्रकारका वृक्ष है। इसके फल सेंगरीके समान लंबे होतेहैं, इसीसें इनको सेंगर कहतेहैं। इनका साग और अचार बहुत उत्तम बनताहै। गुण। कडवी, चरपरी, शीतल, कषेली, दस्तावर और हलकी। प्रयोग। कफ, खांसी, भ्रम, श्वास, कोढ, बवासीर और कृमिरोगको नष्ट करे।

सतवन.

सप्तपर्णोविशालत्वक्शारदोविषमच्छदः ॥
सप्तपर्णोव्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजंतुजित् ॥
दीपनःश्वासगुल्मघ्नःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः।

अर्थ—सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद और विषमच्छद ए संस्कृत नाम। हिं. सतवन, सतोना, बं. छातिम, म. सातविण, गु. सातविन, का. एलेलेम, तै. एडाकुल, ता. आलस्टोनिया स्कोलारिस। इस वृक्षके पत्ते सात सूंटवाले होतेहैं और यह शरद ऋतुमें फूलताहै। गुण। सप्तपर्ण-कषेला, दस्तावर,

दीपन, स्निग्ध; कंठ्य व्रण, कफ, वात कोढ, रुधिरविकार, कृमिरोग, श्वास और गोला, इनकों दूर करे। इसकी छाल प्रयोगमें लेतेहैं। स्वाद कडवा है। *

तिनिश (तिरिच्छ.)

तिनिशःस्यंदनोनेमीरथद्रुर्वंजुलस्तथा ॥
तिनिशःश्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ॥
तुवरश्वित्रदाहघ्नोव्रणपांडुकृमिप्रणुत् ॥ ६५

अर्थ—तिनिश, स्यंदन, नेमी, रथद्रु और वंजुल, ए संस्कृत नाम, हिं. तिरिच्छ, म. तिवस, गु. तम्मों, ला. यूजिनियाडालबर्जियाँ ओझ्निम कहतेहैं। गुण। कषेला है, सेवन करनेसें कफ, पित्त, रुधिरविकार, मेदरोग, कोढ, प्रमेह, चित्रकोढ, दाह, व्रण, पांडु और कृमिरोगकों दूर करे।

भूंइसह.

भूमीसहोद्वारदारुर्नरिदारुःखरच्छदः ॥
भूमीसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनः ॥६६॥

अर्थ—भूमीसह, द्वारदारु, नरिदारु और खरच्छद .

* सुश्रुतग्रंथमें—सरदीके ज्वरपर नीचे लिखे मूंजम इलाज वर्णन कराहै। कि सतवनकी छाल, गिलोय, नीमके भीतरकी छाल सब दो दो तोले लेय सबको एककर क्वाथकरे इस क्वाथको पीनेमें वर्तना चाहिये। त्वचारोगमें बहुतसे योगोंमें इस छालको डालतेहैं। इस वृक्षके विषयमें देशीमनुष्योंका ऐसा भ्रम है कि जंगलके सबवृक्ष वर्षदिनमें, एक दिन उसको मानदेनेके वास्ते उसके पास आतेहै. इसवीसन् १६७८ में मेह्रिरडीडे और इसवीसन् १७४१ में रमपीअसने इस वृक्षका चित्र प्रगट करा देशीवैद्य उसको औषधके तरीके वर्ततेहैं, इस प्रकार कहाहै। इसकेबाद सन् १८३९ में मि. निमोयाने इसके पाचनशक्तिवर्द्धक और ज्वरनाशक गुण प्रगट करे। डा. गिवसन इसवी सन् १६५३ में उसके गुणोंका वर्णन फारमेक्युटिकल जनरलमें छपायाथा।

इंग्रेजी औषधोंमें—इसको ग्राही पाचनशक्तिवर्द्धक, पेटके कीडे निकालनेवाला और ज्वरनाशक मानतेहैं।

मनीलाका—एक ध्रूप नामक वैद्य इसकी छालमेंसे डिफ्टीन नामका स्फाटिक नहीं बंधे ऐसा सत्व तलासकरके निकालाहै।

अमेरिकाके फारमेक्यूटीकल असोसिएशन—इसवी सन् १८७७ की रिपोर्टमें लिखताहै कि यह वृक्ष ल्यूओनके टापूमें जंगली उत्पन्न होताहै। वहाके रहनेवाले मनुष्य उसको डीटा नामसे बोलतेहै बस देशवाले उसको पाचनशक्तिवर्द्धक और ज्वरनाशक मानतेहैं। वारंवार आनेवाले तथा बहुतदिनके अंतर देकर और सरदीकी हवामें उत्पन्न होनेवाले ज्वरमें इस औषधको सदासे वर्ततेहैं। तथा इसके परिणाम बहुत संतोषकारी हुएथे इस रिपोर्टसे बडेबडे विद्वान् इंग्रेज वैद्योंका ध्यान इसकी तरफ खींचा गयाहै। तथा हालमें ऊपरकहाहुआ सत्व उत्तमसे उत्तम कौनेनके समान गुणकर्त्ता मानतेहै। और इसकारण विलायतसे बहुत मगाया जाताहै। कौनैन और डीएटीनसत्व दोनो एकसी मात्रासे दिये जातेहै। और दोनोका एकसाही परिणाम होताहै। तथा कौनेनसे अधिक फायदा यह होताहै कि कौनैन अधिक देनेसे बेहरापना उत्पन्न करतीहै, नींद नहीं आवे, इत्यादि परिणाम इसपदार्थसे नहीं होते। तथा इसका असर बहुतजल्दी विश्वाससे और कभी निष्फल नहींजाय। छोटे छोटे बच्चोंके वास्ते इस सत्वकी मात्रा आधाड्राम और बडेकेलिये १ ड्राम तव दिनके वास्तेहै। यह मात्रा देतीवखत अवश्य करके अवस्था, जात प्रकृतिआदि विचारना अतिआवश्यक है। पुलटिसके रूपमेंभी यह पदार्थ वर्त्तनेसे फायदाकारक असर होताहै। बनानेकी यहविधिहैकि—सतोनाकीछाल और कोर्नफलोर अथवा चून ए दोनो प्रत्येक आध १ सेरको गरम जलमें मिलायके खीलके समान करे और कपडेके ऊपर फैलायके बगलमें हाथकी संधियोंमें और घोटुओंके ऊपर लगायके अच्छीतरह सुखजानेके बाद बदलता रहे। इसप्रकार असर होय तहांतक केम करै और सुखावे। लस्करी आस्पतालोंमें डीटेइन कौनैनके बदले वर्त्ती

ए संस्कृतनाम, हिं. भूंइतह, म. सामवन, गु. साग, क. नैगु। गुण। शीतल और रक्तपित्तको शुद्ध करनेवाला है।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ
वटादिवर्गः

आम्रादिवर्गः

आम्र.

आम्रः प्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभः।
कामांगोमधुदूतश्चमाकंदःपिकवल्लभः ॥ १ ॥
आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ॥
असृग्दुष्टिहरंशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम् ॥
आम्रंबालंकषायाम्लंरुच्यंमारुतपित्तकृत् ॥
तरुणंतुतदत्यम्लंरूक्षंदोषत्रयास्रकृत् ॥ ३ ॥
आम्रमामंत्वचाहीनमातपेऽतिशोषितम् ॥
अम्लंस्वादुकषायंस्याद्भेदनंकफवातजित्॥४
पक्वंतुमधुरंवृष्यंस्निग्धंबलसुखप्रदम् ॥
गुरुवातहरंहृद्यंवर्ण्यंशीतमपित्तलम् ॥ ५ ॥
कषायानुरसंवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् ॥
तदेववृक्षसंपक्वंगुरुवातहरंपरम् ॥ ६ ॥
मधुराम्लरसंकिंचिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम् ॥
आम्रंकृत्रिमपक्वंचतद्भवेत्पित्तनाशनम् ॥ ७ ॥
रसस्याम्लस्यहीनस्तुमाधुर्याच्चविशेषतः ॥
उषितंतत्परंरुच्यंबल्यंवीर्यकरंलघु ॥ ८ ॥
शीतलंशीघ्रपाकिस्याद्वातपित्तहरंसरम् ॥
तद्रसोगालितोबल्योगुरुर्वातहरःसरः ॥ ९ ॥
अहृद्यस्तर्पणोऽतीवबृंहणःकफवर्द्धनः ॥
तस्यखंडंगुरुपरंरोचनंचिरपाकिच ॥ १० ॥
मधुरंबृंहणंबल्यंशीतलंवातनाशनम् ॥
वातपित्तहरंरुच्यंबृंहणंबलवर्द्धनम् ॥ ११ ॥
वृष्यंवर्णकरंस्वादुदुग्धाम्रंगुरुशीतलम् ॥
मंदानलत्वंविषमज्वरंच
रक्तामयंबद्धगुदोदरंच ॥
आम्रातियोगोनयनामयंवा
करोतितस्मादतितानिनाद्यात् ॥ १२ ॥
एतदम्लाम्रविषयंमधुराम्लपरंनतु ॥
मधुरास्यपरंनेत्रहितत्वाद्यागुणायतः ॥ १३ ॥
शुंठ्यांभसोऽनुपानंस्यादाम्राणामतिभक्षणे ॥
जीरकंवाप्रयोक्तव्यंसहसौवर्चलेनच ॥ १४ ॥

अर्थ–आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामांग, मधुदूत, माकंद और पिकवल्लभ ए आम्रके संस्कृत नाम हैं। हिं. आम, म. आंबा, गु. आंबो, का. मात्रिन, तै. मामिडी चेट्टु, अ. अंबा, फा. अवे, इं. मंगोट्री Mango tree कहतेहैं। स्वरूप। आमके अनीदार और आधेसैं एक फुटतक लंबे पत्ते होतेहैं। फूलका मौर गुच्छादार होताहै। फल (आम) जगप्रसिद्ध उत्तम मेवा है। औषधीमें मुख्य इसकी गुठली काममें आतीहै। चित्रनंबर ३०का देखो। गुण। आमका पुष्प (बौर) अतिसार, कफ, पित्त और प्रमेहको दूर करे। तथा रुधिरकी दुष्टता हरण करे। शीतल, रुचिकारी, ग्राही और वातल है। कच्चीअंमिया। कषेली, खट्टी, रुचिकारी, बादी और पित्तको करे है। तरुणआम अर्थात् बडा और बिना

जातीहै। प्राचीन दस्तोमें और मरोडेकी विमारीमेंभी यहछाल उत्तम असरकरेहै। तथा ज्वर आनेकेपीछे पेटकी पाचनशक्ति न्यून होगई होय उसको सुधारे।

चरकसंहितामें—रस बीज और छालको वातपित्तप्रशमन, कुष्ठहर, उदर्दप्रशमन और शीतनिवारण वर्णन कराहै।

सुश्रुतसंहितामें—इसको कफवातप्रशमन, अरुचिहर, गुल्मशूलहर, आमपाचक और उदर्दवात प्रशमन वर्णन कराहै। छाल कुछ सुगंधित, गरम, कसेली तथा कड़वी होतीहै। तथा खानेसे थोडा जुलाब होकर मूंख लगतीहै। ज्वर मिटजाताहै। तथा सूजन और शूल नष्ट होजाताहै, ऊपर लिखेहुए डीदेश्न सत्वके सिवाय छालमेंसैं इकायठीमीम और इकाठीमीन नामके दो और भी सत्व निकलेहैं।

पकाहुआ अत्यंत खट्टा, रूक्ष, त्रिदोष और रुधिरके विकारको करेहै। **अमचूर।** कच्चे आमके ऊपरका छिलका छील फिर कतरकें धूपमें सुखाय ले इसको हिन्दीमें **अमचूर** कहते है। यह खट्टा, स्वादु, कषेला दस्तावर और कफवातको जीतेहै। **पकाहुआआम।** मधुर, वृष्य, स्निग्ध, बल और सुखको देताहै। भारी वातहरणकर्ता, हृदयको हितकारी, देहके रंगको उज्वल करे, शीतल और पित्तको नहीं करता, तथा कषेले रसयुक्त, अग्नि, कफ, शुक्र, इनको बढानेवाला है। वही आम यदि वृक्षपर पका होयतो भारी, अत्यंत वातहारक, मधुर और खट्टा, एवं कुछ २ पित्तको कुपित करता है। **कृत्रिमपक्व।** अर्थात् पालका पकायाहुआ आम–पित्तनाशक इसमें खट्टारस थोडा और मिठास अधिक होता है। यदि कह वासित हो जाय तो परम रुचिकारी, बलकर्त्ता, वीर्यकर्त्ता और हलका है। शीतल, शीघ्रपचनेवाला, वातपित्तहरणकर्त्ता और दस्तावर है। **आमकारस।** निचोडा हुआ अर्थात् **अमरस**–बलकारी, भारी, वातहरण करता, दस्तावर, हृदयको अहित, तृप्तकारी, अत्यंत बृंहण और कफ बढानेवाला है। **आमका टुकडा।** भारी, रुचिकारी, देरमें पचनेवाला, मधुर, बृंहण, बलकारी, शीतल, वातनाशक। **दूधकेसाथ** आम भक्षण कराहुआ वातपित्तनाशक, रुचिकारी, बृंहण, बलवर्द्धन, शुक्रसंचय और देहके रंगको निखारनेवाला। **दुग्धाम्र**-अत्यंतस्वादु, भारी और शीतल है। **अत्यंतआमचूसनेसें** मंदाग्नि, विषमज्वर, रुधिरदोष, अत्यंत कोष्ठरोध, अथवा चक्षुरोगको उत्पन्न करेहै। इसीसें अधिक आमका चूसना **वर्जित** कहा है। जितने आमके दोष कहेहैं वो सब खट्टे आमके जानने किंतु मीठे आमके खानेसें ए संपूर्ण दोष नहीं होते हैं। बहुत आम चूसनेके पश्चात् सोंठका जल पीवे, अथवा जीरा और कालानोन भक्षण करना चाहिये। *

---

* **हिन्दु और मुसलमानी वैद्यक ग्रंथोंमें**—कच्ची तथा पक्की कैरीके गुण बहुत वर्णन करे गयेहैं। संक्षेपसे कहे तो–पक्कफल ताकत लानेवाला, चरबी बढानेवाला, खुशकरनेवाला, कुछ दस्तसाफ लानेवाला और पेसाव बढानेवाला मानाहै। परंतु उसकी छाल और कच्चेफलका रेसा ग्राही और खट्टा गिना जाताहै। **कच्चीआमीका अचार** पेटको शांति कर्त्ता तथा भूखको प्रदीप्त करताहै, कच्ची अमियाको छोल उसकी गुटली निकाल बारीक कतरके सुखाय देतेहै, उसको **अमचूर** अथवा **आम्बोसी** कहतेहै। यह खानेमें बहुत आताहै। साग कढी आदिमे डाला जायहै। इसमें जो खटाईहै वह **साइट्रिक-एसिड्के** कारणसेहै। यह अत्यंत रुधिरके शुद्ध करनेवालीहै। और हिन्दुस्थानमें **आमखुशकना** नामसे बोलतेहै। इसके **फूल गुठली** और **छाल** शीतल और ग्राही मानतेहै। यह दस्तोंकी बिमारी आदिमें वर्त्ती जातीहैं। **पत्तोंको** जलायकर इसकी धूनी गलेके भीतरके अनेक रोगोंको नष्ट करेहै।

मखजनउलअद्वियाका कर्त्ता—कहताहै कि हिंदुस्तानीमनुष्य कच्चेफलके गूदेको सेक खांडके साथ मिलायके धररखतेहै। उसको महामारी या हैजाके रोगमें खातेहैं। तथा शरीरमें लेप अर्थात् लगातेहै। और यहभी कहाहैकि पत्तोंकी नसको जलाय नेत्रके पलकोंमें होनेवाले कील. (गुहेरी) वगैरहको निकाल डालेहै। **गुठलीको** पीस बीससे तीस ग्रेनकी मात्रामे देनेसे पेटके कीडे निकल जातेहैं। तथा दूखते बवासीरके मस्से नष्ट होजातेहैं। फलपकताहै तब उसमेंसे एकप्रकारका चीकना पदार्थ निकलताहै जिसकी गंध **टरपियनटाइन** तेलके सदृश होतीहै। **छालमेंसे** गोंद निकलताहै वह शीतलजलमें पिगल जायहै।

डाक्टर एन्स्ली—कहताहै कि फलका तेल और छालका गोंद दोनों पदार्थ नीबूके रस अथवा तेलके साथ मिलायके खुजली तथा अन्य त्वचाके रोगमें वर्त्ततेहै। पकीहुई कैरीके (आमके) रसको सुखाय उसको पतलीरोटीके समान बनातेहैं। उसको **आमरस, आमोट, आंबापोली** अथवा **आमकीरोटी** कहतेहै। और उसको स्वादिष्ट वस्तुके माफिक तथा रुधिर सुधारनेके वास्ते खातेहै। **आमकीछालको** पानीमें भिगोय रखे। यह पानी प्रदर और बहतीहुई धातुको बंद करनेको दी जातीहै। कच्चे फलके

आम्रवर्त.

पक्वस्यसहकारस्यपटेविस्तारितोरसः ।
घर्मशुष्कोमुहुर्दत्तआम्रावर्तइतिस्मृतः ॥ १५
आम्रावर्तस्तृषाच्छर्दिवातपित्तहरःसरः ॥
रुच्यःसूर्यांशुभिःपाकाल्लघुश्चसहिकीर्तितः ।

अर्थ–पकेहुए मीठे आमके रसको कपडेपर विछायके धूपमें सुखाय लेवे जब सूखजाय तब फिर उसपर रस डालकें सुखावे, इसप्रकार जितना मोटा करना हो उतना रस डालके सुखायले इसको आम्रावर्त्त कहतेहै, और हिं. आमकीरोटी, अंबावट, बं. आम्रसत्व कहतेहैं। गुण। सूर्यकी किरनोंसें पाक होनेसें यह हलका और रुचकारी होताहै, सेवन करनेसे तृषा, वमन, बादी और पित्तशांति हो। एवं कोष्ठस्थित बादी आदि संपूर्ण निकल जावे।

कोइली (आमकीगुठली.)

आम्रबीजंकषायंस्याच्छर्घतीसारनाशनम् ॥
ईषदम्लंचमधुरंतथाहृदयदाहनुत् ॥ १७ ॥

अर्थ–आमकी भीतरकी गुठली-कषेली, कुछ २ खट्टी, मधुर, वमन, अतिसार और हृदयके दाहको नष्ट करें।

नवपल्लव.

आम्रस्यपल्लवंरुच्यंकफपित्तविनाशनम् ॥

अर्थ–आमके नवीन पत्ते रुचिकारी, कफ और पित्त विनाशक है।

अंबाडा.

आम्रातकःपीतनश्चमर्कटाम्रःकपीतनः ॥१८॥
आम्रातमम्लंवातघ्नंगुरूष्णंरुचिकृत्सरम् ॥
पक्वंतुतुवरंस्वादुरसेपाकेहिमंस्मृतम् ॥ १९ ॥
तर्पणंश्लेष्मलंस्निग्धंवृष्यंविष्टंभिबृंहणम् ॥
गुरुबल्यंमरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥२०॥

अर्थ–आम्रातक, पीतन, मर्कटाम्र और कपीतन, ए संस्कृत नाम, हिं. अंबाडा [रा], बं. आमडा, म. आंबाडा, तै. आमाटे, गु. अंमेडा, का. आंबोडेयकायि। ला. स्पोन्डिआस् मैंगिफरा। गुण। अंबाडा-खट्टा, वातनाशक, भारी, गरम, रुचिकर्त्ता और दस्तावर है। पकाहुआ-रसमें और पाकमें कषेला, स्वादु, शीतल, तृप्तकारी, स्निग्ध, वृष्य, विष्टंभी, बृंहण, भारी, बलकर्त्ता। बादी, पित्त, घाव, दाह, क्षयरोग और रुधिरविकारको दूर करे।

राजाम्र (लताआम.)

राजाम्रष्टंकआम्रातःकामाङ्गोराजपुत्रकः ॥
राजाम्रंतुवरंस्वादुविशदंशीतलंगुरु ॥
ग्राहिरूक्षंविबंधाध्मवातकृत्कफपित्तनुत् ॥

अर्थ–राजाम्र, टंक, आम्रात, कामाङ्ग और राजपुत्रक ए सं., हिं. राजाम्र, बं. लताआम। गुण। कषेला, स्वादिष्ट, विशद, शीतल, भारी, ग्राही, रूक्ष, विबंध, अफरा करे और कफपित्तको हरण करे है।

कोशाम्र (कोशम.)

कोशाम्रउक्तःक्षुद्राम्रःकृमिवृक्षःसुकोशकः
कोशाम्रःकुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ॥
तत्फलंग्राहिवातघ्नमम्लोष्णंगुरुपित्तलम् ॥
पक्वंतुदीपनंरुच्यंलघूष्णंकफवातनुत् ॥ २३ ॥

अर्थ–कोशाम्र, क्षुद्राम्र, कृमिवृक्ष और सुकोशक ए संस्कृ., बं. केओडाफल, का. जूरिमाचु। गुण। कोशाम्र-कोढ, सूजन, रक्तपित्त, व्रण और कफको दूर करे। इसकाफल ग्राही, खट्टा, गरम, भारी,

ऊपरसे निकलेहुए चीकने पदार्थ और अंडाकीसफेदी तथा थोडीसी अफीमके साथ मिलायके मलेबारकीतरफ दस्त और एंटनके रोगमें अक्सीर इलाजके तरीके वर्त्ततेहैं।

हिंदुस्थानके सब फलोंमें स्वादिष्टफल आंबहै, जिस समय कच्चीहोतीहै. तब संधाना (अचार) मुरब्बा आदि बनानेमें वर्त्ततेहैं। गुठलीमेंभी अत्यंत पौष्टिक पदार्थरहताहै, परंतु उसको सदैव उपयोगमें नहीं लेते। घोर अकालओं हालके संवत् १९५१ में हुआहै इसमें गरीबमनुष्योंने उसको उबालके उससे अपना निर्वाह कराहै। फलकेगूदेमें खांड गोंद और साइट्रीकएसिड ए तीन पदार्थ रहतेहैं। और बीजमेंसे गोलिकएसिड निकलताहै। इसकी लकडी चंदनके साथ मुर्देके जलानेको पवित्र मानतेहैं। पत्तोंकीडंडी बलायके रस निकालतेहैं वहभी बहुतसे रोगोंमें दिया जायहै।

वात और पित्तनाशक । पकाफल दीपन, रुचिकारी, हलका, गरम, कफवातनाशक है ।

कटहर.

पनशःकंटकिफलःपनसोऽतिबृहत्फलः ॥
पनशंशीतलंपक्कंस्निग्धंपित्तानिलापहम् ॥२४
तर्पणंबृंहणंस्वादुमांसलंश्लेष्मलंभृशम् ॥
बल्यंशुक्रप्रदंहंतिरक्तपित्तक्षतव्रणान् ॥ २५॥
आमंतदेवविष्टंभिवातलंतुवरंगुरु ॥
दाहकृन्मधुरंबल्यंकफमेदोविवर्द्धनम् ॥२६॥
पनसोद्भूतबीजानिवृष्याणिमधुराणिच ॥
गुरूणिबद्धविट्कानिसृष्टमूत्राणिसंवदेत् ॥
मज्जापनसजोवृष्योवातपित्तकफापहः ॥
विशेषात्पनसोवर्ज्योगुल्मिभिर्मंदवह्निभिः

अर्थ-पनश, कंटकिफल, पणस और अतिबृहत्फल ए संस्कृतनाम, हिं. कटहर, कटेर, बं. कांठाल, म. फणस, क. हलसीनहणु, तै. पनसवकाया, का. हलसीनहणु, ता. पिला, उडि. पणस, ला. आर्टोकार्पस् इन्टेग्रिफोलिया । गुण । कटहरका पकाफल-शीतल, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, तृप्तकरता, बृंहण, स्वादु, मांस और कफको बढानेवाला, बलकर्त्ता, वीर्यवर्द्धक । प्रयोग । रक्तपित्त, क्षत और व्रणको दूर करे । कटहरका कच्चाफल । विष्टंभी, वातकर्त्ता, कषेला, भारी, दाहकर्त्ता, मधुर, बलकारी, कफ, मेदको बढानेवाला । कटहरके बीज । वीर्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बांधनेवाले और मूत्रको निकालनेवाले हैं । अन्यत्र लिखाहै कि कटहरकी मज्जा वृष्य, वात पित्त और कफकी नाशक । निषेध । गोलाके रोगी और मंदाग्निवालाकों कटहरके खानेकी शक्त मनाई है ।

बडहर.

लकुचःक्षुद्रपनशोलकुचोडहुरित्यपि ॥
आमंलकुचमुष्णंचगुरुविष्टंभकृत्तथा ॥ २९ ॥
मधुरंचतथाऽम्लंचदोषत्रितयरक्तकृत् ॥
शुक्राग्निनाशनंचापिनेत्रयोरहितंस्मृतम् ॥
सुपक्वंतत्तुमधुरमम्लंचानिलपित्तहृत् ॥
कफवह्निकरंरुच्यंवृष्यंविष्टंभकंचतत् ॥ ३१॥

अर्थ-लकुच, क्षुद्रपनश, लकुच और डहु ए संस्कृतनाम, हिं. बडहर, बं मादर, म. क्षुद्रफणस, अं. ओर्टोकार्पस्लकुचा । गुण । कच्चाबडहरका फल-गरम, भारी, विष्टंभी, मधुर, खट्टा, त्रिदोषवर्द्धक और रुधिरकर्त्ता, शुक्र और जठराग्निको नष्ट करे और नेत्रोंको अहित है । वही पका हुआ मीठा और खट्टा, वादी और पित्तको हरण कर्त्ताहै, कफकारी, अग्निको बढानेवाला, रुचकारी, वृष्य और विष्टंभी है ।

कदली (केला.)

कदलीवारणामोचांबुसारांशुमतीफला ॥
मोचाफलंस्वादुशीतंविष्टंभिकफनुद्गुरु ॥
स्निग्धंपित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित् ॥
पक्वंस्वादुहिमंपाकेस्वादुवृष्यंचबृंहणम् ॥
क्षुत्तृष्णानेत्रगदहृन्मेहघ्नंरुचिमांसकृत् ॥३३॥

माणिक्यमर्त्यामृतचंपकाद्या
भेदाःकदल्याबहवोऽपिसंति ॥
उक्तागुणास्तेष्वधिकाभवंति
निर्दोषतास्याल्लघुताचतेषाम् ॥ ३४ ॥

अर्थ-कदली, वारणा, मोचा, अंबुसार और अंशुमतीफला, ए संस्कृतनाम । हिं. केला, केरा, म. केल, तै. चक्राकेली, गु. केल्य, का. कावालेतव, ता. पाजम व्रर्नापपली, पा. तल, तलमपज, तु. वाहा, वर. हगापी, ला. मुसासे पियेनटम्, फा. मावज् । गुण । कच्चाकेला, स्वादु शीतल, विष्टंभी, कफनाशक, भारी, स्निग्ध । प्रयोग । रक्तपित्त, तृषा, दाह, क्षत, क्षय, वादी, इनको दूर करे । पका हुआ-स्वादु, शीतल, मिष्टपाकी, वृष्य, बृहण । क्षुधा, तृषा, नेत्ररोग, प्रमेह इनको नष्ट करे । रुचि और मांस करेहै । इस केलेकी-माणिक्य, मर्त्य, अमृत और चपकादि अनेक जातिहै उन सबमें ऊपर कहेहुए ही गुण होतेहैं, तथा दोषहीनता और हलकापना यह अधिक होतेहैं ।

गुरुमीहुं भुकुर.

चिर्भिटंधेनुदुग्धंचतथागोरक्षकर्कटी ॥
चिर्भिटंमधुरंरूक्षंगुरुपित्तकफापहम् ॥
अनुष्णंग्राहिविष्टंभिपक्वंतूष्णंचपित्तलम् ॥

अर्थ–चिर्भिट, वेणुरुग्ध और गोरक्षकर्कटी ए संस्कृतनाम, हिं. कचरिया, गुड़मीठु, मकुर, बं. काकुड, म. चिभूड, गु. चिमडां, तै. कुदरंगपंडु। गुण। कचरिया–मीठी, रूखी, भारी, पित्त और कफको नष्ट करे, गरम नहींहै। ग्राही, विष्टंभी और पकीकचरिया (सैंधकचरिया) गरम और पित्तके करनेवाली है।

नारियल.

नारिकेरोदृढफलोलांगलीकूर्चशीर्षकः॥
तुंगस्कंधफलश्चैवतृणराजःसदाफलः॥३६॥
नारिकेलफलंशीतंदुर्जरंबस्तिशोधनम्॥
विष्टंभिबृंहणंबल्यंवातपित्तास्रदाहनुत्॥३७॥
विशेषतःकोमलनारिकेरम्
निहंतिपित्तज्वरपित्तदोषान्॥
तदेवजीर्णंगुरुपित्तकारि
विदाहिविष्टंभिमतंभिषग्भिः॥३८॥
तस्यांभःशीतलंहृद्यंदीपनंशुक्रलंलघु॥
पिपासापित्तजित्स्वादुबस्तिशुद्धिकरंपरम्
नारिकेरस्यतालस्यखर्जूरस्यशिरांसितु॥
कषायस्निग्धमधुरबृंहणानिगुरूणि च॥ ४०॥

अर्थ–नारिकेर, दृढफल, लांगली, कूर्चशीर्षक, तुंग, स्कंधफल, तृणराज और सदाफल ए संस्कृत नाम। हिं. नारियल–र, दा. खोपरा, म. नारल, माड, गु. नालीएर, तै. टेंकाया, का. रमु, उ. नडिया, ता. टेंगा, इं. कोकोनट। अ. नारिजिल, फा. ओजांहिंदी, स्वरूप। नारियलका वृक्ष ताड अथवा सुपारीके बराबर ऊंचा होताहै। इसके पत्ते दो फुटसे ४ फुटतक लंबे आमने सामने होतेहैं। फूल जैसे गेहूंकी बालमें गेहूं फूटकर निकलते हैं इसप्रकार संख्यावाले होतेहैं। इसमें तीन पंखडी पुंकेशर और तीन स्त्रीकेशर होतीहैं। फलके बाहर कठोर बीचमें कांचलीसी और भीतर गिरी होतीहै। उसके भीतर जलभरा हुआ होताहै। चित्रनंबर ३१ देखो। गुण। नारियलकी गिरी शीतल, दुर्जर, बस्ति शोधनकर्त्ता, विष्टंभी, बृंहण, बलकारी, वात, पित्त, रुधिर और दाहरोगको हरण करे। विशेष करके कोमलनारियलका फल–पित्तज्वर, पित्तके दोषोंको दूर करे। वही जीर्ण (पुराना) भारी, पित्तकर्ता, विदाही और विष्टंभी वैद्योंने कहाहै। नारियलका जल–शीतल, हृदयको प्रिय, दीपन, शुक्रकर्त्ता, हलका, प्यास और पित्तको हरण करता, स्वादिष्ट और उत्तम बस्तिशोधक है। नारियल, ताल और खिजूर इनकी शिरा (रेसा) कषेली, स्निग्ध, मधुर, बृंहण और भारी है।

तरबूज.

कालिंदंकृष्णबीजंस्यात्कालिंगंचसुवर्तुलम्
कालिंदंग्राहिदृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलंगुरु॥
पक्वंतुसोष्णंसक्षारंपित्तलंकफवातजित्॥

अर्थ–कालिंद, कृष्णबीज, कालिंग और सुवर्तुल ए संस्कृत नाम, हिं. तरबूज, बं. तरमूज, म. कालिंगड, कालिंगण, तरबूज। गु. तडबूच, कालिंगडु, तै. तरबुज, पुचकाया, का. कौंडे, उ. तरपुज, अं. वाटरमेलन्, ला. साईट्रलस् वल्गेरीस्, फा. विर्तीख जकी कहतेहैं। गुण। कच्चा तरबूज ग्राही है और नेत्र, पित्त, शुक्र इनको हरण करता, शीतल, भारी। पका हुआ तरबूज गरम, क्षारयुक्त, पित्तकर्त्ता और कफवातका जीतनेवाला है।

खर्बूजा.

दशांगुलंतुखर्बूजंकथ्यतेतद्गुणाअथ॥
खर्बूजंमूत्रलंबल्यंकोष्ठशुद्धिकरंगुरु॥
स्निग्धंस्वादुतरंशीतंवृष्यंपित्तानिलापहम्॥
तेषुयच्चाम्लमधुरंसक्षारंचरसाद्भवेत्॥
रक्तपित्तकरंतत्तुमूत्रकृच्छ्रकरंपरम्॥ ४३॥

अर्थ–दशांगुल, खर्बूज ए संस्कृत नाम, हिं. खर्बूजा, बं. खरमूजा, म. खर्बुज, फा. विर्तीख हिंदी, अं. कुक्यू मिसमेलो, ला. मेलन्। गुण। मूत्र लानेवाला, बलकारी, कोठेको शुद्धकर्त्ता, भारी, स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वृष्य, पित्त और वातनाशक। इसमें जो खरबूजा रसमें खट्टा, मीठा और खारी होताहै वो रक्तपित्तकर्त्ता और घोर मूत्रकृच्छ्रकर्त्ता जानना।

खीरा. बालमखीरा.

त्रपुसंकंटकिफलंसुधावासःसुशीतलम्॥
त्रपुसंलघुनीलंचनवंतृट्क्लमदाहजित्॥४४॥

स्वादुपित्तापहंशीतंरक्तपित्तहरंपरम् ॥
तत्पक्वमम्लमुष्णंस्यात्पित्तलंकफवातनुत् ॥
तद्बीजंमूत्रलंशीतंरूक्षंपित्तास्रकृच्छ्रजित् ४६

अर्थ–त्रपुसं, कंटकिफल, सुधावास और सुशीतल ए संस्कृत नाम है । हिं. खीरा, बालमखीरा, बं. शसा, म. काकडी, कौं. तवसें, गु. तांसलि. का. तसेयकायि, ता. महेवहरिकोंकणो, फा. खियारखुर्द । गुण । खीरा-हलका, स्वादिष्ट, शीतल, नवीन अवस्थाका खीरा नीले रंगका होता है । तथा तृषा, श्रम, दाह, पित्त और रक्तपित्तको हरण करे । पका हुआ खीरा खट्टा, गरम, पित्तकरता, कफवातनाशक है । खीरेके बीज मूत्र लानेवाले, शीतल, रूक्ष, पित्त, रक्तविकार और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे ।

सुपारीछोटी.

घोरंटःपूगिपूगश्चगुवाकःक्रमुकोऽस्यतु ॥
फलंपूगीफलंप्रोक्तमुद्वेगंचतदीरितम् ॥ ४७
पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायंकफपित्तजित् ॥
मोहनंदीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥ ४८
आर्द्रंतद्गुर्वभिष्यंदिवह्निदृष्टिहरंस्मृतम् ॥
स्विन्नंदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यंतदुत्तमम् ॥४९

अर्थ–घोरंट, पूगी, पूग, गुवाक और क्रमुक ए संस्कृतनाम । इसके फलको पूगीफल और उद्वेग कहतेहै । हिं. बं. सुपारी, तै. पोकाकाया, गु. हुपारी, उडि. गुया, का. अडकेय सरनु, अ. फोफिल, फा. पोपिल, इं. बिटलनट, पाम्, ला. एरिका केटेचु । गुण । भारी, शीतल, रूक्ष, कषाय, कफपित्तनाशक, मोहनाशक, रुचिकारी, मुखकी विरसतानाशक । कच्चीसुपारी–भारी, अभिष्यंदि, अग्निमंद करता और दृष्टिशक्तिको हरण करता है । जो सुपारी औटाकरबनाई गई अर्थात् चिकनी सुपारी और जिसका मध्यभाग दृढ होवे वो उत्तम होतीहै । सुपारीके अनेक भेद है । जैसें सेवरधनी, मानिकचंदी, जिहाजी, चिकनी । इन सबको अन्यत्र लिखेंगे ।

ताल (ताड.)

तालस्तुलेखपत्रःस्यात्तृणराजोमहोन्नतः ॥
पक्वतालफलंपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥
दुर्जरंबहुमूत्रंचतंद्राभिष्यंदशुक्रदम् ॥ ५० ॥
तालमज्जातुतरुणःकिंचिन्मदकरोलघुः ॥
श्लेष्मलोवातपित्तघ्नःसस्नेहोमधुरःसरः ॥५१

अर्थ–ताल, लेखपत्र, तृणराज और महोन्नत ए सं. नाम । हिं, ताड, बं. ताल, ता. पनम, अ. तार, अं. पालमाई पाम, ला. बोरेससफ्ले बेलिफोर्मिस । गुण । पका हुआ तालका फल दुर्जर (सहजहीं नहीं पचे) खानेसें रक्तपित्त और कफकी वृद्धि होय, मूत्र अधिक उतरे । यह अभिष्यंदी और शुक्रजनक, तालफल खानेसें तन्द्रा उत्पन्न होतीहै । नवीनतालमज्जा किंचित् मदउत्पादक, हलकी, कफजनक, वातपित्तघ्न, स्निग्ध, मधुर और दस्तावर है ।

ताडी (तालका रस.)

तालजंतरुणंतोयमतीवमदकृन्मतम् ॥
अम्लीभूतंतदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ–तालका नवीन (टटका) रस अत्यंत, मादक (नसा लानेवाला) और वही खट्टे होनेसें पित्तकर्त्ता और वातनाशक होताहै ।

बेल.

बिल्वःशांडिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि ॥
बालंबिल्वफलंबिल्वकर्कटीबिल्वपेशिका ॥
ग्राहिणीकफवातामशूलघ्नीबिल्वपेशिका ॥
बालंबिल्वफलंग्राहिदीपनंपाचनंकटु ॥
कषायोष्णंलघुस्निग्धंतिक्तंवातकफापहम् ॥
पक्वंगुरुत्रिदोषंस्याद्दुर्जरंपूतिमारुतम् ॥
विदाहिविष्टंभकरंमधुरंवह्निमांद्यकृत् ॥ ५५ ॥
फलेषुपरिपक्वंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् ॥
बिल्वादन्यत्रविज्ञेयमामंतद्धिगुणाधिकम् ॥
द्राक्षाबिल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम्

अर्थ–बिल्व, शांडिल्य, शैलूष, मालूर और श्रीफल ए बेलके संस्कृत नाम है । क. बेललु, तै. मारेडी, ता. बिल्वपाश्चाम, अं. बेगालक्विन्स, ला. इगल मारमेलाश । कच्चाबेलफल, बिल्वकर्कटी और बिल्वपेशिका (अर्थात् बेलगिरी) कहातीहै । बेलगिरी ग्राही, कफ, वात, आम और शूल इनको नष्ट करेहै । अन्यत्रभी लिखाहै कि कच्चा बेलफल ग्राही,

दीपन, पाचन, चरपरा, कषेला, गरम, हलका, स्निग्ध, कडुवा और वातकफको नष्ट करताहै । पकाहुआ बेलफल भारी, त्रिदोषकारी, दुर्जर, दुर्गंधित, वातकारी, विदाही, विष्टंभकारी, मधुर और मदाग्निको करैहै । संपूर्ण फलमात्र पकेहुए गुणवाले होतेहैं परंतु बेलका फल कचाही गुणकारी होताहै । तथा दाख वेल और आवलेआदिके फल सूखेहुए अधिक गुणवाले होतेहै । और सर्व फल ताजे और आर्द्र गुणकारी होतेहै ।

कैथ.

कपित्थस्तुदधित्थःस्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः
कपिप्रियोदधिफलस्तथादंतशठोऽपिच ॥५७
कपित्थमामंसंग्राहिकषायंलघुलेखनम् ॥
पक्वंगुरुतृषाहिक्काशमनंवातपित्तजित् ॥
स्यादम्लंतुवरंकंठशोधनंग्राहिदुर्जरम् ॥५८॥

अर्थ–कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल और दंतशठ ए संस्कृतनाम । हिं. कैथ, बं. कयेतवेल, म. कवठ, कवठ, गु. कोठ, तै. एलागा काया, क. वेललु, ला. फेरोनिया एलिफेंटिनम, इं. वुडएपल । स्वरूप । इसका वडा भारी ऊचा दरखत होयहै । पत्ते इसके १ इंच लंबे तथा ½ पोनइंचके ऊचावम गुलाईलिये होतहै । डाठीपर पत्ते एक २ सख्यामें होतेहै । फूल छोटा और सफेद, तथा छूटी पांच पखडीवाले होतेहै । यह चूहेके जहरपर उपयोगी होतेहैं । फल नारंगीके बराबर कठोर गोल तथा मोटी छालका होताहै । इसके भीतरका गूदा खट्टा और धनियेके समान बहुतबीज होतेहै । इन बीजोंके भीतर सपेदमिंगी निकलतीहै । चित्र नंबर ३२ का देखो । गुण । कच्चा कैथका फल–ग्राही, कषेला, हलका, लेखन । पकाहुआ भारी, प्यास, हिचकी और वातपित्तको नष्ट करे । तथा इसमें कषेलापना कमहै, कठको शोधन करे, ग्राही और दुर्जर है । *

नारंगी.

नारंगोनागरंगःस्यात्त्वक्सुगंधोमुखप्रियः ॥
नारंगोमधुराम्लःस्याद्दीपनंवातनाशनम् ॥
अपरंत्वम्लमत्युष्णंदुर्जरंवातहृत्सरम् ॥५९॥

अर्थ–नारंग, नागरंग, त्वक्सुगंध और मुखप्रिय, ए संस्कृतनाम । हिं. नारंगी, म. नारिंग, क. माधवला, तै. दयाकाया, ता. किचिलि, उ. नारिंगी, अ. नारंज, अं. ओरेंज, ला. साईट्रस ओरेंटियम्, स्वरूप । इस छोटेसे वृक्षके पत्ते नीबूके आकारके होतेहैं, फूल सपेद रंगका पांचपखडी वाला होताहै । चित्र नंबर ३३ का देखो । गुण । नारंगी–मधुर, खट्टी, दीपन, वातनाशक । एक प्रकारकी नारंगी और होतीहै वह खट्टी, अत्युष्ण, दुर्जर, वातहरण कर्ता और दस्तावर है । †

* हिंदुस्तानीवैद्य—कैथके फलको ग्राही मानतेहे, तथा कच्चाफल दस्त और पेटके दर्दमे तथा पकाफल मसूढे और गलेकी सूजनपर देनेकी प्रशंसा करेहै ।

मीरमुहम्मदहुसेन—कहताहै कि कैथके पत्ते शीतल और फल शीतल और पाचक तथा एठन होनेके दूर करनेके लिये तथा गलेकी सूजन उतारनेके लिये और दांतोंके मसूढेमजबूत करनेको वर्त्ततेहै । फलके गूदेका सरबत् पीनेसे भोजन करनेकी रुचि बढतीहै । जहरवाले जीवके डकपर फलका गूदा अथवा छाल बांधतेहै । कैथके वृक्षके गोंदको पीस सहतमें मिलायके देनेसे दस्त तथा मरोरा दूर होय ।

चरकसंहितामें—कैथको खट्टा और ग्राही मानाहै, तथा पत्तोंका रस अग्निदीपक और पाचक मानाहै ।

† नीबू—नारंगीवगेरह अचार बनायके खानेमें तथा उनका रस दवामें और उसकी छालमेंसे निकलनेवाला तेल खुशबोके वास्ते वर्त्ततेहैं । बहुतखानेसे अथवा पाचक न होती होय एसी खुराक खानेके अजीर्णमें नीबूके अचारको जो बहुतसे निमकमें बहुत दिन राखकर सुखाय लिया होय उसके देनेसे आराम होयहै । नीबूकारस शीतल, दाहशामक और पाचक गिना जाताहै वह अजीर्ण और ज्वरमें लगनेवाली तृषाको बंद करनेके लिये देतेहै । नीबूके रसको सायकालमें खानेसे प्रातःकाल

तेंदू

तिंदुकःस्फूर्जकःकालस्कंधश्चासितकारकः
स्याद्गर्भेतिंदुकंग्राहिवातलंशीतलंलघु ॥
पक्वंपित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नंमधुरंगुरु ॥ ६० ॥

अर्थ-तिंदुक, स्फूर्जक, कालस्कंध और असितकारक ए संस्कृतनाम। हिं. तेंदू, म. टेंमुर्णी, दे. टेंमरू, गु. टींबरू, का. रुंपरु, तै. तमिकू, ता. तुंबिक, अं. एबनी, कौं. काकटेंमुर्णी, कांटेटेंमुरणी·

होवेवाली अजीर्णकी रद् होना दूर होय। तथा अनेक जातकी पाचनशक्ति वढानेंवाली दवाओंमें जैसे कि हिंगाष्टकचनाखेमें नीबूका रस अधिक वर्त्तावमें आताहे. वैद्यहरिश्चंद्र।

शार्ङ्गधरसंहितामें—संधिवातके सदृश रोगोमें नीबूकारस जवाखार और सहतकेसाथ मिलायके देनेकी प्रशंसा करीहै।

मुसलमानीवैद्यकके मतसे—नीबू नारंगी आदिकी छाल गरम मानीहै, उसका रस खट्टा होवतो शीतल और मीठारस होनेसे शरदी करनेवाला मानतेहैं। कोई २ रस शीतल और ग्राही गिनतेहैं। तथा यह पित्तकी उलटी बंद करनेवाला. तथा पाचनशक्ति बढानेको देतेहैं। तथा उस रस देनेके लिये उसको प्रथम खांड अथवा सहतके साथ मिलायके थोडी देर रखकर देतेहै।

मखजनउलअदवियोमें—लिखाहैकि यदि नीबूकी छाल दारूमें भिगोयके रखे तो दारूका सिरका बन जाताहे।

मुसलमानी हदीसमें—लिखाहे कि—जिस जगह नीबू होताहै वहां पर सैतान (भूतप्रेत) नहीं आयसका। संतरा और नीबूकी छालको सुखायके कूट पीस चूर्ण करलेवे उसको मीठे तेलमें भिगोय देवे बाद थोडी देरके निचोडलेय यह तेल गरम और रूखा माना जायहे। औरसरदीकी सूजन पर मालिश करनेमें वर्त्तनेमें आताहे। फूल और पत्तोंमेंसेभी तेल इसीप्रकार निकलताहे, उसके गुण ऊपर लिखे तेलके समानहीं हैं।

मुसलमानीग्रंथकर्त्ता—उत्तम नारंगी बडेकदकी पतली छालकी और सुंदर होनी चाहिये नारंगीकीछाल खानेसे पेटके कीडे निकल जातेहे। तथा नारंगीका मद्यसंधान कराहुआ पानी जागृत करता जानतेहैं। पित्तकी अधिकताके कारण दूखता मस्तक और उलटीके वास्ते नीबूकारस उत्तम फायदा करताहे। तथा रुधिर शुद्ध करेहै। सहत अथवा खांडमें डालके सुखायेहुए नीबू गलेके भीतरकी सूजनमें देनेकी प्रशंसा करतेहैं। तथा जुलाब लेनेके प्रथम पेटको तयार करनेके लिये तथा जुलाब लेनेके बाद दस्त बंद करनेको भी दिया जाताहे।

यूनानीहकीम—कहतेहे कि नारंगीके फलका पानी खुशबूके तरीके तथा दवाके तरीकेसे बहुत वर्ता जाताहे। रुधिरके बिगाडमें नारंगी अत्यंत गुण करतीहे। संधिवात और वदहजमीमें नारंगीकी छालका चूर्ण मेगनेसिया और रेवतचीनीका सीरा इन तीनोको मिलायके देनेसे बहुतउत्तम असर करेहे। पुराने नासूरपर नारंगीका गूदा सेक कर बांधनेसे बहुत जल्दी घाव भर आताहे। नीबू और नारंगीकीछालमेंसे मद्यसंधान करनेसे बहुत खुशबूदार तेल निकलताहे। नीबूके रसमेंसे निकलनेवाला साइट्रीकएसिड उलटी बंद करनेको कार्बोनेट ऑफ पुटाशके साथ मिलायके देतेहैं। नीबूकारस सरबत बनानेमें बहुत दिनोंसे अंतर देकर आनेवाले ज्वरमें नीबूकारस पोर्टवाइन नामकी दारू और सिंकोनाकी छालमें मिलायके देनेसे अत्यंत उत्तम फायदा करेहे।

डा० ग्रीन—कहताहै कि कपडोमें एक संतरा धरदिया जाय तो उसमें कीडे नहीं लगते. तथा खायेहुए जहरपर यह बहुत उत्तम असर करेहे। कारण यहहे कि जिस समय दारूकेसाथ मिलायके उसका रस पीताहै उस वक्त आंतडोंपर असरकर जहरको खींचके निकाल लेयहे। संतरा (नारंगी) की

गुण । कच्चा तेंदू-ग्राही, वातल, शीतल, हलका । पकाहुआ । पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार, कफनाशक, मधुर और भारी । *

कुचला

तिंदुकोयस्तुकथितोजलदोदीर्घपत्रकः ॥
कुपीलुःकुलकःकाकतिंदुकःकाकपीलुकः ॥
काकेंदुर्विषतिंदुश्चतथामर्कटतिंदुकः ॥
कुपीलुशीतलंतिक्तंवातलंमदकृल्लघु ॥
परंव्यथाहरंग्राहिकफपित्तास्रनाशनम् ॥ ६२
मूत्रप्रवर्त्तनंबल्यंवह्निकृत्कामदीपनम् ॥
शूलमेकांगरोगंचशुक्रमेहमपस्मृतिम् ॥
ग्रहणीमतिसारंचगुदभ्रंशंमदात्ययम् ॥
सर्वांगकंपंदौर्बल्यमचिरेणविनाशयेत् ॥

अर्थ-तिंदुक, जलद, दीर्घपत्रक, कुपीलु, कुलक, काकतिंदुक, काकपीलुक, काकेंदु, विषतिंदु, तथा मर्कटतिंदुक ए संस्कृतनाम है । हिं. कुचला, मकरतेंदुआ, म. काजरा, गु. झेरकोचला, झेरकचोला, तै. मुंष्टिगिंजा, का. कांजिवार, फा. इफाराकी, अं. कातिलुल्, कल्बफलूज माही, अं. पॉईझननट्, इं. नक्सवामिका । कुचलाके वृक्षमें फल लगतेहैं उसके

१ सतिंदुकश्चकथितो इति । २ कालस्तिंदुकः कालपीलुकः इति ।

छालमें इतनी ज्यादा सुगंधी होतीहै कि चीनी मनुष्य घरमें हवाको खुशबूदार करनेके लिये उस फलको रकाबीमें रखकर धरदेतेहै । नारंगी और नीबूकी समान उनकी छालमेंसेभी सुगंधित तेल निकलताहै ।

चरकसंहितामें—मीठे नीबू कफवातघ्न, कृमिहर, भुक्तपाचक, त्रिदोषघ्न मानेहैं, और उसकी जड़ कफवातजित् गिनी जातीहै । महालुंग जिसको भाषामें **बिजोरा** कहतेहैं उसको उसी पुस्तकमें उलटीबंद करनेको देनेकी प्रसंशा करीहै । **फलकीछाल** यहूदीलोक कटु, उष्ण, पाचक, रोचक, और वातनाशक मानतेहैं ।

देशीवैद्यकग्रंथोंमें—नारंगीके मगजको पित्तनाशक और रुधिर शुद्ध करता गिनतेहै । नारंगीकेफूलमें से निकलनेवाला अतिसुवासिक अतरको इंग्रेजीमें **ओलियमनीरोली** अथवा **नीरोलीकातेल** कहतेहे । तथा वह बड़ा अकरा विकताहै ।

* **हिंदुस्थानीलोग**—तैन्दूके फलका ताजा रस घावपर लगातेहैं । गरीब मनुष्य इस फलको खातेहैं तथा उसके **बीजोंको** धर रखतेहैं । इनको दस्तकी बिमारीमें देशीलोग उसको ग्राही गुणोंके कारण वर्त्ततेहैं ।

इंग्रेजीऔषधोंमें—तैंदूको बहुत ग्राही वर्णन कराहे, उसका सत्व बनानेके वास्ते फलको कुचलकर दाबके उसका रस काढके उसको ओटायके गाढा करलिया जाताहै । यह **सत्वललोही** लिये भूरेरंगका होताहै । और यह पानीमें बहुतजल्दी घुल जाताहै । दस्त और बहुत दिनोंके शूलमें बहुत उपयोगीहै । गिर पड़नेसे यदि नस हटगई होय अथवा चमड़ी छिलगई होय तो इस फलके रसका लेप करनेसे सूजन नहीं चढती । ऊपर कहाहुआ सत्व १० आनेभरके उसको सवासेर पानीमें पिगलायकर इस पानीकी पिचकारी मारनेसे स्त्रियोंकी जननेंद्रीसे निकलनेवाला सफेद प्रवाह बंद होताहै । इस सत्वके बनातीवखत पीलाइ अथवा लोहेका औजार काममें नहीं लाना क्योंकि ऐसा करनेसे रस काला होजाताहै । उत्तम प्रकारसे बनाये हुए सत्वका रंग लाखके समान होताहै । इसके **बीजोंमेंसे** औषधमें वर्त्तनेयोग्य तेल निकलताहै । कोमलपत्तोंका कितनेक देशोंमें साग करतेहैं । छालको बारीक पीस घाव और नासूर पर लगातेहैं । तथा कालीमिरचोंके साथ मिलायके ऐंठनके रोगमें देतेहैं ।

चरकमें—कथेफलको वात और पित्तको बैठानेवाला वर्णन कराहे ।

सुश्रुत संहितामें—रक्तपित्तहर, दाहनाशक, योनिदोषहर, व्रण और संग्राही, वर्णन कराहै । फलके रसमेंसे निकाला सत्व प्राचीन संग्रहणी पर उत्तम असर करेहै ।

भीतरके बीजको: अहर कुचला कहतेहैं । कोई २ कुचलेका सस्मन करतेहै । चित्र नंबर ३४ का देखो । गुण । कुचला–शीतल, ग्राही, कडवा, वातकारी, मदकर्ता और हलका है । अत्यंत व्यथा नष्ट करे, तथा कफ, पित्त और रुधिरविकारको नष्ट करे । मूत्र लानेवाला, बलकारी, अग्निवर्द्धन, कामोत्तेजक, शूल, एकांगवात, शुक्रमेह, मृगी, संग्रहणी, अतिसार, गुदभ्रंश, मदात्यय, सबअंगोंका कंप, दुर्बलता, इनको तत्काल दूर करे ।

फरेन्द.

फलेंद्राकथितानंदोराजजंबूर्महाफला ॥
तथासुरभिपत्राचमहाजंबूरपिस्मृता ॥
राजजंबूफलंस्वादुविष्टंभिगुरुरोचनम् ॥६३॥

अर्थ–फलेन्द्र, नंद, राजजंबु, महाफला, सुरभिपत्रा और महाजंबू ए संस्कृतनाम । हिं. राजजामन, फरेंद, बं. गोलापजाम, म. थोरजांबल, राजले, क. नीरल्ह, तै. पेद्दा नेरडी । गुण । राजजामन–स्वादिष्ट, विष्टंभी, भारी और रुचिकारी ।

जामुन–नदीजामुन.

क्षुद्राजंबूःसूक्ष्मपत्रानादेयीजलजंबुका ॥
जंबूःसंग्राहिणीरूक्षाकफपित्तास्रदाहजित् ॥

अर्थ–क्षुद्राजंबू, सूक्ष्मपत्रा, नादेयी, जलजंबुका, ए छोटीजामनके नाम है । बं. जाम, म. जांबुल, गु. जांबू, इं. जांबूल, ला. सीझीजयम् जांबुलानम् कहतेहै । जामन दोप्रकारकी होती हैं । एक बनजामुन इसके पत्ते कनेरके माफिक लंबे मालेके आकार होते हैं, और दूसरे महाजंबूके पत्ते मोटे और कुछ छोटे होते हैं । इस वृक्षमें गुच्छपुष्प और गुच्छफल होताहै । गुण । जामन–संग्राही, रूखी, कफपित्त, रुधिर और दाहको दूर करे । *

बेर.

पुंसिस्त्रियांचकर्कंधुर्बदरीकोलमित्यपि ॥
फेनिलंकुवलंघोंटासौवीरंबदरंमहत् ॥
अजप्रियाकुहाकोलीविषमोभयकंटका ॥६५॥
पच्यमानंसुमधुरंसौवीरंबदरंमहत् ॥
सौवीरंबदरंशीतंभेदनंगुरुशुक्रलम् ॥ ६६ ॥
बृंहणंपित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवारणम् ॥
सौवीरंलघुसंपक्वंमधुरंकोलमुच्यते ॥ ६७ ॥
कोलंतुबदरंग्राहिरुच्यमुष्णंचवातलम् ॥
कफपित्तकरंचापिगुरुसारकमीरितम् ॥६८॥
कर्कंधुःक्षुद्रबदरंकथितंपूर्वसूरिभिः ॥
अम्लंस्यात्क्षुद्रबदरंकषायंमधुरंमनाक् ॥६९॥
स्निग्धंगुरुचतिक्तंचवातपित्तापहंस्मृतम् ॥
शुष्कंभेद्यग्निकृत्सर्वंलघुतृष्णाक्लमास्रजित् ॥

अर्थ–कर्कंधु, बदरी, कोल, फेनिल, कुवल,

* हिंदुस्थानीवैद्य—जामुनके रसको सडायके सिरका बनातेहै इसे पेटकी पीडा नष्ट करता तथा पेसाव अधिक लानेवाला मानतेहैं इसीसे वह उस रसको मद्यसंधान करके अर्वाचीनसंस्कृत ग्रंथमें लिखा जामुनकाआसव नामक मद्य बनातेहै । इसकी छाल बहुत कसेलीहै तथा स्तंभक होनेके कारण अन्य २ औषधोंमें मिलाय और कुल्ले करनेकी दवा. घावधोनेके वास्ते मिश्रवगैरह बनानेमें वर्त्ततेहैं । छोटे २ बच्चोंको दस्त होते होय तो छालका ताजा रस बकरीके दूधके साथ मिलायके देतेहैं ।

मखजनउलअदवियामें—लिखाहै कि पित्तके दस्तोंमें जामुन खानेसे बहुत फायदा होताहै । उसीप्रकार गलेमें सूजन होय तोभी यह फल उत्तम असर करताहै । माथेमें इन्द्रलुप्त रोग (जिसमेंबाल उड़जातेहैं) होगया होय तो उसकोभी यह रस आराम करताहै । वही लिखनेवाला कहताहै कि जड. बीज और पत्ते उत्तम ग्राहीहैं । पकीजामुनका रस निकाल उसका सरबत बनाया होय तो यह पेटकी पेठन नष्ट करेहै. तथा बहुत दिनकी दस्तकी बिमारी नष्ट होतीहै ।

चरकग्रंथमें—लिखाहै कि जामुन और उसकी छाल मूत्रसंग्रहण और पुरीषविरंजनीय (मलका रंगदेनेवाला अथवा रंगबदलनेवाला) वर्णन कराहै ।

सुश्रुतमें—लिखाहै कि उसको रक्तपित्तहर, दाहनाशक, योनिदोषहर, अग्न्य, और संग्राही (स्तंभक) वर्णन कराहै ।

घोंटा, सौवीर ए छोटे बेरके नाम है । और बडे बेरको सौवीर कहतेहै । तथा बेरके अन्यनाम ये है, जैसे–अजाप्रिया, कुहा, कोली, विषम और उभय-कंटक । बं. कुल, म. बोर, उ. कुडि, गु. बोरडी, का. येरनु, तै. रेगुचेट्टू, ता. रेयति, अं. जुजब, ला. झिझिफस जुजबा, फा. सिदर, कुनार । **गुण** । जो बेर बडा और पककर मीठा होगया हो उसको **सौवीर** अर्थात् पैमंदी बेर कहतेहै । यह शीतल, भेदक, भारी, वीर्यजनक और पुष्टिकारी । **प्रयोग** । पित्तजन्य दाह, रुधिर, दोष[illegible] और तृषा इनको दूर करे । जो बेर छोटे २ और पकेहुए होतेहै इनको **कोल** अर्थात् गोला, दौलतखानी बेर कहतेहै । ये ग्राही, रोचक, गरम, वातकारी, कफपित्तकर्ता, भारी और सारक है । **बहुतछोटे** अर्थात् झाडया बेरको कर्कन्धु कहतेहै । ये खट्टे, कषेले, थाडे मीठे, स्निग्ध, भारी, कडवे और वातपित्तनाशक । बेर मात्र **सूखाहुआ** भेदक, अग्निकारक, हलका, तृषानिवारक, श्रमको शांतिकर्ता और रक्तदोषको नाश करैहै [प्राय सूखे बेरोंको मालिन कूटकर **बिरचन** बनाकर बेचतीहै उसकेभी यही गुण है ।]*

पानीआवरा.

प्राचीनामलकंलोकेपानीयामलकंस्मृतम् ॥
प्राचीनामलकंदोषत्रयजिज्ज्वरघातिच ॥

अर्थ–प्राचीन आमलकको लोकमें पानीयामलक और म. पानआवली, अं. फ्लाकुर्याका टाफ्राक्टा कहतेहै । **गुण** । त्रिदोषनाशक और ज्वरको शांति करैहै ।

हरफारेवडी. लवली.

सुगंधमूलालवलीपांडुःकोमलवल्कला ॥
लवलीफलमश्मार्शःकफपित्तहरंगुरु ॥
विशदंरोचनंरूक्षंस्वाद्वम्लंतुवरंरसे ॥ ७२ ॥

अर्थ–सुगंधमूला, लवली, पांडु और कोमलवल्कला ए संस्कृतनाम, हिं. हरफारेवडी । बं. लोयाड, म. हरफररेवडी । **गुण** । **लवलीफल**–भारी, विशद, रोचन, रूक्ष, स्वादु, अम्ल और कषेला है । **प्रयोग** । पथरी, बवासीर, कफपित्तको हरण करे ।

करोंदाकरौंदी.

करमर्दःसुषेणःस्यात्कृष्णपाकफलस्तथा ॥
तस्माल्लघुफलायातुसाज्ञेयाकरमर्दिका ७३
करमर्दद्वयंत्वाममम्लंगुरुतृषाहरम् ॥
उष्णंरुचिकरंप्रोक्तंरक्तपित्तकफप्रदम् ॥
तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुपित्तसमीरजित् ॥७४॥

अर्थ–करमर्द, सुषेण, कृष्णपाकफल, ए करोंदाके सं. नाम, बं. करमचा, म. करवद, गु. करमदा, तै. वाका, ला. कोरेसा कोरदास । इससे जो छोटी है उसको करमर्दिका कहतेहै । **गुण** । दोनों कच्चे करोंदा खट्टे, भारी, तृषानाशक, गरम, रुचिकारी और रक्तपित्त तथा कफको हरण करे । पके हुए मीठे, रुचकारी, हलके, पित्त और बादीको जीते ।†

चिरोंजी.

प्रियालस्तुखरस्कंधश्चारोबहुलवल्कलः ॥
राजादनस्तापसेष्टःसन्नकद्रुर्धनुःपटः ॥७५॥

* **डा० मीरमुहम्मद हुसेन**—कहताहै कि बेर कफको घटाताहै. तथा रुधिरको शुद्ध करैहै. वृक्षकी छालकी क्वाथ घाव और सूजन धोनेमें [illegible] इसकागोंद नेत्रके दर्दमें वर्त्ता जाताहै. यदि कोई बुरे स्वादकी दवा पीनी होवे तो बेरके पत्ते पहलेचबायके फिर उस दवाको पीवेतो जीभको खराब स्वाद नहीं लगताहै ।

डा० एनस्ली—कहताहै कि बेरकी जडको बेलजरी कहतेहैं, इसको कितनेक गरम पदार्थोंके साथ क्वाथ करके देनेसे कई जातके ज्वरोमे उत्तम असर करैहै ।

सुश्रुतमें—बेर रक्तपित्तहर, वातशमन, शुक्रदोषनाशक, और शोकनाशक मानाहै ।

चरकमें—उसको स्वेदोपग, विरेचनोपग, छर्दिनिग्रहण, श्रमहारक, और वातपित्त शमनकर्त्ता वर्णन कराहै।

† **हिंदुस्थानी औषधोंमें**—करोदा कच्चे ग्राही और पके हुए [illegible] गिने जातेहै । तथा पित्तको नरम करनेको देतेहै, इसकीजडसे पेटकी ऐंठन मंदाग्नि ज्वर नष्ट होय और पेटके कीडे तथा विषकानाश होताहै ।

सुश्रुतमें—इसको रक्तपित्तहर, शुक्रदोषहर, सर्वप्रमेहनाशक और शोथहर गिनाहै ।

चारःपियालकस्तस्यफलंमधुरंगुरु ॥
स्निग्धंसरंमरुत्पित्तदाहज्वरतृषापहम् ७९
पियालमज्जामधुरोवृष्यःपित्तानिलापहः ॥
हृद्योऽतिदुर्जरःस्निग्धोविष्टंभीचामवर्द्धनः ॥

अर्थ-पियाल, खरस्कंध, चार, बहुवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्नकद्रु, और धनुःपट, ए संस्कृत नाम, हिं. चिरोंजी, म. चारोळी, बं. पियाल, का. चारबीज, ता. काटमरा, उडि. चरु-पे, चिरोंजी, अ. हब्बुस्समाना, फा. बुकलेखाजा, ला. बुकेनानिया लेटिफोलिया, तै. सारुपपू । गुण । पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे । इसका फल मधुर, भारी, स्निग्ध, सर, वादी, पित्त, दाह, ज्वर और प्यासको नाश करेहै । चिरोंजीकी मज्जा-मधुर, वृष्य, पित्तवादीको नष्ट करे, हृदयको हितकारी, अतिदुर्जर, स्निग्ध, विष्टंभी और आमको बढानेवाला है ।

खिरनी.

राजादनःफलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच ॥
क्षीरिकायाःफलंवृष्यंबल्यंस्निग्धंहिमंगुरु ॥
तृष्णामूर्छामदभ्रांतिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥

अर्थ-राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या और क्षीरिका, ए संस्कृतनाम । हिं. खिरनी, खिर्नी, बं. क्षीरखेजूर, म. राजणी, गु. रायण, का. खेणेमारिळे, ता. पल, इं. ओवट् युसलीव्ह माईमुसोप्स । गुण । खिरनी-वृष्य, बलकारी, स्निग्ध, शीतल, भारी, तृषा, मूर्छा, मद, भ्रांति, क्षय, त्रिदोष और रुधिरविकार, इनको दूर करे ।

कंटाई.

विकंकतःस्रुवावृक्षोग्रंथिलः स्वादुकंटकः ॥
सएवयज्ञवृक्षश्चकंटकीव्याघ्रपादपि ॥
विकंकतफलंपक्वंमधुरंसर्वदोषजित् ॥ ७९ ॥

अर्थ-विकंकत, स्रुवावृक्ष, ग्रंथिल, स्वादुकंटक, यज्ञवृक्ष, कंटकी और व्याघ्रपाद ए संस्कृत नाम । हिं. विकंकत, कंटाई, बं. बंइची, म. विकळ, पिंडरोहिणी, वेहकल, गु. विकळो, का. हलुमाणिका, मालेगु, उ. वइचकुली, पं. कुकोया, ला. सिलमूट्स्-मोडेना । इसके यज्ञमें स्रुवा बनाए जातेहै । गुण । विकंकतका पका फल-मीठा और सर्वदोष हरण कर्ता जानना ।

कमलगट्टा.

पद्मबीजंतुपद्माक्षंगालोड्यंपद्मकर्कटी ॥
पद्मबीजंहिमंस्वादुकषायंतिक्तकंगुरु ॥ ८० ॥
विष्टंभिवृष्यंरूक्षंचगर्भसंस्थापकंपरम् ॥
कफवातकरंबल्यंग्राहिपित्तास्रदाहनुत् ॥८१

अर्थ-पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य और पद्मकर्कटी, ए संस्कृत नाम । हिं. कमलगट्टा, म. कमलाक्ष, कमलकाकडी, तै. तामरकाया, अ. वालकेकुवति । गुण । शीतल, स्वादु, कषेले, कडवे, भारी, विष्टंभी, वृष्य, रूक्ष और सर्वोपर गर्भदाता, कफ और वादीके करनेवाले, बलकारी, ग्राही, पित्त, रुधिरविकार और दाहको नष्ट करे ।

मखाना.

माखान्नंपद्मबीजाभंपानीयफलमित्यपि ॥
माखान्नंपद्मबीजस्यगुणैस्तुल्यंविनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-माखान्न, पद्मबीजाभ और पानीयफल, ए संस्कृतनाम, हिं. मखाना, म. मकाणे, दे. गीलणिच, ला. युर्यलोफेरोक्स । गुण । मखानेके गुण कमलगट्टेके समान जानने चाहिये ।

सिंघाडा.

शृंगाटकंजलफलंत्रिकोनफलमित्यपि ॥
शृंगाटकंहिमंस्वादुगुरुवृष्यंकषायकम् ॥
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मप्रदंपित्तास्रदाहनुत् ॥

अर्थ-शृंगाटक, जलफल और त्रिकोणफल ए संस्कृतनाम । हिं. सिंघाडा, म. शिंगाडे, बं. पाणीफल, गु. सींगोडा, तै. परिगेगड्डु, फा. सुरजानू, अं. वॉटरलेल्ट्र्प्, ला. ट्रापाबाई स्पाईनोसा । गुण । सिंघाडा-शीतल, स्वादु, गुरु, वृष्य, कषेला, ग्राही, शुक्रकारक, वात और कफकारक, पित्त, रुधिरविकार और दाहको नष्ट करे ।

बेरा.

उक्तंकुमुदबीजंतुबुधैःकैरविणीफलम् ॥
भवेत्कुमुद्वतीबीजंस्वादुरूक्षंहिमंगुरु ॥ ८४

अर्थ-कमोदिनीके फलको कैरविणीफल कहतेहैं। गुण। कमोदिनीके बीज-स्वादु, रूक्ष, शीतल और भारी है।

महुआ.

मधूकोगुडपुष्पःस्यान्मधुपुष्पोमधुस्रवः ॥
वानप्रस्थोमधुष्ठीलोजलजेऽत्रमधूलकः ॥ ८५
मधूकपुष्पंमधुरंशीतलंगुरुबृंहणम् ॥
बलशुक्रकरंप्रोक्तंवातपित्तविनाशनम् ॥ ८६
फलंशीतंगुरुस्वादुशुक्रलंवातपित्तनुत् ॥
अहृद्यंहंतितृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-मधूक, गुडपुष्प, मधुपुष्प, मधुस्रव, वानप्रस्थ, मधुष्ठील और जलमहुआको मधूलक, कहतेहै। हिं. महुआ, बं. मोल, महुया, जलमोल, म. मोहाचा वृक्ष, मोहोवृक्ष, गु. महुडो, तै. ईपा, ता. कठईलुपि, अं. इलूपाट्री, ला. बेसिया लाटीफोलिया, फा. सफर्जल, आबीविही। गुण। मीठा, शीतल, भारी, बृंहण, बल और शुक्रकर्त्ता, तथा वातपित्तनाशक है। महुएका फल। शीतल, भारी, स्वादिष्ट, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक हृदयको अहित। प्रयोग। तृषा, रुधिरविकार, दाह, श्वास, क्षत (घाव) और क्षयको दूर करे। *

फालसा.

परूषकंतुपरुषमल्पास्थिचपरापरम् ॥
परूषकंकषायाम्लमामंपित्तकरंलघु ॥ ८८ ॥
तत्पक्वंमधुरंपाकेशीतंविष्टंभिबृंहणम् ॥
हृद्यंतुपित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् ॥८९॥

अर्थ-परूषक, परुष, अल्पास्थि और परापर ए संस्कृतनाम, हिं. फालसे, बं. फलसा, फा. पेरहा, तै. पुटकी, अं. एस्याटिक् ग्रेविया। गुण। कच्चे-फालसे-कषेले, खट्टे, पित्तकरता और हलके है। पकेहुएफालसेभाकमें मधुर, शीतल, विष्टंभी, बृंहण, हृदयको प्रिय। प्रयोग। पित्त, दाह, रुधिरविकार, ज्वर, क्षय और वादीको दूर करे।

तूत (शहतूत.)

तूतःस्थूलश्चपूगश्चक्रमुकोब्रह्मदारुच ॥
तूतंपक्वंगुरुस्वादुहिमंपित्तानिलापहम् ॥
तदेवामंगुरुसरमम्लोष्णंरक्तपित्तकृत् ॥ ९०

अर्थ-तूत, स्थूल, पूग, क्रमुक और ब्रह्मदारु, ए संस्कृत नाम, हिं. सहतूत, बं. तुत, म. तूते, तै. कंबलीचेट्टु, ता. मचुकट्टचेट्टि, अं. मलबेरिस, ला. मोरसइन्डिका। गुण। पकेसहतूत-भारी, स्वादिष्ट, शीतल, पित्त, वादी, इनको नष्ट करे। कच्चे भारी, दस्तावर, खट्टे, गरम और रक्तपित्तको करतेहैं।

अनार.

दाडिमःकरकोदंतबीजोलोहितपुष्पकः ॥
तत्फलंत्रिविधंस्वादुस्वाद्वम्लंकेवलाम्लकम्
तत्तुस्वादुत्रिदोषघ्नंतृड्दाहज्वरनाशनम् ॥
हृत्कण्ठमुखगंधघ्नंतर्पणंशुक्रलंलघु ॥ ९२ ॥
कषायानुरसंग्राहिस्निग्धंमेधाबलावहम् ॥
स्वाद्वम्लंदीपनंरुच्यंकिंचित्पित्तकरंलघु ॥
अम्लंतुपित्तजनकमम्लंवातकफापहम् ॥९३॥

अर्थ-दाडिम, करक, दंतबीज और लोहितपुष्पक ए संस्कृत नाम, हिं. अनार, दा. दाडमु, दाडिम, म. डालिंब, गु. दाडयम, क. दालिंब, तै. दालिंबा काया, दानिमचेट्टु, ता. मादलई चेडि, उडि. दालिंब, अ. रुम्मान, अं. पोम्ग्रानेट। गुण। अनारका फल तीन प्रकारका होताहै। मीठा, मीठाखट्टा और केवल खट्टा। तहां मीठा अनार। त्रिदोषहर, प्यास, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कंठरोग, मुखकी गंधको नष्ट करता, तृप्त-

---

* सुश्रुतमें—महुएके फूलमेंसे निकालाहुआ दारू गरम, ग्राही, कुव्वत देनेवाला, और क्षुधाको प्रदीप्त करता गिनतेहैं। तथा उसके बीजोंमेंसे निकाला तेल मस्तकके रोगमें मस्तकपर लगाया जाताहै। तथा वृक्षकी छाल पाचक, पित्तवातनाशक, मूत्रकृच्छ्रहर तृषानाशक, रक्तपित्तहर्त्ता, पक्वातिसारनाशक, पित्तज्वरनाशक, दाहनाशक और श्वासहर वर्णन करीहै।

चरकमें—महुएके फूलको शोणितस्थापन, रक्तशुद्धिकर, ग्राही और स्तंभक वर्णन कराहै।

कर्त्ता, शुक्रकर तथा हलका, कषायरस, ग्राही, स्निग्ध, स्मरणशक्तिवर्धक और बलकारक । खट्टा और मीठा अनार अग्निदीप्तकर, रोचक, किंचित्पित्त-जनक । और केवल खट्टा अनार पित्तकारी और वातकफनाशक है । *

बहुवार.

बहुवारस्तुशीतःस्यादुद्दालोबहुवारकः ॥
शेलुःश्लेष्मातकश्चापिपिच्छिलोभूतवृक्षकः ॥
बहुवारोविषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठनुत् ॥
मधुरस्तुवरस्तिक्तःकेश्यश्चकफपित्तहृत् ॥
फलमामंतुविष्टंभिरूक्षंपित्तकफास्रजित् ॥
तत्पक्वंमधुरंस्निग्धंश्लेष्मलंशीतलंगुरु ॥ ९६ ॥

अर्थ-बहुवार, शीत, उद्दाल, बहुवारक, शेलु, श्लेष्मातक, पिच्छल और भूतवृक्षक ए संस्कृत नाम है । हिं. लिहसोडा, निसोरे, बहुवार और छोटे लिहसोडेको लभेरा कहतेहैं । म. भोंकर, ता. विडि, तै. नाकेर, उडि. भद, फा. शिपिस्ता, सरपिस्ता, अं. सेरोलिब्ड सेपिस्टन, ला. कोर्डिया एंगस्टी फोलिया । गुण । मधुर, कषाय, कडवे, बालोंको सुंदरताकारक और कफपित्तनाशक । प्रयोग । विष, विस्फोटक, व्रण, वीसर्प और कुष्ठरोगको नाश करे । इसके कच्चेफल-रूक्ष, विष्टंभी, पित्तनाशक, कफको शांतिकर और रक्तदोष निवारक । पकेफल-मधुर, स्निग्ध, कफवर्द्धक, शीतल और भारी । मात्रा । नग ३, निसोरे कलेजेको अहित करेहै । इसके दर्पनाशक उन्नाव है ।

कतक.

पयःप्रसादिकतकंकतकंतत्फलंस्मृतम् ॥
कतकस्यफलंनेत्र्यंजलनिर्मलताकरम् ॥
वातश्लेष्महरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ॥ ९७ ॥

अर्थ-कतक-पयप्रसादी अर्थात् जलको निर्मल-कर्त्ता, इसके फलका नाम कतक । हिं. निर्मली, बं. निर्मला, म. निवली, का. चिल्लीकापि, अं. आनद् विचक्लिअर्से वाटर । यह फल नेत्रोंको आरोग्यकर्त्ता और जलके मलको दूर करनेवाला, वातकफनाशक, शीतल, मधुर, कषेला और भारी है ।

* हिंदुस्थानी वैद्य—अनारके रसको केसरके साथ मिलायके शीतल प्रयोगमें देनेकी प्रसंसा करतेहै । आंतडोंकेरोगमें (दस्तकी कब्जियत न होय तव) फलकी छाल और फूल, लौंग, तज, धनिया, कालीमिरचआदि खुशबूदार पदार्थोंकेसाथ मिलायके देतेहैं । हिंदीवैद्यककी पुस्तकोंमें जडकी छालके लिये किसीप्रकारका वर्णन देखनेमें नहीं आया ।

मुसलमानी ग्रंथकार—मिठा, खट्टा और खटमिट्टा ऐसे तीनप्रकारके अनार वर्णनकरेहै । तथा फलकीछाल तथा फूल उसको ग्राही गुणोंके कारण अनेकप्रकारके रोगोंमें वर्त्ताव करेजातेहैं । और कहतेहै कि जडकीछाल वृक्षके अन्य सर्वभागोंसे अधिक ग्राहीहै तथा पेटमें होनेवाले चपटे लंबे कीडों (Tapeworm) के वास्ते बहुत उत्तम आजमूदे दवाहै । तथा उसको रोगमें देनेके वास्ते ५ तोले ताजी छाल २ सेर पानीमें डालके एकसेर जब पानी बाकी रहे तब उतार लेवे शीतल होनेपर इसमेंसे एक एक प्याला आध २ घडीमें जहातक सब न निवट जाय तहांतक पीनेको देतेहैं । अनेकवार इस क्वाथके पीनेसे पेटसे रद होकर निकलनेकीसी भ्रांति होतीहै । परंतु थोडी देरमेंही पेटके तमाम कीडे निकल जातेहैं । अनारके बीज और बीजोंकारस पेटकी एंठन नष्ट कर्त्ताहै । दस्तकी बीमारीमें छालके क्वाथमें थोडीसी अफीम डालके देनेसे बहुत उत्तम असर करेहैं ।

डा० फर्कपेट्रीक—कहताहै कि फलकीछाल पाचनशक्ति बढानेको और ग्राही तथा प्राचीन मरोडाके आजारमें उसको लौंगके साथ औटायके देनेसे अन्य २ उपचार (इलाजों) की बनिस्बत अधिक गुण करेहैं ।

चरकग्रंथमें—अनारको वमननाशक, हृद्य (रुधिरउत्पन्नकरके शरीरको उत्तेजन देनेवाला) वर्णन कराहै ।

सुश्रुतग्रंथमें—उसको वातनाशक, मूत्रदोषहर (मूत्रस्थानके रोग नष्टकर्त्ता) तृषानाशक और रुचिकारक गिनतेहैं ।

द्राक्षा (दाख).

द्राक्षास्वादुफलाप्रोक्तातथा मधुरसापिच ॥
मृद्वीकाहारहूराचगोस्तनीचापिकीर्तिता ॥
द्राक्षापक्कासराशीताचक्षुष्याबृंहणीगुरुः ॥
स्वादुपाकरसास्वर्यातुवरासृष्टमूत्रविट् ॥
कोष्ठमारुतकृद्वृष्याकफपुष्टिरुचिप्रदा ॥
हंतितृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामलाः ॥
कृच्छ्रास्रपित्तसंमोहदाहशोषमदात्ययान् ॥
आमास्वल्पगुणागुर्वीसैवाम्लारक्तपित्तकृत्॥
वृष्यास्याद्गोस्तनीद्राक्षागुर्वीचकफपित्तनुत्
अबीजान्यास्वल्पतरागोस्तनीसदृशीगुणैः॥
द्राक्षापर्वतजालघ्वीसाम्लाश्लेष्माम्लपि-
त्तकृत् ।
द्राक्षापर्वतजायादृक्ताहशीकरमर्दिका॥ २ ॥

अर्थ-स्वादुफला, द्राक्षा, मधुरसा, मृद्वीका, हारहूरा और गोस्तनी ए संस्कृत नाम, हिं. दाख, गु. द्राक्ष, ता. कोडिमण्डिरिप्पह्याम्, अ. अनबमवीजे, फा. अंगूर, मुनक्का, अं. ग्रेप-रोझिन्स, ला. वाइटिस् विनिफोरा कहतेहैं । गुण । पकीदाख-शीतल, दस्तावर, नेत्रोंको हितकारी, पुष्टिकारक, भारी, स्वादु पाकवाली, स्वरशोधक, कषाय, वृष्य, भेदक, मूत्रकारक, कफवर्द्धक, पुष्टिकर, रोचक, कोठेमें वादीको उत्पन्नकर्ता । प्रयोग । तृषा, ज्वर, श्वास, वातप्रधान वातरक्त, कामला, घोर रक्तपित्त, प्रमेह, दाह, शोष और मदात्यय रोगको नष्ट करे । कचीदाख । अर्थात् कची अंगूरमें अल्प शक्ति है-यह भारी, खट्टी, रक्तपित्तरोगोत्पादक । गोस्तनीदाख । अर्थात् काली मुनक्का-शुक्रकर्ता, भारी और कफपित्तनाशक । क्षुद्रबीजकी दाख अर्थात् किसमिस मुनकाके समान गुण करे है । पर्वतीदाख-हलकी, खट्टी, कफ और अम्लपित्तको करे । और करौंदीदाख (करौंदाके सदृश)-यह पहाडी दाखकेसे गुण करेहै । इनमें किसमिस हीन गुणवान् है ।

छोटीखजूर, पिंडखजूर और छुहारा.

भूमिखर्जूरिकास्वाद्वीदुरारोहामृदुच्छदा ॥
तथास्कंधफलाकाककर्कटीस्वादुमस्तका ॥
पिंडखर्जूरिकात्वन्यासादेशेपश्चिमेभवेत् ॥
खर्जूरीगोस्तनाकारापरद्वीपादिहागता ॥४॥
जायतेपश्चिमेदेशेसाछोहारेतिकीर्त्यते ॥
खर्जूरीत्रितयंशीतंमधुरंरसपाकयोः ॥ ५ ॥
स्निग्धंरुचिकरंहृद्यंक्षतक्षयहरंगुरु ॥
तर्पणंरक्तपित्तघ्नंपुष्टिविष्टंभशुक्रदम् ॥ ६ ॥
कोष्ठमारुतहृद्बल्यंवांतिवातकफापहम् ॥
ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम्॥
मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदांतकृत् ॥
महतीभ्यांगुणैरल्पास्वल्पखर्जूरिकास्मृता ॥
खर्जूरीतरुतोयंतुमदपित्तकरंभवेत् ॥
वातश्लेष्महरंरुच्यंदीपनंबलशुक्रकृत् ॥ ९ ॥

अर्थ-भूमिखर्जूरिका, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कंधफला, काककर्कटी और स्वादुमस्तका ए संस्कृतनाम । क्षुद्रखजूर अर्थात् देशी खजूरके नाम है । बं. खेजूर, म. शिंदी, का. ईचिलु, तै. ईटांचेट्टु, फा. खुर्मा, अ. तमरहतव, अं. डेट्पाम Date palm. पिंडखजूर । पश्चिम देश (काबुलआदिमें) उत्पन्न होतीहै । छुहारानामक एक प्रकारकी खजूरकी जातिहै । इसकी आकृति गौके थनोंके आकार होतीहै । इसको परद्वीप अर्थात् अरब आदिकी वलायतसे लातेहैं । बं. सोहारा कहतेहैं । गुण । तीनों प्रकारकी खजूर-शीतल, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारी, हृदयको हित, भारी, तृप्तिकरता, पुष्टिकारक, विष्टंभी, शुक्रकरता, बलकारी, वमननिवारक और वातकफनाशक । प्रयोग । घाव, क्षय, रक्तपित्त, कोष्ठाश्रित वादी, ज्वरातिसार, खांसी, श्वास, मद, मूर्च्छा, मद्यपानजनित रोग, एवं भूंख और प्यासको दूर करे । बडीखजूर दोनोंकी अपेक्षा छोटी खजूरके गुण अल्प हैं । खजूरीतोय । (खिजूरका रस) मादक, पित्तकर, वातकफनाशक, रोचक, अग्निवर्द्धक, बलकारक और शुक्रोत्पादक है ।

सुलेमानी (पिंडखजूरका भेद.)

सुलेमानीतुमृदुलादलहीनफलाचसा ॥
सुलेमानीश्रमभ्रांतिदाहमूर्च्छास्रपित्तहृत् ॥

अर्थ-सुलेमानी, मृदुला और दलहीनफला ।

गुण । मुखमाली सिद्धूर-भय, आति (और), दाह, मूर्च्छा और रक्तपित्त रोगको निवारण करे ।

बादाम.

वातादोवातवैरीस्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ॥
वाताद्रुष्ण्यःसुस्निग्धोवातघ्नःशुक्रकृद्गुरुः ॥
वातादमज्जामधुरोवृष्यःपित्तानिलापहः ॥
स्निग्धोष्णःकफकृन्नेष्टोरक्तपित्तविका-
रिणाम् ॥ १२ ॥

अर्थ–वाताद, वातवैरी और नेत्रोपमफल, ए संस्कृतनाम, हिं. बदाम, बं. मिष्टबादाम, ता. बदमकुम, तै. बेदम, फा. लौज, अ. स्वीट्‌अलोंड । गुण । बदाम–गरम, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्र जनक, भारी । इसकी मज्जा मधुर, वृष्य, वातपित्तनाशक, स्निग्धोष्ण और कफवर्द्धक तथा रक्तपित्तवाले रोगियोंको हितकारी नहींहे । *

सेव.

मुष्टिप्रमाणंबदरंसेवंसिंचितिकाफलम् ॥
सेवंसमीरपित्तघ्नंबृंहणंकफकृद्गुरु ॥
रसेपाकेचमधुरंशिशिरंरुचिशुक्रकृत् ॥१३॥

अर्थ–मुष्टिप्रमाण बदर, सेव और सिंचितिकाफल ए सेवके सं. नाम । बं. सेउ, फा. तुफाह, अं. ऍपल, ल. पाइरस्‌मेलस् कहतेहै । गुण । वातपित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकर्ता, भारी, स्वादिष्ट और पाकमें मधुर, शीतल रुचिकारी और शुक्र प्रगटकर्ता है ।

अमृतफल (नासपती).

अमृतफलंलघुवृष्यंसुस्वादुत्रीन्हरेद्दोषान् ॥
देशेषुमुद्गलानांबहुलंतल्लभ्यतेलोकैः ॥ १४ ॥

अर्थ–अमृतफलको खुरासान काबुल आदिदे-

* मुसलमान हकीम—लिखतेहैं की कडवी बादाम सूजन उतारनेवालाहे, तथा संधियोंके रोगमें तथा इसको सिर्केके साथ पीसकर लगातेहै । तथा आखकी देखनेकी शक्ति मजबूत करनेको भांजतेहे । पिपरमिंट और मेदाकेसाथ मिलायके देनेसे खासी नष्ट होतीहे । तथा इसप्रकार कहताहै कि इसके खानेसे पेशावकी थेलीमें पथरी उत्पन्न होनेवाली बंद होतीहे । पेशाब अधिक उतरेहे, तथा कलेजे और तिल्लीकी बिमारी दूर होय । बादामको पीस मस्तकमें लगानेसे जुआ लीख मर जातीहैं । फोडे और त्वचाके रोगमें इसकी पुलटिश बनायके बांधतेहैं । बदामकीजड शक्ति बढानेवाली है, बदामके वृक्षका गोंद जिसको बदामीगोंद कहतहें तथा यूरोपियन बजारमें होगगम् अथवा गमबसोरा नामसे बोलतेहैं । तथा यह अन्य साधारण गोंदके तरीकेसे वर्त्ता जायहे ।

इंग्रेजी दवामें—बदाम पौष्टिक गिनी आयहे । बदामका तेल सुगंध देनेवाला, और खुलासा दस्त लानेवाला, गिना आयहे । तथा यह वासरहित तथा लगभग रंग रहित होनेसे कितनी जातकी मरहम बनावेमें काम आताहे ।

मी० मरे—अपनी सिंधकी औषधीय वनस्पती ग्रंथमें बदामके मध्ये लिखताहै कि हिंदुस्थानमें बदाम औषध तरीकेसे अधिक नहीं वर्त्तो जाती ।

डा० एमस्लीके—लिखे, अनुसार फारसी और अरबी हकीम मिठी बदामको कामोत्तेजक पदार्थोंमें एकही गिनतेहे और कड़वी बदामको पेसाबकी थैलीमें होनेवाली पथरी पिगलानेवाली मानतेहैं । बदामको यदि अच्छीतरह चबायके न खायतो सहजमें पचती नहींहे । सर्वप्रकारकी मिठाइयोंमें बदाम अधिक पडतीहे । बादामकी मिंगीमें सैकडे पीछे ५४ टके भर तेल रहताहे । कडवी बदाम जहरीलीहे, क्योंकि कईवखत उससे मनुष्य छोटे २ बचे और छोटे २ जानवरोंकी मृत्यु हुईहे । और उसकडवी बदाममें मीठीबदामके बराबर तेल नहीं निकलता । तेलमें मुसीड अथवा हाइड्रोसायानिक एसीड रहताहे, इसीवास्ते इसमें कैफी (नसेलानेवाले) गुण रहतेहैं । किसी २ समय ज्वरकी बिमारीमें वह तेल वर्त्तनेमें आताहे । परंतु यह बडाजहरीलाहे । तथा उसको हाइड्रोसयानीक एसिड अतिजहरीला पदार्थहे उसके माफिक वर्त्ता जायहे । देशी वैद्य बदामके तेलको पौष्टिक पदार्थोंमें वर्त्ततेहैं । तथा उसको सूंगी अथवा उन्मत्तता और अन्य मस्तककी बिमारीमें मस्तकपर मलतेहैं ।

ओंमें बादामपाती कहतेहैं । गुण । हलका, स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक । यह मुल्कोंके देशोंमें अधिक मिलताहै ।

पीलू.

पीलुर्गुडफलःस्रंसीतथाशीतफलोऽपिच ॥
पीलुःश्लेष्मसमीरघ्नंपित्तलंभेदिगुल्मनुत् ॥
स्वादुतिक्तंचयत्पीलुतन्नात्युष्णंत्रिदोषहृत् ॥

अर्थ-कोकनदेशमें उत्पन्न, अखरोट जातीका एक प्रकारका वृक्ष होताहै उसके पर्याय पीलू, गुडफल, स्रंसी और शीतफल, हिं. पीलू, ता. कोकू, दे. झल, फा. मिसवाकु, अ. ईराक, इं. मस्टर्ड ट्री ऑफ स्क्रीपूचर । गुण । वात, श्लेष्मनाशक, पित्तकर्ता, दस्तावर और गुल्मरोगनाशक । यह पीलू स्वादमें मीठा और कडवा होनेसें त्रिदोषनाशक और अधिक गरम नहींहै ।

अखरोट.

पीलुःशैलभवोऽक्षोटःकर्परालश्चकीर्तितः ॥
अक्षोटकोऽपिवाताद्यसदृशःकफपित्तकृत् ॥

अर्थ-पीलू, शैलभव, अक्षोट और कर्पराल, इसके गुण बदामके समान जानने यह कफपित्तवर्द्धक है । विशेषता । यह बादामकी जातिकी वनस्पति है । पर्वतोंमें उत्पन्न होतीहै । हिं. अखरोट, बं. आखरोट, म. अक्रोड, कोंकणमें अक्रोड, द्राविडमें अक्रोट, अरबीमें जोज, फा. किरदगां और चारमग्ज, इं. नट Nut कहतेहै । यह एक वृक्षका फल है । इसका वृक्ष बडा होता है, पत्ते चौडे और कुछ लंबे, तथा कुछ २ मोटे होतेहैं । फलके ऊपर तीन छिलका होतेहैं, पहला हरा और मोटा । स्वादमें कषैला और कडवाई लिये । यह फल कच्चेपनमें नरम परंतु सूखकर कठोर होजाताहै । दूसरा छिलका परले छिलकेके नीचे कठोर होताहै । फिर इसके नीचे दो टुकडे आपसमें मिले और सिरा उनका निकला हुआ तथा तीसरे छिलकेके नीचे मिगी और ऊपर बहुतबारीक छिलका होताहै । मिगी बहुत सफेद और चिकनाई लिये पिस्ते और चिलगोजेकी मिगीके समान होतीहै । इस फलके चार भाग होतेहैं । दो दो भाग आपसमें मिले, इनके बीचमें बहुत बारीक परदा होताहै ।

बिजौरा.

बीजपूरोमातुलुंगोरुचकःफलपूरकः ॥
बीजपूरफलंस्वादुरसेऽम्लंदीपनंलघु ॥ १७ ॥
रक्तपित्तहरंकंठजिह्वाहृदयशोधनम् ॥
श्वासकासारुचिहरंहृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् १८

अर्थ-बीजपूर, मातुलुंग, रुचक और फलपूरक, ए संस्कृत नाम । हिं. बिजौरा, बं. टाबालेबू, म. महालुंग, गु. बीजोरूं, तै. दबाकाया, का. मादवला, उडि. कलंबा, अ. उतरंज, फा. तुरंज, ला. साइट्रस मेडीका Citrus medica कहतेहैं । स्वरूप । इसका छोटावृक्ष, पत्ते नीबूके समान छोटी २ कंगनीदार होतेहैं, फल लंबा गोल अंगीदार और खरदरा छालका होता है । चित्र नंबर ३५ का देखो । गुण । रसमें स्वादु, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्त, श्वास, खांसी और तृषाको हरण करे । कंठ, जिव्हा और हृदयको शोधन करे, तथा हृदयको हितकारी है ।

मधुकाकडी (चकोतरा).

बीजपूरोऽपरःप्रोक्तोमधुरोमधुकर्कटी ॥
मधुकर्कटिकास्वाद्वीरोचनीशीतलागुरुः ॥
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा॥१९॥

अर्थ-दूसरे प्रकारके बिजोरेको मधुर और मधुकर्कटी, हिं. चकोतरा, बं. बाताविलेबू कहतेहै । गुण । चकोतरा-स्वादु, रोचक, शीतल, भारी, रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खांसी, हिचकी और भ्रमरोग इनको दूर करे ।

जंभीरीदोनों.

स्याज्जंबीरोदंतशठोजंभजंभीरजंभलाः ॥
जंबीरमुष्णंगुर्वम्लंवातश्लेष्मविबंधनुत् ॥२०॥
शूलकासकफोत्क्लेशछर्दितृष्णामदोषजित् ॥
आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यकृमीन्हरेत् ॥
स्वल्पजंबीरिकातद्वत्तृष्णाच्छर्दिनिवारणी ॥

अर्थ-जंबीर, दंतशठ, जंभ, जंभीर और जंभल ए संस्कृत नाम, हिं. जंभीरी, बं. गोंवालेबू और कागजीलेबू, म. लघुईडलिंबु, क. कंचीडे, तै. नीम्मपंडु । गुण । जंभीरी-गरम, भारी, खट्टी, वातकफ

और विबंधको दूर करे । शूल, खांसी, कफ, उत्क्लेश, वमन, तृषा, आमके दोषको जीते । तथा मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मंदाग्नि और कृमिरोगको नष्ट करे । इसी प्रकारकी छोटी अंबीरीमें गुण जानने । विशेषता यह है कि तृषा और वमन होनेको दूर करे ।

नीबू.

निंबूःस्त्रीनिंबुकंक्लीबेनिंबूकमपिकीर्तितम् ॥
निंबूकमम्लंवातघ्नंदीपनंपाचनंलघु ॥ २२ ॥
निंबुकंकृमिसमूहनाशनम्
तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहम् ।
वातपित्तकफशूलिनेहितम्
कष्टनष्टरुचिरोचनंपरम् ॥ २३ ॥
त्रिदोषवह्निक्षयवातरोग-
निपीडितानांविषविह्वलानाम् ।
मंदानलेबद्धगुदेप्रदेयम्
विषूचिकायांमुनयोवदंति ॥ २४ ॥

अर्थ-निंबू, निंबुक और निंबूक ए संस्कृत नाम, हिं. नीबू, बं. पातिलेबू, का. काचिले, फा. लेमु, इं. लेमन्स, ला. लेमोर्न एसिड । गुण । नीबू-खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचन, हलका । अन्य-त्रभी लिखाहै कि नींबू-कृमिसमूहको नष्ट करे, तीक्ष्ण, खटाईयुक्त, उदरपीडाको निवारण करे, अत्यंत अरुचि इसके द्वारा दूर होवे, अत्यंत मंदाग्नि, क्षयरोग, वातव्याधि, विषके विकार, कोष्ठरोध और विषूचिकारोग इनपर देवे ।

मीठानीबू.

मिष्टनिंबूफलंस्वादुगुरुमारुतपित्तनुत् ॥
गररोगविषध्वंसिकफोत्क्लेशिचरक्तहृत् ॥
शोषारुचितृषाछर्दिहरंबल्यंचबृंहणम् ॥२५॥

अर्थ-मीठे नीबूको बंगाली कमलालेबू कहतेहैं । गुण । स्वादु, गुरु, वातपित्तनाशक, विषरोगनाशक, विषघ्न, कफनिःसारक, रक्तदोषनाशक, बलकारक और पुष्टकर्ता, इसके द्वारा शोष, अरुचि, तृषा और वमनका निवारण होय ।

कर्मरंग.

कर्मरंगंहिमंग्राहिस्वाद्वम्लंकफवातहृत् ॥

अर्थ-कमरख-शीतल, ग्राही, स्वादु, खट्टी और कफवातको हरण करे, हिं. कमरख, बं. कामरंगा, म. कर्मराचें झाड, अं. करंबोला । स्वरूप । इसका मध्यम कदका वृक्ष होताहै । पत्ते लंबे श्याम तमालके सदृश फल चारकोनेवाला होताहै ।

इमली.

अम्लिकाचुक्रिकाम्लीचचुक्रादंतशठापिच ।
अम्लाचचिंचिकाचिंचातिंतिडीकाचतिंतिडी
अम्लिकाम्लागुरुर्वातहरीपित्तकफास्रकृत् ।
पक्वातुदीपनीरूक्षासरोष्णाकफवातनुत् ॥

अर्थ-अम्लिका, चुक्रिका, अम्ली, चुक्रा, दंतशठा, अम्ला, चिंचिका, चिंचा, तिंतिडीका और तिंतिडी ए संस्कृतनाम, हिं. इमली, अंबली, बं. आमरूल, तेंतल, तेंतुल, का. हुणिसे, म. चिंच, गु. आंबली, तै. चींताचेट्टू, डाडि. कर्मा, ता. पुलि, फा. तमर-हिन्दी, इं. टॅमेरिन्ड । इमलीके कच्चे फलोंको कतारे कहतेहैं, पकनेपर खटमिट्ठी होजातीहै । और रंगमें पीली लाल होतीहै और यह सर्वत्र मिलतीहै । गुण । खट्टी, गुरु, वातनाशक, पित्तकर्ता, कफवर्द्धक और रक्तदोषनिवारक । पकीइमली । अग्निदीप्तिकर्ता, रूक्ष, सर (दस्तावर) गरम और वातश्लेष्मनाशक । इमली अत्यंत सेवन करनेसें फैंफडेको बिगाडतीहै, दर्पनाशक सरबत्‌उनफशा, सरबत्‌खसखास हैं । प्रतिनिधि आलूबुखारा है । *

* हिंदुस्थानी वैद्य—इमलीको शीतल, पाचक दस्त खुलासा लानेवाली, और दस्तकी कब्जि-यत और ज्वरमें अत्यंत उपयोगी गणना करतेहैं । इमलीकी फलीकी ऊपरकी छालकीराख खारके सदृश दवामें डालतेहैं और पत्ते सूजनपर बांधनेसे सूजन उतर जातीहै ।

मखजनउलअदवियाका करनेवाला—दोप्रकारकी इमली कहताहै । लाल और भूरेरंगकी इन दोप्रकारकी इमलियोंमें लाल जातकी उत्तम होतीहै । इमलीके गूदेको मुसलमानवैद्य ग्राही, दस्त खुलासा लानेवाला, पित्तकी उलटी बंद करनेवाली और जुलाबद्वारा पित्तको निकालनेवाली गिनेहै ।

अमलबेत.

स्यादम्लवेतसश्चुक्रःशतवेधिसहस्रनुत् ॥
अम्लवेतसमत्यम्लंभेदनंलघुदीपनम् ॥ २८ ॥
हृद्रोगशूलगुल्मघ्नंपित्तलंलोमहर्षणम् ॥
रूक्षंविण्मूत्रदोषघ्नंप्लीहोदावर्तनाशनम् ॥२९
हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत् ॥
कफवातामयध्वंसि छागमांसद्रवत्वकृत् ॥
धणकाम्लगुणंवेधंलोहसूचीद्रवत्वकृत् ॥ ३०

अर्थ–अम्लवेतस, चुक्र, शतवेधि और सहस्रनुत ए संस्कृतनाम, हिं. अमलवेत, थैंकल, म. चूका, अ. तुर्बक्, इं. कामन् सोरेल्। गुण। अत्यंत खट्टा, भेदक, हलका, अग्निवर्द्धक, पित्तजनक, रोमांचकारक और रूक्ष। इसके सेवन करनेसें हृद्रोग, शूल, गुल्मरोग, मूत्रदोष, मलदोष, प्लीहा, उदावर्त, हिचकी, अफरा, अरुचि, श्वास, खांसी, अजीर्ण, वमन, कफजन्यरोग और वातव्याधि दूर होय। इससें बकरेके मांसका पानी होजाताहै। और जैसें चनाखारसें लोहेकी सुई गल जातीहै उसीप्रकार इसमेंभी सुई गेरनेसें गल जातीहै।

चिंचाविल.

वृक्षाम्लंतिन्तिडीकंचचुक्रंस्यादम्लवृक्षकम् ॥
वृक्षाम्लमाममम्लोष्णंवातघ्नंकफपित्तलम् ॥
पक्वंतुगुरुसंग्राहिकटुकंतुवरंलघु ॥
अम्लोष्णंरोचनंरूक्षंदीपनंकफवातकृत् ॥
तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजंतुजित् ॥

जुलाब लानेको देनी होय तो उसके साथ जैसे बने तैसे अन्य प्रवाही बहुत थोडे देने चाहिये। गलेके भीतरकी सूजन दूर करनेको इमलीके पानीके कुल्ले करनेसे उत्तम आराम होताहै। बीजमेंभी ग्राही गुण है। तथा उसको उबालकर पुलटिश बनाय फोडेकी गांठ पर बांधतेहैं। पत्तोंको जलमें पीस जलको निचोड़ले इसको पित्तके जोरसे आनेवाला ज्वर और पेशावकी गरमीके वास्ते देतेहैं। और उसको पीसकर पुलटिश बनायके बांधनेसे सूजन उत्तर जातीहै। तथा दर्द कम होताहै। आंखके पड़देकी सूजनके वास्ते फूलकी पुलटिश बांधेह, तथा फूलकारस दूखतेहुए बवासीरमें उत्तम फायदा करताहै। इमलीके वृक्षकी छाल ग्राही और पाचकहै इमलीके वृक्षका पवन देशीलोग तंदुरस्तीको हानिकर्त्ता गिनतेहैं। तथा इसप्रकार कहतेहै कि इमलीके वृक्षके नीचे तंबू बहुत दिन रखनेसे उसका कपड़ा सड़ जाताहै। उसीप्रकार इमलीके वृक्षके नीचे दूसरी जातका क्षुपभी कहीं २ कमी २ देखनेमें आताहै। मद्रासके इलाकेमें प्राणी इमलीका चारपानी आदि पदार्थ बनाकर और कईप्रकारकी कल्पना करके मिलेहुए खुराकमें बहुत वर्त्ततेहैं। तथा उसके बीजकोभी आगमें भूनकर या घृतादिमें सेककर खातेहैं।

चरकसंहितामें—इमलीको खट्टी, पित्तशामक, और सारक (दस्तावर) गिनेहैं।

चक्रदत्तमें—धतूरे वगेरहके जहर उतारनेको खजूर, दाख, इमलीकागूदा, अनारदाना, फालसे और आमले सब समान भागले, तथा बारीक पीस और इसमें पचगुना पानी मिलायओटाय काढा करके देना लिखाहै। दवाके तरह इमलीका गूदा १। रुपेभर अथवा इससेभी अधिक खानेसे थोडा जुलाब होताहै और पाचनशक्ति बढेहै। तथा प्यास कम् लगतीहै। किसीकेसाथ इमलीकागूदा मिलायके देनेसे जिसके साथ दीजातीहै उसका असर अधिक होताहै। परंतु रेवतचीनीके क्षीराके समान जुलाबके साथ मिलानेसे उसका असर थोडा होताहै।

विसीयनलोग—पेटके मरोड़केरोगमें तथा पाचनशक्ति बढानेको इमलीके बीज अन्यऔषधके साथ मिलायके वर्त्ततेहै। सीलोनके टापूमें कलेजा और तिल्लीकी गांठ होनेमें इमलीके फूलकी एकप्रकारकी मिठाई बनायके रोगीको देतेहैं। पत्तोंको उबालकर उसको सेक करनेमें लेतेहैं। इमलीके वृक्षके नीचे सोनेसे रोग होताहै और नीमके वृक्षनीचे सोनेसे सर्व रोग दूर होतेहै ऐसा अपने लोग मानतेहैं। इमलीके गोंदका चूर्ण करके नासूरके घावपर बुरकतेहै, कि जिस्से घाव जल्दी भर आवे तथा पत्तोंको शीतल जलमें भिगोय आंख दूखने आई होय तो उसपर और नासूरके घावपर बांधतेहैं। बीजको पीस जलमें मिलाय गांठपर चुपड़नेसे उसके भीतर तत्काल राध पककर और फटकर फूट जायहै।

अर्थ-वृक्षाम्ल, तितिडीक, चुक और अम्लवृक्षक ए संस्कृतनाम, हिं. बिषाबिल, गु. कोकस्ता, बं. महादा, म. कोकम, आमसोल, क. तीतीडीक, चीचा. बिजोओ, इं. कोकंबटर । गुण । कच्चा बिषाबिल-खट्टा, उष्ण, वातघ्न और कफपित्तवर्द्धक । पकाहुआ-भारी, ग्राही, कटु, कषेला, हलका, खट्टा, रोचक, रूक्ष, अग्निकारक और वातकफ उत्पन्न कर्ता । इसके सेवन करनेसें तृषा, बवासीर, संग्रहणी, गोळा, शूळ, हृद्रोग, कीट अर्थात् पेटके कीडे दूरहो ।

चतुराम्ल-पंचाम्ल.

अम्लवेतसवृक्षाम्लबृहज्जंबीरनिंबुकैः ॥
चतुरम्लंहिपंचाम्लंबीजपूरयुतैर्भवेत् ॥ ३३

अर्थ-अमलवेत, बिषाबिल, बडीजंभीरी और नींबू इन चारोको एकत्र मिलनेको चतुराम्ल (चारखटाई) कहतेहैं । और इन चारोमे बिजोरेका रस मिलानेसें पंचाम्ल (खटाइपंचक) कहलाहे ।

परिभाषा.

फलेषुपरिपकंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
बिल्वादन्यत्रविज्ञेयमामंतद्धिगुणाधिकम् ॥
फलेषुसरसंयत्स्याद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
द्राक्षाबिल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम्
फलतुल्यगुणंसर्वंमज्जानमपिनिर्दिशेत् ।
फलंहिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ।
अकालजंकुभूमीजंपाकातीतंनभक्षयेत् ॥ ३६

इति श्रीअभिनवनिघंटौफलवर्गः

अर्थ-फलोंमें जो पकाफल होताहै वह गुणकारी जानना, परंतु बेलफलको त्यागके-क्योकि बेलफल तो कच्चाही गुणकारी कहाहे । फलोमें जो रसयुक्त होताहै वही अधिक गुणवाला जानना परंतु दाख, बेल आंवले आदिके फल सूखेही गुणकारी होतेहैं । जैसे २ गुण फलमें है वसी २ प्रकारके उसकी मज्जा (मिंगीमें) गुण जानने । वर्जितफल । जो फल सरदीकामारा, आगका पजरा, पवनका सुखाया, सर्पादि और कीडे आदिके खानेसें दूषित और जो अपनी ऋतुके विनाही उत्पन्न हुआ हो, तथा दूषित भूमिमें प्रगट हुआ हो और पकनेकी अवधि निकल गईहो अर्थात् जिसको पके बहुत दिन व्यतीत होगए हो ऐसा फल मनुष्यको कदाचित् नहीं खाना चाहिये ।

इति फलवर्गः समाप्तः.

अथधात्वादिवर्गः

धातुओंके नाम और गुण.

स्वर्णंरूप्यंचताम्रंचरंगंयसदमेवच ।
सीसंलोहंचसप्तैतेधातवोगिरिसंभवाः ॥ १ ॥
वलीपलितखालित्यकार्श्यावल्यजरामयान् ।
निवार्यदेहंदधतिनृणांतद्धातवो मताः ॥ २ ॥

अर्थ-सुवर्ण (सोंना), रुपा, तामा, रांगा (कलई), जस्ता, शीशा और लोहा, ए पर्वतसें उत्पन्न हुई सात धातु हैं । देहमें गुजलट पडना, बालोंका सफेद होना, बालोंका मस्तकमेंसें उडजाना, कृशता, निर्बलता, वुढापा और रोग इनको दूर करके मनुष्योंके देहको धारण करतीहैं । इसीसें इनकी धातु संज्ञा हैं । तहां

सुवर्णकी उत्पत्ति.

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम् ।
मरीचिरंगिराअत्रिःपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः ॥
वसिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताःपरमर्षयः ।
पत्नीर्विलोक्यलावण्यलक्ष्मीसंपन्नयौवनाः ॥
कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः ।
पतितंयद्धरापृष्ठेरेतस्तद्धेमतामगात् ॥ ५ ॥
कृत्रिमंचापिभवतितद्रसेंद्रस्यवेधतः ।

अर्थ-पहले अपने आश्रममें स्थित जितात्मा सप्तर्षि—जैसें मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और परमर्षि वशिष्ठ, इनकी पत्नीकी सुंदरता और योवनावस्था रूपलक्ष्मी देखकर कामपीडित अग्निदेवका जो वीर्य पृथ्वीमें गिरा वही सुवर्ण होगया । और एक सुवर्ण कृत्रिमभी होताहै कि जिसको पारेके वेधसें रसायनी लोग बनातेहैं ।

सुवर्णके नाम.

स्वर्णंसुवर्णंकनकंहिरण्यंहेमहाटकम् ॥ ६ ॥
तपनीयंचगांगेयंकलधौतंचकांचनम् ।

चामीकरंशातकुंभंतथाकार्त्तस्वरंचतत् ॥ ७
जांबूनदंजातरूपंमहारजतमित्यपि ।

अर्थ-स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, तपनीय, गांगेय, कलधौत, कांचन, चामीकर, शात-कुंभ, कार्त्तस्वर, जांबूनद, जातरूप और महारजत, ए सुवर्णके संस्कृत नाम है । हिं. सोना, फा. तिला, अ. जहब, क. स्वर्ण, तै. बगारं, इं. गोल्ड, ला. औरं, गु. सोनूं ।

उत्तम सुवर्णके लक्षण.

दाहेरक्तंसितंछेदेनिषेकेकुंकुमप्रभम् ॥ ८ ॥
तारंशुल्बोज्झितंस्निग्धंकोमलंगुरुहेमसत् ९

अर्थ-तपानेमें लाल, तोडनेमें सपेद, कसौटीपर केशरके समान, लाल झलक देवे, जिसमें चांदी और तांमा न मिला हो, स्निग्ध, कोमल (नरम) और भारी ऐसा सोना उत्तम होताहै ।

त्याज्यसुवर्ण.

तच्छ्वेतंकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् ।
दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेत्याज्यंलघुस्फुटम् ॥ १०

अर्थ-जिसका सपेदरंग, कठोर, रूखा, बुरेरंगका, मैलयुक्त, परतदार, तपानेमें और तोडनेमें सपेद, कसौटीपर रखनेसें सपेद, हलका और जो चोटमार-नेसें फूट जावे ऐसा सुवर्ण त्याज्य है । औषधमें इसे न लेना ।

सुवर्णके गुण.

सुवर्णंशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् ॥
स्वादुतिक्तंचतवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम् ॥
पवित्रंबृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् ॥ ११ ॥
हृद्यमायुःकरंकांतिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् ॥
विषक्षयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥

अर्थ-सुवर्ण-शीतल, वृष्य, बलकर्त्ता, भारी, रसायन, स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, पाकमें स्वादिष्ठ, पिच्छल, पवित्र, बृंहण, नेत्रोंको उपकारी, मेधा, स्मरण और बुद्धिको देताहै, हृदयको हितकारी, आयु-कर्त्ता, कांतिकरे, वाणीको शुद्ध और स्थिर करे, स्थावर जंगमविष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोषरोगको दूर करे ।

अशुद्ध सुवर्णके दोष.

बलंसवीर्यंहरतेनराणां-
रोगव्रजान्पोषयतीहकाये ।
असौख्यकर्तांचसदासुवर्ण-
मशुद्धमेतन्मरणंचकुर्यात् ॥ १३ ॥

अर्थ-विना शोधित सुवर्ण-बल, वीर्यको नाश करे, देहमें अनेक रोगोंको बढावे और सदैव असुख-कारी, तथा अशुद्ध सुवर्ण मरणको करताहै ।

अविधिमारितसुवर्णके दोष.

असम्यङ्मारितंस्वर्णंबलंवीर्यंचनाशयेत् ।
करोतिरोगान्मृत्युंचतद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥

अर्थ-अविधिसें मारा हुआ सुवर्ण बल वीर्यको नष्ट करे, और रोग तथा मृत्युको करेहै, इससे इस सुवर्णको यत्नपूर्वक मारे । सुवर्णचांदीआदि धातु उपधातुके शोधन मारण द्रावणकी विधी जाननी हो वो हमारे बनाए रसराजसुंदर ग्रंथको देखिये ।

रूपेकी उत्पत्ति.

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्निमेषैर्विलोचनैः ।
निरीक्षयामासशिवःक्रोधेनपरिपूरितः ॥ १५
अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात्
ततोरुद्रःसमभवद्वैश्वानरइवज्वलन् ॥ १६ ॥
द्वितीयादपतन्नेत्राद्श्रुबिंदुस्तुवामकात् ।
तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्मसुयोजयेत् ॥ १७ ॥
कृत्रिमंचभवेत्तद्धिवंगादिरसयोगतः ।

अर्थ-त्रिपुरके वध करनेको श्रीशिव क्रोधित होकर उस दुष्ट दैत्यको पलक रहितहो देखते हुए, उसीसमय उनके एक नेत्रसें अग्नि निकली, जिसें श्रीरुद्र अग्निकेसमान प्रज्वलित हुए । और दूसरे बांए नेत्रसें जो आंसूकी बूंद गिरी इससें रजत (रूपा) प्रगट हुआ । इसको उक्तगुण संपन्न होनेसें सब कर्मोमें योजना करे । एक कृत्रिमचांदी कलई और पारेके योगसे बनतीहै ।

रूपेके संस्कृतनाम.

रूप्यंतुरजतंतारंचंद्रकांतिसितप्रभम् ॥ १८ ॥

अर्थ-रूप्य, रजत, तार, चंद्रकांति और सितप्रभ

ए संस्कृत नाम, हिं. चांदी, रूपा, गु. रूपूं, फा. नुकरा, अ. फिद्दा, क. बेल्ली, तै. वेंडी, इं. सिल्व्हर, ला. आर्जेन्टम् ।

उत्तम रूपेके लक्षण.

गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहेछेदेघनक्षमम् ।
वर्णाढ्यंचंद्रवत्स्वच्छंरूप्यंनवगुणंशुभम् ॥

अर्थ-भारी, चिकनी, नरम, दाह (ताव देनेमें) और तोडनेमें सपेद, घनकी चोटसें खिले नहीं, अर्थात् टुकडे २ न होवे, सुंदरवर्ण, चंद्रमाके समान स्वच्छ, ए नौगुणयुक्त रूपा उत्तम होताहे ।

त्याज्यरूपा.

कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तंपीतदलंलघु ।
दाहच्छेदघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्त्तितम् ॥ २०॥

अर्थ-कठोर, कृत्रिम (बनाहुआ), रूखा, लाल पीलेपत्तरका, हलका और जो तपानेसें, तोडनेसें और घनकी चोटसें नष्ट होजावे अर्थात् टूट जावे, ऐसा रूपा दुष्ट होताहे इसको कार्यमें न लेवे ।

रूपेके गुण.

रूप्यंशीतंकषायाम्लंस्वादुपाकरसंसरम् ।
वयसःस्थापनंस्निग्धंलेखनंवातपित्तजित् ।
प्रमेहादिकरोगांश्चनाशयत्यचिराद्ध्रुवम् ॥

अर्थ-रूपा-शीतल, कषेला, खट्टा, पकनेमें स्वादुपाकी, दस्तावर, अवस्थाको स्थापन करनेवाला, चिकना, वातपित्तका नाशक, तथा प्रमेहादिक रोगोंको शीघ्र दूर करे ।

अशुद्धरूपेके अवगुण.

तारंशरीरस्यकरोतितापम्
विड्बंधनंयच्छतिशुक्रनाशम् ।
वीर्यंबलंहंतितनोश्चपुष्टिम्
महागदान्पोषयतिह्यशुद्धम् ॥ २२ ॥

अर्थ-अशुद्धरूपा-शरीरमें तापकरे, विड्बंध (मलसंग्रह), वीर्य और बलको नष्ट करे, देहकी पुष्टाई नष्ट करे और देहमें घोर रोगोंको बढावे । रूपेकाभी शोधन मारण रसराजसुंदर ग्रंथमें देखो ।

तामेकी उत्पत्ति.

शुक्रंयत्कार्तिकेयस्यपतितंधरणीतले ।
तस्मात्ताम्रंसमुत्पन्नमिदमाहुःपुराविदः॥२३

अर्थ-कार्तिकेयका वीर्य पृथ्वीमें गिरनेसें तांमा प्रगट हुआ ऐसें प्राचीन वैद्य कहतेहैं ।

ताम्रके नाम.

ताम्रमौदुंबरंशुल्बमुदुंबरमपिस्मृतम् ।
रविप्रियंम्लेच्छमुखंसूर्यपर्यायनामकम् ॥२४॥

अर्थ-ताम्र, औदुम्बर, शुल्व, उदुंबर, रविप्रिय, म्लेच्छमुख और यावन्मात्र सूर्यके संस्कृतमें पर्यायवाचक नाम हैं सब तांमेके जानने । हिं. तांमा, तावो, गु. त्रांबो, तै. रागी, फा. मीस, अ. नुहास, इं. कॉपर, ला. कोपरम् ।

उत्तम ताम्र.

जपाकुसुमसंकाशंस्निग्धंमृदुघनक्षमम् ।
लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते॥२५॥

अर्थ-जो जपापुष्पके समान लालरंगका, चिकना, नरम, घनकी चोटसें टूटे नहीं, जिसमें लोहेका और शीशेका मिलाप न होवे ऐसा तांमा मारणकर्ममें उत्तम है ।

त्याज्यताम्र.

कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धंश्वेतंचापिघनासहम् ।
लोहनागयुतंचेतिशुल्बंदुष्टंप्रकीर्त्तितम्॥२६॥

अर्थ-कालेरंगका, रूखा, अतिकठोर, सपेदरंगका और घनकी चोटसें खिल जावे, जिसमें लोहा और शीशा मिल रहा हो ऐसा तांमा दुष्ट अर्थात् मारणकर्ममें त्याज्य है ॥

तांमेके गुण.

ताम्रंकषायंमधुरंचातिक्त-
मम्लंचपाकेकटुसारकंच ।
पित्तापहंश्लेष्महरंचशीतं
तद्रोपणंस्याल्लघुलेखनंच ॥ २७ ॥
पांडूदरार्शोज्वरकुष्ठकास-
श्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।
शोथंकृमिंशूलमपाकरोति
प्राहुःपरेबृंहणमल्पमेतत् ॥ २८ ॥

अर्थ-तांमा-कषेला, मधुर, कडवा, खट्टा और पाकमें चरपरा, दस्तावर, पित्तनाशक, कफ हरणकर्ता शीतल, घावका भरनेवाला, हलका और लेखन । प्रयोग । पांडुरोग, उदर, बवासीर, ज्वर, कोढ, खांसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि और शूलको नष्ट करे । कोई आचार्य इसको अल्प बृंहण-कर्ता कहतेहैं ।

तांमेके आठ दोष.

एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यग्मारितेऽष्टते ।
दाहःस्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः ॥

अर्थ-विषमें तो केवल एक मारण करनाही दोष है परंतु इस अविधि मारेहुए तांमेमें आठ दोष है । दाह, स्वेद, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद, दस्तोंका होना, वमन और भ्रम ।

रांगेके नाम और भेद.

रंगवंगत्रपुप्रोक्तंतथाचिपिटमित्यपि ।
खुरकंमिश्रकंचापिद्विविधंवंगमुच्यते ॥ ३० ॥
उत्तमंखुरकंतत्रमिश्रकंत्ववरंमतम् ।

अर्थ-रंग, वंग, त्रपु और चिपिट ए रांगेके संस्कृत नाम है । हिं. रांग [गा], कलई, बं. वंग, म. कथील, क. तवर, तै. तागारामु, अ. रसास, फा. अरजज, इं. टीन, ला. स्टेनम् । रांग दोप्रकारका होताहै । एक खुरक, दूसरा मिश्रक तहां खुरकसंज्ञक रांगा उत्तम होताहै । और मिश्रक अधम ।

गुण.

रंगलघुसरंरूक्षमुष्णंमेहकफकृमीन् ।
निहंतिपांडुंसश्वासंचक्षुष्यंपित्तलंमनाक्॥३१
सिंहोयथाहस्तिगणंनिहंति
तथैववंगोऽखिलमेहवर्गम् ।
देहस्यसौख्यंप्रबलेंद्रियत्वं
नरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-रांगा-हलका, दस्तावर, रूखा, गरम, प्रमेह, कफ, कृमि, पांडुरोग, श्वास, इनको नष्ट करे । नेत्रोंको हितकारी और यत्किंचित् पित्तकर्ता है । जैसे सिंह हस्तिसमूहोंको नष्ट करताहै उसीप्रकार वंग देहके संपूर्ण प्रमेहादि रोगोंको मारता है । देहको सुख करे, इन्द्रियोंमें प्रबलता और निश्चय मनुष्यको पुष्ट करैहै ।

जस्ता.

यसदंरंगसदृशंरीतिहेतुश्चतन्मतम् ।
यसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत् ।
चक्षुष्यंपरमंमेहान्पांडुंश्वासंचनाशयेत्॥३३॥

अर्थ-जस्तेका संस्कृतनाम यसद है । हिं. जस्ता, म. जस्त, तै. खर्पर, अ. शबूह, फा. रुएतूतिआ, इं. जिंक्, ला. झिंकम्, यह पीतल होनेका कारण है । गुण । जस्ता-शीतल, कषेला, कडवा, कफ-पित्तको हरणकर्त्ता, नेत्रोंको परमोपयोगी, प्रमेह, पांडु और श्वासरोग इनको नष्ट करे ।

शीशेकी उत्पत्ति और गुण.

दृष्ट्वाभोगिसुतांरम्यांवासुकिस्तुमुमोचयत् ।
वीर्यंजातस्ततोनागःसर्वरोगापहोनृणाम् ३४
सीसंवध्रंचवप्रंचयोगेष्टंनागनामकम् ।
सीसंरंगगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् ॥ ३५
नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति
व्याधिंविनाशयतिजीवनमातनोति ।
वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोति
मृत्युंचनाशयतिसंततसेवितःसः ॥

अर्थ-भोगीसर्पकी सुंदर कन्याको देख वासुकी सर्पने वीर्य छोडा उसीसें मनुष्योंके सर्वरोगोंका हरण कर्त्ता शीशा प्रगट हुआ । शीशेके नाम । सीस, व्रध्र, वप्र, योगेष्ट और नागके यावन्मात्र पर्याय-शब्द है सब शीशेके जानने चाहिये । हिं. शीशा, गु. शीसुं, तै. शीश, म. शिसें, अ. अस्वद, फा. सुर्ब, ला. प्लंबम्, इं. लेड् । शीशेमें रांगेके तुल्य गुण हैं । विशेष करके प्रमेहको नष्ट करेहै । नाग (शीशा) शतनाग (सौहाथीयोंके) तुल्य बलकरे, व्याधिको नष्ट-करे, जीवनको बढावे, जठराग्निको दीपन करे, काम-बल वृद्धिकरे और निरंतर सेवन करनेसें मृत्युकोभी जीते ।

अशुद्धवंग और शीशेके अवगुण.

पाकेनहीनौकिलवंगनागौ-
कुष्ठानिगुल्मांश्चतथातिकष्टान् ।

कंडूप्रमेहानिलसादशोथ-
भगंदरादीन्कुरुतःप्रभुक्तौ ॥ ३७ ॥

अर्थ-पाकहीन वंग और नागको खाय तो कोढ, गोला, अतिकष्ट, खुजली, प्रमेह, मंदाग्नि, सूजन और भगंदरादि रोगोंको करैहै ।

लोहकी उत्पत्ति और नाम.

पुरालोमिनदैत्यानांनिहतानांसुरैर्युधि ।
उत्पन्नानितदंगेभ्योलोहानिविविधानिच ॥
लोहोऽस्त्रीशस्त्रकंतीक्ष्णंपिंडंकालायसायसी ।

अर्थ-पहले लोमिनदैत्योंको संग्राममें देवतोंने मारा तो उनके देहोंसें अनेक प्रकारके लोहे प्रगट हुए । लोहोंके नाम । लोह, शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिंड, कालायस और आयसी ए संस्कृत नाम । हिं. लोहा, म. लोखंड; क. अयस्कांत, तै. इनुमु, गु. लोढूं, अ. हदीद, फा. आहने, ला. फेरम्, इं. आयर्न, स्टील.

लोहके सात दोष.

गुरुत्वादृढतोत्क्लेदःकश्मलंदाहकारिता ॥ ३९ ॥
अश्मदोषःसुदुर्गंधोदोषाःसप्तायसस्यतु ।

अर्थ-भारीपना, दृढता, उत्क्लेश, कश्मल, दाहकर, पत्थरका दोष और दुर्गंध ए सातदोष लोहेके कहेहैं ।

लोहके गुण.

लोहंतिक्तंसरंशीतंमधुरंतुवरंगुरुः ॥ ४० ॥
रूक्षंवयस्यंचक्षुष्यंलेखनंवातलंजयेत् ।
कफपित्तंगरंशूलंशोथार्शःप्लीहपांडुताः ।
मेदोमेहकृमीन्कुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि ॥ ४१ ॥

अर्थ-लोहा-कडवा, दस्तावर, शीतल, मधुर, कषेला, भारी, रूखा, अवस्थास्थापक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, वादी, कफपित्त, विषविकार, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीह, पांडु, मेदरोग, प्रमेह, कृमि और कोढ, इन सब रोगोंको दूर करे । जैसे लोहके गुण है उस लोहकी कीटीकेभी उसीप्रकारके गुण जानने ।

अशुद्ध लोहके अवगुण.

पांडुत्वकुष्ठामयमृत्युदंभवेद्-
हृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरींच ।
नानारुजानांचतथाप्रकोपं
करोतिहृल्लासमशुद्धलोहम् ॥ ४२ ॥
जीवहारिमदकारिचायसम्
देहशुद्धिमदसंस्कृतंध्रुवम् ।
पाटवंनतनुतेशरीरके-
दारुणांहृदिरुजांचयच्छति ॥ ४३ ॥

अर्थ-अशुद्धलोह-पांडु, कोढ, मृत्यु, हृदयरोग, शूल, पथरी, अनेक प्रकारके रोगोंका प्रकोप और हल्लासको करताहै । जीवनाशक, मदकर्त्ता और देहमें अकुशलता, तथा दारुण हृदयव्यथाको अशुद्धलोह करताहै । इस वास्ते शोधन करके पश्चात् मारण करे ।

लोह सेवनमें पथ्य.

कूष्मांडंतिलतैलंचमाषान्नंराजिकांतथा ।
मद्यमम्लरसंचापित्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥ ४४

अर्थ-पेठा, तिलीका तेल, उडद, राई मद्य (दारु) और खटाई इनको लोहका सेवन कर्ता त्याग देवे ।

सार लोहके लक्षण और गुण.

क्ष्माभृच्छिखराकाराण्यंगान्यम्लेन लेपयेत् ।
लोहेस्युर्यत्रसूक्ष्माणितत्सारमभिधीयते ॥
लोहसाराह्वयंहन्याद्ग्रहणीमतिसारकम् ।
अर्धसर्वांगजंवातंशूलंचपरिणामजम् ।
छर्दिंचपीनसंपित्तंश्वासंकासंव्यपोहति ॥४६

अर्थ-जिन पत्थरोंमेंसें लोह निकलताहै उन पत्थरोंके टुकडोंको खटाईसें लेप करनेसें जो छोटे २ बारीक लोहके कण निकले उसको सारलोह कहतेहै । सारलोह-संग्रहणी, अतिसार, अर्धांग तथा सर्वांगवादी, परिणामशूल, छर्दि, पीनस, पित्त, श्वास और खांसीको दूर करे ।

कांतलोहके लक्षण और गुण.

यत्पात्रेनप्रसरतिजलेतैलबिंदुःप्रतप्ते ।
हिंगुर्गंधंत्यजतिचनिजंतिक्ततांनिंबकल्कः ॥
तप्तंदुग्धंभवतिशिखराकारकंनैतिभूमिं ।
कृष्णांगःस्यात्सजलचणकःकांतलोहं-
तदुक्तम् ॥ ४७ ॥

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातंभगंदरम् ॥
कामलाशोथकुष्ठानिक्षयंकांतमयोहरेत् ॥४८॥
प्लीहानमम्लपित्तंचयकृच्चापिशिरोरुजम् ॥
सर्वान्रोगान्विजयतेकांतलोहंनसंशयः ॥
बलंवीर्यंवपुःपुष्टिंकुरुतेऽग्निविवर्द्धयेत् ॥४९॥

अर्थ–जिस पात्रके जलमें तेलकी बूंद गेरनेसें फैले नहीं, और जिसमें तपानेसें हींग अपनी गंधको त्याग देवे, तथा नीमकाकल्क रखनेसें मीठा होजाय, और दूध औटानेसें वो शिखरके आकार उफान ऊपरको खडा होजावे किंतु फैले नहीं, और जिसमें जलयुक्त चने भिगोनेसें काले होजावें उसको **कांतलोह** कहतेहै । **गुण** । गोला, उदर, बवासीर, शूल, आमवात, भगंदर, कमला, सूजन, कोढ और क्षय इनको **कांतिलोह** दूर करे । तिल्ली, अम्लपित्त, यकृत्, शिरका दूखना, और सर्वरोगोंको **कांतिलोह** निःसंदेह दूर करे । बल, वीर्य और देहकी पुष्टी करे, तथा जठराग्निको बढावे ।

कीटी.

ध्मायमानस्यलोहस्यमलंमंडूरमुच्यते ॥
लोहसिंहानिकाकिट्टीसिंहानंचनिगद्यते ॥
यल्लोहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणम् ॥५०॥

अर्थ–लोहके धमानेसें जो मैल निकलता है उसको **मंडूर, लोहसिंहानिका, किट्टी** और **सिंहान** कहतेहै । जिस २ लोहके जो जो गुण हैं वही २ उसकी **कीटीमें** गुण जानने ।

उपधातु.

सप्तोपधातवःस्वर्णमाक्षिकंतारमाक्षिकम् ॥
तुत्थंकांस्यंचरीतिश्चसिंदूरश्चशिलाजतु ५१
उपधातुषुसर्वेषुतत्तद्धातुगुणाअपि ॥
संतिकिंतेषुतेऽनोनास्तत्तदंशाल्पभावतः ५२

अर्थ–सुवर्णमाक्षिक, लीलाथोथा, कांसा, पीतल, सिंदूर और शिलाजीत ए सात **उपधातु** अर्थात् **गौणधातु हैं** । जिस २ धातुमें जो जो गुण हैं उसकी उपधातुमेंभी वो ही वो गुण जानने, किंतु उनके अंश होनेसें कुछ न्यून गुण हैं ।

१ धातु उपधातुओंका शोधन मारण आगे पृथक्ही कहेंगे ।

सुवर्णमाक्षिकके नाम.

स्वर्णमाक्षिकमाख्यातंतापीजंमधुमाक्षिकम् ॥
ताप्यंमाक्षिकधातुश्चमधुधातुश्चसंस्मृतः ५३
किंचित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षि-
कमीरितम् ॥
उपधातुःसुवर्णस्यकिंचित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥
तथाचकांचनाभावेदीयतेस्वर्णमाक्षिकम् ॥
किंतुतस्यानुकल्पत्वात्किंचिदूनगुणास्ततः ॥
नकेवलंस्वर्णगुणावर्त्ततेस्वर्णमाक्षिके ॥
द्रव्यांतरस्यसंसर्गात्संत्यन्येऽपिगुणायतः ५६

अर्थ–स्वर्णमाक्षिक, तापीज, मधुमाक्षिक, ताप्य, माक्षिकधातु और मधुधातु । इसको किंचित्सुवर्णके मिलाप होनेसें **स्वर्णमाक्षिक** कहतेहैं । **हिं.** सोनामक्खी, **का.** धातुमाक्षिक, **अ.** मुर्कशीवाजहबी, **इं.** आयर्नपाईराईटीस्, **ला.** फेरीस फ्ल्युरेटम् । यह सुवर्णकी उपधातु होनेसें किंचित्सुवर्णकसे गुणयुक्त है । इसको सुवर्णके अभावमें देतेहैं । उस सुवर्णके सदृश होनेसें इसमें सुवर्णसें कुछ न्यून गुण है । इस सुवर्णमाक्षिकमें केवल सुवर्णकेही गुण नहीं है । किंतु इसमें अन्य द्रव्यके संयोग होनेसें अन्यभी गुण हैं ।

सुवर्णमाक्षिकके गुण.

सुवर्णमाक्षिकंस्वादुतिक्तंवृष्यंरसायनम् ॥
चक्षुष्यंबस्तिरुक्कुष्ठपांडुमेहविषोदरान् ॥
अर्शःशोथंविषंकंडूत्रिदोषमपिनाशयेत् ॥५७॥

अर्थ–सुवर्णमाक्षिक-स्वादु, कडवा, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, बस्तिपीडा, कोढ, पांडु, प्रमेह, विषोदर, बवासीर, सूजन, विषके विकार, खुजली और त्रिदोषको नष्ट करे ।

अशुद्धके दोष.

मंदानलत्वंबलहानिमुग्रां
विष्टंभितांनेत्रगदान्सकुष्ठान् ॥
तथैवमालांव्रणपूर्विकांच
करोतितापीजमशुद्धमेतत् ॥ ५८ ॥

अर्थ-मंदाग्नि, बलकीहानी, विष्टंभ, नेत्ररोग, कोढ, गंडमाला और घाव इन सब रोगोंको अशुद्धसुवर्णमाक्षिक करता है ।

तारमाक्षिक.

ताराक्षिकमन्यत्तुतद्भवेद्रजतोपमम् ॥
किंचिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥
अनुकल्पतयातस्यततोहीनगुणाःस्मृताः ॥
नकेवलंरूप्यगुणायतःस्यात्तारमाक्षिकम् ॥

अर्थ-दूसरा रूपेके समान तारमाक्षिक अर्थात् रूपामक्खि होताहै, इसमें कुछ चांदीके मेल होनेसें रूपामक्खी कहतेहैं । उस चांदीके सदृश होनेसें इसमें चांदीसें कुछ न्यून गुण है । केवल इसमें चांदीकेही गुण नहीं है । [किंतु द्रव्यांतरके संयोगसें औरभी गुण करे है] क्योंकि तारमाक्षिक है ।

गुण.

स्वादुपाकेरसेकिंचित्तिक्तंवृष्यंरसायनम् ॥
चक्षुष्यंबस्तिरुक्कुष्ठपांडुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोथंक्षयंकंडूंत्रिदोषमपिनाशयेत्॥६१॥

अर्थ-रूपामक्खि पाक और रसमें स्वादिष्ट और किंचिन्मात्र कडवी, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, बस्तिपीडा, कोढ, पांडु, प्रमेह, विषोदर, बवासीर, सूजन, क्षय, खुजली और त्रिदोष इनको नष्ट करे ।

अशुद्धके दोष.

मंदानलत्वंबलहानिमुग्रां-
विष्टंभतांनेत्रगदान्सकुष्ठान् ॥
तथैवमालांव्रणपूर्विकांच-
करोतितापीजमिदंचतद्वत् ॥ ६२ ॥

अर्थ-मंदाग्नि, बलहानी, विष्टंभ, नेत्ररोग, कोढ, गंडमाला और फोडाफुंसी इनको अशुद्धरूपामक्खी करैहै । सुवर्णमाक्षी और रूपामाक्षीके गुण दोष समानही लिखेहैं और कुछ पाठांतरभी नहीं करा इससें निश्चय होताहै कि यह एकही धातु है केवल वर्णभेद मात्र है ।

तूतिया (लीलाथोथा) और खपरिया.

तुत्थंवितुन्नकंचापिशिखिग्रीवंमयूरकम् ॥
तुत्थंताम्रोपधातुर्हिकिंचित्ताम्रेणतद्भवेत् ६३
किंचित्ताम्रगुणंतस्माद्वक्ष्यमाणगुणंचतत् ॥
तुत्थंकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु ॥ ६४ ॥
लेखनंभेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् ॥
विषाश्मकुष्ठकंडूघ्नंखर्परंचापितद्गुणम् ॥ ६५ ॥

अर्थ-तुत्थ, वितुन्नक, शिखिग्रीव और मयूरक ए संस्कृतनाम, हिं. तूतिया, लीलाथोथा, म. मोरतुत्थ, का. मयूरतुत्थ, तै. मलतुतु, फा. तूतिया, इं. सल्फेट ऑफ कॉपर कहतेहैं । यह तामेका उपधातु है । इसमें कुछ ताम्रका अंश है । इस वास्ते इसमें तामेके गुण है । सो आगे कहेंगे । गुण । तूतिया कटु, खारी, कषेला, उलटी लानेवाला, हलका, लेखन, भेदन, शीतल, नत्रोंको हितकारी, कफ पित्त हरण कर्ता, विष, पथरी, कोढ, खुजली, इनको दूर करे । जो गुण तूतियामें हे वही गुण खपरियामें जानने । हिं. खपरिया, म. कलखापरी, गु. खपरियुंकाली, का. खर्परी, फा. संगवसरी, इं. जिंकसल्फाईडम् कहतेहै.

कांसा.

ताम्रंत्रपुजमाख्यातंकांस्यंघोषंचकंसकम् ॥
उपधातुर्भवेत्कांस्यंद्वयोस्तरणिरंगयोः ६६
कांसस्यतुगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः ॥
संयोगजप्रभावेणतस्यान्येऽपिगुणाःस्मृताः ॥
कांस्यंकषायंतिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम् ॥
गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरंपरम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-तांमा और रांगा दोनोंके मिलानेसें कांसा बनताहै उसको कांस्य, घोष और कंसक कहतेहै, । का. कंचू, फा. रोइन, अ. तालिकून, इं. बेलमेटल ब्रोंज, यह कांसा, तांमा और रांगा इन दोनोंकी उपधातु है । कांसेके गुण तांमे और रांगेके समान जानने चाहिये । गुण । कांसा-कषेला, कडवा, गरम, लेखन, विषद, दस्तावर, भारी, नेत्रोंको हित, रूखा और कफपित्तको हरण करनेवाला है ।

पीतर.

पित्तलंत्वारकूटंस्यादारोरीतिश्चकथ्यते ॥
राजरीतिर्ब्रह्मरीतिःकपिलापिंगलापिच ६९
रीतिरप्युपधातुःस्यात्ताम्रस्ययसदस्यच ॥

पित्तलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः ॥
संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ॥
रीतिकायुगलंरूक्षंतिक्तंचलवणरसे ॥
शोधनंपांडुरोगघ्नंकृमिघ्नंनातिलेखनम् ॥७१॥

अर्थ–पित्तल, आरकूट, आर, रीति एवं राजरीति, ब्रह्मरीति, कपिला और पिंगला ए नाम है। हिं. पीतल, बं. पीतल, का. पित्ताळेयदू, फा. बिरज, इं. ब्रास Brass, पीतल-तांबे और जस्तेकी उपधातु है। यह तांबे और जस्तेके मिलानेसे बनती है। इसीसे इसमें तांबे और जस्तेके समान गुण हैं। परंतु संयोगजन्य प्रभावसे इसमें औरभी गुण हैं। दोनों प्रकारकी अर्थात् पीतल और कांचीपीतर दोनों रसमें रूक्ष, कडवी, निमकीन हैं। देहको शुद्ध करे, पांडुरोगको और कृमिरोगको नाश करे तथा अत्यंत लेखन नहींहै।

सिन्दूर.

सिंदूररक्तरेणुश्चनागगर्भश्चसीसजम् ॥
सीसोपधातुःसिंदूरोगुणैस्तत्सीसवन्मतम् ॥
संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ॥
सिंदूरमुष्णंवीसर्पकुष्ठकंडूविषापहम् ॥
भग्नसंधानजननंव्रणशोधनरोपणम् ॥ ७३ ॥

अर्थ–सिंदूर, रक्तरेणु, नागगर्भ, सीसज, हिं. सिंदूर, तै. चेन्दुरमु, फा. सिरिन्ज, यह सिंदूर शीशेकी उपधातु है। इसीसे इसमें शीशेके समान गुण हैं। और संयोगजन्य प्रभावसें औरभी बहुतसे गुण हैं। गुण । सिंदूर–गरम, विसर्प, कोढ, खुजली और विष इनको दूर करे, टूटी हुई हड्डी आदिको जोडेहै, और व्रणको शोधन और रोपण करेहै।

शिलाजीत.

निदाघेघर्मसंतप्ताधातुसारंधराधराः ॥
निर्यासवत्प्रमुंचंतितच्छिलाजतुकीर्तितम् ॥
सौवर्णराजतंताम्रमायसंतच्चतुर्विधम् ॥
शिलाजत्वद्रिजतुचशैलनिर्यासइत्यपि ॥७५॥
गैरेयमश्मजंचापिगिरिजंशैलधातुजम् ॥

अर्थ–पर्वत गरमियोंकी ऋतुमें तपायमान हो धातुओंके सारको गोंदके सदृश छोडतेहैं, उसको शिलाजीत ऐसा कहतेहैं । बं. शिलाजतु, का. कलुवेचरु, इं. आसफेल्ट। शिलाजीत चार प्रकारका है। सौवर्ण, राजत, ताम्र और आयस। शिलाजीतके नाम। शिलाजतु, अद्रिजतु, शैलनिर्यास, गैरेय, अश्मज, गिरिज और शैलधातुज।

शिलाजीतके गुण.

शिलाजंकटुतिक्तोष्णंकटुपाकंरसायनम् ॥
छेदियोगवहंहंतिकफमेदाश्मशर्कराः ॥
मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंवातार्शांसिचपांडुताम् ॥
अपस्मारंतथोन्मादंशोथकुष्ठोदरकृमीन् ॥

अर्थ–शिलाजीत-चरपरा, कडवा, उष्ण, कटुपाक और रसायन, एवं छेदनकर्ता, योगवाही, कफ, मेधा, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वादीकी बवासीर, पांडुरोग, अपस्मार, उन्माद, सूजन, कोढ, उदर और कृमिरोग इनको दूर करे।

सौवर्णंतुजपापुष्पवर्णंभवतितद्रसात् ॥७८॥
मधुरंकटुतिक्तंचशीतलंकटुपाकिच ॥
राजतंपांडुरंशीतंकटुकंस्वादुपाकिच ॥७९॥
ताम्रंमयूरकंठाभंतीक्ष्णमुष्णंचजायते ॥
लौहंजटायुपक्षाभंतत्तिक्तंलवणंभवेत् ॥८०॥
विपाकेकटुकंशीतंसर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥

अर्थ–तहां सौवर्णशिलाजीत अर्थात् सुवर्णकी खानका शिलाजीत जपाके फूलके समान लालरंगका और इसका रस मधुर, कटु, तिक्त, शीतल और कटुपाकी होताहै। रौप्यजशिलाजीत रंगमें पीला, शीतल, कडवा, स्वादुपाकवाला है। तांबेकी खानका मोरकी गरदनके रंगका, तीक्ष्ण और उष्ण होताहै। लोहेकी खानका शिलाजीत गीधकी पांखके रंगका काला, कडवा और निमकीन होताहै। तथा पाकमें चरपरा और शीतल। यह सबमें श्रेष्ठ कहाहै।

रसशब्दकी निरुक्ति.

रसायनार्थिभिर्लोकैःपारदोरस्यतेयतः ॥
ततोरसइतिप्रोक्तःसचधातुरपिस्मृतः ॥८२॥

अर्थ–रसायनकी इच्छावाले प्राणी इस पारदका सेवन करतेहैं इसीसें इसकी रससंज्ञा है और इसकी धातुसंज्ञाभी है।

पारदकी उत्पत्तिलक्षण.

शिवांगात्प्रच्युतंरेतःपतितंधरणीतले ॥
तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्चतत्॥८३॥
क्षेत्रभेदेनविज्ञेयंशिववीर्यंचतुर्विधम् ॥
श्वेतंरक्तंतथापीतंकृष्णंतत्तुभवेत्क्रमात् ॥
ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चखलुजातितः ॥
श्वेतंशस्तंरुजांनाशेरक्तंकिलरसायनम् ॥
धातुवादेतुतत्पीतंखेगतौकृष्णमेवच ॥

अर्थ–शिवके अंगसैं पृथ्वीमें गिरा हुआ वीर्य तद्देहसारजन्य होनेसैं सपेद और उज्वल हुआ, वह शिववीर्य क्षेत्रभेद (स्थानभेद) सैं चार प्रकारका है। जैसे–सपेद, लाल, पीला और काला। तहां सफेद-पारा ब्राह्मण, लाल क्षत्री, पीला वैश्य और काला पारद शूद्र है। ए पारेकी जाति हैं। सपेदपारा रोगनाशमें उत्तम है, रसायनमें लाल, धातुवाद, (सुवर्ण बनाने) में पीला और खेचरी गतिकेवास्ते कालापारा लेना उत्तम है।

पारदके नाम.

पारदोरसधातुश्चरसेंद्रश्चमहारसः ॥ ८६ ॥
चपलःशिववीर्यंचरसःसूतःशिवाह्वयः ॥
पारदःषड्रसःस्निग्धस्त्रिदोषघ्नोरसायनः ॥

अर्थ–पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य, रस, सूत और यावन्मात्र शिवके नाम है सब पारदके जानना। हिं. पारा, फा. सिमाब, अ. जीवक, इं. मर्क्यूरी, ला. हेड्रार्जिरम्.

पारदके गुण.

योगवाहीमहावृष्यःसदादृष्टिबलप्रदः ॥
सर्वामयहरःप्रोक्तोविशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥८८

अर्थ–पारदमें स्वादु अम्ल आदि छः रस हैं, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, रसायन, योगवाही, महान्वृष्य, सदैवदृष्टि और बलको देताहै, सर्व रोगमात्र हरणकर्ता और विशेष करके संपूर्ण कुष्ठरोगोंको दूर करेहै।

स्वस्थोरसोभवेद्ब्रह्माबद्धोज्ञेयोजनार्दनः ॥
रंजितःकामितश्चापिसाक्षाद्देवोमहेश्वरः ॥
मूर्च्छितोहरतिव्याधीन्बद्धःखेचरतांव्रजेत् — मूर्च्छितोहरतिरुजंबंधनमनुभूयखेगतिंकुरुते

अजरीकरोतिहिमृतःकोऽन्यःकरुणाकरः-
सूतात् ॥ ९० ॥
असाध्योयोभवेद्रोगोयस्यनास्तिचि-
कित्सितम् ॥
रसेंद्रोहंतितंरोगंनरकुंजरवाजिनाम् ॥ ९१ ॥

अर्थ–स्वस्थरसब्रह्मा, बद्ध (बंधाहुआ) जनार्दन, एवं रंजित और कामित रस साक्षात् महेश्वर है। मूर्छितपारा रोगोंको हरण करे, बद्धपारा खेचरी गतिदाता और मृत (माराहुआ) पारा इस प्राणीको अजर अमर करताहै। इस पारदसैं परे और ऐसा करुणा करनेवाला कौन होयगा?। जो रोग असाध्य है कि जिसकी औषधही नहीं है उन मनुष्य हाथी और घोडेके रोगोंको यह पारद हरण करताहै।

पारदके दोष.

मलंविषंवन्हिगिरित्वचापलं-
नैसर्गिकंदोषमुशंतिपारदे ॥
उपाधिजौद्वौत्रपुनागयोगजौ-
दोषौरसेंद्रेकथितौमुनीश्वरैः ॥ ९२ ॥
मलेनमूर्च्छामरणंविषेण
दाहोऽग्निनाकष्टतरःशरीरे ॥
देहस्यजाड्यंगिरिणासदास्यात् ॥
चांचल्यतोवीर्यहृतिश्चपुंसाम् ॥
वंगेनकुष्ठंभुजगेनषण्ढो
भवेद्यतोऽसौपरिशोधनीयः ॥ ९३ ॥
वन्हिर्विषंमलंचेतिमुख्यादोषास्त्रयोरसे ॥
एतेकुर्वंतिसंतापंमृतिंमूर्च्छांनृणांक्रमात् ॥
अन्येऽपिकथितादोषाभिषग्भिःपारदेयदि ॥
तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषतः ॥

अर्थ–मल, विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता ए पांचदोष पारदमें स्वतःस्वभावही है। और रांगे तथा शीशेके दो दोष इसमें उपाधिज हैं। ऐसें सब सातदोष मुनीश्वरोंने कहेहैं। मलके दोषसैं मूर्च्छा, विषदोषसैं मरण, अग्निदोषसैं दाह और अत्यंत देहमें कष्ट, पर्वतके दोषसैं देहमें जडता, और चांच-ल्यत्व दोषके होनेसैं पारा वीर्यको हरण करेहै। वंग-

दोषसें कोढकरे, और शीशेके दोषसें पारा नपुंसक होताहै, इस वास्ते इसका शोधन करना चाहिये। पारेमें मुख्य दोष तीनही हैं–वन्हि, विष और मल, ए तीनों दोष संताप, मृत्यु और मूर्च्छा क्रमसें मनुष्योंके करते हैं। यद्यपि वैद्योंनें औरभी बहुतसे दोष पारेमें वर्णन करेहे परंतु मुख्य ए तीन दोषही है। अतएव विशेष करके इनको हरण करने चाहिये।

अशुद्धपारेके दोष.

संस्कारहीनंखलुसूतराजं
यःसेवतेतस्यकरोतिबाधाम्॥
देहस्यनाशंविदधातिनूनं
कष्टांश्चरोगान्जनयेन्नराणाम्॥ ९६॥

अर्थ–जो प्राणी संस्काररहित पारदका सेवन करताहै उसको यह बाधा करताहै। देहका निश्चय नाश करे और मनुष्योंको कष्टदाता, अनेकरोगोंको प्रगट करेहे। पारदकाभी मारण आगे कहेंगे।

अथोपरसाः

गंधोहिंगुलमभ्रतालकशिलाःस्रोतोंऽजनंटंकणम्॥ राजावर्त्तकचुंबकौस्फटिकयाशंखःखटीगैरिकम्॥ कासीसंरसकंकपर्दसिकताबोलांश्चकंकुष्ठकम्॥ सौराष्ट्रीचमताअमीउपरसाःसूतस्यकिंचिद्गुणैः॥ ९७॥

अर्थ–गंधक, हिंगुल, अभ्रक, हरताल, शिलाजीत, सुरमा, सुहागा, राजावर्त, चुंबक, स्फटिकमणि, शंख, खडिया, गेरू, कसीस, खपरिया, कौडी, वालू, बोल, कंकुष्ठ और फिटकरी ए उपरस अर्थात् गौण रस है। ए पारेसें गुणोंमें कुछ न्यून हैं।

हिंगुलके नाम, भेद और गुण.

हिंगुलंदरदंम्लेच्छमिंगुलंचूर्णपारदम्॥
दरदस्त्रिविधःप्रोक्तश्चर्मारःशुकतुंडकः॥ ९८
हंसपादस्तृतीयःस्याद्गुणवानुत्तरोत्तरम्॥
चर्मारःशुक्लवर्णःस्यात्सपीतःशुकतुंडकः॥
जपाकुसुमसंकाशोहंसपादोमहोत्तमः॥ ९९

तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्या-
न्नेत्रामयघ्नंकफपित्तहारि॥
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्च
प्लीहामवातौचगरंनिहंति॥ १००॥
ऊर्ध्वपातनयुक्त्यातुडमरूयंत्रपाचितम्।
हिंगुलंतस्यसूतंतुशुद्धमेवंनशोधयेत्॥ १॥

अर्थ–हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, इंगुल, और चूर्णपारद ए संस्कृत नाम। हिं. हींगलू, इंगुर, सिंगरफ, म. हिंगूळ, गु. हिंगळो, का. इंगुलिक, तै. हिंगला कामु, अ. जंजफर, फा. सिंग्रफ्, इं. सल्फरेट ऑफ् मर्क्यूरी। हींगलू तीनप्रकारका होता है; जैसे–चर्मार, शुकतुंडक और तीसरा हंसपाद। ए उत्तरोत्तर गुणवाले है। तहां चर्मारसंज्ञक हींगलू सपेद रंगका, और पीले रंगका शुकतुंडक। एवं जपाके फूलके समान लालरंगका महोत्तम हंसपाद हींगलू कहाताहै। इसीको रूमी हींगलू कहतेहैं। गुण। कडवा, कषेला, चरपरा। नेत्ररोग, कफपित्तके विकार, हृल्लास, कोढ, ज्वर, कामला, प्लीह, आमवात और विषके विकारोंको दूर करे। हींगलूको ऊर्ध्व पातन युक्ति करके डमरू यंत्रमें पचावे इसमेंसें जो पारा निकलताहै वह शुद्ध है। उसका फिर शोधन न करे [परंतु यह वाक्य साधारण है. यदि ऐसाही होता तो फिर पारदके अष्टादश संस्कार क्यों लिखते।]

गंधककी उत्पत्ति और नाम.

श्वेतद्वीपेपुरादेव्याःक्रीडंत्यारजसाप्लुतम्॥
दुकूलंतेनवस्त्रेणस्नातायाःक्षीरनीरधौ॥ २॥
प्रसृतंयद्रजस्तस्माद्गंधकःसमभूत्ततः॥
गंधकोगंधिकश्चापिगंधपाषाणइत्यपि॥ ३॥
सौगंधिकश्चकथितोबलिर्बलरसोपिच॥
चतुर्धागंधकःप्रोक्तोरक्तःपीतःसितोऽसितः॥
रक्तोहेमक्रियासूक्तःपीतश्वेतौरसायने॥
व्रणादिलेपनेश्वेतःकृष्णःश्रेष्ठःसुदुर्लभः॥ ५॥

अर्थ–श्वेतद्वीपमें पहले क्रीडाकरती पार्वतीकें रजोदर्शहुआ उस रजोदर्शके सनेहुए कपडेसें श्रीपार्वतीजी समुद्रमें न्हाई तब वो रजका रुधिर समुद्रमें

गया उसीसें यह गंधक प्रगटहुई । उसगंधकके नाम । गंधक, गंधिक, गंधपाषाण, सौगंधिक, बलि, बलरस । गंधक चार प्रकारकी है—लाल, पीली, सपेद और काली । लालगंधक सुवर्णके बनानेमें लेनी, पीली और सपेद् रसायन कर्ममें, व्रणादिलेपनमें, सपेद् और जो श्रेष्ठ कालीगंधक है उसका मिलनाहीं दुर्लभ है ।

गंधकके गुण.

गंधकःकटुकस्तिक्तोवीर्योष्णस्तुवरःसरः ॥
पित्तलःकटुकःपाकेकंडुवीसर्पजंतुजित् ॥
हंतिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः ॥ ६ ॥

अर्थ–गंधक–चरपरी, कडवी, उष्णवीर्यवाली, कषेली, दस्तावर, पित्तकर्ता, पाकके समय चरपरी, खुजली, विसर्प, कृमिरोग, कोढ, क्षय, प्लीह, कफ और वातके रोग इनको दूर करे और रसायन है ।

अशुद्धगंधकके दोष.

अशोधितोगंधकएषकुष्ठं
करोतितापंविषमंशरीरे ॥
शोषंचरूपंचबलंतथौजः
शुक्रंनिहंत्येवकरोतिचास्रम् ॥ ७ ॥

अर्थ–अशुद्धगंधक कोढ, विषम ताप (विषमज्वर), शोष, रूप, बल, ओज और वीर्यकी हानि करे, तथा रुधिरको दूषित करेहै । .

अभ्रककी उत्पत्ति और भेद.

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम् ॥
विस्फुलिंगास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पिताः ॥ ८
तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुमहीभृताम् ॥
तेभ्यएवसमुत्पन्नंतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम् ॥ ९ ॥
तद्वज्रंवज्रजातस्मादभ्रमभ्ररवोद्भवात् ॥
गगनात्स्खलितंयस्माद्गगनंचततोमतम् ॥
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तस्याच्चतुर्विधः ॥
क्रमेणैवासितंरक्तंपीतंकृष्णंचवर्णतः ॥ ११ ॥
प्रशस्यतेसितंतारेरक्तंतत्तुरसायने ॥
पीतंहेमनिकृष्णंतुगदेषुद्रुतयेऽपिच ॥ १२ ॥
पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रंचेतिचतुर्विधम् ॥
मुंचत्यग्नौविनिक्षिप्तंपिनाकंदलसंचयम्॥१२॥
अज्ञानाद्भक्षणंतस्यमहाकुष्ठप्रदायकम् ॥
दर्दुरंत्वग्निनिःक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्वनिम् ॥
गोलकान्बहुशःकृत्वासस्यान्मृत्युप्रदायकः
नागंतुनागवद्वन्हौफूत्कारंपरिमुंचति ॥
तद्भक्षितमवश्यंतुविदधातिभगन्दरम् ॥
वज्रंतुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौविकृतिंव्रजेत् ॥
सर्वाभ्रेषुवरंवज्रंव्याधिवार्धिक्यमृत्युहृत् ॥
अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्त्वंगुणाधिकम् ॥
दक्षिणाद्रिभवंस्वल्पसत्वमल्पगुणप्रदम् ॥

अर्थ–पहले वृत्रासुरके मारनेको इन्द्रने वज्रधारण करा, उस समय उसमेंसे चिनगारी निकलकर आकाशमें फैल गई, फिर वोही चिनगारी गर्जते हुए वद्दलोंसें निकलकर पर्वतोंकी शिखरोंमें पडीं, उन्हींसें उन्हीं २ पर्वतोंमें अभ्रक (भोडल) प्रगट हुई । यह वज्रसें जो प्रगट हुई इसीसें इसको वज्र कहतेहैं, और वद्दलोंके शब्दसें जो प्रगट हुई इसीसें इसकी अभ्र संज्ञाहुई, और गगन (आकाश) सें जो गिरी इसीसे अभ्रककी गगनसंज्ञाहै । इं. टाल्क, गिलमर, ला. माईका कहतेहैं । यह ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इन भेदोंसें चारप्रकारकी है । इनके वर्ण क्रमसें जानने । सपेद, लाल, पीली और काली । तहां चांदीके बनानेमें सपेद्, रसायनमें लाल, सुवर्ण बनानेमें पीली और रोगोंमें तथा द्रुतिके वास्ते कृष्णाभ्रक लेनी चाहिये । अब वज्रके चार भेद कहतेहैं । अभ्रक, पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र इन भेदोंसें चारप्रकारकी है । तहां पिनाक संज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसें परत २ होजाती है । यदि अज्ञानसे इसको खाय लेवे तो उसके घोर सातकोढोंको करे । दर्दुरनामक अभ्रक अग्निमें डालनेसें मेंडकके समान शब्द करतीहै, यह देहमें अनेक गांठोंको उत्पन्न करके मृत्यु देतीहै । नागसंज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसें सांपके समान फुंकार करतीहै, यदि इसको खाय तो अवश्य भगंदरका रोग करे । और वज्रसंज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसें वज्र (हीरे) के समान जैसेकी तैसी बनी रहतीहै विकृती

...हीं है । इससैं संपूर्ण अभ्रकोमें यह वज्राभ्रक उत्तम है, यह व्याधि वृद्धावस्था और मृत्युको हरण करतीहै । उत्तरके पर्वतोमें जो अभ्रक उत्पन्न होतीहै वह बहुतसत्व और अधिक गुणवाली है । और दक्षिणके पर्वतोसैं जो प्रगट होतीहै उसमें थोडासत्व और अल्प गुण जानने ।

अभ्रकके गुण.

अभ्रंकषायंमधुरंसुशीत-
मायुष्करंधातुविवर्धनंच ॥
हन्यात्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठ-
प्लीहोदरग्रंथिविषकृमींश्च ॥ १८ ॥
रोगान्हंतिद्रढयतिवपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्ते ॥
तारुण्याढ्यंरमयतिशतंयोषितांनित्यमेव ॥
दीर्घायुष्काञ्जनयतिसुतान्विक्रमैः
सिंहतुल्यान् ॥
मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रम् ॥

अर्थ-अभ्रक- कषेली, मधुर, शीतल, आयुकर्त्ता धातुवर्द्धक । प्रयोग । यह त्रिदोष, व्रण, प्रमेह, कोढ, प्लीहोदर, गांठ, विषविकार और कृमिरोगको दूर करे । मृताभ्रकके गुण । रोगोंको नष्ट करे, देहको दृढ करे, वीर्य वढावे, तरुणावस्था युक्त नित्य सौ स्त्रियोंसैं भोग करे । दीर्घआयुवाले, पराक्रमी सिंहके समान पुरुषार्थी ऐसे पुत्रोंको प्रगट करे, नित्य सेवन करनेवालेके मृताभ्रक (अभ्रककी भस्म) मौतके भयको भी हरण करेहै ।

अशुद्धअभ्रकके दोष.

पीडांविधत्तेविविधांनराणाम्
कुष्ठंक्षयंपांडुगदंचशोथम् ॥
हृत्पार्श्वपीडांचकरोत्यशुद्ध-
मभ्रंत्वसिद्धंगुरुतापदंस्यात् ॥१२० ॥

अर्थ-अशुद्धअभ्रक सेवनसैं मनुष्योंके अनेक प्रकारकी पीडा, कोढ, क्षय, पांडुरोग, सूजन, हृदय और पसवाडेकी पीडा, तथा, भारीताप (घोरज्वर)-को करेहै ।

हरितालके नाम और गुण.

हरितालंतुतालंस्यादालंतालकमित्यपि ॥
हरितालंद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यंपिंडसंज्ञकम् ॥
तयोराद्यंगुणैःश्रेष्ठंततोहीनगुणंपरम् ॥
स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाभ्रपत्रवत् ॥२२॥
पत्राख्यंतालकंविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनम् ॥
निष्पत्रंपिंडसदृशंस्वल्पसत्त्वंतथागुरु ॥
स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणंतत्पिंडतालकम् ॥

अर्थ-हरिताल, ताल, आल और तालक ए हरितालके नाम है । हरिताल दो प्रकारकी होती-है, एक पत्राख्य (तवकिया) और दूसरी पिंड-संज्ञक अर्थात् डेलेकी । इन दोनोंमें पहली तवकिया हरताल उत्तम है और पिंडाख्य हरताल हीनगुण-वाली हैं । पत्राख्य हरतालके लक्षण । जिसका सुवर्णकासा रंग हो, भारी, चिकनी और जिसके अभ्रकके समान परतहों उसको पत्राख्यताल जाननी । यह गुणवान् रसायन है । और जिसमें परत न हों गोलेके माफिक हो वह अल्पसत्व और हलकी स्त्रीके पुष्पको हरणकर्त्ता पिंडतालक जाननी ।

हरतालके गुण.

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् ॥
कंडूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥

अर्थ-हरताल-चरपरी, चिकनी, कषेली, गरम हैं । यह विषविकार, खुजली, कोढ, मुखके रोग, रुधिरविकार, कफपित्त, बाल और व्रणको हरण करेहै ।

अशुद्ध और दुर्मारितहरतालके दोष.

हरतिचहरितालंचारुतांदेहजाताम्
सृजतिचबहुतापमंगसंकोचपीडाम् ।
वितरतिकफवातौकुष्ठरोगंविदध्या-
दिदमशितमशुद्धंमारितंचाप्यसम्यक् ॥

अर्थ-अशुद्ध और अविधिसैं मारीहुई हरताल देहकी सुंदरताको हरण करे और घोर तापको तथा अंगोंका संकोच और पीडाको करै, कफ वातको वढावे और कोढ करेहै ।

मनसिलके नाम और गुण.

मनःशिलामनोगुप्तामनोह्वानागजिह्विका ॥
नैपालीकुनटीगोधाशिलादिव्यौषधिःस्मृता

मनःशिलागुरुर्वर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः ॥
तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतकफास्रनुत्
मनःशिलामंदबलंकरोति
जंतुंध्रुवंशोधनमंतरेण ॥
मलानुबंधंकिलमूत्ररोधं
सशर्करंकृच्छ्रगदंचकुर्यात् ॥ २८ ॥

अर्थ-मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोव्हा, नागजिव्हिका, नैपाली, कुनटी, गोधा, शिला और *दिव्यामहौषधि*, ए संस्कृत नाम, हिं. मनसिल कहतेहैं । **गुण** । मनसिल-भारी, वर्णकर्त्ता, दस्तावर, गरम, लेखनी, कटु, कडवी, स्निग्ध, विषविकार, श्वास, खांसी, भूतबाधा, कफ और रुधिरके विकारोंको नष्ट करे । विना शोधनके मनसिल मंदबल करतीहै, मलरोके शर्करासहित मूत्ररोध और मूत्रकृच्छ्र इनको करेहै ।

सुरमा.

अंजनंयामुनंचापिकापोतांजनमित्यपि ॥
तत्स्रोतोऽजनंकृष्णंसौवीरंश्वेतमीरितम् ॥
वल्मीकशिखराकारंभिन्नमंजनसन्निभम् ॥
घृष्टंतुगैरिकाकारमेतत्स्रोतोऽजनंस्मृतम् ॥
स्रोतोऽजनसमंज्ञेयंसौवीरंतत्तुपांडुरम् ॥
स्रोतोऽजनंस्मृतंस्वादुचक्षुष्यंकफपित्तनुत् ॥
कषायंलेखनंस्निग्धंग्राहिच्छर्दिविषापहम् ॥
सिध्मक्षयास्रहृच्छीतंसेवनीयंसदाबुधैः ३२
स्रोतोंजनगुणाःसर्वेसौवीरेऽपिमताबुधैः ॥
किंतुद्वयोरंजनयोःश्रेष्ठंस्रोतोंऽजनंस्मृतम् ॥

अर्थ-अंजन, यामुन, कापोतांजन, ए सुरमाके नाम हैं । तहां कालेसुरमाको **स्रोतोंजन** कहतेहैं । और सपेतसुरमाको **सौवीरांजन** कहतेहै । बांबीकी शिखरके समान और कज्जलके टुकडेके समान तथा घिसनेसें गेरूके आकार होवे यह **स्रोतोंजन** कहाताहै । सपेद अंजनको **सौवीरांजन** कहतेहै । यह भी लक्षणोंमें काले सुरमेके सदृश होताहै परंतु कुछ२ पीला होताहै । अ. कुहल इसमुद, फा. सुर्मे *अस्फहानी, अं. आंटीमनी, ला. आंटीमोनाई,* तहां कालासुरमा स्वादु, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्तको नाशक, कषेला, लेखन, स्निग्ध, ग्राही, छर्दि, विषविकार, वनरफ, क्षय और रुधिरविकार इनको हरण करे । इसको सदैव बुद्धिमान् सेवन करे । सपेदसुरमामें सब गुण काले सुरमाके समान है । परंतु दोनों सुरमाओंमें काला सुरमाही श्रेष्ठ कहा है । स्रोतोंजन उपरस होनेसें फिर कहा गयाहै ।

सुहागा.

टंकणोग्निकरोरूक्षःकफघ्नोवातपित्तकृत् ॥

अर्थ-सुहागा-अग्नि करे, रूक्ष, कफघ्न और वातपित्त करेहै ।

फिटकरी.

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा ॥
दृढरंगासुरंगाचगतरंगापिकथ्यते ॥ ३५ ॥
स्फटिकातुकषायोष्णावातपित्तकफव्रणान् ॥
निहंतिचित्रवीसर्पान्योनिसंकोचकारिणी ॥

अर्थ-स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रंगदा, दृढरंगा, सुरंगा और गतरंगा, ए **फिटकरीके** नाम है। म. तुरटी। **गुण** । कषेली, गरम, वातपित्त, कफ, व्रण, चित्रकुष्ठ, विसर्परोग इनको दूर करे, तथा योनीको संकोचित करतीहै ।

रेवटी.

राजावर्तःकटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशनः
राजावर्तःप्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारणः ॥३७॥

अर्थ-राजावर्त्त अर्थात् रेवटी। **गुण** । कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक, प्रमेह, छर्दि और हिचकी इनको दूर करे ।

चुंबक.

चुंबकःकांतपाषाणोयःकांतोलोहकर्षकः ॥
चुंबकोलेखनःशीतोमेदोविषगरापहः ॥३८॥

अर्थ-लोहको खीचनेवाला जो लोहा उसको **चुंबक** और **कांतपाषाण** कहतेहैं । **चुंबकपाषाण** लेखन, शीतल, मेदारोग, विष और विषविकार, इनको दूर करे ।

गेरू सुवर्णगेरू.

गैरिकंरक्तधातुश्चगैरेयंगिरिजंतथा ॥
सुवर्णगैरिकंत्वन्यत्ततोरक्ततरंहितम् ॥३९॥

रिकाद्वितयंस्निग्धंमधुरंतुवरंहिमम् ॥
चक्षुष्यंदाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥

अर्थ-गैरिक, रक्तधातु, गैरेय, गिरिज, ए गेरू-के नाम । दूसरा सुवर्णगैरिक है । क. जाजु, अ. तिनेमगरवी अहमर, फा. गिलेसुर्खे मिश्री, अं. ओकर, ला. बॉलरुब्रा, यह पहलेसैं अधिक लाल होताहै, दोनों गेरू स्निग्ध, मधुर, कषेले, शीतल, नेत्रोंको हितकारी । दाह, पित्त, रुधिरविकार, कफ, हिचकी और विषविकार इनको नष्ट करे ।

खरी. गौरखरी.

खटिकाकटिकाचापिलेखनीचनिगद्यते ॥
खटिकादाहजिच्छीतामधुराविषशोथजित् ॥
लेपादेतद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा ॥
खटीगौरखटीद्वेचगुणैस्तुल्येप्रकीर्तिते॥४२॥

अर्थ-खटिका, कटिका और लेखनी ए संस्कृत नाम । म. वेतोबहु, अ. तिने अबीयद, फा. गिलेसफेद, अं. पाईपक्ले, ला. कार्बोनेट ऑफ कलशम् । गुण । खडिया-दाहको हरण करे, शीतल, मधुर, विष और सूजनको जीते । ए गुण लेप करनेसैं करेहै और खानेसैं मिट्टीके समान गुण करेहैं । खडिया और गौरखडिया गुणोंमें दोनों समान है ।

बालू.

वालुकासिकताप्रोक्ताशर्करारेतजापिच ॥
वालुकालेखनीशीताव्रणोरःक्षतनाशिनी ॥

अर्थ-वालुका, सिकता, शर्करा और रेतजा ए वालूके वा रेतीके नाम है । क. हालुलु, तै. विशिका, अ. रमल, फा. रेग, अं. सेन्ड, ला. सीलीका । गुण । वालू-लेखनी, शीतल, व्रण और छातीके घावको नष्ट करेहै ।

खपरिया और तुत्थका भेद.

खर्परीतुत्थकंतुत्थादन्यत्तद्रसकंस्मृतम् ॥
येगुणास्तुत्थकेप्रोक्तास्तेगुणारसकेस्मृताः

अर्थ-खर्परी, तुत्थक, तुत्था, ए मोरचूतके नाम है । बं. तूतिया, गु. मोरथुथु, म. मयूरतुत्थ, तै. मेलतुत्, फा. तूतिया अकजर, अ. तूदिया, अं. सल्फेट ऑफ कॉपर, ला. क्यूप्रिसल्फास । खपरियाको म. कलखापरी, फा. संगबसरी, अ. तूतिया विरमानी, इं. ब्लाकजाक, ला. जिंकसल्फाइडम् । तुत्थका भेदही रसक है । जो गुण लीलाथोथेमें है वही गुण रसक (खपरिया) में है ।

कसीस.

काशीसंधातुकाशीसंपांसुकाशीसमित्यपि ।
तदेवकिंचित्पीतंतुपुष्पकाशीसमुच्यते॥४५॥
काशीसमम्लमुष्णंचतिक्तंचतुवरंतथा ॥
वातश्लेष्महरंकेश्यंनेत्रकंडूविषप्रणुत् ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनंपरिकीर्तितम् ॥

अर्थ-कसीसको-काशीश, धातुकाशीश और पांशु-काशीश कहतेहैं । कसीस राखके सदृश एक प्रकारकी खट्टी मिट्टी होती है । और जो कुछ पिलाई लिये होताहै उसको पुष्पकाशीश कहतेहै । इसप्रकार कसीस तीनप्रकारका है । म. हीराकस, फा. जाकसब्ज, अ. जाजेअखदर [असफर], अं. सल्फेट ऑफ् आयर्न, ला. विटि अलम्रीन् । कसीसके गुण । कसीस खट्टा, गरम, कडवा, कषेला, वातकफको हरण करे, बालोंको बढावे, नेत्ररोग, खुजली, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और चित्रकुष्ठको दूर करेहैं ।

गोपीचंदन.

सौराष्ट्रीतुवरीकांक्षीमृत्तालकसुराष्ट्रजे ॥
आढकीचापिसाख्यातामृत्स्नाचसुरमृत्तिका
स्फटिकायागुणाःसर्वेसौराष्ट्र्यापिकीर्तिताः

अर्थ-सौराष्ट्री, तुवरी, कांक्षी, मृत्तालक, सुराष्ट्रजा, आढकी, मृत्स्ना और सुरमृत्तिका ए सोरठीमिट्टीके नाम है जिसको गोपीचंदन कहते है । इसमें सब गुण फिटकरीके समान है ।

कालीमिट्टी.

कृष्णामृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-घाव, दाह रुधिरविकार, प्रदर और कफपित्तको दूर करे ।

कीच.

कर्दमोदाहपित्तार्तिशोथघ्नःशीतलःसरः ४८

अर्थ-सं. पंक, कर्दम-अर्थात् कीच. गारा, म.

पियाक, तै. मोपुल, अं. मल्ब्लैक। गुण। दाह और पित्तकी पीडा, सूजनको दूर करे, शीतल और दस्तावर है।

बोल.

बोलंगंधरसंप्राणंपिंडगोपरसंसमाः ॥
बोलंरक्तहरंशीतंमेध्यंदीपनपाचनम् ॥ ४९ ॥
मधुरंकटुतिक्तंचदाहस्वेदत्रिदोषजित् ॥
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥

अर्थ—बोल, गंधरस, प्राण, पिंड, गोपरस और सम, ए बोल-बीजाबोल । हीराबोल रक्ताबोलके नामहै। फा. मुर, अ. मुरम की, अं. मिरहा। गुण। बोल रुधिरविकारको हरण करे, अथवा बहते रुधिरको रोके, शीतल, मेध्य (पवित्र), दीपन और पाचन, मधुर, कटु, तिक्त, दाह, पसीने, त्रिदोष ज्वर, मृगी और कोढ इनको नष्ट करे तथा गर्भाशयको शुद्ध करेहै।

कंकुष्ठ.

हिमवत्पादशिखरेकंकुष्ठमुपजायते ॥
तत्रैकंनलिकाख्यंस्यात्तदन्यद्रेणुकंस्मृतम् ५१
पीतमभंगुरस्निग्धंश्रेष्ठंकंकुष्ठमादिमम् ॥
श्यामंपीतंलघुत्यक्तसत्त्वंनेष्टंहिरेणुकम् ॥
कंकुष्ठंकाककुष्ठंचवरांगंकोलकाकुलम् ॥
कंकुष्ठंरेचनंतिक्तंकटूष्णंवर्णकारकम् ॥
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥

अर्थ—हिमालय पर्वतकी शिखरोंमें कंकुष्ठ (मुरदासंग) उत्पन्न होताहै। तहां एक नलिकाख्य और दूसरा रेणुक कहाताहै । इनमें पीला, भारी और चिकना, ऐसा उत्तम कंकुष्ठ जानना। गु. वोदार कांकरो, अं. लिथार्ज, ला. ळुंवी आक्ष डेम्। काला, पीला, हलका और जिसमें सत्त न होय वो रेणुक कंकुष्ठ है। कंकुष्ठके नाम। कंकुष्ठ, काककुष्ठ, वरांग और कोलकाकुल। गुण। कंकुष्ठ अर्थात् मुरदासंग दस्तावर, कडवा, चरपरा, गरम और देहके वर्णको उजला करनेवाला। कृमि, सूजन, उदर, अफरा, गोला, आनाह और कफको दूर करेहै।

रत्नशब्दकी निरुक्ति.

धनार्थिनोजनाःसर्वेरमंतेऽस्मिन्नतीवयत् ॥
ततोरत्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः ५४
रत्नक्लीबेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते ॥
तत्तुपाषाणभेदोऽस्तिमुक्तादिषुतदुच्यते ५५

अर्थ—धनकी इच्छावाले प्राणी इन रत्नोंमें बहुतही रमण करतेहैं, इससे होग आदिको शब्दशास्त्रके ज्ञाताओंने रत्न ऐसा संज्ञा दीनीहै । अमरकोशमें भी लिखाहै कि रत्न और मणि ए दोनो शब्द चमकनेवाले जवाहिरातमें और मोती आदिमें कहे जातेहैं।

रत्न.

रत्नंगारुत्मतंपुष्परागोमाणिक्यमेवच ॥
इंद्रनीलश्चगोमेदस्तथावैदूर्यमित्यपि ॥
मौक्तिकंविद्रुमश्चेतिरत्नान्युक्तानिवैनव २६

अर्थ—रत्न (हीरा) गारुत्मत (पन्ना) पुष्पराग (पुखराज), माणिक्य (माणिक) इन्द्रनील (नीलम), गोमेद (पीलेरंगकीमणि) वैदूर्य, मोती और मूंगा ए नौरत्न है। विष्णुधर्मोत्तर ग्रथमें भी नवरत्न कहेहै जैसे—

मुक्ताफलंहीरकंचवैदूर्यपद्मरागकम् ॥
पुष्परागंचगोमेदंनीलंगारुत्मतंतथा ॥
प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव ॥ ५७॥

अर्थ—मोती, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग (मानिक), पुखराज, गोमेद, नील, पन्ना और मूंगा ए महानवरत्न है।

हीरकःपुंसिवज्रोऽस्त्रीचंद्रोमणिवरश्चसः ॥
सतुश्वेतःस्मृतोविप्रोलोहितःक्षत्रियःस्मृतः॥
पीतोवैश्योऽसितःशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्चसः
रसायनेमतोविप्रःसर्वसिद्धिप्रदायकः ॥५९॥
क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःस्मृतः॥
वैश्योधनपदःप्रोक्तस्तथादेहस्यदार्ढ्यकृत् ॥
शूद्रोनाशयतिव्याधीन्वयस्तंभंकरोतिच
पुंस्त्रीनपुंसकानीहलक्षणीयानिलक्षणैः ॥६१॥

…वृत्ताःफलसंपूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः ॥
पुरुषास्तेसमाख्यातारेखाबिंदुविवर्जिताः ॥
रेखाबिंदुसमायुक्ताःषडस्रास्तेस्त्रियःस्मृताः
त्रिकोणाश्चसुदीर्घास्तेविज्ञेयाश्चनपुंसकाः ॥
तेषुस्युःपुरुषाःश्रेष्ठारसबंधनकारिणः॥ ६३ ॥
स्त्रियःकुर्वंतिकायस्यकांतिंस्त्रीणांसुखप्रदाः॥
नपुंसकास्त्ववीर्याःस्युरकामाःसत्त्ववर्जिताः
स्त्रियःस्त्रीभ्यःप्रदातव्याःक्लीबंक्लीबेप्रयोजयेत्
सर्वेभ्यःसर्वदादेयाःपुरुषावीर्यवर्धनाः ॥६५॥

अर्थ–हीरक, वज्र, चंद्र और मणिवर, ए संस्कृत नाम, हिं. हीरा, म. हिरा, फा. इल्माफा, ला. पियोर कार्बन एडम्स्, अं. डायेमंड Diamond कहतेहै। हीरा चार प्रकारका है। तहां सपेदरंगका हीरा ब्राह्मण, लाल क्षत्री, पीला वैश्य, और काले रंगका हीरा शूद्रसंज्ञक जानना। रसायनमें ब्राह्मण हीरा लेना, यह सर्व सिद्धि देताहै। क्षत्री जातिका हीरा सकल व्याधियोंको विध्वंस करे और बुढापा तथा मृत्युको दूर करे। वैश्यजातिका हीरा धनदाता, तथा देहको दृढ करे। और शूद्रजातिका हीरा व्याधियोंको नाश करे तथा अवस्थाका स्तंभन करताहै। जैसें श्वेतादि भेदोंसे हीरेके ब्राम्हणादि चार वर्णभेद करेहै। उसीरीतिसे आकृतिभेदसें उसके पुरुष, स्त्री, नपुंसक भेद पृथक् २ जानने चाहिये। उत्तम गोलाकार, दीप्तमान् बडा, रेखाबिंदु करके रहित हीरेको पुरुषजातिका जानना। रेखाबिंदुयुक्त छःकोनेवाले हीरेको स्त्रीजातिका जानना। इसीप्रकार त्रिकोणयुक्त लंबे हीरेको नपुंसकजातिका जानना चाहिये। इनमें पुरुषजातिका हीरा श्रेष्ठहै। स्त्रीजातिका हीरा देहको सुंदरता करेहै यह स्त्रियोके वास्ते विशेष हितकारी है। और नपुंसकोंके वास्ते नपुंसकहीरा उपयोगी जानना और पुरुषजातिका हीरा पुरुष, स्त्री और नपुंसक सबके प्रयोगकेवास्ते उपयोगी तथा वीर्यवर्द्धक है।

अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा ॥
पांडुतापंगुरत्वंचतस्मात्संशोध्यमारयेत् ६६

अर्थ–अशुद्ध और अविधिसें मारेहुएहीरेके सेवन करनेसें कोढ, पसवाडोंमें पीडा, पांडुरोग और पांगलापना होताहै इसीसें इसको शोधन करके फिर विधिपूर्वक मारण कर सेवन करे।

मरेहीरेकेगुण.

आयुःपुष्टिबलंवीर्यंवर्णसौख्यंकरोतिच ॥
सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रंनसंशयः ॥ ६७ ॥

अर्थ–मरेहीरेकीभस्म आयु, पुष्टि, बल, वीर्य, वर्ण, सुखको करे। और इसकीभस्म सेवन करनेसे निःसंदेह सकलरोग नष्ट हो।

पन्ना.

गारुत्मतंमरकतमश्मगर्भोहरिन्मणिः ॥

अर्थ–गारुत्मत, मरकतमणि, अश्मगर्भ और हरिन्मणि, ए संस्कृतमें नाम है, हिं. पन्ना, बं. पान्ना, म. पांचरत्न, गु. पाना, फा. जमुर्रद, अं. इमिरल्ड Emerald, ला. स्मेरेंडस्.

माणिक.

माणिक्यंपद्मरागःस्याच्छोणरत्नंचलोहितम्

अर्थ–माणिक्य, पद्मराग, शोणरत्न और लोहित ए संस्कृत नाम, हिं. मानि[णि]क, चुन्नी, फा. याकूत लाल, इं. रूबि Ruby कहतेहै।

पुष्पराग.

पुष्परागोमंजुमणिःस्याद्वाचस्पतिवल्लभः ॥

अर्थ–पुष्पराग, मंजुमणि और वाचस्पतिवल्लभ ए संस्कृत नाम। हिं. पुखराज, म. पुष्पराज, अं. टोपेज Topaz कहतेहै।

नीलम्. गोमेद.

नीलंतथेंद्रनीलंचगोमेदःपीतरत्नकम् ॥

अर्थ–नील और इंद्रनील ए नीलम उसनियाके नामहै, इं. सफायर Saffire कहते है। गोमेद और पीतरत्न ए पीलेरंगके रत्नको कहते है म. गोमेदमणि इं. ओनिक्स Onyx

वैदूर्य.

वैदूर्यंदूरजंरत्नंस्यात्केतुग्रहवल्लभम् ॥ ६९ ॥

अर्थ–वैदूर्य, दूरज और केतुग्रहवल्लभ, ए वैदूर्यमणिके नाम है। इं. केट्स आई।

मोती.

मौक्तिकंशौक्तिकंमुक्तातथामुक्ताफलंचतत्
शुक्तिःशंखोगजक्रोडःफणीमत्स्यश्चदर्दुरः

वेणुरेतेसमाख्यातास्तज्ज्ञैर्मौक्तिकयोनयः
मौक्तिकंशीतलंवृष्यंचक्षुष्यंबलपुष्टिदम् ७१

अर्थ-मौक्तिक, शौक्तिक, मुक्ता, मुक्ताफल, ए संस्कृतनाम। हिं. मोती, अ. लूलू, फा. मखारिद, इं. पर्ल Pearl कहतेहै। मोतीके आठ योनि। सीप, शंख, हाथी, सूअर, सांप, मछली, मेंडक और बांस ए मोती उत्पन्न होनेकी आठजगह है। परंतु आजकल सीपकाही मोती मिलता है। मोतीके गुण। शीतल, वीर्यजनक, नेत्रोंको हितकारी, बल और पुष्टि बढाता है।

मूंगा.

पुंसिस्त्रीवेप्रवालःस्यात्पुमानेवतुविद्रुमः॥

अर्थ-प्रवाल और विद्रुम ए संस्कृत नाम। हिं. मूंगा, म. पोवलें, फा. मिरजान, बुसुद, ला. कोरेलियंरब्र, इं. कोरल Coral कहतेहैं।

रत्नोंके गुण.

रत्नानिभक्षितानिस्युर्मधुराणिसराणिच॥
चक्षुष्याणिचशीतानिविषघ्नानिधृतानिच॥
मंगल्यानिमनोज्ञानिग्रहदोषहराणिच॥७२॥

अर्थ-संपूर्ण रत्नोंकी भस्म खानेमें मधुर, दस्तावर, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, रत्नधारण करनेसें विषनाशक और मंगल करनेवाले, मन प्रसन्नकर्ता और ग्रहोंके दोषोंको हरण करतेहैं। तहां कोई प्रश्न करे कि कौनसे ग्रहका कौनसा रत्न हैं? इसका उत्तर रत्नमाला ग्रंथसें लिखतेहैं।

नवग्रहोंके रत्न.

माणिक्यंतरणेःसुजातममलंमुक्ताफलंशीत-
गोर्माहेयस्यतुविद्रुमोनिगदितःसौम्यस्यगा-
रुत्मतम्॥
देवेज्यस्यचपुष्परागमसुराचार्यस्यवज्रंशने-
र्नीलंनिर्मलमन्ययोर्निगदितेगोमेदवैडूर्यके॥

अर्थ-सूर्यका माणिक, चंद्रमाका मोती, मंगलका मूंगा, बुद्धका पन्ना, बृहस्पतका पुष्पराग, शुक्रका हीरा, शनिकी नीलम, राहुकी गोमेद, और केतुग्रहकी वैडूर्यमणि है।

उपरत्न.

उपरत्नानिकाचश्चकर्पूराश्मातथैवच॥
मुक्ताशुक्तिस्तथाशंखइत्यादीनिबहून्यपि॥
गुणायथैवरत्नानामुपरत्नेषुतेतथा॥
किंतुकिंचित्ततोहीनाविशेषोऽयमुदाहृतः॥

अर्थ-काच, कर्पूरनिया, मोतीकी सीप, शंख; इत्यादि बहुतसे उपरत्न है। जो गुण रत्नोंमें कहेहैं वो ही गुण उपरत्नोंमेंहैं, परंतु कुछ कुछ न्यून गुण हैं। यह विशेषता कहीहै।

विषके नाम और भेद.

विषंतुगरलःक्ष्वेडस्तस्यभेदानुदाहरे॥
वत्सनाभःसहारिद्रःसक्तुकश्चप्रदीपनः॥
सौराष्ट्रिकःशृंगिकश्चकालकूटस्तथैवच॥
हालाहलोब्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव॥७८॥

अर्थ-विष, गरल, क्ष्वेड, ए विषके संस्कृत नाम है। अब उसके भेदोंको दिखातेह जैसें-वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगिक, कालकूट, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, ए विषके नौ भेद है।

विषोंका स्वरूप.

सिंदुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा॥
यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः॥
हरिद्रातुल्यमूलोयोहारिद्रःसउदाहृतः॥
यद्ग्रंथिःसक्तुकेनैवपूर्णमध्यःससक्तुकः॥
वर्णतोलोहितोयःस्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः
महादाहकरःपूर्वैःकथितःसप्रदीपनः॥ ८१॥
सुराष्ट्रविषयेयःस्यात्ससौराष्ट्रिकउच्यते॥
यस्मिन्गोशृंगकेबद्धेदुग्धंभवतिलोहितम्॥
सशृंगिकइतिप्रोक्तोद्रव्यतत्त्वविशारदैः॥
देवासुररणेदेवैर्हतस्यपृथुमालिनः॥
दैत्यस्यरुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः॥
निर्यासःकालकूटोऽस्यमुनिभिःपरिकीर्तितः
सोहिक्षेत्रेशृंगबेरेकोंकणेमलयेभवेत्॥ ८४॥
गोस्तनाभफलोगुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा॥
तेजसायस्यदह्यंतेसमीपस्थाद्रुमादयः॥८५॥

सौहालाहलोज्ञेयःकिष्किंधायांहिमालये
दक्षिणाब्धितटेदेशेकोंकणेऽपिचजायते ॥
वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारतः ॥
ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले ॥ ८७ ॥

अर्थ-सम्भालूके पत्रकेसमान (वछडेकी) नाभ केसदृश जिसकेसमीप दूसरा वृक्ष नहीं जमें उसको वत्सनामविष जानना । हलदीके समान जिसका कंद होय उसको हारिद्र विष जानना । जिसकी गांठ सत्तुकेसमान वीचमेंसें भरीहुई हो उसको सक्तुकविष जानना । जिसका रंग लाल, अग्निकेसमान प्रकाशवाला अत्यंत दाह करता इसको प्राचीन आचार्योंने प्रदीपनविष कहाहै । रा. सिंगीमोहरा, म. बचनाग, क. वसनवी, फा. जहर, ई. एकोनाईट । जो सौराष्ट्र (सोरठ) देशमें प्रगट होताहै उस विषको सौराष्ट्र विष कहतेहैं । जिसको गौके सींगमें बांधनेसें दूध लाल उतरे उसको द्रव्यतत्वके ज्ञाताओंने शृंगिक (सिंगिया या सिंगीमुहरा) कहाहै । देवासुर सग्राममें देवताओंने पृथुमालिन दैत्यको मारा उस दैत्यके रुधिरसें पीपलकेसमान वृक्ष प्रगट हुआ, इस वृक्षके गोंदको कालकूटविष मुनिजन कहतेहै । यह शृंगवेरपुर, कोंकन और मलेबारमें उत्पन्न होताहै । दाखोंके गुच्छेके समान फल और तालवृक्षकेसमान वृक्ष होताहै । जिसके तेजसें समीपके वृक्ष पजर जातेहै इसको हालाहलविष जानना । यह किष्किंधापुरी और हिमालय पर्वतमें दक्षिण समुद्रके तटके देशोमें और कोंकणमें प्रगट होताहै । रंगमें कपिल और उसका सार (गोदमी) कपिलरंगका होवे उस विषको ब्रह्मपुत्र जानना, यह मलयाचलपर्वतमें उत्पन्न होताहै ।

विषके वर्णभेद.

ब्राह्मणःपांडुरस्तेषुक्षत्रियोलोहितप्रभः ॥
वैश्यःपीतःसितःशूद्रोविषउक्तश्चतुर्विधः ॥
रसायनेविषंविप्रंक्षत्रियंदेहपुष्टये ॥
वैश्यंकुष्ठविनाशायशूद्रंदद्याद्वधायहि ८९

अर्थ-भूरेरंगका विष ब्राह्मण, लालरंगका क्षत्री, पीलेरंगका वैश्य और कालेरंगका विष शूद्र होताहै । रसायनमें ब्राह्मण जातिका विष, देह पुष्टिकेवास्ते क्षत्री, कोढ दूर करनेको वैश्य और मारणकेवास्ते शूद्र जातिका विष देना चाहिये ।

विषके गुण और अवगुण.

विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच ॥
आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥९०॥
तदेवयुक्तियुक्तंतुप्राणदायिरसायनम् ॥
योगवाहित्रिदोषघ्नंबृंहणंवीर्यवर्धनम् ॥ ९१ ॥
येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनाविशोधनात् ॥
तस्माद्विषंप्रयोगेषुशोधयित्वाप्रयोजयेत् ९२

अर्थ-विष प्राण हरण कर्त्ता, व्यवायी, विकाशि, आग्नेय, वातकफ हरण कर्त्ता, योगवाही, और मदकर्त्ता, इसीको युक्तिकेसाथ सेवन करे तो प्राणका देनेवाला, रसायन, योगवाही, त्रिदोषनाशक, बृंहण, और वीर्यवर्धक है । जो दुर्गुण अशुद्ध विषमें हैं वही अवगुण हीनशुद्ध अर्थात् जो अच्छी रीतिसें शुद्ध न हुआ हो उसमें है, इसीवास्ते प्रयोगमें जो विष डाले वह शोधकर डालना चाहिये ।

उपविष.

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः ॥
गुंजाऽहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥९३॥

अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध, कलियारी, कनेर, घूंघची, अफीम और धतूरा, ए उपविषकी सात जातिहै ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ धात्वादिवर्गः समाप्तः

---

१ प्रथम सबदेहमें व्याप्त होकर पचे. २ ओजको सुखायके संधिबंधनोको ढीला करदेवे. ३ अग्निका अधिकांशवाला. ४ योगवाही, संगीके गुणोंको आपभी करे. ५ तमोगुणकी अधिकतासें बुद्धिको बिगाडे. ६ ए गौणविष इनके गुणदोष पृथक् २ प्रयोगोंमें लिखेहै सो देखलेने ।

धान्यवर्गः

धान्यके भेद.

शालिधान्यंव्रीहिधान्यंशूकधान्यंतृतीयकम्
शिंबीधान्यंक्षुद्रधान्यमित्युक्तंधान्यपंचकम्
शालयोरक्तशाल्याद्याव्रीहयःषष्टिकादयः ।
यवादिकंशूकधान्यंमुद्गाद्यंशिंबिधान्यकम्
कंग्वादिकंक्षुद्रधान्यंतृणधान्यंचतत्स्मृतम्

अर्थ–शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिंबीधान्य और क्षुद्रधान्य, ए पांचधान्य कहे है। तहां लाल चावल आदि शालिधान्यहै, साठीआदि व्रीहिधान्य, जोंसे आदिले शूकधान्य, मूंगआदि शिंबीधान्य, और कंगू [कांगनी] आदि क्षुद्रधान्य कहाते हैं । उसको तृणधान्यभी कहतेहै ।

शालिधान्य.

कंडनेनविनाशुक्लाहैमंताःशालयःस्मृताः ॥

अर्थ–जो विना फटके छरे रंगमें सपेदहों और अगहन पूंसमें उत्पन्नहो उनको शालिधान्य अथवा हैमंतिक धान्य कहतेहैं ।

शालिधान्यके नाम.

रक्तशालिःसकलमःपांडुकःशकुनाहृतः ॥
सुगंधकःकर्दमकोमहाशालिश्चदूषकः ॥ ३ ॥
पुष्पांडकःपुंडरीकस्तथामहिषमस्तकः ॥
दीर्घशूकःकांचनकोहायनोलोध्रपुष्पकः ॥
इत्याद्याःशालयःसंतिबहवोबहुदेशजाः ॥
ग्रंथविस्तरभीतस्तेसमस्तानात्रभाषिताः ॥५॥

अर्थ–रक्तशालि, कलम, पांडुक, शकुनाहृत, सुगंधक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पांडक, पुंडरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, कांचनक, हायन और लोध्रपुष्पक, इत्यादि अनेक प्रकारके शालिधान्य अनेक देशोंमें उत्पन्न होतेहैं वो ग्रंथ बढनेके भयसें सब नहीं कहे । हिं. चावल, बं. चाउल, म. भात, गु. चोखा, का. नेलू, तै. वीयमु, अ. अरजा, फा. बिरंज, अं. राईस Rice, ला. ओरिजा सेटाईवा.

शालिधान्यके गुण.

शालयोमधुराःस्निग्धाबल्याबद्धाल्पवर्चसः ॥
कषायालघवोरुच्याःस्वर्यावृष्याश्चबृंहणाः ६
अल्पानिलकफाःशीताःपित्तघ्नामूत्रलास्तथा
शालयोदग्धमृज्जाताःकषायालघुपाकिनः ७
सृष्टमूत्रपुरीषाश्चरूक्षाःश्लेष्मापकर्षणाः ॥
कैदाराबातपित्तघ्नागुरवःकफशुक्रलाः
कषायाअल्पवर्चस्कामेध्याश्चैवबलावहाः॥८॥
स्थलजाःस्वादवःपित्तकफघ्नावातपित्तदाः ॥
किंचित्तिक्ताःकषायाश्चविपाकेकटुकाअपि
वापितामधुरावृष्याबल्याःपित्तप्रणाशनाः ॥
श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काःकषायागुरवोहिमाः
वापितेभ्योगुणैःकिंचिद्धीनाःप्रोक्ताअवापिताः ॥ ११ ॥
रोपितास्तुनवावृष्याःपुराणालघवःस्मृताः ॥
तेभ्यस्तुरोपिताभूयःशीघ्रपाकागुणाधिकाः॥
छिन्नरूढाहिमारूक्षाबल्याःपित्तकफापहाः
बद्धविट्काःकषायाश्चलघवश्चाल्पतिक्तकाः

अर्थ–शालिधान्य–मधुर, स्निग्ध, बलकारक, अल्पपरिमाण,बद्धमलको निकालनेवाले,कषाय, हलके, रोचक, स्वरशुद्धकरता, शुक्रजनक, पुष्टिकारक, अल्पवातकफजनक, शीतल, पित्तनाशक और मूत्रकर्त्ता। जो चावल जलीहुई मिट्टीमें प्रगट हुएहैं वोभी कषेले । लघुपाकी-मलमूत्रके निकालनेवाले रूक्ष । और कफके शोषक हैं जो शालीधान्य जोतीबोई हुई जमीनमें उत्पन्न होवे वो वातपित्तनाशक, भारी, कफवर्धक, शुक्रजनक, कषाय, अल्पमलनिस्सारक, स्मरणशक्तिवर्धक और बलकारी। जो धान्य विनाबोई जमीनमें स्वयं पैदा होताहै वह स्वाद, पित्तश्लेष्मनाशक, वातपित्तवर्धक, किंचित् तिक्त, स्वादु, कषाय और पाकमें कटु जोतीहुई वा विनाजोती पृथ्वीमें बोए हुए धान्य–मधुर, वृष्य, बलकारक, पित्तनाशक, कफवर्धक, अल्पमलनिस्सारक, कषाय, गुरु और शीतल । बोयेहुए धान्यकी अपेक्षा बिना बोये धान्यके गुण

श्रृष्यहैं । रोपित नवीन धान्य शुक्रजनक और यदि ये पुराने होय तो हलके होतेहैं । और २ धान्योंकी अपेक्षा रोपित (लगाया) धान्य गुणकारी है और शीघ्र जीर्ण होवे । जो काटकर फिर जमेहुए हैं वो शीतल, रूखे, बलकारक, पित्तकफनाशक, मलरोधक, कषेले, हलके और किंचिन्मात्र कडवे हैं ।

रक्तशाली धान्यके गुण.

रक्तशालिर्वरस्तेषुबल्योवर्ण्यस्त्रिदोषजित् ॥
चक्षुष्योमूत्रलःस्वर्यःशुक्रलस्तृट्ज्वरापहः ॥
विषव्रणश्वासकासदाहनुद्वह्निपुष्टिदः ॥
तस्मादल्पांतरगुणाःशालयोमहदादयः १५

अर्थ-सब धान्योंमें रक्तशालि (ठाऊदखानी) श्रेष्ठ है, बलकारक, लावण्यजनक, त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी, मूत्रकारक, स्वरविशुद्धिकारक, शुक्रजनक, तृष्णानाशक, अग्निवर्धक, पुष्टिकारक और ज्वरघ्न । ये विष, व्रण, श्वास, खांसी और दाहको निवारण करे । महाशालि आदिके गुण इस लालधान्यकी अपेक्षा अल्प हैं ।

व्रीहीधान्य.

वार्षिकाःकण्डिताःशुक्लाव्रीहयश्चिरपाकिनः
कृष्णव्रीहिःपाटलश्चकुक्कुटांडकइत्यपि ॥१६॥
शालामुखोजतुमुखइत्याद्याव्रीहयःस्मृताः ॥
कृष्णव्रीहिःसविज्ञेयोयःकृष्णतुषतंडुलः १७
पाटलःपाटलापुष्पवर्णकोव्रीहिरुच्यते ॥
कुक्कुटांडाकृतिर्व्रीहिःकुक्कुटांडकउच्यते १८
शालामुखःकृष्णशूकःकृष्णतंडुलउच्यते ॥
लाक्षावर्णमुखंयस्यज्ञेयोजतुमुखस्तुसः ॥१९॥
व्रीहयःकथिताःपाकेमधुरावीर्यतोहिमाः ॥
अल्पाभिष्यंदिनोबद्धवर्चस्काःषष्टिकैःसमाः
कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषांतस्मादल्पगुणाःपरे ॥२०॥

अर्थ-व्रीहीधान्य वर्षाकालमें परिपक्व होतेहैं, यह धान्य छरनेसें सपेद रंगके होतेहै और देरमें पकतेहैं तहां व्रीहीधान्य अनेक प्रकारके होतेहैं । जैसे कृष्णव्रीही, पाटल, कुक्कुटांडकाति, शालामुख और जतुमुख इत्यादि जिसका तुष और तंदुल काले रंगका होय उसको कृष्णव्रीही कहतेहैं । जिसका रंग पाडलापुष्पकेसमान होय उसको पाटलीव्रीही कहतेहैं । जिसका आकार मुरगेके अंडेकेसमान हो उसको कुक्कुटांड कहतेहैं । जिसका शूक (कांटा) और चावल काला हो उसको शालामुख कहतेहैं । तथा जिसके मुखका वर्ण लाखकेसमान होय उसको जतुमुखव्रीही कहतेहैं । संपूर्ण व्रीही जीर्ण होनेपर मधुर स्वादवाले और हितकारी होतेहैं । व्रीहीधान्य अल्प अभिष्यंदी और मलरोधक, व्रीहीधान्योंमें कृष्णव्रीही उत्तम है और सब अल्पगुणवाले जानने ।

षष्टिक.

गर्भस्थापवयेपाकंयांतितेषष्टिकामताः ॥
षष्टिकःशतपुष्पश्चप्रमोदकमुकुंदकौ ॥ २१ ॥
महाषष्टिकइत्याद्याःषष्टिकाःसमुदाहृताः ॥
एतेऽपिव्रीहयःप्रोक्काव्रीहिलक्षणदर्शनात् ॥
षष्टिकामधुराःशीतालघवोबद्धवर्चसः ॥
वातपित्तप्रशमनाःशालिभिःसदृशागुणैः ॥
षष्टिकाप्रवरातेषांलघ्वीस्निग्धात्रिदोषजित्
स्वाद्वीमृद्वीग्राहिणीचबलदाज्वरहारिणी ॥
रक्तशालिगुणैस्तुल्याततःस्वल्पगुणाःपरे २४

अर्थ-जो गर्भमेंही अर्थात् बालमेंही पकजावे उनको षष्टिक अर्थात् सांठी धान्य कहतेहैं । कोई कहताहै कि जो बोनेसें साठवे दिन तयार होजावे उनको षष्टिक अर्थात् सांठीधान्य कहतेहैं । नाम षष्टिक, शतपुष्प, प्रमोदक, मुकुंदक और महाषष्टिक इत्यादि षष्टिकधान्य कहातेहैं । इनमें व्रीहीधान्योंके लक्षण मिलनेसें व्रीही कहलातेहैं । गुण । सांठीचावल-मधुर, शीतल, हलके, मलको बांधनेवाले, वातपित्तके नाशक, ए गुणोंमें शालिधान्यकेसमान है । संपूर्ण धान्योंमें षष्टिक धान्य उत्तम है । हलके, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, स्वादिष्ट, नम्र, ग्राही, बलकर्ता और ज्वरनाशक, इनके गुण रक्तशालिकेसमान जानने, और धान्य अल्पगुणवाले जानने ।

(शूकधान्य) जौ.

यवस्तुसीतशूकःस्यान्निःशूकोऽतियवस्मृतः
तोक्यस्तद्वत्सहरितस्ततःस्वल्पश्चकीर्तितः
यवःकषायोमधुरःशीतलोलेखनोमृदुः ॥
व्रणेषुतिलवत्पथ्योरूक्षोमेधाग्निवर्द्धनः २६
कटुपाकोऽनभिष्यंदीस्वर्योबलकरोगुरुः ॥
बहुवातमलोवर्णस्थैर्यकारीचपिच्छिलः २७
कंठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदप्रणाशनः ॥
पीनसश्वासकासोरुस्तंभलोहिततृट्प्रणुत् ॥
अस्मादतियवोन्यूनस्तोक्योन्यूनतरस्ततः

अर्थ-सपेदशूक (सुई) वालेको यव (जो)कहते हैं। ता. वार्लिअरिसु, अ. शईर, अं. विटरवार्लि। शूकरहित जौओंको अतियव कहतेहैं। हरे रंगके जौओंको तोक्य कहतेहैं। और सामान्य यवोंको स्वल्पयव कहतेहैं। गुण। कषेले, मधुर, शीतल, लेखन, मृदु, व्रणरोगमें तिलके समान गुणकारी, रूक्ष, मेधावर्धक, अग्निकारक, पाकमें कटु, श्लेष्माको फैलानेवाले, स्वरको शुद्ध करता, बलकारी, भारी, कांतिकारी, धातुकी समताके रक्षक, बहुत पवन और मूत्रको निकाले हैं, और पिच्छल। इनकेद्वारा कंठरोग, त्वचाकी पीडा, कफ, पित्त, मेद, पीनस, श्वास, खांसी, ऊरुस्तंभ, रक्तदोष और तृष्णा ए रोग शांति होय। जौकी अपेक्षा अतियव गुणोंमें न्यून हैं। और अतियवकी अपेक्षा तोक्य यव अल्पगुणवाला है।

गेंहूं.

गोधूमःसुमनोपिस्यात्रिविधःसचकीर्त्तितः
महागोधूमइत्याख्यःपश्चाद्देशात्समागतः ॥
मधूलीतुततःकिंचिदल्पासामध्यदेशजा ॥
निःशूकोदीर्घगोधूमःक्वचिन्नंदीमुखाभिधः ॥
गोधूमोमधुरःशीतोवातपित्तहरोगुरुः ॥
कफशुक्रप्रदोबल्यःस्निग्धःसंधानकृत्सरः ॥
जीवनोबृंहणोवर्ण्योव्रण्योरुच्यःस्थिरत्वकृत्
मधूलीशीतलास्निग्धापित्तघ्नीमधुरालघुः ॥
शुक्रलाबृंहणीपथ्यातद्वन्नंदीमुखःस्मृतः ३२

अर्थ-गोधूमका दूसरा नाम सुमन। हिं. गेंहूं, बं. गम, म. गहूं, गु. घउं, का. गोधी, तै. गोदुमु, फा. गंदुम, अं. व्हीट Wheat, ला. ट्रिटिकं वलगेरी। गेंहूं तीन प्रकारके हैं; जैसें-महागोधूम, मधूली और दीर्घगोधूम। महागोधूम पछाह मारवाड आदि देशोंमें होताहै। मधूलीगोधूम महागोधूमकी अपेक्षा छोटा होताहै। यह मध्यप्रदेश (मथुरा, दिल्ली, आगरा, आदि) में होताहैं। और दीर्घगोधूम शूकरहित, यह कहीं २ नंदीमुख नामसें बोला जाताहै। गुण। गेंहूं-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी कफवर्धक, शुक्रकर्त्ता, बलकारक, स्निग्ध, टूटेहुए स्थानको जोडनेवाला, लावण्यजनक, व्रणरोगको हितकारी, रोचक और स्वरकारक, कफवर्धक हैं। गुण। नए गेंहूंमें होतेहै पुरानोंमें नहीं हो। यह हेतु वाग्भटने लिखाहै कि वसंतकालमें पुरानें जौं, पुराने गेंहूं सहत और शूल्यजांगलमांस भक्षण करना चाहिये। मधूली गेंहूं शीतल, स्निग्ध, पित्तनाशक, हलके, शुक्रजनक, पुष्टिकारी और पथ्य है। नंदीमुख गेंहूंके गुण इसीकेसमान जानने।

शिंबीधान्य.

शमीजाःशिंबिजाःशिंबीभवाःसूप्याश्चवैदलाः ॥
वैदलामधुरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ३३
वातलाःकफपित्तघ्नाबद्धमूत्रमलाहिमाः ॥
ऋतेमुद्गमसूराभ्यामन्येत्वाध्मानकारिणः ३४

अर्थ-शमीजा, शिंबिजा, शिंबीभवा, सूप्या [सूर्या] और वैदल ए इसके पर्यायवाचक नाम है। गुण। मधुर, रूक्ष, कषेले, पाकमें कटु, वायुवर्द्धक, कफपित्तनाशक, मलमूत्ररोधक, शीतल और अफराकर्त्ता। इनमें मूंग और मसूरको अफराकारक शक्ति अति सामान्य है।

मूंगके गुण.

मुद्गोरूक्षोलघुर्ग्राहीकफपित्तहरोहिमः
स्वादुरल्पानिलोनेत्र्योज्वरघ्नोवनजस्तथा ३५
मुद्गोबहुविधःश्यामोहरितःपीतकस्तथा ॥
श्वेतोरक्तश्चतेषांतुपूर्वःपूर्वोलघुःस्मृतः ॥३६॥

सुश्रुतेनपुनःप्रोक्तोहरितःप्रवरोगुणैः ॥
चरकादिभिरप्युक्तएषएवगुणाधिकः ॥३७॥

अर्थ-सं. मुद्ग, हिं. मूंग, बं. मुग, गु. मग, तै. पेसलु, का. हेसरेरु, पंजा. मूजि, अ. मज, फा. बुनुमाष, इं. ग्रीन Green. मूंग-रूक्ष, हलकी, ग्राही, कफपित्तनाशक, शीतल, स्वादु, अल्प वातजनक, नेत्रोंको हितकारी और ज्वरघ्न । वनकी मूंगकेभी ऐसेही गुण हैं । मूंग अनेक प्रकारकी है । जैसे श्याममूंग, हरीमूंग, पीलीमूंग, सफेदमूंग और लालमूंग । इनमें अन्योन्य दूसरी २ सें पहली पहली हलके गुणवाली हैं । सुश्रुतने हरीमूंगको उत्तम कहीहै और चरकादिक ऋषिभी इसीप्रकार कहतेहे ।

उरद.

माषोगुरुःस्वादुपाकःस्निग्धोरुच्योनिलापहः
स्रंसनस्तर्पणोबल्यःशुक्रलोबृंहणःपरः ३८
भिन्नमूत्रमलःस्तन्यांमेदःपित्तकफप्रदः ॥
गुदकीलार्दितश्वासपंक्तिशूलानिनाशयेत् ॥
कफपित्तकरामाषाःकफपित्तकरंदधि ॥
कफपित्तकरामत्स्यावृंताककफपित्तकृत् ४०

अर्थ-सं. माष, हिं. उरद, बं. मासकलाय, म. उडीद, गु. अडद, तै. मिनुउलु, का. उंडू, इं. किड्नीबीन, ला. फेसीओलम् रेडीरेटल् । गुण । उडद-भारी, पचनेपर स्वादिष्टरसवाले, स्निग्ध, रोचक, वातनाशक, स्रसन, तृप्तिकारक, बलकारक, शुक्रवर्धक, अत्यंत पुष्टिकारक, मूत्र मल और स्तनके दूधको निकालनेवाले, मेदा, पित्त और कफके वर्धक । यह बवासीर, अर्दित वात, वातव्याधि, श्वास और परिणामशूल इनको नाश करें । उडद, दही, मछली और वैंगन ए चारों वस्तु कफपित्तके बढानेवाली हैं ।

राजमाष.

राजमाषोमहामाषश्चपलश्चबलःस्मृतः ॥
राजमाषोगुरुःस्वादुस्तुवरस्तर्पणःसरः॥४१॥
रूक्षोवातकरोरुच्यःस्तन्यभूरिबलप्रदः ॥
श्वेतोरक्तस्तथाकृष्णस्त्रिविधःसप्रकीर्तितः॥
योमहांस्तेषुभवतिसएवोक्तोगुणाधिकः ४२

अर्थ-राजमाष, महामाष चपल और चवल, हिं. बोडा, चवरा चौरा, रतरा और लोबिया इत्यादिक नाम है । बं. कलाय, म. चंवल्या, गु. चोला, का. वरवटा, पं. रैस, अ. फरिका, इं. चाईनिज डोलिकोस् । गुण । चौरा-भारी, स्वादु, कषेले, तृप्तिकर्ता, दस्तावर, रूखे, वातवर्धक, रोचक, स्तनोंमें दूध प्रगटकर्त्ता और बलकारक । सफेद लाल और काले तीनप्रकारके चौरा होतनेमें आतेहैं । इनमें बृहत् माष (अर्थात् सबसें बडा चौरा) अधिक गुणकर्त्ता जानना ।

निष्पाव.

निष्पावोराजशिंबिःस्याद्वल्लकःश्वेतशिंबिकः
निष्पावोमधुरोरूक्षोविपाकेऽम्लोगुरुःसरः
कषायःस्तन्यपित्तास्रमूत्रघातविबंधकृत् ॥
विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥

अर्थ-निष्पाव, राजशिंबी, वल्लक और श्वेतशिंबिक । हिं. भटवासु, राजसिंबीके बीज है । म. पावटे । का. आवरे, तै. आनपचेटू, ला. लेबलेबल् गेरीम् । गुण । मधुर, रूक्ष, पाकमें खट्टे, भारी, दस्तावर, कषेले, स्तन्य, पित्त, रुधिर, मूत्र और वादीको घटानेवाले, दाहकर, उष्ण, विषघ्न, श्लेष्मनाशक, शुक्रक्षयकारक और शोथनिवारक ।

मोंठ.

मकुष्टोवनमुद्गःस्यान्मकुष्ठकमुकुष्ठकौ ॥
मकुष्ठोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥
वह्निजिन्मधुरःपाकेकृमिकृज्ज्वरनाशनः

अर्थ-मकुष्ठ, वनमुद्ग, मकुष्ठक, मुकुष्ठक । हिं. मोठ, बं. वनमूंग, म. मटक्या, मठ, गु. मठ, तै. कंकपेसालु, फा. माषहिंदी, अं. एकौनेडे लिब्डकिडनी बिन । गुण । मोठ-वातल, ग्राही, कफपित्तहरण कर्त्ता; हलकी, मंदाग्निकरता, पाकमें मधुर कृमिकर्त्ता और ज्वरनाशक जाननी ।

मसूर.

मंगल्यकोमसूरःस्यान्मंगल्याचमसूरिका ॥
मसूरोमधुरःपाकेसंग्राहीशीतलोलघुः ।
कफपित्तास्रजिद्रूक्षोवातलोज्वरनाशनः॥४६॥

अर्थ-मंगल्यक, मसूर, मंगल्या, और मसूरिका ।

हिं. मसूर, ब. मसुरा, तै. मसूरपप्पु, ता. मिसूर पुरुपुर, फा. बुनोसुर्ख, अ. अदस्, अं. लेंटिल, ला. ईरवेलेन्स । गुण । पाकमें मधुर, संग्राही, शीतल, हलकी, कफपित्तनिवारक, रक्तदोषनाशक, रूक्ष, वादीकर्ता और ज्वरघ्न है ।

अरहर.

आढकीतुवरीचापिसाप्रोक्ताशणपुष्पिका ॥
आढकीतुवरारूक्षामधुराशीतलालघुः ॥
ग्राहिणीवातजननीवर्ण्यापित्तकफास्रजित्

अर्थ–आढकी, तुवरी और शणपुष्पिका । हिं. अरहर–रहरी, रा. तूर, म. तुरी, गु. तूरनी दाल, का. कटलाकटु तौगरी, तै. कादुलू, फा. शाखुल, अं. पीजीअनपी । गुण । कषेली, रूक्ष, मधुर, शीतल, हलकी, ग्राहिणी, वातकर्त्ता, वर्णकारक, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको शांति करे ।

चना. छोला.

चणकोहरिमन्थः स्यात्सकलप्रियइत्यपि ॥
चणकःशीतलोरूक्षःपित्तरक्तकफापहः ॥४८॥
लघुःकषायोविष्टंभीवातलोज्वरनाशनः ॥
सचांगारेणसंभृष्टस्तैलभृष्टश्चतद्गुणः ॥ ४९ ॥
आर्द्रभृष्टोबलकरोरोचनश्चप्रकीर्त्तितः ॥
शुष्कभृष्टोऽतिरूक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपणः ॥५०॥
स्विन्नःपित्तकफंहन्यात्सूपःक्षोभकरोमतः ॥
आर्द्रोऽतिकोमलोरुच्यःपित्तशुक्रहरोहिमः
कषायोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥५१॥

अर्थ–चणक, हरिमंथ, सकलप्रिय ए संस्कृत नाम । हिं. चना, छोला, बं. चणक, म. हरभऱ्या, का. कडले, गु. चण्या, तै. शलंगालू, अ. हुमस्, फा. नखुर, अं. ग्राम Gram, ला. सीसरएरिएटिनम् । गुण । चना–शीतल, रूक्ष, पित्त, रक्तकफको नष्ट करे । हलके, कषेले, विष्टंभकर्त्ता, वातल और ज्वरनाशक । यदि इनको अंगारोंपर अथवा तेलमें भून लिये जावे तोभी पूर्वोक्त गुण करे । गीलेकरके भुने हुए चना बलकारी, रोचक हैं । सूखेभुने चना–अतिरूक्ष, वात, और कोढको कुपित करतेहैं । उबाले हुए चना पित्त और कफको नष्ट करे । चनाकी दाल–पित्त और कफको कुपित करे । भीगे हुए चना–अतिकोमल, रुचिकारी, पित्त शुक्र हरण कर्त्ता, शीतल, कषेले, वातकर्त्ता, ग्राही, कफपित्त हरणकर्त्ता और हलके है ।

मटर. केराव.

कलायोवर्तुलःप्रोक्तःसतिलश्चहरेणुकः ॥
कलायोमधुरःस्वादुःपाकेरूक्षश्चशीतलः ५२

अर्थ–कलाय, वर्तुल, सतिल और हरेणुक, हिं. मटर, केराव, म. वटाणे, गु. वटाणा, का. वट्टकडले, तै. पेद्द इर्व्व, इं. फील्डपी । गुण । मटर–मधुर, स्वादु, पाकमें रूखी और शीतल ।

खेसारी.

त्रिपुटःखंडिकोऽपिस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ
त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशम् ५३
कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा ॥
किंतुखंजत्वपंगुत्वकारीवातातिकोपनः ॥५४॥

अर्थ–त्रिपुट और खंडिक, हिं. खिसारी, म. लांक–लांग, अ. हब्बुल बकर, अं. चिकिलिंग वेच कहतेहैं । गुण । मधुर, कडवी, कषेली, अत्यंत रूक्ष, कफपित्तहर, रुच्य, ग्राहक और शीतल है । किंतु यह अत्यंत वात कुपित करे । बहुतदिन इसको खाय तो यह पैरसें खंजा और पांगुरा करदेती है ।

कुलथी.

कुलत्थिकाकुलत्थश्चकथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥
कुलत्थःकटुकःपाकेकषायःपित्तरक्तकृत्
लघुर्विदाहीवीर्योष्णश्वासकासकफानिलान्
हंतिहिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् ।
स्वेदसंग्राहकोमेदोज्वरकृमिहरःपरः ॥ ५६ ॥

अर्थ–कुलत्थिका और कुलत्थ, हिं. कुल्थी, बं. कुलथकलाई, म. कुळित्थ, गु. कळथी, तै. वुलावुलु, अ. हब्बुल किलत, अं. डोलीकोस् बाई फ्लोरस । गुण । कषेली, पाकमें कटु, रक्तपित्तजनक, हलकी, विदाही, उष्णवीर्य और स्वेदप्रतिरोधक । यह श्वास,

खांसी, कफ, वादी, हिचकी, पथरी, वीर्य, दाह, अफरा, पीनस, मेद, ज्वर और कृमिरोगको नष्ट करे।

तिल.

तिलःकृष्णःसितोरक्तःसवर्ण्योऽल्पतिलःस्मृतः तिलोरसेकटुस्तिक्तोमधुरस्तुवरोगुरुः॥५७॥ विपाकेकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःकफपित्त-नुत् ॥ बल्यःकेश्योहिमस्पर्शस्त्वच्यःस्तन्यो-व्रणेहितः ॥ ५८ ॥ दंत्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राहीवातघ्नोऽग्निमतिप्रदः कृष्णःश्रेष्ठतमस्तेषुशुक्रलोमध्यमःसितः ॥ अन्येहीनतराःप्रोक्तास्तज्ज्ञैरक्तादयस्तिलाः

अर्थ-काले, सपेद और लाल ए तीन प्रकारके तिल है। छोटे तिलको सवर्ण्य कहतेहै। म. तील, गु. तल, तै. नुव्वुलु, का. एलु, अ. सिमसिम, फा. कुंजद, अं. सिसेम नेजर सीडम्, ला. सिसेमस् इंडिकम्। गुण। तिल-कटु, तिक्त, मधुर, कषेले, भारी, पाकमें कटु, मधुर, स्निग्धोष्ण, कफपित्तनाशक, बलकारक, बालोंको हितकारी, स्पर्शमें शीतल, त्वचा (चमडी) की स्वस्थताके रक्षक, स्तनोंमें दूध प्रगटकर्त्ता, व्रणको हितकारी, दांतोंकी, स्वस्थताके रक्षक, अल्पमूत्रकारक, ग्राही, वातनाशक, अग्निकारक, बुद्धिदाता। तिलोंमें काले तिल उत्तम हैं। सपेद तिल मध्यम, ये शुक्र करतेहैं। और तिल हीनगुणवाले हैं।

तिसी. अतसी.

अतसीनीलपुष्पीचपार्वतीस्यादुमाक्षुमा ॥ अतसीमधुरातिक्तास्निग्धपाकेकटुर्गुरुः ॥ उष्णादृक्शुक्रवातघ्नीकफपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-अतसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा और क्षुमा, ए संस्कृत नाम। हिं. अलसी, तिसी, मसीना, म. जवस, का. असगे, तै. नल्लप गसिवेट्टु, अ. बजरुल्कतान, फा. तुख्मेकतान, अं. कामन्फ्लेक्ष सीडम्। गुण। मधुर, तिक्त, स्निग्ध, पाकके समय कटु, भारी, गरम, दृष्टिशक्तिको बिगाडनेवाली, शुक्र और वादीके नाशक, तथा कफ और पित्तको नाश करे।

तोरी.

तुवरीग्राहिणीप्रोक्तालघ्वीकफविषास्रजित् तीक्ष्णोष्णावह्निदाकंडूकुष्ठकोठकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ-तुवरी अर्थात् तोरी, तोडिस, यह ग्राही, हलकी, कफ-विष और रुधिर विकारोंको दूर करे, तीक्ष्ण, उष्ण, जठराग्निवर्द्धक। खुजली, कोढ, कोठ (चकत्ते) और कृमिरोगको नाश करे।

सरसों.

सर्षपःकटुकःस्नेहस्तुन्तुभश्चकदंबकः ॥ गौरस्तुसर्षपःप्राज्ञैःसिद्धार्थइतिकथ्यते॥६२॥ सर्षपस्तुरसेपाकेकटुःस्निग्धःसतिक्तकः ॥ तीक्ष्णोष्णःकफवातघ्नोरक्तपित्ताग्निवर्धनः रक्षोहरोजयेत्कंडूकुष्ठकोठकृमिग्रहान् ॥ यथारक्तस्तथागौरःकिंतुगौरोवरोमतः॥६४॥

अर्थ-सर्षप, कटुकस्नेह, तुंतुभ और कदंबक, हिं. सरसों, म. सिरस, बं. सर्षे, गु. शरसव, तै. पचाअआलु, का. त्रिलियसासेव, अ. उर्फे अवियद, अं. सिनाफिस आल्बा, ला. ब्रेसिका केंपेस् ट्रीस, कहतेहै। सरसों तीन प्रकारकी सपेद लाल और पीली। तहां सपेद सरसोंको सिद्धार्थ कहतेहै। गुण। सरसोंका जायका और पाक चरपरा हैं। स्निग्ध, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक, रक्तपित्त और जठराग्निको बढावे, राक्षसबाधाको हरण करे। खुजली, कोढ, चकत्ते और कृमिरोगको नष्ट करे। इनमें लाल और सपेदमें सपेद उत्तम है।

राई.

राजीतुराजिकातीक्ष्णगंधाकुंजनिकासुरी ॥ क्षवक्षताभिजनकःकृमिकृत्कृष्णसर्षपः ॥६५॥ राजिकाकफपित्तघ्नीतीक्ष्णोष्णारक्तपित्तकृत् किंचिद्रूक्षाग्निदाकंडूकुष्ठकोठकृमीन्हरेत् अतितीक्ष्णाविशेषेणतद्वत्कृष्णापिराजिका

अर्थ-राई, राजिका, तीक्ष्णगंधा, कुंजनिका, आसुरी, क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिहृत् और कृष्णसर्षप ए संस्कृत नाम, हिं. राई, बं. सरिषा, म. महुरी। का. सासि राई, तै. वर्णालु, अ. खरदल, अं.

मस्टर्ड सीड्स् । राई दो प्रकारकी होतीहै । राई और कृष्णराई । गुण । कफपित्तनाशक, तीक्ष्ण, उष्ण, रक्तपित्तजनक, किंचित् रूक्ष और अग्निवर्द्धक । यह खुजली, कोढ, चकत्ते और कृमिरोगको नष्ट करे । कालीराईको बंगाली कजला कहतेहैं । यह अतितीक्ष्ण है और सबगुण राईके समान हैं ।

क्षुद्रधान्य.

क्षुद्रधान्यंकुधान्यंचतृणधान्यमितिस्मृतम् ॥
क्षुद्रधान्यमनुष्णंस्यात्कषायंलघुलेखनम् ६७
मधुरंकटुकंपाकेरूक्षंचक्लेदशोषकम् ॥
वातकृद्बद्धविट्कंचपित्तरक्तकफापहम् ६८

अर्थ–क्षुद्रधान्य, कुधान्य और तृणधान्य । **गुण** । क्षुद्रधान्य गरम नहींहै । कषेले, हलके, लेखन, मधुर, पाकमें कटुक, रूक्ष, क्लेद (तरी) को सुखानेवाले, वातकर्त्ता, मलको बांधनेवाले, रक्तपित्त और कफको दूर करे ।

कांगनी.

स्त्रियांकंगुप्रियंगूद्वेकृष्णारक्तासितातथा ॥
पीताचतुर्विधाकंगुस्तासांपीतावरास्मृता
कंगुस्तुभग्नसंधानवातकृद्बृंहणीगुरुः ॥
रूक्षाश्लेष्महराऽतीववाजिनांगुणकृद्भृशम्

अर्थ–कंगू, प्रियंगू, ए सं. नाम, हिं. कांगनी, कंगनी, कानि, म. कांग, तै. प्रेकण पुचेट्टु, का. नवणे, फा. गल, ला. पेनिकं मिलीयेस्यम् । यह काली, लाल, सपेद और पीली इन भेदोंसे चारप्रकारकी है, इनमें पीलीकांगनी उत्तम है । **गुण** । टूटे स्थानको जोडे, वादीकरे, बृंहणी (वीर्यवर्द्धक), भारी रूक्ष, कफहरणकर्त्ता और घोडोंके वास्ते तो अत्यंत गुणकारी है ।

चीना.

चीनाकःकंगुभेदोऽस्तिसज्ञेयःकंगुवद्गुणैः ॥

अर्थ–एक कांगनीका भेद चीनाक अर्थात् चीना है, बं. चीने, म. राळे, गु. चीणो, का. चीनक, फा. दरजान, अ. बारेगा, अं. मीलेट, इसमें कांगनीके समान गुण है ।

समा.

श्यामाकःशोषणोरूक्षोवातलःकफपित्तहृत्

अर्थ–श्यामाक अर्थात् समा इसको बं. शामा, म. सांवे, गु. शामो, का. संघे, तै. श्यामालु, फा. शामाख, ला. पैनिकं फ्रुमेन्टेश्यं । **गुण** । शोषणकर्ता, रूक्ष, वातल और कफपित्त हरण कर्त्ता है ।

कोदों.

कोद्रवःकोरदूषःस्यादुद्दालोवनकोद्रवः ॥
कोद्रवोवातलोग्राहीहिमःपित्तकफापहः ॥
उद्दालस्तुभवेदुष्णोग्राही वातकरोभृशम् ७२

अर्थ–कोद्रव, कोरदूष, उद्दाल और वनकोद्रव, ए सं. नाम । हिं. कोदो, म. कोद्रु, हरिक, गु. कोदरो, का. हारक, तै. आलुवालु, अ. कोद्रु, ला. पासपेलं स्क्रोबिक्युलेटयम् । **गुण** । कोदो-वातल, ग्राही, शीतल, पित्तकफकी नाशक । उद्दाल अर्थात् वनकी कोदो गरम, ग्राही और अत्यंत वातकर्ता है ।

चारुक. सरबीज.

चारुकःसरबीजःस्यात्कथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥
चारुकोमधुरोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ७३
शीतलोलघुर्वृष्यश्चकषायोवातकोपनः ७४

अर्थ–सर (सरपते) के बीजोंको चारुक कहतेहै । **गुण** । चारुक–मधुर, रूक्ष रक्तपित्त और कफको नाशक, शीतल, हलके, वृष्य, कषेले और वादीको कुपित करतेहै ।

बांसके बीज.

यवावंशभवारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ॥
बद्धमूत्राःकफघ्नाश्चवातपित्तकराःसराः ७५

अर्थ–बांसके बीज रूखे, कषेले, कटुपाकी, मूत्ररोधक, कफनाशक, वातपित्तकर्ता और दस्तावर है

कर्र (कसूमके बीज.)

कुसुंभबीजंवरटासैवप्रोक्तावरट्टिका ॥
वरटामधुरास्निग्धारक्तपित्तकफापहा ॥
कषायाशीतलागुर्वीस्यादवृष्याऽनिलापहा ॥

अर्थ–कसूमके बीजोंको वरटा और वरट्टिका कहतेहे । हिं. कर्र, करी, बं. कुसुमफल, म. करडा,

गु. कुसुंवानावी, अ. हबुलुअस्फर, फा. तुख्मकापषा। गुण । करड-मधुर, स्निग्ध, रक्तपित्त और कफके नाशक हैं । कषेले, शीतल, भारी, अवृष्य और वातनाशक हैं ।

गरहेडुआ.

गवेधुकातुविद्वद्भिर्गवेधुःकथिताखियाम् ॥
गवेधुःकटुकास्वाद्वीकार्श्यकृत्कफनाशिनी

अर्थ-गवेधुका और गवेधु, ए सं. नाम । हिं. गरहेडुआ, म. कसईचें बीज । गुण । गवेधु-कटुक, स्वादु, कृशकरता, और कफनाश कर्ताहै ।

तीनी.

प्रसाधिकातुनीवारस्तृणान्नमितिचस्मृतम् ॥
नीवारःशीतलोग्राहीपित्तघ्नःकफवातकृत् ॥

अर्थ-प्रसाधिका, नीवार और तृणान्न ए सं. । हिं. तीनी, म. देवभात, गु. बंटी, तै. निवारिवड्डु, का. ज्वरहुमेधे, ला. पेनिकं इटालिक. । गुण । शीतल, ग्राही, पित्तघ्न और श्लेष्मवर्द्धक है ।

पुनेरा.

पवनालोहिमःस्वादुर्लोहितःश्लेष्मपित्तजित्
अवृष्यस्तुवरोरूक्षःक्लेदकृत्कथितोलघुः ७९

अर्थ-पवनालको हिन्दीमें पुनेरा कहतेहैं । गुण । शीतल, स्वादु, लाल, कफपित्तनाशक, अवृष्य, कषेले, रूक्ष, क्लेदकारी और हलके हैं ।

यावनाल.

यावनालोयवनालःशिखरोवृत्ततंडुलः ॥
दीर्घनालोदीर्घशरःक्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः ॥

अर्थ-यावनाल, यवनाल, शिखरी, वृत्ततंदुल, दीर्घनाल, दीर्घशर, क्षेत्रेक्षु और इक्षुपत्रक, ए सामान्य ज्वारके नाम है । पू. जुनरी, बं. जनार, गु. जुँवार, तै. जोन्नलु, का. जोळदेह सरू, फा. जुरेमका, ई. ग्रेटमी लेट, म. जोंधळे ।

सपेदज्वार.

धावलोयावनालस्तुपांडुरस्तारतंडुलः ।
नक्षत्राकृतिविस्तारोवृत्तोमौक्तिकतंडुलः
जूर्णाह्वयोदेवधान्यंजूर्णलोबीजपुष्पकः ।
जूर्नलःपुष्पगंधश्चसुगंधःस्वगुरुंदकः
धवलोयवनालस्तुगील्योवल्यस्त्रिदोषजित् ।
वृष्योरुचिप्रदोशोघ्नःपथ्यंगुल्मव्रणापहः ॥

अर्थ-धवलयवनाल, पांडुर, तारतंडुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, वृत्त, मौक्तिकतंडुल, जूर्णाह्व, देवधान्य, जूर्णल, बीजपुष्पक, जूनल, पुष्पगंधक, सुगंध और स्वगुरुंदक, ए सपेदज्वारके संस्कृतनाम हैं । गुण । सपेदज्वार-मिष्ठ, बलकारी, त्रिदोषनाशक, वृष्य, रुचिदायक, बवासीरनाशक, पथ्य, गुल्म और व्रणको दूर करे ।

धान्योंमें विशेषता.

धान्यंसर्वंनवंस्वादुगुरुश्लेष्मकरंस्मृतम् ॥
तत्तुवर्षोषितंपथ्यंयतोलघुतरंहितम् ॥ ८० ॥
वर्षोषितंसर्वधान्यंगौरवंपरिमुंचति ॥
नतुत्यजतिवीर्यंस्वंक्रमान्मुचत्यतःपरम् ॥८१॥
एतेषुयवगोधूमतिलमाषानवाहिताः ॥
पुराणाविरसारूक्षानतथागुणकारिणः ॥८२॥

अर्थ-सब नवीन धान्य स्वादु, भारी और कफकर्त्ता कहेहै । और जिनको रखेहुए वर्षदिन होचुका है, वो हलके होनेके कारण पथ्य है । वर्षदिनके उपरांत संपूर्ण धान भारीपना त्याग देतेहै, परंतु अपने २ वीर्यको नहीं त्यागते, क्रमसें दो वर्षके उपरांत वीर्यकोभी त्याग देतेहैं । इनमेंभी जौं, गेहूं, तिल, उडद ए नवीनही हितकारी होतेहै, पुराने विरस, सूखे, और यथार्थ गुण नहीं करते । तहां कहतेहै कि यवादिक नवीन स्वस्थ और आरोग्य प्राणियोंके वास्ते हितकारी कहेहै । परंतु निर्बल और पथ्यभोजन करनेवालोंको तो पुरानेही हित हैं क्योंकि 'पुराण यवगोधूमक्षौद्रजांगलशूल्यभुगिति' यह वाग्भटने कहाहै ।

इति श्रीअभिनव निघंटे धान्यवर्गः

शाकवर्गः

पत्रंपुष्पंफलंनालंकंदंसंस्वेदजंतथा ॥
शाकंषड्विधमुद्दिष्टंगुरुविद्याद्यथोत्तरम् ॥१॥

अर्थ-पत्र (पत्ते) फूल, फल, नाल कंद और

संस्वेदज इसप्रकार शाक (तरकारी) छःप्रकारकी है । इनमें पत्रसें दूसरी भारी जाननी, जैसें पत्तेके शाकसें फूलका, फूलसें फलका, फलसें नालका साग भारी है। इसीप्रकार औरभी जानो ।

शाकोंके सामान्य गुण.

प्रायःशाकानिसर्वाणिविष्टंभीनिगुरूणिच ॥
रूक्षाणिबहुवर्चांसिसृष्टविण्मारुतानिच २

अर्थ-प्राय संपूर्ण शाक विष्टंभी, भारी, गुरु, रूक्ष, मलको उत्पन्नकरनेवाले और मलमूत्रवातके निःसारक हैं ।

शाकनिंदाके सामान्यवचन.

शाकंभिनत्तिवपुरस्थिनिहंतिनेत्रं
वर्णंविनाशयतिरक्तमथापिशुक्रम् ॥
प्रज्ञाक्षयंचकुरुतेपलितंचनूनं
हंतिस्मृतिंगतिमितिप्रवदंतितज्ज्ञाः ॥ ३ ॥
शाकेषुसर्वेषुवसंतिरोगा-
स्तेहेतवोदेहविनाशनाय ॥
तस्माद्बुधःशाकविवर्जनंतु
कुर्यात्तथाम्लेषुसएवदोषः ॥ ४ ॥

अर्थ-शाकभोजन करनेसें देह, हड्डी, नेत्र, वर्ण, रुधिर, शुक्र, प्रज्ञा (बुद्धि) स्मृति (स्मरणशक्ति) और गति इन सबको नष्ट करे, और बाल आदिको सपेद करेहै । यावन्मात्र शाकहैं सबमें रोग रहतेहैं और वो देहके नाश करनेके कारण है । अतएव शाकभोजन करना यह प्राणी त्याग देवे और इसीप्रकार खटाईमें दोषहै इसीसे बहुत खटाई न खाय । अब शाकोंके विशेष वाक्योंको कहतेहैं तहां प्रथम पत्रशाकोंको उनमेंभी प्रथम

दोनोंवथुए.

वास्तूकंवास्तुकंचस्यात्क्षारपत्रंचशाकराट् ॥
तदेवतुबृहत्पत्रंरक्तंस्याद्गौडवास्तुकम् ॥ ५ ॥
प्रायशोयवमध्येस्याद्यवशाकमतःस्मृतम् ॥
वास्तूकद्वितयंस्वादुक्षारंपाकेकटूदितम् ॥६॥
दीपनंपाचनंरुच्यंलघुशुक्रबलप्रदम् ॥
सरंप्लीहास्रपित्तार्शःकृमिदोषत्रयापहम् ॥७॥

अर्थ-वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र और शाकराट् ए संस्कृत वथुएके नाम हैं बं. बेतुया, दा. चिलवी, म. चाकवत, रामचाकवत, गु. टांको, का. चक्रवती, इं. व्हाइटगुजफुट, दूसरा लालरंगका और बडेपत्तोंका जो होताहै उसको गौडवास्तुक कहतेहैं । वास्तुकशाक प्राय यवोंके खेतमें होताहै अतएव इसको यवशाक कहतेहैं । गुण । दोनों वथुए स्वादु, क्षार, पाकमें कडुए, अग्निदीपक, पाचक, रोचक, हलके, शुक्रकर्त्ता, बलकारक, दस्तावर और त्रिदोषनाशक । इसके भक्षण करनेसे तापतिल्ली, पित्तकी बवासीर और कृमिरोग नष्ट होयहै ।

पोईका साग.

पोतक्युपोदिकासातुमालवामृतवल्लरी ॥
पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत्
अकंठ्यापिच्छिलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तजित्
बलदारुचिकृत्पथ्याबृंहणीतृप्तिकारिणी ॥९॥

अर्थ-पोतकी, उपोदिका मालवा और अमृतवल्लरी ए संस्कृत नाम, हिं. पोईका साग, बं. पुइशाक, म. वेलपोई, मयाल, गु. पोथी, इं. रेडमलबारनाइटशेट । गुण । यह शीतल, स्निग्ध, कफकर्त्ता, वातपित्तनाशक, कंठको बिगाडनेवाली, पिच्छल, निद्रा लानेवाली, शुक्र उत्पन्न कर्त्ता, रक्तपित्तशांतिकर, बलकारक, रोचक, पथ्य, पुष्टिकारी और तृप्तिकारी ।

सपेदमरसा. लालमरसा. नवडा.

मारिषोबाष्पकोमार्षःश्वेतोरक्तश्चसस्मृतः ॥
मारिषोमधुरःशीतोविष्टंभीपित्तनुद्गुरुः ॥
वातश्लेष्मकरोरक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित् १०
रक्तमार्षोगुरुर्नातिसक्षारोमधुरःसरः ॥
श्लेष्मलःकटुकःपाकेस्वल्पदोषउदीरितः ११

अर्थ—मारिष, वाष्पक, और मार्ष ए मरसेके संस्कृत नाम है । मरसा दोप्रकारका होताहै सपेद और लाल । बं. श्वेतकाटानटे, लाल कांटानटे, म. माठाची भाजी, पोकल्याचीभाजी, गु. डांभो, उडि. नेउटाशाग, तै. तुगलकुरा, ला. एमरेंथस् ट्रिकलर । गुण । सपेद मरसा-मधुर, शीतल, विष्टंभी, पित्तनाशक, भारी, वातकफकारी, रक्तपित्तनिवारक, और अग्निकी विषमताका नाशक । लाल मरसा, भर्जित

भारी नहींहै. वह क्षारगुण करके युक्तहै। मधुर, सर, कफकर्त्ता, शाकमें कटु, अल्पदोषयुक्तहै ।

चौलाई.

तण्डुलीयोमेघनादःकांडेरस्तंडुलेरकः ॥
भंडीरस्तंडुलीबीजोविषघ्नश्चाल्पमारिषः १२
तंडुलीयोलघुःशीतोरूक्षःपित्तकफास्रजित् ॥
सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविषहारकः १३

अर्थ-तंदुलीय, मेघनाद, कांडेर, तंडुलेरक, भंडीर तंदुलीबीज, विषघ्न और अल्पमारिष, इतने संस्कृत नाम । हिं. चौला [रा] ई, बं. नटेशाक, म. तांदुलजा, गु. तांजलजो, ता. मुळूकिरई, का. किरुकुशाले, तै. मोळाकुरा, द्रा. कांडेमाट, इं. हरमें-फ्रोडाइट एमेरेंथ । गुण। लघु, शीतल, रूक्ष, पित्तकफ-नाशक, रुधिरदोषनिवारक, मलमूत्रनिःसारक, रोचक अग्निकारक, और विषनाशक है ।

कंचट.

पानीयंतण्डुलीयंतुकचटंसमुदाहृतम् ॥
कचटंतिक्तकंरक्तपित्तानिलहरंलघु ॥ १४ ॥

अर्थ-पानीय, तंडुलीय, कचट, हिं. कंचट कहतेहै। यह जलचौलाई है। म. जलतांदुलजा। गुण। कटवी है रक्तपित्त और वादीको हरण करे, तथा हलकी है ।

पालक.

पालक्यावास्तुकाकाराच्छुरिकाचीरि-
तच्छदा ॥
पलक्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः ॥
विष्टंभिनीमदश्वासपित्तरक्तकफापहा ॥१५॥

अर्थ-पालक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका और चीरितच्छदा ए संस्कृत नाम। हिं. पालक, बं. पालेक, म. पालख। का. पालक्य, फा. इस्पनाख, इं. स्पाईनेज। गुण। वातकर्त्ता, शीतल, कफकारी, दस्तावर, भारी, विष्टंभकारी। मद, श्वास, रक्तपित्त और कफको दूर करे ।

नाडीकाशाक.

नाडिकंकालशाकंचआडशाकंचकालकम् ॥
कालशाकंसरंरुच्यंवातकृत्कफशोथहृत् ॥
बल्यंरुचिकरंमेध्यंरक्तपित्तहरंहिमम् ॥ १६ ॥

अर्थ-नाडिक, कालशाक, आडशाक और कालक ए संस्कृत नाम । हिं. नाडीकाशाक, नरिचा और कालशाकभी कहतेहै बं. नालिताशाक, तिक्तपाटशाक। गुण। कालशाक—दस्तावर, रुचि-कारी, वादीकर्त्ता, कफ सूजनको हरण करे, बलकर, रुचिकर, पवित्र, रक्तपित्तको हरण करे और शीतल है।

पटुआ.

पट्टशाकस्तुनाडीकोनाडीशाकश्चसस्मृतः ॥
नाडीकोरक्तपित्तघ्नोविष्टंभीवातकोपनः॥१७॥

अर्थ-पट्टशाक, नाडीक और नाडीशाक ए संस्कृत नाम। हिं. पटुआ, बं. मिष्टपाकशाक, म. मयाल, गु. नाळानीभाजी, इं. आईवोमिया-रिप्रेन्स. गुण। रक्तपित्तनाशक, विष्टंभी और वायुको कुपित कर्त्ताहै ।

कलंबी.

कलंबीशतपर्वीचकथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥
कलंबीस्तन्यदाप्रोक्तामधुराशुक्रकारिणी १८

अर्थ-कलंबी। और शतपर्वा। हिं. कलंबी, बं. कलमाशाक, तै. तोमेवचलिचेट्टु । गुण । स्तनोंमें दूध प्रगटकरे, मधुर और वीर्यकारक है ।

लोणीबृहल्लोणी.

लोणालोणीचकथिताबृहल्लोणीतुघोटिका ॥
लोणीरूक्षास्मृतागुर्वीवातश्लेष्महरीपटुः १९
अर्शोघ्नीदीपनीचाम्लामंदाग्निविषनाशिनी ॥
घोटिकाम्लासराचोष्णावातकृत्कफपित्तहृत्
वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नश्वासकासप्रमेहनुत् ॥
शोथेलोचनरोगेचहितातज्ज्ञैरुदाहृता ॥२१॥

अर्थ-लोणा, लोणी, बृहल्लोणी और घोटिका, हिं. नोनियाका शाक, अंवती, कुल्फा, म. घोल, गु. लुणी, का. गोली, ता. कोरिलकीरइ, तै. भाईल-कुरु, अ. बक्लतुलहमका, फा. खुरफा, इं. पर्सलेन, ला. पोर्चलेका, ओलिरेसिया, गुण। रूखी, भारी, वातकफ हरण कर्त्ता, स्वादमें निमकीन, बवासीरना-शक, अग्निकारक, खट्टी, मंदाग्निनाशक और विषरो-गनाशक। घोटिका [अर्थात् बडी नोनिया] खट्टी, दस्तावर, गरम, वातकर्त्ता और कफपित्तनाशक।

यह वायीके दोष, वाद, गोळा, श्वास, खांसी, प्रमेह, सूजन और मेमरोग इनको निवारण करे ।

चांगेरी. अम्बिलो.

चांगेरीचुक्रिकादंतशठांबष्ठाम्ललोणिका ॥
अश्मंतकस्तुशफरीपिसलीचाम्लपत्रकः २२
चांगेरीदीपनीरुच्यारूक्षोष्णाकफवातनुत् ॥
पित्तलाऽम्लाग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी

अर्थ-चांगेरी, चुक्रिका, दंतशठा, अंबष्ठा, अम्ल-लोणिका, अश्मंतक, शफरी, पिसली और अम्ल-पत्रक, ए संस्कृतनाम. हिं. चांगेरी, अंबिलोना, बं. आमरूल । गुण । चांगेरी-दीपनी, रुचकारी, रूक्ष, गरम, कफवातनाशक, पित्तकारी, खट्टी, संग्रहणी, बवासीर, कोढ और अतिसार इनको दूर करे ।

चूका.

चुक्रिकास्याच्चुपत्राम्लारोचनीशतवेधिनी ॥
चुक्रात्यम्लतरास्वाद्वीवातघ्नीकफपित्तकृत्॥
रुच्यालघुतरापाकेवृंताकेनातिरोचनी ॥२४॥

अर्थ-चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी, शतवेधनी, ए सं. हिं. चूक, बं. चूकापालंग, म. आम्बटचुको-चुको, फा. हुलिच कोत, इं. ब्लेडरडाक । गुण । अत्यंत खट्टी, स्वादु, वातनाशक, कफपित्तकारक, रुच्य, अत्यंतलघु, और पाकमें कटू और वैंगनोंमें डालनेसें अति रुचकारी नहीं है ।

चंचु.

चिंचाचंचुश्चंचुकीचदीर्घपत्रासतिक्तका ॥
चंचुःशीतासरारुच्यास्वाद्वीदोषत्रयापहा ॥
धातुपुष्टिकरीबल्यामेध्यापिच्छिलकास्मृता॥

अर्थ-चिंचा, चंचू, चंचुकी, दीर्घपत्रा और सतिक्तका ए संस्कृतनाम । हिं. चंचु, चेचुना, म. चुंचमाजी, गु. छछराजगरी, तै. चितचेट्टु, ला. कार्कोरस् एकूटें ग्यूलेरीम् । गुण । शीतल, दस्तावर, रुच्य, स्वादु, त्रिदोषनाशक, धातुपुष्टिकारक, बलकारी, मेधावर्धक और पिच्छल ।

हुरहुर.

ब्राह्मीशंखधराचारीब्राह्मीचहिलमोचिका ॥
शोथकुष्ठकफपित्तंहरतेहिलमोचिका ॥२६॥

अर्थ-ब्राह्मी, शंखधरा, चारी, ब्राह्मी, और हिलमोचिका ए संस्कृत नाम. हिं. हुलहुल, हुरहुर, बं. हिंचाशाक, म. हरहुची, उडि. हिरमिचा. कहतेहै । गुण । सूजन, कोढ, कफ और पित्तको नाश करे ।

शिरिआरी.

शितिवारःशितिवरःस्वस्तिकःसुनिषण्णकः
श्रीवारकःसूचिपत्रःपर्णकःकुक्कुटःशिखी ॥
चांगेरीसदृशःपत्रश्चतुर्दलइतीरितः ॥
शाकोजलान्वितेदेशेचतुःपत्रीतिचोच्यते २८
सुनिषण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः ॥
अविदाहीलघुःस्वादुःकषायोरूक्षदीपनः ॥
वृष्योरूच्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् २९

अर्थ-शितिवार, शितिवर, स्वस्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचीपत्र, पर्णक, कुक्कुट, शिखी, चांगेरी सदृशपत्र, चतुर्दल, और चतुपत्री ए संस्कृत नाम. यह सजल पृथ्वीमें प्रगट होतीहै इसके पत्ते अंबिलोना शागकेसमान होतेहै । हिं. शिरिआरी, चोपतिआ, बं. शुनिशाक, म. कुरडु, गु. ओटांगण, उडि. छुनछुनिया, फा. अंजरा, अं. ब्लेफेरिस् इड्युलीम्. कहतेहैं । गुण । शीतल, ग्राही, मोहनाशक, त्रिदोषघ्न, अविदाही, हलकी, स्वादु, कषेली, रूक्ष, अग्निवर्धक, वृष्य, और रोचक । यह ज्वर, श्वास, प्रमेह, कोढ, और भ्रमरोगको दूर करे ।

मूलीके पत्ते.

पाचनंलघुरूच्योष्णंपत्रंमूलकजंनवम् ॥
स्नेहसिद्धंत्रिदोषघ्नमसिद्धंकफपित्तकृत् ३०

अर्थ-नई मूलीके पत्तोंका शाग-पाचक, हलका, रुचिकारी, और गरम । यह घृत तेल आदिमें छौंककर सिद्ध कराहुआ त्रिदोषनाशकहै । और कच्चा कफपित्तको करैहै ।

गोमाकेपत्ते.

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत् ॥
भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु ॥ ३१ ॥

अर्थ-गोमाके पत्ते स्वादु, रूक्ष, भारी, पित्तकर्त्ता, भेदक, कामला, सूजन, प्रमेह, और ज्वर इनको दूर करे, तथा हलके है ।

अजमायनके पत्ते.

यवानीशाकमाग्नेयंरुच्यंवातकफप्रणुत् ॥
उष्णंकटुचतिक्तंचपित्तलंलघुशूलहृत् ॥३२॥

अर्थ-अजमायनका शाक, अग्निकारी, रुचिकारी, वातकफनाशक, गरम, चरपरा, कडवा, पित्तकर्त्ता, और शूलरोगनिवारक है।

चकवड.

दद्रुघ्नपत्रंदोषघ्नमम्लंवातकफापहम् ॥
कंडूकासकृमिश्वासदद्रूकुष्ठप्रणुल्लघु ॥ ३३ ॥

अर्थ-चकवड, या पमारके पत्ते त्रिदोषनाशक, खट्टे, वातकफके हरणकर्त्ता, खुजली, खांसी, कृमि, श्वास, दाद, और कोढरोगको हरण करे तथा हलकेहै।

सेहुंड.

सेहुंडस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंहरेत् ॥
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ-सेहुंड-(थूहर)के पत्ते, तीक्ष्ण, दीपन, रोचनहै । अफरा, अष्ठीलिका, गोला, शूल, सूजन, और उदररोग इनको दूर करे।

पित्तपापडा.

पर्पटोहंतिपित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ॥
संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः ३५

अर्थ-पित्तपापडेका साग-रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, कफ और भ्रमको नष्ट करे। संग्राही, शीतल, कडवा, दाह हरणकर्त्ता, वातल और हलकाहै ।

गोभी.

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरीलघुः

अर्थ-गोभीका साग-कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, और ज्वर इनको हरण करे और हलका है । [यह जंगलमें जो कटेरीके समान गोभी उगतीहै उसके गुण है । फूलगोभीके नहीं हैं]

पटोलपत्र.

पटोलपत्रंपित्तघ्नंदीपनंपाचनंलघु ॥
स्निग्धंवृष्यंतथोष्णंचज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ-पटोलपत्र, (परवलके पत्ते) पित्तनाशक, दीपन, पाचन, हलके, स्निग्ध, वृष्य, तथा गरम, एवं ज्वर, खांसी और कृमिरोगको दूर करे।

गिलोयके पत्ते.

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु ॥
कषायंकटुतिक्तंचस्वादुपाकंरसायनम् ३७
बल्यमुष्णंचसंग्राहिहन्याद्दोषत्रयंतृषाम् ॥
दाहप्रमेहवातास्रकामलाकुष्ठपांडुताम् ॥३८

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका साग, अग्निको बढावे, सब ज्वरोंको दूर करे, हलका, कषेला, कडवा, पचनेमें स्वादिष्ट, रसायन, बलकारी, गरम, संग्राही, त्रिदोषनाशक, प्यास, दाह, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कोढ और पांडुरोग इनको हरण करे।

कसौंदी.

कासमर्दोऽरिमर्दश्चकासारिःकर्कशस्तथा ॥
कासमर्ददलंरुच्यंवृष्यंकासविषास्रनुत् ॥३९
मधुरंकफवातघ्नंपाचनंकण्ठशोधनम् ॥
विशेषतःकासहरंपित्तघ्नंग्राहकंलघु ॥ ४० ॥

अर्थ-कासमर्द, अरिमर्द, कासारि और कर्कश, हिं. कसोंदी, बं. कालकासुंदरपाता, म. कासवंदा कहतेहै । गुण । कसौंदीके पत्ते, रुचिकारी, वृष्य, खांसी, विष, रुधिर विकारको दूर करे । मधुर, कफवातनाशक, पाचन, कंठशोधक, विशेष करके खांसीको दूर करे, पित्तनाशक, ग्राही, और हलकाहै ।

चनेकासाग.

रुच्यंचणकशाकंस्याद्दुर्जरंकफवातकृत् ॥
अम्लंविष्टंभजनकंपित्तनुद्दंतशोथहृत् ॥

अर्थ-चनेके पत्तोंका साग-रुचिकारी, दुर्जर, कफवातकर्त्ता, खट्टा, विष्टंभकारी, पित्त हरणकारी और दांतोंकी सूजनको हरण करे।

केरावा. मटर.

कलायशाकंभेदिस्याल्लघुतिक्तंत्रिदोषजित् ॥

अर्थ-मटरके पत्तोंका साग-दस्तावर, हलका, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

सरसोंका साग.

कटुकंसार्षपंशाकंबहुमूत्रमलंगुरु ॥ ४२ ॥

सरूक्षाचविदाहिस्वादुष्णंकक्षंत्रिदोषजित्॥
सक्षारंकषयंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिंदितम् ४३

अर्थ-सरसोंके पत्तोंका साग-चरपरा, बहुत मल मूत्रका निकालनेवाला, भारी, पचनेमें खट्टा, दाहकर्त्ता, गरम, रूक्ष, त्रिदोषको जीतनेवाला, क्षारगुणयुक्त, मिरचकीनरस, तीक्ष्ण, और स्वादु, यह सरसोंका साग सब सागोंमें निंदित अर्थात् अधमहै ।

पुष्पशाक. अगस्तिया

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थकनिवारणम् ॥
नक्तांध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम्॥४४॥

अर्थ-अगस्तियाका फूल. शीतल, चातुर्थिक ज्वरका नाशक, रतौंधनाशक, कडवा, कषेला, कटुपाकी, पीनस, कफ, पित्त और वातके रोगोंको दूर करे ।

कदलीपुष्प.

कदल्याःकुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु ॥
वातपित्तहरंशीतंरक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥ ४५ ॥

अर्थ-केलाका फूल-चिकना, स्निग्ध, मधुर, कषेला, भारी, वातपित्त हरणकरता, शीतल, रक्तपित्त, और क्षय इनको दूर करे ।

सहजनेका फूल

शिग्रोःपुष्पंतुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथकृत्
कृमिहृत्कफवातघ्नंविद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितंरक्तपित्तप्रसादनम् ४६

अर्थ-सहजनेका फूल. चरपरा, तीक्ष्ण, गरम स्नायुओंमें सूजनका करनेवाला, कृमिरोग, कफ, वात, विद्रधि, प्लीह, और गोला. इनको नष्ट करे । इसीप्रकार मधुशिग्रु (मीठे सहजनेका फूल) नेत्रोंको हितकारी, और रक्तपित्तको दूर करे ।

सेमरकाफूल.

शाल्मलीपुष्पशाकंतुघृतसैंधवसाधितम् ॥
प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यंचनसंशयः ॥ ४७ ॥
रसेपाकेचमधुरंकषायंशीतलंगुरु ॥
कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-सेमरके फूलोंका साग जो घृत और सैंधेनिमक डालकर बनाया है वह दु साध्य प्रदरको नाश करे। रसमे और पाकमें मधुर, कषेला, शीतल, भारी, कफपित्त, रुधिर, दोषनाशक ग्राही और वातलहै ।

फलशाक [कूष्मांड]

कूष्मांडंस्यात्पुष्पफलंपीतपुष्पंबृहत्फलम् ॥
कूष्मांडंबृहणंवृष्यंगुरुपित्तास्रवातनुत्॥४९॥
बालंपित्तापहंशीतंमध्यमंकफकारकम् ॥
वृद्धनातिहिमंस्वादुसक्षारंदीपनंलघु ॥
बस्तिशुद्धिकरंचेतोरोगहृत्सर्वदोषजित्॥५०

अर्थ-कूष्मांड, पुष्पफल, पीतपुष्प, और बृहत्फल, ए **संस्कृत** नाम । **हिं.** पेठा, कुम्हडा, कोंहडा, **बं.** साचिकुमुडा, **म.** कोहोला, **गु.** पदकोला, **दे.** कोहला, **कौं.** भूराकोहला, **तै.** पुल्लाहा, **का.** दारकोहला, **उडि.** कखारु, **अ.** महदेवा, **फा.** भूगकदू, **इं.** पपकीन, कहतेहैं । **गुण** । **पेठा** वीर्यवर्धक, वृष्य, भारी, पित्तरुधिर विकारको दूर करे । **कच्चापेठा** पित्तनाशक, शीतल, और **अधकच्चा** कफकारी, एव **पका-हुआ पेठा** अत्यत शीतल नहीं है । स्वादु, क्षारयुक्त, दीपन, हलका, बस्तिशोधक, मानसिकरोग (अपस्मार उन्मत्तता आदि) को दूर करता, तथा सर्वदोष हरणकारीहै ।

कोहडी.

कूष्मांडीतुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तिता ॥
कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरुः ॥
पक्वातिक्ताऽग्निजननीसक्षाराकफवातनुत् ॥

अर्थ-कोहडी, अत्यंत हलकी, इसको **कर्कारुभी** कहतेहै **बं.** गोलसाचिकुमडा । **गुण** । **कर्कारु.** ग्राही, शीतल, रक्तपित्तहरणकर्त्ता, भारी । **पकीहुई** । कडवी, क्षारगुणयुक्त, जठराग्नि और कफवातनाशकहै ।

विलायती पेठा (कौला).

अपरंपीतकूष्मांडंगुरुपित्तकरंपरम् ।
अग्निमांद्यकरंस्वादुश्लेष्मघ्नंवातकोपनम् ।

अर्थ-विलायती पेठा अर्थात् कोंहड़ेकासाग, कासीफल, **बं.** विलाती पेठा, **म.** तामडा भोपळा,

गु. कोलु, तै. तियागुलटिकाया, का. डंगर, फा. वादरंग, इं. पीगोर्ड कहतेहै, यह भारी, पित्तकर्त्ता, मंदाग्निकारक, स्वादिष्ट, कफनाशक और वादीको कुपित करताहै ।

तूंबी, तूंबा.

अलाबूःकथितातुंबीद्विधादीर्घाचवर्तुला ॥
मिष्टतुंबीफलंहृद्यंपित्तश्लेष्मापहंगुरु ॥
वृष्यंरुचिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्धनम् ॥५२॥

अर्थ-अलाबू, तुंबी, यह दोप्रकारकी होतीहै। एक लंबी और दूसरी गोल हिं. तूंबा, कद्दू, लौआ, रामतोरई, बं. लाउ, म. भोपला, गु. दुधी, तै. तीयातु, बडीकाया, का. कडंउवलकाई, फा. कुदु-शिरिन्, इं. व्हाईटगुड, कहतेहै। मीठीतुंबीके फल हृदयको हितकारी, पित्तकफके नाशक, भारी, वृष्य, रुचिकारी, और धातुपुष्टीको करे ।

तितलौकी.

इक्ष्वाकुःकटुतुंबीस्यात्सातुंबीचमहाफला ॥
कटुतुंबीहिमाहृद्यापित्तकासविषापहा ॥
तिक्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरांतकृत्॥५३

अर्थ-इक्ष्वाकु, कटुतुंबी, तुंबी और महाफला ए संस्कृत नाम। हिं. कडवी तुंबी, बं. तितलाओ, म. कडू दूध्या भोंपळा, गु. कडवी तुंबडी, का. काहिसोरे, तै. चेनिआनव, फा. कुदुतल्ख, इं. वोट-लगुर्ड, कहतेहैं। गुण। कडवी तुंबी-शीतल, हृद्य, पित्त, खांसी, और विषको दूर करे स्वादमें कडवी, विपाकमें चरपरी, वातपित्त ज्वरको दूर करेहै ।

ककडी.

एर्वारुःकर्कटीप्रोक्ताकथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥
कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः ॥
रुच्यापित्तहरासामापक्वातृष्णाग्निपित्तकृत्॥

अर्थ-सं. एर्वारु, कर्कटी, हिं. ककडी, कांकरी, बं. कांकुड, तै. दोसकाया, का. कोयसौत, इं. ककंबर, कहतेहै। गुण। ककडी-शीतल, रूक्ष, ग्राही, मधुर, भारी, रुचिकर्त्ता, पित्तको शांति करे, आमको करे । पकीककडी । प्यास, अग्नि और पित्तको करेहै ।

चिचेंडा.

चिर्भिटाश्वेतराजिःस्यात्सुदीर्घोगृहकूलकः॥
चिर्भिटोवातपित्तघ्नोबल्यःपथ्योरुचिप्रदः ॥
शोषिणोऽतिहितःकिंचिद्गुणैर्न्यूनःपटोलतः

अर्थ-चिर्भिटा, श्वेतराजी, सुदीर्घ और गृहकूलक ए सं. । हिं. चिचेंडे, बं. चिचिंगा, म. गोड-पडवल, गु. पंडोला, तै. पोटलीकाया, इं. स्नेकगोर्ड कहतेहैं । गुण । वातपित्तको नाश करे, बलकारी, पथ्य, रुचिकारी, शोषकर्त्ता, अत्यंत हितकारी और यह परवलोंसे गुणमें कुछ न्यून है ।

करेला-करेली.

कारवेल्लंकठिल्लंस्यात्कारवेल्लीततोलघु ॥
कारवेल्लंहिमंभेदिलघुतिक्तमवातलम् ॥५६॥
ज्वरपित्तकफास्रघ्नंपांडुमेहकृमीन्हरेत् ॥
तद्गुणाकारवेल्लीस्याद्विशेषाद्दीपनीलघुः ५७

अर्थ-कारवेल, कठिल, ए सं.। हिं. करेला, बं. करोला, म. लघुकारली, गु. कारेला, तै. करिला, का. हागल, उडि. फाल्रा, इं. हेरी मोडिका, फा. कारेलाह, कहतेहै। और छोटे करेलोको सं. कारवेल्ली और हिंदीमें करेली कहतेहैं। गुण। करेला-शीतल, दस्तावर, हलका, कडवा, वादी नहीं करे। ज्वर, पित्त, कफ, रुधिरविकार, पांडुरोग, प्रमेह और कृमिरोग इनको दूर करे। करेलेके समानही गुण करेलीमें हैं ।

नेनुआ.

महाकोशातकीप्रोक्ताहस्तिघोषामहाफला ॥
धामार्गवोघोषकश्चहस्तिपर्णश्चसस्मृतः ॥
महाकोशातकीस्निग्धारक्तपित्तानिलापहा ॥

अर्थ-महाकोशातकी, महाघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक और हस्तिपर्ण, ए संस्कृतनाम, हिं. गलकातोरई, घीयातोरई, नेनुआ, बं. धुंधुल, म. मोठी घोसाळी, गु. घीसोडा, उ. तराडे, का. भरहिरे, तै. पुच्छाबीरकाया, फा. खियार, ला. ल्यूफा पेटेंड्रा, कहतेहै। गुण। महाकोशातकी चिकनी और रक्तपित्तको हरण करे ।

तोरई.

धामार्गवःपीतपुष्पोजालिनीकृतवेधना ॥
राजकोशातकीचेतितथोक्ताराजिमत्फला ॥
राजकोशातकीशीतामधुराकफवातला ॥
पित्तघ्नीदीपनीश्वासज्वरकासकृमिप्रणुत् ६०

अर्थ–धामार्गव, पीतपुष्प, जालनी, कृतवेधना, राजकोशातकी, और राजिमत्फला ए सं. । हिं. तोरई, तुरैया, बं. झिंगा, म. मोठीघोसाली, गु. जुमखा कहतेहैं । गुण । तोरई-शीतल, मधुर, कफ और वातको करे, पित्तनाशक, दीपनी । श्वास, ज्वर, खांसी और कृमिरोगको नष्ट करे ।

परवल.

पटोलःकूलकस्तिक्तःपांडुकःकर्कशच्छदः ॥
राजीफलःपांडुफलोराजेयश्चामृताफलः ६१
बीजगर्भःप्रतीकश्चकुष्ठहाकासभंजनः ॥
पटोलंपाचनंहृद्यंवृष्यंलघ्वग्निदीपनम् ॥ ६२ ॥
स्निग्धोष्णंहंतिकासास्रज्वरदोषत्रयकृमीन् ॥
पटोलस्यभवेन्मूलंविरेचनकरंसुखात् ॥ ६३ ॥
नालंश्लेष्महरंपत्रंपित्तहारिफलंपुनः ॥
दोषत्रयहरंप्रोक्तंतद्वत्तिक्तापटोलिका ॥ ६४ ॥

अर्थ–पटोल, कूलक, तिक्त, पांडुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पांडुफल, राजेय, अमृतफल, बीजगर्भ, प्रतीक, कुष्ठहा और कासभंजन ए संस्कृतनाम । हिं. परवल, बं. पलतालता, म. कटुपडवल, तै. कोम्मुपुडले, ता. सेसपदूला, का. मोरहडी, ला. ट्रिकोसेंथिस् कुकुमेरिना, और हिंदुस्तानकी भाषाओंमें इसी नामसें विख्यात है । गुण । परवल-पाचक, हृद्य, वृष्य, हलका, दीपन, स्निग्ध, गरम, खांसी, रुधिरविकार, ज्वर, तीनोदोष और कृमिरोग इनको दूर करे । परवलकी जड-सुखपूर्वक दस्त करानेवाली है । इसकी नाल कफको हरण करे, पत्ते पित्तको दूर करे, और फल त्रिदोषनाशक है । इसीप्रकार कडवेपरवलके गुण जानने चाहिये ।

कंदूरी.

बिंबीरक्तफलातुंडीतुंडिकेरीचबिंबिका ॥
ओष्ठोपमफलाप्रोक्तापीलुपर्णीचकथ्यते ६५
बिंबीफलंस्वादुशीतंगुरुपित्तास्रवातजित् ॥
स्तंभनंलेखनंरुच्यंविबंधाध्मानकारकम् ६६

अर्थ–बिंबी, रक्तफला, तुंडी, तुंडिकेरी, बिंबिका, ओष्ठोपमफला, और पीलुपर्णी ए संस्कृत नाम । हिं. कंदूरी, गुलकांख, बं. कुंदरकी, म. तोंडली, गु. टींडोरी कहतेहै । गुण । कंदूरीका फल-स्वादिष्ट, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकार, तथा वादीके विकारको दूर करे । स्तंभन करे, लेखन है, रुचिकारी, विबंध और अफराको करेहै । मीठी और कडवीके भेदसे कंदूरी दोप्रकारकी है ।

सेम.

शिबिःशिबीःपुस्तशिबीस्तथापुस्तकशिबि
काशिबीद्वयंचमधुरंरसेपाकेहिमंगुरु ॥
बल्यंदाहकरंप्रोक्तंश्लेष्मलंवातपित्तजित् ६७

अर्थ–शिबि, शिबी, पुस्तशिबी, और पुस्तकशिबी, ए संस्कृतनाम । हिं. सेम, बं. श्वेतशिम, और मोगलाईशिम, म. सेंग, खरसंवली, गु. वालोर कहतेहै । सेम दोप्रकारकी होतीहै । एक छोटी और दुसरी बडी । गुण । दोनोंप्रकारकी सेम रस और पाकमें मधुर, शीतल, भारी, बलकर्त्ता, दाहकारी, कफकार और वातपित्तको जीते ।

सुआरासेम.

कोलशिबिःकृष्णफलातथापर्यंकपट्टिका ॥
कोलशिबिःसमीरघ्नीगुर्व्युष्णाकफपित्तकृत् ।
शुक्राग्निसादकृदवृष्यारुचिकृत्बद्धविड्गुरुः

अर्थ–कोलशिबि, कृष्णफला, और पर्यंकपट्टिका, हिं. सुआरासेम । गुण । वातनाशक, भारी, गरम, कफपित्त कर्त्ता, शुक्र और जठराग्निको मंद करे, वृष्य, रुचिकारी, मलको बांधनेवाली और भारी ।

सहजनेकी फली.

सौभांजनफलंस्वादुकषायंकफपित्तनुत् ॥
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनंपरम् ॥ ६९ ॥

अर्थ–सहजनेके फल-स्वादु, कषेले, कफपित्तनाशक । शूल, कोढ, क्षयरोग, श्वास, खांसी और गोलेकारोग इनको हरण करे और अग्निको अत्यंत दीपन करे ।

वैंगन. भंटा.

वृंताकंस्त्रीतुवार्त्ताकुर्भंटाकीभांटिकापिच ॥
वृंताकंस्वादुतीक्ष्णोष्णंकटुपाकमपित्तलम् ॥
ज्वरवातबलासघ्नंदीपनंशुक्रलंलघु ॥
तद्बालंकफपित्तघ्नंवृद्धंपित्तकरंलघु ॥ ७१ ॥
वृंताकंपित्तलंकिंचिदंगारपरिपाचितम् ॥
कफमेदोनिलामघ्नमत्यर्थंलघुदीपनम् ॥ ७२ ॥
तदेवहिगुरुस्निग्धंसतैलंलवणान्वितम् ॥
अपरंश्वेतवृंताकंकुक्कुटांडसमंभवेत् ॥
तदर्शःसुविशेषेणहितंहीनंचपूर्वतः ॥ ७३ ॥

अर्थ-वृंताक, वार्त्ताकु, भंटाकी और भांटिका । ए संस्कृतनाम । हिं. वैंगन, भंटा, बं. वेगुन, उडि. वाईगुण, म. वांगी, गु. काकडिया रिंगणा, ता. कुठेरकई, तै. वंकाया, का. वदने, अ. वार्दजान्, फा. वादंगान्, इं. ब्रिजिल्, ला. सोलेनमेल, जोन कहतेहै । गुण । वैंगन-स्वादु, तीक्ष्णोष्ण-पाकमें कटु, पित्त नहीं करे । ज्वर, वातकफको नष्ट करे, दीपन, शुक्रकर्त्ता, हलके । छोटे २ वैंगन कफपित्तको नष्ट करे । बडे २ वैंगन पित्त करे और हलके है । अंगारेपर भुने वेंगन अर्थात् वैंगनका भर्त्ता किंचित् पित्तकर्त्ता है । उसी भरतेको तेल और निमकके साथ बनाया जावे तो भारी और स्निग्ध होजाताहैं। दूसरा सपेद्वैंगन मुरंगेके अंडेके समान होताहै [यह अभक्ष है] यह सपेद्वैंगन बवासीरवालेको अत्यंत हितकारी है और पहले वैंगनोंसे गुणोंमें हीन है, एक मारू वैंगन होताहै. यहभी शीतल, वातकर्त्ता, स्वादिष्ट होताहै ।

ढेंडस. टिंडे.

डिंडिशोरोमशफलोमुनिनिर्मितइत्यपि ॥
डिंडिशोरुचिकृद्भेदीपित्तश्लेष्मापहःस्मृतः॥
सुशीतोवातलोरूक्षोमूत्रलश्चाश्मरीहरः ७४

अर्थ-डिंडिश, रोमशफल और मुनिनिर्मित ए संस्कृत नाम, हिं. ढेंडस, टिंडे । गुण । ढेंडस-रुचिकारी, दस्तावर, पित्तकफनाशक, शीतल, वातल, रूक्ष, मूत्र लानेवाले, और पथरीके रोगको हरण करेहैं ।

पिंडार.

पिंडारंशीतलंबल्यंपित्तघ्नंरुचिकारकम् ॥
पाकेलघुविशेषेणविषशांतिकरंस्मृतम् ७५

अर्थ-पिंडार-शीतल, बलकारी, पित्तनाशक, रुचिकारी, पाकमें हलका और विषको शांति करनेवाला है ।

खेखस. ककोडा.

कर्कोटकीपीतपुष्पामहाजालीतिचोच्यते ॥
कर्कोटीमलहत्कुष्ठहल्लासारुचिनाशनी ॥
श्वासकासज्वरान्हंतिकटुपाकाचदीपनी ॥

अर्थ-कर्कोटकी, पीतपुष्पा और महाजाली, हिं. खेखसा, ककोडा, बं. काकरोल, म. कर्टोली, गु. कंटोला, तै. अगोरकर । गुण । ककोडे-मलको हरण करे, कोढ, हल्लास, अरुचि, श्वास, खांसी और ज्वरको हरण करे, पाकमें कटु और दीपन कर्त्ताहै ।

करेरुआ.

डोडिकाविषमुष्टिश्चडोडीत्यपिसुमुष्टिका ॥
डोडिकापुष्टिदावृष्यारुच्यावन्हिप्रदालघुः ॥
हंतिपित्तकफार्शांसिकृमिगुल्मविषामयान् ॥

अर्थ-डोडिका, विषमुष्टि, डोडी और सुमुष्टिका, हिं. करेरुआ, गु. खरवोली कहतेहै । गुण । पुष्टिकर, वृष्य, रुचिकारी, जठराग्निवर्द्धक, हलका, पित्त, कफ, बवासीर, कृमि, गोला और विषकेरोगोंको दूर करे ।

कटेरीके फल.

कंटकारीफलंतिक्तंकटुकंदीपनंलघु ॥
रूक्षोष्णंश्वासकासघ्नंज्वरानिलकफापहम् ॥

अर्थ-कटेरीके फल-कडवे, चरपरे, दीपन, हलके, रूक्ष और गरम । श्वास, खांसी, ज्वर, वादी और कफको दूर करे ।

नालशाक. (सरसोंकी नाल.)

तीक्ष्णोष्णंसार्षपंनालंवातश्लेष्मव्रणापहम् ॥
कंडूवमिहरंदद्रूकुष्ठघ्नंरुचिकारकम् ॥ ७६ ॥

अर्थ-सरसोंकी नाल तीक्ष्णोष्ण, वात, कफ, व्रण, खुजली, वमन, दाद और कोढको नष्ट करे, तथा रुचिको करेहै ।

कंदशाक (सूरन.)

सूरणःकंदओलश्चकंदलोऽर्शोघ्नइत्यपि ॥
सूरणोदीपनोरूक्षःकषायःकंडुकृत्कटुः ८०
विष्टंभीविशदोरुच्यःकफार्शःकृंतनोलघुः ॥
विशेषादर्शसेपथ्यःप्लीहगुल्मविनाशनः ८१
सर्वेषांकंदशाकानांसूरणःश्रेष्ठउच्यते ॥
दद्रूणांकुष्ठिनांरक्तपित्तिनांनाहितोहिसः ॥
संधानयोगसंप्राप्तःसूरणोगुणवत्तरः ॥ ८२ ॥

अर्थ–सूरन, कंदओल, कंदल और अर्शोघ्न ए **संस्कृतनाम. हिं.** सूरन, जमीकंद, **बं.** ओल, **म.** सुरण, **तै.** मंचाकंदा, **ला.** एमोर्फो, फेलस्-पेनिक्यूलेटस्, कहतेहैं । मुंबईमें मीठा सूरन होताहै जो खुजली नहीं करे । **गुण । सूरण**–दीपन, रूक्ष, कषेला, खुजली कर्ता, चरपरा, विष्टंभी, विषद, रुचिकारी, कफकी ववासीरको नष्ट करे और हलका हैं । यह विशेष करके ववासीर रोगपर पथ्य है, प्लीह और गोलेके रोगोंको नष्ट करे । सब कंदोंके सागोंमें **सूरण उत्तम है** । यह दाद, कोढ और रक्तपित्त रोगियोंको हितकारी नहीं है । इसका संधाना डालनेसे अधिक गुणकारी होताहै । सूरनका सँधाना सौरोंजीमें बहुत डालते हैं ।

आलू.

काष्ठालुकशंखालुकहस्त्यालुकानिकथ्यंते ॥
पिंडालुकसतालुकरक्तालुकानिचोक्तानि ८३
आलुकंशीतलंसर्वंविष्टंभिमधुरंगुरु ॥
सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्जरंरक्तपित्तनुत् ॥
कफानिलकरंबल्यंवृष्यंस्वल्पाग्निवर्द्धनम् ८४

अर्थ–आलूको संस्कृतमें आरु, आरुक, आलू वीरसेन और आलुक कहतेहै । यह छःप्रकारकाहै, जैसे काष्ठालुक, शंखालुक, हस्त्यालुक, पिंडालुक, सतालुक और रक्तालुक । **काष्ठालूको हिं.** कठालू, **बं.** काठआलू यह कठोर होताहै–**शंखालूको हिं.** शंखालू, **बं.** शाँखआलू, यह सपेदी लिये होताहै । **हस्त्यालुक**–यह ऊंचाई युक्त बडाभारी होताहै । **पिंडालुक**–गोल होताहै । **सतालुक** मीठा रोमावलुक ऊंचा होताहै । **रक्तालुकको** रतालू अथवा रतडा कहतेहै । इसका लालरंग होताहै । **गुण** । सब जातिके आलू शीतल, विष्टंभी, मधुर, भारी, मलमूत्रको प्रगट कर्त्ता, रूक्ष, दुर्जर और रक्तपित्तको नाश करनेवालेहै । कफ, वादीको करे, बलकर्त्ता, वृष्य और किंचिन्मात्र अग्निको बढावेहैं ।

अरई.

रक्तालुभेदेयादीर्घातन्वीचपृथितालुकी ॥
आलुकीबलकृत्स्निग्धागुर्वीहृत्कफनाशिनी ॥
विष्टंभकारिणीतैलेतलितातिरुचिप्रदा ॥८५॥

अर्थ–रक्तालुका भेद आलुकीहै । यह कुछ लंबी और रक्तालूसे छोटी होतीहै, इसको आलुकी कहतेहैं । **हिं.** अरई, घुइयां, कहतेहैं । **गुण** । अरई-बलकारी, स्निग्ध, भारी, हृदयके कफको नाश करे, विष्टंभकर्त्ता, तेलमें तलकर जो बनाई गई वो अतिरुचि करे हैं ।

मूली–बडीमूली.

मूलकंद्विविधंप्रोक्तंतत्रैकंलघुमूलकम् ॥
शालमर्कटकंविस्रंशालेयंमरुसंभवम् ॥ ८६ ॥
चाणक्यमूलकंतीक्ष्णंतथामूलकपोतिका ॥
नेपालमूलकंचान्यच्चद्वंगजदंतवत् ॥ ८७ ॥
लघुमूलंकटूष्णंस्याद्रुच्यंलघुचपाचनम् ॥
दोषत्रयहरंस्वर्यंज्वरश्वासविनाशनम् ॥८८॥
नासिकाकंठरोगघ्ननयनामयनाशनम् ॥
महत्तदेवरूक्षोष्णंगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥
स्नेहसिद्धंतदेवस्यात्दोषत्रयविनाशनम् ८९

अर्थ–मूली दोप्रकारकी है एक छोटी, दूसरी बडी । तहां लघु मूलक, शालमर्कट, विस्र, शालेय, मरुसंभव, चाणक्यमूलक, तीक्ष्ण और मूलकपोतिका ए **छोटीमूलीके** संस्कृत नामहैं । **गु.** मूला, **क.** मूलंगी, **तै.** मुलिंगा, **फा.** तुब, **इं.** रेडीश । दूसरी जातिकी मूलीको **नेपालमूलक** कहतेहै इसकी आकृति हाथीदांतके समान होतीहै । **गुण । छोटीमूली**–कटु, उष्ण, रोचक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक और स्वरको शोधन करे । यह ज्वर, श्वास, नासिकारोग, कंठपीडा और नेत्ररोगको नाश करे । **बडीमूली** रूखी, गरम, भारी और त्रिदोष प्रगटकर्त्ता । यदि इसको तेल डालके बनावे तो त्रिदोषनाशक होतीहै ।

गाजर.

गाजरंगृंजनंप्रोक्तंतथानारंगवर्णकम् ॥
गाजरंमधुरंतीक्ष्णंतिक्तोष्णंदीपनंलघु ॥
संग्राहिरक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ९०

अर्थ-गाजर, गृंजन और नारंगवर्णक, हिं. गाजर, फा. जर्दक, अ. जजर, इं. क्यारटरूट। गुण। गाजर-मधुर, तीक्ष्ण, कडवी, गरम, अग्निवर्धक, हलकी और संग्राही। यह, रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी और वातकफको नाश करे।

केराकंद.

शीतलःकदलीकंदोबल्यःकेश्योम्लपित्तजित्
वह्निकृद्दाहहारीचमधुरोरुचिकारकः ॥ ९१ ॥

अर्थ-केलेका कंद शीतल, बलकारी, बालोंको हितकारी, अम्लपित्तनाशक, अग्निवर्द्धक, दाहनाशक, मधुर और रुचिको करे।

मानकंद.

मानकःस्यान्महापत्रःकथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥
मानकःशोथहृच्छीतःपित्तरक्तहरोलघुः ९२

अर्थ-मानक और महापत्र ए मानकंदके नामहै। गुण। सूजनको दूर करे, शीतल, रक्तपित्तको नष्ट करे और हलकाहै।

वाराहीकंद.

वाराहीपित्तलाबल्याकट्वीतिक्तारसायनी ॥
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥

अर्थ-वाराही कंदको हिं. गेंठी, [वाराहीकंदके ऊपर एक बडापत्ता होता है वो कालेसर्पके फणके समान दूरसें दीखेहै, इस कंदके चीरनेसें पीले रंगका दूध निकलताहै] गुण । वाराहीकंद-पित्तकर्त्ता, बलकारी, कटु, तिक्त, रसायन, आयु, शुक्र और अग्निको करे। तथा प्रमेह, कफ, कोढ और वादीको नष्ट करे।

महिषकंद.

शुभ्रालुर्महिषकंदोलुलायकंदश्चशुक्लकंदश्च
सर्पाख्योवनवासीविषकंदोनीलकंदोन्यः ॥
कटूष्णोमहिषोकंदःकफवातामयापहः ।
मुखजाड्यहरोरुच्योमहासिद्धिकरःसितः

अर्थ-शुभ्रालु, महिषकंद, लुलायकंद, शुक्लकंद, सर्पाख्य, वनवासी, विषकंद और नीलकंद ए महिषकंदके संस्कृत नामहै। हिं. भैंसाकंद, का. यम्मेगड्डे कहतेहैं। यह अनूप देशमें होताहै। गुण। महिषोकंद-कटु, उष्ण, कफवातके रोगोंको और मुखकी जडताको हरण करे, रुचकारी, महासिद्धिकर्त्ता और रंगमें सफेद होताहै।

कोलकंद.

कोलकंदःकृमिघ्नश्चपंजलोवज्रपंजलः ।
पुटालुःसुपुटश्चैवपुटकंदश्चसप्तधा ।
कोलकंदःकटुश्चोष्णःकृमिदोषविनाशनः
वांतिविच्छर्दिशमनोविषदोषनिवारकः ।

अर्थ-कोलकंद, कृमिघ्न, पंजल, वज्रपंजल, पुटालु, सुपुट और पुटकंद ए सात नामहै। हिं. सूकरकंद, का. संपुटगेड्डु, कहतेहैं । गुण । कोलकंद-कटु, उष्ण, कृमिदोषनाशक, वांति और दुष्टवांति (रद) को शमन करे, तथा विषदोष नाशकहै।

विष्णुकंद.

विष्णुकंदोविष्णुगुप्तःसुपुटोबहुसंपुटः ।
जलवासाबृहत्कंदोदीर्घवृत्तोहरिप्रियः ।
विष्णुकंदस्तुमधुरःशिशिरःपित्तनाशनः
दाहशोषहरोरुच्योसंतर्पणकरः परः ।

अर्थ-विष्णुकंद, विष्णुगुप्त, सुपुट, बहुसंपुट, जलवासा, बृहत्कंद, दीर्घवृत्त और हरिप्रिय, ए संस्कृत नामहै। यह कौंकण देशमें इसीनामसें प्रसिद्ध है। गुण। विष्णुकंद-मधुर, शिशिर, पित्तनाशक, दाह, सूजनको हरण करे, रुचिकारी और तृप्त करनेवाला है।

धरणीकंद.

धरणीधारणीयाचवीरपत्रीसुकंदकः ।
कंदालुर्वनकंदश्चकंदाद्योदंडकंदकः ।
मधुरोधरणीकंदःकफपित्तामयापहः ।
वक्त्रदोषप्रशमनःकुष्ठकंडूविनाशनः ।

अर्थ-धरणी, धारणी, वीरपत्री, सुकंद, कंदालु,

घनकंद, कंदाढ्य और दंडकंदक। यह धरनीकंदसे ही प्रसिद्ध है। का. नैलगड्डे कहतेहैं। गुण। धरणीकंद-मधुर कफपित्तकी व्याधियोंको नष्टकर्त्ता, मुखके दोषको शमन करे, तथा कोढ और खुजलीको दूर करेहै।

नाकुलीकंद.

नकुलीसर्पगंधाचसुगंधारक्तपत्रिका ।
ईश्वरीनागगंधाचाप्यहिभुक्स्वरसातथा ।
सर्पादनीव्यालगंधाज्ञेयाचेतिदशाह्वया ।
अन्यामहासुगंधाचसुवहागंधनाकुली ।
सर्पाक्षीफणिहंत्रीचनकुलाढ्याहिभुक्चसा ।
विषमर्दनिकाचाहिमर्द्दनीविषमर्द्दनी ।
महाहिगंधाहिलताज्ञेयास्याद्वादशाह्वया ।
नाकुलीयुगलंतिक्तंकटूष्णंचत्रिदोषजित् ।
अनेकविषविध्वंसीकिंचिच्छ्रेष्ठं द्वितीयकम्

अर्थ-नाकुली, सर्पगंधा, सुगंधा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगंधा, अहिभुक्, स्वरसा, सर्पादनी और व्यालगंधा, ए दश संस्कृत नाम, हिं. नकुलकंद, का. विषमुंगरी। एक दूसरा नाकुलीकंद और होताहै उसके महासुगंधा, सुवहा, गंधनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहंत्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहि-मर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगंधा और अहिलता, ए बारह नामहै। गुण। दोनों प्रकारके नकुलकंद-कडवे, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषोंको नष्ट करता, इनमें पहलेकी अपेक्षा दूसरा कुछ गुणोंमें श्रेष्ठ है।

चंडालकंद.

प्रोक्तश्चंडालकंदःस्यादेकपत्रोद्विपत्रकः ।
त्रिपत्रोथचतुःपत्रपंचपत्रश्चभेदतः ।
चंडालकंदोमधुरःकफपित्तास्रदोषजित् ।
विषभूतादिदोषघ्नोविज्ञेयश्चरसायनः ।

अर्थ-चंडालकंद, एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र और पंचपत्र, हिं. चंडालकंद, का. मादगेगड्डे, कहतेहै। गुण। चंडालकंद-मधुर, कफपित्त, रुधिरविकारको नष्ट करे। विष, भूतादि दोषोंका नष्ट करता और रसायन।

तैलकंद.

अथतैलकंदद्रकोद्रावक-
कंदस्तिलांकितःप्रोक्तः ।
दलश्चकेरवीकंदःसंज्ञोज्ञेय-
स्तिलचित्रपत्रकोवाणैः ।
लोहद्रावीतैलकंदःकटूष्णो
वातापस्मारहारीविषारिः ।
शोफघ्नःस्याद्बंधकारीरसस्य
द्रागेवासौदेहसिद्धिंविधत्ते ।

अर्थ-तैलकंदको द्रावककंद, तिलांकित, दलकंद, केरवीकंद, तिलचित्रपत्र कहतेहैं। गुण। लोहको द्रावक (पतला करनेवाला) कटु, उष्ण, वादीका अपस्मार, विषरोग और सूजन इनको नष्ट करे, पारेको बांधनेवाला, और तत्काल देहकी सिद्धिको करता है।

तिलकंद.

अश्वारिपत्रसंकाशोतिलबिंदुसमन्वितः
सस्निग्धाधस्थभूमिश्चतिलकंदोतिविस्तृतः
तिलकंदोविषच्छर्दिहरोभेदीरसायनः

अर्थ-कनेरके पत्रके समान पत्र और उनपर तिलके समान सपेद २ बूंद होतीहै। यह चिकनी और नीची जमीनमें प्रगट होताहै, इसको तिलकंद कहतेहै। गुण। तिलकंद-विष-वमनको हरण करे, दस्तावर और रसायन है।

हस्तिकर्ण.

गजकर्णातुतिक्तोष्णातथावातकफाञ्जयेत् ॥
शीतज्वरहरीस्वादुःपाकेतस्यास्तुकंदकः ९४
पांडुशोथकृमिप्लीहगुल्मानाहोदरापहः ॥
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नोवनसूरणकंदवत् ॥ ९५ ॥

अर्थ-हस्तिकर्ण कडवा, उष्ण, वातकफ, शीत-ज्वर, इनको जीते। पाकमें स्वादु, इसका कंद-पांडुरोग, सूजन, कृमि, प्लीह, गोला, अफरा, उदर, संग्रहणी, अर्शके विकार इनको वनसूरनके समान नष्ट करे। हस्तिकर्णको बं. लालकचू कहतेहै।

केमुक.

केमुकंकटुकंपाकेतिक्तंग्राहिहिमंलघु ॥
दीपनंपाचनंहृद्यंकफपित्तज्वरापहम् ॥
कुष्ठकासप्रमेहास्रनाशनंवातलंकटु ॥ ९६ ॥

अर्थ-केमुकको हिं. केउआँ, बं. केउमूल, म.

कोबी, फा. कलाम, इं. केबेज। गुण। केमुक पाकमें कटु, तिक्त, ग्राही, शीतल, हलका, दीपन, पाचन, हृद्य, कफ, पित्त, ज्वर, कोढ, खांसी, प्रमेह और रुधिरके विकारोंको नाश करे। वातकर्त्ता और चरपरा है।

कसेरु.

कसेरुद्विविधंतत्तुमहद्राजकसेरुकम् ॥
मुस्ताकृतिर्लघुस्याद्यत्तच्चिचोढमितिस्मृतम् ॥
कसेरुकद्वयंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ॥
पित्तशोणितदाहघ्नंनयनामयनाशनम् ॥ ९८॥
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरंस्मृतम्॥

अर्थ–कसेरु, चिचोड, बं. केसुर। म. कचरा, तै. इहिकोति, फा. सेकिनगडे, ला. स्क्रिपसकैसूर। कसेरू दोप्रकारका है। जेसे, राजकसेरू, और चिचोड। ए कसेरूके नाम, बृहत्कसेरूको राजकसेरू कहते हैं। और जिसका आकार मोथाके समान हो और हलका होवे उसका नाम चिचोड है। गुण। दोनों कसेरु-शीतल, मधुर, कषेले, भारी, ग्राही, शुक्रोत्पादक, वातकफकारक, रोचक और स्तनोंमें दूध प्रगट कर्त्ता। ये रक्तपित्त, दाह और नेत्ररोगको नष्ट करे।

सेरुकी. मर्सोडा.

पद्मादिकंदःशालूकंकरहाटश्चकथ्यते ॥
मृणालमूलंभिस्सांडंजलालूकंचकथ्यते ९९
शालूकंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रनुद्गुरु ॥
दुर्जरंस्वादुपाकंचस्तन्यानिलकफप्रदम् ॥
संग्राहिमधुरंरूक्षंभिस्सांडमपितद्गुणम् ॥
बालंह्यनार्त्तवंजीर्णंव्याधितंकृमिभक्षितम् ॥
कंदंविवर्जयेत्सर्वंयद्वाऽग्न्यादिविदूषितम् ॥
अतिजीर्णमकालोत्थंरूक्षंसिद्धमदेशजम् ॥
कर्कशंकोमलंचातिशीतव्यालादिदूषितम् ॥
संशुष्कंसकलंशाकंनाश्नीयान्मूलकंविना ॥

अर्थ–कमल आदिके कंदको, शालूक और करहाट कहतेहैं। मृणालकी मूलको भिस्सांड और जलालू कहतेहैं। गुण। मृणाल-शीतल, वृष्य, पैत्तिक, दाह इनको निवारण करे। रुधिरदोषनाशक, भारी, दुर्जर, स्वादुपाकी, स्तनोंमें दुग्धोत्पादक, वातकर्त्ता, कफवर्द्धक, संग्राही, मधुर और रूक्ष। मृणालकी जड़मेंभी ऐसेही गुण हैं। वर्जित। अत्यंत कोमल, विनासमयके प्रगट हुआ पुराना, व्याधित, कीट (चेंटी, गिमार, दीमक) आदिका खाया हुआ, और आगसें पजरा हुआ और पवनने सुखाया ऐसा मृणाल (कमलकी नीचेकी डंडी) भक्षण-रोगी मनुष्यको वर्जित है। अत्यंत पुराना, अकालोत्पन्न, रूक्षसिद्ध (जो तेल डालकें सिद्ध न करा हो) दुष्ट स्थानमें प्रगट हुआ हो, कठोर, अतिकोमल, शरदीका मारा, व्यालादि (सर्पादि) करके दूषित ऐसें सागोंका खाना निषेध है। एक मूलीके विना और दूसरे साग सूखे हूए भक्षण नहीं करना। परंतु सूखी मूली गुणदायक होती है। परंतु श्रावक लोग सब कंदोंको सुखायके खातेहै, और अन्य मनुष्यभी सूखा साग खातेहै, यह वैद्यशास्त्रसें अनुचित हैं।

संस्वेदज शाक.

उक्तंसंस्वेदजंशाकंभूमिछत्रंशिलींध्रकाम् ॥
क्षितिगोमयकाष्ठेषुवृक्षादिषुतदुद्भवेत् ॥
सर्वेसंस्वेदजाःशीतादोषलाःपिच्छिलाश्चते
गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ ५ ॥
श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसंभवाः ॥
नातिदोषकरास्तेस्युःशेषास्तेभ्योविगर्हिताः

अर्थ–संस्वेदज, शाकको हिं. सांपकी छत्री, छतोना, बं. कोडकछाता, व्यांगेरछाता, म. अलंबी, भूंइफोड, इं. मशरुम, ला. फंगाई, इसको संस्कृतमें भूमिछत्र और शिलींध्रक कहतेहैं। यह मृत्तिका, गोबर, लकडी और वृक्षादिकसें प्रगट होताहै। गुण। संपूर्ण संस्वेदज शाकमात्र शीतल, दोषकारक, पिच्छल, और भारी, खानेसें वमन, अतिसार, ज्वर, और कफके रोगोंको प्रगट करे। ए सब छाता सपेद-रंगके हैं और जिनके स्थान-काठ, वांस, तथा गौके चरनेकी ठौर है वो अधिक दोषकर्त्ता नहीं है। बाकीके जो काले रंगके और दुष्ट स्थानमें प्रगट होते हैं वो त्याज्य है।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ शाकवर्गः ॥

मांसवर्ग.

मांसंतुपिशितंक्रव्यमामिषंपललंपलम् ।
मांसंवातहरंसर्वंबृंहणंबलपुष्टिकृत् ॥
प्रीणनंगुरुहृद्यंचमधुरंरसपाकयोः ॥ १ ॥

अर्थ-मांसके नाम । मांस, पिशित, क्रव्य, आमिष, पलल, और पल ए मांसके संस्कृत नाम हैं । गुण । सर्व मांस वात हरणकर्त्ता, बृंहण, बल और पुष्टिकारक, प्रीणन (तृप्तिकर्त्ता) भारी, हृदयको प्रिय, और रस तथा पाकमें मधुर है ।

मांसके भेद.

मांसवर्गोद्विधाज्ञेयोजांगलाऽनूपभेदतः ॥

अर्थ-संपूर्ण मांस दोप्रकारका है जांगल और अनूप ।

जांगल.

मांसवर्गोऽत्रजंघालाबिलस्थाश्चगुहाशयाः २
तथापर्णमृगाज्ञेयाविकिराःप्रतुदोऽपिच ॥
प्रसहाअथचग्राम्याअष्टौजांगलजातयः ॥ ३ ॥
जांगलामधुरारूक्षास्तुवरालघवस्तथा ॥
बल्यास्तेबृंहणावृष्यादीपनादोषहारिणः ॥४॥
मूकतांमिन्मिनत्वंचगद्गदत्वार्दिते तथा ॥
बाधिर्यमरुचिच्छर्दिप्रमेहमुखजान्गदान् ॥
श्लीपदंगलगंडंचनाशयत्यनिलामयान् ॥ ५ ॥

अर्थ-जांगलके जीवोंकी जाति आठ प्रकारकी है, जैसे-जांगल, बिलस्थ, गुहाशय, पर्णमृग, विष्किर, प्रतुद, प्रसह और ग्राम्य । गुण । जांगलमांस-मधुर, रूक्ष, कषेला, हलका, बलकारक, पुष्टिकारक, वीर्यप्रगटकर्त्ता, अग्निवर्द्धक, और दोषनाशक । जांगलमांसके सेवन करनेसें गूगापना, नाकमें बोलना, गद्गद (हकलायके बोलना), लकवा (वातकारोग), बैहरापना, अरुचि, वमन, प्रमेहरोग, मुखरोग, श्लीपद, गलगंड, और वातव्याधिको निवारण करे ।

आनूप.

कूलेचराःप्लवाश्चापिकोशस्थाःपादिनस्तथा ॥
मत्स्याएतेसमाख्याताःपंचधाऽनूपजातयः ६
अनूपामधुराःस्निग्धागुरवोवह्निसादनाः ॥
श्लेष्मलाःपिच्छलाश्चापिमांसपुष्टिप्रदाभृशम्
तथाभिष्यंदिनस्तेहिप्रायःपथ्यतमाःस्मृताः ॥

अर्थ-कूलेचर, प्लव, कोशस्थ, पादी और मत्स्य, ए पांचप्रकारकी अनूपजाति है । गुण । अनूपमांस-मधुर, स्निग्ध, भारी, अग्निमांद्यकर, कफजनक, पिच्छल, अत्यंत मांसवर्द्धक, अति पुष्टिकारक, अभिष्यंदी और प्रायः पथ्यतम है ।

जघाल.

हरिणैणकुरंगर्ष्यपृषतन्यंकुशंबराः ॥ ८ ॥
राजीवोऽपिचमुंडीचेत्याद्याजंघालसंज्ञकाः ॥
हरिणस्ताम्रवर्णःस्यादेणःकृष्णःप्रकीर्तितः ॥
कुरंगईषत्ताम्रःस्यादेणतुल्याकृतिर्महान् ॥९॥
ऋष्योनीलांगकोलोकेसरोझइतिकीर्तितः ॥
पृषतश्चंद्रबिंदुःस्याद्धरिणात्किंचिदल्पकः ॥
न्यंकुर्बहुविषाणोऽथशबरोगवयोमहान् ॥
राजीवस्तुमृगोज्ञेयोराजिभिःपरितोवृतः ११
योमृगःशृंगहीनःस्यात्समुंडीतिनिगद्यते ॥
जंघालाःप्रायशःसर्वेपित्तश्लेष्महराःस्मृताः ॥
किंचिद्वातकराश्चापिलघवोबलवर्द्धनाः ॥ १२

अर्थ-हरिण, एण, कुरंग, ऋष्य, पृषत, न्यंकु, शंबर, राजीव और मुंडी इत्यादि जीवोंको जंघाल कहतेहैं । हरिणका लालरंग होताहै, एण कालेरंगका हरण, कुरंग किंचित् लालरंगका और बडा इसकी आकृति एण (कालेहिरण)के समान होतीहै, ऋष्य इसका दूसरा नाम नीलांगक, इसको लोकमें रोज कहतेहैं । पृषत यह हिरणकी अपेक्षा कुछ छोटा होताहै, इसका दूसरा नाम चंद्रबिंदु, न्यंकु (बारहसिंगा) । संबर यह रोजके समान होताहै । राजीवमृगके देहपर रेखा होतीहैं । एवं मुंडीमृग सींगरहित होताहै । ए जंघालजीव हैं । गुण । इनका मांस-प्रायः पित्तकफनाशक, किंचित् वायुवर्द्धक, हलका और बलकारक जानना ।

बिलेशय.

गोधाशशभुजंगाखुशल्लक्याद्याबिलेशयाः ॥
बिलेशयावातहरामधुरारसपाकयोः ॥
बृंहणाबद्धविण्मूत्रावीर्योष्णाश्चप्रकीर्तिताः ॥

अर्थ-गोधा (गोह), शश (ससा, खरगोश), सांप, मूंसा (चूहा) सेह इत्यादि **बिलेशय** अर्थात् **बिलमें रहनेवाले** जीवहैं । **गुण** । बिलेशयजीवोंका मांस-वातहरणकर्त्ता, रस और पाकमें मधुर, बृंहण, मलमूत्ररोधक, और उष्णवीर्य है ।

गुहाशय.

सिंहव्याघ्रवृकाऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा ॥ १४
बभ्रुजंबूकमार्जाराइत्याद्याःस्युर्गुहाशयाः ॥
गुहाशयावातहरागुरूष्णामधुराश्चते ॥ १५ ॥
स्निग्धाबल्याहितानित्यंनेत्रगुह्यविकारिणाम्

अर्थ-सिंह, (सेर), व्याघ्र, (बघेरा), वृक (लिंरिया, भिडहा), रीछ, तरक्षु (जरख), द्वीपि (चीता), बभ्रु (मोटीपूंछ और लाल नेत्रका जैसानोला), जंबुक, (स्यार, सिरकटा, गीदड), और मार्जार (बिलाव) इत्यादिक जीव **गुहाशय** (गुंफामें रहनेवाले) जानने। **गुण** । गुहाशय जीवोंका मांस वातहरणकर्त्ता, भारी, गरम, मधुर, स्निध, बलकारी, एवं नेत्ररोगी और गुदाके रोगवालोंको अत्यंत गुणदायक है ।

पर्णमृग.

वनौकावृक्षमार्जारोवृक्षमर्कटिकादयः ॥
एतेपर्णमृगाप्रोक्ताःसुश्रुताद्यैर्महर्षिभिः ॥ १६
स्मृताःपर्णमृगावृष्याश्चक्षुस्याःशोषिणोहि-
ताः॥श्वासार्शःकासशमनाःसृष्टमूत्रपुरीषकाः

अर्थ-वानर, वनबिलाव, और वृक्षमर्कटी (रूवी) इत्यादिक सुश्रुतादि महर्षियोंने **पर्णमृग** कहेहैं । **गुण** । पर्णमृगोंका मांस-वृष्य, नेत्रोंको हित, शोषरोगवालोंको हितकारी । श्वास, बवासीर और खांसीको नष्ट करे । तथा मलमूत्रको निकालते हैं ।

विष्किर.

वर्तकालाववर्त्तीरकपिंजलकतित्तिराः ॥
कुलिंगकुक्कुटाद्याश्चविष्किराःसमुदाहृताः ॥
विकीर्यभक्षयंत्येतेयस्मात्तस्माद्विविष्किराः
कपिंजलइतिप्राज्ञैःकथितोगौरतित्तिरिः १९
विष्किरामधुराःशीताःकषायाःकटुपाकिनः
बल्यावृष्यास्त्रिदोषघ्नाःपथ्यास्तेलघवःस्मृताः

अर्थ-वर्त्तक (चित्र विचित्र रंगके पांखोंकी चिडिया), लवा, बटेर, सपेद तीतर, साधारण तीतर, घरका चिडा और मुरगा इत्यादि **विष्करजातिके** पक्षीहैं । अन्नको बिखेरके जो खातेहैं इसीसें इनकी **विष्करसंज्ञा** है । **गुण** । विष्कर पक्षियोंका मांस-मधुर शीतल, कषेला, कटुपाकी, बलकर्त्ता, वृष्य, त्रिदोषनाशक, पथ्य और हलका हैं ।

प्रतुद.

हारीतोधवलःपांडुश्चित्रपक्षोबृहच्छुकः २०
पारावतःखंजरीटःपिकाद्याःप्रतुदाःस्मृताः ॥
प्रतुद्यभक्षयंत्येतेतुंडेनप्रतुदास्ततः ॥ २१ ॥
प्रतुदामधुराःपित्तकफघ्नास्तुवराहिमाः ॥
लघवोबद्धवर्चस्काःकिंचिद्वातकराःस्मृताः॥

अर्थ-हरियल, पिंडुकिया, चित्रपक्ष (तोतेका भेद), बडा तोता (कठफोरा), कबूतर, खंजन, और कोयल इत्यादि **प्रतुद** पक्षीहैं । खानेके पदार्थको चोंचसे तोडकर खानेसें इनकी **प्रतुदसंज्ञा** है । **गुण** । प्रतुदपक्षी, मधुर, पित्तकफनाशक, शीतल, हलके, मलको बांधनेवाले, और किंचित् वादीको करतेहैं ।

प्रसह.

काकोगृध्रउलूकश्चचिल्लश्चशशघातकः ॥
चाषोभासश्चकुररइत्याद्याःप्रसहाःस्मृताः ॥
प्रसहाःकीर्त्तिताएते प्रसह्याच्छिद्यभक्षणात्
प्रसहाःखलुवीर्योष्णास्तन्मांसंभक्षयंतिये ॥
तेशोषभस्मकोन्मादशुक्रक्षीणाभवंतिहि ॥२४

अर्थ-कौआ, गीध, उल्लू, चील, बाज, वा शिकरा, वा कुई, चाष (टेकनास), भाष (सपेदचील), कुरर (कुरंकुर) इत्यादि पक्षी **प्रसहजातिके** हैं । ए दूसरेसें छीनकें खातेहैं इसीसे इनको **प्रसह** कहतेहैं । **गुण** । प्रसह पक्षियोंका मांस उष्णवीर्यहै, इसी कारण जो इनके मांसको भक्षण करतेहैं वो शोष, भस्मक, उन्माद और शुक्रक्षीण होतेहैं ।

ग्राम्य.

छागमेषवृषाश्चाश्वाग्राम्याःप्रोक्तामहर्षिभिः
ग्राम्यावातहराःसर्वेदीपनाःकफपित्तलाः ॥
मधुरारसपाकाभ्यांबृंहणाबलवर्द्धनाः ॥२५॥

अर्थ-बकरी, मेंढा, बैल, घोडा, इत्यादि जीव ग्राम्यहैं । गामोंमें रहनेसेंही इनकी ग्राम्यसंज्ञा है । गुण । सब ग्राम्यजीवोंका मांस-वातहरणकर्त्ता, दीपन, कफपित्तवर्द्धक, रस और पाकमें मधुर, बृंहण और बलको बढानेवाला है ।

कूलेचर.

तुलायगंडवाराहचमरीवारणादयः ॥
एतेकूलचराःप्रोक्तायतःकूलेचरंत्यपाम् ॥२६
कूलेचरामरुत्पित्तहरावृष्याबलावहाः ॥
मधुराःशीतलाःस्निग्धामूत्रलाःश्लेष्मवर्द्धनाः

अर्थ-भैसा, गैंडा, सूअर, सुरेगौ (चमरपुच्छवालीगौ) और हाथी, इत्यादि कूलेचर (जलकिनारे रहनेवाले) जीवहैं । गुण । कूलेचर जीवोंका मांस-वातपित्त हरण करे, वृष्य, बलकारी, मधुर, शीतल, स्निग्ध, मूत्रलानेवाला, कफवर्द्धक है ।

प्लव.

हंससारसकारण्डबककौंचशरारिकाः ॥
नंदीमुखीसकादंबाबलाकाद्याःप्लवाःस्मृताः ॥
प्लवंतिसलिलेयस्मादेतेतस्मात्प्लवाःस्मृताः ॥
प्लवाःपित्तहराःस्निग्धामधुरागुरवोहिमाः ॥
वातश्लेष्मप्रदाश्चापिबलशुक्रकराःसराः ॥२९

अर्थ-हंस, सारस, चकवा, बगला, क्रौंच (ढेंक), शरारि, (बागलेका भेद सिंधु) नंदीमुख, कलहंस, (बतक) और बलाका आदि पक्षियोंको प्लव कहतेहै । जलमें तैरनेसें इनकी प्लवसंज्ञाहै । गुण । प्लवपक्षियोंका मांस-पित्तहरणकर्त्ता, चिकना, मधुर, भारी, शीतल, वातकफ कर्त्ता, बल और शुक्र करताहै ।

कोशस्थ.

शंखःशंखनखश्चापिशुक्तिशंबूककर्कटाः ॥
जीवाएवंविधाश्चान्येकोशस्थाःपरिकीर्त्तिताः
कोशस्थामधुराःस्निग्धावातपित्तहराहिमाः ॥
बृंहणाबहुवर्चस्कावृष्याश्चबलवर्द्धनाः ॥३१॥

अर्थ-शंख, छोटाशंख, सीप, शंबूक (जलकी छोटी सीप), केकडा, इत्यादि जीवोंको कोशस्थ कहतेहैं । गुण । कोशस्थ जीवोंका मांस मधुर, स्निग्ध, वातपित्तहरण कर्त्ता, शीतल, बृंहण, बहुत मलकर्त्ता, वृष्य और बलवर्द्धकहै ।

पादिन.

कुंभीरकूर्मनक्राश्चगोधामकरशंकवः ॥
घंटिकःशिशुमारश्चेत्यादयःपादिनःस्मृताः ॥
पादिनोऽपिचएतेतुकोशस्थानांगुणैःसमाः ॥

अर्थ-कुंभीर (मारक), कछुवा, नाक, गोह, मगर, शंकु, (साकुच), घडियाल और सूंस इत्यादि पादिनजीव कहातेहैं । गुण । पादिन जीवोंका मांस-कोशस्थ जीवोंके समान है ।

मछली.

मत्स्योमीनोविकारश्चझषोवैसारिणोऽण्डजः
शकुलीपृथुरोमाचससुदर्शनइत्यपि ॥ ३३ ॥
रोहिताद्यास्तुयेजीवास्तेमत्स्याःपरिकीर्त्तिताः
मत्स्याःस्निग्धोष्णमधुरागुरवःकफपित्तलाः ॥
वातघ्नाबृंहणावृष्यारोचकाबलवर्द्धनाः ॥
मद्यव्यवायसक्तानांदीप्ताग्नीनांचपूजिताः ३५

अर्थ-मत्स्य, मीन, विकार, झष, वैसारिण, अंडज, शकुली, पृथुरोमा, सुदर्शन और रोहित आदि जो जीवहै सब मछलियोंकेही भेद है । गुण । मछली-स्निग्ध गरम, मधुर, भारी, कफपित्तकर्त्ता, वातनाशक, बृंहण, वृष्य, रोचक, बलवर्द्धक । जो मद्यपीनेवाले, मैथुनकर्त्ता (कामी) और जिनकी अग्नि दीप्तहै उनको हितकर्त्ता जाननी । इसप्रकार प्रथम गणोंको कहकर अब उन गणोंके बहुतसे जीवोंके नाम गुण पृथक् २ कहतेहैं. तहां प्रथम जंघाल जीवोंमें हरिणके गुण ।

हरिणःशीतलोबद्धविण्मूत्रोदीपनोलघुः ॥
रसेपाकेचमधुरःसुगंधिःसन्निपातहा ॥ ३६ ॥

अर्थ-हरिणका मांस-शीतल, मलमूत्रको रोकनेवाला, दीपन, हलका, रस और पाकमें मधुर, सुगंधित और सन्निपातको नष्ट करे ।

काला हरिण.

एणःकषायोमधुरःपित्तास्रकफवातहृत् ॥
संग्राहीरोचनोबल्योज्वरप्रशमनःस्मृतः ३७

अर्थ-कालेहरिणका मांस-कषेला, मधुर, पित्त,

रुधिर, कफ और वातको नष्ट करै। संग्राही, रुचिकर्त्ता, बलकर्त्ता और ज्वरको नष्ट करैहै।

कुरंग.

कुरंगोबृंहणोबल्यःशीतलःपित्तहृद्गुरुः॥
मधुरोवातहृद्ग्राहीकिंचित्कफकरःस्मृतः॥

अर्थ-कुरंगहिरणका मांस-बृंहण, बलकारी, शीतल, पित्तहरणकर्त्ता, भारी, मधुर, वातनाशक, ग्राही और किंचिन्मात्र कफ करैहै।

रोज.

ऋष्योनीलांडकश्चापिगवयोरोझइत्यपि॥
गवयंमधुरोबल्यःस्निग्धोष्णःकफपित्तलः॥

अर्थ-ऋष्य, नीलांडक, गवय और रोझ ए रोजके नामहै। रोजका मांस-मधुर, बलकारी, स्निग्ध, गरम और कफपित्तकर्त्ता।

चित्तल.

पृषतस्तुभवेत्स्वादुर्ग्राहकःशीतलोलघुः॥
दीपनोरोचनःश्वासज्वरदोषत्रयास्रजित् ४०

अर्थ-पृषत अर्थात् बिंदुवाला हिरणका मांस-स्वादु, ग्राही, शीतल, हलका, दीपन, रोचन, श्वास, ज्वर, त्रिदोष और रुधिरविकारोंको दूर करै।

बारहसींगा.

न्यंकुःस्वादुर्लघुर्बल्योवृष्योदोषत्रयापहः॥

अर्थ-बारहसींगाका मांस-स्वादिष्ट, हलका, बलकारी, वृष्य और त्रिदोषनाशक।

साबर.

साबरंपललंस्निग्धंशीतलंगुरुचस्मृतम्॥४१॥
रसेपाकेचमधुरंकफदंरक्तपित्तहृत्॥
राजीवस्तुगुणैर्ज्ञेयःपृषतेनसमोजनैः॥

अर्थ-साबरका मांस-स्निग्ध, शीतल, भारी, रस और पाकमें मधुर, कफकारी, रक्तपित्तनाशक। राजीवहिरणके मांसमें-चित्तल हिरणके मांस समान-गुण जानने।

पाढी.

मुंडीतुज्वरकासास्रक्षयश्वासापहोहिमः ४२

अर्थ-सींगरहित हिरणका मांस-ज्वर, खांसी रुधिरविकार, क्षय और श्वासको नष्ट करै और शीतल है। अब बिलेशयोंको कहतेहै।

शश.

लंबकर्णःशशःशूलीलोमकर्णोबिलेशयः॥
शशःशीतोलघुर्ग्राहीरूक्षःस्वादुःसदाहितः॥
वह्निकृत्कफपित्तघ्नोवातसाधारणःस्मृतः॥
ज्वरातीसारशोषास्रश्वासामयहरश्चसः ४४

अर्थ-लंबकर्ण, शश, शूली, लोमकर्ण और बिलेशय, ए संस्कृतनामहै। ससे (खरगोश) का मांस शीतल, हलका, ग्राही, रूखा, स्वादु, सदैव हितकर्त्ता, अग्निकारक, कफपित्तनाशक और साधारण वातकर्त्ता। ज्वर, अतिसार, शोष, रुधिरविकार और श्वास हरण कर्त्ताहै।

सेह.

सेधातुशल्यकःश्वावित्कथ्यंतेतद्गुणाअथ॥
शल्यकःश्वासकासास्रशोषदोषत्रयापहः ४५

अर्थ-सेधा, शल्यक और श्वावित् ए सेहके नामहै। गुण। सेहकामांस-श्वास, खांसी, रुधिरविकार, शोष और त्रिदोष हरण कर्त्ताहै।

पक्षी.

पक्षीखगोविहंगश्चविहगश्चविहंगमः॥
शकुनिर्विःपतत्रीचविष्किरोविकिरोऽण्डजः
धान्यांकुरचरायेऽत्रतेषांमांसंलघूत्तमम्॥
आनूपंबलकृन्मांसंस्निग्धंगुरुतरंस्मृतम्॥४७॥

अर्थ-पक्षी, खग, विहंग, विहग, विहंगम, शकुनि, वि, पतत्री, विष्कर, विष्किर और अंडज। पक्षियोंमें जो धान और अंकुरको भक्षण करतेहैं उनका मांस हलका है। जलसंचारी पक्षियोंका मांस बलकारी, स्निग्ध और अत्यंत भारीहै।

विष्करोंमें बटेर.

वर्त्तीकोवर्त्तकश्चित्रस्ततोऽन्यावर्तकाःस्मृताः
वर्त्तकोऽग्निकरःशीतोज्वरदोषत्रयापहः॥
सुरुच्यःशुक्रदोबल्योवर्त्तकाल्पगुणास्ततः॥

अर्थ-वर्त्तीक, वर्त्तक, चित्र और दूसरी जातिकी

वर्त्तका कहतेहैं । बटेरका मांस-अग्निकारी, शीतल, ज्वर, त्रिदोषनाशक, रुचिकारी, शुक्रकर्त्ता, बलदाता और वर्त्तकके मांसमें बटेरके मांससें कुछ हीन गुणहैं ।

लवा.

लावाविष्किरवर्गेषुतेचतुर्धामताबुधैः ॥
पांशुलोगौरकोऽन्यस्तुपौंड्रकोदरभरस्तथा ॥
लावावह्निकराःस्निग्धागरघ्नाग्राहिकाहिता
पांशुलःश्लेष्मलस्तेषुवीर्योष्णोनिलनाशनः ५०
गौरोलघुतरोरूक्षोवह्निकारीत्रिदोषजित् ॥
पौंड्रकःपित्तकृत्किंचिल्लघुर्वातकफापहः ॥
दर्भरोरक्तपित्तघ्नोहृदामयहरोहिमः ॥ ५१ ॥

अर्थ-विष्कर वर्गमें लवाभी हैं वो चारप्रकारके है । पांशुल, गौरक, पौंड्रक और दरभर । गुण । लवा, अग्निकर्त्ता, स्निग्ध, विषनाशक, ग्राही, हितकारी । इनमें पांशुलजातिके लवा कफकर्त्ता, वीर्यकर्त्ता, वातनाशक है । गौर जातिके हलके, रूक्ष, अग्निकारी, त्रिदोषनाशक हैं । पौंड्रक, पित्तकर्त्ता, कुछ हलके, वात और कफहरण कर्त्ताहै । दरभर, रक्तपित्तनाशक, हृदयरोग हरणकर्त्ता और शीतलहैं ।

बगेरा,

वालीकोवर्त्तिचटकोवार्तीकश्चैवसस्मृतः ॥
वालीकोमधुरःशीतोरूक्षश्चकफपित्तनुत् ॥

अर्थ-वालीक, वर्त्तिचटक, और वार्त्तिक ए संस्कृत नामहै । बगेरेका मांस-मधुर, शीतल, रूक्ष, और कफपित्तनाशक ।

कालातीतर और सपेदतीतर.

तित्तिरिःकृष्णवर्णःस्याच्चित्रोऽन्योगौरति-
त्तिरिः ॥
तित्तिरिर्बलदोग्राहीहिक्कादोषत्रयापहः ॥
श्वासकासज्वरहरस्तस्माद्गौराधिकोगुणैः ॥

अर्थ-तीतर कालेरंगका होताहै, और गौर तित्तर चित्रविचित्र रंगका होताहै । तीतरका मांस बलदाता, ग्राही, हिचकी, त्रिदोषका नाशक है । श्वास, खांसी, ज्वरके हरण करनेसें सपेद तीतरका मांस गुणोंमें अधिक है ।

गवरैया. चिडा.

चटकःकलविंकःस्यात्कुलिंगःकालकंटकः ।
कुलिंगःशीतलःस्निग्धःस्वादुःशुक्रकफप्रदः
सन्निपातहरोवेश्मचटकश्चातिशुक्रलः ॥५४॥

अर्थ-चटक, कलविंक, कुलिंग और कालकंटक ए संस्कृत । चिडाका मांस-शीतल, स्निग्ध, स्वादु, शुक्र और कफकर्त्ता, सन्निपातनाशक, इसीप्रकार घरका चिडा अत्यंत शुक्रकर्त्ताहै ।

मुरगा. वनमुरगा.

कुक्कुटःकृकवाकुःस्यात्कालाज्ञश्चरणायुधः ॥
ताम्रचूडस्तथादक्षोप्रातर्नादीशिखंडिकः ५५
कुक्कुटोबृंहणःस्निग्धोवीर्योष्णोऽनिलहृत्-
गुरुः ॥
चक्षुष्यःशुक्रकफकृत्बल्योवृष्यःकषायकः
आरण्यकुक्कुटःस्निग्धोबृंहणःश्लेष्मलोगुरुः ॥
वातपित्तक्षयवमिविषमज्वरनाशनः ॥ ५७ ॥

अर्थ-कुक्कुट, कृकवाकु, कालज्ञ, चरणायुध, ताम्रचूड, दक्ष, प्रातर्नादी और शिखंडक, ए संस्कृत नामहै । गुण । मुरगेका मांस-बृहण, स्निग्ध, उष्णवीर्य, वातनाशक, भारी, नेत्रोंको हितकारी, शुक्र और कफकर्त्ता, बलदायक, वृष्य और कषेला है । वनके मुरगेका मांस-स्निग्ध, बृंहण, कफकारी, भारी, वातपित्त, क्षय, वमन और विषमज्वर इनको नष्ट करे ।

प्रतुदोंमें हरियल.

हारीतोरक्तपित्तःस्याद्धरितोऽपिसकथ्यते ॥
हारीतोरूक्षउष्णश्चरक्तपित्तकफापहः ॥
स्वेदस्वरकरःप्रोक्तईषद्वातकरश्चसः ॥ ५८ ॥

अर्थ-हारीत, रक्तपित्त, और हरित ए हरियलके नामहैं । हरियलका मांस-रूक्ष, गरम, रक्तपित्त और कफका नाशक, स्वेदकर्त्ता, स्वरको सुधारनेवाला, और किंचिन्मात्र वादी करे ।

पांडु. धवलपांडु.

पांडुस्तुद्विविधोज्ञेयश्चित्रपक्षःकलध्वनिः ॥
द्वितीयोधवलःप्रोक्तःसकपोतःस्फुटस्वनः ॥

चित्रपक्षःकफहरोवातघ्नोग्रहणीप्रणुत् ॥
धवलःपांडुरश्चिश्लोरक्तपित्तहरोहिमः ॥ ६० ॥

अर्थ-पांडु अर्थात् पिंडुकिया दोप्रकारकी होती है। एक चित्रविचित्र पांख और मीठी आवाजसें बोलनेवाली, दूसरी सपेदरंगकी उसको कपोत कहतेहैं। और उसकी आवाज खुलासा होतीहै। तहां चित्रपक्षको पित्तरोवा कहतेहैं, इसका मांस-कफहर, वातनाशक, संग्रहणीनाशक। धवल (कपोत) का मांस- शीतल और रक्तपित्तको हरण करेहै।

मोर.

मयूरश्चंद्रकीकेकीमेघरावीभुजंगभुक् ॥
शिखीशिखावलोवर्हीशिखंडीनीलकंठकः ॥
शुक्लोपांगःकलापीचमेघनादानुलास्यपि ॥
रसेपाकेचमधुरःसंग्राहीवातशांतिकृत् ६२

अर्थ-मयूर, चंद्रकी, केकी, मेघरावी, भुजंगभुक्, शिखी, शिखावल, वर्ही, शिखंडी, नीलकंठक, शुक्लोपांग, कलापी, मेघनादानुलासी, ए संस्कृत नाम। हिं. मोर, मुरैला। गुण। मोरका मांस-रस, और पाकमें मधुर, ग्राही, और वातनाशक।

कबूतर, परेवा.

पारावतःकलरवःकपोतोरक्तवर्धनः ॥
पारावतोगुरुःस्निग्धोरक्तपित्तानिलापहः ॥
संग्राहीशीतलस्तज्ज्ञैःकथितोवीर्यवर्धनः ६३

अर्थ-पारावत, कलरव, कपोत और रक्तवर्द्धन, ए सं.। हिं. कबूतर, परेवा। गुण। कबूतरका मांस- भारी, स्निग्ध, रक्तपित्त,और वातको नष्ट करे। ग्राही, शीतल, और वीर्यका बढानेवाला है।

पक्षियोंके अंडे.

नातिस्निग्धानिवृष्याणिस्वादुपाकरसानिच
वातघ्नान्यतिशुक्राणिगुरूण्यंडानिपक्षिणाम्॥

अर्थ-पक्षियोंके अंडोंको सं. डिम्ब कहतेहैं। ये अधिक स्निग्ध नहींहै। पाकमें मिष्टरस, वृष्य, वातनाशक, अत्यंत शुक्रकर्त्ता, और भारी हैं।

ग्राम्योंमें. बकरी.

छागछोवर्करश्छागोबस्तोऽजःछेलकःस्तुभः
अजाछागीस्तुभाचापिछेलिकाचगलस्तनी ॥
छागमांसंलघुस्निग्धंस्वादुपाकंत्रिदोषनुत् ॥
नातिशीतमदाहिस्यात्स्वादुपीनसनाशनम्
परंबलकरंरुच्यंबृंहणंवीर्यवर्धनम् ॥
अजायाअप्रसूतायामांसंपीनसनाशनम् ६७
शुष्ककासेऽरुचौशोषेहितमग्नेश्चदीपनम् ॥
अजासुतस्यबालस्यमांसंलघुतरंस्मृतम् ६८
हृद्यंज्वरहरंश्रेष्ठंसुखदंबलदंभृशम् ॥
मांसंनिष्कषसितांडस्यछागस्यकफकृद्गुरु ६९
स्रोतःशुद्धिकरंबल्यंमांसदंवातपित्तनुत् ॥
वृद्धस्यचातलंरूक्षंतथाव्याधिमृतस्यच ॥
ऊर्ध्वजत्रुविकारघ्नंछागमुण्डंरुचिप्रदं ॥ ७० ॥

अर्थ-छागल, वर्कर, छाग, वस्त, अज, छेलक, स्तुभ, अजा, छागी, स्तुभा, छेलिका, और गलस्तनी। गुण। बकरेका मांस- हलका, स्निग्ध, स्वादुपाकी, त्रिदोषनाशक, अत्यंत शीतल नहीं है, अदाही (अर्थात् दाह नहीं करे) स्वादु, पीनसनाशक, अत्यंत बलकारक, रोचक, बृंहण, और वीर्योत्पादक। जिसके बच्चा न हुवा हो ऐसी बकरीका मांस अग्निदीप्तिकारक, यह पीनस, शुष्कखाँसी, अरुचि, शोषरोगको हितकारी है। बकरीके बच्चेका मांस-अत्यंत हलका, हृद्य, उत्तम ज्वरघ्न, स्वास्थ्यप्रद, और अतिशय बलकर्ता। जिसके अंड निकाल डाले हो ऐसे बकरेका मांस-कफकारी, भारी, स्रोतों (छीद्रों) को शुद्ध करता, बलकारी, मांसवर्द्धक, और पित्तघ्न है। बुड्ढे अथवा रोगी वा मृत बकरेका मांस-वातल, रूखा। बकरेके मूँडका मांस-हसलीके ऊपरके रोगनाशक, और रुचिकारीहै [इनकी बस्ती और अंडकोश शुक्रवर्द्धक, एवं कलेजा और बृक ए शुक्रवर्द्धक, हैं]

मेंढा.

मेढ्रोमेढोहुडोमेषउरणोऽप्येडकोऽपिच ॥
अविर्वृष्णिस्तथोर्णायुःकथ्यंतेतद्गुणाअथ॥७१॥
मेषस्यमांसंपुष्टःस्यात्पित्तश्लेष्मकरंगुरु ॥
तस्यैवांडविहीनस्यमांसंकिंचिल्लघुस्मृतम्

अर्थ-मेढ्र, मेढ, हुड, मेष, उरण, एडक, अवि,

वृद्धि, और ऊर्णायु, ए मेंढेके वा मेढके संस्कृत नाम । गुण । मेढा वा मेढका मांस-पुष्ट, पित्तकफकर्त्ता, भारी, यदि अंडरहित मेढा होवे तो इसका किंचित् हलका है ।

दुंबा.

एडकःपृथुशृंगःस्यान्मेदःपुच्छस्तुदुंबकः ॥
एडकस्यपलंज्ञेयंमेषामिषसमंगुणैः ॥ ७३ ॥
मेदःपुच्छोद्भवंमांसंहृद्यंवृष्यंश्रमापहम् ॥
पित्तश्लेष्मकरंकिंचिद्वातव्याधिविनाशनम् ॥

अर्थ-एडक, पृथुशृंग, मेदःपुच्छ और दुबक । हिं. एडक, हरिका, और, दुंबा कहतेहैं । गुण । मेढका मांस मेंढाके मांससदृश है । और दुंबाका मांस हृद्य, वृष्य, श्रमनाशक, पित्तकफको कुछ२करे और वातव्याधिको नष्ट करेहै ।

बैल-गौ.

बलीवर्दस्तुवृषभऋषभश्चतथावृषः ॥
अनड्वान्सौरभेयोऽपिगोरुक्षाभद्रइत्यपि ७५
सुरभिःसौरभेयीचमाहेयीगौरुदाहृता ॥
गोमांसंतुगुरुस्निग्धंपित्तश्लेष्मविवर्धनम् ॥
बृंहणंवातहृद्बल्यमपथ्यंपीनसप्रणुत् ॥ ७६ ॥

अर्थ-बलीवर्द, वृषभ, ऋषभ, वृष, अनड्वान्, सौरभेय, गो, उक्षा, और भद्र । ए बैलके वा वर्द्धके नाम है । इसीप्रकार सुरभि, सौरभेयी, माहेयी, और गौ, ए गौके नाम । बं. गाभिर । गुण । गौका मांस-भारी, स्निग्ध, पित्तकफवर्द्धक, बृंहण, वातहरणकर्त्ता, बलप्रद, अपथ्य (दुष्ट) और पीनसनाशक है ।

घोडा.

घोटकेऽप्यश्वतुरगातुरंगाश्वतुरंगमाः ॥
वाजिवाहार्वगंधर्वहयसैंधवसप्तयः ॥ ७७ ॥
अश्वमांसंतुतुवरंवह्निकृत्कफपित्तलम् ॥
वातहृद्बृंहणंबल्यंचक्षुष्यंमधुरंलघु ॥ ७८ ॥

अर्थ-घोटक, अश्व, तुरग, तुरंग, तुरंगम, वाजि, वाह, अर्वा, गंधर्व, हय, सैंधव, और सप्ति, ए घोडेके नाम । गुण । घोडेका मांस-कषेला, अग्निकर, कफ और पित्तकारी, वातहरणकर्त्ता, बृंहण, बलकारी, नेत्रोंको हित, मधुर, और हलका है ।

कूलेचरोंमें. भैंसा.

महिषोघोटकारिःस्यात्कासरश्चरजस्वलः ॥
पीनस्कंधःकृष्णकायोलुलायोयमवाहनः ७९
महिषस्यामिषंस्वादुस्निग्धोष्णंवातनाशनम् ॥
निद्राशुक्रप्रदंबल्यंतनुदार्ढ्यकरंगुरु ॥
वृष्यंचसृष्टविण्मूत्रंवातपित्तास्रनाशनम् ८०

अर्थ-महिष, घोटकारि, कासर, रजस्वल, पीनस्कंध, कृष्णकाय, लुलाय, और यमवाहन । ए भैंसेके नाम । गुण । भैंसेका मांस-स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम, वातनाशक, निद्रा, शुक्र, बलको देनेवाला, देहको दृढ करे, भारी, वृष्य, मलमूत्रका निकालनेवाला, वात, पित्त और रुधिरके रोगोंको दूर करे है ।

मेंडक.

मंडूकःप्लवगोभेकोवर्षाभूर्दर्दुरोहरिः ॥
मंडूकःश्लेष्मलोनातिपित्तलोबलकारकः ८१

अर्थ-मंडूक, प्लवग, भेक, वर्षाभू, दुर्दर और हरि ए मेंडकाके नामहैं । गुण । मेंडकेका मांस, कफकारी, बलकर्त्ता और अत्यंत पित्तकर्त्ता नहीहै ।

पादिषु. कछुआ.

कच्छपोगूढपात्कूर्मःकमठोदृढपृष्ठकः ॥
कच्छपोबलदोवातपित्तनुत्पुंस्त्वकारकः ८२

अर्थ-कच्छप, गूढपाद, कूर्म, कमठ और दृढपृष्ठक, ए कछवा वा कछुआके नाम हैं । गुण । कछुआका मांस-बलदायक, वातपित्तनाशक और नपुंसकतानाशकहै । अब कुछ विशेष कहतेहैं । तहां प्रथम—

सद्यहतमांसके गुण.

सद्योहतस्यमांसंस्याद्व्याधिघातियथा-ऽमृतम् ॥
वयस्थंबृंहणंसात्म्यमन्यथातद्विवर्जयेत् ८३

अर्थ-तत्काल मारे हुए जीवोंका मांस-अमृतके तुल्य, व्याधिनाशक, अवस्थास्थापक, बृंहण और पथ्य है । और प्रकारका मांस त्याज्यहै ।

स्वयंमृतका मांस.

स्वयंमृतस्यचाबल्यमतीसारकरंगुरु ॥

अर्थ-अपनेआप मरे हुए जीवका मांस, निर्बलता और अतिसारको करे तथा भारी है ।

वृद्धबालकमांस.

वृद्धानांदोषलंमांसंबालानांबलदंलघु ॥ ८४ ॥

अर्थ-वृद्ध (बुड्ढे) जीवोंका मांस खाना वर्जित है, कारण यहहै, कि यह रोगोत्पादक है । बालक जीवका मांस बलकर्त्ता और हलका है ।

विषादिमृतमांस.

सर्पदष्टस्यमांसंचशुष्कमांसंत्रिदोषकृत् ॥
व्यालदष्टंचदुष्टंचशुष्कंशूलकरंपरम् ॥ ८५ ॥
विषांबुरुङ्मृतस्यैतन्मृत्युदोषरुजांकरम् ॥

अर्थ-सांपआदिके काटनेसें जो जीव मराहे उसका मांस-और सूखा मांस-त्रिदोषकर्त्ताहै । हिंसक जीवके काटनेसे जो मरा है और दूषित मांस-एवं सूखा मांस शूलको कर्त्ताहै । विष और रोगद्वारा, अथवा जलमें मरेहुए जीवका मांस खाय तो त्रिदोषको कुपित करे, अनेक प्रकारके रोग तथा मृत्युपर्यंत करेहै ।

क्लिन्नमुत्क्लेशजनकंकृशंवातप्रकोपनम् ॥८६॥
तोयपूर्णंशिराजालंमृतमप्सुत्रिदोषकृत् ॥
विहंगेषुपुमान्श्रेष्ठःस्त्रीचतुष्पदजातिषु॥८७॥
पराधोलघुपुंसांस्यात्स्त्रीणांपूर्वार्धमादिशेत्
देहमध्यंगुरुप्रायंसर्वेषांप्राणिनांस्मृतम् ॥८८॥
पक्षक्षेपाद्विहंगानांतदेवलघुकथ्यते ॥
गुरूण्यण्डानिसर्वेषांगुर्वीग्रीवाचपक्षिणाम् ॥
उरःस्कंधोदरंकुक्षीपादौपाणीकटीतथा ॥
पृष्ठत्वग्यकृदंत्राणिगुरूणीहयथोत्तरम् ९०
लघुवातकरंमांसंखगानांधान्यचारिणाम् ॥
मत्स्याशिनांपित्तकरंवातघ्नंगुरुकीर्तितम् ९१
फलाशिनांश्लेष्मकरंलघुरूक्षमुदीरितम् ॥
बृंहणंगुरुवातघ्नंतेषामेवंपलाशिनाम् ॥९२॥
तुल्यजातिष्वल्पदेहामहादेहेषुपूजिताः ॥
अल्पदेहेषुदास्यन्तेतथैवस्थूलदेहिनः ॥९३॥

अर्थ-गीलामांस भोजन, वमन होनेकीसी शंका करे । कृशजीवका मांस वातकोप करे । जिस जीवकी नाडी जलसें भरीहो और जो जलमें मरा है उसका मांस त्रिदोष कारीहै पक्षियोंमें पुरुष उत्तमहै । और पशुओंमें स्त्रीजातिका मांस उत्तम । पुरुषोंके ऊपरके भागका मांस हलका है और स्त्रियोंका नीचेके देहका मांस उत्तमहै । एवं संपूर्ण प्राणीमात्रोंके मध्यदेहका मांस भारी कहाहै और पक्षियोंके पांख गिरगए हो तो उनका मांस हलका है । सब पखेरुओंके अंडे भारीहैं और सब पक्षियोंकी गरदन भारीहै । छाती, कंधा, कूख, पैर, कमर, पीठ, त्वचा, और आंत ए क्रमसें एकसे दूसरा भारीहै-जैसे-छातीसें कंधा, कंधेसें अधिक कूख भारी है, इसी प्रकार औरभी जानो । धान (गेहूं, ज्वार, बाजरा) आदि चुगनेवाले पखेरुओंका मांस हलका और वादीकर्ता जानना । जो पक्षी मछली खातेहैं उनका मांस, पित्तकारक, वातनाशक, भारी जानना । जो फल खानेवाले जीवहैं उनका मांस कफकर्त्ता, हलका, और रूखा कहाहै । और मांसाशी पक्षियोंका, मांस, बृंहण, भारी और वातघ्न । यावन्मात्र बडीदेहवाले प्राणी उनकी जातिमें हलके देहवाले प्राणीहै उनका मांस हितकारी । और हलकी देहवाले जीवोंमें जो स्थूलदेहके जीव हैं उनका मांस परमोत्तम है ।

मछलियोंमें-रोहू.

रक्तोदरोरक्तमुखोरक्ताक्षोरक्तपक्षतिः ॥
कृष्णपुच्छोझषश्रेष्ठोरोहितःकथितोबुधैः ९४
रोहितःसर्वमत्स्यानांवरोवृष्योऽर्दितार्त्ति-
जित् ॥
कषायानुरसःस्वादुर्वातघ्नोनातिपित्तकृत् ॥
ऊर्द्ध्वजत्रुगताग्रोगान्हन्याद्रोहितमुंडकम् ९५

अर्थ-रोहित अर्थात् रोहूमछलीके पेट, मुख, नेत्र, और पांख ए लालरंगके होतेहैं पूंछ कालेरंगकी । सब मछलियोंमें रोहूमछली उत्तम, यह अधिक पित्तकर्त्ता नहीं हैं, रोहित मछली किंचिन्मात्र कषेली, स्वादु, वृष्य, वातनाशक और अर्दितवात (लकवा)को शांति करे । रोहूका मस्तक भक्षण करनेसें देहमें हसलीके ऊपरके रोगोंको दूर करेहै ।

शिलींध्र.

शिलींध्रःश्लेष्मलोबल्योविपाकेमधुरोगुरुः ॥
वातपित्तहरोहृद्यआमवातकरःस्मृतः ॥ ९६ ॥

अर्थ-शिलींध्र (बं. शालमत्स्य.) यह कफवर्द्धक, बलकारक, वातपित्तनाशक, हृद्य और आमवातरोगोत्पादक । यह भक्षण करनेसें पचनेके समय मधुर और भारीहै ।

भाकुर.

भकुरोमधुरःशीतोवृष्यःश्लेष्मकरोगुरुः ॥
विष्टम्भजनकश्चापिरक्तपित्तहरःस्मृतः ॥

अर्थ-भाकुर (बं. वेलियामत्स्य.) यह मधुर, शीतल, वृष्य, कफकारी, भारी, विष्टंभी और रक्तपित्तनाशक ।

मोई.

मोचिकावातहृद्बल्याबृंहणीमधुरागुरुः ॥
पित्तहृत्कफकृद्रुच्यावृष्यादीप्ताग्नयेहिता ॥

अर्थ-मोई (बं. कातला.) यह वातनाशक, बलकारी, बृंहण, गुरु, पित्तनाशक, कफवर्द्धक, रोचक, वृष्य और दीप्ताग्निवालोंको हितकारी है ।

पठिना-बुआरी.

पाठीनःश्लेष्मलोबल्योनिद्रालुःपिशिताशनः
दूषयेद्रुधिरंपित्तंकुष्ठरोगंकरोतिच ॥ ९९ ॥

अर्थ-पठिना (बं. बुआल.) इसको संस्कृतमें पाठीन, श्लेष्मल, बल्य, निद्रालु और पिशिताशन कहतेहैं । सेवन करनेसें रुधिरको विगाडे, पित्तविकार और कोढके रोगोंको करैहै ।

सिंगी.

शृंगीतुवातशमनीस्निग्धाश्लेष्मप्रकोपनी ॥
रसेतिक्ताकषायाचलघ्वीरुच्यास्मृताबुधैः ॥

अर्थ-सिंगीमछली वातको शांति करे । स्निग्ध, कफ कुपित करता, कडवी, कषेली, हलकी और रुचिकर्ताहै ।

हिलसा.

इलिसोमधुरःस्निग्धोरोचनोवह्निवर्धनः ॥
पित्तहृत्कफकृत्किंचिल्लघुर्वृष्योऽनिलापहः १

अर्थ-इलिसमत्स्य, मधुर, स्निग्ध, रोचक, बलवर्द्धक, पित्तहर्त्ता, कफकर्ता, वृष्य, हलके और वातनाशक जानने ।

सौरी.

शष्कुलीग्राहिणीहृद्यामधुरातुवरास्मृता ॥

अर्थ-सौरी (बं. शंकरमत्स्य.) यह ग्राही, हृद्य, मधुर और स्वादमें कषेली ।

वेलगगरा.

गर्गरःपित्तलःकिंचिद्वातजित्कफकोपनः॥२॥

अर्थ-वेलगगरा (बं. खयरा.) यह किंचित्पित्तकारी, वातनाशक और कफवर्द्धक है ।

कवई.

काविकामधुरास्निग्धाकफघ्नारुचिकारिणी ॥
किंचित्पित्तकरीवातनाशिनीवह्निवर्धिनी ३

अर्थ-कवई (बं. कई.) यह मधुर, स्निग्ध, कफघ्न, रुचिकारक, किंचित्पित्तजनक, वातनाशक और अग्निवर्द्धक ।

वर्मीमछली.

वर्मिमत्स्योहरेद्वातंपित्तंरुचिकरोलघुः ॥

अर्थ-वर्मी मछली वादी हरे और पित्त तथा रुचिको प्रगट करे तथा हलकी है ।

दंडागी.

दंडमत्स्यो रसेतिक्तःपित्तरक्तंकफंहरेत् ॥
वातसाधारणःप्रोक्तःशुक्रलोबलवर्धनः ॥ ४ ॥

अर्थ-दंडमत्स्य (बं. वानमत्स्य.)का स्वाद कडवा, रक्तपित्तशांतिकर, कफघ्न, वातका अविरोधी, शुक्रकर्ता और बलवर्द्धक ।

अरंगी.

परंगोमधुरःस्निग्धोविष्टंभीशीतलोलघुः ॥

अर्थ-अरंगी (बं. चेंगमत्स्य.) मधुर, स्निग्ध, विष्टंभी, शीतल और हलका ।

पपता.

महासफरसंज्ञस्तुनिकःपित्तकफापहः ॥
शिशिरोमधुरोरुच्योवातसाधारणःस्मृतः

अर्थ-पपता महासफरी, (बं. सरलपुंटी.)

कडवी, पित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, मधुर, रुचिकारी और वातके अविरोधी है।

गरई.

गरघ्नीमधुरातिक्तातुवरावातपित्तहृत् ॥
कफघ्नीरुचिकृल्लघ्वीदीपनीबलवीर्यकृत् ॥ ६ ॥

अर्थ-गरई मछली-मधुर, कडवी, कषैली, वातपित्तनाशक, कफघ्न, रुचिकारक, हलकी और अग्निदीप्तिकर तथा बलवीर्योत्पादकहै।

मंगुरी.

मंगुरोवातहृद्बल्योवृष्यःकफकरोलघुः ॥

अर्थ-मङ्गुर (मंगुरि) मछली वातनाशक, बलकारक, वृष्य, कफजनक और हलकी है।

टेंगरा.

सपादमत्स्योमेधाकृन्मेदःक्षयकरश्चसः ॥
वातपित्तकरश्चापिरुचिकृत्परमोमतः ॥ ७ ॥

अर्थ-टेंगरामछली-मेधाकारक, मेदक्षयकर, वातपित्तजनक और विलक्षण अर्थात् अद्भुत रुचिकारकहे। इस मछलीकें पैर होतेहैं।

सफरीपोठी.

प्रोष्ठीतिक्ताकटुःस्वादुःशुक्रघ्नीकफवातजित् ॥
स्निग्धास्यात्कंठरोगघ्नीरोचनीचलघुःस्मृता

अर्थ-पोठी (बं. पुंटिमत्स्य) इसको संस्कृतमें सफरी और प्रोष्ठी कहतेहै। गुण। कडवी, चरपरी, स्वादु, शुक्रनाशक, वातकफनिवारक, स्निग्ध, रोचक, लघु, एवं मुखरोग और कंठरोगनाशकहे।

छोटीमछली.

क्षुद्रामत्स्याःस्वादुरसादोषत्रयविनाशनाः ॥
लघुपाकारुचिकराबलदास्तेहितामताः ॥९॥

अर्थ-छोटीमछली स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, लघुपाकी, रुचिकारक, बलकारी और पथ्यहे।

अतिक्षुद्रमत्स्य.

अतिसूक्ष्माःपुंस्त्वहरारुच्याःकासानिलापहा

अर्थ-बहुतछोटी मछली, पुरुषत्वनाशक, रुचिकारी, खांसीको शांतिकर्त्ता और वातनाशक है।

मछलीकेअंडे.

मत्स्यगर्भोभृशंवृष्यःस्निग्धःपुष्टिकरोलघुः ॥
कफमेदप्रदोबल्योग्लानिकृन्मेहनाशनः ॥१०॥

अर्थ-मछलीके अंडे (बं. मत्स्यडिम्ब) अतिवृष्य, स्निग्धताकारक, लघु, कफकर्त्ता, मेदोवर्द्धक, बलकर्त्ता, ग्लानिकर और प्रमेहनाशक है।

सूखीमछली.

शुष्कमत्स्यानचाबल्यादुर्जराविड्विबंधिनः ।

अर्थ-सूखी मछली हितकारी नहीं है, दुर्जर और मलरोधक है।

मुनीमछली.

दग्धमत्स्योगुणैःश्रेष्ठःपुष्टिकृद्बलवर्धनः ॥

अर्थ-भुनीमछली गुणोंमें श्रेष्ठ, बलदाता और पुष्टिकारक है।

कूआऔरसरोवरकीमछली.

कौपमत्स्याःशुक्रमूत्रकुष्ठश्लेष्मविवर्धनाः ॥
सरोजामधुराःस्निग्धाबल्यवातविनाशनाः ।

अर्थ-कूपकी मछली खानेसें शुक्र, मूत्र, कुष्ठ, और कफकी वृद्धि होय। सरोवर अर्थात् पुष्करणीकी मछली, मधुर, स्निग्ध, बलकारक और वातनाशक हैं।

नदीकीमछली.

नादेयाबृंहणामत्स्यागुरवोऽनिलनाशनाः ॥
रक्तपित्तकरावृष्याःस्निग्धोष्णाःस्वल्पवर्चसः ॥ १३ ॥

अर्थ-नदीकीमछली, बृंहण, भारी, वायुनाशक, रक्तपित्तकर्त्ता, वृष्य, स्निग्ध, गरम और अल्पमल करनेवाली हैं।

चौञ्य और तलावकी मछली.

चौञ्यापित्तकराःस्निग्धामधुरालघवोहिमाः
ताडागागुरवोवृष्याःशीतलाबलमूत्रदाः ॥
ताडागावानिर्झरजाबलायुर्मतिदःकरः ॥ १४ ॥

अर्थ-चौञ्य (चोआ) की मछली-पित्तकारक, स्निग्ध, मधुर, हलकी और शीतल। तलावकी,

मछलीभारी, वृष्य, शीतल, बलकर्त्ता और मूत्रकारक हैं । झरनेकी मछली संपूर्ण तलावकी मछलीके समान गुण कर्त्ताहै । विशेषता इतनीहै कि बल, आयु, बुद्धि और दृष्टिशक्तिको बढाती है ।

ऋतुविशेषमेंमत्स्यविशेष.

हेमंतेकूपजामत्स्याःशिशिरेसारसाहिताः ॥
वसंतेतेतुनादेयाग्रीष्मेचौड्यसमुद्भवाः॥१५॥
तडागजातावर्षासुतास्वपथ्यानदीभवाः ॥
नैर्झराःशरदिश्रेष्ठाविशेषोऽयमुदाहृतः ॥ १६॥

अर्थ-हेमंतऋतुमें कूपकी मछली, शिशिरऋतुमें सरोवरकी, वसंतकालमें नदीकी, गरमियोंमें चोएकी, वर्षाकालमें तलावकी और स्वरदऋतुमें झरनेकी मछली हितकारी होती हैं । वर्षाऋतुमें नदीकी मछलियोंका खाना निषेधहै ।

इतिश्रीअभिनवनिघंटेमांसवर्गः

कृतान्नवर्गः

अन्नसाधन और सिद्धअन्नकेगुण.

समवायिनिहेतौयेमुनिभिर्गणितागुणाः ॥
कार्येऽपितेऽखिलाज्ञेयाःपरिभाषेतिभाषिता।
क्वचित्संस्कारभेदेनगुणभेदोभवेद्यतः ॥
भक्तंलघुपुराणस्यशालेस्तश्चिपिटोगुरुः ॥२॥
क्वचिद्योगप्रभावेनगुणांतरमपेक्ष्यते ॥
कद्वन्नंगुरुसर्पिष्कलघूक्तंसुहितंभवेत् ॥ ३ ॥

अर्थ-मुनीश्वरोंने समवायहेतुमें जो जो गुण कहेहै, उस समवायी कार्यमेंभी वोही २ सब गुण जान लेने, यह परिभाषा कहीहै । अर्थात् जो जो गुण गेंहूं, चना, मूंग, उडद, मिश्री, गुड, दूध, घृतआदि पदार्थोंमे कहेहैं, वे ही २ गुण उनपदार्थोंसे बने लड्डू, पेडे, पूडी, कचौरी, मठरी, खडी, जलेबी, आदिमें जानने चाहिये। किसी २ वस्तुमें संस्कार भेदसें गुणभेद होजाता है । जैसेपुराने चावलोंका भात हलका होताहै परंतु उन्हीं शालिचावलोंके बने हुए चिरवा [संस्कारभेद होनेसे] भारी होतेहैं । कोई २ द्रव्य योगप्रभाव करके अपने गुणोंको त्यागकर अन्य गुणोंको करेहै, जैसे । दुष्टअन्न भारी होताहै, परंतु वही दुष्ट अन्न यदि घीसे बना होय तो वो हलका और हितकारी होताहै ।

भातनाम साधन और गुण.

भक्तमन्नंतथांधश्चक्वचित्कूरंचकीर्तितम् ॥
ओदनोऽस्त्रीस्त्रियाभिःस्सादीदिविःपुंसि-
भाषितः ॥ ४ ॥
सुधौतास्तंडुलाःस्फीतास्तोयेपंचगुणेपचेत्॥
तद्भक्तंप्रस्तुतंचोष्णंविशदंगुणवन्मतम् ॥५॥
भक्तंवह्निकरंपथ्यंतर्पणंरोचनंलघु ॥
अधौतमशृतंशीतंगुर्वरुच्यंकफप्रदम् ॥ ६ ॥

अर्थ-भक्त, अन्न, अंध, कूर, ओदन, भिःसा और दीदिवि ए भातके संस्कृत नामहै । बनानेकीविधि । सुंदर बिने छने हुए स्वच्छ चावलोंको पांचगुने जलमें पचावे जब सिद्ध होजावे तब उतारके जल छानडाले, यह गरमागरम गुणकारी जानना । गुण । भात, अग्निकर्त्ता, पथ्य, तृप्तकारी, रोचक, हलका है । बिनाधुले चावलोंका भात और बिना ओंटाहुआ शीतल, भारी, रुचिकर्त्ता और कफकारीहै ।

दाल (सूप).

दलितंतुशमीधान्यंदालिर्दालीस्त्रियामुभे ॥
दालीतुसलिलेसिद्धालवणार्द्रकहिंगुभिः ॥
संयुक्तासूपनाम्नीस्यातकथ्यंतेतद्गुणाअथ ७
सूपोविष्टंभकोरूक्षःशीतस्तुसविशेषतः ॥
निस्तुषोभृष्टसंसिद्धःलाघवंसुतरांव्रजेत् ॥८॥

अर्थ-फलीके दलेहुए (मूंग चना अरहर आदि) धानोंको दाल कहतेहै । आधसेर जलमें १ छटांक दाल डाले, जब अग्निपर सीज जाय तब उसमें निमक अदरख, हींग और अन्य मसाला डाले । तो यह सूप अर्थात् दाल बनकर तयारहो । गुण । दालविष्टंभकारी, रूक्षी, शीतल यदि भाडमें भुनीहुई दालके छिलके दूरकरकै करी जावे तो अत्यंत हलकी होय है ।

खिचडी.

तण्डुलादालिसंमिश्रालवणार्द्रकहिंगुभिः ॥
संयुक्ताःसलिलेसिद्धाःकृशराकथिताबुधैः ९
कृशराशुक्रलाबल्यागुरुःपित्तकफप्रदा ॥
दुर्जराबुद्धिविष्टंभमलमूत्रकरीस्मृता ॥ १० ॥

अर्थ-दाल चावलोंको मिलाय और निमक, अदरख हींग आदि डालके जलमें सिद्ध करै, उसको कृशरा अर्थात् **खिचडी** कहतेहैं । **गुण** । खिचडी-वीर्यदाता, बलकर्त्ता, भारी, पित्तकफकर्त्ता, देरमें पचे, बुद्धि, विष्टंभ, मल और मूत्रको उत्पन्न करतीहै ।

ताहरी.

घृतेहरिद्रासंयुक्तेमाषजांभर्जयेद्वटीम् ॥
तंडुलांश्चापिनिर्धौतान्सहैवपरिभर्जयेत् ११
सिद्धयोग्यंजलंतत्रप्रक्षिप्यकुशलःपचेत् ॥
लवणार्द्रकहिंगूनिमात्रयातत्रनिक्षिपेत् ॥१२॥
एषासिद्धिःसमानज्ञाप्रोक्तातापहरीबुधैः ॥
भवेत्तापहरीबल्यावृष्याश्लेष्माणमाचरेत् ॥
बृंहणीतर्पणीरुच्यागुर्वीपित्तहरास्मृता ॥१३॥

अर्थ-हलदी मिले घीमें प्रथम उडदकी बडियोंको तथा इन्हीके साथ धुलेहुए स्वच्छ चावलोंको धोय लेवे, फिर जितनेमें ए दोनों सिद्ध होजावे इतना जल चढायकै पचावे, और निमक, अदरख, हींग ए अनुमान माफिक डाले तो यह **ताहरी** सिद्ध होय । **गुण** । तापहरी (ताहरी), बलकारी, वृष्य, कफकारी, बृंहणी, तृप्तिकरता, रुचिकारी और पित्तको हरण करै ।

खीर.

पायसंपरमान्नंस्यात्क्षीरिकापितदुच्यते ॥
शुद्धेऽर्धपक्वेदुग्धेतुघृताक्तांस्तण्डुलान्पचेत्
तेसिद्धाःक्षीरिकाख्यातास्ससिताज्ययुतोत्तमा ॥
क्षीरिकादुर्जराप्रोक्ताबृंहणीबलवर्द्धिनी॥१५॥
नालिकेरंतनूकृत्यश्लिष्टंपयसिगोःक्षिपेत् ॥
सितागव्याज्यसंयुक्तेतत्पचेन्मृदुनाऽग्निना
नारिकेरोद्भवाक्षीरीस्निग्धाशीतातिपुष्टिदा ।
गुर्वीसुमधुरावृष्यारक्तपित्तानिलापहा ॥१७॥

अर्थ-पायस, परमान्न और क्षीरिका, ए संस्कृत खीरके नामहै । **खीरके बनानेकी विधि** । निपनिया अधोटे दूधमें घीके भुने चावल डालकै पचावे तो **खीर** सिद्ध होय । इसमें सपेद बूरा और गौका स्वच्छ घी मिलावे [चौवे लोग खीर सिद्धकर पत्तलमें परसके ऊपरसैं बूरा डालतेहैं परंतु अन्यजातिवाले उसीमें बूरा डालदेतेहैं] । **गुण** । **खीर** देरमें पचे, बृंहणी, बलको बढानेवाली । **नारियलकी खीर** । नारियलकी गिरीको चाकूसैं बारीक कतरके अथवा घियाकसपर बारीक रगडकर दूधमें खांड और गौका घी डालके मंदाग्निसैं औटावे तो यह **नारियलकी खीर** बने । **गुण** । यह स्निग्ध, शीतल और अत्यंत पुष्टकारी, भारी, मधुर, वृष्य, रक्तपित्त, और वादीको दूर करेहै ।

सैमई.

समितांवर्तिकांकृत्वासूक्ष्मांतुयवसन्निभाम् ॥
शुष्कांक्षीरेणसंसाध्याभोज्याघृतसिताऽन्विता ॥ १८ ॥
सेविकातर्पणीबल्यागुर्वीपित्तानिलापहा ॥
ग्राहिणीसंधिकृद्रुच्यातांखादेन्नातिमात्रया ॥

अर्थ-उसनी हुई मैंदाके बहुत बारीक डोरेके माफिक बत्ती बनायकै धूपमें सुखायले, फिर इनको विनापसे भातके समान दूधमें सिद्ध कर लेवे, तथा इसमें सपेदबूरा और घी डालके सेवन करे । **गुण** । **सैंमई**-धातुओंको तृप्त करता, बलकारी, भारी, पित्त और वातको नष्ट करे, ग्राही (मलको रोकनेवाली), संधिकर्त्ता और रुचकारी है । इनको अधिक नहीं खानी । इसमें जौंके समान मोटी लिखीहै सो सैंमई हमारे बृजमें बालके माफिक पतली होतीहै और प्राय सामनके महिनेमें तीज और सलूनोंकेदिन बृजवासी इसको बहुत बनातेहैं ।

मंडा.

गोधूमाधवलाधौताःकुट्टिताःशोषितास्ततः
प्रोक्षितायंत्रनिष्पिष्टाश्चालिताःसमिताःस्मृताः ॥ २० ॥
वारिणाकोमलांकृत्वासमितांसाधुमर्दयेत् ॥
हस्तलालनयातस्यालोप्त्रींसम्यक्प्रसारयेत्
अधोमुखघटस्यैतद्विस्तृतंप्रक्षिपेद्बहिः ॥
मृदुनावह्निनासाध्यःसिद्धोमंडकउच्यते ॥
दुग्धेनसाज्यखंडेनमंडकंभक्षयेन्नरः ॥
अथवासिद्धमांसेनसतक्रवटकेनवा ॥ २१ ॥

मंडकोबृंहणोवृष्योबल्योरुचिकरोभृशम् ॥
पाकेऽपिमधुरोग्राहीलघुर्दोषत्रयापहः ॥२४॥

अर्थ-सपेद गेंहुओंको जलमें धोयके ओखलीमें डाल मूसलसें कूट डाले-फिर इनको धूपमें सुखाय चक्कीमें पीस छांगी (मैदाछाननेकी चालनी) में छानकर मैदा कर लेवे । फिर इस मेंदाको जलसें कोमल उसनकर खुब मर्दन करे फिर हाथसें इसकी लोईको बढाय पूडीके माफिक वेल लेवे, फिर चूल्हे-पर औंधे मुखके खिपडेपर इसको डालकें मंदाग्निसें सेक लेवे । ए सिके हुए मंडक कहलातेहै । मंडकोंको दूध-घी खांड (बूरा)के साथ भोजन करे, अथवा बनेहुए मांसके साथ, अथवा दहीबडेके साथ भोजन करे । गुण । बृंहण, वृष्य, बलकारी, निरंतर रुचि-कारी, पाकके समयभी मधुर, ग्राही, हलके और तीनोदोषोंको नाश करतेहैं । कोई डबलरोटीको ही मंडक मानतेहैं ।

पूरी (पोलिका.)

कुर्यात्समितयाऽतीवतन्वीपर्पटिकाततः ॥
स्वेदयेत्तसकेतांतुपोलिकांजगदुर्बुधाः ॥
तांबावेल्लुप्सिकायुक्तांतस्यामण्डकवद्गुणाः ॥

अर्थ-मैंदाकी अथवा चूनकी बहुत बारीक पूडी बेलके घीमें सेक लेवे उनको पूडी, पूरी, अथवा लुचंई, लुची और दुनौरी कहतेहैं । संस्कृतमें पोलि-का कहातीहै । मैंदाकी पूडी पंजाबी और हमारी-जातिमें कुलीन चौबोंके घरमें उत्तम बनतीहै । इनको मोहनभोग वा लप्सी (सीरा)के साथ भोजन करे, इसके गुण मंडकके समानहै । [इनको कोई तवेपर, और कोई कढैयामें सेकतेहैं] । पूडियोंकाही भेद, प्रामठे, जिनको मंजेडोरे, पलेटा, उपरांयठे, टिक्कड कचौरा आदि कहतेहै । इनमें घी बहुत कम लगताहै इस वास्ते गरीबलोग बहुत बनाते हैं ।

लप्सी (सीरा.)

समितांसर्पिषाभृष्टांशर्करांपयसिक्षिपेत् ॥
तस्मिन्घनीकृतेन्यस्येल्लवंगमरिचादिकम् ॥
सिद्धैषालप्सिकाख्यातागुणास्तस्या-
ब्रवाम्यहम् ।
लप्सिकाबृंहणीवृष्याबल्यापित्तानिलापहा ॥
स्निग्धाश्लेष्मकरीगुर्वीरोचनीतर्पणीपरम् ॥

अर्थ-मैदाके समान घी लेकर उसमें मैंदाको मंदाग्निसें भून लेवे, फिर इसमें मेदाके समान खांडका जल डालता जाय और चलाता जावे, जब सब जल सोखकर खिलजावे तब इसमें लौंग, कालीमिरच, इला-यची आदिका चूर्ण और कतरीहुई मेवा डाल देवे, इसको संस्कृतमें लप्सिका कहतेहै । भाषामें सीरा, वा लपसी अथवा मोहनभोग कहतेहैं । मोहन-भोग-सूजीका उत्तम बनताहै, और भी अनेकप्रका-रका होताहै । जिनको देखनेकी और बनानेकी इच्छा-हो हमारे पाकरत्नाकर ग्रंथमें देखे ।

रोटी (रोटिका.)

शुष्कगोधूमचूर्णेनकिंचित्पुष्टांचपोलिकाम् ॥
तप्तकेस्वेदयेत्कृत्वाभूयेंगारेऽपितांपचेत् २८
सिद्धैषारोटिकाप्रोक्तागुणान्तस्याःप्रचक्ष्महे ।
रोटिकाबलकृद्रुच्याबृंहणीधातुवर्धनी ॥
वातघ्नीकफकृद्गुर्वीदीप्ताग्नीनांप्रपूजिता ॥२९॥

अर्थ-सूखे स्वच्छ गेंहूके आटेको उसन रोटी वेलकें तवेपर डाले जब दोनों बगल सिक जावे तब उतारके इसको अंगारोंपर फुलाय लेवे । यह संस्कृतमें रोटिका और भाषामें रोटी कहातीहै, इसके गुणोंको कहतेहै । गुण । रोटी-बलकारी, रुचिकारी बृंहणी (पुष्टकर्त्ता) और रसरक्तादि धातुओंको बढानेवालीहै । वातनाशक, कफकर्त्ता, भारी और प्रदीप्ताग्निवालोंको हितकारीहै । परंतु यह वाक्य पूर-बके देशवाले तथा बंगालियोंके प्रतिहै, और हमारे पश्चिमोत्तर देशवालोंको रोटीही पथ्यहैं । लोहेके तवेकी रोटीसें खिपडेके तवेकी रोटी हलकी होतीहै, और रोटी पतली खमीरकी करनी चाहिये ।

अंगाकर बाटी.

शुष्कगोधूमचूर्णंतुसांबुगाढंविमर्दयेत् ॥
विधायवटकाकारंनिर्धूमेऽग्नौशनैःपचेत् ३०
अंगारकर्कटीह्येषाबृंहणीशुक्रलालघुः ॥
दीपनीकफकृद्बल्यापीनसश्वासकासजित् ।

अर्थ-सुखेहुए उत्तम गेहूंके आटेको गाढा उसन-

कर हाथोंसें बडेके समान बनाके धूंआ रहित अंगारों-पर धीरे २ सेक लेवे, इनको संस्कृतमें अंगारक-र्कटी कहतेहैं। भाषामें अंगाकर और लिट्टीकह-तेहै। और कुछ नरम चूनकी गोल बीचमें गड्ढेदार बाटी होतीहैं वो जब सिककर फटजावे तब उत्तम होतीहै। गुण। अंगाकर-बृंहणी, शुक्रकर्त्ता, हलकी, दीपनकारी, कफकारी, बलकर्ता, और पीनस, श्वास और खांसीको दूर करेहै। अंगाकरसे बाटी अधिक गरिष्टहै। ये बलवान् पुरुषको और रास्ते चलने-वालोंको पचतीहैं। बाटी राजपूतानेमें उत्तम बनतीहैं।

जवकीरोटीके गुण.

यवजारोटिकारुच्यामधुराविशदालघुः ॥
मलशुक्रानिलकरीबल्याहंतिकफामयान् ॥

अर्थ-जौंकीरोटी रुचिकर्त्ता, मधुर, विशद, और हलकीहै। मल-शुक्र-और वादी करतीहै, बल-कारी, तथा कफके रोगोंको नाश करे।

उडदकी रोटी.

माषानांदालयस्तोयेस्थापितास्त्यक्तकंचुकाः
आतपेशोषितायंत्रेपिष्टास्ताधूमसीस्मृता ३३
धूमसीरचितासैवप्रोक्ताझर्झरिकाबुधैः ॥
झर्झरीकफपित्तघ्नीकिंचिद्वातकरीस्मृता ३४

अर्थ-उडदकी दालको जलमें भिगोयके उसके छिलकोंको धोयके उतार डाले फिर धूपमें सुखाय चक्कीमें पीस आटा कर लेवे। इस धूमसी (आंटे) की बनीहुई रोटीयोंको संस्कृतमें झर्झरी कहतेहैं। गुण। कफपित्तनाशक और कुछ २ वादीकरेहै।

चनेकी रोटीके गुण.

चणकयारोटिकारूक्षाश्लेष्मपित्तास्रनुद्गुरुः ॥
विष्टंभिनीनचक्षुष्यातद्गुणाचातिशष्कुली ॥

अर्थ-चनेकीरोटी रूखी, कफ पित्त और रुधि-रके विकारको दूर करे, और भारीहै, पेटको फुलावे, नेत्रोंको हितकारी नहीं है। इसकेसे गुण अतिशष्कुली अर्थात् बडीरोटीमें है।

पिट्ठी (पिष्टिका.)

दालिःसंस्थापितातोयेतत्तोऽपहृतकंचुका ॥
शिलायांसाधुसंपिष्टापिष्टिकाकथिताबुधैः ॥

अर्थ-मूंग अथवा उडद आदिकी दालको जलमें भिगोयदे जब मीज आवे तबउसको जलमें मसलके छिलके निकाल डाले। और उसको सिलबटलेमें बारीक पीस लेवे, और मसाला मिलायदे इसको संस्कृतमें पिष्टिका और भाषामें पिट्ठी कहतेहैं।

वेढई.

माषपिष्टिकयापूर्णगर्भागोधूमचूर्णतः ॥
रचितारोटिकासैवप्रोक्तावेढमिकाबुधैः ॥
भवेद्वेढमिकाबल्यावृष्यारुच्याऽनिलापहा ॥
उष्णसंतर्पणीगुर्वीबृंहणीशुक्रलापरम् ॥३८॥
भिन्नमूत्रमलास्तन्यमेदःपित्तकफप्रदा ॥
गुदकीलार्दितश्वासपंक्तिशूलानिनाशयेत् ॥

अर्थ-उडदकी पिट्ठीको इसनेहुए गेंहूके आटेकी लोईमें भरके वेल डाले, फिर रोटीके माफिक सेक-लेवे, इनको वेढई कहतेहैं, और कुछ छोटी वेलके घीमें सेक लेवे तो कचोडी कहातीहै। गुण। वेढई-बलकारी, वृष्य, रुचिकर्त्ता, वातनाशक, मर-मीको बढानेवाली, भारी, बृंहणी और वीर्य प्रगट कर्त्ताहै। मूत्र, मलको भेदनकर्त्ता, स्तनसंबंधी दूध, मेद, और पित्तकफकारी है। यह गुदाकेमस्से, लकवा वात, श्वास और परिणाम शूलको नाश करे।

पापड.

धूमसीरचिताहिंगुहरिद्रालवणैर्युता ॥
जीरकस्वर्जिकाभ्यांचतनूकृत्यचवेल्लिता ४०
पर्पटास्तेसदांगारभृष्टाःपरमरोचकाः ॥
दीपनाःपाचनारूक्षागुरवःकिंचिदीरिताः ॥
मौद्गाश्चतद्गुणाःप्रोक्ताविशेषाल्लघवोहिताः ॥
चणकस्यगुणैर्युक्ताःपर्पटाश्चणकोद्भवाः ॥
स्नेहभृष्टास्तुतेसर्वेभवेयुर्मध्यमागुणैः ॥४२॥

अर्थ-उडदकी रोटीमें धूमसी बनानेकी विधि लिख आएहे। उसमे हींग, हलदी, निमक, जीरा और पापडखार डालके उसको करडी उसनले, फिर खूब ओखलीमें कूटकर एकजीव करलेवे, फिर छोटी २ लोंई तोडकर चकलेपर बारीक वेले। इनको अंगारोंपर अथवा घीमें भून लेवे। गुण। ए पापड

परम रुचकारी, दीपन, पाचन, रूक्ष, कुछ २ भारी ए उडदके पापडोंके गुणहैं । मूंगके पापडोंके भी गुण उडदके पापडोंके समानहैं परंतु ये उडदके पापडोंसें हलके हैं और पथ्यहै । चनेकेपापडोंमे चनाके समान गुणहैं । ए अग्निपर भुनेहुओंके गुणहै, यदि इनको घी तेलमें फूने तो गुणोंमें मध्यम होजातेहैं ।

कचोरी.

माषाणांपिष्टिकांयुंज्याल्लवणार्द्रकहिंगुभिः ॥
तयापिष्टिकयापूर्णासमिताकृतपोलिका ४३
ततस्तैलेनपक्कासापूरीकाकथितावुधैः ॥
रूच्यास्वाद्वीगुरुःस्निग्धाबल्यापित्तास्र-
दूषिका ॥ ४४ ॥
चक्षुस्तेजोहरीचोष्णापाकेवातविनाशिनी ॥
तथैवघृतपक्काऽपिचक्षुष्यारक्तपित्तहृत् ॥४५॥

अर्थ–उडदोंकी पिट्ठीमें निमक, अदरख, हींग, डालके मैदाकी लोईमें भरके वेले, फिर इसको तेलमें अथवा घीमें सेक लेवे । इसको संस्कृतमें पूरीका कहतेहै । और भाषामें कचोडी कहतेहैं, यदि मैदामें तेल घीका मोमन देकर बनाई जावे तो उनको खस्ताकचौडी कहतेहै । गुण । तेलकी कचौडी रुचकारी, स्वादु, भारी, स्निग्ध, बलकारी, रक्तपित्तको कुपित कर्त्ता, नेत्रोंके तेज (ज्योति) को भेद करता, पाकमें गरम और वादीको नष्ट करे । घीकी बनीकचौडी नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्तको हरण करेहैं ।

वरा. मगोरा.

माषाणांपिष्टिकायुक्तालवणार्द्रकहिंगुभिः ॥
कृत्वाविदध्याद्वटकांस्तांस्तैलेषुपचेच्छनैः
विशुष्कावटकाबल्याबृंहणावीर्यवर्धनाः ॥
वातामयहराश्च्याविशेषादर्दितापहाः॥४७॥
विबंधभेदिनःश्लेष्मकारिणोऽग्निपूजिताः
संचूर्ण्यनिक्षिपेत्तक्रेभृष्टजीरकहिंगुभिः ॥
लवणंतत्रवटकान्सकलानपिमज्जयेत् ॥
शुक्लास्तमवटकोबलकृद्रोचनोगुरुः ॥४९॥
विबंधहृद्विदाहीचश्लेष्मलःपवनापहः ॥
राज्यकपातिनोवान्यान्पाचनांस्तांस्तुभक्ष-
येत् ॥ ५० ॥

अर्थ–उडदकी पिट्ठीमें निमक, अदरख और हींग, इनको मिलाय बडे बनाय तेलमें धीरे २ पकावे, अथवा उस पिट्ठीमें जलडालके हाथोंसें मथ डाले फिर इसके तेलमें मगोडे तोडके सेक लेवे । गुण । बडे और मगोडे बलकारक, बृंहण, वीर्यवर्द्धक, वादीके रोगहरणकर्त्ता, रुचिकारी, और विशेष करके अर्दितवात (लकवा) को दूर करे । मलके बंधको तोडनेवाले अर्थात् दस्तावर, कफकारी और दीप्ताग्निवालोंको हितकारी हैं । यदि गाढे २ दहीमें भुना जीरा, हींग, मिरच, और निमक मिलायके उन पूर्वोक्त बडे मगोडोंको भिगोय देव तो ये दहीबडे और दहीकी पकोडी कहलातीहैं । गुण । तहां दहीबडे-वीर्यकर्त्ता, बलकर्त्ता, रुचिकारी, भारी, विबंध हरणकर्त्ता, दाह करनेवाले, कफकारी और वातनाशकहै । अथवा रायतेमें मिलायके अथवा अन्य पाचनपदार्थके साथ मिलायके भक्षण करे ।

कांजीवरा.

मंथनीनूतनाधार्याकटुतैलेनलेपिता ॥
निर्मलेनांबुनापूर्यतस्यांचूर्णविनिक्षिपेत् ॥
राजिकांजीरलवणहिंगुशुंठीनिशाकृतम् ॥
निक्षिपेद्वटकांस्तत्रभांडस्यास्यंचमुद्रयेत् ॥
ततोदिनत्रयादूर्ध्वमम्लाःस्युर्वटकाध्रुवम् ॥
कांजिकवटकोरुच्योवातघ्नःश्लेष्मकारकः ॥
शीतोदाहंशूलमजीर्णंहरतेदृगामयेष्वहितः ॥

अर्थ–एक मिट्टीकीगगरी लेकर उसके भीतर कडवा तेल चुपड देवे, फिर उसमें स्वच्छ जल भर इसमें राई, जीरा, निमक, हींग, सोंठ और हलदी इनका चूर्ण डालके उडदके बडे उस जलमें भिगोय देवे और भाजनके मुखको बंद कर किसी एकांतस्थलमें धर देवे तो तीनदिनमें वो बडे खट्टे होजावेंगे उसको कांजिकवटक कहतेहैं । गुण । कांजीके बडे रुचकारी, वातघ्न, कफकारक, शीतल, दाह, शूल और अजीर्णको हरण करे, यह कांजीके बडे नेत्ररोगवालोंको अहितहैं ।

इमलीकेवडे.

अम्लिकांस्वेदयित्वातुजलेनसहमर्दयेत् ॥
तन्नीरेकृतसंस्कारेवटकान्मज्जयेज्जनः ॥५४॥
अम्लिकावटकास्तेतुरुच्यावन्हिप्रदीपनाः ॥
वटकस्यगुणैःपूर्वैरपोपिचसमन्वितः ॥५५॥

अर्थ-पकी इमलीको औंटाकर जलमेंही उसे खूब मीडे, फिर किसी कपडेमें डालके उस पनेको छान लेवे, और उसमें निमक, मिरच, जीरा, आदि अनमानके मिलायकर मगोडी भिगोय देवे तो इमलीके वडे बने। यह रुचिकारी, अग्निदीपन, और जो पहले वडोके गुण कह आएहे सोई गुण इनमेंभी हैं। कोई २ देशवाले इनको झोरवडा कहतेहैं।

मूंगवरा.

मुद्गानांवटकास्तक्रेभर्जितालघवोहिमाः ।
संस्कारजप्रभावेनत्रिदोषशमनाहिता ॥५६॥

अर्थ-मूंगकेवडे छाछमें परिपक्व करके भक्षण करे तो हल्के और शीतलहै, तथा संस्कारके प्रभावसे त्रिदोषनाशक और पथ्यहै।

माषवडी.

माषाणांपिष्टकाहिंगुलवणार्द्रकसंस्कृता ।
तयाविरचितावस्त्रेवटिकाःसाधुशोषिताः ॥
भर्जितास्ततस्तैलैस्ताअथवांबुप्रयोगतः ॥
वटकस्यगुणैर्युक्ताज्ञातव्यारुचिदाभृशम् ॥

अर्थ-उडदकी पिठी पीस उसमें निमक, अदरख मिलायके कपडेके ऊपर वडी तोड देवे, जब सूखजावे तब उसपरसे उतारले। इनको गरम तेलमें अथवा कढीआदिमें डालके परिपक्व करे, ये वडी वडेके समान गुण करे और अत्यंत रुचि प्रगट करतीहै।

पेठेकीवडी.

कूष्मांडकवटीज्ञेयापूर्वोक्तवटिकागुणाः ॥
विशेषात्पित्तरक्तघ्नीलघ्वीचकथितावुधैः ॥

अर्थ-पेठेकीवडी, पूर्वोक्त वडियोंके समान गुण करनेवालीहै, विशेष करके रक्तपित्तको नाश करनेवाली और हलकीहै।

मूंगकीवडी.

मुद्गानांवटिकातद्वद्रचितासाधितातथा ॥
पथ्यारुच्यातथालघ्वीमुद्गसूपगुणास्मृता ॥

अर्थ-इसीप्रकार मूंगकी वडी बनायके तयार करै। गुण। पथ्य, रुचिकारी, हलकी और इन वडियोंमें मूंगकी दालकेसे गुणहैं।

अलीकमत्स्य.

माषपिष्टिकयालिप्तंनागवल्लीदलंमहत् ॥
तन्तुसंस्वेदयेद्युक्त्यास्थाल्यामास्तारकोपरि।
ततोनिष्काश्यतंखंड्यंततस्तैलेनभर्जयेत् ॥
अलीकमत्स्यउक्तोऽयंप्रकारःपाकपण्डितैः ॥
तंवृंताकभटित्रेणवास्तूकेनचभक्षयेत् ॥६२॥

अर्थ-उडदकी पिट्ठीमें वडे २ सावतपानको लपेटकर युक्तिसे कढाईमें सेके फिर उनको उतारकर छुरीसे कतर लेवे, और तेलमें तल लेय। ये अलीकमत्स्य कहलातेहैं। इनको वेंगनके भूरतेसे अथवा वथुआके साग या रायतेसे भक्षण करे। पूरवमें इनको रिकवछ कहतेहैं।

कढी.

स्थाल्यांघृतेवातैलेवाहरिद्राहिंगुमर्जयेत् ॥
अवलेहनसंयुक्तंतक्रंतत्रैवनिक्षिपेत् ॥
वषासिद्धासमरिचाकथिताकथितावुधैः ६३
कथितापाचनीरुच्यालघ्वीवह्निप्रदीपनी ॥
कफानिलविबंधघ्नीकिंचित्पित्तप्रकोपिणी ॥
अलीकमत्स्याःशुष्कावाकिंवाकथितयापुनः
बृंहणारोचनावृष्याबल्यावातगदापहाः ॥
कोष्ठशुद्धिकराःशुक्रयाकिंचित्पित्तप्रकोपनाः
अर्दितेसहनुस्तंभेविशेषेणहिताःस्मृताः ॥६६

अर्थ-प्रथम कढाईमें घी डालके अथवा तेल डालके हरदी और हींगको भूने फिर वेसन और छाछ दोनोंको मिलायके उस कढाईमें छौंक देवे, और अनुमान माफिक, निमक, मिरच, मसाला, डालदे। इसको संस्कृतमें कथिता और हिंदीमें कढी कहतेहैं। परंतु यह रांडकढी कहलातीहै और पकौडी आदि डालदीनी जावे तो सुहागिलकढी कहावे। गुण।

पाचक, रुचिकारी, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, कछ वादीके विबंधको नष्ट करे, और कुछ २ पित्तको कुपित करेहै । अलोकमत्स्य, सूलं, अथवा कढीमें डालके सेवन करे तो ये बृंहण, रोचन, वृष्य, बलकारी, वादीके रोगनाशक, कोठेको शुद्ध करे, शुक्रकर्त्ता और कुछ २ पित्तको कुपित करतेहै। ये ककवा और हनुस्तंभ आदि वादीके रोगोंपर हितकारी हैं ।

मूंगअदरखकीवडी.

मुद्गपिष्टाविरचितान्वटांस्तैलेनपाचितान् ॥
हस्तेनचूर्णयेत्सम्यक्तस्मिंश्चूर्णेविनिक्षिपेत्
मृष्टहिंग्वार्द्रकंसूक्ष्मंमरीचंजीरकंतथा ॥
निंबूरसंयवानींचयुक्त्यासर्वंविमिश्रयेत् ६८
मुद्गपिष्टिंपचेत्सम्यक्स्थाल्यामास्तारकोपरि
तस्यास्तुगोलकंकुर्यात्तन्मध्येपूरणंक्षिपेत्
तैलेतान्गोलकान्पक्त्वाकथितायांनिम-
ज्जयेत् ॥
गोलकाःपाचकाःप्रोक्तस्तेत्वार्द्रकवटाअपि
मुद्गार्द्रकवटारुच्यालघवोबलकारकाः ॥
दीपनास्तर्पणाःपथ्यास्त्रिषुदोषेषुपूजिताः ७१

अर्थ–मूंगकी पिट्ठीसें बनी वडियोंको तेलमें तलकर हाथसें चूर्ण करडाले इसमें भुनीहींग और छोटे २ अदरखके टुकडे मिरच जीरा नीबूकारस और अजमायन एसयुक्तिसें मिलायके उस पिट्ठीको कढाईमें अथवा तवेपर फैलायदे फिर इसके गोलेबनायके भीतर मसाला भरके उन गोलोंको तेलमें सिद्ध करे, जब सिक जावे तब उतारके कढीमें डाल देवे । गुण । ये गोलक (पकोडी) पाचक और इसीप्रकार अदरखकी वडी पाचकहैं । मूंग अदरखकी वडी रुचकारी, हलकी, बलकारी, दीपन, धातुओंको तृप्त करता, पथ्य, और तीनोंदोषोंको नाश करनेवालीहैं ।

पकोरी (मगौरी.)

राजमाषकणकानांतुनिस्तुषाणांप्रपेषिताः ॥
तच्चूर्णैर्वेसनंप्रोक्तंपाकशास्त्रविशारदैः ॥
वटिकावेशनस्यापिकथितायांनिमज्जिता ॥
रुच्याविष्टंभजननीबल्यापुष्टिकरीस्मृता ७३

अर्थ–चनेकी विनी छनी दालको चक्कीमें पीसै उस चूनको वेसन कहतेहै । वेसनकी वडियोंको अर्थात् पकोडी कढीमें डालके औटाई हुई रुचिकारी, विष्टंभकर्त्ती, बलकारी, और पुष्टि करनेवाली हैं ।

मांसप्रकार-शुद्धमांसम्.

पाकपात्रेघृतंदद्यात्तैलंचतदभावतः ॥
तत्रहिंगुहरिद्रांचभर्जयेत्तदनंतरम् ॥ ७४ ॥
छागादेरस्थिरहितंमांसंतत्खंडितंध्रुवम् ॥
धौतंनिर्गालितंतस्मिन्घृतेतद्भर्जयेच्छनैः ७५
सिद्धयोग्यंजलंदत्त्वालवणंतुपचेत्ततः ॥
सिद्धेजलेनसंपिष्यवेशवारंपरिक्षिपेत् ॥७६॥
द्रव्याणिवेशवारस्यनागवल्लीदलानिच ॥
तंडुलाश्चलवंगानिमरिचानिसमासतः ॥ ७७
अनेनविधिनासिद्धंशुद्धमांसमितिस्मृतम् ॥
शुद्धमांसंपरंवृष्यंबल्यंरुच्यंचबृंहणम् ॥
त्रिदोषशमकंश्रेष्ठदीपनंधातुवर्द्धनम् ॥ ७८ ॥

अर्थ–अब मांसप्रकार (राक्षसी) भोजन कहतेहै । प्रथम शुद्धमांस अर्थात् सुधवांसु बनानेका प्रकार कहतेहै । कढाईमें घी डालके अथवा तेल डालके गरमकरे, फिर उसमें हींग और हलदीको भूनले फिर हड्डीरहित बकरेके मांसके टुकडे कर और जलसे धोयके घीमें डालके भूनें इसमें अनुमानके माफिक जल डालके और निमक डालके पचावे, फिर जब सिद्ध होजावे तब गरम मसाला डालके उतारले। महा पान चावल लौंग मिरच ए मसालेके पदार्थहे । इसप्रकार सिद्ध हुएको शुद्धमांस कहतेहे । शुद्धमांसकेगुण । वृष्य, बलकारी, रुचिदायक, बृंहण, त्रिदोष शमनकर्त्ता, दीपन और धातुवर्द्धक है ।

हडवांसु.

छागादेर्मांसमूर्वादेःकुट्टितंखंडितंपुनः ॥
शुद्धमांसविधानेनपचेदेतत्सहार्द्रकम् ॥
सहार्द्रकंगुणैर्ज्ञेयंशुद्धमांसगुणंस्मृतम् ॥७९॥

अर्थ-बकरेकेमांस और मूर्वा आदिके टुकडे करे और कूटकर पूर्वोक्त शुद्धमांसकी विधिसे अदरखके साथ पकावे, इसके अदरखयुक्त शुद्ध मांसके समान गुणहैं ।

अखनी.

पाकपात्रेघृतंदत्त्वाहरिद्राहिंगुभर्जयेत् ॥
छागादेःसकलस्यापिखंडान्यपिचभर्जयेत् ॥
सिद्धयोग्यंजलंदत्त्वापचेन्मृदुतरंयथा ॥
जीरकादियुतेतक्रेमांसखंडानितारयेत् ॥८१॥
तक्रमांसंतुवातघ्नंलघुरूच्यंबलप्रदम् ॥
कफघ्नंपित्तलंकिंचित्सर्वाहारस्य पाचनम् ॥

अर्थ-कडाही अथवा देगचीमें घी, हींग, और हलदी डालके भूने फिर बकरी आदिके मांस टुकडोंको डालके भूने, फिर इसमें अनुमानका जलडालकै मंद मंद आंचसे पकावे, फिर जीरा आदि मसाला मिली छाछमें उन मांसके टुकडोंको डाल देवे । गुण । तक्रमांस (अखनी)-वातनाशक, हलका, रुचिकारी, बलदायक, कफघ्न, किंचिन्मात्र पित्तकर्त्ता और सब खाएहुए पदार्थोंको हजम करताहे ।

आस.

पाकपात्रेतुबृहतीमांसखण्डानिनिक्षिपेत् ॥
पानीयंप्रचुरंसर्पिःप्रभूतंहिंगुजीरकम् ॥८३॥
हरिद्रामार्द्रकंशुंठींलवणंमरिचानिच ॥
तंडुलांश्चाधिगोधूमानजंबीराणांरसान्बहून् ॥
यथासर्वाणिवस्तूनिसुपक्वानिभवंतिहि ॥
तथापचेत्तुनिपुणोबहुमासंक्षितिर्यथा ॥ ८५॥
एषाहरीसाबलकृत्वातापित्तापहागुरुः ॥
शीतोष्णाशुक्रदास्निग्धासरासंधानकारिणी

अर्थ-देगचीमें मांसके बडे २ टुकडे डालके जल और अधिक घी डाले, तथा हींग, जीरा, हलदी, अदरख, सोंठ, निमक, कालीमिरच, चावल, गेंहूं, जमीरीका रस, इन सब वस्तुओंको डालके पकावे, जब खूब पकजावे तब उतार लेवे । गुण । यह हरीसा (हरीरा) बलकारी, वातपित्तनाशक, भारी, शीतोष्ण, शुक्रकर्त्ता, स्निग्ध, दस्तावर, और टूटीहुयी आदिको जोडनेवाला है ।

तलितमांस.

शुद्धमांसविधानेनमांसंसम्यक्प्रसाधितम् ॥
पुनस्तदाज्येसंभृष्टंतलितंप्रोच्यतेबुधैः ॥८७॥
तलितंबलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवृद्धिकृत् ॥
तर्पणंलघुसुस्निग्धंरोचनंदृढताकरम् ॥ ८८ ॥

अर्थ-जैसे शुद्ध मांसका साधन लिखाहै उसी रीतिसें मांस परिपक्व करके फिर उसको घीमें तललेवे, उसको तलितमांस कहतेहैं । गुण । तलितमांस, बल, बुद्धि, अग्नि, मांस, ओज और शुक्रको वृद्धि करे । तर्पण-हलका-स्निग्ध रुचिकारी और देहको दृढ करताहे ।

सींखचे.

कालखंडादिमांसानिग्रंथितानिशलाकया ॥
घृतंसलवणंदत्त्वानिर्धूमेदहनेपचेत् ॥ ८९ ॥
तत्तुशूल्यमिदंप्रोक्तंपाककर्मविचक्षणैः ॥
शूल्यंपलंसुधातुल्यंरुच्यंवन्हिकरंलघु ॥
कफवातहरंबल्यंकिंचित्पित्तकरंहितम् ॥९०॥

अर्थ-बकरं आदिके कलेजेके मांसको कूट निमक मिला घी मसाला मिलायके लोहेकी सलाईमें लपेट देवे, फिर इनको धूंआरहित कोलोंपर पकावे, इसको पाकके जाननेवाले शूल्यमांस अर्थात् सींखचे कहतेहैं । गुण । सींखचे अमृतके तुल्य, रुचिकर्त्ता, अग्निकर्त्ता, हलके, कफवात हरणकर्त्ता, बलकारी और पित्तको करतेहैं ।

मांसकेसिंघाडे.

शुद्धमांसंतनूकृत्यकाथितंस्वेदितंजले ॥
लवंगहिंगुलवणमरिचार्द्रकसंयुतम् ॥ ९१ ॥
एलाजीरकधान्याकनिंबूरसलसमन्वितम् ॥
घृतेसुगंधितद्भृष्टंमांसश्रृंगाटकोच्यते ॥ ९२ ॥
मांसशृंगाटकंरुच्यंबृंहणंबलकृद्गुरु ॥
वातपित्तहरंवृष्यंकफघ्नंवीर्यवर्द्धनम् ॥ ९३ ॥

अर्थ-शुद्ध मांसको बारीक कतर जलमें औटावे, फिर इसमेंलोंग, हींग, निमक, कालीमिरच और अदरख डाले, तथा इलायची, जीरा, धनिया, नींबूका रस, डाले फिर सुगंधित घीमें इसको भून लेवे तो यह

मांसशृंगाटक कहाताहै । गुण । मांसशृंगाटक-रुचिकारी, बृंहण, फलकर्त्ता, भारी, वातपित्त हरण-करे, वृष्य, कफनाशक, और वीर्यको बढाताहै ।

मांसरस (सोरुआ.)

खिन्नमांसरसोरुच्यःश्रमश्वासक्षयापहः ॥
प्रीणनोवातपित्तघ्नःक्षीणानामल्परेतसाम् ९४
विश्लिष्टभग्नसन्धीनांशुद्धानांशुद्धिकां-
क्षिणाम् ॥
स्मृत्योजोबलहीनानांज्वरक्षीणक्षतोरसाम् ॥
शस्यतेस्वरहीनानादृष्ट्यायुःश्रवणार्थिनाम् ॥
प्रकाराःकथिताःसतिबहवोमांससंभवाः ॥
ग्रंथविस्तारभीतेस्तेमयानात्रप्रकीर्तिताः ९६

अर्थ-खिन्नकरा हुआमासका रस अर्थात् सोरुआ रुचिकर्त्ता, श्रम, श्वास, क्षय, इनको दूरकरे, प्रीणन, वातपित्तनाशक, क्षीण (लटेहुए) और अल्पवीर्य-वालोंके देह और वीर्यको पुष्ट कर्त्ता, बिखरीहुई और टूटी सधियोंको जोडनेवाला, शुद्धिकी आकाक्षा करनेवाले तथा वमनविरेचनादिसे जो शुद्ध हो चुकेहैं, तथा जो स्मरणशक्ति ओज और बलहीन है, जो ज्वरसे क्षीण और स्वरहीन उनके वास्ते यह पर-मोत्तमहै। जिनकी दृष्टी आयु सुननेकी शक्ति ए बढा नेही उनको यह मांसरस परम हितकारी है। मांसके पदार्थ बनानेके अनेक प्रकार है । परतु मैंने ग्रंथ बढनेके भयसे इस भावप्रकाश ग्रंथमें नहीं कहे ।

साग बनानेकी विधि

हिंगुजीरयुतेतैलेक्षिपेच्छाकसुखण्डितम् ॥
लवणंचाम्लचूर्णादिसिद्धेहिंगूदकंक्षिपेत् ॥
इत्येवसर्वशाकानासाधनोऽभिहितोविधिः ॥

अर्थ-प्रथम सागको स्वच्छकर सुधारले, फिर कढाहीमें तेल डाले उसमें हींग और जीरा भूनके साग छौंक देवे, फिर निमक खटाई, और मसाला डाले । जब सिद्ध होजावे तब हींगका जल डालके उतारले । इसीप्रकार सर्वसागोंको बुद्धिमान मनुष्य बनाय लेवे ।

(मठ मीठी मठरी)

समितामर्दयेदन्यजलेनापिचसज्जयेत् ॥
तस्यास्तुघटिकांकृत्वापचेत्सर्पिषिनीरसम् ॥
एलालवंगकर्पूरमरीचाद्यैरलकृते ॥
मज्जयित्वासितापाकेततस्तंचसमुद्धरेत् ९९
अयप्रकारःसंसिद्धोमंठइत्यभिधीयते ॥१००॥
मंठस्तुबृंहणोवृष्योबल्यःसुमधुरोगुरुः
पित्तानिलहरोरुच्योदीप्ताग्नीनांसुपूजितः ॥१॥
समिता-सर्करासर्पिर्निर्मिताअपरेऽपिये ॥
प्रकाराअमुनातुल्यास्तेऽपिचेत्सद्गुणाःस्मृताः

अर्थ-प्रथम मेदामें मोमन देकर उसको जलसैं उसनके खूब गूदे और उसमें इलायचीदाने, लौंग, कपूर और कालीमिरच आदिके चूर्णको डालके टिकरी बनाय घीमें मद अग्निसैं सेक लेवे, फिर इनको निकालके चासनीमें तल लेवे । इस प्रकारसे बनीहुई मठरियोंको (मठ यामिठीमठरी) कहतेहै । गुण । मिठीमठरी, बहण, वृष्य, बलकारा, मधुर, भारी पित्त वादीको हरणकर्त्ता, रुचिकारी, यह दीप्ताग्नीवा, लोंको हितकारी है। इसीप्रकार मेदा खाडसे घीके बने-पदार्थ (बालूसाई, मेदाके लड्डू, पगेमा सकलपारे आदि जो पदार्थ बनाए जात ह वोभी) इसीप्रकारसे बनते है उनमेंभी ऐसेही गुण हे ।

सयाव (गूझा गुझिया)

पर्पट्यःसाज्यसमितानिर्मिताघृतभर्जिताः ॥
कुट्टिताश्चालिता शुद्धशर्कराभिर्विमर्दिताः ३
तत्रचूर्णक्षिपेदेलालवंगमरिचानिच ॥
नालिकेरंसकर्पूरंचारबीजान्यनेकधा ॥ ४ ॥
घृताक्तसमितापुष्टरोटिकारचिताततः ॥
तस्यांत पूरणंतस्यकुर्यान्मुद्रांदृढांसुधी ॥५॥
सर्पिषिप्रचुरेतांतुसुपचेन्निपुणोजनः ॥
प्रकारैःप्रकारोऽयंसयावइतिकीर्तितः ॥६॥

अर्थ-मेदा और घी मिलायके पापडी बनाय घीमें सेक लेवे, जब सिक जावे तब निकालके कूट डाले, फिर बारीक चालनीमें डालके छान लेवे, इसमें सपेद बूरा मिलायके एकजीव करे, और इलायचीदानें, लोग, कालीमिरच, नारियलकी गिरी, बरास और चिरोजी ए डाले फिर मोमन दोनी हुई मेंदाकी मोटी और बडी रोटीसी बेटके उसके भीतर इस कूरको भरे, और फिर इसकी गुझिया बनायके मोक गूथ

देवे, फिर बहुतसे घीमें सेके इस प्रकारको पंडितजन संयाव कहते है अर्थात् गूंझा गुझिया कहते हैं।

कर्पूरनाली.

घृताढ्ययासमितयालंबंकृत्वापुटंततः॥
लवंगोल्वणकर्पूरयुतयासितयाऽन्वितम्॥७॥
पचेदाज्येनसिद्धैषाज्ञेयाकर्पूरनालिका॥
संयावसदृशीज्ञेयागुणैःकर्पूरनालिका॥८॥

अर्थ–मोमन दीनी हुई मैदाको उसनकै लंबा संपुट बनावे उसमें लौंग बरास (भीमसेनीकपूर) और खांड मिलायकै भर देवे फिर मुख बंदकर घीमें सेक लेवे इसको कर्पूरनालिका कहते हैं इससे संयावके समान गुण हैं।

फेनिका (फैनी)

समितायाघृताढ्यायावर्त्तिदीर्घांसमाचरेत्॥
तास्तुसन्निहितादीर्घाःपीठस्योपरिधारयेत्
वेल्लयेद्वेल्लनेनैतायथैकापर्पटीभवेत्॥
ततश्छुरिकयातांतुसलग्नामेवकर्त्तयेत्॥१०॥
ततस्तुवेल्लयेद्भूयःसट्टकेनचलेपयेत्॥
शालिचूर्णंघृतंतोयंमिश्रितंशट्टकंवदेत्॥११॥
ततःसंवृत्यतल्लोप्त्रींविदधीतपृथक् पृथक्॥
पुनस्तांवेल्लयेल्लोप्त्रींयथास्यान्मण्डलाकृतिः
ततस्तांसुपचेदाज्येभवेयुश्चपुटाःस्फुटाः॥
सुगंधयाशर्करयातदुकूलनमाचरेत्॥१३॥
सिद्धैषाफेनिकानाम्नोमंडकेनसमागुणैः॥
ततःकिंचिल्लघुरियंविशेषोऽयमुदाहृतः १४

अर्थ–प्रथम मैदाको सानकैं उसमें घी डालके लंबी २ बत्तीसी बनावे, और फिर उसको लपेटकै फिर लंबी बत्तीकरे, फिर इनको वेलनसैं वेलकर पापडी बनावे। फिर इसको छुरीसैं कतरकर फिर वेले, और फिर इनपर सट्टकका लेप करे, चावलका चून, घी और जल इन सबको मिलाय हथेलीसैं मथडाले इसको सट्टक कहते है, इससे उस लोईको लपेटकैं वेल लेवे। जैसे गोल चंद्रमाके आकार होजावे, फिर इसको घीमें सेके तो उसमें अनेक तारसे २ हो जावेगे फिर इनको [चासनीमें पाग लेवे]

अथवा सुगंधित बूरेमें लपेट लेवे। यह फैनी कहातीहै इसमें गुण मंडकके समान है। परंतु मंडकसैं कुछ हलकी है यह इनमें विशेषता है।

मैदाकी पूडी. शष्कुली.

समितायाघृताढ्यायालोप्त्रींकृत्वाचवेल्लयेत्
आज्येतांभर्जयेत्सिद्धांशष्कुलीफेनिकागुणा।

अर्थ–मोमन डाली हुई मैदाको उसनके लोई करे, फिर इनको पतली बेलकर घी छोड देवे, जब सिक जावे तब उतार लेवे इसमें फैनीके समान गुण हैं। पूरवके देशमें सुहारी कहते हैं।

सेवके लड्डू.

घृताढ्ययासमितयाकृत्वासूत्राणितानितु॥
निपुणोभर्जयेदाज्येखण्डपाकेनयोजयेत्॥
युक्तेनमोदकान्कुर्यात्तेगुणैर्मंडकायथा १६

अर्थ–मोमन डालीहुई मैदाके सेव तयार करके घीमें सेक लेवे। फिर इनके टुकडे करकै खांडमें पागकर लड्डू बनायले। सेवके लड्डुओंके गुण मंडकके समान है।

बूंदीके लड्डू.

मुद्गानांधूमसींसम्यग्घोलयेन्निर्मलांऽबुना॥
कटाहस्थघृतस्योर्ध्वंझर्झरंस्थापयेत्ततः॥
धूमसींतुद्रवीभूतांप्रतिपेत्झर्झरोपरि॥१८॥
पतंतिबिंदवस्तस्मात्तान्सुपक्वान्समुद्धरेत्
सितापाकेनसंयोज्यकुर्याद्धस्तेनमोदकान्॥
लघुर्ग्राहीत्रिदोषघ्नःस्वादुःशीतोरुचिप्रदः॥
चक्षुष्योज्वरहृद्बल्यस्तर्पणोमुद्गमोदकः २०

अर्थ–मूंगकी धूमसीको स्वच्छ जलमें घोलकै मथलेवे, फिर घीके भरेहुए कढावपर बडे २ छिद्रवाली झंझरी रखकै उसमें उस मूंगकी सनी हुई धूमसीको भर देवे, और धीरे धीरे उसको कढावपर ठोके तो उन छिद्रोंसैं छोटी बूंद टूटकर घीमें पडेगी उनको सिकनेपर निकालकै चासनीमें पाग लेवे, फिर चासनीको गाढी होनेपर लड्डू बनाय ले। गुण। बूंदीके लड्डू हलके, ग्राही, त्रिदोषनाशक, स्वादु, शीतल, रुचिदायक, नेत्रोंको हितकारी, ज्वर हरण-

कर्त्ता, बलकारी, और धातुओंको तृप्त करे ए मूंगकी बूंदीवाले लडूओंके गुण है ।

मोतीचूरके लडू.

एवमेवप्रकारेणकार्याःबेसनमोदकाः ॥
तेबल्याःलघवःशीताःकिंचिद्वातकरास्तथा ॥
विष्टंभिनोज्वरघ्नाश्चपित्तरक्तकफापहाः २१

अर्थ–इसीप्रकारसें बेसनकी बूंदीके लडू बनावे । गुण । बलकर्त्ता, हलके, शीतल, किंचित् वातकर्त्ता, विष्टंभी ज्वरनाशक, रक्तपित्त और कफको नाश करते हैं ।

दुग्धकूपिका.

तंडुलचूर्णविमिश्रितनष्टक्षीरेणसांद्रपिष्टेन ॥
दृढकूपिकांविदध्यात्तांचपचेत्सर्पिषासम्यक्
अथतांकोरितमध्यांघनपयसापूर्णगर्भांगं ॥
शर्करासुमिश्रितवदनांसर्पिषिसुपक्वचदनांच २३
अथपांडुखण्डपाकेक्षपयेत्कर्पूरवासितेकु-
शलः ॥
अथदुग्धकूपिकासाबल्यापित्तानिलापहा २४
वृष्याशीतागुर्वीशुक्रकरीबृंहणीरुच्या ॥
विदधातिकायपुष्टिंदृष्टिंदूरप्रसारिणींसुचि-
रम् ॥ २५ ॥

अर्थ–चावलोंका चूर्णकर उसमें गाढा १ खोहा मिलायके दृढकूपिका (कुप्पीसी) बनावे उनको घीमें छोडकर पचावे, फिर उनको निकाल बीचमें छेदकर गाढा २ मिश्री मिला दूध भरदेवे, और शटकसें मुख बंदकर फिर घीमें पक्व करे, जब पीलेरंगकी होजावे तब घीमेंसें निकालके कपूर मिली चासनीमें तल लेवे । गुण । ए दुग्धकूपिका, बलकारी, पित्तवातनाशक, वृष्य, शीतल, भारी, वीर्य करनेवाली, बृंहणी, रुचिकारी हैं । देहको पुष्टकर्त्ता, और नेत्रकी ज्योतिको बढानेवाली हैं ।

कुंडलनी (जलेबी)

नूतनंघटमानीयतस्यांतःकुशलोजनः ॥
प्रस्थार्द्धपरिमाणेनदध्नाम्लेनप्रलेपयेत् २६
द्विप्रस्थांसमितांतत्रदध्यम्लंप्रस्थसंमितम् ॥
घृतमर्धशरावंचघोलयित्वाघृतेक्षिपेत् ॥
आतपेस्थापयेत्तावद्यावद्यातितदम्लताम् ॥
ततस्तत्प्रक्षिपेत्पात्रेसच्छिद्रेभाजनेतुतत् २८
परिभ्राम्यपरिभ्राम्यतत्संतप्तेघृतेक्षिपेत् ॥
पुनःपुनस्तदावृत्याविदध्यान्मण्डलाकृतिम् ॥
तांसुपक्वांघृतान्नीत्वासितापाकेतनुद्रवे ॥
कर्पूरादिसुगंधंचस्नापयित्वोद्धरेत्ततः ॥३०॥
एषाकुंडलिनीनाम्नापुष्टिकांतिबलप्रदा ॥
धातुवृद्धिकरीवृष्यारुच्याचाक्षिप्रतर्पणी ३१

अर्थ–नवीन मट्टीके घडेमें एक सेर खट्टे दहीका लेप करदेवे, फिर उसमें दोसेर मैदा डाले और १ सेर खट्टा दही डाले, घी पावभर ले सबको घोलके ऊपरसे घीको डालके घोल डाले, फिर इसको जबतक खट्टी नहोवे तबतक धूपमें रख देवे, फिर इसको पेंदीमें छेदहो उस हांडीमें भरके तईको भट्टीपर चढाय घी भर देवे, जब गरम होजावे तब उसपर उस छेदवाली हांडीको फेर २ के जलेबी बनावे और जब वो सिक जावे तब निकालके इकतारी चासनीमें पाग लेवे, और उस चासनीमें कर्पूरआदि सुगंधित पदार्थभी डालने चाहिये । फिर निकाल लेवे । गुण । यह कुंडलनी (जलेबी) पुष्टिकर्त्ता, कांतिकर्त्ता, बलदायक, रसरक्तादि धातुओंको बढावे, वृष्य, रुचिकारी, और तत्काल धातुओंको तर्पण करता है ।

सिखरन (रसाला)

आर्द्रैमाहिषमम्लमंबुरहितंदध्याढकं शर्कराम् ॥ शुभ्रांप्रस्थयुगोन्मितांशुचिपटेकिंचित्किंचित्क्षिपेत् ॥ दुग्धेनार्द्धघटेनमृन्मयनवस्थाल्यांदृढंस्नावयेत् ॥ एलाबीजलवंगचंद्रमरिचैर्योग्यैश्चतद्योजयेत् ॥ ३२ ॥
भीमेनप्रियभोजनेनरचितानाशारसालास्वयं ॥ श्रीकृष्णेनपुरापुनःपुनरियंप्रीत्यासमास्वादिता ॥ एषायेनव-

संतर्पितंतदिनेसंसेव्यतेनित्यशः-स्तस्य-
स्यादतिवीर्यवृद्धिरमितंसर्वेंद्रियाणां-
बलम् ॥ ३३ ॥
ग्रीष्मेतथाशरदियेरविशोषितांगा
येचप्रमत्तवनितासुरतातिखिन्नाः ॥
येचापिमार्गपरिसर्पणशीर्णगात्रास्ते-
षामियंवपुषिपोषणमाशुकुर्यात् ॥ ३४ ॥
रसालाशुक्रलाबल्यारोचनीवातपित्तजित् ॥
दीपनीबृंहणीस्निग्धामधुराशिशिरासरा ॥
रक्तपित्तंतृषांदाहंप्रतिश्यायंविनाशयेत् ३५

अर्थ–प्रथम खटाई और जलरहित गाढा भैसका दही ४ सेर लेवे, इसमें २ सेर सपेद बूरा मिलावे, फिर इसको स्वच्छ गाढे कपडेमें डालकै हाथोंसे मले तो सब दही छन २ कै नीचेके पात्रमें एकत्र होवे परंतु इसमें पांचसेर दूधकी धार डालकर छाने, और नीचे मिट्टीका पात्र रक्खे जब सब दही छन जावे तब इसमें इलायचीकेबीज, लौंग, भीमसेनी कपूर, कालीमिरच, इनका चूर्ण [सहत] डाले। यह भोजनप्रिय भीमसेनने रसाला बनाई और श्रीकृष्णने परम प्रीतिके साथ वारंवार भोजन करी। जो प्राणी इसको वसंतऋतुको त्यागकर नित्य भोजन करतेहै उसके अत्यंत वीर्य वृद्धि होय, और सर्वइन्द्रीयोंमें बल आवे। ग्रीष्मऋतु वा शरदऋतुमें सूर्यकी धूपसे शुष्क देहवालोंको तथा प्रमत्त स्त्रीके साथ विलास करनेसैं खेदित होगए हैं, तथा जिनका बहुत रास्ता चलनेसे देह बिखरगया है उनके देहको यह श्रीखंड तत्काल पुष्ट करता है। रसाला (श्रीखंड) शुक्रकर्त्ता, बलकर्त्ता, रुचिकारी, वातपित्तको जीतने वाली, दीपनी, बृंहणकारी, स्निग्ध, मधुर, शीतल, और दस्तावर। यह रक्तपित्त, प्यास, दाह, सरेकमा, इनको नष्ट करे।

शर्करोदक (सरवत)

जलेनशीतलेनैवघोलिताशुभ्रशर्करा ॥
एलालवंगकर्पूरमरिचैश्वसमान्विता ॥ ३६ ॥
शर्करोदकनाम्नातत्प्रसिद्धंविदुषांमुखे ॥
शर्करोदकमाख्यातंशुक्रलंशिशिरंसरम् ३७
बल्यंरुच्यंलघुस्वादुवातपित्तप्रणाशनम् ॥
मूर्च्छाछर्दितृषादाहज्वरशांतिकरंपरम् ३८

अर्थ–शीतल जलमें सपेद, बूरा वा खांडके ओले घोल फिर छोटी इलायची, लौंग, भीमसेनी कपूर और काली मिरच इनको जलसैं बारीक पीस उस जलमें मिलाय देवे, फिर स्वच्छ कपडेमें इसको छान लेय, इसे संस्कृतमें शर्करोदक और हिन्दीमें सरवत कहते हैं। गुण। वीर्य प्रगटकरे, शीतल, दस्तावर, बलकारी, रुचिकर, हलका, स्वादिष्ट, वातपित्तनाशक, मूर्च्छा, वमन, तृषा, दाह, और ज्वर इनको शांति करे [एक सरवत वो होता है कि जिसमें औषधोंका अर्क डालके अग्निपर सिद्ध करते हैं, जैसैं नीबूका सरवत, सहततका, अनारका, अंगूरका, इत्यादि]

प्रपानक (पनों) आम.

आम्रमामंजलेस्विन्नंमर्दितंदृढपाणिना ॥
सिताशीतांबुसंयुक्तंकर्पूरमरिचान्वितम् ३९
प्रपानकमिदंश्रेष्ठंभीमसेनेननिर्मितम् ॥
सद्योरुचिकरंबल्यंशीघ्रमिंद्रियतर्पणम् ॥४०॥

अर्थ–कच्ची अमियाओंको जलमें औंटाकर उनके गूदेको हाथोंसैं मीड डाले, फिर इसमें सपेद बूरा, शीतलजल, और कपूर, कालीमिरच, ए अनुमान माफिक डाले तो आमकापना बने। यह श्रेष्ठ प्रपानक भीमसेनने निर्माण कराहै-यह तत्काल रुचिकारक, बलकारी, तत्काल इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाला है।

अम्लिका प्रपानकम्.

अम्लिकायाःफलंपक्वंमर्दितंवारिणादृढम् ॥
शर्करामरिचैर्मिश्रंलवंगेंदुसुवासितम् ॥४१॥
अम्लिकाफलसंभूतंपानकंवातनाशनम् ॥
पित्तश्लेष्मकरंकिंचित्सुरुच्यंवन्हिबोधनम्।

अर्थ–पकीहुई उत्तम इमलीको जलमें भिगोय देवे फिर हाथोंसैं मलकर कपडेसैं छानलेवे, फिर इसमें सपेद बूरा, कालीमिरच, लौंग, और भीमसेनी कर्पूर अनुमान माफिक मिलावे यह इमलीका पाना

है । गुण । वातनाशक, कुछ २ पित्तकफकर्त्ता, रुचकारी, और अग्निको दीपन करनेवाला है ।

निंबूकफल प्रपानकम्.

भागैकंनिंबुजंतोयंषड्भागंशर्करोदकम् ॥
लवंगमरिचैर्मिश्रंपानंपानकमुत्तमम् ॥ ४३ ॥
निंबुफलभवंपानमत्यम्लंवातनाशनम् ॥
वन्हिदीप्तिकरंरुच्यंसमस्ताहारपाचकम् ४४

अर्थ–नीबूकारस १ भाग, सपेदबुरेका सरबत ६ भाग, तथा लौंग, कालीमिरच, इनको पीसकर मिलावे तो यह सब पानकोंमें उत्तम नीबूका पना बने । गुण । अत्यंत खट्टा, वातनाशक, अग्निदीप्तिकर, रुचिकारी, और संपूर्ण भोजन करेहुए आहारको पाचन करनेवाला है ।

धान्याकपानकम्.

धिलायांसाधुसंपिष्टंधान्याकंवस्त्रगालितम्॥
शर्करोदकसंयुक्तंकर्पूरादिसुसंस्कृतम् ॥
नूतनेमृन्मयेपात्रेस्थितंपित्तहरंपरम् ॥ ४५ ॥

अर्थ–प्रथम रात्रिमें धनियेको किसी कोरे कुल्हडेमें भिगोय देवे, फिर प्रातःकाल शिललोढेसें पीसके कपडेसें इसको छान लेवे, फिर मिश्रीका सरबत मिलाय कर्पूर आदिसें सुगंधित करे इसको कोरे मिट्टीके कुल्हडोंमें भरकें पीवे, तो पित्तके उपद्रवको हरण करे ।

कांजी.

कांजीकंरोचनंरुच्यंपाचनंवन्हिदीपनम् ॥
शूलाजीर्णविबंधघ्नंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥
नभवेत्कांजिकंयत्रतत्रझालीःप्रदीयते ॥४६॥

अर्थ–कांजीके बनानेकी विधि प्रथम कह आए हैं अब उसके गुण कहतेहैं-रोचक, पाचक, अग्निकों दीपनकर्त्ता, शूल, अजीर्ण और विबंधको दूर करे, कोठेको शुद्ध करताहै जहांपर कांजी न मिले तहां झालीदेनी चाहिये सो लिखतेहै ।

झाली.

आममाम्रफलंपिष्टंराजीकालवणान्वितम् ॥
भृष्टहिंगुयुतंपूतंघोलितंझालिरुच्यते ॥४७॥
झालिर्हरतिजिव्हायाःकुंठत्वंकंठशोधिनी ॥
मंदंमंदंतुपीतासारोचनीवन्हिबोधिनी ॥४८॥

अर्थ–कच्ची अमियाओंको पीस उसमें राई, सेंधानिमक, भुनीहींग, इनको मिलायके जलमें घोलकर जो पदार्थ तयार करा जाता है उसको झाली (जाली) कहतेहैं । गुण । जाली जीभके जिकडनेको दूर करे, धीरे २ इसको पीवे तो रुचिकरे और अग्निको दीपन करताहै ।

तक्रम्.

तुर्यांशेनजलेनसंयुतमतिस्थूलंसदम्लंदधि ॥
प्रायोमाहिषमंबुकेनविमलेमृद्भाजनेगालयेत्
भृष्टंहिंगुचजीरकंचलवणंराजींचकिंचिन्मि
ताम् पिष्टांतत्रविमिश्रयेद्भवतित-
त्तक्रंनकस्यप्रियम् ॥ ४९ ॥
तक्रंरुचिकरंवन्हिदीपनंपाचनंपरम् ॥
उदरेयेगदास्तेषांनाशनंतृप्तिकारकम् ॥ ५० ॥

अर्थ–अत्यंत गाढे और खट्टे दहीको इसमें भी भैसका होय तो बहुत उत्तम है उसमें दहीका चतुर्थांश जल डालके मट्टीके बरतनमें छान लेवे, फिर इसमें भुनी हींग, जीरा, निमक, राई, इनको पीसके अनुमान माफिक मिलाय देवे तो यह तक्र (छाछ) किसको प्रिय नहीं होती । गुण । छाछ-रुचिकार्गा-दीपन-अत्यंत पाचन-और पेटके रोगोंको नाशकर्त्ता तथा तृप्त करनेवाला है ।

दुग्ध (दूध)

विदाहीन्यन्नपानानियानिभुंक्तेहिमानवः ॥
तद्विदाहप्रशांत्यर्थंभोजनांतेपयःपिबेत् ५१

अर्थ–दूधका विशेष वर्णन आगे दुग्धवर्गमें कहेंगे, यहां थोडेसे गुण कहतेहैं । गुण । यह प्राणी जो दाह करता अन्न जलोंको सेवन करता है उनके दाह शांति करनेको भोजनके अंतमें दूध पीना चाहिये ।

सत्तू.

धान्यानिभ्राष्ट्रभृष्टानियंत्रपिष्टानिशक्तवः ॥

अर्थ–चावल-गेंहू आदि धान्योंको भाडमें भुनायके चक्कीसें पीस लेतेहैं उस चूनको सत्तू कहतेहै ।

जौंकासत्तू.

यवजाःशक्तवःशीतादीपनालघवःसरा ॥
कफपित्तहरारूक्षालेखनाश्चप्रकीर्त्तिताः ५२
तेपीताबलदावृष्याबृंहणाभेदनास्तथा ॥
तर्पणामधुरारुच्याःपरिणामेबलापहाः ५३
कफपित्तश्रमक्षुत्तृड्वृड्विनेत्रामयापहाः ॥
प्रशस्ताघर्मदाहाढ्यव्यायामार्त्तशरीरिणाम्

अर्थ–जौंके सत्तूका । गुण । जौंका सत्तू-शीतल, दीपन, हलका, दस्तावर, कफपित्तनाशक, रूक्ष और लेखनहै । इसका पीना बलदायक, वृष्य, बृंहण, भेदक, तृप्तकर्त्ता, मधुर, रुचकारी, अंतमें बलनाशक है । तथा कफ, पित्त, परिश्रम, भूंख, प्यास, अंडवृद्धि और नेत्ररोगको नष्ट करे । यह पसीनेसें और दाहसें व्याकुलहै तथा दंड कसरत करके थकित उनको हितकारी कहाहै ।

चना और जौंकासत्तू.

निस्तुषैश्चणकैर्भृष्टैस्तुर्यांशैश्चयवैःकृताः ॥
शक्तवःशर्करासर्पिर्युक्ताग्रीष्मेऽतिपूजिताः

अर्थ–छिलके रहित भुने चनोंमें तुषा रहित चौथाई भाग भुने जो मिलायकै जो सत्तू बनाया गया है, वो चनाजोंका सत्तू कहलाताहै । इसमें सपेद बूरा-घी, डालके गरमियोंमें भक्षण करना हितकारी है ।

शालिसत्तू.

शक्तवःशालिसंभूतावन्हिदालघवोहिमाः ॥
मधुराग्राहिणोरुच्यापथ्याश्चबलशुक्रदाः ॥
नभुक्त्वानरदैर्दिछत्त्वाननिशायांनवाबहून् ॥
नजलांतरितानद्भिःशक्तूनद्याच्चकेवलान् ५७
पृथक्पानंपुनर्द्दानमामिषंपयसानिशि ॥
दंतच्छेदनमुष्णंचसप्तशक्तुषुवर्जयेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ–चावलोंका सत्तू-अग्निवर्द्धक, हलका, शीतल, मधुर, ग्राही, रुचिकर्त्ता, पथ्य, बल और शुक्रको करताहै । अब सत्तू भक्षणके नियम कहतेहै । भोजन करके सत्तू न खाय, दांतोंसें रोंधकर न खाय, रात्रिमें न खाय, बहुत न खाय, एक जलमें दूसरे प्रकारका जल मिलायके न खावे, मिठाई आदिके बिना केवल जलसें सत्तू मात्र न खाय । अलगपिना, एक बार देकर दूसरे देना, मांसके साथ और दूधके साथ, रात्रिमें दातोंसें रोंधकर और गरम करके ऐसें सत्तूमें सात प्रकार वर्जितहैं ।

बहुरी.

यवास्तुनिस्तुषाभृष्टाःस्मृताधानाइतिस्त्रियां
धानाःस्युर्दुर्जरारूक्षास्तृट्प्रदागुरवश्चताः ॥
तथामेहकफच्छर्दिनाशिन्यःसंप्रकीर्त्तिताः

अर्थ–तुषरहित भुने जौंओंको धाना (बोहरी) कहतेहैं । गुण । बोहरी-दुर्जर (कठिनतासें पचे) रूखी, तृषा लगानेवाली, भारी । तथा प्रमेह, कफ और वमनके नाश करने वाली जाननी ।

खील (लाजा)

येषांस्युस्तण्डुलास्तानिधान्यानिसतुषाणिच
भृष्टानिस्फुटितान्याहुर्लाजानितिमनीषिणः
लाजाःस्युर्मधुराःशीतालघवोदीपनाश्चते ॥
स्वल्पमूत्रमलारूक्षाबल्याःपित्तकफच्छिदः
छर्द्यतीसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहाः ॥६१॥

अर्थ–छिलके युक्त चावलोंके धान्यको भून लेवे फिर जब वो खिल जावे तो उनके तुसोंको सूपसें फटकके दूर करे, इनका नाम संस्कृतमें लाजा और हिन्दीमें खील कहतेहै । गुण । मधुर, शीतल, हलकी, अग्नि दीपनकर्त्ता, अल्प मूत्रके करने वाली, रूक्ष, बलकर्त्ता, पित्त, कफ, वमन, अतिसार, दाह, रुधिर-विकार, प्रमेह, मेदरोग और तृषा, इनको दूर करे । अपने देशमें खील दिवालीके दिन बहुतवर्त्ती जातीहैं । और इनको बतासोंके साथ खातेहैं ।

चिउरा (चिरमुरा)

शालयःसतुषाआर्द्राभृष्टाअस्फुटिताश्चते ॥
कुट्टिताश्चिपिटाःप्रोक्तास्तेस्मृताःपृथुकाअपि
पृथुकागुरवोवातनाशनाःश्लेष्मलाअपि ॥
सक्षीराबृंहणावृष्याबल्याभिन्नमलाश्चते ६३

अर्थ–तुषसहित हरे शालीचावलोंको भुनते हैं । फिर उन बिना खिले हुएनको ओखलीमें डालके गरमागरमोंको कूटतेहैं । तो वो कुटकर चपटे होजाते हैं । उनको संस्कृतमें पृथुक और हिन्दी भाषामें

खिरचा अथवा खिउरा कहतेहैं । गुण । भारी, वातनाशक, कफकर्त्ता, यदि इनको दूधके साथ भक्षण करे तो बृंहण, वृष्य, बलकारी और दस्तलानेवाले जानने ।

होला.

अर्द्धपक्वैःशमीधान्यैस्तृणभृष्टैश्चहोलकः ॥
होलकोऽल्पानिलोमेदःकफदोषत्रयापहः ॥
भवेद्योहोलकोयस्यसचतत्तद्गुणोभवेत् ६४

अर्थ–फलियोंके धान आधे भुनेहुए और तिनका जिनका जल गया हो उनको होलक अर्थात् होला, वा होरा कहतेहैं । गुण । जिस धानका होय वो उसी धानके समान गुण करताहै । जैसे चनेके होले चनेके समान गुण करते हैं ।

उंबी.

मंजरीत्वर्धपक्वायायवगोधूमयोर्भवेत् ॥
तृणानलेनसंभृष्टाबुधैरुंबीतिसास्मृता ॥
उंबीकफप्रदाबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ६५

अर्थ–जो गेहूंकी अधपकी बालको तिनकेकी आगमें भून लेवे । इसको पंडितजन उंबी कहते है । गुण । कफकर्त्ता, बलकारी, हलकी, और पित्तकफको नाश करे है ।

घूंघनी.

अर्धस्विन्नास्तुगोधूमाअन्येऽपिचणकादयः ॥
कुल्माषाइतिकथ्यंतेशब्दशास्त्रेषुपंडितैः ॥
कुल्माषागुरवोरूक्षवातलाभिन्नवर्चसः॥६६॥

अर्थ–गेंहूं, चने आदि धानोंको अधभुने करलेवे इनको संस्कृतमें कुल्माष और हिन्दीमें घूंघनी कहते हैं । गुण । भारी, रूक्ष, वातकर्त्ता और दस्तलानेवाले हैं ।

तिलकुटा.

पललंतुसमाख्यातंमैश्रंचतिलपिष्टकम् ॥
पललंमलकृद्वृष्यंवातघ्नंकफपित्तकृत् ॥
बृंहणंचगुरुस्निग्धंमूत्राधिक्यनिवर्त्तकम् ६७

अर्थ–तिलोंमें गुड अथवा सक्कर सकोरा आदि डालके कूट डाले इसको संस्कृतमें तिलकुट कहते हैं । गुण । मलकर्त्ता, वृष्य, वातनाशक, कफपित्तकर्त्ता, बृंहण, भारी, स्निग्ध, और अधिक मूत्र उतरनेको दूर करे ।

पीना.

तिलकिट्टंतुपिण्याकंतथातिलखलिःस्मृता ॥
पिण्याकोलेखनोरूक्षोविष्टंभीदृष्टिदूषणः ६८

अर्थ–तिलोंमेंसे तेल निकल जानेपर जो कीट रहजाती है उसको संस्कृतमें पिण्याक तथा तिलखलि और हिन्दीमें खल कहते है । गुण । लेखन रूक्ष, विष्टंभी, और नेत्रकी ज्योति बिगाडने वाली है ।

चावर.

तंडुलोमेहजंतुघ्नःसनवस्त्वतिदुर्जरः ॥ ६९ ॥

अर्थ–चावल-प्रमेह, और कृमिरोगको नष्ट करे और नए चावल अत्यंत दुर्जर होते है ।

इति श्री अभिनवनिघंटे कृतान्नवर्गः ।

अथवारिवर्गः

जलके नाम.

पानीयंसलिलंनीरंकीलालंजलमंबुच ॥
आपोवार्वारिकंतोयंपयःपाथस्तथोदकम् ॥
जीवनंवनमंभोऽर्णोऽमृतंघनरसोऽपिच ॥ १ ॥
पानीयंश्रमनाशनंक्लमहरंमूर्च्छापिपासापहं॥
तंद्राच्छर्दिविबंधहृद्बलकरंनिद्राहरंतर्पणम् ॥
हृद्यंगुप्तरसंह्यजीर्णशमकंनित्यंहितंशीतलं ॥
लघ्वच्छंरसकारणंनिगदितंपीयूषवज्जीवनम्

अर्थ–पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अंबु, आप, वार, वारि, तोय, पाथ, उदक, जीवन, अंभ, अर्ण, अमृत और घनरस, ए जलके संस्कृत नाम है । हिं. पानी, म. पाणी, तै. नीरु, का. मुनीरु, अ. माय, फा. आब, इं. वाटर, ला. एका । गुण । श्रमनाशक, ग्लानिनाशक, मूर्च्छा, प्यास, तंद्रा, वमन, विबंध इनको दूर करे, बलकारी, निद्रानाशक, इन्द्रियोंको तृप्त करे, हृदयको हितकारी, इसका रस छिपा हुआ है । अजीर्णनाशक, नित्य हितकारी, शीतल, हलका, निर्मल, रसोंका कारण और अमृतके तुल्य सब प्राणियोंका जीवन है ।

अलके भेद.

पानीयंमुनिभिःप्रोक्तंदिव्यंभौममितिद्विधा ॥
दिव्यंचतुर्विधंप्रोक्तंधाराजंकरकाभवम् ॥
तौषारंचतथाहैमंतेषुधारंगुणाधिकम् ॥ ३ ॥

अर्थ-मुनीश्वरोंने दिव्य और भौम इन दो भेदोंसें जल दोप्रकारका कहा है । तहां दिव्यजल चार प्रकारका है । जैसे-धाराज, करकाभव, तौषार और हैम । इनमें धाराजल गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

धाराजलके गुण.

धाराभिःपतितंतोयंगृहीतंस्फीतवाससा ॥
शिलायांवासुधायांवाधौतायांपतितंचतत् ४
सौवर्णेराजतेताम्रेस्फाटिकेकाचनिर्मिते ॥
भाजनेमृण्मयेवापिस्थापितंधारमुच्यते॥ ५ ॥
धारंनीरंत्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसंलघु ॥
सौम्यंरसायनंबल्यंतर्पणंल्हादिजीवनम् ॥ ६॥
पाचनंमतिकृन्मूर्च्छातंद्रादाहश्रमक्लमान् ॥
तृष्णांहरतिनात्यर्थंविशेषात्प्रावृषिस्थितम् ७

अर्थ-धारारूपसे गिरेहुए जलको कपडेसें छानले। वह धुलीहुई शिलामें अथवा चूनेमें होवे । उसमेंसें सुवर्णके, चांदीके, तांबेके, स्फटिकमणिके, काचके, अथवा मिट्टीके बासनमें भर लेना उसको धाराजल कहतेहै । गुण । धाराजल-त्रिदोषनाशक, गुप्तरस, हलका, शीतल, रसायन, बलकारी, तृप्तकर्त्ता, आल्हादकर्त्ता, जीवन, पाचन, बुद्धिबढानेवाला, मूर्च्छा, तन्द्रा दाह, श्रम, क्लम (थकलाहट) और तृषाको दूर करे। परंतु ये गुण शरदऋतुमें करैहै, वर्षाऋतुमें ये गुण अल्प करता जानना ।

धाराजलके भेद.

धाराजलंचाद्विविधंगांगसामुद्रभेदतः ॥

अर्थ-धाराजल दो प्रकारका है एक गंगाका और दूसरा समुद्रका ।

गंगाजल और समुद्रजलका लक्षण.

आकाशगंगासंबंधिजलमादायदिग्गजाः ॥
मेघैरंतरितावृष्टिंकुर्वंतीतिवचःसताम् ॥ ८ ॥
गांगमाश्वयुजेमासिप्रायोवर्षतिवारिदः ॥
सर्वथातज्जलंदेयंतथैवचरकेवचः ॥ ९ ॥
स्थापितेहैमजेपात्रेराजतेमृन्मयेऽपिवा ॥
शाल्यन्नंयेनसंसिक्तंभवेदक्लेदिवर्णवत् ॥१०॥
तद्गांगंसर्वदोषघ्नंज्ञेयंसामुद्रमन्यथा ॥
तत्तुसक्षारलवणंशुक्रदृष्टिबलापहम् ॥ ११ ॥
विस्रंचदोषलंतीक्ष्णंसर्वकर्मसुनोहितम् ॥
सामुद्रंत्वाश्विनेमासिगुणैर्गांगवदादिशेत्१२
यतोऽगस्त्यस्यदिव्यर्षेरुदयात्सकलंजलम् ॥
निर्मलंनिर्विषंस्वादुशुक्रलंस्याददोषलम् १३
फूत्कारविषवातेननागानांव्योमचारिणाम् ॥
वर्षासुसविषंतोयंदिव्यमप्याश्विनंविना १४

अर्थ-सत्पुरुषोंका कथन है कि आकाशगंगा संबंधी जलको दिग्गज लेकर मेघोंमें छिपेहुए प्राय आश्विन महिनेमें मेघद्वारा वर्षा करतेहैं, वो जल सर्वथा सबको देना चाहिये, तथा चरकमेंभी लिखाहै । गंगाजलकी परीक्षा । सुवर्णके अथवा चांदीके अथवा मिट्टीके पात्रमें चावल डालके जलभर देवे, यदि वो चावल विगडे नहीं न उनका वर्ण पलटे तो गंगाजल जानना । यह सर्व दोषनाशक है, और यदि चावल सड जावे और रंग पलट जावे तो उस जलको समुद्रजल जानना यह सर्व दोष कर्ताहै । यह खारी, शुक्र, दृष्टि, और बलका नाशक, दुर्गंधवाला, दोषकर्त्ता, तीक्ष्ण, और यह सर्व कर्मोंमें हितकारी नहींहै । परंतु आश्विन महिनेमें जो समुद्रसंबंधी वर्षाका जलहै वो गंगाजलके समान गुण करनेवाला जानना । कारण कि आश्विन महिनेमें अगस्त्य ऋषिके उदय होनेसे संपूर्ण जल निर्मल, निर्विष स्वादु, शुक्रकर्त्ता, और अदोषकारी, होतेहैं । अन्यत्रभी लिखाहै कि आकाशमें विचरनेवाले सांपोंके फुंकारकी विषैल पवनसें वर्षाऋतुमें दिव्यजलभी विषयुक्त होजातेहै । परंतु आश्विन महिनेमें विषयुक्त नहीं होते ।

अनार्त्तवजलके दोष.

अनार्त्तवंप्रमुंचंतिवारिवारिधरास्तुयत् ॥
तत्त्रिदोषायसर्वेषांदेहिनांपरिकीर्तितम् १५

अर्थ-जो (फूसरौं लेकर चारमहिने पर्यंतके वर्षाका जलहै यह) अनार्तव अर्थात् कुऋतुका जल जानना। यह संपूर्ण प्राणियोंको त्रिदोष करनेवालाहै ।

करकाजलके लक्षण और गुण.

दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहताःखात्पतंतियाः
पाषाणखंडवच्चापस्ताःकारिकयोऽमृतोपमाः
करकाजंजलंरूक्षंविशदंगुरुचस्थिरम् ॥
दारुणंशीतलंसांद्रंपित्तहृत्कफवातकृत् १७

अर्थ-दिव्य पवन-बिजलीके संयोगसैं ताडित हो जो जल आकाशसैं पत्थरके रूपसैं अर्थात् ओले रूपसैं गिरताहै उसको करकाजल कहते है, यह अमृतके तुल्यहै । गुण । ओलेका जल रूक्ष, विशद, भारी, स्थिर (बंधाहुआ) दारुण, शीतल, गाढा, पित्तहरण कर्त्ता और वादीकफको करने वालाहै ।

तौषारजलके लक्षण गुण.

अपिनद्याःसमुद्रांतेवह्निरापस्तदुद्भवाः ॥
धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तुताःस्मृताः
अपथ्याःप्राणिनांप्रायोभूरुहाणांतुनोहिताः ॥
तुषारांबुहिमंरूक्षंस्याद्वातलमपित्तलम् ॥
कफोरुस्तंभकंठाग्निमेहगंडादिरोगनुत् १९

अर्थ-नदीसैं लेकर समुद्र पर्यंत अग्नि है उस अग्निसैं उत्पन्न जल धूएके अवयव रहित तुषारसंज्ञक कहाताहै, अर्थात् जिसको ओस कहतेहैं, वह प्राणियोंको अहितहैं और वृक्षोंको हितकारीहै । गुण तुषारकाजल-शीतल, रूक्ष, वातकर्त्ता और पित्त नहीं करे । कफ, जंघा, स्तंभता, कंठ, जठराग्नि, प्रमेह और गलगंडादि रोगको दूर करै ।

हैमजलके लक्षण.और गुण.

हिमवच्छिखरादिभ्योद्रवीभूयाभिवर्षति ॥
यत्तदेवहिमंहैमंजलमाहुर्मनीषिणः ॥
हिमांबुशीतंपित्तघ्नंगुरुवातविवर्द्धनम् ॥२०॥
हिमंबुशीतलंरूक्षंदारुणंसूक्ष्ममित्यपि ॥
नतद्दूषयतेवातंनचपित्तंनवाकफम्॥ २१ ॥

अर्थ-हिमालय सदृश बर्फानू पहाडोंसे जो बर्फ गलकर जल टपकता है उसको बुद्धिमान् हिमजल कहतेहैं । गुण । बर्फका जल-शीतल, रूक्ष, दारुण, सूक्ष्म, यह वातको दूषित नहीं करे, न पित्तको न कफको दूषित करताहै ।

भौमजलके भेद.

भौममंभोनिगदितंप्रथमंत्रिविधंबुधैः ॥
जांगलंपरमानूपंततःसाधारणंक्रमात् ॥२२॥

अर्थ-भौमजल अर्थात् पृथ्वीसंबंधी जल तीन प्रकारकाहै, एक जांगलजल, दूसरा अनूप जल, और तीसरा साधारण देशका इनके लक्षण और गुण आगे कहतेहै ।

जांगलजलके लक्षण.

अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्चपित्तरक्तामयान्वितः ॥
ज्ञातव्योजांगलोदेशस्तत्रत्यंजांगलंजलम् २३

अर्थ-जिस देशमें थोडा जल और थोडे वृक्ष हों । तथा जहां प्राणी पित्त और रुधिरके रोगवाले हो, उस देशको जांगलदेश जानना, उस देशके जलको जांगलजल कहतेहैं ।

अनूपजलके लक्षण.

बह्वंबुर्बहुवृक्षश्चवातश्लेष्मामयान्वितः ॥
देशोऽनूपइतिख्यातआनूपंतद्भवंजलम् २४

अर्थ-जिस देशमें बहुत जल और बहुत वृक्ष हो, तथा जहांके रहनेवाले प्राणी वातकफकी बिमारीसैं बिमार रहै, उसको अनूपदेश जानना, उस देशके जलको अनूपजल कहतेहैं ।

साधारणदेशके जलके लक्षण.

मिश्रचिह्नस्तुयोदेशःसहिसाधारणःस्मृतः ॥
तस्मिन्देशेयदुदकंतत्तुसाधारणंस्मृतम् २५

अर्थ-जिस देशमें जांगल और अनूप दोनों देशोंके लक्षण मिलते हों तथा बिमारीभी मिश्रित होतीहों उस देशको साधारण कहतेहैं ।

अनूपादि त्रिविधिजलके गुण.

जांगलंसलिलंरूक्षंलवणंलघुपित्तनुत् ॥
वह्निकृत्कफहृत्पथ्यंविकारान्हरतेबहून् ॥

आनूपंवार्यभिष्यंदिस्वादुस्निग्धंघनंगुरु ॥
वह्निहत्कफकृद्धृद्यंविकारान्कुरुतेबहून् ॥
साधारणंतुमधुरंदीपनंशीतलंलघु ॥
तर्पणंरोचनंतृष्णादाहदोषत्रयप्रणुत् ॥ २८ ॥

अर्थ-जांगलजल रूक्ष, निमकीन, हलका, पित्त हरण कर्त्ता, जठराग्नि वर्द्धक, कफनाशक, पथ्य, और यह बहुतसे विकारोंको हरण करे। अनूपजल-अभिष्यंदी, स्वादु, स्निग्ध, गाढा, भारी, मंदाग्निकर्त्ता, कफकारी, हृद्य, और अनेक विकारोंको करताहै। साधारण-जल मधुर, दीपन, शीतल, हलका, तृप्तकारी, रोचन, तृषा, दाह और त्रिदोषको हरण करे।

नदीजलके लक्षण गुण.

नद्यानदस्यवानीरंनादेयमितिकीर्त्तितम् ॥
नादेयमुदकंरूक्षंवातलंलघुदीपनम् ॥
अनभिष्यंदिविशदंकटुकंकफपित्तनुत् २९
नद्यःशीघ्रवहालघ्व्यःसर्वायाश्चामलोदकाः ॥
गुर्व्यःशैवलसंछन्नामंदगाःकलुषाश्चयाः ३०
हिमवत्प्रभवाःपथ्योनद्योऽश्माहतपाथसः ॥
गंगाशतद्रुसरयूयमुनाद्यागुणोत्तमाः ॥३१॥
सह्यशैलभवानद्योवेणागोदावरीमुखाः ॥
कुर्वंतिप्रायशःकुष्ठमीषद्वातकफापहाः ॥३२॥
नदीसरस्तडागस्थेकूपप्रस्रवणादिजे ॥
उदकेदेशभेदेनगुणान्दोषांश्चलक्षयेत् ॥३३॥

अर्थ-नदी और नदके जलको नादेयजल कहतेहैं। गुण। रूखा, वातकर्त्ता, हलका, दीपन, अभिष्यंदी नहींहै। विशद, चरापरा, तथा कफपित्त हरण कर्त्ताहै। जो नदी जल्दी वहनेवाली तथा जिनका निर्मल जलहै उनका जल हलका है, और जो मंद वहतीहै तथा जिनका जल काईसें ढका रहताहै तथा गदला रहता है उनका जल भारी जानना। हिमालय पहाडसें उत्पन्न होनेवाली नदी जो पत्थरोंसें टकरातीहुई वहीहै। जैसे-गंगा, सतलज, सरयू (घाघरा) और यमुना आदि इनका जल पथ्य और गुणोंमें उत्तमहै। सह्याचलपर्वतसें निकली नदी कृष्णावेणी, गोदावरी आदि ये प्राय कुष्ठरोग करे। और कुछ वातकफको करतीहैं। नदी, सरोवर, तलाव, कूआ, झरना, इनके जलमें देशभेद करके गुण और दोष जानने चाहिये।

औद्भिद.

विदार्यभूमिंनिम्नांयमहत्याधारयास्रवेत् ॥
तत्तोयमौद्भिदंनामवदंतीतिमहर्षयः ॥ ३४ ॥
औद्भिदंवारिपित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम् ॥
प्रीणनंमधुरंबल्यमीषद्वातकरंलघु ॥ ३५ ॥

अर्थ-नीची पृथ्वीको फाडकर जो बडीधारासें वहे उस जलको औद्भिदजल कहतेहैं। गुण। उद्भिदजल-पित्तनाशक, अविदाही, अतिशीतल, प्रीणन, मधुर, बलकारी, किंचिन्मात्र वातकरता, और हलकाहै।

झरनेके जलके लक्षण गुण.

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहोनिर्झरोझरः ॥
सतुप्रस्रवणश्चापितत्रत्यंनैर्झरंजलम् ॥ ३६ ॥
नैर्झरंरुचिकृत्कीरंकफघ्नंदीपनंलघु ॥
मधुरंकटुपाकंचवातंस्याद्पिपित्तलम् ॥३७॥

अर्थ-जो पर्वतके सानुसें जल वहताहै। उस प्रवाहको निर्झर, झर और प्रस्रवण कहतेहैं। उस प्रस्रवण जलको नैर्झर अर्थात् झरनेका जल कहतेहैं। गुण। झरनेका जल-रुचिकारी, कफनाशक, दीपन, हलका, मधुर, कटुपाकी वातकर्त्ता और पित्तकर्त्ता जानना।

सारसजलके लक्षण गुण.

नद्याःशैलादिरुद्धायायत्रसंश्रित्यतिष्ठति ॥
तत्सरोजलसञ्छन्नंतदंभःसारसंस्मृतम् ३८
सारसंसलिलंबल्यंतृष्णाघ्नंमधुरंलघु ॥
रोचनंतुवरंरूक्षंबद्धमूत्रमलंस्मृतम् ॥ ३९ ॥

अर्थ-जहां नदी, पर्वत आदिसें रुककर ठहर जावे उसको सर (झील) कहतेहैं और उस जलको सारसजल जानना। गुण। सारसजल-बलकर्त्ता, तृषानाशक, मधुर, हलका, रुचिकारी, कषेला, रूक्ष, तथा मलमूत्रका बांधनेवालाहै।

तलावके जलके लक्षण गुण.

प्रशस्तभूमिभागस्थोबहुसंवत्सरोषितः ॥
जलाशयस्तडागःस्यात्ताडागंतज्जलंस्मृतम्

ताडागमुदकंस्वादुकषायंकटुपाकिच ॥
वातलंबद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ४१

अर्थ–उत्तम पृथ्वीके भागमें बहुत वर्षोंके संचित जलाशयको तडाग (तालाव) कहतेहैं, उसके जलको ताडाग जल कहतेहैं । गुण । तलावका जल-स्वादिष्ट, कषेला, कटुपाकी, वातल, तथा मलमूत्रका बांधनेवाला, तथा रुधिरविकार, पित्त और कफको नष्ट करे ।

बावडीके जलके लक्षण गुण.

पाषाणैरिष्टिकाभिर्वाबद्धःकूपोबृहत्तरः ॥
ससोपानाभवेद्वापीतज्जलंवाप्यमुच्यते ॥४२॥
वाप्यंवारियदिक्षारंपित्तकृत्कफवातहृत् ॥
तदेवमिष्टंकफकृत्वातपित्तहरंभवेत् ॥४३॥

अर्थ–जो पत्थर अथवा ईटोंसे बडा कूआ बनाया जावे और उसमें जाने आनेको पैडी (पलुकारी) बनाई जावे, उसको वापी अर्थात् बावडी कहतेहैं । और उस बावडीके जलको वाप्यजल कहतेहैं । गुण । बावडीका जल यदि खारी होय तो पित्तकर्त्ता, कफवातनाशक । और मीठा होय तो कफकर्त्ता और वातपित्तहरण कर्त्ता जानना ।

कुआके जलके लक्षण गुण.

भूमौखातोऽल्पविस्तारोगंभीरोमण्डलाकृतिः
बद्धोऽबद्धःसकूपःस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते
कौपंपयोयदिस्वादुत्रिदोषघ्नंहितंलघु ॥
तत्क्षारंकफवातघ्नंदीपनंपित्तकृत्परम् ४५

अर्थ–पृथ्वीमें छोटासा गहरा गोल गड्ढा खोदकर जब जल निकल आवे तब उसको ईंट पत्थरोंसे बनायले अथवा कचाही रखे उसकी कूप (कुआ) संज्ञाहै । उस कूपजलको कौपजल कहतेहैं । गुण । कूएका जल यदि मिष्ट होय तो त्रिदोषनाशक, हितकर्त्ता, हलका । और खारी होय तो कफवात नाशक, दीपन, और अत्यंत पित्तको बढावे ।

चोआजलके लक्षण गुण.

शिलाकीर्णेस्वयंश्वभ्रंनीलांजनसमोदकम् ॥
लतावितानसंछन्नंचौंड्यमित्यभिधीयते ४६
अश्मादिभिरबद्धंयत्तच्चौंड्यमितिचापरे ॥
तत्रस्यमुदकंचौंड्यंमुनिभिस्तदुदाहृतम् ॥
चौंड्यंवह्निकरंनीरंरूक्षंकफहरंलघु ॥
मधुरंपित्तनुद्बल्यंपावनंविशदंस्मृतम् ॥

अर्थ–जो गड्ढा चारों ओरसें पत्थरकी शिलाओंसें व्याप्त हो तथा जिसका जल नीलअंजनके समान होवे, और उसके ऊपर लता, वेल छा रहीं हों उसको चौंड्य कहतेहै । कोई वैद्य कहताहै कि जो पत्थर आदिसें न बनाहो किंतु स्वयं बनाहुआ हो, उसको चौंड्य कहतेहैं उसके जलको चौंड्यजल कहतेहैं । गुण । जठराग्निवर्द्धक, रूक्ष, कफहर, हलका, मधुर, पित्तनाशक, रूक्ष, पावन और विशद जानना ।

तलैयाके जलके लक्षण गुण.

अल्पंसरःपल्वलंस्याद्यत्रचंद्रार्कगेरवौ ॥
नतिष्ठतिजलंकिंचित्तदल्पंवारिपाल्वलम् ॥
पाल्वलंवार्यभिष्यंदिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत् ॥

अर्थ–छोटेसे सरको पल्वल अर्थात् तलैया कहतेहैं । इसमें श्रावणके महिनेमें अर्थात् वर्षातमें जल रहताहै, फिर नहीं रहे इसको पाल्वल कहतेहैं । यह अभिष्यंदी, भारी, स्वादिष्ट, और त्रिदोषको करनेवालाहै ।

विकिरजलके लक्षण गुण.

नद्यादिनिकटेभूमिर्याभवेद्वालुकामयी ॥
उद्धाव्यतेततोयत्तुतज्जलंविकिरंविदुः ॥५०॥
विकिरंशीतलंस्वच्छंनिर्दोषंलघुचस्मृतम् ॥
तुवरंस्वादुपित्तघ्नंक्षारंतत्पित्तलंमनाक् ॥५१॥

अर्थ–नदीके समीपकी पृथ्वी जो वालूयुक्त है उसमें गड्ढा खोदकर जलको निकालतेहैं उस जलको विकिर जल कहतेहैं । गुण । यह शीतल स्वच्छ, निर्दोष, हलका, कषेला, स्वादिष्ट, पित्तनाशक, खारी और किंचित् पित्तको करेहै ।

केदारजलके लक्षण गुण.

केदारंक्षेत्रमुद्दिष्टंकैदारंतज्जलंस्मृतम् ॥
कैदारंवार्यभिष्यंदिमधुरंगुरुदोषकृत् ॥५२॥

अर्थ–केदार नाम खेतका है इसीसें खेतके जलको कैदारजल कहतेहैं । गुण । कैदारजल, अभिष्यंदि, मधुर, भारी और त्रिदोष कर्त्ता है.

वर्षाके जलके लक्षण गुण.

वार्षिकंतद्वर्षदूँभूमिस्थमहितंजलम् ॥

त्रिरात्रमुषितंतत्तुप्रसन्नममृतोपमम् ॥ ५३ ॥

अर्थ-जो वर्षाका जल उसीदिन वर्षा होय वो पृथ्वीमें स्थित अहितहै, यदि वही जल तीन रात्रि वासित होगया होय अर्थात् तीन रात्रि व्यतीत होनेपर वह स्वच्छ जल अमृतके तुल्यहै ।

हेमंतादि कालमें विहितजल.

हेमंतेसारसंतोयंताडागंवाहितंस्मृतम् ॥

हेमंतेविहितंतोयंशिशिरेऽपिप्रशस्यते ॥५४॥

वसंतग्रीष्मयोःकौपंवाप्यंवानैर्झरंजलम् ॥

नादेयंवारिनादेयंवसंतग्रीष्मयोर्बुधैः ॥

विषवृक्षवृक्षाणांपत्राद्यैर्दूषितंयतः ॥ ५५ ॥

औद्भिदंवांतरिक्षंवाकौपंवाप्रावृषिस्मृतम् ॥

शस्तंशरदिनादेयंनीरमंशूदकंपरम् ॥ ५६ ॥

दिवारविकरैर्जुष्टंनिशिशीतकरांशुभिः ॥

ज्ञेयमंशूदकंनामस्निग्धंदोषत्रयापहम् ॥५७॥

अनभिष्यंदिनिर्दोषमांतरिक्षजलोपमम् ॥

बल्यंरसायनंमेध्यंशीतंलघुसुधासमम् ॥५८॥

अर्थ-हेमंतऋतु (अगहन, पौष) में सरोवर झीलका अथवा तालावका जल पीना हितकारी है, और जो हेमंतऋतुमें कहाहै वह शिशिरऋतु (माघ, फाल्गुण) में भाहाहै । वसंतऋतु (चैत्र, वैशाख) और ग्रीष्म (ज्येष्ठ, आषाढ) में कूएका जल अथवा बावडीका अथवा झरनेका जल पीना । वसंतऋतु और ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं देना चाहिये । इसका यह कारणहै कि इस ऋतुमें पतझड होताहै इस वास्ते उन पत्तोंसे वह नदीका जल विषके समान होजाताहै [दूसरे नदीमें मनुष्य-पशुआदिके न्हानेसे जल दूषित होताहै] वर्षाऋतुमें औद्भिद जल अथवा अंतरिक्ष (आकाश) का जल अथवा कूएकाजल सेवन करना । शरदऋतुमें नदीका जल, अथवा अंशूदक (हंसोदक) सेवन करे । जो सूर्यकी किरणोंसे दिनमें तप्त रहे, और रात्रिमें चंद्रमाकी किरणोंसे शीतल रहे उस जलको अंशूदक संज्ञाहै । गुण । वह-स्निग्ध और त्रिदोष नाशक, अनभिष्यंदी, निर्दोष, और आकाश जलके तुल्य, बलकारी, रसायन, पवित्र, शीतल, हलका, और, अमृतके तुल्यहै । अन्य ग्रंथांतरोंमेंभी लिखाहै जैसें-

शरदिस्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलंहितम् ॥

पौषेवारिसरोजातंमाघेतत्तुतडागजम् ॥

फाल्गुनेकूपसंभूतंचैत्रेचौंड्यंहितंमतम् ॥

वैशाखेनैर्झरंनीरंज्येष्ठेशस्तंतथौद्भिदम् ॥

आषाढेशस्यतेकौपंश्रावणेदिव्यमेवच ॥६१॥

भाद्रेकौप्यंपयःशस्तमाश्विनेचौंड्यमेवच ॥

कार्तिकेमार्गशीर्षेचजलमात्रंप्रशस्यते ॥६२॥

अर्थ-शरदऋतुमें अगस्त्यऋषिके उदय होनेसें सर्व जल स्वच्छ और हितकारी होतेहैं । बुद्धसुश्रुतमें कहताहै । पौषमहिनेमें सरोवर, झीलका जल माघमें तलावका, फाल्गुणमें कूएका, चैत्रमें चोएका, वैशाख झरनेका, ज्येष्ठमें औद्भिदजल, अषाढमें कूएका, श्रावणमें आकाश संबंधी दिव्य-जल, भाद्रपदमें कूएका, आश्विनमें चौंड्य, और कार्तिक तथा मार्गशिरके महिनेमें सर्व जलमात्र सेवन करने चाहिये ।

जलग्रहणका काल.

भौमानामम्भसांप्रायोग्रहणंप्रातरिष्यते ॥

शैत्यस्वंनिर्मलत्वंचयतस्तेषांमतोगुणः ॥६३॥

अर्थ-पृथ्वीसंबंधी जल (नदी, तालाव, सरोवर आदिके जल) प्रातःकालही ग्रहण करने अर्थात् प्रातःकालमें भरके लावे, इसका यह कारणहै कि जलमें मुख्य गुण शीतल, और निर्मलता लीनी है, सो ए दोनों गुण प्रातःकालही होतेहैं, [दूसरे आनादिकसें भी जल दिनचढनेपर बिगड जाताहै]

जलपानविधि.

अत्यंबुपानान्नविपच्यतेऽन्न-

मिरंबुपानाच्चसएवदोषः ॥

तस्मान्नरोवन्हिविवर्द्धनाय-

मुहुर्मुहुर्वारिपिबेदभूरि ॥ ६४ ॥

अर्थ-बहुत जल पीनेसें भोजन करेहुए अन्नका

१ दिनसें सब दिन लेना और रात्रिसें सब रात्रिका ग्रहणहै ।

परिपाक नहीं होता, और बिलकुल जल न पीनेसें भी नहीं होय अर्थात् अन्न नहीं पचे इस वास्ते यह प्राणी जठराग्निको बढानेको वारंवार ठहर २ के थोडा जल पीवै ।

शीतलजलके योग्य प्राणी.

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषुविषेरक्तेमदात्यये ॥
श्रमेभ्रमेविदग्धेऽन्नेतमकेवमथौतथा ॥
ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतमंबुप्रशस्यते ॥ ६५ ॥

अर्थ-मूर्च्छारोग, पित्तवाला, गरमीवाला, दाहरोगी, विषरोगी, रुधिरकारोगी, मदात्ययवाला, परिश्रम, भ्रमरोगवाला, विदग्धअन्नवाला, तमकश्वासी, वमनरोगी, और ऊर्ध्वगत रक्तपित्ती इनको शीतलजल हितकारी है ।

शीतलजल देना निषेध.

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे ॥
आध्मानेस्तिमितेकोष्ठेसद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥
अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ ॥
हिक्कायांस्नेहपानेचशीतांबुपरिवर्जयेत् ॥६७॥

अर्थ-पसवाडेका शूलवाला, सरेकमां वाला, वादीका रोग, गलग्रह, अफरा, बद्धकोष्ठ, जो तत्काल जुलाब लेकर चुका हो, नवीन ज्वर, अरुचिरोग, संग्रहणी, गोला, श्वास, खांसी, विद्रधिरोग, हिचकीरोग और जिसने घृत तैलादि स्नेहपान करा होवे इन सबको शीतलजल पीना निषेधहै ।

अल्पजल देने योग्य प्राणी.

अरोचकेप्रतिश्यायेमंदेऽग्नौश्वयथौक्षये ॥
मुखप्रसेकेजठरेकुष्ठेनेत्रामयेज्वरे ॥
व्रणेचमधुमेहेचपिबेत्पानीयमल्पकम् ॥६८॥

अर्थ-अरुचि, सरेकमां, मंदाग्नि, सूजन, क्षयरोग, मुखसें जल बहा करे, उदररोगी, कोढी, नेत्ररोगी, ज्वरवाला, व्रणरोगी, और मधुमेही, ए सब थोडा २ जल पीवे । [अधिक पीनेसें इनके रोग बढाताहै]

जलपानकी आवश्यकता.

जीवनंजीविनांजीवोजगत्सर्वंतुतन्मयम् ॥
नातोऽत्यंतनिषेधेनकदाचिद्वारिवार्यते ६९

तृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राणविनाशिनी ॥
तस्माद्देयंतृषार्तायपानीयंप्राणधारणम् ७०
तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुंचति ॥
अतःसर्वास्ववस्थासुनक्वचिद्वारिवर्जयेत् ॥

अर्थ-जीवन (जल) यह प्राणियोंका जीवन है । अतएव यह संपूर्ण जगत जलमय है । इसीसें अत्यंत निषेध नहीं है । अर्थात् अमुक रोगीको सर्वथा जल देना ही नहीं ऐसी आज्ञा कहीं नहींहै इसवास्ते कोइसे रोगमें तृषावालेको थोडा बहुत जल अवश्य देना । हारीतमेंभी लिखाहै । तृषा अत्यंत घोर तत्काल प्राणके हरण करनेवालीहै । अतएव तृषार्तको प्राणोंका धारण करनेवाला पानी अवश्य देना चाहिये । तृषा (प्यास) सें बेहोश होताहै, और बेहोश होकर प्राण छोड देताहै, अतएव सर्व अवस्थाओंमें कहीभी जल देना वर्जित नहीं है [हमारे हिन्दुस्थानी चांडाल वैद्य रोगीको जलके विना मारडालतेहै]

उत्तम जल.

अगंधमव्यक्तरसंसुशीतंतर्षनाशनम् ॥
अच्छंलघुचहृद्यंचतोयंगुणवदुच्यते ॥ ७२ ॥

अर्थ-जिसमें दुर्गंध न आतीहो और कोईसा रस प्रगट न मालूमहो, शीतल, तृषानाशक, निर्मल, हलका, हृदयको हितकारी, ऐसा जलउत्तम कहाहै ।

निंदितजल.

पिच्छिलंकृमिलंक्लिन्नंपर्णशैवालकर्दमैः ॥
विवर्णंविरसंसांद्रंदुर्गंधंनिहतंजलम् ॥ ७३ ॥
कलुषंछन्नमंभोजपर्णनीलीतृणादिभिः ॥
दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टंसौरचांद्रमरीचिभिः ७४
अनार्तवंचार्षिकंतुप्रथमंतच्चभूमिगम् ॥
व्यापन्नंपरिहर्तव्यंसर्वदोषप्रकोपणम् ॥७५॥
तत्कुर्यात्स्नानपानाभ्यांतृष्णाध्मानविरज्व-
रान् ॥
कासाग्निसांद्याभिष्यंदकंडूगंडादिकंतथा ॥

अर्थ-पिच्छल (मलमला) कीडेयुक्त, पत्ते काई और कीचसें विगडाहुआ, दुष्टरंगका विरस, (बुरे-स्वादका) गाढा, दुर्गंध, जिसमें आतीहो बहुत

किनोंका भराहुआ, कलुषित (गदला) जो कमल पत्ते सीवाल और तिनके आदिसें ढकाहुआ हो, जिसका स्पर्श बुरा लगे, तथा जिसपर सूर्य और चंद्रमाकी किरण न पडतीहों। विना ऋतुका (चौमासे आदिचारमहिनेके वर्षाका जल) और जो वर्षा ऋतुमें प्रथमही वर्षकर पृथ्वीमें भराहुआ हो, तथा व्यापन्न (बिगडा हुआ) ऐसा जल कदाचित् वर्षाऋतुमें नहीं लेना। यह सर्वदोषोंको कुपित करनेवालाहै। यदि इस दुष्टजलमें स्नान और पान करे तो यह तृषा, अफरा, बहुतदिन रहनेवाला ज्वर, खांसी, मंदाग्नि, नेत्राभिष्यंद, खुजली, और गलगंडादि रोगोंको करे।

दुष्टजलका शोधन.

निंदितंचापिपानीयंक्वथितंसूर्यतापितम् ॥
सुवर्णरजतंलोहंपाषाणंसिकतामपि ॥ ७७ ॥
भृशंसंताप्यनिर्वाप्यसप्तधासाधितंतथा ॥
कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ७८
शुचिसांद्रपटस्राविक्षुद्रजंतुविवर्जितम् ॥
स्वच्छंकनकमुक्ताद्यैःशुद्धंस्याद्दोषवर्जितम् ॥
पर्णमूलबिसग्रंथिमुक्ताकनकशैवलैः ॥
गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्यादम्बुप्रसादनम् ॥ ८० ॥

अर्थ–यदि जहांपर उत्तम जल न मिलता होय तो उस जगे दुष्टजलकोही प्रथम खूब औटावे, फिर उसको धूपमें रखदेवे, पश्चात् सुवर्ण, चांदी, लोह, पत्थर, और बालू इनको गरम करकरके सात २ वार उस जलमें बुझावे। फिर इसको उत्तम मिट्टीकी सुराही, कुल्हडे, अथवा कोरेघडेमें भरके उसमें कपूर, चमेली, पुन्नाग, पाडर आदिशब्दसें खसआदि सुगंधित वस्तु डालके वासित (सुगंधित) करे, छोटे २ जीव न रहै, तथा सुवर्ण मोती आदिसें शुद्ध कराहुआ जल दोषवर्जित होता है। जलपवित्रकरनेकीवस्तु। पत्ते (पत्रजलादि) कद, खस आदि कमलकी जड, गांठ, मोती सुवर्ण, सिवार (काई) गोमेद, कपडा [और निर्मली आदिसें] जलको पवित्र करना चाहिये।

पीयेजलकेपाककीअवधि.

आमंजलंजीर्यतियाममुग्मात्-
यामैकमात्रात्कृतशीतलंच ॥
तदर्धमात्रेणमृतंकदुष्णं-
पयःप्रपाकेत्रयएवकालाः ॥ ८१ ॥

अर्थ–कच्चाजल पीयाहुआ दोप्रहरमें पचताहै और औटाहुआ तथा शितलकरा जल १ प्रहरमें पचताहै, तथा जो औटाकर कुछ २ गरम रहाहो वो १॥ घंटेमें पचजाता है, इसप्रकार जलपाकके तीनही काल है।

इति श्रीअभिनवनिघंटे वारिवर्गः

अथ दुग्धवर्गः

दूधके नामगुण.

दुग्धंक्षीरंपयःस्तन्यंबालजीवनमित्यपि ॥
दुग्धंसुमधुरंस्निग्धंवातपित्तहरंसरम् ॥ १ ॥
सद्यःशुक्रकरंशीतंसात्म्यंसर्वशरीरिणाम् ॥
जीवनंबृंहणंबल्यंमेध्यंवाजीकरंपरम् ॥ २ ॥
वयःस्थापनमायुष्यंसंधिकारिरसायनम् ॥
विरेकवांतिबस्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम् ३
जीर्णज्वरेमनोरोगेशोषमूर्च्छाभ्रमेषुच ॥
ग्रहण्यांपांडुरोगेचदाहेतृषिहृदामये ॥ ४ ॥
शूलोदावर्तगुल्मेषुबस्तिरोगेगुदाङ्कुरे ॥
रक्तपित्तेऽतिसारेचयोनिरोगेश्रमेक्लमे ॥ ५ ॥

---

१ जो पानी चमकदार होताहै वह पाचक नहीं। होता और जिसमें अशुद्धी वस्तु मिलीहो वो कामका नहींहै। आजकल पानीको शुद्धकरनेकी विधि। एक टिकटीतीनपायेकी और तीन कलकी बनावे, फिर चारघडे लेवे। एक ऊपररखे और उसमें पक्के कोले भर देवे, उसके नीचे बालूरेतका भरा घडा और उसके नीचे जो कपडीली जमीनसें कंकड निकाले जाते हैं वो भरे, और तीनोंकी पेंदियोंमें बारीक छिद्रकर तिनका लगाय दिया जावे, और ऊपरही ऊपरके घडेको जलसें भर देवे, और तीनो घडोके नीचे साफ मलेका सफेद कपडेसें मुख बांधकर धरे तो तीनो घडोंसें जल टपक नीचेके घडेमें एकत्र होवेगा यह जलशुद्ध है। इसमें जो चिकनाई आदि दोष होते हैं वो कोले, बालू, और कंकड आदि शोषण लेते हैं।

गर्भेकायेवसततंहितंमुनिवरैःस्मृतम् ॥
बालवृद्धक्षतक्षीणाःक्षुद्व्यवायकशाश्चये ॥
तेभ्यःसदातिशयितंहितमेतदुदाहृतम् ॥ ६॥

अर्थ-दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, बालजीवन, ए दूधके संस्कृत नाम । म. दुध, तै. पालु, का. हालु, अ. लबनुल, फा. शीर, ला. लक्टस, इं. मिल्क । गुण । मधुर, स्निग्ध, वातपित्तहरणकर्त्ता, दस्तावर, तत्काल वीर्यकर्त्ता, शीतल, सर्वप्राणियोंकी आत्माके अनुकूलहै । जीवन, बृंहण, बलकर्त्ता, मेध्य, वाजीकरणकर्त्ता, अवस्थाको स्थापने वाला, आयुष्यकर्त्ता, संधिकर्त्ता और रसायन है । विरेक (जुलाव) वमन और बस्ति इनके समान गुण वाला, ओजवर्द्धक । प्रयोग । जीर्णज्वर, मनसंबंधी रोग (उन्मादादिक) शोष, मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, पांडुरोग, दाह, तृषा, हृदयरोग, शूल, उदावर्त्त, गोलेकारोग, बस्ति (मसाने)का रोग, बवासीर, रक्तपित्त, अतिसार, योनिके रोग, परिश्रम, ग्लानि, और गर्भका गिरना इन रोगोंमें दूध मुनीश्वरोंने निरंतर हितकारी कहा है । बालक, बुड्ढे, क्षतक्षीण, भूंखे, मैथुनकरनेसे जो क्षीण होगए हैं उनको दूध सदैव अत्यंत हितकारी कहा है ।

गोदुग्धके गुण.

गव्यंदुग्धंविशेषेणमधुरंरसपाकयोः ॥
शीतलंस्तन्यकृत्स्निग्धंवातपित्तास्रनाशनम्
दोषधातुमलस्रोतः किंचित्क्लेदकरंगुरु ॥
जरासमस्तरोगाणांशांतिकृत्सेविनांसदा ॥८

अर्थ-गौकादूध विशेष करके रस और पाकमें मधुर है, शीतल, स्तनोंमें दूध बढानेवाला, स्निग्ध, वातपित्त और दुष्टरुधिरका नाशक (अथवा रक्तपित्तनाशक) दोष, धातु, मल, और छिद्रोंमें किंचिन्मात्र क्लेदकारी, भारी जो प्राणी दूधको सदैव पीया करते हैं । उनके बुढापेको तथा यावन्मात्र रोग है सबको गौकादूध शांत कर्त्ता है ।

गौकेवर्णविशेषकरके दूधके गुण.

कृष्णायागोर्भवेदुग्धंवातहारिगुणाधिकम् ॥
पीतायाहरतेपित्तंतथावातहरंभवेत् ॥
श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्ताचित्राचवातहृत् ॥ ९

अर्थ-कालीगौकादूध वातहरणकर्त्ता, अधिक गुणवाला, पीलीगौका दूध-पित्तको और वातको हरणकरे, सपेद गौका दूध कफकारी और भारी है, एवं लाल और चितकबरीगौका दूध वातहरण कर्त्ता जानना ।

छोटा बछडा, बछडारहितगौकादूध.

बालवत्साविवत्सानांगवांदुग्धंत्रिदोषकृत् ॥

अर्थ-जिन गौओंका छोटा बछडा है, अथवा जिनके बछडा नहींहै उनका दूध त्रिदोष कारक है ।

बकेनीगौ.

बष्कयण्यास्त्रिदोषघ्नंतर्पणंबलकृत्पयः ॥१०॥

अर्थ-बाखरी गौका दूध त्रिदोष नाशक तृप्तकर्त्ता, और बलकारीहै ।

देशवशदुग्धके गुण.

जांगलानूपशैलेषुचरंतीनांयथोत्तरम् ॥
पयोगुरुतरंस्नेहोयथाहारंप्रवर्त्तते ॥ ११ ॥

अर्थ-जो गौ जांगलदेश अनूपदेश और पर्वतोंमें चरा करतीहैं उनका दूध यथाक्रम भारी जैसे-जंगलदेशकीसे अनूपदेशमें चरनेवाली और अनूप देशकी चरनेवालीसैं पर्वतोंमें चरनेवाली गौका दूध भारी जानना । और ये जैसा (बनोले-बांट) खाती हैं ऐसाही उनके दूधमेंसैं अधिक घी निकलता है ।

आहारवशदूधके गुण.

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातंक्षीरंगुरुकफप्रदम् ॥
तत्तुबल्यंपरंवृष्यंस्वस्थानांगुणदायकम् ॥
पलालतृणकार्पासबीजजातंगुणैर्हितं ॥ १२ ॥

अर्थ-जो गौ थोडा अन्नभी खातीहैं उनका दूध भारी और कफकारक जानना । यह दूध अत्यंत बलकर्त्ता, और वृष्य अतएव यह बलवान् मनुष्योंको गुणदायक है । जो करबी (कुटी पाला) घास और बनौला चरतीहैं उनका दूध अत्यंत हितकारी जानना ।

भैंसदूधके गुण.

माहिषंमधुरंगव्यात्स्निग्धंशुक्रकरंगुरु ॥
निद्राकरमभिष्यंदिक्षुधाधिक्यकरंहिमम् ॥

अर्थ-भैंसका दूध गौके दूधसैंभी अधिक

मीठाहै, स्निग्ध, वीर्यकर्त्ता, भारी, निद्राकर, अभिष्यंदी और अधिक भूंक लगानेवाला और शीतल है।

बकरीकेदुग्धके गुण.

छागंकषायंमधुरंशीतंग्राहितथालघु ॥
रक्तपित्तातिसारघ्नंक्षयकासज्वरापहम् १४
अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात्
स्तोकांबुपानाद्व्यायामात्सर्वरोगापहंपयः

अर्थ-बकरीकादूध कषेला, मधुर, शीतल, ग्राही, हलका तथा रक्तपित्त, अतिसार, क्षयरोग, खांसी, ज्वरको नाश करे। बकरियोंकी छोटी देह होतीहै, तथा वो कडवी चरपरी वनस्पतियोंको खाया करतीहैं। तथा जल बहुत थोडा पीतीह। और जंगलमें दिनभर विचराही करतीहैं इसीसें बकरीका दूध सर्वरोग नाशकहै। [जो बकरी घरमें रहाकरतीहै उसके दूधमें ये गुण नहीहे।]

मृगादिदुग्धकेगुण.

मृगीनांजांगलोत्थानामजाक्षीरगुणंपयः ॥

अर्थ-जंगलकीमृगी (हिरनी आदि) का दूध बकरीके दूधके समान गुण करताहै।

भेडकेदूधकेगुण.

आविकंलवणंस्वादुस्निग्धोष्णंचाश्मरीप्रणुत्
अहृद्यंतर्पणंवृष्यंशुक्रपित्तकफप्रदम् ॥
गुरुकासेऽनिलोद्भूतेकेवलेचानिलेवरम् १७

अर्थ-भेडकादूध निमकीन, स्निग्ध, गरम, और पथरीको नष्ट करताहै। हृदयको अहित, तृप्तकर्ता, वृष्य, शुक्र, पित्त और कफ करनेवाला है। भारी-वादीकी खांसीका रोग अथवा केवल वादीके रोगमें हितकारीहै।

घोडीकेदुग्धकेगुण.

रूक्षोष्णंवडवाक्षीरंबल्यंशोषानिलापहम् ॥
अम्लंपटुलघुस्वादुसर्वमैकशफंतथा ॥ १८ ॥

अर्थ-घोडीका दूध रूक्ष, उष्ण, बलकारी, शोषरोग, और वादीके रोगको दूरकरे, खट्टा, निमकीन, हलका, स्वादिष्टहै। इसीप्रकार यावन्मात्र एक-खुरवालेपशुहैं उन सबका दूध घोडीके दूध समानहै।

ऊंटनीकादूध.

औष्ट्रंरूक्षमुष्णंलघुस्वादुलवणंदीपनंतथा ॥
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरंसरम् ॥ १९ ॥

अर्थ-ऊंटनीका दूध हलका, स्वादिष्ट, निमकीन, दीपन, कृमि, कुष्ठ, कफ, अफरा, सूजन, और उदररोग इनको हरण करे तथा दस्तावरहै।

हथनीकादूध.

बृंहणंहस्तिनीदुग्धंमधुरंतुवरंगुरु ॥
वृष्यंबल्यंहिमंस्निग्धंचक्षुष्यंस्थिरताकरम् ॥

अर्थ-हथनीकादूध-बृंहण, मधुर, कषेला, भारी, वृष्य, बलकारी, शीतल, स्निग्ध, नेत्रोंकोहितावह, और देहको स्थिर करनेवालाहै।

स्त्रीदुग्ध.

नार्यालघुपयःशीतंदीपनंवातपित्तजित् ॥
चक्षुःशूलाभिघातघ्नंनस्याश्च्योतनयोर्वरम्

अर्थ-स्त्रीकादूध-हलका, शीतल, दीपन, वात-पित्तनाशक, नेत्रकी शूल बाधाको दूरकरे तथा नस्य और आश्चोतन कर्ममें उत्तमहै।

धारोष्णादिगुण.

धारोष्णंगोपयोबल्यंलघुशीतंसुधासमम् ॥
दीपनंचत्रिदोषघ्नंतद्धाराशिशिरंत्यजेत् २२
धारोष्णंशस्यतेगव्यंधाराशीतंतुमाहिषम् ॥
शृतोष्णमाविकंपथ्यंशृतशीतमजापयः २३
आमंक्षीरमभिष्यंदिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम् ॥
ज्ञेयंसर्वमपथ्यंतुगव्यमाहिषवर्जितम् ॥२४॥
नारीक्षीरंत्वाममेवहितंनतुशृतंहितम् ॥
शृतोष्णंकफवातघ्नंशृतशीतंतुपित्तनुत् २५
अर्धोदकंक्षीरशिष्टमामाल्लघुतरंपयः ॥
जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वंयथायथा ॥
तथातथागुरुस्निग्धंवृष्यंबलविवर्द्धनम् ॥२६॥

अर्थ-गौका धारोष्ण (थनदुहा) दूध बलकारी, हलका, शीतल, अमृततुल्य, दीपन, और त्रिदोष नाशकहै, यदि गौके दूधकी धारदशीतल होगई होय तो त्याज्य है। गौका दूध धारोष्ण लेना और धार-

और भैसका दूध लेना चाहिये । भेडका दूध औटाहुआ समभाग हितकारी, और बकरीका दूध औटाकर शीतल कराहुआ लेना चाहिये । कच्चा-दूध-अभिष्यंदी, भारी, कफ, और आमके बढाने वालाहै । अतएव गौ और भैसके दूधको छोड कर बाकी सब कच्चे दूध अपथ्य हैं । परंतु स्त्रीका दूध तो कच्चाही हितकारी होता है किंतु औटा हुआ हित नहीं होता । अन्यदूध औटे हुए गरम कफवात नाशक और औटाकर शीतलकरेहुए पित्तनाशक जानने, जिस दूधमें आधा जल जरजावे तब उतारले । यह कच्चे दूधसेंभी हलका है । विना जलडाले जो दूध औटाया जावे वो जैसे १ औटताहैं उसी २ प्रकार भारी, स्निग्ध, वृष्य और बलका बढानेवाला है ।

पियूष. किलाट.

क्षीरंतत्कालसूतायाघनंपीयूषमुच्यते ॥
नष्टदुग्धस्यपक्वस्यपिण्डःप्रोक्तःकिलाटकः ॥

अर्थ–तत्काल ब्याहीहुई गौ भैसके गाढे २ दूधको पियूष कहतेहैं, इसको लोकमे फेहस संज्ञाहै । और जो दूध जरके नष्ट होगया हो तथा गोला बंध-गया हो उसको किलाट अर्थात् खोहा । खिहरी, कहतेहैं ।

क्षीरशाक. तक्रपिंड. मोरट.

अपक्वमेवयन्नष्टंक्षीरशाकंहितत्पयः ॥
दध्नातक्रेणवानष्टंदुग्धंबद्धंसुवाससा ॥ २८ ॥
द्रवभावेनसहितंतक्रपिण्डःसउच्यते ॥
नष्टदुग्धंमथेक्षीरंमोरटंजेज्जटोऽब्रवीत् ॥२९॥

अर्थ–जो विना औटाये ही दूध नष्ट हो जावे अर्थात् गाढा हो जाय उसकी क्षीरशाक (खिरिसा) संज्ञाहै । जो दही अथवा छाछके बननेसें दूध नष्ट होगया हो फिर उस दही वा छाछको कपडेमें बांधकर उसके जलको निकाल डालतेहैं जो पिंड बंध जाताहै और जिसमें कुछ जलका अंश होवे, उसको तक्र-पिंड कहतेहैं । जेज्जट आचार्य कहताहै कि दूध नष्ट होकर जो जल हो जाताहै उसकी मोरट संज्ञा है । लोकमें इसको फटे दूधका जल कहतेहैं ।

पियूषादिकोंके गुण.

पेयूषंचकिलाटश्चक्षीरशाकंतथैवच ॥
तक्रपिण्डइमेवृष्याबृंहणाबलवर्द्धनाः ॥ ३० ॥
गुरवःश्लेष्मलाहृद्यावातपित्तविनाशनाः ॥
दीप्ताग्नीनांविनिद्राणांविद्रधौचाभिपूजिताः
मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ॥
लघुर्बलकरोरुच्योमोरटःस्यात्सितायुतः ३२

अर्थ–ऊपर कहेहुए पेयूष, किलाट, क्षीर-शाक और तक्रपिंड ए वृष्यहैं, बृंहणहैं, बलवर्द्धक, भारी, कफकर्त्ता, हृद्य और वातपित्तको नष्ट करने वालेहै । जिनकी प्रदीप्त अग्निहै, जिनको निद्रा नहीं आती और जिनके विद्रधिका रोग है, उनको हित-कारी है । मोरटमें बूरा डालके पीवे तो मुखशोष, तृषा, दाह, रक्तपित्त, ज्वर, इनको हरण करे । तथा हलका, बलकारी और रुचिकर्त्ता जानना ।

संतानिका.

संतानिकागुरुःशीतावृष्यापित्तास्रवातनुत्॥
तर्पणीबृंहणीस्निग्धाबलासबलशुक्रला ॥३३॥

अर्थ–मलाई, भारी, शीतल, वृष्य, रक्तपित्त, वादी इनको दूर करे । तथा तृप्तकारता, बृंहणी, स्निग्ध, कफ, बल और शुक्रको बढाने वाली है । [मलाई-दूध और दहीकी ऐसे दोप्रकारकी होतीहे तहां ये गुण दूधकी मलाईकेहैं, दहीकी मलाई दहीके समान गुण करती है]

खांडयुक्त दूध.

खंडेनसहितंदुग्धंकफकृत्पवनापहम् ॥
सितासितोपलायुक्तंशुक्रलंत्रिमलापहम् ॥
सगुडंमूत्रकृच्छ्रघ्नंपित्तश्लेष्मकरंपरम् ॥ ३४ ॥

अर्थ–खांड, बूरा आदि डालाहुआ दुध-कफकर्त्ता, और वातनाशकहै । और जिसमें सपेद मिश्री पडी हुई हो, वो वीर्यकर्त्ता और त्रिदोष नाशक जानना । गुडमिला दूध, मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करे, और पित्त, कफको करेहै ।

प्रातःकालआदिमें होनेवाले दूधके गुण.

रात्रौचंद्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा
प्राभातिकंतदाप्रायःप्रादोषाद्गुरुशीतलम् ॥

दिवाकरकरोघाताद्व्यायामानलसेवनात् ॥
प्राभातिकात्सुप्रादोषंलघुवातकफापहम् ॥३६

अर्थ-रात्रिमें चंद्रगुणकी अधिकतासें और कसरतआदि परिश्रम रात्रिके समय न करनेसें प्रातःकालका दूध प्रायःसायंकालके दूधसें, भारी हैं और शीतलहै। इसीप्रकार दिनमें सूर्यकी किरण अर्थात् धूप लगनेसें तथा दंड कसरत आदि परिश्रमकी अग्नीके सेवन करनेसें सायंकालका दूध प्रातःकालके दूधसें हलका और वादी तथा कफको नष्ट करे।

दूध सेवनका समय.

वृष्यंबृंहणमग्निदीपनकरंपूर्वाह्नकालेपयो।
मध्याह्नेतुबलावहंकफहरंपित्तापहंदीपनम्।
बालेवृद्धिकरंक्षयेक्षयकरंवृद्धेषुरेतोवहं ॥
रात्रौपथ्यमनेकदोषशमनंक्षीरंसदासेव्यते ३

वदंतिपेयंनिशिकेवलंपयो
भोज्यंनतेनेहसहौदनादिकम् ॥
भवेदजीर्णनशयीतशर्वरी-
क्षीरस्यपीतस्यनशेषमुत्सृजेत् ॥ ३८ ॥

विदाहीन्यन्नपानानिदिवाभुंक्तेहियन्नरः
तद्विदाहप्रशांत्यर्थंरात्रौक्षीरंसदापिबेत् ॥३९॥
दीप्तानलेकृशेपुंसिवातवृद्धेपयःप्रिये ॥
मर्तेहिततमंपथ्यंसद्यःशुक्रकरंयतः ॥ ४० ॥

अर्थ-दिनके प्रथम प्रहरमें पीयाहुआ दूध वृष्य, बृंहण, अग्निदीपन कर्त्ता है। मध्याह्नमें पान करा दूध-बलदाता, कफ हरणकारी, पित्तनाशक और अग्निको दीपन करताहै, बालकोंको बढानेवाला, क्षयीरोगको क्षयकर्त्ता, वृद्धपुरुषोंके वीर्य वर्द्धक, तथा रात्रिके समय दूध पान करा अनेक दोषोंको शमन करताहै और पथ्यहै इसवास्ते सदैव पीना चाहिये। कोई वैद्योंकी संमतिहै कि रात्रिके समय केवल दूधही पीना उसके साथ भात रोटी आदि नहीं खानी, रात्रिमेंनींद नहीं आवे तथा पीत दूधको शेष न छोडे। दिनमें यह प्राणी जो दाहकर्त्ता अन्नपान करताहै उस दाहके शांति करनेको रात्रिके समय नित्य दूध पिया करे। जिनकी दीप्ताग्निहै और जो कृशहै, जिनके देहमें वातकी वृद्धि रहतीहै और जिनको दूध अधिक प्रियहै, उनको दूध अत्यंत हितकारी है। क्योंकि यह तत्काल शुक्रको करनेवालाहै।

मथेहुए दूधके गुण.

क्षीरंगव्यमथाजंवाकोष्णंदण्डाहतंपिबेत्
लघुवृष्यंज्वरहरंवातपित्तकफापहम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-गौका अथवा बकरीके दूधको थोडा गरम कर रईसें मथकर पीवे, यह मथाहुआ दूध-हलका, वृष्य, ज्वर हरणकर्त्ता, तथा वातपित्त और कफको नष्ट करताहै।

फेन (झाग) के गुण.

गोदुग्धप्रभवंकिंवाछागीदुग्धसमुद्भवम् ॥
भवेत्फेनंत्रिदोषघ्नंरोचनंबलवर्द्धनम् ॥ ४२ ॥
वह्निवृद्धिकरंवृष्यंसद्यस्तृप्तिकरंलघु ॥
अतीसारेऽग्निमांद्येचज्वरेजीर्णेप्रशस्यते ४३

अर्थ-गौके दूधके अथवा बकरीके दूधके झाग त्रिदोषनाशक, रोचक, बलवर्द्धक, अग्निकी वृद्धि कर्त्ता, वृष्य, तत्काल तृप्तकर्त्ता, हलके, अतिसार, मंदाग्नि और जीर्णज्वर इनपर देने चाहिये।

निंदित दूध.

विवर्णंविरसंचाम्लंदुर्गंधंग्रथितंपयः ॥
वर्जयेदम्ललवणयुक्तंकुष्ठ्यादिहृद्यतः ॥४४॥

अर्थ-जिसका रूप बिगडगया होवे, बेजायका होगया हो, खट्टा, दुर्गंधयुक्त, गांठदार, तथा जिसमें खटाई और निमक गिरगयाहो उस दूषित दूधको त्याग देना क्योंकि यह बुद्धी आदिको हरण करताहै।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ दुग्धवर्गः।

अथ दधिवर्गः

दहीके गुण.

दध्युष्णंदीपनंस्निग्धंकषायानुरसंगुरु ॥
पाकेऽम्लंश्वासपित्तास्रशोथमेदःकफप्रदम् ॥
मूत्रकृच्छ्रेप्रतिश्यायेशीतगेविषमज्वरे ॥
अतीसारेऽरुचौकार्श्येशस्यतेबलशुक्रकृत् ॥ २

अर्थ-दही-गरम, दीपन, स्निग्ध, कषेला, भारी,

पकनेमें खट्टा, भारी, पित्त, रुधिर, विकार, सूजन, मेदरोग और कफको बढानेवालाहै । मूत्रकृच्छ्, सरेकमा, शीतमें और विषम ज्वरमें अतिसार अरुचिरोग, कृशता, इनमें दहीको सेवन करे यह बल और शुक्रको करनेवालाहै ।

दहीके भेद.

आदौमंदंततःस्वादुस्वाद्वम्लंचततःपरम् ॥
अम्लंचतुर्थमत्यम्लंपंचमंदधिपंचधा ॥ ३ ॥

अर्थ-प्रथम थोडा खट्टा, फिरमीठा, फिर खट्टामीठा, फिर चतुर्थसमय खट्टा और पांचवे अत्यंत खट्टा होताहै । ऐसे दहीके पांचभेद कहेहैं ।

मंदादि दहीके लक्षण.

मंदंदुग्धवदव्यक्तरसंकिंचिद्घनंभवेत् ॥
मंदंस्यात्स्रंसिविण्मूत्रंदोषत्रयविदाहकृत् ॥४
यत्सम्यग्घनतांयातंव्यक्तस्वादुरसंभवेत् ॥
अव्यक्ताम्लरसंतत्तुस्वादुविज्ञैरुदाहृतम् ॥५
स्वादुस्यादत्यभिष्यंदिवृष्यंमेदःकफावहम् ।
वातघ्नंमधुरंपाकेरक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ६ ॥
स्वाद्वम्लंसांद्रंमधुरंकषायानुरसंभवेत् ॥
स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयाःसामान्यदधिवज्जनैः ७
यत्तिरोहितमाधुर्यंव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम् ॥
अम्लंतुदीपनंपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥८॥
तदत्यम्लंदंतरोमहर्षकंठादिदाहकृत् ॥
अत्यम्लंदीपनंरक्तवातपित्तकरंपरम् ॥ ९ ॥

अर्थ-जो दूध कुछ २ जम कर गाढा हुआहो और जिसमें खट्टा मीठा किसीप्रकारका स्वाद न मालूमहो उसकी मंदसंज्ञाहै । गुण । यह मल मूत्रको निकालने वाला, त्रिदोष और दाह करनेवाला है । जो जमकर गाढा हुआहो और जिसमें मिठास मालूम होवे और खटाई प्रतीत न हो, उसको वैद्योंने स्वादु संज्ञककहाहै । गुण । स्वादु दही, अभिष्यंदी, वृष्य, मेद और कफकरनेवाला वातनाशक, पाकमें मीठा, और रक्तपित्तको नष्ट करने वालाहै । जो दही अत्यंत गाढा और खट्टा मीठा दोनों रसयुक्त होवे, तथा कुछ २ कषेला होय उसकी स्वाद्वम्ल संज्ञाहै । स्वाद्वम्ल दहीके गुण सामान्य दहीकेसे जानने । जिस दहीका मिठास नष्ट होकर खट्टा होगया हो उसकी अम्ल संज्ञाहै । गुण । खट्टादही, दीपन, पित्त, रक्त और कफको बढाताहै । जो दही अत्यंतखट्टा, दांतोंको खट्टे और रोमांचोको करे तथा कंठ आदिमें दाह करे, वो अत्यम्ल कहाताहै । गुण । यह दीपन, रक्त, वात और पित्तको करनेवालाहै ।

गौके दहीकेगुण.

गव्यंदधिविशेषेणस्वाद्वम्लंचरुचिप्रदम् ॥
पवित्रंदीपनंहृद्यंपुष्टिकृत्पवनापहम् ॥
उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम् ॥

अर्थ-गौकेदूधका दही-विशेषता करके स्वादिष्ट, खट्टा, रुचिदायक, पवित्र, दीपन, हृदयको हितकारी, पुष्टकरनेवाला और वादीको नष्ट कारताहै । सबप्रकारके दहियोंमें गौका दही गुणोंमें सबसे अधिकहै ।

भैंसका दही.

माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत् ॥
स्वादुपाकमभिष्यंदिवृष्यंगुर्वस्रदूषकम् ॥११

अर्थ-भैंसका दही-स्निग्ध, कफकर्त्ता, वातपित्तनाशक, पाकके समय स्वादिष्ट, अभिष्यंदी, वृष्य, भारी और रुधिरको दूषित करनेवालाहै ।

बकरीकादही.

आजंदध्युत्तमंग्राहिलघुदोषत्रयापहम् ॥
शस्यतेश्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषुदीपनम् ॥

अर्थ-बकरीका दही-उत्तम, ग्राही, हलका, त्रिदोषनाशक, यह श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय और कृशताके रोगोंको नष्ट करे, तथा दीपनहै ।

औटाहुआदही.

पक्वंदुग्धभवंरुच्यंदधिस्निग्धंगुणोत्तमम् ॥
पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् १३

अर्थ-औटेदूधका जमाया दही-रुचिकर्त्ता, स्निग्ध, गुणोंमें उत्तम, पित्त-वादीका नाशक, तथा सबधातुओंको, एवं जठराग्नि और बलको बढावे ।

साररहितदहीकेगुण.

असारंदधिसंग्राहिशीतलंवातलंलघु ॥
विष्टंभिदीपनंरुच्यंग्रहणीरोगनाशनम् ॥१४॥

अर्थ-प्रथम दूधको मथकर मक्खन निकाललेवे फिर उसका दही जमावे, वो निस्सारदूध अथवा दही-ग्राही, शीतल, वातकर्त्ता, हलका, विष्टंभी, दीपन, रुचिकारी और संग्रहणी रोगको नाश करे ।

छनेहुए दहीके गुण.

गालितंदधिसुस्निग्धंवातघ्नंकफकृद्गुरु ॥
बलपुष्टिकरंरुच्यंमधुरंनातिपित्तकृत् ॥ १५ ॥

अर्थ-कपडेमे छनाहुआ दही-स्निग्ध, वातना-शक, कफकारी, भारी, बलकर, पुष्टिकर, रुचिकारी, मधुर और अत्यंत पित्तकर्त्ता नहीहै ।

शर्करादिसहित दहीकेगुण.

सशर्करंदधिश्रेष्ठंतृष्णापित्तास्रदाहजित् ॥
सगुडंवातनुद्वृष्यंबृंहणंतर्पणंगुरु ॥ १६ ॥

अर्थ-दहीमें बुरा डालके खाना उत्तमहै, यह तृषा, रक्तपित्त और दाहको नष्ट करे । यदि दहीमें गुडमिलायके सेवनकरे तो वादीको नष्ट करे । वृष्यहै, बृंहण, तर्पण और भारीहै ।

रात्रिमेंदही सेवन निषेध.

ननक्तंदधिभुंजीतनचाप्यघृतशर्करम् ॥
नामुद्गसूपंनाक्षौद्रंनोष्णंनामलकैर्विना ॥१७॥

अर्थ-रात्रिमें कदाचित् दही सेवन न करे और यदि रात्रिमें सेवन करना पडे तो विना घृतखांडके। विना मूंगकी दालके, विना सहतके, विना गरमकरे और विना आंवलोंके सेवन न करे । अन्यत्रभी लिखाहै कि रात्रिमे दही न खाय । यदि सेवन करे तो जल और घी मिलायके करे, परतु रक्त-पित्त और कफके रोगमे जलघृत मिलायकरभी सेवन न करे ।

ऋतुपरत्वदहीसेवनका विधिनिषेध.

हेमंतेशिशिरेचापिवर्षासुदधिशस्यते ॥
शरद्ग्रीष्मवसंतेषुप्रायशस्तद्विगर्हितम् ॥ १८

अर्थ-हेमंतऋतु (अगहन पौष) शिशिर (माघ फाल्गुन) और वर्षाऋतु इनमे दही सेवन करे, परंतु शरदऋतु और ग्रीष्मऋतुमें कदाचित् सेवन नही करना । कारण यहहै कि दही गरमहै इसवास्ते शरद और ग्रीष्मऋतुमें पित्त कुपित करताहै ।

विधिरहितदहीसेवनकेरोग.

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपांड्वामयभ्रमान् ॥
प्राप्नुयात्कामलांचोग्रांविधिंहित्वादधिप्रिय

अर्थ-ज्वर, रुधिरविकार, पित्तविकार, विसर्प, कुष्ठ, पांडुरोग, भ्रम और घोर कामलाका रोग प्राप्त-होताहै जो विधिको त्यागकर दही सेवन करता है ।

सरऔरमस्तुकेलक्षण औरगुण.

दध्नस्तूपरियोभागोघनःस्नेहसमन्वितः ॥
सलोकेसरइत्युक्तोदध्नोमंडस्तुमस्त्विति ॥२०
सरःस्वादुर्गुरुर्वृष्योवातवह्निप्रणाशनः ॥
साम्लोबस्तिप्रशमनःपित्तश्लेष्मविवर्द्धनः २१
मस्तुक्लमहरंबल्यंलघुभक्ताभिलाषकृत् ॥
स्रोतोविशोधनंह्लादिकफतृष्णानिलापहम् ॥
अवृष्यंप्रीणनंशीघ्रंभिनत्तिमलसंचयम् ॥२२॥

अर्थ-दहीके ऊपरके चिकनाई युक्त गाढे भागको अर्थात् मलाईको लोकमें सर ऐसें कहतेहैं और दहीके मंडको अर्थात् दहीके पानीको मस्तु (तीर, तोड) ऐसे कहतेहै । दोनोंकेगुण । सर (दहीकी मलाई) स्वादिष्ट, भारी, वृष्य, वादी और वह्निको नष्ट करे खट्टा, वस्तिविकार नाशक, पित्त और कफकों वढातीहै । मस्तु । क्लम (ग्लानि) को दूर करे, बलकारी, हलका, भोजनकी अभिलाषकर्त्ता, देहके छिद्रोंको शुद्ध करे, आल्हाद (आनंद) कर्त्ता, कफ-तृषा और वादीको नष्ट करे, अवृष्यहै पालन-कर्त्ता और तत्काल मलके संचयको तोडनेवालाहै ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ दधिवर्गः ।

तक्रवर्गः

तक्रकेभिन्ननाम लक्षण औरगुण.

घोलंतुमथितंतक्रमुदश्वित्छच्छिकापिच ॥
ससरंनिर्जलंघोलंमथितंत्वसरोदकम् ॥ १ ॥
तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम् ॥
छच्छिकासारहीनास्यात्स्वच्छाप्रचुर-
वारिका ॥ २ ॥

घोलंतुशर्करायुक्तंगुणैर्ज्ञेयंरसालवत् ॥
वातपित्तहरंह्लादिमथितंकफपित्तनुत् ॥३॥
तक्रंग्राहिकषायाम्लंस्वादुपाकरसंलघु ॥
वीर्योष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम् ॥४॥
ग्रहण्यादिमतांपथ्यंभवेत्संग्राहिलाघवात् ॥
किंचस्वादुविपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपणम् ५
अम्लोष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम् ॥
कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापि-
कफापहम् ॥ ६ ॥

नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्न
तक्रदग्धाःप्रभवंतिरोगाः ॥
यथासुराणाममृतंसुखाय
तथानराणांभुवितक्रमाहुः ॥ ७ ॥

उदश्वित्कफकृद्बल्यमामघ्नंपरमंमतम् ॥
छच्छिकाशीतलालघ्वीपित्तश्रमतृषाहरी ॥
वातनुत्कफकृत्सातुदीपनीलवणान्विता ॥८॥
समुद्धृतघृतंतक्रंपथ्यंलघुविशेषतः ॥

अर्थ-घोल, मथित, तक्र, उदश्वित् और छच्छिका इसप्रकार तक्रपांचप्रकारकाहै । तहां जो मलाईयुक्त मथागया और जल जिसमें न डालाहो उसकी घोल संज्ञाहै । और जिसमेंसें मलाई निकालकें विना जलमथा गया हो उसकी मथित संज्ञाहै । जिसमें ३ हिस्सा दही और १ हिस्सा जल डालके मथागया हो उसकी तक्र (छाछ) संज्ञाहै । और आधाजल डालेहुएकी उदश्वित् संज्ञाहै । और जिसमें ढकेलमां अर्थात् जिसमें जल बेप्रमाण मिलाहोवे वो साररहीन स्वच्छ छच्छिका कहातीहै । गुण । ऊपर कहेहुए घोलमें सपेदबूरा मिलायके सेवन करे तो सिखरनके समान गुण करे और वातपित्तको हरण करे, तथा आनंद देताहै । मथित कफपित्तको नष्ट करे । तक्र (छाछ) ग्राही (मलको रोकने वाला) कषेला, खट्टा, स्वादुपाकी, हलका, उष्णवीर्य, दीपन, वृष्य, पुष्टाईकर्त्ता, वातनाशक, संग्रहणी (और अतिसार आदि रोगवालोंको) पथ्यहै । हलका होनेसें यह ग्राहीहै, और स्वादु विपाकी होनेसें पित्तको कुपित नहीं करे, अम्ल, गरम, दीपन, वृष्य, प्रीणन, वातनाशक, कषेला, गरम और विकासी होनेसें तक्र कफको नष्ट करताहै । तक्र सेवन करनेवाला कदाचित् व्यथा (दुःख) को नहीं प्राप्त होता । और तक्रसें जलाए गए रोग फिर नहीं होते । जैसे स्वर्गमें देवताओंको अमृतहै, उसीप्रकार पृथ्वीमें मनुष्योंके लिये तक्रहै । उदश्वित् कफकरे, बलकारी, आमनाशकहै । छच्छिका-शीतल, हलकी, पित्तश्रम और तृषाको दूर करे, निमक डालकर पीवे तो वादी हरण करे और कफकरे तथा दीपन कर्त्ताहै ।

तक्रोंके भेद.

स्तोकोद्धृतघृतंतस्माद्गुरुवृष्यंकफावहम् ॥
अनुद्धृतघृतंसांद्रंगुरुपुष्टिकफप्रदम् ॥ ९ ॥

अर्थ-जिस तक्रमेंसे घृतनिकाल लीना हो वो पथ्य और विशेष करके हलका है, जिसमेंसें थोडा घृत निकाला हो, वो पहिलेकी अपेक्षा भारी, वृष्य और कफकर्त्ता है। और बिना निकाला घृतवाला तक्र गाढा, भारी, पुष्टी और कफको करेहै ।

दोष विशेष और व्याधि विशेषमें तक्र.

वातेऽम्लंशस्यतेतक्रंशुंठीसैंधवसंयुतम् ॥
पित्तेस्वादुसितायुक्तंसव्योषमधिकेकफे १०
हिंगुजीरयुतंघोलंसैंधवेनचसंयुतम् ॥
भवेदतीववातघ्नमर्शोऽतीसारहृत्परम् ॥११॥
रुचिदंपुष्टिदंबल्यंवस्तिशूलविनाशनम् ॥
मूत्रकृच्छ्रेतुसगुडंपांडुरोगेसचित्रकम् ॥१२॥

अर्थ-वादीके रोगमें-सोंठ, सैंधानिमक, इनका चूर्ण मिलायके खट्टा तक्र पीना । पित्तके रोगमें खांड मिलाय मीठा तक्र सेवन करना । अधिक कफमें व्योष (सोंठ, मिरच, पिपल,) का चूर्ण डालके पीना चाहिये । घोलमें हींग, जीरा और सैंधानिमक डालके सेवन करे तो अत्यंत वातनाशक, तथा बवासीर और अतिसारको हरण करे । रुचि करे, पुष्टि करे, बलकर, बस्ति और शूलको नष्ट करे । मूत्रकृच्छ्रमें घोल गुड मिलायके पीवे और पांडुरोगमें चित्रकका चूर्ण डालके पीवे ।

कच्चे पके तक्रके गुण.

तक्रमामंकफंकोष्ठेहंतिकंठेकरोतिच ॥
पीनसश्वासकासादौपक्वमेवप्रयुज्यते ॥१३॥

अर्थ-कच्चा तक्र कोठेके कफको नष्ट करै और कंठमें कफको करे, अतएव पीनस, श्वास और खांसी आदिजो कफकी बिमारीहै उनमें औंटाहुआ तक्र रोगीको देना चाहिये।

तक्रसेवनके निमित्त.

शीतकालेऽग्निमांद्येचतथावातामयेषुच ॥
अरुचौस्रोतसांरोधेतक्रंस्यादमृतोपमम् १४
तन्नुहंतिगरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् ॥
पांडुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगंदरान् ॥ १५ ॥
मेहंगुल्ममतीसारंशूलप्लीहोदरारुचीः ॥
श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाकृमीन्

अर्थ-शीतकालमें, मंदाग्नि, वादीकेरोग, अरुचि और छिद्रोंका रुकना इनमें तक्र अमृतके तुल्य गुणदायक है। यह विषविकार, वमन, प्रसेक (लारका बहना) विषमज्वर, पांडुरोग, मेदरोग, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर, प्रमेह, गोला, अतिसार, शूलरोग, प्लीहा, उदर, अरुचि, सपेद कुष्ठ, कोठेके रोग, कोढ, सूजन, तृषा और कृमिरोग इनको तक्रसेवन दूर करे।

तक्र देना वर्जित.

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नौष्णकालेनदुर्बले ॥
नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपित्तजे ॥ १७ ॥

अर्थ-घाववाले रोगीको छाछ नहीं देना, गरमीकी ऋतुमें, दुर्बल मनुष्यको, मूर्छारोगी, भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगवालेको छाछ पीनेको कदाचित् न देवे।

गव्यादि तक्रोंके विशिष्ट गुण.

यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत् ॥

अर्थ-जो प्रथम आठ प्रकारके दही कहेहै उनके तक्रमेंभी उन्ही ८ दहियोंके समान गुण कहेहै।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ तक्रवर्गः।

नवनीतवर्गः

नवनीत (मक्खन) के नाम और गुण.

म्रक्षणंसरजंहैयंगवीनंनवनीतकम् ॥
नवनीतंहितंगव्यंवृष्यंवर्णबलाग्निकृत् ॥ १ ॥
संग्राहिवातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासहृत् ॥
तद्धितंबालकेवृद्धेविशेषादमृतंशिशोः ॥२॥

अर्थ-म्रक्षण, सरज, हैयंगवीन, नवनीत, ए संस्कृतनाम। हिं. मक्खन, माखन, म. लोणी, गु. माखण, तै. पेन्ना, का. बेणे, अ. जुब्द, फा. मस्का, इं. बटर, ला. बुटिरम्। गुण। गौका नवनीत-हितकारी, वृष्य, बल वर्ण और अग्निको करे। ग्राही, वात, पित्त, रुधिर, क्षय, बवासीर, लकवा, खांसी इनको दूर करे यह बालक और वृद्धोंको हितकारी और विशेष करके बालकके वास्ते नवनीत अमृततुल्य गुणदायक है।

महिषनवनीत.

नवनीतंमहिष्यास्तुवातश्लेष्मकरंगुरु ॥
दाहपित्तश्रमहरंमेदःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ ३ ॥

अर्थ-भैंसका नवनीत-वातकफ कर्त्ता, भारी, दाह, पित्त और श्रमको हरण करे, तथा मेदा और शुक्रको बढाता है।

दूधके मक्खनके गुण.

दुग्धोत्थंनवनीतंतुचक्षुष्यंरक्तपित्तनुत् ॥
वृष्यंबल्यमतिस्निग्धंमधुरंग्राहिशीतलम् ४

अर्थ-दूधसें निकाला हुआ मक्खन-नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्त नाशक, वृष्य, बलकारी, अतिस्निग्ध, मधुर, ग्राही और शीतलहै।

तत्कालके नवनीतके गुण.

नवनीतंतुसद्यस्कंस्वादुग्राहिहिमंलघु ॥
मेध्यंकिंचित्कषायाम्लमीषत्तक्रांशसंक्रमात्

अर्थ-तत्कालका निकाला हुआ मक्खन स्वादु, ग्राही, शीतल, हलका, मेध्य (पवित्र) तथा कुछ छाछका अंश रहनेसें किंचित् कषेला और खट्टा होताहै।

पुराने नवनीतके गुण.

लघुपाकंकटुकाम्लंस्यात्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम् ॥
श्लेष्मलंगुरुमेदुस्यंनवनीतंचिरंतनम् ॥ ६ ॥

अर्थ-पुराना मक्खन-खारयुक्त, चरपरा और खट्टा है पाकमें वमन, बवासीर और कोढको करे, तथा कफकर्त्ता, भारी, और मेदको बढाता है ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ नवनीतवर्गः ।

घृतवर्गः

घृतके नाम और गुण.

घृतमाज्यंहविःसर्पिःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥
घृतंरसायनंस्वादुचक्षुष्यंवह्निदीपनम् ॥ १ ॥
शीतवीर्यंविषालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् ॥
अल्पाभिष्यंदिकांत्योजस्तेजोलावण्य-
बुद्धिकृत् ॥ २ ॥
स्वरस्मृतिकरंमेध्यमायुष्यंबलकृद्गुरु ।
उदावर्त्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान्हरेत् ॥
स्निग्धंकफकरंरक्षःक्षयवीसर्परक्तनुत् ॥ ३ ॥

अर्थ-घृत, आज्य, हवि और सर्पि, ए संस्कृत-नाम । हिं. घी, म. तूप, तै. नई, अ. दुहनुल् वकर, फा. रोघनेजर्द, कहतेहैं । गुण । घृत-रसायन, स्वादिष्ट, नेत्रोंको हितकारी, अग्नि दीपन करता, शीतवीर्य, विष, अलक्ष्मी (अशोभा) पाप (बुरापना) पित्त और वादी इनको दूर करे, अल्प अभिष्यंदि, कांति ओज, तेज, लावण्य (लोन) और बुद्धिको करेहै । तथा स्वर, स्मरणशक्तिको करे, पवित्र, आयु और बलको करे तथा भारीहै । उदावर्त्त, ज्वर, उन्माद, शूल, अफरा, व्रण इनको दूर करे । चिकना, कफकर, राक्षस, क्षयरोग, वीसर्परोग और रुधिरविकारको दूर करे ।

गोघृतके गुण.

गव्यंघृतंविशेषेणचक्षुष्यंवृष्यमग्निकृत् ॥
स्वादुपाककरंशीतंवातपित्तकफापहम् ॥ ४ ॥
मेधालावण्यकांत्योजस्तेजोवृद्धिकरंपरम् ॥
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंवयसःस्थापकंगुरु ॥ ५ ॥
बल्यंपवित्रमायुष्यंसुमंगल्यंरसायनम् ॥
सुगंधंरोचनंचारुसर्वाज्येषुगुणाधिकम् ॥ ६ ॥

अर्थ-गौका घी-विशेष करके नेत्रोंको हितकारी, वृष्य, अग्निकर्त्ता, स्वादिष्ट, पाककरता, शीतल, वातपित्त और कफको नष्ट करे, मेधा, लावण्यता, कांति, ओज, तेज इनकी वृद्धि करे । अलक्ष्मी, पाप, राक्षसको नष्ट करे । अवस्थाको स्थापन करे, भारी, बलकर, पवित्र, आयुकर, मंगलकारी, रसायन, सुगंधित, रुचकर्त्ता, सुंदर, संपूर्ण घृतोंमें यह गौका घी गुणोंमे श्रेष्ठ है ।

भैंसका घी.

माहिषंतुघृतंस्वादुपित्तरक्तानिलापहम् ॥
शीतलंश्लेष्मलंवृष्यंगुरुस्वादुविपच्यते ॥ ७ ॥

अर्थ-भैंसका घी-स्वादिष्ट, पित्त, रुधिर और वादीको नष्ट करे । शीतल, श्लेष्मल, वृष्य, भारी और स्वादुपाकी है ।

बकरीका घी.

आजमाज्यंकरोत्यग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम् ॥
कासेश्वासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु ॥ ८ ॥

अर्थ-बकरीका घी-अग्निकर, चक्षुष्य (नेत्रोंको हितावह) बलवर्द्धक, खांसी, श्वास, क्षय, इन रोगोंपर अत्यत हितकारी और यह कटुपाकी है ।

ऊटनीका घी.

औष्ट्रंकटुघृतंपाकेशोषक्रिमिविषापहम् ॥
दीपनंकफवातघ्नंकुष्ठगुल्मोदरापहम् ॥ ९ ॥

अर्थ-ऊंटनीका घी-कटुपाकी, शोष, कृमिरोग, विषरोग, कुष्ठ, गुल्म और उदर, इनको दूर करे, दीपन और कफवातनाशक है ।

भेडका घी.

पाकेलघ्वाविकंसर्पिःसर्वरोगविनाशनम् ॥
वृद्धिंकरोतिचास्थीनामश्मरीशर्करापहम् ॥
चक्षुष्यमग्निधुक्षणंवातदोषनिवारणम् ॥ १० ॥

अर्थ-भेडका घी-पाकमें हलका, सर्व रोग नाशकर्त्ता, हड्डियोंको बढावे, पथरी, शर्करा और

वादीको दूर करे, नेत्रोंको हितकारी और जठराग्निको प्रबल करनेवाला है ।

स्त्रीघृत.

कफेऽनिलेयोनिदोषेपित्तेरक्तेचतद्धितम् ॥
चक्षुष्यमाज्यंस्त्रीणांवासर्पिःस्यादमृतोपमम्

अर्थ-कफरोग, वादी, योनिरोग, पित्त और रुधिरकी विमारीयोंमें स्त्रीका घी हितकारी है । नेत्रोंको हितकर्त्ता तथा स्त्रीका घी अमृतके तुल्यहै ।

घोडीका घी.

वृद्धिंकरोतिदेहाग्न्योर्लघुपाकेविषापहम् ॥
तर्पणंनेत्ररोगघ्नंदाहनुद्वडवाघृतम् ॥ १२ ॥

अर्थ-घोडीका घी देह और जठराग्निको बढावे, पाक इसका लघु, विषदोष नाशक, तर्पण, नेत्ररोग नाशक और दाहको नष्ट करे ।

दुग्धका घी.

घृतंदुग्धभवंग्राहिशीतलंनेत्ररोगहृत् ॥
निहंतिपित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ॥

अर्थ-दूधसें निकालाहुआ घी ग्राही, शीतल, नेत्ररोगनाशक, पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वादी इनको दूर करे ।

हैयंगवीन घृत.

ह्यस्तनदुग्धोत्थंतत्स्याद्धैयंगवीनकम् ॥
हैयंगवीनंचक्षुष्यंदीपनंरुचिकृत्परम् ॥
बलकृद्बृंहणंवृष्यंविशेषाज्ज्वरनाशनम् ॥१४॥

अर्थ-जो घी पहले दिवसके दूधमेंसें निकाला होय उसकी हैयंगवीन संज्ञाहै । गुण । नेत्रोंको हितकारी, दीपन, रुचिकारी, बलकर्त्ता, बृंहण, वृष्य और विशेष करके ज्वरको नाश करे है ।

पुरानेघीके गुण.

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यंपुराणंतत्त्रिदोषनुत् ॥
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ॥
यथायथाऽखिलंसर्पिःपुराणमधिकंभवेत् ॥
तथातथागुणैःस्वैःस्वैरधिकंतदुदाहृतम् ॥

अर्थ-एक वर्ष व्यतीत होनेसें घीकी प्राचीन संज्ञाहो जाती है । अर्थात् पुरानाघी कहातांहै, यह त्रिदोषनाशक, मूर्च्छा, कुष्ठ, विषविकार, उन्माद (मालीखोलिया) मृगी, तिमिर इनको दूर करे । सबघी जैसे जैसे अधिक पुराने होते जातेहैं तैसे २ जो जो गुण जिस २ घीके कहेहैं उन गुणोंको अधिक करतेहैं ।

नवीन घी योग्य.

योजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे ॥
बलक्षयेपांडुरोगेकामलानेत्ररोगयोः ॥ १७ ॥

अर्थ-भोजनमें, नेत्रतर्पणमें परिश्रम (दंडकसरत वालेको) बलक्षय, पांडुरोग, कामला, और नेत्ररोग इनमें नवीन ही घृतदेना, पुराना नहीं देना ।

घृतदेना वर्जित.

राजयक्ष्मणिबालेचवृद्धेश्लेष्मकृतेगदे ॥
रोगेसामेविषूच्यांचविबंधेचमदात्यये ॥
ज्वरेचदहनेमंदेनसर्पिर्बहुमन्यते ॥ १८ ॥

अर्थ-राजयक्ष्मा (खई) बालक, वृद्ध, कफके रोगमें, आमरोगमें, विषूचिका (हैजा) विबंध, ज्वर और मंदाग्नि, इनमें घृतका देना निषेध है ।

इति श्रीअभिनवनिघंटौ घृतवर्गः ।

मूत्रवर्गः

गोमूत्रके गुण.

गोमूत्रंकटुतीक्ष्णोष्णंक्षारंतिक्तंकषायकम् ॥
लघ्वग्निदीपनंमेध्यंपित्तकृत्कफवातहृत् ॥ १ ॥
शूलगुल्मोदरानाहकण्डूक्षिमुखरोगजित् ॥
किलासगदवातामबस्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ॥
कासश्वासापहंशोथकामलापांडुरोगहृत् ॥
कण्डूकिलासगदशूलमुखाक्षिरोगान् ॥
गुल्मातिसारमरुदामयमूत्ररोधान् ॥
कासंसकुष्ठजठरक्रिमिपांडुरोगान् ॥
गोमूत्रमेकमपिपीतमपाकरोति ॥ ३ ॥
सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रंगुणतोऽधिकम् ॥
अतोऽविशेषात्कथनेमूत्रंगोमूत्रमुच्यते ॥
प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् ॥

शूलगुल्मकआनाहकामलापांडुरोगहृत् ॥
कषायंतिक्ततीक्ष्णंचपूरणात्कर्णशूलनुत् ॥

अर्थ-गोमूत्र कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, क्षारयुक्त, कडवा, कषेला, हलका, अग्निदीपनकर्त्ता, मेध्य, पित्तकर्त्ता, कफवात नाशक, शूल, वायगोला, उदर, अफरा, खुजली, नेत्ररोग, मुखरोग, किलासरोग, आमवात, बस्तिकी पीडा, कोढ, खांसी, श्वास, सूजन, कामला और पांडुरोगको दूर करे । तथा खुजली, किलास, शूल, मुख और नेत्ररोग, गोला, अतिसार, आमवात, मूत्ररोध, खांसी, कुष्ठ, उदर, कृमि और पांडुरोग इनको केवल एक गोमूत्रही पीना नष्ट करताहै । सब मूत्रोमें गोमूत्र गुणोंमें श्रेष्ठ है । अतएव जहां कहीं मूत्रशब्द आवे उस जगे वैद्य गोमूत्र लेवे । प्लीह (पिलही वा-तिल्ली) उदर, श्वास, खांसी, सूजन, मलरोध, शूल, गोला, अफरा, कामला और पांडुरोग इनको दूर करे । कषेला, कडवा, तीक्ष्ण और कानमें डालनेसैं कानकी पीडाको दूर करे ।

मनुष्यका मूत्र.

नरमूत्रंगरंहंतिसेवितंतद्रसायनम् ॥
रक्तपामाहरंतीक्ष्णंसक्षारलवणंस्मृतम् ॥ ६ ॥
गोजाविमहिषीणांतुस्त्रीणांमूत्रंप्रशस्यते ॥
खरोष्ट्रेभनराश्वानांपुंसांमूत्रंहितंस्मृतम् ॥

अर्थ-मनुष्यकामूत्र विष (जहर) को दूर करे और सेवन करनेसैं रसायन है, रुधिरविकार खुजलीको दूरकरे । तीक्ष्ण खारयुक्त निमकीन है, गौ, बकरी, भैंस, इनमें स्त्रियोंका मूत्र उत्तमहै । और पुरुषोंमें गद्धा, ऊंट, हाथी, मनुष्य और घोडा इनका मूत्र उत्तम होताहै ।

इतिश्रीअभिनवनिघंटौ मूत्रवर्गः ।

तैलवर्गः

तेलका स्वरूप.

तिलादिस्निग्धवस्तूनांस्नेहस्तैलमुदाहृतम् ॥
तत्तुवातहरंसर्वंविशेषात्तिलसंभवम् ॥ १ ॥

अर्थ-तिल आदिद्रव्यसैं सरसो अलसी आदि स्नेहवस्तुओंके चिकनाईको तेल कहतेहैं । वोसबतेल वातहरण करता हैं । परंतु इनमेंभी तिलतैल विशेष करकै वादीको हरण करेहै ।

तिलतैलके गुण.

तिलतैलंगुरुस्थैर्यंबलवर्णकरंसरम् ॥
वृष्यंविकाशिविशदंमधुरंरसपाकयोः ॥ २ ॥
सूक्ष्मंकषायानुरसंतिक्तंवातकफापहम् ॥
वीर्येणोष्णंहिमंस्पर्शेबृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥३॥
लेखनंबद्धविण्मूत्रंगर्भाशयविशोधनम् ॥
दीपनंबुद्धिदंमेध्यंव्यवायिव्रणमेहनुत् ॥ ४ ॥
श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनंलघुताकरम् ॥
त्वच्यंकेश्यंचचक्षुष्यमभ्यंगेभोजनेऽन्यथा ५
छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते ॥
भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धविश्लिष्टदारिते ६
तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते ॥
बस्तौपानेऽन्नसंस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे ॥७॥
सेकाभ्यंगावगाहेषुतिलतैलंप्रशस्यते ॥
रूक्षादिदुष्टःपवनःस्रोतःसंकोचयेद्यदा ॥
रसोऽसम्यग्वहन्कार्श्यंकुर्याद्रक्ताद्यवर्द्धयन्
तेषुप्रवेष्टुंसरत्वसौक्ष्म्यस्निग्धत्वमार्दवैः ॥
तैलंक्षमंरसंनेतुंकृशानांतेनबृंहणम् ॥ ९ ॥
व्यवायिसूक्ष्मतीक्ष्णोष्णसरत्वैर्मेदसःक्षयम् ॥
शनैःप्रकुरुतेतैलंतेनलेखनमीरितम् ॥ १० ॥
द्रुतंपुरीषंबध्नातिस्खलितंतत्प्रवर्त्तयेत् ॥
ग्राहकंसारकंचापितेनतैलमुदीरितम् ॥११॥
घृतमब्दात्परंपक्वंहीनवीर्यंप्रजायते ॥
तैलंपक्वमपक्वंवाचिरस्थायिगुणाधिकम् १२

अर्थ-तिलका तैल भारी, स्थिर, बलवर्णकरता, दस्तादर, वृष्य, विकाशि, विशद और रस तथा पाकमें मिष्टहै । सूक्ष्म, कषेला, तिक्त, वातकफनाशक, वीर्यमें उष्णवीर्य, स्पर्शमें शीतल, बृंहण, रक्तपित्तकरता, लेखन, मलमूत्रके बंधनेको और गर्भाशयको शोधनेवाला, दीपन, बुद्धिदाता, मेध्य, व्यवायी, व्रण और प्रमेहको नष्ट करता, कान, योनि, शिर इनकी पीडाकों नष्ट करे तथा इनको हलका करे ।

त्वचाको और बालोंको उत्तम करे। नेत्रोंको हित, ए गुण तैल मालिस करनेके हैं। और यदि इसको भोजन करा जाय तो कहेहुए गुणोंसें विपरीत गुणोंको करेहै। छिन्न, भिन्न, च्युत (गिरजाना) पिसजाना, मथ (मसल) जाना, घाव, पीचजाना, टूटजाना, फटजाना, विषजाना, आगसें जलजाना, स्थानसें हटजाना, चिरजाना, अभिहत (चोटलगना) टेढाहो जावे, मृग (हिरन) व्याघ्र (बघेरा) आदिसें घायल होगये हो इन सबपर, तथा बस्तिकर्म, तैलपान, अभ्यंग, ...ार (तैलसें छोंकना अथवा तेलसें पदार्थ बनाना) ...स्यकर्म, कानमें और नेत्रोंमें डालना, तरडाडालना, मालिस करना और तेलमें बैठना, इन सबमें तिलीका तेललेना उत्तम हैं। कदाचित् कोई प्रश्नकरे कि तेल बृहण है वो लेखन कैसे होसक्ता है? इसवास्ते कहतेहैं रूक्षभ ' गुणवाली पवन यदि देहके छिद्रोंको संकुचित कर देवे, तब वह रस उत्तम प्रकारसें नहीं वहै, अतएव वो रुधिरको नहीं बढावे तब यह प्राणी कृश होताहै। ऐसे कृशप्राणीके देहमें यह तैल सर, सूक्ष्म, स्निग्ध और मृदुताके कारण उस रसको वहानेमें समर्थहै। अतएव कृश मनुष्य इस तेलके लगानेसें पुष्ट होतेहैं। और यह तेल व्यवायी, सूक्ष्म, तीक्ष्ण, उष्ण और दस्तावर होनेके कारण धीरे २ मेदाको क्षय करताहै। अतएव तैलको लेखनत्व (कृशकारित्व) है। तत्काल मलको बांध देवे और जो मल स्थानसें छूटचुका है उसको तत्काल निकालदेताहै इसीसे तेलको ग्राहकत्व और सारकत्व है। घी एकवर्ष व्यतीत होनेपर पकाहुआ हीनवीर्य होजाता है। परंतु तेल पकाहुआ अथवा विनापका जितना अधिक पुराना होयगा उतनाही अधिक गुणवाला होताहै।

सरसोंऔरराईकातेल.

दीपनंसार्षपंतैलंकटुपाकरसंलघु॥
लेखनंस्पर्शवीर्योष्णंतीक्ष्णंपित्तास्रदूषकम्॥
कफमेदोऽनिलार्शोघ्नंशिरःकर्णामयापहम्॥
कंडूकुष्ठकृमिश्वित्रकोठदुष्टकृमिप्रणुत्॥
तद्वद्राजिकयोस्तैलंविशेषान्मूत्रकृच्छ्रकृत्॥

अर्थ-सरसोंका तेल दीपनहै पाकमें कटु, इसका रस हलकाहै, लेखन, स्पर्श और वीर्यमें उष्ण, तीक्ष्ण, पित्त और रुधिरको दूषित करनेवाला कफ, मेदा, वादी, बवासीर, शिरपीडा, कानकेरोग, खुजली, कोढ, कृमि, सफेदकोढ और दुष्टकृमि इनकों दूर करे। इसीप्रकारके गुण काली और लाल राईके तेलमें है। परंतु राईकातेल विशेषकरके मूत्रकृच्छ्रको करताहै।

तुवरीतैल.

तीक्ष्णोष्णंतुवरीतैलंलघुग्राहिकफास्रजित्॥
वन्हिकृद्विषहृत्कंडुकुष्ठकोठकृमिप्रणुत्॥
मेदोदोषापहंचापिव्रणशोथहरंपरम्॥ १५॥

अर्थ-तुवरी (तोरईकेबीजो) का तेल, तीक्ष्ण उष्ण, हलका, ग्राही, कफ और रुधिरको नष्ट करे, अग्निकर्त्ता, विष, खुजली, कोढ, चकत्ते, कृमि इनको दूर करे। तथा मेददोष और व्रणकी सूजनको दूर करे।

अलसीतैल.

अलसीतैलमाग्नेयंस्निग्धोष्णंकफपित्तकृत्॥
कटुपाकमचक्षुष्यंबल्यंवातहरंगुरु॥ १६॥
मलकृद्रसतःस्वादुग्राहित्वग्दोषहृद्घनम्॥
बस्तौपानेतथाभ्यंगेनस्येकर्णस्यपूरणे॥
अनुपानविधौचापिप्रयोज्यंवातशांतये॥१७॥

अर्थ-अलसीकातेल अग्निकर्त्ता, स्निग्ध, गरम, कफपित्त करनेवाला, कटुपाकी, नेत्रोंको अहित, बलकर्त्ता, वातहरणकर्त्ता, भारी, मलकारक, रसमें स्वादिष्ट, ग्राही, त्वचाके दोषोंको हरण करे, गाढाहै, बस्तिकर्म, तैलपान, मालिस, नस्य, कर्णपूरण और अनुपान विधिमें वातशांति करनेको देना चाहिये।

कुसुंभतैल.

कुसुंभतैलमम्लंस्यादुष्णंगुरुविदाहिच॥
चक्षुर्भ्यामहितंबल्यंरक्तपित्तकफप्रदम्॥१८॥

अर्थ-कसूम अर्थात् कसूमके बीजोकातेल खट्टा, गरम, भारी, दाह करनेवाला, नेत्रोंको अहित, बलकारी, रक्तपित्त और कफको करनेवाला है।

खसखसतैल.

तैलंतुखसबीजानांबल्यंवृष्यंगुरुस्मृतम्॥
वातहृत्कफहृच्छीतंस्वादुपाकरसंचतत् १९

अर्थ-खसखसकातेल, बलकर्त्ता, वृष्य, भारी,

वातकफहरणकर्ता, शीतल, तथा इसका रस और पाक स्वादिष्टहै ।

अंडीकातैल.

एरंडतैलंतीक्ष्णोष्णंदीपनंपिच्छिलंगुरु ॥
वृष्यंत्वच्यंवयःस्थायिमेधाकांतिबलप्रदम् ॥
कषायानुरसंसूक्ष्मंयोनिशुक्रविशोधनम् ॥
विस्रंस्वादुरसेपाकेसतिक्तंकटुकंसरम् २१
विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् ॥
हंतिवातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥
वातशोणितविड्बंधब्रध्नशोथामविद्रधीन् ॥
आमवातगजेंद्रस्यशरीरवनचारिणः ॥
एकएवनिहंतायमेरंडस्नेहकेसरी ॥ २३ ॥

अर्थ-अंडीकातेल—तीक्ष्ण, गरम, दीपन, गिलगिला, भारी, वृष्य, त्वचाको सुधारनेवाला, अवस्थास्थापक, मेधा, कांति और बलकरे । कषेले रसवाला, सूक्ष्म योनि और शुक्रको शोधन कर्त्ता, विस्र (आमगंधिवाला) सर और पाकमें स्वादिष्ट, कडवा, चरपरा, दस्तावर, विषमज्वर, हृदयका रोग, पीठ, गुह्य-स्थानके शूलको दूरकरे । वादी, उदर, अफरा, गोळा, अष्ठीला, कमरके रहजानेको, वात-रक्त, मलसंग्रह, वद, सूजन, आमवात और विद्रधि इनको दूर करे । शरीररूप-वनमें विचरणेवाला आमवातरूप मस्तहाथीके मारनेको यह एकही अंडीका तेलरूप सिंहहै.

रालकातैल.

तैलंसर्जरसोद्भूतंविस्फोटव्रणनाशनम् ॥
कुष्ठपामाकिमिहरंवातश्लेष्मामयापहम् ॥

अर्थ-रालकातेल-विस्फोट (फोडे) घाव, कोढ, खुजली, कीडा और वातकफसें होनेवाले रोगोंको दूर करे ।

सबतैलोंकेगुण.

तैलंस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलंमतम् ॥
अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेयास्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भट आचार्यने संपूर्ण तेल अपनी २ योनिके अर्थात् जो तेल जिससें प्रगट हुए है वो उसीके समान गुण करतेहै । ऐसा कहाहै, इसीसे जो तेल इस भावप्रकाशमें नहीं कहे गए उनको अपनी २ योनिके समान गुणवाले जानलेने चाहिये ।

इतिश्री अभिनवनिघंटौ तैलवर्गः ।

संधानवर्गः

कांजिकलक्षणं.

संधितंधान्यमंडादिकांजिकंकथ्यतेजनैः
कांजिकंभेदितीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु ॥१॥

अर्थ-धान्यादिके मंडको दो तीन दिन रक्खा रहने देवे, जब वो खट्टा होजावे उसको मनुष्य कांजी कहतेहैं । **गुण** । भेदी, तीक्ष्णोष्ण, रोचन, पाचन, हलकी, लगानेसें दाह और ज्वरको नष्ट करे और पीनेसें कफको नष्ट करतीहै ।

दाहज्वरहरंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् ॥
माषादिवटकैर्युक्तंक्रियतेतद्गुणाधिकम् ॥
लघुवातहरंतत्तुरोचनंपाचनंपरम् ॥
शूलाजीर्णविबंधामनाशनंबस्तिशोधनम् ॥

अर्थ-प्रथम उडदके वडे बनायकें राईके जलमें भिगोय देवे और निमक कालीमिरच-जीरा डालके दो तीन दिन धरा रहने देवे, यह कांजी अन्य कांजियोंसें गुणोंमें अधिकहै । यह हलकी, वात-हरण कर्त्ता, रुचिदायक, अत्यंत पाचन, शूल, अजीर्ण, विबंध, और आम इनको नष्ट करे, और बस्तिको शुद्ध करतीह ।

निषेध,

शोषमूर्च्छाभ्रमार्तानांमदकंडूविशोषिणाम् ॥
कुष्ठिनांरक्तपित्तीनांकांजिकंनप्रशस्यते ॥४॥
पांडुरोगेयक्ष्मणिचतथाशोषातुरेषुच ॥
क्षतक्षीणेतथाश्रांतेमंदज्वरनिपीडिते ॥
एतेषांनहितंप्रोक्तंकांजिकंदोषकारकम् ॥५॥

अर्थ-शोष रोगी, मूर्च्छा, भौर, मदसे मतवाला, खुजली जिनका देह सूख गया, कोढी और रक्तपि-त्तवाला इन रोगियोंको कांजी कदाचित् नहीं देना । पांडुरोग, क्षई, शोषरोगी, उरःक्षतसें क्षीण, परिश्रमी

और मंदज्वरमें पीडित हुए सब प्राणियोंको कांजी पीना अहित और दोषकर्ता है ।

तुषोदक.

तुषोदकंयवैरामैःसतुषैःशकलीकृतैः ॥
तुषांबुदीपनंहृद्यंपांडुकृमिगदापहम् ॥
तीक्ष्णोष्णंपाचनंपित्तरक्तकृद्बस्तिशूलनुत् ॥

अर्थ-कच्चे और तुषसहित जौओंको कूटकर ...य देवे, जब खटाई आय जावे तब तुषोदक ...संज्ञ होय । यह तुषोदक दीपन, हृद्य, पांडुरोग, कृमिरोग, रक्तपित्तको करे और बस्तिके शूलको नष्ट करे तीक्ष्णोष्ण और पाचन है ।

सौवीर.

सौवीरंतुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतम् ॥
गोधूमैरपिसौवीरमाचार्याःकेचिदूचिरे ॥
सौवीरंतुग्रहण्यर्शःकफघ्नंभेदिदीपनम् ॥
उदावर्तांगमर्दास्थिशूलानाहेषुशस्यते ॥

अर्थ-कच्चे जौं अथवा पकेहुए जौओंके तुष (छिलका) दूर कर कूटडाले फिर इसकी कांजी बनावे इसकी सौवीर संज्ञा है । कोई आचार्य कहतेहैं कि कच्चे अथवा पके गेहूंओंसे सौवीर बनताहै । गुण । यह सौवीर, संग्रहणी, बवासीरमें देवे कफघ्न, भेदी और दीपन है, उदावर्त्त, अंगोंका टूटना, हड्डियोंका दर्द और अनाह (अफरा) रोगपर देना ।

आरनाल.

आरनालंतुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः ॥
पक्वैर्वासंधितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः ॥ ९ ॥

अर्थ-तुषरहित कच्चे गेहूओंको भिगोनेसें आरनाल संज्ञक कांजी बनतीहै । अथवा पकेहुए गेहूंसे जो साधन करी गई उसकोभी आरनाल संज्ञाहै । इसमें सो सौवीर कांजीके समान गुणहै ।

धान्याम्ल.

धान्याम्लंशालिचूर्णंचकोद्रवादिकृतंभवेत् ॥
धान्याम्लंधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम् ॥
अरुचौवातरोगेषुसर्वेष्वास्थापनेहितम् ॥

अर्थ-शालिचावलोंका चूर्ण अथवा कोदोंके चूनको डालके जो कांजी, बनाई गई उसको धान्याम्ल कहते हैं । यह धान्योंसें बनताहै इसीसें प्रीणन (पालनकर्त्ता) हलका, दीपन, अरुचि और संपूर्ण वातके रोगोंमें आस्थापन बस्ती करनेको हितहै ।

शिंडाकी.

शिंडाकीराजिकायुक्तैःस्यान्मूलकदलद्रवैः ॥
सर्षपस्वरसैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतैः ॥
शिंडाकीरोचनीगुर्वीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता ॥

अर्थ-कंद, मूल, फल, पत्ते, इनके द्रव्यमें राई डालकर जो कांजी बनातेहैं उसकी शिंडाकी संज्ञा है । कोई कहताहै कि सरसोंके रसमें शालि चांवलोंका चून डालके जो बनातेहै उसकीभी शिंडाकी संज्ञाहै । गुण । शिंडाकी-रोचनी, भारी और पित्तकफ करनेवाली है ।

शुक्त.

कंदमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच ॥
यत्रद्रव्येऽभिषूयंतेतच्छुक्तमभिधीयते ॥ १२ ॥
शुक्तंकफघ्नंतीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु ॥
पांडुक्रिमिहरंरूक्षंभेदनंरक्तपित्तकृत् ॥ ११ ॥

अर्थ-कंद, मूल और फलादिकमें निमक और तैल डालके जो वस्तु तयार करी जातीहै उसको सूक्त (सिर्का) कहतेहै । सिर्का-कफनाशक, तीक्ष्णोष्ण, रोचन, पाचन, हलका, पांडुरोग और कृमिरोगको हरण करे । रूक्ष, भेदक और रक्तपित्तको करने वालाहै ।

संधान.

कंदमूलफलाद्यंयत्तत्सुविहितमासुतम् ॥
तद्रुच्यंपाचनंवातहरंलघुविशेषतः ॥ १४ ॥

अर्थ-जो केवल कंद मूलफलादिकोंमें राई आदि मसाला डालके रखा रहने देवे-उसको आसुत अर्थात् आचार वा अचाना कहतेहै । यह रुचिकारी, पाचन, वातहरण कर्त्ता और विशेष करके हलका है ।

मद्यके नाम.

मद्यंसुरासीधुमैरेयमिराचमदिरासुरा ॥
कादंबरीवारुणीचहालापिबलवल्लभा ॥ १५ ॥
यद्यन्माद्यकंलोकैस्तन्मद्यमभिधीयते ॥
यथाऽरिष्टंसुरासीधुरासवाद्यमनेकधा ॥
मद्यंसर्वंभवेदुष्णंपित्तकृद्वातनाशनम् ॥
भेदनंशीघ्रपाकंचरूक्षंकफहरंपरम् ॥ १७ ॥
अम्लंचदीपनंरुच्यंपाचनंचाशुकारिच ॥
तीक्ष्णसूक्ष्मंचविशदंव्यवायिचविकाशिच ॥

अर्थ–मद्य, सीधु, मैरेय, मिरा, मदिरा, सुरा, कादंबरी, वारुणी, हाला और बलवल्लभा । यावन्मात्र मदकर्त्ता, पीनेके पदार्थहै उनकी मद्य संज्ञाहै। जैसें–अरिष्ट, सुरा, सीधु और आसवादि अनेकहै। गुण । संपूर्ण मद्य-गरम, पित्तकर्त्ता, वातनाशक, भेदन, शीघ्रपाकी, रूक्ष, कफहरणकर्त्ता, खट्टे, दीपन, रुचकारी, पाचन, आशुकारी (शीघ्रता करनेवाले) तीक्ष्ण, सूक्ष्म, विषद, व्यवाई और विकाशी ।

अरिष्ट.

पक्वौषधांबुसिद्धंयन्मद्यंतत्स्यादरिष्टकं ॥
अरिष्टंलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम् ॥
अरिष्टस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥

अर्थ–जो पकीहुई औषधोंके जलसें अर्थात् क्वाथ आदिसें मद्य बनताहै । उसकी अरिष्ट संज्ञाहै । जैसे द्राक्षारिष्ट, दशमूलारिष्ट और बबूलारिष्टहै । गुण । अरिष्ट लघुपाकी होनेसें सब मद्योंसें गुणोंमें अधिकहै, यह अरिष्ट जिस वस्तुसें बनताहै उसी २ वस्तुके समान गुण जानने चाहिये ।

सुरा.

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतंमद्यंसुरास्मृता ॥
सुरागुर्वीबलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदाः ॥
ग्राहिणीशोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥

अर्थ–शालिचावल और सांठीचावल और पिष्ट (पिसाअन्न) आदिसें जो मद्य बनाया जाता है उसकी सुरा संज्ञाहै । गुण । सुरा-भारी, बल स्तन्य (स्त्रीके स्तनोंमें दूध) पुष्टि, मेद और कफ करती है । ग्राहिणी, सूजन, गोला, बवासीर, संग्रहणी और मूत्रकृच्छ्रको नष्ट करै ।

वारुणी.

पुनर्नवाशिलापिष्टैर्वारुणीविहितास्मृता ॥
संहितैस्तालखर्जूररसैर्यासापिवारुणी ॥
सुरावद्वारुणीलघ्वीपीनसाध्मानशूलनुत् ॥

अर्थ–फिर नवीन शालीचावलोंको शिलापर पीसकर जो बनातेहै उसको वारुणी कहतेहैं । और कोई "पुनर्नवाशिलापिष्टै" ऐसा पाठ लिखतेहैं उसका यह अर्थहै कि पुनर्नवा (सांठकीजड) को शिलापर पीसके बनावे उसको वारुणी कहतेहै । और कोई आचार्य कहतेहै कि ताड और खिजूरआदिके रससें जो ताडी और खिजूरी बनातेहैं उसको वारुणी कहतेहै । गुण । वारुणीके गुण सुराके तुल्य है विशेष करके हलकी, पीनस, अफरा और शूलको दूर करती है ।

सीधुऔरशीतरस.

इक्षोःपक्वैरसैःसिद्धःसीधुःपक्वरसश्चसः ॥
आमैस्तैरेवयःसीधुःसचशीतरसःस्मृतः ॥
सीधुःपक्वरसःश्रेष्ठःस्वराग्निबलवर्णकृत् ॥
वातपित्तकरःसद्यःस्नेहनोरोचनोहरेत् ॥
विबंधमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ॥
तस्मादल्पगुणःशीतरसःसंलेखनःस्मृतः ॥

अर्थ–जो ईखके पकाए हुए रससै मद्य बनाया जाता है उसको सीधु कहतेहै । और जो अपक्व (कच्चे) ईखके रससै दारू बनाई जातीहै उसकी शीतरस संज्ञाहै । गुण । पक्वरसवाली सीधु उत्तमहै-स्वर, अग्नि, बल, वर्णको करे । वात पित्तकर्त्ता तत्काल स्नेहन और रोचन है, यह विबंध मेद सूजन, बवासीर, उदरकी सूजन और कफके रोगोंको हरण करेहै । एवं सीधुसें कुछ अल्प गुण शीतरसमें है और यह लेखन है ।

आसव.

यदपक्वौषधांबुभ्यांसिद्धंमद्यंसआसवः ॥
आसवस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥

अर्थ–जो विनापकी अर्थात् कच्ची औषधोंसें मद्य

बनाया जाताहै उसकी आसव संज्ञाहै, जैसे द्राक्षासव, दशमूलासवहैं । आसवके गुण उसकी बीजद्रव्य अर्थात् जिन २ औषधोंसे बने उसके तुल्य जानने ।

नवीनऔरप्राचीनमद्य.

मद्यंनवमभिष्यंदित्रिदोषजनकंसरम् ॥
अहृद्यंबृंहणंदाहिदुर्गंधंविशदंगुरु ॥ २६ ॥
जीर्णंतदेवरोचिष्णुकृमिश्लेष्मानिलापहम् ॥
सुगंधिगुणवल्लघुस्रोतोविशोधनम् ॥

अर्थ-नवीनमद्य- अभिष्यंदी, त्रिदोषकरता, दस्तावर, हृदयको अहित, बृंहण, दाहकरनेवाला, दुर्गंधवाला, विशद और भारी जानना । वही मद्य यदि पुरानाहोय तो रुचिकारी, कृमिरोग, कफ और बादी इनको दूर करे । हृदयको हितकारी, सुगंधयुक्त, गुणकर्त्ता, हलका और छिद्रोंको शोधन करने वाला है ।

सात्विकादिमद्यपीनेवालोंके लक्षण.

सात्विकेगीतहास्यादिराजसेसाहसादिकम् ॥
तामसेनिंद्यकर्माणिनिद्रांचमदिराऽऽचरेत् ॥

अर्थ-मद्यकी तीनअवस्था होती है । तहां सात्विकमद्यसे गाना बजाना हांसी ठिठोरी करे, राजसीमद्यसे साहसादिक (पुरुषार्थके वीर कर्मोंको) करे और तमास मद्यसे निंदित कर्म (अगम्यागमनादि) को करे और सोवे है ।

विधिअविधिसेमद्यपीनेकेगुणागुण.

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम् ॥
प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा ॥
किंतुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथास्मृतम् ॥
अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथाऽमृतम् ॥

अर्थ-जो प्राणी मद्यपानकी विधिसे, मात्राके अनुसार, यथा समय, हितकारी अन्नोंके साथ, बलाबल विचारके, प्रसन्न चित्तसे जो पीताहै उसको मद्य अमृतके तुल्य गुणोंको करेहै । किंतु मद्य स्वभावसेही अन्नके समान गुणवालाहै, जो अयुक्ति अर्थात् अविधिसे पीवे उसको रोग करताहै और जो विधिपूर्वक सेवन करे तो अन्नके समान अमृततुल्य गुणोंको करे । मद्यपानकी विधि चरक आदि ग्रंथोंमें लिखीहै सो देखलेना ।

मद्यगंधनाशन.

मुस्तैलवालगदजीरकधान्यकैला ।
यश्चर्वयेन्सदसिवाचमभिव्यनक्ति ॥
स्वाभाविकंमुखजमुज्झतिपूतिगंधं ।
गंधंचमद्यलशुनादिभवंचनूनम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-नागरमोथा, एलवालुक, कूठ, जीरा, धनिया और छोटीइलायचीको भक्षण करके जो सभामें वार्त्ता करताहै, उसके मुखसे स्वाभाविक मुखदुर्गंध दूर होवे, तथा मद्य और लहसन खानेसे जो मुखकी दुर्गंधहै उसकोभी दूर करे ।

इतिश्री अभिनवनिघंटौ संधानवर्गः ।

मधुवर्गः.

मधु (सहत) केनामगुण.

मधुमाक्षीकमाध्वीकक्षौद्रसारघ्यमीरितम् ॥
मक्षिकावरटीभृंगवांतपुष्परसोद्भवम् ॥ १ ॥
मधुशीतंलघुस्वादुरूक्षंग्राहिविलेखनम् ॥
चक्षुष्यंदीपनंस्वर्यंव्रणशोधनरोपणम् ॥ २ ॥
सौकुमार्यकरंसूक्ष्मंपरंस्रोतोविशोधनम् ॥
कषायानुरसंल्हादिप्रसादजनकंपरम् ॥ ३ ॥
वर्ण्यंमेधाकरंवृष्यंविशदंरोचनंहरेत् ॥
कुष्ठार्शःकासपित्तास्रकफमेहक्लमक्रमीन् ॥
मेदस्तृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान् ।
दाहक्षतक्षयांस्तत्तुयोगवाह्यल्पवातलं ॥ ५ ॥

अर्थ-मधु, माक्षिक, माध्वीक, क्षौद्र और सारघ्य ए, सहतके भेदहै । मक्खी-वर्र-ततैया-और भौंरा इनके पुष्परसकी वांति (वमन) को मधु (सहत वा सहद) कहतेहै बं. मौ, म. मध, तै. तेनी, क. जेनतुप्प, फा. शाहद, इं. हनी, ला. मेल कहतेहै । गुण। सहत-शीतल, हलका, स्वादु, रूक्ष, ग्राही, लेखन, नेत्रोंको हितकारी, दीपन, स्वरशोधक, व्रणको शोधन और रोपणकर्त्ता, सुकुमारता करनेवाला, सूक्ष्म और छिद्रोंको अत्यंत शोधन करने वाला, इसके सेवनके पश्चात् कषेला रस प्रतीत होता है, आल्हादकर्त्ता, अत्यंत प्रसन्नता करनेवाला, देहके वर्णको उजला

करे, मेधा करता, सूक्ष्म, विशद और रोचक । यह कोढ, खांसी, रक्तपित्त, कफ, प्रमेह, भ्रम, कृमि, मेद-रोग, तृषा, वमन, श्वास, हिचकी, अतिसार, मलरोध, दाह, घाव, क्षय और योगवाही-अर्थात् जैसे पदार्थके साथ मिले वहीके समान गुण करनेवाली और थोडा २ वात करने वाला है ।

मधुकेभेद.

माक्षिकंभ्रामरंक्षौद्रंपौतिकंछात्रमित्यपि ॥
आर्घ्यमौद्दालकंदालमित्यष्टौमधुजातयः ॥६॥

अर्थ-माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौतिक, छात्र, आर्घ्य, औद्दालक और दाल, ए सहतकी आठजाति है । अब इनके भेद कहतेहैं ।

माक्षिक.

मक्षिकाःपिंगवर्णास्तुमहत्योमधुमक्षिकाः ॥
ताभिःकृतंतैलवर्णंमाक्षिकंपरिकीर्तितम् ॥७॥
माक्षिकंमधुषुश्रेष्ठंनेत्रामयहरंलघु ॥
कामलार्शःक्षतश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥

अर्थ-पीले रंगकी बडी मक्खीयोंका निर्माण करा तेलके रंगका जो सहतहै । उसको माक्षिक सहत कहतेहैं । गुण । सब सहतोंमें माक्षिक सहत उत्तमहै, नेत्ररोगोंको हरण करे, हलका, कामला, बवासीर, घाव, श्वास, खांसी और क्षय इनको नष्ट करे ।

भ्रामर.

किंचित्सूक्ष्मैःप्रसिद्धेभ्यःषट्पदेभ्योऽलिभि-
श्चितम् ॥
निर्मलंस्फटिकाभंयत्तन्मधुभ्रमरंस्मृतम् ॥
भ्रामरंरक्तपित्तघ्नंमूत्रजाड्यकरंगुरु ॥
स्वादुपाकमभिष्यंदिविशेषात्पिच्छिलंहिमम्

अर्थ-भौंरासें कुछ छोटी प्रसिद्ध भौंराके जातिकी मक्खीयोंका निर्मल स्फटिक मणिकी सदृश जो सहत होताहै वो भ्रामर संज्ञक सहत कहलाता है । गुण । रक्तपित्त दूरकरे और मूत्रकी जडताको करे, भारी, स्वादुपाकी, अभिष्यंदी, और विशेष करके पिच्छल (चिकनिया) और शीतलहै ।

क्षौद्र.

मक्षिकाःकपिलाःसूक्ष्माःक्षुद्राख्यास्तत्कृतं-
मधु ॥
मुनिभिःक्षौद्रमित्युक्तंतद्वर्णात्कपिलंभवेत् ॥
गुणैर्माक्षिकवत्क्षौद्रंविशेषान्मेहनाशनम् ॥

अर्थ-भूरे रंगकी मोहार मक्खी छोटी क्षुद्र-संज्ञक उनके बनाए हुए मधुको मुनीश्वरोंने क्षौद्र-संज्ञक कहा है, यह कपिल (भूरे) रंगका होताहै । इसके गुण माक्षिकके समानहैं और विशेष करके प्रमेहको नष्ट करताहै ।

पौतिक.

कृष्णायामशकोपमालघुतराःप्रायोम-
हापीडिका । वृक्षाणांतरुकोटरांतरगताः
पुष्पासवंकुर्वते । तास्तज्ज्ञैरिहपूतिका
निगदितास्ताभिःकृतंसर्पिषा । तुल्यंयन्म-
धुतद्वनेचरजनैःसंकीर्तितंपौतिकम् ॥ १२ ॥
पौतिकंमधुरूक्षोष्णंपित्तदाहास्रवातकृत् ॥
विदाहिमेहकृच्छ्रघ्नंग्रंथ्यादिक्षतशोषिच १३

अर्थ-मच्छरके समान कालेरंगकी छोटी मधु-मक्खी जिनके काटनेसैं अत्यंत पीडा होतीहै वो बडे २ भारी वृक्षोंकी खोतरोंमें छत्ता लगाती हैं और उसमें सहतको एकत्र करतीहै, उन मक्खियोंको पूतिकमक्खी कहतेहैं । उनके करेहुए घृततुल्य मधु (सहत) को बनके रहनेवाले (अहेरिया, भील आदि) कापोत संज्ञक कहतेहैं । गुण । रूखा, गरम, पित्त, दाह, वातरक्तको करे । विदाही, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, इनको दूर करे और ग्रंथी आदि तथा घावकी आर्द्रताको सुखाताहै ।

छात्र.

वरटाःकपिलाःपीताःप्रायोहिमवतोवने ॥
कुर्वंतिछत्रकाकारंतज्जंछात्रंमधुस्मृतम् १४
छात्रंकपिलपीतंस्यात्पिच्छिलंशीतलंगुरु ॥
स्वादुपाकंकृमिश्वित्ररक्तपित्तप्रमेहजित् ॥
भ्रमतृष्मोहविषहृत्तर्पणंचगुणाधिकम् ॥१५॥

अर्थ-भुरेरंगकी और पीली मधुमक्खी प्राय

हिमालय (बर्फान) बनमें होतीहैं, वो छत्रके आकार अपने छत्तेको बनातीहैं, उसमेंसे जो सहत निकलताहै वो छात्र संज्ञक मधुहै। गुण। छात्रसहत-भूरा और पीलेरंगका होताहै, यह पिच्छल (गिलगिला) शीतल, भारी, स्वादुपाकी। कृमि, सपेदकुष्ठ, रक्तपित्त, प्रमेह, भ्रम, तृषा, मोह और विषविकारोंको हरण करे। तृप्तकर्त्ता और अधिक गुणवाला है।

आर्घ्य.

(मधू)कवृक्षनिर्यासंजरत्कार्वाःश्रमोद्भवम् ॥
स्रवंत्यार्घ्यंतदाख्यातंश्वेतकंमालवेपुनः ॥१६॥
तीक्ष्णतुंडास्तुयापीतामक्षिकाःषट्पदोपमाः॥
आर्घ्यास्तास्तत्कृतंयत्तदार्घ्यमित्यपरेजगुः
आर्घ्यंमध्वतिचक्षुष्यंकफपित्तहरंपरम् ॥
कषायंकटुकंपाकेतिक्तंचबलपुष्टिकृत् ॥१८॥

अर्थ–जरत्कारु ऋषिके आश्रममें उत्पन्न महुआ-वृक्षका निर्यास (गोंद) को स्रवंती और आर्घ्य मधु कहतेहैं। मालवेमें इसको श्वेतक नाम कहतेहैं। अन्य आचार्य ऐसा कहतेहैं कि जो तीक्ष्णतुंड (मुख) वाली पीलेरंगकी भौंराके समान मधुमक्खियोंको आर्घ्य कहतेहै। इन मक्खियोंने जो बनाया मधु उसको आर्घ्यमधु कहतेहैं। गुण। आर्घ्यमधु अत्यंत नेत्रोंको हितकारी, कफपित्त हरण कर्त्ता, कषेला, पाकमें चरपरा, कडवा, बलप्रद और पुष्टि-करने वालाहै।

औद्दालक.

प्रायोवल्मीकमध्यस्थाःकपिलाःस्वल्पकीटकाः
कुर्वंतिकपिलंस्वल्पंतत्स्यादौद्दालकंमधु १९
औद्दालकंरुचिकरंस्वर्यंकुष्ठविषापहम् ॥
कषायमुष्णमम्लंचकटुपाकंचपित्तकृत् ॥२०॥

अर्थ–प्राय बमईमें भूरेरंगके छोटे छोटे कीडे होतेहैं। वो भूरेरंगका और थोडा २ अपरिमित एक प्रकारका मधु संचय करतेहैं उसको उद्दाल संज्ञक कहतेहैं। गुण। उद्दालमधु रुचिकारक, स्वर शोधक, कुष्ठ और विष नाशक, कषेला, गरम, खट्टा और कटुपाकी तथा पित्त करनेवालाहै।

दाल.

संचुत्यपतितंपुष्पाद्यत्तुपत्रोपरिस्थितम् ॥
मधुराम्लकषायंचतद्दालंमधुकीर्तितम् २१
दालंमधुलघुप्रोक्तंदीपनीयंकफापहम् ॥
कषायानुरसंरूक्षंरुच्यंछर्दिप्रमेहजित् ॥
अधिकंमधुरंस्निग्धंबृंहणंगुरुभारिकम् ॥२२॥

अर्थ–जो सहत पुष्पसें चुचायकर पत्तेके ऊपर संचित होवें, तथा जिसका मधुर खट्टा और कषेला रसहोवे, उसको दालसंज्ञक मधु कहतेहैं। गुण। दाल मधु, लघुपाकी, दीपन, कफनाशक, किंचित्कषाय रसवाला, रूक्ष, रुचकारी, वमन निवारक, प्रमेह-नाशक, अत्यंत मीठा, स्निग्ध, बृंहण, बोझल और तोलमें भारीहै।

नवीन पुराना मधु.

नवंमधुभवेत्पुष्ट्यैनातिश्लेष्महरंसरम् ॥
पुराणंग्राहकंरूक्षंमेदोघ्नमतिलेखनम् ॥२३॥
मधुनःशर्करायाश्चगुडस्यापिविशेषतः ॥
एकसंवत्सरेवृत्तेपुराणत्वंस्मृतंबुधैः ॥ २४ ॥

अर्थ–नवीनसहत पुष्टिकारक और दस्तावर यह विशेष करके कफ नाशक नहींहै। पुराना सहत-ग्राहक, रूक्ष, मेदरोग नाशक और अत्यंत लेखन है। मधु (सहत) और खांड तथा गुड इनको एक वर्ष व्यतीत होनेसें पुराने कहातेहैं।

शीतगुणमधु और गरमियोंमें निषेध.

विषपुष्पादपिरसंसविषाभ्रमरादयः ॥
गृहीत्वामधुकुर्वंतितच्छीतंगुणवन्मधु ॥२५॥
विषान्वयात्तदुष्णंतुउष्णेचोष्णेनवासह ॥
उष्णार्त्तस्यौष्ण्यकालेचस्मृतंविषसमंमधु २६

अर्थ–विषैले भौरा आदि विषैले फूलसें मधुको संचय करके सहत बनातेहैं। वो शीतल रहनेसें गुण-कारीहोताहै। विषांश रहनेसें यह सहत गरम करा अत्यंत उपद्रव करताहै। इसीप्रकार गरमियोंमें अथवा गरम वस्तुके साथ अथवा गरमीरोगवाले रोगीको सहत विषके तुल्य अवगुण कर्त्ताहै। [इसीसें सर्वत्र पाकादिकोंमें शीतल करके फिर सहत मिलातेहैं]

मोम.

मयनंतुमधूच्छिष्टंमधुशेषंचसिक्थकम् ॥
मध्वाहारोमदनकंमधूषितमपिस्मृतम् ॥२७॥
मदनंमृदुसुस्निग्धंभूतघ्नंव्रणरोपणम् ॥
भग्नसंधानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ २८ ॥

अर्थ-मयन, मधुच्छिष्ट, मधुशेष, सिक्थक, मध्वाहार, मदनक और मधुषित ए संस्कृतनाम, हिं. मोम, बं. मधुच्छिष्ट, म. मेण, गु. मिण, फा. मोमेजर्द इं. यलोवॅक्स, कहतेहैं । गुण । मोम-मृदु, सुस्निग्ध, भूतघ्न और घावको भरनेवाला है ।

इतिश्री अभिनवनिघंटौ मधुवर्गः

इक्षुवर्गः

ईखकेनामगुण.

इक्षुर्दीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूमिरसोऽपिच ॥
गुडमूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः ॥ १ ॥
इक्षवोरक्तपित्तघ्नाबल्यावृष्याकफप्रदाः ॥
स्वादुपाकरसाःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमाः २

अर्थ-इक्षु, दीर्घच्छद, भूमिरस, गुडमूल, असिपत्र और मधुतृण, ए संस्कृत नाम हिं. ईख, गांडो, गन्ना, म. ऊंस, गु. शेरडी, तै. चिरकु, का. कबुएडु अ. कसूबुस सकर, फा. नेशंकर इं. स्युगरकेन, गुण । ईख-रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वृष्य, कफजनक, स्वादुपाकी, स्निग्ध, भारी, मूत्रकारक और शीतलहै ।

ईखकेभेद.

पौंड्रकोभीरुकश्चापिवंशकःशतपोरकः ॥
कांतारस्तापसेक्षुश्चकांडेक्षुःसूचिपत्रकः ॥३॥
नैपालोदीर्घपत्रश्चनीलपोरोऽथकोशकः ॥
इत्येताजातयस्तेषांकथयामिगुणानपि ॥ ४ ॥

अर्थ-पौंड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कांतार, तापसेक्षु, कांडेक्षु, सूचीपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर और कोशक इतनी ईखकी जात हैं । अब इनके गुणोंको भी कहताहूं ।

पौंड्रकभीरुक.

वातपित्तप्रशमनोमधुरोरसपाकयोः ॥
सुशीतोबृंहणोबल्यःपौंड्रकोभीरुकस्तथा ॥ ५

अर्थ-सपेदपौंडा और भीरुक पौंडा वातपित्त नाशक, रस और पाकमें मधुरहैं, शीतल, बृंहण और बलकर्त्ताहैं । बं-श्वेत पौंडाको श्यामसाडा और भीरुकपौंडेको साचिइक्षु और म. पांढराऊंस कहतेहैं ।

कोशकार.

कोशकारोगुरुःशीतोरक्तपित्तक्षयापहः ॥

अर्थ-कोशकार संज्ञक पौंडा भारी, शीतल, रक्तपित्त और क्षयको नष्ट करताहै ।

कांतारेक्षु.

कांतारेक्षुर्गुरुर्वृष्यःश्लेष्मलोबृंहणःसरः ॥ ६ ॥

अर्थ-कांतारेक्षु (कालेरंगका पौंडा) भारी, वृष्य, कफकारी, बृंहण और दस्तावरहै ।

दीर्घपौर और वंशक.

दीर्घपोरःसुकठिनःसक्षारोवंशकःस्मृतः ॥

अर्थ-दीर्घपौर संज्ञक, ईख, कठिन और वंशक-ईख क्षारयुक्तहै । वंशक ईखको बंबई ईख कहतेहैं ।

शतपोरक.

शतपर्वाभवेत्किंचित्कोशकारगुणान्वितः ॥
विशेषात्किंचिदुष्णश्चसक्षारःपवनापहः ॥ ७

अर्थ-शतपोरक इक्षु अर्थात् जिसमें बहुत गांठ होवे वह किंचित्कोषकार ईखके समान गुणकर्त्ताहै । अधिकता यहहै कि किंचित् उष्ण क्षारयुक्त और वातनाशक है ।

तापसेक्षु.

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपनी ॥
तर्पणीरुचिकृच्चापिवृष्याचबलकारिणी ॥८॥

अर्थ-तापसेक्षु बं-चीनेरबंबई अर्थात् चिनिया बंबई, कहते हैं । यह मृदु (नरम) मधुर, कफ कुपितकर्त्ता, तृप्तकारक, रुचिप्रद, वृष्य और बलकारक है ।

कांडेक्षु.

एवंगुणैस्तुकांडेक्षुःसतुवातप्रकोपनः ॥

अर्थ-कांडेक्षु तापसेक्षुके समान गुण करने वालाहै विशेष करके वातकुपित करताहै ।

सूचीपत्र-नीलपौर-नैपाल दीर्घपत्रकं.

सूचीपत्रोनीलपोरोनैपालोदीर्घपत्रकः ॥
वातलाःकफपित्तघ्नाःसकषायाविदाहिनः ॥९

अर्थ-सूचीपत्र (जिसके बहुतबारीक पत्ते होतेहैं) नीलपौर (जिसकी गांठ नीलेरंगकी होती है) नैपाल (नैपालदेशमें होने वाला) और दीर्घपत्र (जिसके बहुत लंबे पत्ते होतेहैं) ए चारप्रकारके पौंडा वातकर्त्ता, कफपित्तनाशक, कषेले और दाहकर्त्ताहैं ।

मनोगुप्ता.

मनोगुप्तावातहरीतृष्णामयविनाशिनी ॥
सुशीतामधुराऽतीवरक्तपित्तप्रणाशिनी॥१०॥

अर्थ-मनोगुप्ता नामक ईख-वातनाशक, तृषा-रोग नाशक शीतल, अत्यंत मधुर और रक्तपित्त निवारकहै ।

बाल्युवावृद्धेक्षु.

बालइक्षुःकफंकुर्यान्मेदोमेहकरश्चसः ॥
युवातुवातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत् ॥
रक्तपित्तहरोवृद्धःक्षतहृद्बलवीर्यकृत् ॥ ११ ॥

अर्थ-अवस्था भेदसैं ईखके गुण कहतेहैं-बाल (छोटी) ईख-कफ प्रगट कर्त्ता, मेदा बढाने वाली, तथा प्रमेहरोगको करैहै । युवा (जवान) ईख-वायुनाशक, स्वादु, कुछ २ तीक्ष्ण और पित्तनाशक, वृद्ध (पुरानी) ईख-रुधिरनाशक, घावनिवारक, बलकर्त्ता और वीर्योत्पादन करैहैं ।

अंगभेदसैं भेद.

मूलेतुमधुरोऽत्यर्थंमध्येऽपिमधुरःस्मृतः ॥
अग्रेग्रंथिषुविज्ञेयइक्षुःपटुरसोजनैः ॥ १२ ॥

अर्थ-ईख, जडकी तरफसैं अर्थात् नीचेका भाग अत्यंत मधुररस युक्त, मध्यभागमीठा, और ईखके ऊपरकीग्रंथी (पंगोली) में निमकीन रस रहताहै-अर्थात् नुनखरा रसहै ।

दांतोसैंपीडितईख.

दंतनिष्पीडितस्येक्षोरसःपित्तास्रनाशनः ॥
शर्करासमवीर्यःस्यादविदाहीकफप्रदः ॥ १३ ॥

अर्थ-दांतोंसैं चबायकर चोंखीहुई ईखका रस रक्तपित्त नाशक, खांडके समान वीर्यवाला, अविदाही अर्थात् दाह नहीं करै और कफकरनेवाला है ।

यंत्रनिष्पीडितईख.

मूलाग्रजंतुजग्धादिपीडनान्मलसंकरात् ॥
किंचित्कालंविधृत्याच्चविकृतिंयातियांत्रिकः
तस्माद्विदाहीविष्टंभीगुरुःस्याद्यांत्रिकोरसः

अर्थ-ईखकी जड और अग्र जंतुओने खायाहो तथा गाठ सकल यंत्र (कोलू) में पेलीगईहो अर्थात् दबाई गई, तथा मैल आदिके मिलनेसैं, तथा कुछअधिक कालपर्यंत धरे रहनेसैं, वह कोलूका पिलाहुआ रस विगड जाताहै । ऐसा उक्तरूप दूषितरस विदाहकर्त्ता, विष्टंभी और भारीहै ।

वासितईखकारस.

रसःपर्युषितोनेष्टोह्यम्लोवातापहोगुरुः ॥
कफपित्तकरःशोषीभेदनश्चातिमूत्रलः ॥

अर्थ-वासित (वासा) ईखका रस विगड जाता है ऐसा रस स्वादमें खट्टा, वातनाशक, भारी, पित्तकफकारक, शोषक, दस्त करनेवाला, और अत्यंत मूत्र कर्त्ताहै ।

पकी ईख.

पक्वोरसोगुरुःस्निग्धःसुतीक्ष्णःकफवातनुत् ॥
गुल्मानाहप्रशमनःकिंचित्पित्तकरःस्मृतः ॥

अर्थ-ईखका अग्निपर पकाहुआ रस भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, वातकफनाशक, गोलानाशक, और किंचिन्मात्र पित्त करनेवाला है ।

इक्षुरसविकारोंकेगुण.

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्र-
नाशनाः ॥
गुरवोमधुराबल्याःस्निग्धावातहराःसराः ॥
वृष्यामोहहराःशीताबृंहणाविषहारिणः ॥

अर्थ-इक्षु विकार अर्थात् गुडादिकपदार्थभारी, मधुर, बलकारक, स्निग्ध, वातनाशक, दस्तावर, वृष्य, मोहनाशक, शीतल, बृंहण और विषघ्न । इनका सेवन तृषा, दाह, मूर्छा और रक्तपित्त रोगको नाशकरै ।

फाणित.

इक्षोरसस्तुयःपक्वःकिंचिद्गाढोबहुद्रवः ॥
सएवेक्षुविकारेषुख्यातःफाणितसंज्ञया ॥
फाणितंगुर्वभिष्यंदिबृंहणंकफशुक्रकृत् ॥
वातपित्तश्रमान्हंतिमूत्रबस्तिविशोधनम् ॥

अर्थ–कुछ २ गाढा और अधिक भाग पतला ऐसे पकेहुएरसको फाणित अर्थात् राब कहतेहैं। गुण। फाणित रस-भारी, अभिष्यंदी, बृंहण, कफकर्ता, तथा शुक्रोत्पादक। यह वात, पित्त, आम, मूत्रके विकार और बस्तिदोषोंको निवारण करे।

मत्स्यंडी.

इक्षोरसोयःसंपक्वोघनःकिंचिद्द्रवान्वितः ॥
मंदंयत्स्यंदतेतस्मात्तन्मत्स्यंडीनिगद्यते ॥
मत्स्यण्डीभेदिनीबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा
मधुराबृंहणीवृष्यारक्तदोषापहास्मृता ॥

अर्थ–किंचित् द्रव युक्त-पक्व-गाढे ईखके रसका नाम मत्स्यंडी (मिश्री) अर्थात् मन्द, स्यंदन, क्षरण इत्यादि हेतुओंसें इसका नाम मत्स्यंडीहै। गुण। मिश्री-भेदक, बलकारक, हलकी, वातपित्तनाशक, मधुर, बृंहण, वृष्य और रक्तदोष निवारकहै।

गुड.

इक्षोरसोयःसंपक्वोजायतेलोष्ठवद्दृढः ॥
सगुडोगौडदेशेतुमत्स्यंड्येवगुडोमतः ॥
गुडोवृष्योगुरुःस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः ॥
नातिपित्तहरोमेदःकफकृमिबलप्रदः ॥ २३ ॥

अर्थ–ईखके रसको पकायकै ढेलेके समान दृढ (गाढा) करा गया हो उसको गुड कहतेहै। परंतु बंगालेमें मिश्रीको गुडकहतेहैं। म. गुळ, गु. गोल, का. बेल, तै. बेल्लामु, अ. कंदेअसवद, फा. कंदेसियाह, इं. ट्रीकलमोलासीस कहतेहैं। गुण। गुड-वृष्य, भारी, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रशोधक मेदावर्द्धक, कफकर्त्ता, कृमिजनक और बलकर्त्ता, यह विशेषकरके पित्तनाशक नहींहै।

पुराना गुड.

गुडोजीर्णोलघुःपथ्योऽनभिष्यंद्यग्निपुष्टिकृत् ॥
पित्तघ्नोमधुरोवृष्योवातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥

अर्थ–पुरानागुड-हलका, पथ्य, अनभिष्यंदी, अग्निकारक, पुष्टिकर्त्ता, पित्तनाशक, मधुर, वृष्य, वातनाशक और रुधिरको स्वच्छ करने वाला है।

नवीनगुड.

गुडोनवःकफश्वासकासकृमिकरोऽग्निकृत् ॥
श्लेष्माणमाशुविनिहंतिसदार्द्रकेण ॥
पित्तंनिहंतिचतदेवहरीतकीभिः ॥
शुंठ्यासमंहरतिवातमशेषमित्थं ॥
दोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय ॥ २९ ॥

अर्थ–नवीनगुड–अग्निकारकहै, इसका सेवन करना कफ, श्वास और कृमिरोगको करेहै। नित्य अदरखके रसमें गुडमिलायकै सेवन करनेसै कफ नष्ट होय। हरडके साथ गुड खानेसैं पित्तनाशक और सोंठके साथ गुड भक्षण करना संपूर्ण वातविकारोंको नष्ट करे। अतएव हे त्रिदोषनाशकगुड! तुमको नमस्कार है।

खांड.

खंडंतुमधुरंवृष्यंचक्षुष्यंबृंहणंहिमम् ॥
वातपित्तहरंस्निग्धंबल्यंवांतिहरंपरम् ॥

अर्थ–खांड-मधुर, वृष्य, नेत्रोंको हितकारी, बृंहण, शीतल, वातपित्तनाशक, स्निग्ध, बलकारक और वमननिवारकहै। बं. खांडको, खांडगुड म. साखर, तै. पांचादारा, का. माळखंड, फा. सकर, ला. साक्करम्, इं. शुगर कहतेहे।

सपेदखांड. (चीनी)

खंडंतुसिकताकारंसुश्वेतंशर्करासिता ॥
सितासुमधुरारुच्यावातपित्तास्रदाहहृत् ॥

अर्थ–खांडको पाकद्वारा वालूके समान रवा २ के समान करीहुईको चीनीखांड कहतेहैं। चीनी सुंदर सपेद रंग होतीहै, इसके संस्कृतनाम शर्करा और सिता। गुण। चीनी-मधुर, रुचकारी, वातपित्तनाशक, रुधिर दोषनिवारक, दाहशांतिकर्त्ता शीतल और शुक्रजनक, इसके भक्षण करनेसैं मूर्च्छा, वमन और ज्वर नष्ट होय।

गुडशर्करामिश्री.

मूर्छाछर्दिज्वरान्हंतिसुशीताशुक्रकारिणी ॥

भवेत्पुष्पसिताशीतारक्तपित्तहरीलघुः ॥

सितोपलासरालघ्वीवातपित्तहरीहिमा ॥

अर्थ-गुडशर्करा (फुलचीनी) और मिश्रीके गुण। फूलचीनी शीतल, रक्तपित्तनाशक और हलकी, मिश्रीदस्तावर हलकी, वात पित्तनाशक और शीतलहै।

मधुखंड.

मधुजाशर्करारूक्षाकफपित्तहरीगुरुः ॥

छर्द्यतीसारतृड्दाहरक्तहृत्तुवराहिमा ॥ २९ ॥

अर्थ-सहतसे बनी शर्करा (खांड) रूक्ष, पित्त-कफ नाशक, भारी कषाय और शीतल। इसके सेवन करनेसें वमन, अतिसार, तृषा, दाह और रक्तदोषको निवारण करे।

यथायथैषांनैर्मल्यंमधुरत्वंयथायथा ॥

स्नेहलाघवशैत्यादिसरत्वंचतथातथा ॥ ३० ॥

अर्थ-ऊपर लिखे ईखके विकार समस्त जैसें २ स्वच्छ करे जावे तैसें २ मधुर, स्निग्ध, लघु, शीतल और दस्तावर होतेहैं।

इतिश्री माथुर कृष्णलाल तनयदत्तरामकृते अभिनवनिघंटौ इक्षुवर्गः

अनेकार्थनामवर्गः।

द्व्यर्थनाम.

अब यहांसें आगे उन औषधोंका वर्णन है कि जिनके अनेकअर्थ होतेहैं, तहां प्रथम दो अर्थवाली औषध लिखतेहैं, इसमें हमनें भावप्रकाशग्रंथ कर्त्ताके अनुक्रमको अकाराक्षरके क्रमसें लिख दीना है कि जिस्सें औषधके खोजकरनेमें परिश्रम न होवे।

अंगारवल्ली-भारंगी और घूंघची.
अग्नि-चित्रक और भिलावा.
अग्निमुखी-भिलावा और कलयारी.
अग्निशिखा-केशर और कसूम.
अजशृंगी-मेंढासिंगी और काकडासिंगी.
अंजन-कालासुरमा और सपेदसुरमा.
अपराजिता-कोयल और शालपर्णी.
अमोघा-वायविडंग और पाढर.
अमृणाल-खस और लामजक.
अरुणा-मजीठ और अतीस.
अश्मंतक-खहीलोनी और कोविदार.
आस्फोता-कोयल और सरवन.
उग्रगंधा-वच और अजमायन.
उदुंबर-गूलर और तांमाधातु.
ऐन्द्री-इन्द्रायन और इन्द्रवारुणी.
कटंभरा-कुटकी और स्योनाक.
कणा-पीपल और जीरक.
कठिल्लक-करेले और लाल पुनर्नवा.
कर्कशा-कबीला और कसोंदी.
कुटंनट-टैंटू और केवटीमोथा.
कुनटी-धनिया और मनसिल.
कुंडली-गिलोय और कोविदार.
कुलक-परवल और कुचला.
कोशातकी-तुरैयां और गलकातोरई.
कृमिघ्न-वायविडंग और हलदी.
गोलोमी-सपेददूब और वच.
गंडीर-गंडारीसाग और मजीठ.
गंधफली-प्रियंगु और चंपेकीकली.
गंधारी-धमासा और गंधपलासी.
घोंटा-सुपारी और बेर.
चर्मकषा-सातला और मांसरोहिणी.
चित्रा-इंद्रायन और बडीदंती.
तालपर्णी-मूसलीऔर मुरागंधद्रव्य.
तुंडकेरी-कपास और कंदूरी.
तेजन-सरपता और बांस.
तेजनी-तेजवल्कल और मूर्वा.
त्रिपुटा-निशोथ और छोटी इलायची.
दीप्यक-अजमायन और अजमोद.
दीर्घमूल-जवासा और शालपर्णी.
देवी-मूर्वा और स्पृक्काऔषधी.
दंतशठ-जंभीरी और कैथ.
दंतशठा-इमली और चूका.
धान्य-धनिया और शालीचावलआदि.
धारा-गिलोय और क्षीरकाकोली.

नंदीवृक्ष-बेलियापीपर और तूनी.
पद्मा-कमलिनी और भारंगी.
पय-दूध और जल.
परिव्याध-कनेर और जलबेत.
पारावतपदी-मालकांगनी और काकजंघा.
पिच्छिला-सेमर और सीसोंका वृक्ष.
पीलुपर्णी-मूर्वा और कंदूरी.
पुष्पफल-कैथ और पेठा.
पोटगल-नरसल और कांस.
प्रियंगु-फलनी (खिरनी) और कांगनी.
भृंग-भाँगरा और तज.
बालपत्र-कत्था और जवासा.
बाह्लीक-केशर और हींग.
मधूलिका-मूर्वा और जलमुलहटी.
मदनक-मरुआ और मैनफल.
मोचा-केला और सेमर.
यवफल-इन्द्रजौ और बांस.
राजादन-खिरनी और चिरौंजी.
रुचक-कालानिमक और बिजोरा.
रुहा-दूब और मांसरोहिणी.
रोचन-कबीला और गोरोचन.
लोणिका-नोनियाका साग और चूकेका साग.
वसुक-लालआक और खारी निमक.
वारि-जल और नेत्रवाला.
वितुन्नक-धनिया और नीलाथोथा.
विश्वा-सोंठ और अतीस.
ब्राह्मणी-भारंगी और स्पृक्काद्रव्य.
शकुलादनी-कुटकी और जलपीपल.
शठी-कचूर और गंधपलासी.
शारदी-सारिवा और जलपीपल.
शीतशिव-सैंधानिमक और सौंफ.
श्यामा-सारिवा और प्रियंगु.
क्षार-सज्जीखार और जवाखार.
समंगा-मजीठ और लजालू.
सहस्रवीर्या-नीलीदूब और महाशतावर.
सिंही-कटेरी और अडूसा.
सेव्य-खस और लामज्जक.
स्वादुकण्टक-गोखरू और विकंकत.

तीन अर्थके शब्द.

अनंता-धमासा, नीलीदूब और कलियारी.
अमृता-गिलोय, हरड और आंवले.
अरिष्ट-नीम, लहसन और मद्यका भेद.
अम्बष्ठा-हरडबडी, मुंडी और कमलनी.
अक्षीव-सहजना, बकायन और समुद्रलवण.
अंबष्ठा-पाढ, चूका, मोइया.
इन्द्रद्रु-कोह, देवदारु और कुटज.
इक्षुगंधा-कांस, तालमखाने, गोखरू और क्षीरविदारी.
ऋष्यप्रोक्ता-अतिवला, महाशतावरी और छ.
कपीतन-अंबाडा, सिरसवृक्ष और गर्दभांड.
कारवी-कलौजी, सतावर और अजमोद.
कालमेषी-मजीठ, बावची और कालीनिसोथ.
कालस्कंध-श्यामतमाल, तेंदू और कालाखैर.
कालानुसार्य-पीलाचंदन, तगर और छडीला.
काश्मीर-केशर, पुहकरमूल और कंभारी.
काश्मीरी-गुंद्र, पटेरा और सरपता.
कृष्णवृंता-पाढर, गंभारी और माषपर्णी.
कृष्णा-पीपल, कलौंजी और नील.
क्रमुक-सुपारी, सहतूत और पठानी लोध.
क्षीरणी-दुद्धी, क्षीरकाकोली और सपेद सारिवा.
क्षुरक-तालमखाना, गोखरू और तिलकपुष्प.
गुन्द्रा-प्रियंगु, भद्रमोथा और नागरमोथा.
चांपेय-चंपा, नागकेशर और कमलकी केशर.
चुक्रम्-चूका, अमलवेत, तंतडीक.
जीवंती-गिलोय, जीवंतीकासाग और बांदा.
ताम्रपुष्पी-धायकेफूल, पाढल और निसोथ.
दुस्पर्शा-जवासा, कौंछ और कटेरी.
धामार्गव-लाल ओंगा, गलकातोरई और तोरई.
नादेयी-अरनी, जलजामुन और जलवेत.
पलास-ढाक, गंधपलासी और पत्रज.
पलंकषा-गूगल, गोखरू और लाख.
पाक्य-विड, कालानौन और जवाखार.
पीतदारु-हलदी, देवदारु और सरल.
पारिभद्र-नीम, फरहद और देवदारु.
पृथ्वीका-कलौजी, बडी इलायची, हिंगुपत्री.
प्रियक-प्रियंगु, कदंब, विजेसार.

भूतीक-चिरेता, कतृण और भूतिक.
भृंग-भाँगरा, तज और भौरा जीव.
मदन-मैनफल, धतूरा और मोम.
मधु-सहत, पुष्परस और मद्य.
मधुपर्णी-गिलोय, कंभारी और नील.
मयूर-चिरचिरा, अजमोद और लीला थोथा.
मर्कटी-कौंछ, चिरचिरा और करंजा.
महौषध-सोंठ, लहसन और सिंगियाविष.
मंडूकपर्ण-स्योनाक, [र्णी] मंजिष्ठा और ब्रह्ममांडूकी.
रक्तसार-लालचंदन, पतंग और खैर.
रसा-रास्ना, सल्लकी और पाठा.
रास्ना-नाकुली, नील और सम्हालू.
लता-सारिवा, प्रियंगु और मालकाँगनी.
लक्ष्मी-ऋद्धि, वृद्धि और छोंकरा.
लोह-लोह, कांसा, और अगर.
वरदा-हुरहुर, असगंध और वराहीकंद.
वसिर-लाल ओंगा, गजपीपल और समुद्रलवण.
विशल्या-कलियारी, गिलोय और छोटीदंती.
वीर-कोह, वीरणतृण और काकोली.
वीरतरु-कोह, वीरणतृण और सरपता.
वंजुल-अशोक, बेत और तिनिस.
शतपर्वा-वांस, दूव, और वच.
शिला-मनसिल, शिलाजीत और गेरू.
श्रीपर्णी-गंभारी, गणकारिका और कट्फल.
श्रेयसी-हरड, रास्ना और गजपीपल.
षड्ग्रंथा-वच, गंधपलासी और करंज.
सदापुष्प-सपेद आक, लाल आक और कुंद.
समुद्रांता-धमासा, कपास और स्पृक्का.
सहस्रवेधी-अमलवेत, कस्तूरी और हींग,
सहा-मुद्गपर्णी, कँगही और गुलाब.
सुरभी-सल्लकी, मुरागंधद्रव्य और एलवालुक.
सोमवल्क-कट्फल, सफेद खदिर और घृतकरंज.
सोमवल्ली-बावची, गिलोय और ब्राह्मी.
सौगंधिक-लाल कमल, कतृण और गंधक.
सौवीर-सपेद सुरमा, बेर और कांजीका भेद.
हैमवती-हरड, सफेद वच, पीले दूधकी कटेरी (चोक)

बह्वर्थनाम.

अक्षशब्दःस्मृतोऽष्टासु सौवर्चलबिभीतके।
कर्षपद्माक्षरुद्राक्षशकटेंद्रियपाशके ॥ १ ॥
काकाख्यः काकमाची च काकोली काकजंतिका ॥
काकजंघा काकनासा काकोदुंबरिकापि च
सप्तस्वर्थेषु कथितः काकशब्दो विचक्षणैः २
सर्पेद्विरदमेषेषु सीसके नागकेसरे ॥
नागवल्यां नागदंत्यां नागशब्दः प्रयुज्यते ३
मांसे द्रवे चेक्षुरसे पारदे मधुरादिषु ॥
बालरोगे विषे नीरे रसो नवसु वर्तते ॥ ४ ॥

अर्थ-अब उन शब्दोंको लिखतेहैं जिनके अनेक अर्थ होतेहैं । अक्षशब्दके आठ अर्थ है। जैसे कि संचरनिमक, बहेडा, १ कर्षतोल, पद्माक्ष, रुद्राक्ष. छकडा, इन्द्री और फांसे । काकशब्दके मकोय कालोली, लाल घुंघची, काकजंघा, काकनासा, कठूंमर और कौआपक्षी ए सात अर्थ है । नागशब्दके सांप, हाथी, मेंढा, शीशा, नागकेशर, नागरवेलपान और नागदंती इतने अर्थ है । रसशब्दके मांस, रस. ईखका रस, पारद, मधुरादि छः रस, बालकका एक-रोग, विष और जल, ए नौं अर्थ हैं ।

इति श्रीभावप्रकाशांतर्गते
अभिनवनिघंटौ द्रव्यखंडः

समाप्तः

इति श्रीदत्तरामनिर्मितअभिनवनिघंटुभाषानुवादः समाप्तः ।

मसाप्त·

॥ श्री ॥

श्रीरामचन्द्रे ।

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः

अभिनवनिघण्टुका परिशिष्ट.

इस भागमें फारसी अरबीके शब्द अधिक आएहै इसवास्ते उनका खुलासा नीचे दिया जायहै ।

दोषः खिल्तइतिप्रोक्तः सचतुर्द्धानिरूप्यते ।
सौदा सफरातथावल्गम् तुरीयं खूनउच्यते

अर्थ-जिसे आयुर्वेदमें दोष कहतेहैं उसीकी यूनानीमें खिल्त संज्ञाहै (आयुर्वेदमें वात पित्त और कफ तीन दोष हैं परंतु यूनानीवाले) चार खिल्त मानतेहैं जैसे सौदा (वादी), सफरा (पित्त), वल्गम (कफ) और खून (रुधिर) ।

आहारस्यरीपाके फेनस्यात्कफसंज्ञकः
सम्यक्पक्वस्तु रुधिरोद्भवकारी रसस्मृतः २

अर्थ-भोजनकी पाकावस्थामें जो आहार पचनेके समय फेन (झाग) प्रकट होताहै वही कफहै । यदि वह आहार ठीक २ पच गया होय तो वह रुधिरके उत्पन्न करनेवाला रस कहाहै । २ ।

सकैलूसच कैमूसयकृदंगोन्मुखोयदि ।
खरपाकस्तु पित्तस्याद्भस्मसौदासमीरितम्

अर्थ-वह उत्तमरस जब यकृत् (कलेजे) की तरफ गमन करताहै तब उसे कैलूस और कैमूस कहतेहै । यदि उसका खर (अत्यंत) पाक होजाय तो वह पित्त होजाताहै । उस जले हुए भस्म (खाक)को सौदा (वात) कहतेहैं ।

तत्रसौदाधरातत्वंरूक्षंशीतंस्वभावतः ।
पित्तमग्नेस्वरूपंतु सफरारूक्षमुष्णकम् ॥ ४ ॥
वल्गमुवारिस्वरूपंस्यात्सकफःस्निग्धशीतल
असंवायुखूनइतिस्निग्धोष्णंतेषुतद्वरम् ॥५॥
तत्संबन्धात्परंदोषत्रयंतस्यानिराकृते ।
निराकृताः समस्तास्युर्यतोरोगनिबर्हणम् ॥

अर्थ-तहां सौदा (वात)का पृथ्वीतत्व वह स्वभावसेही रूखा और शीतल है । अग्नि रूप पित्त (सफरा) वह रूक्ष और उष्ण है । ४ । वल्गम् (कफ) जल रूप वह स्निग्ध और शीतलहै और रुधिर वात मिश्रित (खून) वह स्निग्ध और उष्णहै इन सर्व दोषोंमे खूनही उत्तमहैं । इसीके संबंधसे अन्य वातादि तीन दोष है, इसी खूनके निराकरण (त्याग अर्थात् निकालनेसे) सर्व दोष निकल जाते है और उस फस्तके खोलनेसेही सर्व रोगमात्र नष्ट होते हैं ।

पवनादिधरान्तानां चतुर्णांशक्तिवैभवात्
द्रव्येषुप्रकृतिर्जाता तबियत्साप्रकीर्तिता ७
शीतोष्णस्निग्धरूक्षत्ववीर्यद्वयगुणद्वयात्
चतुर्द्धाभेदमापन्नाचतुर्भिश्चपृथक्कया ॥ ८ ॥

अर्थ-पवन, पानी, आग और जमीन चारोंकी शक्तिके वैभव (प्रतापसे) द्रव्योंमे जो प्रकृति हुई उसे तबियत[1] कहतेहै । शीतल, गरम, स्निग्ध और रूक्ष इन दो २ वीर्य और दो २ गुणोंसे पृथक् पृथक्त्वसे वही तबियत चार प्रकारकी हो गई है ।

बरूदत्शीततप्रोक्ता हरारत्चोष्णतामता
रतूबत् स्निग्धताज्ञेया यबूसत्रूक्षतास्मृता
सर्दीगर्मीतरीखुश्कीतत्पर्यायाइमेपुनः
उष्णंहारइतिप्रोक्तंशीतंबारिद इत्यपि ॥१०॥

---

1 तबियत या मिजाज स्वभावके पर्यायवाची शब्द है ।

स्निग्धंरतवक्षाज्ञातुरूक्षंयविस संज्ञकम्
अवरेऽपिचपर्य्याया सर्दखुष्कगरमतर ॥११॥
समानाधिकेरण्यनद्वंद्वत्वंचद्वयोर्द्वयोः
भवत्यत्र विधात्स्यात्पुनर्भेदचतुष्टयात् १२
एकद्वित्रिचतुःसंख्यागुणितंयभतद्भवेत्
सर्वद्वयंचपूर्वोक्तं सदर्जासंप्रकीर्त्तितः ॥१३॥

अर्थ–सरदीको बरूदत्, गरमीको हरारत, स्निग्धता (चिकनई) को रतूबत् और रूक्षताको यूनानी भाषामें यबूसत् कहते है । फिर इन बरूदत आदि चारोके क्रमसे सर्दी, गर्मी, तरी और खुश्की ए पर्याय वाचक शब्द है ।

गरमकी हार, सरदकी बारिद्, स्निग्धकी रतब और रूक्षकी याबिस संज्ञा है । इन चारोकी सर्द, गर्म, खुष्क और तर ए क्रमसे पर्यायवाची शब्द है ।

समानाधिकरण अर्थात् आपसमें बराबरकेको मिलानें और दो दोका जोड़ा होनेसे वही सर्द गर्म आदि चारके आठ भेद हो जाते है । जिस जगह गुणन करनेसे एक, दो, तीन और चार संख्या उन्ही पूर्वोक्त गरम तर आदिकी होती है । उसकी दर्जा संज्ञा कही है । अर्थात् यह पहले दर्जेकी यह दुसरे दर्जेकी औषध है । अथवा यह पहले दर्जेमें सर्द और दूसरे दर्जेमें खुष्क और तीसरे दर्जेमें गरम या तरहै इत्यादि । अब दर्जा जाननेको उनके लक्षण नीचे लिखे जाते हैं ।

यत्रद्रव्येक्षशाभासंशीतत्वाद्यणुसंभवेत्
नपुनर्व्यक्तिमायाति सदर्जेअव्वलस्मृतम् १३
व्यक्तंस्याद्यत्रशीतादिज्ञायतेमनुजैःपुनः
भिषग्वर्य्यौर्विभाव्यंतद्वदर्जेदुयमीदृशम् १४
व्यक्तंवेद्यंप्रगल्भंच यत्रशीतादिकंभवेत्
तत्रत्रिगुणतत्वात्तुसदर्जेस्योम्वस्तुषु ॥१५॥
व्यक्तंवेद्यंप्रौढवैकल्यकारि
प्रायोद्रव्येशैत्यमौष्ण्यादिकस्या ।
एवंवस्तुज्ञेयमंशांशविद्भि
रायुर्विद्भिस्तद्वदर्जेचहारम् ॥ १६ ॥

अर्थ–जिस द्रव्य (औषधआदि) में शरदी, गरमी आदिका बहुत सूक्ष्म परमाणुका आभासमात्र (झलक) हो, परंतु शरदीआदिका प्रत्यक्ष ज्ञान (प्राकट्य) नहो, वह अव्वल दर्जा है, अर्थात् प्रथमश्रेणीकी दवा है ।

जिस द्रव्यमें सरदी, गरमी आदि प्रकट हो और उनको प्राणी जानलेवे उसको वैद्यवर्य दूसरादर्जा जाने अर्थात् वह दूसरेदर्जेकी औषधी है ।

जिस द्रव्यमें शरदी गरमी, आदि प्रकट हो और जानलिये जावे, तथा प्रगल्भता (बहुतायत) के साथहो, वह वस्तुओंमें सोयम् अर्थात् तीसरा-दर्जा है ।

जिस द्रव्यमें शरदी अथवा गरमीकी व्यक्तता (प्राकट्य), वेद्य (जानना), प्रौढ (प्रगल्भता) और विकलकारी धर्म हो वह वस्तुओंमें चहारम् अर्थात् चौथादर्जा है ।

अब इन्ही लक्षणोंको पुरुष व्याघ्रके दृष्टांतसे खुलासा करे देते है । जैसे शिकारी–प्राणी बघेरेकी चमडी, नाखूनआदि रत्नोंको लेनेके वास्ते घोरवनमें रहनेको और उसको अपने वशीकरण करने तथा उस वनमें अपना प्रभाव फैलानेको चार प्रकारका साहस करता है । तहां प्रथम प्रहार करनेको परिकर (फोज) लेना यह प्रथमसाहस, उसको लेजाकर उस बाघके सन्मुख करना दूसरासाहस, उसके साथ संग्राम करना तीसरासाहस, एवं उस बघेरेको निग्रह करना चौथासाहस जानना । इन चार साहस संपन्न प्राणी अपने कार्यसिद्धिको पहुचता है । अब इस दृष्टांतको दार्ष्टांत देकर समझाते है ।

१ वादीको प्राणरूप और जीवके स्निग्ध उष्णत्व साहचर्य वसी प्रकार रुधिरके आश्रयत्व और जीवप्राणके एकाश्रयत्वसे वातकोभी स्निग्धोष्णत्वमें कोई दूषण नहीं आता । जैसे दीपक स्निग्धोष्ण तेल प्रकाशक है । किंतु कुपितवात रूक्ष और शीतलही है ।

२ जैसे शरदी, गरमी, तरी, खुष्की, गरमतर, गरम खुष्क, सरदतर, गरम सर्द ।

१ तहां निग्रह तीन प्रकारका है अर्थात् शमन करना (जहांका तहां बैठाय देना) दूसरा वहांसे निकाल देना, तीसरा उसको मार डालना ।

कि जैसे वहांपर वन है, यहां पुरुषकी प्रकृतिही महा घोर वन है, उसमें बहुत दिन पर्यंत रहना और अपने वशीभूत करना पुरुष प्रकृति और वन दोनोंमें समानता है। उस वनमें वघेरा रहता है, इस मनुष्यकी प्रकृतिमें कमवढ दुष्ट दोष रूप व्याधिही व्याघ्र है उसका निग्रह (जीतना) बिंबप्रतिबिंब अर्थात् असल और परछाहीके भावसे खुलासा है। जिसके जीतनेसे इस प्राणीको आरोग्यरूप रत्नलाभ और यशकी प्राप्ति होतीहै । इसी विचारसे कार्य करनेमे उस पुरुषका इस प्राणीके प्रकृति रूप वनकेभीतर प्रवृत्ति लक्षणागति प्रथम साहकेतुल्य १ पहला दर्जा कहा । इस प्रकार उत्तरोत्तर वढनेवाली प्रवृत्ति दूनी होनेसे दूसरा दर्जा, तीगनी प्रवृत्तिसे तीसरा दर्जा और चौगनी गति होनेसे चौथा दर्जा जानना । यह अवधी है।

मातदिल्लक्षणंख्यातंसमानबलमल्लवत् १७

अर्थ-मातदिल् (कायम् प्रकृति) लक्षण वरावरके दो पहलवानोंके सदश जानलेनी, अब फिर पूर्वोक्त प्रसंगको कहतेहैं।

अवदालसमानत्वंयत्रसर्वात्मनाभवेत्
तद्रव्यंमातदिल्प्रोक्तमेतन्मतविशारदैः १८
यत्रास्तेशिशिरत्वादिचतुर्गुणमखंडितम्
त्रैगुण्यंरूक्षतायास्तुतच्चोपविषमीरितम् १९
तद्यथाफणिफेनादिस्तुह्यर्कक्षीरमित्यपि
चतुर्गुणंतुशैत्यादिरुष्णत्वंतावदेवहि २०
यत्रास्तितद्विषंज्ञेयंवत्सनाभशशीयथा
पूर्वस्यात्तुदवासम्मीसममुतलक् परंस्मृतम्

अर्थ-जिसका प्रारंभ सर्व प्रकारसे समान (यकसा) हो उस द्रव्यको इस यूनीनी मतके ज्ञाता **मातदिल** (मध्यम श्रेणीकी) कहतेहै ।

और जिस द्रव्यमें शिशिरत्वादि (सरदी आदि) एकसी चतुर्गुण हो और रूक्षता तिगनी हो वह उपविष कहाहै जैसे अफीम थूहर और आकका दूध आदि।

और जिस द्रव्यमें शैत्यआदि निरंतर चौगुने हो तथा उतनीही उष्णता (गरमी) होय उस द्रव्यको विष (जहर) जानना जैसे वच्छनाग और कपूर है । इनमें पूर्व उपविषको **सम्मीदवा** कहतेहै और दूसरी अर्थात् जहरको **सममुतलक्** कहतेहै ।

तवियत्कैफियत्कुव्वत्खासियञ्चचतुष्टयम्
निखिलंद्रव्यगंज्ञेयमल्पंकिंवाप्यनल्पकम् २२
प्राणिप्रकृतिसंयोगाद्यत्प्रकृत्यंतरंभवेत्
तद्विगाह्यपुनर्यस्यात्कैफियत्साप्रकीर्तिताः

अर्थ-सर्व द्रव्यमात्रमें तवियत्, कैफियत्, कुव्वत् और खासियत् ए चार वस्तु थोडी या बहुत अवश्य रहतीहै । तहां **तवियत्** (स्वभाव) का वर्णन तो उपरही प्रथमकर आएहे । अब **कैफियत्के** लक्षण कहतेहै कि इस प्राणीकी प्रकृतिके संयोग होनेसे जो दूसरी प्रकृति वनजावे इन दोनोंके वीचमें प्रवेश होकर जो एक अन्य प्रकृति वने उसको **कैफियत्** कहतेहैं।

कुव्वत्शक्तेस्तुपर्यायोविविधासाभवेदिह ।
स्तंभिनीरेचनीत्यादिभेदास्तासांसमासतः२४
स्तंभिनीत्रिविधाशक्तिः काविजहाविसमुम् सिका
इमसाककब्जहवसकर्माण्यासांविदुर्बुधाः२५
मलरोधकरी पूर्वा रजः स्वेदाऽस्रजांपरा ।
रेतःस्तंभेतृतीयास्याद्रेचनीतु द्विधामता २६
एकामुदिर् इदरारकर्त्रीशुक्राऽऽर्तवस्यच ।
स्वेदमूत्र प्रवृत्तौच सैवप्रोक्ता भिषग्वरैः २७
अरकस्वेदो वोलमूत्रं हैज आर्त्तवमीरितम् ।
मनी शुक्रंसमुद्दिष्टमेतन्मतविचक्षणैः ॥२८॥

अर्थ-कुव्वत् यह शक्तिका पर्यायवाची शब्द है, वह शक्ति अनेक प्रकारकी है. जैसे स्तंभिनी और रेचनी इत्यादि संक्षेपसे भेद जानने । तहां स्तंभिनीशक्ति तीन प्रकारकी है जैसे **काविज, हाविस और मुम्सिक।** इन तीन शक्तियोंके इमसाक, कब्ज, **हवस** ए तीन कर्म है । तहां **काविज** नामक शक्ति मलको रोकने वाली है । **हाविसशक्ति रज** (स्त्रियोंका रजो धर्म पसीने और रुधिरको रोकती है । तथा तीसरी **मुम्सिकशक्ति** वीर्यका स्तंभन करती है ।

देहनीकवी दो प्रकारकी है एक मुदिर्र इदरार है जहां शुक्र और आर्तव (रजोदर्श) तथा पसीने और मूत्र प्रवृत्तिमें वही मुदिरशक्ति कारण है. पसीनोंको अरक, मूत्रको बोल, आर्तवको हैज और शुक्रको मनी यूनानीवाले कहते है । अब शुक्रको विविधत्व कहते हैं ।

मनी प्रजोत्पादन शक्ति शुक्रं ।
विलोकनाऽऽलिंगनतोङ्गनायाः ॥
क्लेदः स्मराऽपायकरो मजीस्यात् ।
निर्हारकालेस्खलनंवदीस्यात् ॥ २९ ॥

अर्थ–मनी नामक शुक्रमें प्रजोत्पादन अर्थात् संतान प्रकट करनेकी शक्ति है, यह स्त्रीके देखने और आलिंगन करनेसे प्रकट होय है । तथा क्लेद (आर्द्रता जो वीर्य निकलनेसे प्रथम चिपकनापन इन्द्रीसे निकलता है वह) और कामोद्दीपनको अपाय कर्ता वीर्य शक्तीको मजी कहते हैं । और निर्हारकाल (स्खलित होने) के समय वीर्यकी वदीशक्ति होती है ।

अपरामुसहिल्नाम्नी इसहालरेचनंविशः ।
नौमनिद्रा समाख्याता मुनाकिम्तद्विधायनी॥
परीपाकस्तुदोषाणां नुज्जुजनामसमीरितः ।
तद्विधानक्षमायासामुंजिज् संज्ञेति कथ्यते॥
सुकुन्मदस्यपर्यायस्तत्कृतौ या पटुर्भवेत् ।
शक्तिर्मुस्किरसाप्रोक्ताप्रतीची वैद्यकोविदैः॥
कयवांतिः पुराविद्भिर्गदितातत्करीतुया ।
मुकय्यिशक्तिराख्याताग्रन्थेष्वायुर्विदावरैः ॥
तुफतीह स्रोतसांरोधविमुक्तिस्तत्करीतुया ।
मुफत्तीहशक्तिरित्येषासुद्दारोधःप्रकीर्तितः ॥
नऊज इनआज वैषद्दीपनंपुष्प धन्वनः ।
तत्प्रयोजन कर्तृत्वे मुनइज समुदाहृतः ।३५
वाह ओज समुद्दिष्टं तत्पटुत्व करीतुया
शक्ति उद्दीपनांतस्या मुवहीसा निगद्यते ३६
वरमऔराम शोथःस्यात्तस्यतहलील संज्ञयः
मुहल्लिल्शक्तिरित्येषां तत्कृते प्रतिपादिता३७
संशोध्यसमताकार्यं सातलतीफ इतिस्मृता
शक्तिर्मुलत्तिफ्ख्याख्याताहितादोषचतुष्टये ।
शैथिल्यं खद्रप्रोक्तंचेष्टायांवर्ष्मणःसतः ।
विधीयते ययासाच मुखद्दिरशक्तिरुच्यते३९
गशवैकल्यंसमादिष्टमातंकस्यापजीविनः
विधीयतेययाशक्तिर्मुगशशीसाविधीयते॥४०
शिरोहृद्यकृदादुष्प्रपकाशयइतिक्रमात् ।
दमाग दिल् जिरं मादा एतदंग चतुष्टयम् ।
आजायरईसइत्युक्तंश्रेष्ठंदेहेशरीरिणाम् ।४१

अर्थ–दूसरी मलको रेचनकर्ता शक्तिको इसहाल कहतेहै, तत्कर्म अर्थात् दस्तलानेवाली शक्तिको मुसहिल-शक्ति कहतेहै ।

नौम नाम यूनानी निद्राका है उसको करने वाली शक्तिका नाम मुनकिम् है ।

दोषोंके परिपाक अर्थात् पकानेको नुज्जुज् कहते है अतएव उस पकानेमें जो शक्ति लगतीहै उसका नाम मुंजिज् (मुंजिस) संज्ञा है । सुकुन् नाम मदका उस मदकरनेमें जो प्रवीणशक्ति है उसको मुस्किर संज्ञा पश्चिमीवैद्य कहतेहै ।

वमनको यूनानवाले कय कहते है, उस कयके करानेवाली शक्तिको मुकयी शक्ति कहते है ।

तफतीह नाम देहके छिद्ररुकनेका है, उन छिद्रोंको जो खोले उसको मुफत्तिहशक्ति कहते है । तहां रुकनेका नाम सुद्दा है ।

नऊज और इनआज कामोद्दीपनको कहते है, उस कामोद्दीपनकर्त्ता शक्तिको मुनइजशक्ति कहतेहै ।

वाह नाम ओजका है उसको प्रवीणकर्त्ता शक्ति उद्दीपनस्थको मुवही कहते है ।

वरम औराम सूजनको कहते है उसके जहांकी तहां वैठजानेको तहलील कहते है । अतएव सूजन वैठारनेवाली शक्तिको मुहल्लिल् शक्ति कहतेहै ।

जो दोषोंको संशोधन करके समानता करै उस समानताका नाम तलतीफ कहते है । अतएव इस संशोधनद्वारा दोषसमता करनेवाली शक्तिको मुलत्तिफ कहतेहै । यह चारों दोषोंके वास्ते हितकारी है ।

देहकी शिथिलताको खद्रि कहतेहै इसींसे खद्रिकारी शक्तिका नाम मुखद्दिरशक्ति है ।

शिर, हृदय, यकृत् और पक्काशय इनके नामांतर दमाग, दिल्, जिगर, और मादा, ए अंगचतुष्टय अजायरईस कहलातेहैं यही मनुष्य देहमें उत्तम अंग माने गएहै ।

यथाकवीवलिष्टस्यान्मुकव्वीसाप्रशस्यते ।
तस्कीनवेदनाशांतिस्ताद्दिवाचीतुयाभवेत् ।
शक्तिर्मुस्किनसाप्रोकाचिकित्सातत्परैर्नृभिः।
निखिशक्षतसंधानविधानचतुरातुया ।
मुदम्मिलशक्तिरुद्दिष्टाद्रव्येषुप्रभुनिर्मिता ४३
तलीनकोष्टमृदुता तत्कर्म निपुणातुया ।
विवंधघ्नीमुलय्यनसादेहस्वास्थ्यकरीसदा ।
खुसीफर्हत्प्रसादस्यान्मनसोदेहपाटवम् ।
उभयंविदधात्येषामुफर्रहसाप्रकीर्त्तिता ॥४५
क्षताद्व्रणाद्वापूयादि निःसारयतिकांतिदा ।
मुजल्लीव्याहृताशक्तिशक्तिनिर्णयकारिभिः४६
क्षुद्बोधस्सिहानामतदुद्दीपनकारिणी ।
शक्तिःसामुसिहीज्ञेयाद्रव्यतत्वविचारिभिः ॥
क्षतंकुरहमुद्दिष्टंव्रणेस्वक्षेचयत्कृतम् ।
मुकर्रहशक्तिरुद्दिष्टातत्करीचापिशीघ्रकृत्४८
क्लेदसंशोषणादित्वासौषिर्यंवितनोतिया ।
मुजफ्फिफ्शक्तिरित्येषाकथितासूक्ष्मदर्शिभिः

अर्थ-कवी नाम वलिष्टका है अतएव बलकारी शक्तिको मुकव्वीशक्ति कहतेहैं । वेदना (पीडा) शांतिकारीको तस्कीन कहतेहै अतएव उस शांतिकारी शक्तिको मुस्किनशक्ति वैद्यजन कहतेहैं ।

तलवार वरछी आदिके घावको जो भरलानेमें प्रवीणहो उसे द्रव्योंमें परमात्माकी निर्मित मुदम्मिल शक्ति कही है ।

कोठेकी नम्रताको तलीन कहतेहै, उस कोष्ट मृदुकारिणी शक्तिको और मलके विबंध (रुकावट) नाशकर्त्ता शक्तिको मुलय्यनशक्ति कहतेहै ।

यह सदैव देहको आरोग्यकारिणी है ।

खुसी फर्हत् ए प्रसन्नताके पर्यायवाची शब्द है. तहां मन और देहकी प्रसन्नकारिणी शक्तिको मुफर्रह कहतेहै ।

घावसे या फोडेसे जो राध आदिको निकाले उस कांतिकारिणीको मुजल्लीशक्ति कहते है ।

क्षुद्बोध (भूंक लगनेको) इसिहा कहतेहै अतएव उस क्षुद्बोधके उद्दीपनकर्त्ता शक्तिको, मुसिहही कहते है ।

जो व्रणोंके होनेसे देहमें घाव हो जाताहै उसे कुरह कहतेहै उस कुरह कारिणी शक्तिको मुकर्रह शक्ति कहतेहै ।

क्लेद (आर्द्रता) शोषणादिसे जो देहमें छिद्र (छेद या सुराख) करदेवे उसे मुजफ्फिफ्शक्ति कहते है

इसप्रकार तबियत, कैफियत् और कुव्वत इन तीनोंका वर्णन करके चतुर्थ खासियत्का वर्णन करते हैं ।

अनुपानविशेषेणानेकातंकघ्नतातुया ।
खासियत्साविनिर्दिष्टाद्रव्येद्रव्यविशारदैः॥

अर्थ-जो पृथक् पृथक् अनोपानकेद्वारा अनेक बिमारियोंको नष्ट करै उसको द्रव्यके ज्ञातापुरुष खासियत अर्थात् सहकारिणी शक्ति कहतेहै ।

यह संक्षेपसे दोषोंका स्वरूप और द्रव्यगतचारपदार्थोंका वर्णन करागया । इतिश्री ।

हिन्दीतोल हमारी बनाई भावप्रकासकी टीकासे जानलीजिये । यहांपर यूनानी वजनें (तोलोंको) कि जो अत्यंतप्रसिद्ध और प्राय औषधोंमें आतेहैं संक्षेपसे लिखेजातेहैं । कारणकि इस भागमें अनेक दिरम् मिस्काल आदि तोल आईहै उनको हरएक मनुष्य नहीं जानते उनके फायदेके लिये नीचे वह यूनानी तोल लिखीजातीहै ।

४ राईका	१ चावल.
४ चावल	१ जौ.
२ जौकी	१ रत्ती.
८ रत्तीका	१ मासा.
३॥ मासेका	१ दिरम.
४॥ मासेका	१ मिस्काल.
२१ मासेका	१ पुख्तादाम.
३० दामका	१ अकबरीसेर.
४० दामका	१ आलमगिरीसेर.
४८ दामका	१ फरुकसाहीसेर.

१॥ सेरका	१ तवरेजीसेर.
१४ मांसेका	१ आलमगिरीपैसा.
९॥ मांसेका	१ बहलौईपैसा.
·॥· सेरका	१रतल.
६ रत्तीका	१ दांग.
७ रत्तीका	१ किरात.
२ किरातका	१ तुरमुसह.
१ चावलका	१ अरजा.
४॥ मिश्कालका	१ अस्तार.
७॥ मिश्कालका	१ ओकिया अथवा वकिया होताहै.
१ दिरमका	१ बुंदका.
९ किरातका	१ अबूलात.
·॥· दिरमका	१ वाकला.
२ मनका	१ अवरीक.

दरम्याना वजन (मध्यम तोल) दोराई जंगलीका होताहै । इति ।

अकरकरा.

अकारकरभस्तीक्ष्णकीलःपिंडारकस्तथा।
करहाटस्तीक्ष्णमूलोकल्कोथकुरंगकः॥
आकल्लकोष्णोवीर्येणबलकृत्कटुकोमतः।
प्रतिश्यायंचसोथंचवातंचैवविनाशयेत् ॥

संस्कृतमें अकारकरभ, तीक्ष्णकीलक, पिंडारक, करहाट, तीक्ष्णमूल, अकल्क, कुरंगक [अरंभक, आकरकरभ, अकल्कर, अकल] ए कल्पित संस्कृत-नाम है । **गु.** आकरकरा. **म.** अकलकरा. **फा.** आकरकरहा. **हिं.** अकरकरा. **इं०.**

गुण । उष्णवीर्य, बलकर्त्ता, चरपरास्वाद. [कोई मधुर और शीतवीर्य कहतेहै] और सरेकर्मा, सूजन, वादी [पित्त और कफको] दूर करताहै ।

अरब और हिंदुस्तानकी प्रसिद्ध बूंटी है. इसके छोटे छोटे क्षुप चातुर्मासकी पहली वर्षा होतेही पर्वती-जमीनमें उत्पन्न होतेहै तथा बंगाल और मिसरमेंभी उत्पन्न होताहै । इसके डाली पत्ते और फूल सफेद वाबूनेके सदृश होतेहै । परंतु डंडी पीली होती है; गुजरात और महाराष्ट्रदेशमें इस डंडीका आचार और साग बनाते है तथा सोआके सदृश बीज होतेहै, डाली इसकी रोंगटेदार और पृथ्वीपर फैलीहुई तथा एक जडमेंसे निकल कई होजातीहै, उस डालीके ऊपर गोल गुच्छेदार छत्रीके आकार और वाबूनेसे विपरीत पीले रंगका फूल होता है, डाली खडी और फूलके पत्ते सफेद होतेहैं, जड एकबिलस्त लंबी मुटाईमें छोटी उंगलीके समान होतीहै । इस जडके खानेसे गरमी मालूम हो तथा चरपरी और जीभ जलने लगतीहै । यह जडही औषध प्रयोगमें लीजातीहै और इसमें इसकी शक्ति (ताकृद) सात वर्षतक बनी रहती है । अर्थात् सात वर्षतक यह बिगडती नहीं । मुख्य परीक्षा यही है कि खानेसे जीभ जलने लगेहै । दूसरे वमन विरेचन-कर्ता औषध पीनेके पहले यदि अकरकरा खाय लेवें तो फिर कडवे चरपरे कषेलेरस का कुछभी ज्ञान नहीं होनेका । अतएव जिनको काढे आदि पीनेसे नफरत है। हकीमलोग उनको प्रथम अकरकरा चवानेको देतेहै । जब वह चबायकर थूक देवें ऊपरसे फिर जो काढा (जुसांदा) पिलाना होय पिलाते हैं । अकरकरेकी लकडी भारि (वजनदार) होती है, यदि इसे तोडे तो भीतरसे सफेद निकले है ।

प्रकृति-तीसरे दरजेके अंतमें और चतुर्थ दर्जेतक खुश्क है परंतु किसी २ के मतसे तीसरे और चतुर्थ दरजेमें शीतल मानतेहै ।

कर्म और गुण-देहमें जो सुद्दा (रुधिर आदिकी गांठसी पडजाती है उन) को खोले है, मस्तकको दुष्ट मलसे शुद्ध करै, मस्तकके अवयव तथा कफ आदिको निस्संदेह चमक (जिला) देने वाला है । अर्दित (लकवा), पक्षाघात, कफवात, पीडाकेसाथ गरदनका जिकडजाना, जोडोका ढीला होना, तोतलापन, छाती, दांत और जोडोका दर्द, गृध्रसी, जलंधर सर्दप्रकृतिवालेंको इन्द्रीकी ताकतको, खुलकर पेसाबलानेको, स्त्रियोंके रजोदर्शसंबंधी रुधिरको तथा स्तनोंमें दूध पसीने और ज्वर इन सब रोगोंको पतला तथा गाढा लेप करनेसे हित (फायदा) करैहै ।

१ अपने शास्त्रमें जो लिखा है कि वर्ष दिनके पश्चात् औषध हीनवीर्य हो जाती है, यह इसीसे असत्य मालूम होती है कि जब सात वर्षतक वीर्य नष्ट नहीं होता फिर वर्ष दिनमें कैसे नष्ट होगा। हां बहुतसी मृदुवीर्य औषधोंका वीर्य नष्ट होजाना मान सक्ते है ।

मस्तकरोग, संधिके रोग, स्नायु (पट्ठे) के, मुखके और छातीके रोगमें अकरकराको जैतूनके तेलमें पीसके मालिश करै, एवं कुबडापन, सुन्नवात और ढीलेपनको तथा अवयवोंके पुराने रोगीकोभी पूर्वोक्त जैतून के तैल मालिश करना दूर करैहै ।

यदि अकरकराके जुसादे (क्काथ) को गरमगरम मस्तकपर लेप और तालूपर मालिश करै तो मस्तकको गरमकर नजलेको नष्ट करैहै और यदि इसे मस्तगीके या कसेली वस्तुकेसाथ चबावेंतो जो मृगीका रोग दूषित दोषोंसे प्रकट हुआहै नष्ट होय । सहतके साथ अकरकराके चूर्णको चाटे तो मृगीका रोग, अंधकार आना और पक्षाघातको नष्ट करै ।

अकरकरेका बारीक कपडछन चूर्णकर सूंघे तो नाकरुकना अर्थात् श्वासावरोध दूर होय और यदि इसको सिरकेमें भिगोय दांतके नीचे रखे तौ दंतशूल को नष्ट करै और चबाने या जीभपर बुरकनेसे जीभकी आर्द्रता (तरी) को खीचे तथा तुतलाना नष्ट होय ।

इसके क्काथको मुखमें रखनेसे हिलते दांत मजबूत हों तथा इस क्काथके कुल्ले और गरागरा सिरका मिलायके करनेसे गलेका फोडा कागका लटक आना, तथा जीभके लटनेको जोकि कफके कारण हो दूर होय।

पीसकर मालिश करनेसे पसीने लावे, केवल अकरकरा या अकरकरा और फादानिया दोनोंको गलेमें डोरेसे बांध लटकायदे तो बचेकी मृगीका आना दूर हो । यदि एकरँगे काले कुत्तेके बालोंको और अकरकरा दोनोंको बालकके बांध देयतो इन्द्रीमें चैतन्यता हो तथा आमाशयके रोग और ज्वर नष्ट होय ।

अकरकराके लऊकमें सहत मिलायके पीवे तो देहकी कांति बढे, तथा छातीका दर्द, कफकी पुरानी खांसी, सरदीको दूर करै। एवं आमाशयसे आऊको निकाले। शीतलप्रकृतिवालेके मैथुनशक्तिका बढाने वाला, यदि आधे दिरम (१॥) मासे घोटके पीवेतो बलपूर्वक कफको जुल्लाबद्वारा निकाले। ज्वरआनेके पहले अकरकराको जैतूनके तेलमें पीस सर्व देहमें मालिश करै तो ज्वर, सरदीका लगना दूर हो और पसीने लावे एवं देहके जोड (संधियों)की बिमारी दूर करै । अकरकराके तेलको इन्द्रीपर मलैतो इन्द्री दृढ हो तथा स्त्रीसंगमें कामशक्ती प्रबल हो और मैथुनमें आनंद प्रगट करै । तथा विधिपूर्वक सहतमें घोल तिला (पतला लेप) करै तो स्त्रीको बहुतजल्दी स्खलित् करै । यदि बाकलाके आटेके साथ घोट पोटलीमें रख इन्द्री और फोतोंमें बांधेतो गुण करै अर्थात् जिसके फोतोंको बहुत सरदी लगतीहो उसे हित करैहै.

सबसे अद्भुतता इसमें यहहै कि अकरकरेको नौसादरके साथ बारीक पीस तालुए और मुखमें खूब लगावे अर्थात् रगडे तो आगसे मुंह कदापि नहीं जले । बाजीगर इसका इस्तेमाल (साधना) करतेहै । अकरकराको सिरकेकेसाथ औटावे तो खमीरके सदृश होजायगा । इसे दांतोंके ऊपर रखे कि जिनको कीडे खाय गएहै तौ उन दांतोंसे सब कीडे झरके गिर पडेंगे ।

अकरकरा फुप्फुसको **मुजिर** (अहित) है । **मुसल्ला** (उसका अवगुणनाशक) कतीरा और मुनक्का दाखहै ।

सेवनकरनेकी मात्रा १ दिरम (३॥ मांसे) की है

जिगरके रोगोंमें बदल (प्रतिनिधि) अकरकराके पीपल और सहत है. और आमाशयके रोगोंमें रासना और अगर है । यदि वक्तपर ए दोनों बदलन मिले तो उनके पलटेमें सोठ और सोठसे आधी कालीमिरच लेय । गरगरों (गंडूषों) में पहाडी पोदिना डेढ गुना लेना । हलककी पीडामें इलायची प्रतिनिधि लेय। तथा जो तेल इसका अकरकराके उसारेसे बना हो लेना ।

अथवा यह है कि एक ओकिया सूखे अकरकराको कूटे और आधसेर पानीमें ओटावे जब एक ओकिया शेष रहे तब उतार शीतलकर हाथोंसे मलके छान लेय फिर दो ओकिया जैतूनके तेलके साथ दुहेरी देगमें मिलायके काममें लावे । **इसके गुण**-इस रोगनके पीनेसे पसीने निकले, सरदीका ज्वर नष्ट हो, तथा सरदीके यावन्मात्र रोग उसको नष्ट करै, तथा मैथुनशक्तिको ताकत देयहै । अकरकरेका शऊत नाकमें टपकावे तो मस्तकपीडा, आधासीसी तथा मृगीको नष्ट करै और शीतलमस्तकको बलिष्ट करनेमें उत्तम है ।

अकरकरादिचूर्ण-अकरकरा, सैंधानिमक, चित्रक, आवले, कालीमिरच, पीपर, अजमायन और हरड

सब समभाग लेय। सौंठ दो भाग लेके बारीक पीस कपडछन चूर्ण करै, फिर बिजोरेके रसकी भावना देकर गोली बनायले या चूर्णही रहनेदेय । इसे अकरकरादि चूर्ण अथवा अमृतप्रभाचूर्ण कहतेहै।

गुण–मंदाग्नि, अरुचि, खांसी, गलेके रोग, श्वास, सरेकमा, पीनस, मृगी, उन्माद, और सन्निपातको नष्ट करै ।

आकरभादिकाथ–अकरकरा, गोखरूकी जड, तुलसीका रस, निर्गुंडी, लौंग, और सौठ इनके क्राथमें छोटी इलायचीका चूर्ण प्रक्षेप करके सात दिन पीवे तो अत्यंत पीडाकरनेवाली पथरी शर्करा दूर करै ।

शाकवृक्ष (सागौन).

शाकःक्रकचपत्रस्यात्स्थिरसारोगृहद्रुमः ।
खरपत्रश्रेष्ठकाष्ठःशरपत्रोऽर्जुनोपमः ॥
शाकवृक्षःसरःस्वादुर्दाहपित्तश्रमापहः ।
कषायःकफहृद्रूक्षोवल्योज्वरहरोमतः ॥

अर्थ–शाक, क्रकचपत्र, स्थिरसार, गृहद्रुम, खरपत्र, श्रेष्ठकाष्ठ, शरपत्र और अर्जुनोपम ए आठ नाम सागौन वृक्षके है । स्वरूप । इसका वृक्ष कोह वृक्षके सदृश होताहै । पत्ते खरदरे नौकीले करौतके माफिक होतेहै. । इसकी लकडी बडी मजबुत और टिकौअल होती है इसीवास्ते इसको मकान बनानेमें बहुत वर्तेहै । गुण । शाकवृक्ष, दस्तावर, मीठा, दाहपित्त और श्रमको नष्ट करै, कषेला है अतएव कफको हरण करै, रूक्षबलकारी और ज्वरको नष्ट करताहै । इसकी छाल लेमी । मात्रा २ मासेकी है ।

वेलगिरी.

विल्वपेशीलघुर्बल्याग्राहिणीकफनाशिनी ।
प्रवाहिकामतीसारंनिहन्याद्ग्रहणीमपि ॥

अर्थ–विल्वपेशी अर्थात् वेलगिरी हलकी, बलकारी, ग्राहक और कफघ्न है । प्रयोग । प्रवाहिका, अतीसार और ग्रहणीरोगमें देय । सूखी वेलागिरी सदैव व्यवहारमें आती है । मात्रा २ मासे है ।

फालसेकी छाल.

परूषत्वक्प्रमेहघ्नीयोनिमेढ्रप्रदाहनुत् ।
मूत्रदोषप्रशमनीशीतापित्तानिलापहा ॥

अर्थ–फालसेकी छाल प्रमेहनाशक, योनि और लिंगके दाहको नष्ट करै । मूत्रदोषको शोधन करै । शीतवीर्य, पित्तघ्न और वायुनाशक, मात्रा १ मासे ।

मुक्तवर्चा.

मुक्तवर्चास्तथारुद्रावांतिकृच्चविरेचनी ।
कासश्वासगरग्रीवज्वरहृत्कफवातनुत् ॥
एतस्याःस्वरसःपीतःकफोत्सारीचवामनः ।
पायुलेपान्मलोत्सारीकल्कोबालेषुयुज्यते ॥

अर्थ–मुक्तवर्चा और रुद्रा ए दो नाम मुक्तवर्चाके संस्कृत है । गुण । वमनकारक, विरेचक, और वातकफनाशक । प्रयोग । खांसी, श्वास, ज्वर, और विषरोगमें देय । इसका स्वरस पीनेसे कफ निकले और वमन होय । इसका गुदामें कल्क लगानेसे दस्त होय । यह बालकोंकेवास्ते अत्यंत उपकारी है । इसके स्वरसकी मात्रा २ मासेकी है ।

नागपुष्पी.

नागपुष्पीश्वेतपुष्पानागनीरामदूतिका ।
नागनीरोचनीतिक्तातीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत् ।
विनिहंतिविषंशूलंयोनिदोषवमिंक्रिमीन् ॥

अर्थ–पर्याय । नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी और रामदूतिका । गुण । रोचक, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, कफपित्तनाशक और विषनाशक। यह शूल योनिके दोष वमन और क्रमिरोगको निवारण करै । मात्रा २ मासेकी है ।

अनुष्णबीज.

अनुष्णबीजंकथितशैत्यबीजंतुनामतः ।
शैशिरीकंशीतबीजंहिमबीजंतुसंस्मृतम् ।
शीतबीजंमूत्रलंस्यादुष्णवातंनिवारयेत् ।
वस्तिसंशोधनंप्रोक्तंमहादाहनिवारकम् ।
शुक्रमेहहरंरुच्यंतथाध्मानंनियच्छति ।

अर्थ–अनुष्णबीज, शैत्यबीज, शैशिरीक, शीतबीज, और हिमबीज ए संस्कृत नाम, हिं-इसबगोल । गुण । ईसबगोल मूत्रकारक, गरमीको दूर करै, वस्तिको शोधन करै, और घोरदाहको निवारण करै । शुक्रमेहको हरण करै, रुचकारी और अफरा इनको दूर करै । इसके

बीजोंको घी या बदामरोगनमें चुपडके सेवन करे। अथवा रात्रिमें भिगोय प्रातःकाल शीतकषाय पीवे। काथादिकमेंभी प्रयोग करना वर्जीत नहींहै। मात्रा २ मासेकी है।

दुग्धपाषाण (सिरगोला).

दुग्धाश्मादुग्धपाषाणःक्षीरीगोमेदसंनिभः।
वज्राभोदीसिकःसौधोदुग्धीक्षीरयवोपिच ॥
दुग्धपाषाणकोरुच्यईषदुष्णोज्वरापहः।
पित्तहृद्रोगशूलघ्नःकासाध्मानविनाशनः॥

अर्थ-दुग्धश्मा, दुग्धपाषाण, क्षीरी, गोमेदसंनिभ, वज्राभ, दीसिक, सौध, दुग्धी, क्षीरयव ए संस्कृत नाम। **हिं.** सिरगोल। **गुण**। रुचकारी, किंचिन्मात्र गरम, ज्वरनाशक, पित्त, हृदयके रोग, शूल, खांसी और अफरा इनको दूर करे। इसका सर्व अंश लेना। **मात्रा**। २ मासेकी है।

शिवलिंगी.

लिंगिनीबहुपुत्रीस्यादीश्वरीशिवमल्लिका।
स्वयंभूलिंगसंभूतालैंगीचित्रफलामृता॥
चंडालीलिंगजादेवीचंडायस्तंभिनीतथा।
शिवजाशिववल्लीचविज्ञेयाषोडशाह्वया॥
लिंगिनीकटुरुष्णाचदुर्गंधाचरसायनी।
सर्वसिद्धिकरीदिव्यावश्यारसनियामिनी॥

अर्थ-लिंगिनी, बहुपुत्री, ईश्वरी, शिवमल्लिका, श्वयंभू, लिंगसंभूता, लैंगी, चित्रफला, अमृता, चंडाली, लिंगजा, देवी, चंडा, अयस्तंभिनी, शिवजा, शिववल्ली, ए १६ नाम संस्कृत है। **हिं.** शिवलिंगी, म. हाकदोंड, पचगुरिया, वाडुवली। **गुण**। कटु, गरम, दुर्गंधवाली रसायनी, सर्वसिद्धिकरी, दिव्या, वशीकरणकर्त्ता, और रसको बंधनकरनेवाली [यह गर्भदेनेवाली है बहुतसे मनुष्य अनुभव करचुके हैं] इसकेभी बीज प्रयोगमें लियेजातेहैं। **मात्रा** २ मासे।

यवोची.

यवतिक्तामहातिक्ताद्दढपादाविसर्पिणी।
नाकुलीनेत्रमीलाचशंखिनीपत्रतंदुली॥
तंदुलीचाक्षपीडाचसूक्ष्मपुष्पीयशस्विनी।
माहेश्वरीतिक्तयवायावीतिकेतिषोडशः॥
यवतिक्तासतिक्ताम्लादीपनीरुचिसत्परा।
कृमिकुष्ठविषंचामंदोषघ्नीरेचनीचसा॥

अर्थ-यवतिक्ता, महातिक्ता, दृढपादा, विसर्पिणी, नाकुली, नेत्रमीला, शंखिनी, पत्रतंदुला, तंदुली, अक्षपीडा, सूक्ष्मपुष्पी, यशस्विनी, माहेश्वरी, तिक्तयवा, यावी, और तिक्ता ए १५ संस्कृत नाम। **हिं.** यवोची। **गुण**। कडवी, खट्टी, दीपनी, रुचिकर्त्ता, कृमि, कुष्ट विष, आम और वातादि दोषको रेचनकरनेवाली है।

ईश्वरी.

रौद्रीजटारुद्रजटाचरुद्रा।
सौम्यासुगंधासुवहाघनाच॥
स्यादीश्वरीरुद्रलतासुपत्रा।
सुगंधपत्रासुरभिःशिवाव्हा॥
पत्रवल्लीजटावल्लीरुद्राणीनेत्रपुष्करा।
महाजटाजटारुद्रानाम्नांविंशतिरीरिता॥
जटाकटुरसाश्वासकासहृद्रोगनाशिनी।
भूतविद्राविणीचैवरक्षसांचनिवर्हणी॥

अर्थ-रौद्रीजटा, रुद्रजटा, रुद्रा, सौम्या, सुगंधा, सुवहा, घना, ईश्वरी, रुद्रलता, सुपत्रा, सुगंधपत्रा, सुरभि, शिवाव्ह, पत्रवल्ली, जटावल्ली, रुद्राणी, नेत्र, पुष्करा, महाजटा, और जटारुद्रा, ए वीस नाम ईश्वरी दवाईके है। **गुण**। रुद्रजटा, यह कटुरस, श्वास, खांसी, और हृदयरोगको नष्ट करे। भूतबाधा और राक्षसोंको दूर करती है.

वस्तांत्री.

वस्तांत्रीवृषगंधाख्यामेषांत्रीवृत्तपत्रिका।
अजांत्रीबोकडीचैवस्यादित्येषाषडाह्वया॥
वस्तांत्रीस्यात्कटुरसाकासदोषविनाशिनी।
बीजदागर्भजननीकीर्त्तिताभिषगुत्तमैः॥

अर्थ-वस्तांत्री, वृषगंधा, मेषांत्री, वृत्तपत्रिका, अजांत्री, बोकडी, ए छः नाम वस्तांत्रीके है। **गुण**। इसका चरपरा रस है; खांसीको नष्ट करे। बीज (शुक्र) की दाता और गर्भप्रकटकर्त्ता वैद्यजन इसे कहतेहैं।

महिषवल्ली.

सौम्यामहिषवल्लीचप्रतिसोमांत्रवल्लिका।
अपत्रवल्लिकाप्रोक्ताकांडशाखाषडाह्वया।
रसवीर्यविपाकेचसोमवल्लीसमास्मृता।

अर्थ-सौम्या, महिषवल्ली, प्रतिसोमा, अंब्रवल्लिका, अपम्रवल्लिका और कांडशाखा, ए छः नाम महिषवल्लीके है। गुण । रस, वीर्य और विपाकमें इसके गुण सोमवल्लीके समान है.

केवर्त्तिका.

कैवर्त्तिकासुरंगाचलतावल्लीद्रुमारुहा ।
रिंगणीवज्ररंगाचसुभगेत्यष्टधाभिधा ॥
कैवर्त्तिकालघुर्वृष्याकषायाकफनाशिनी ।
कासश्वासहराचैवसैवमंदाग्निदोषनुत् ॥

अर्थ-कैवर्त्तिका, सुरंगा, लतावल्ली, द्रुमारुहा, रिंगणी, वज्ररंगा, और सुभगा यह आठ नाम कैवर्त्तिरूखडीके है। यह रूखडी मालवेमें प्रसिद्ध है। गुण। कैवर्त्तिका, हलकी, वृष्य, कषेली, कफनाशक, श्वास, खांसीको नष्ट करै और मंदाग्निके दोषको दूर करैहै।

ताम्रवल्ली.

तालीतमालीताम्राचताम्रवल्लीतमालिका ।
सूक्ष्मवल्लीसुलोमाचशोधनीतालिकानवा ॥
ताम्रवल्लीकषायास्यात्कफदोषविनाशिनी ॥
मुखकंठोत्थदोषघ्नीश्लेष्मशुद्धकरीपरा ।

अर्थ-ताली, तमाली, ताम्रा, ताम्रवल्ली, तमालिका, सूक्ष्मवल्ली, सुलोमा, शोधनी, और तालिका ए नौ नाम है। गुण । ताम्रवल्ली, कषेली, कफदोषनाशकर्त्ता, मुख कंठके दोषको नष्ट करै तथा कफको शुद्धि करनेवाली है।

अंतमल.

मलांतोऽतमलःपूतिरंडपर्णश्चलोमशः ।
वामनःस्वेदजननःकफनिर्हरणस्तथा ॥

अर्थ-मलांत, पूति, अंडपर्ण, और लोमश इतने नाम अंतमलके है। गुण। अंतमल वमनकरानेवाला, पसीनेलावे, और कफको निकाले है। इसके सूखे पत्ते लेने। मात्रा। स्वेदन करनेमें और कफ निकालनेमे २ रत्तीकी है। यदि वमन कराना होय तो १ मासेकी मात्रा देय।

सुखदर्शन.

वामनःस्वेदनःशोफोवीर्योष्णःसुखदर्शनः।

अर्थ-सुखदर्शन अर्थात् बडे कंदीरकी जडका रस वमनकारक, स्वेदनकर्त्ता, और उष्ण वीर्य। इसके रसकी मात्रा २ मासेकी है।

माजूफल.

कीटावासोमज्जफलंग्राहीवल्यंज्वरापहम् ।
शोणितस्रुतिहृद्दंतिमुखदंतगतान्गदान् ॥
स्वेतप्रदरमर्शांसियोनिकंदंसुदारुणम् ।
अतिसारंमहाघोरंग्रहणींसप्रवाहिकाम् ॥

अर्थ-कीटावास और मज्जफल ए माजूफलके संकृत नाम है। गुण। माजूफल ग्राही, बलकारक, ज्वरघ्न और रुधिरस्रावको बंद करनेवाला। प्रयोग। मुख और दांतके रोग, सपेदप्रदर, बवासीर, योनिकंद, अतिसार, प्रहणी और प्रवाहिका, इन रोगोंपर देना, मात्रा इसकी १ मासे की है।

ढाककागोंद.

पलाशभवनिर्यासोग्राहीसंक्षपयेद्ध्रुवम् ।
ग्रहणींमुखजान्व्याधीन्कासान्स्वेदातिनिर्गमम् ॥

अर्थ-पलास अर्थात् ढाककागोंद ग्राही, यह ग्रहणी, मुखरोग, खांसी और अत्यंत पसीनोके निकलने पर देवे। इसकी मात्रा १ मासेकी है।

आम्रबीज.

आम्रबीजकषायंस्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् ।
इषदम्लंचमधुरंतथाहृदयदाहनुत् ॥

अर्थ-आमके बीज अर्थात् गुठली कषेली, कुछ २ खट्टी और मधुर है। इससे अतिसारआदि रोग नष्ट होतेहैं तथा हृदयका दाह दूर होय आमकी गुठलीकी मात्रा १ मासेकी है।

कमलगट्टा.

पद्मबीजंतुपद्माक्षंगालोड्यंपद्मकर्कटी ।
पद्मबीजंहिमंस्वादुकषायंतिक्तकंगुरु ॥
विष्टंभिवृष्यंरुक्षंचगर्भसंस्थापकं परं ।
कफवातकरंवल्यंग्राहीपित्तास्रदाहनुत् ॥

अर्थ-पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य, और पद्मकर्कटी ए कमलगट्टेके संस्कृत नाम है। गुण। शीतल, स्वादु, कषेला, कडवा, भारी, विष्टंभी, शुक्रकर्त्ता

उत्तमगर्भसंस्थापक, वातकफवर्धक, बलकारक, ग्राही और रक्तपित्तजन्यदाह नाशक है। इसकी मात्रा ८ मासेकी है ।

बबूरका गोंद.

बब्बूलस्यतुनिर्यासोग्राहीपित्तानिलापहः ।
रक्तातिसारपित्तास्रमेहप्रदरनाशनः ॥
भग्नसंधायकःशीतःशोणितस्रुतिवारणः ।

अर्थ-बबूरका गोंद संग्राही, शीतवीर्य, पित्तघ्न, वायुनाशक, टूटीहड्डी आदिका जोडने वाला और रुधिरस्रावको बंद करेहै, रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदर रोगमें देना चाहिये । मात्रा ४ मासेकी है ।

कलंज.

शिरोगदच्छिन्क्षुवनःकलंजो ।
वम्योविषंविश्वविषस्यहंता ।
कलंजसंवेष्टनधूम्रपानात् ।
स्यादंतशुद्धिर्मुखरोगहानि ॥

अर्थ-कलंज अर्थात् तमाखू शिररोगनाशक, छींकका लानेवाला, और वमन करानेवाला है । यह स्वयं-विषरूप होनेसे यथार्थ मात्रासे देवे तो सर्व प्रकारके विषोंको नष्ट करे । तमाखूकी बीडी बनायके पीनेसे दांतोंकी शुद्धि और अनेक प्रकारके मुखरोगोंको दूर करै.

भूतराज.

भैमीमहाक्षवाज्ञेयाक्षवणीश्लेष्मवारिणी ।
वीर्योष्णाक्षिशिरःकर्णरुग्हंत्रीनस्ययोगतः ॥

अर्थ-भैमी, महाक्षवा ए दो नाम भूतराज रूखडीके है । गुण । यह क्षुधाकर्त्ता, कफघ्न, और उष्णवीर्य । इसकी नस्य देनेसे नेत्र, शिर और कानकी अनेक प्रकारकी पीडा दूर करे.

गुंजाफल.

गुंजाफलंक्षवकरंशिरोर्त्तिशमनंमतम् ।

अर्थ-घूंघचीका फल छींक लावे और मस्तक पीडाको नष्ट करताहै ।

तोरईका फल.

शिरःपांड्वार्त्तिशमनंक्षवनंजालिनीफलम् ।

अर्थ-तोरईका फल छींक लावे और मस्तकपीडा तथा पांडुरोगको शांति करै ।

सुरप्रिय (कबावचीनी).

सुरप्रियंवृत्तफलंतद्वायुशमनंमतम् ।
श्लेष्मोत्सारणमाग्नेयंमूत्रवृद्धिकरंतथा ॥
औपसर्गिकमेहंचशुक्रमेहंसुदारुणम् ।
श्वेतप्रदरमर्शांतिकृच्छ्रंचापिविनाशयेत् ॥

अर्थ-सुरप्रिय और वृत्तफल कबावचीनीके ए दो नाम संस्कृत है । कबावचीनी वातनाशक, कफनिकाल नेवाली, अग्निकर्त्ता और मूत्रवर्धक । तथा उपसर्गिक प्रमेह, शुक्रप्रमेह, श्वेतप्रदर, बवासीर और मूत्रकृच्छ्ररोगमें देवे । मात्रा २ मासेकी है ।

काली ईखकी जड.

कृष्णेक्षुमूलंशीतंस्यान्मूत्रलंपित्तनाशनम् ।
वातानुलोमनंमेध्यंदाहकृच्छ्रनिकृंतनम् ॥

अर्थ-काली ईखकी जड शीतवीर्य, मूत्रकर, पित्तनाशक, वातानुलोमन, स्मृतिवर्धक, दाहनिवारक, और मूत्रकृछ्रको शांति करनेवाली है ।

गोखरूबीज.

बीजंगोक्षुरकंशीतंमूत्रलंशोथवारणम् ।
वृष्यमायुष्करंशुक्रमेहनुत्कृच्छ्रनाशनम् ।

अर्थ-गोखरूके बीज शीतल, मूत्रप्रवर्त्तक, शोथनिवारक, वृष्य, आयुष्कर, शुक्रमेहनिवारक और मूत्रकृच्छ्र प्रशमक ।

बांसकी जड.

त्वचिसारशिफाज्ञेयामूत्रकृच्छ्रोथवारिणी ।

अर्थ-बांसकी जड मूत्रलानेवाली और सूजनको दूर करै ।

उलूक.

उलूकंस्थूलकोदर्भःसूच्यग्रश्चखरच्छदः ।
उलूपश्चोलूपस्यान्मूत्रलंशोथसंहरम् ॥

अर्थ-उलूक, स्थूलक, दर्भ, सूच्यग्र, खरच्छद, उलप, उलूप, ए संस्कृत नाम है । यह मूत्रकारक और शोथनाशक है ।

शार्दूलकंद (वनपियाज).

शार्दूलकंदःशोथघ्नोज्ञेयोरण्यपलांडुकः ।
मूत्रविरेचनःश्लेष्महरणोत्युग्रपयच ॥

मात्रातिरेकाद्वमतिचांतिकृन्मलभेदनः ।
अतिमात्रंप्रयुक्तोऽसौविषवन्मारयेन्नरम् ॥
शोथेश्वासेचकासेचमूत्रसंगेप्रयुज्यते ।
ज्वरेदाहेतिसारेचग्रहण्यांनापिशस्यते ॥

अर्थ–शार्दूलकंद - शोथघ्न, ए वनप्याजके संस्कृत नाम है। यह मूत्रकारक, कफनाशक और अत्यंत उग्रवीर्य है । इसकी मात्राधिकहोनेसे वमन और विरेचन होने लगेहै । अत्यंत अधिकमात्रा सेवन करी गई होय तो विषकेसमान मार डाले । यह सूजन, श्वास, खांसी और मूत्ररोधमें देवे । ज्वर, दाह, अतिसार, और संग्रहणीरोगमें नहीं देना चाहिये. इसकी **मात्रा** १ रत्तीकी है ।

श्रीवाससार (गंधविरोजा).

श्रीवाससारःकफनुत्मूत्रलोज्वरसंहरः ।
शोथविम्लापनोलेपात्क्रिमिहृद्वेदनापहः ॥

अर्थ–गंधविरोजेका संस्कृतनाम श्रीवाससार है । यह कफघ्न और वेदना निवारक इसका लेप सूजनको बैठाल देय । कृमिरोग और पीडाको शांति करे ।

पिच्छला.

पिच्छलापिच्छलफलंयोनिशिश्नप्रदाहनुत् ।
विषदोषप्रमेहास्रपित्तहृद्बलपुष्टिकृत् ॥

अर्थ–पिच्छला और पिच्छलफल ए **संस्कृत** नाम। बं. ब्यांडासहै. यह योनि और लिंगकी पीडा नष्ट करे, विषदोषशामक, बलप्रद, पुष्टिकर, एवं, प्रमेह, और रक्तपित्त पीडाको शांति करे। **मात्रा** १ तोलेकी है ।

मुसब्बर (एलुआ).

धीरास्रावःमहासारःकुमारीरससंभवः ।
महासारोग्निजननःपित्तनिर्हरणोमतः ॥
बलकृत्रेचनःपुष्पजननोगर्भपातनः ।
विट्संगेकृमिरोगेचसन्यासेपस्मृतौतथा ॥
स्त्रुतेरजसिनारीणांशीतपित्तेशिरोरुजि ।
ज्वरेश्लेष्मोद्भवेप्लीह्निमंदेग्नौचप्रयुज्यते ॥
अर्शसस्तंनसेवतनातर्वत्नीनपुष्पिनी ।
नचासृग्दरनीनापियकृद्वृक्कादिरोगवान् ॥

अर्थ–धीरास्राव, महासार और कुमारीरससंभव मुसब्बरके संस्कृत नाम है। **मुसब्बर** अग्निकर, पित्तनिःसारक, बलकर, विरेचक, रजप्रवर्तक और गर्भपातक। मलरोध, कृमिरोग, संन्यास, अपस्मार, स्त्रियोंके रजदोष, शीतपित्त, शिरोरोग, श्लैष्मिकज्वर, प्लीहा और अग्निमांद्यरोगमें मुसब्बर अत्यंत उपकारी है। बवासीर, यकृतरोगजन्य पीडा और वृक्करोग एवं गर्भवती, ऋतुवती और रक्तप्रदररोगाक्रांता स्त्रीआदिके पक्षमें देना निषिद्ध है । **मात्रा** २ रत्तीकी है ।

पेवरी.

पीवरीयोषिनीसास्याद्योनिव्यापन्निवारणी
रजोदोषप्रशमनीप्रदरार्शोविनाशिनी ॥

अर्थ–पीवरी, योषिनी, ए पीवरीके संस्कृत नाम है। बं. औलटकंबल कहते है। **गुण**। यह योनिव्यापद निवारक, रजोदोषनाशक, प्रदरशांतिकर और अर्शरोगनाशक। इसकी जड लेनी **मात्रा** १ मासेकी है ।

स्राविका (धन्वजिया).

सर्षपीपाटलारौद्रीस्राविकाधन्वजापिसा ।
रजःप्रवर्त्तनीरौद्रीमूढगर्भनिष्कर्षणी ॥
गर्भपातानंतरोत्थेशोणितःस्रुतिवारिणी ।
वारयेच्छोणितोद्गांतिरक्तमूत्रादिकंतथा ॥
श्वेतप्रदरमेकाङ्गशुक्रमेहंचदारुणम् ।
मात्रातिरेकाद्विषवत्क्रियासंजनयेद्ध्रुवम् ॥

अर्थ–सर्षपी, पाटला, रौद्री, स्राविका और धन्वजा ए सब पर्यायवाचक शब्द है। **गुण**। यह रजप्रवर्त्तक, मूढगर्भको निकालनेवाली, गर्भपातजनित रक्तस्रावकी रोधक, रुधिरकी वमन निवारक, और रक्तमिश्रित मूत्रको दूर करे, श्वेतप्रदर, पक्षाघात और शुक्रमेहमें देवे । इसकी अधिक मात्रा सेवन करनेसे विषतुल्य दुर्गुण करै । **मात्रा** ६ रत्ती है ।

लालकमलकी जड.

मूलंरक्तोत्पलस्यस्याद्रजोरोध्यस्रपित्तनुत् ।
शीतवीर्यंप्रमेहघ्नंवातपित्तप्रणाशनम् ॥

अर्थ–लालकमलकी जड-रजोरोधक, रक्तपित्तशांतिकर, शीतवीर्य, प्रमेहनाशक, वातप्रशमक और पित्तघ्न। इसकी **मात्रा** ४ मासे।

चौलाईकी जड.

तंदुलीयकमूलंस्यादुष्णंश्लेष्मविनाशनम्।
रजोरोधकरंरक्तपित्तप्रदरसंहरम्॥

अर्थ-चौलाईकी जड-गरम, कफघ्न, रजोरोधक, रक्तपित्तनिवारक, और प्रदरको शांति करे। मात्रा २ मासे।

विशल्यकरणी.

विशल्यकरणीवल्याव्रणसंधानकारिणी।
वारयेच्छोणितोस्रावंरक्तातिसारमुल्वणम्॥

अर्थ-विशल्यकरणी, बलकरे, घावको भरनेवाली है तथा बहतेहुए रुधिरको बंद करे, तथा घोररक्तातिसारको रोकती है।

सेमरका फूल.

शाल्मलीपुष्पशाकंतुघृतसैंधवसाधितम्।
प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यंचनसंशयः॥
रसेपाकेचमधुरंकषायंशीतलंगुरु।
कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्त्तितम्॥

अर्थ-सेमरके फूलका साग घी, सैंधानिमकसे बनाया हुआ दुस्साध्य प्रदरको नष्ट करे। यह रसमें और पाकमें मधुर और कषेला तथा शीतल और भारी है। कफ, पित्त और रुधिरके विकारोंको जीते-ग्राही और शीतल कहा है।

रोचनी (पोदीना)

रोचनीवन्हिजननीरक्तजाड्यनिसूदनी।
कफवातहरीबल्याछर्द्यरोचकवारिणी॥

अर्थ-रोचनी अर्थात् पोदीना रुचि पैदा करे, जठराग्निको बढावे, रुधिरके विकारोंको नष्ट करे, कफ और वादीको हरण करे, बलकारी, वमन और अरुचिको नष्ट करेहै। मात्रा २ मासेकी है।

संविदामंजरी (गाझा).

संविदामंजरीचोग्रामादिनीहर्षणीतथा।
आग्नेयीहर्षणीवल्यामन्मथोद्दीपनीचसा॥
निद्रासंजननीगर्भपातनीचविकाशिनी।
वेदनाक्षेपहरणीश्रेयाचमदकारिणी॥
स्वशृगालादिदंशोत्थंतोयातंकंनिवारयेत्।
बाह्यायामंतरायामौविषूचिमपिदारुणाम्॥
मदात्ययंमहाघोरंशूलंचैवाम्लपित्तकम्।
अग्निमांद्यंहरेच्चापिरजोक्रमातिसंस्रुतम्॥
श्रेयश्चसंविदासारोहर्षिणीसदृशागुणैः।
तथाचहर्षणीस्थानेयोजयेदेनमेवच॥

अर्थ-संविदामंजरी उग्र है. मद प्रगट करे, हर्षदेय है, बलकरे और कामदेवको बढावे, निद्रा लावे, गर्भपात करे, और विकाशी है। आक्षेपकी पीडा हरण करे, मद करे, कुत्ते और स्यारके काटनेसे जो जलसंत्रास रोग होता है उसको नष्ट करे. बाह्यायाम, अंतरायाम, घोर विषूचिकारोग हरण करे, घोर मदात्यय, शूल, अम्लपित्त, मंदाग्नि, रजोदर्शके रुधिरके अत्यंत गिरनेको बंद करे। संविदासार (चरस) भी गांजेके समान गुण करै। तथा जहां गांजा डालना लिखाहै उस जगह चरस डालना चाहिये।

(रूमीमस्तंगी).

धूनराजपित्तरसोभंगुरोगंधिनीस्त्रियाम्।
मूत्रलोधूनराजस्यात्ग्राहकःकफनाशकः॥
दंतरोगहरोवल्योमेहास्रदरशातनः।

अर्थ-धूनराज, पित्तरस, भंगुर और गंधिनी ए संस्कृत नाम है। गुण। यह मूत्र लाता है, ग्राही, कफनाशक, दांतोंके रोगोंको हरण करे, बलकारी, प्रमेह, रक्तप्रदरको शांति करे।

म्लेच्छफल (काफी).

क्लीबेम्लेच्छफलंप्रोक्तमतंद्रीचस्त्रियांमता।
अतंद्रीकफनुद्वल्यानिद्रातंद्राविघातनी॥
स्नायूनांबलदाप्रोक्ताश्वासकासज्वरामयान्।
अर्द्धावभेदकंजाड्यमतिसारंचनाशयेत्॥

अर्थ-म्लेच्छफल और अतंद्री ए संस्कृत नाम है। गुण। अतंद्री अर्थात् काफी कफको हरण करे, बलकरे, निद्रा और तन्द्राको नष्ट करे। स्नायुओंको बल देयहै, श्वास, खांसी, ज्वर, अर्द्धावभेदक (आधासीसी) जडता और अतिसारको नष्ट करे।

कटुवीरा (लालमिरच).

कटुवीरोज्वलातीक्ष्णातीव्रशक्त्याःजडेतथा।
कटुवीराग्निजननीबलाशघ्नीचदाहिनी॥

हन्त्यजीर्णविषूचिव्रणार्द्रितंसुदारुणम् ।
तन्द्रांमोहंप्रलापंचस्वरभेदमरोचकम् ॥
नरंलुप्तस्वरंक्षीणंसंनिपातनिपीडितम् ।
नष्टेंद्रियाणांतीक्ष्णामृत्योराकृष्यजीवयेत् ॥

अर्थ–कटुवीरा, उजला, तीक्ष्णा, तीव्रशक्ती, और अजवा ए लालमिरचके संस्कृत नाम है । गुण । कटुवीरा अग्नि बढावे, कफको हरण करे, दाह प्रकट करै, अजीर्ण, विषूचिका, व्रण, आर्द्रता, तन्द्रा, मोह, प्रलाप. स्वरभेद और अरुचिको नष्ट करे । नाडी जाती रहीहो क्षीणशक्ति और इन्द्रियशक्तिहीन सन्निपातरोगमें यह अत्यंत उपकारक है । इसके फलकी मात्रा १ रत्ती है ।

हरीमिरचके गुण.

हरितस्यमरीचिगणस्यगुणाः ।
कथितास्तुविशेषतयामुनिभिः ॥
अदनाद्बहुवासरमेहभयं ।
शमयंतिसुरारवदैत्यबलम् ॥ १ ॥
नवमंजुलधान्यकचूर्णयुतं ।
शुकवर्णसमानमरीचिकुलम् ॥
तनुसंधिगवायुरुजंदमये ।
दनुजारिरिवाहिभयंशकलम् ॥ २ ॥
अतिभक्षणतोदरवारिकरा ।
बहुतीक्ष्णतयाधिकपित्तकरा ॥
असनेतिरुचिंकुरुतेसततं ।
हरिताहिमरीचिलतारसिता ॥ ३ ॥

अर्थ–हरीमिरचके गुणये है कि वहुत दिन सेवन करनेसे प्रमेहका भय दूर करै । यदि नवीन धनियेकी मंजरीका चूर्ण और लालमिरच मिलाय सेवन करे तो देहस्थ संधिवातकी पीडाको नष्ट करै । यदि हरीमिरच अधिक खाय तो उदररोग (जलंधर) करै तथा अत्यंत तीक्ष्ण होनेके कारण पित्तको करेहै । यह हरीमिरच खानेसे भोजन करनेमें अत्यंत रुचिको प्रगट करै यह हरीमिरचके गुण कहे है ।

लाल और पीली मिरचके गुण.

रुचिरक्तमरीचिलतादलिता ।
दशनेनशनैर्वदनांतरगा ॥
रचिताविधिनोष्णतराहितदा ।
जयतीहविषूचिरुजंनितराम् ॥ ४ ॥
मुखतीक्ष्णतरातितमोगुणदा ।
कवलेमनसोविकृतिंकुरुते ॥
बहुभक्षणतोबलवीर्यहरा ।
निजवीर्यसमानशरीरकरा ॥ ५ ॥
घृतसंयुतरक्तमरीचिरसाम्ल-
रसायनमन्यदिहास्तिपरम् ॥
विधिवद्यदिखादतितंमनुजो ।
वितनोत्यरुणांशुकदेहरुचिम् ॥ ६ ॥
बहुरूक्षसुतीक्ष्णरसारसनेकफ ।
रुभरमाशुहरत्यधिकम् ॥
शुभपीतमरीचिरनंतरसा ।
सममारुतपित्तकफान्कुरुते ॥ ७ ॥
तनुशीतहरासबलोष्णतरा ।
नवनीतयुताऽशुभवातहरा ॥
दधितक्रयुतातनुपुष्टिकरा ।
जठरस्थकृमीन्शमयत्यनिशम् ॥ ८ ॥

अर्थ–यदि लालमिरचको दांतोंसे चवायके खाय तो गरमी करै, हितकारी और विषूचिका (हैजे) को बंद करे । मुखमें चरपराट करै, तमोगुण वालेको परम गुण देने वाली, केवल इसे खाय तो मनको दुखदाई होय । अत्यत लालमिरचके खानेसे बलवीर्यकी हानी करे, परंतु विधिपूर्वक सेवन करनेसे अपनेसमान लालरंग देहका करै । घृतमें भूनके और अन्यरसांतर (निमकखटाई) केसाथ सेवनसे लालरंग देहका करै । अत्यंत रूखी इस लालमिरचके खानेसे कफकी अधिकयता दूर होय । पीलीमिरच–वादी, पित्त और कफको समान करै, देहकी सरदी हरण करै, बलकरै और गरम है । यदि मक्खनकेसाथ खाय तो दुष्ट वादीको हरण करै । दही और छाछमें डालके खाय तो देहको पुष्ट करै और पेटके कीडोंको नष्ट करे है ।

शाखिमूल.

शाखिमूलोमलयभूरंधिवृक्षोपिसंस्मृतः ।
वल्योवातबलासघ्नोज्वरघ्नश्छीतवारणः ॥

अर्थ–शाखिमूल, मलयम् और रंधिवृक्ष ए संस्कृत

नाम है। बं. काकतोडाली कहतेहै। यह बलकारक, वातकफनाशक, ज्वरघ्न और शीतनिवारक है। इसके जड़की छाल लेय। मात्रा १ मासे है।

यवतिक्ता.

यवतिक्तामहातिक्तासाग्निकृद्बलवर्द्धिनी ।
तिक्ताज्वरातिसारघ्नीबालानांशुभदासदा ॥
अस्यास्तुस्वरसोग्राह्यःमात्रास्यात्शाणकद्वयम् ।

अर्थ-यवतिक्ता और महातिक्ता ए दो संस्कृत नाम है। भाषामें यवोची और कालमेघ कहतेहै। यह कडवी, बलकारी, अग्निवर्द्धक और ज्वरातिसार नाशक, बालकोंके ज्वर और उदरामयादि पीडाओंको इसकेद्वारा विशेष उपकार होयहै। इसका स्वरस लिया जाता है। मात्रा १ तोलेकी है।

महातिक्ता.

भद्रतिक्तामहातिक्तारसेतिक्ताग्निवर्द्धनी ।
ज्वरघ्नीपित्तहृद्बल्याश्लेष्माणमपिनाशयेत् ॥

अर्थ-भद्रतिक्ता और महातिक्ता ए दो महातिक्ता के संस्कृत नाम है। बं. मिछमितिता कहतेहै। गुण। यह कडवी, अग्निवर्द्धक, ज्वरघ्न, पित्तनाशक, बलकारी और कफघ्न। इसकी मात्रा ६ रत्ती है।

श्यामपर्णी (चाह).

श्लेष्मारिगिरिभिच्छ्यामपर्ण्यातन्द्रीस्त्रियामुभे।
श्लेष्मारिपत्रंकफहृत्स्वेदनंबलवर्द्धनम् ॥
प्रतिश्यायहरंप्रोक्तंज्वरघ्नंकामदीपनम् ।
कासंसंहरणंवन्हेर्दीपनंजाड्यनाशनम् ॥
फांटोस्यसितयायुक्तःसेव्यानैरुज्यमिच्छता।

अर्थ-श्लेष्मारि, गिरिभिद्, श्यामपर्णी और तन्द्री ए चाहके संस्कृत नाम है। गुण। इसका पत्र कफघ्न स्वेद लानेवाला, बलवर्द्धक, प्रतिश्यायनाशक, ज्वरघ्न, कामोद्दीपक, कासनिवारक, अग्निदीपक, और शरीरकी जडता नाशक। इसका फांट मिश्री मिलायके सेवन करै। मात्रा २ मासेकी है।

कुष्ठवैरी (चोलमोगरा).

कुष्ठवैरीशैलरोहीमहागदमहीरुहः ।
वैवस्वतद्रुमःसस्याद्बलकृच्चरसायनः ॥
पामाविचर्चिकाकंडूसिध्मोदर्दविपादिकाः ।
हंत्यामवातंवातास्रंकुष्ठानिचविशेषतः ॥

अर्थ-कुष्ठवैरी, शैलरोही, महागद, महीरुह, वैवस्वतद्रुम। गुण। बलकारी, रसायन, यह पामा, विचर्चिका, कंडू, सिध्म, उदर्द, विपादिका, आमवात, वातरक्त और कुष्ठोंको दूर करै।

कांडीर.

कांडीरःकांडकटुकोनासासंवेदनःपटुः ।
उग्रकांडस्तोयवल्लीकारवल्लीसुकांडकः ॥
कांडीरःकटुतिक्तोष्णःसरोदुष्टव्रणार्त्तिनुत् ।
लूतगुल्मोदरप्लीहशूलमंदाग्निनाशनः ॥

अर्थ-कांडीर, कांडकटुक, नासासंवेदन, पटु, उग्रकांड, तोयवल्ली, कारवल्ली और सुकांडक। गुण। कांडीर-कटु (चरपरी), तिक्त (कडवी), गरम, दस्तावर, दुष्टव्रणकी बाधा, लूतादोष, गोलेका रोग, उदररोग, पिलही, शूल, और मंदाग्निको नष्ट करै।

जंतुका.

जंतुकाजंतुकारीचजननीचक्रवर्तिनी ।
तिर्यक्फलानिशांधाचबहुपत्रासुपत्रिका ॥
राजकृष्णाजनेष्टाचकपिकच्छुफलोपमा ।
रंजनीसूक्ष्मवल्लीचभ्रमरीकृष्णवल्लीका ॥
विज्जुलिकावृक्षरुहाग्रंथिपर्णीसुवल्लिका ।
तरुवल्लीदीर्घफलाएकविंशतिसंज्ञका ॥
जंतुकाशिशिरातिक्तारक्तपित्तकफापहा ।
दाहतृष्णावमिघ्नीचरुचिकृद्दीपनीपरा ॥

अर्थ-जंतुका, जंतुकारी, जननी, चक्रवर्तिनी, तिर्यक्फला, निशांधा, बहुपत्रा, सुपत्रिका, राजकृष्णा-जनेष्टा, कपिकच्छुफलोपम, रंजनी, सूक्ष्मवल्ली, भ्रमरी, कृष्णवल्लिका, विजुलिका, वृक्षरुहा, ग्रंथपर्णी, सुवल्लिका तरुवल्ली, दीर्घफला ए इकीस नाम है इसकी कौछके समान कालेरंग की वेल होतीहै। गुण। जंतुका शीतल, कडवी, रक्तपित्त, कफ, दाह, तृषा और वमन नाशक है। रुचिकर्त्ता और अग्निको दीपन करै है।

आवर्त्तकी.

आवर्त्तकीतिंदुकिनीविभांडी ।
विषाणिकारंगलतामनोज्ञा ॥

सारक्तपुष्पीमहद्वादिजाली ।
सापीतकीलापिचचर्मरंगा ॥
वामावर्त्ताचसंयुक्ता ।
मूलंख्याशशिसंयुता ॥
आवर्त्तकीकषायाम्ला ।
शीतलापित्तहारिणी ॥

अर्थ-आवर्तकी, तिन्दुकिनी, विमांडी, विषाणिका, रंगलता, मनोज्ञा, रक्तपुष्पी, महद्वादिजाली, पीतकीला, चर्मरंगा, और वामावर्ता ए ग्यारह नाम संस्कृत है। कोकनदेशी प्राणी इसे भगतवल्ली कहतेहैं। इसका फूल लालरंगका और इसकी वेल बहुत सुंदर होती है। **गुण**। आवर्तकीका सवाद कषेला और खट्टा है। यह शीतल और पित्त हरण कर्ता है। **मात्रा** १ मासेकी है।

कर्णस्फोटा.

कर्णस्फोटाश्रुतिस्फोटात्रिपुटाकृष्णतंदुला ।
चित्रपर्णीस्फोटलताचंद्रिकाचार्द्धचंद्रिका ॥
कर्णस्फोटाकटुस्तिक्ताहिमासर्वविषापहा ।
ग्रहभूतादिदोषघ्नीसर्वव्याधिविनाशिनी ॥

अर्थ-कर्णस्फोटा, श्रुतिस्फोटा, त्रिपुटा, कृष्णतंदुला, त्रिपर्णी, स्फोटलता, चन्द्रिका, और अर्धचंद्रिका ए कानफोडीके संस्कृत नाम है। **गुण**। चरपरी, कडवी, शीतल, सर्वविष, भूतबाधा और सर्वरोग नाशिनी है।

अमृतवल्ली.

ज्ञेयामृतस्रवावृक्षारुहाख्यातोयवल्लिका ।
घनवल्लीसितलतानामभिःशरसंमिता ॥
उक्ताऽमृतस्रवापथ्याईषत्तिक्तारसायनी ।
विषघ्नीव्रणकुष्ठामकामलांश्वयथुंजयेत् ॥

अर्थ-अमृतस्रवा, वृक्षारुहा, तोयवल्लिका, घनवल्ली और सितलता, ए पांच नाम अमृतवल्लीके है। **गुण**। पथ्य है, कुछकुछ कडवी, रसायनी, विष, व्रण, कुष्ठ, आमवात, कामला, और सूजनको नष्ट करै।

पुत्रदाधि.

पुत्रदात्रीतुवातारिर्भ्रमरीश्वेतपुष्पिका ।
वृत्तपत्रातिगंधातुवैशीजातासुवल्लरी ॥
पुत्रदात्रीतुवातघ्नीकटुरुष्णाकफापहा ।
सुरभिसर्वदापथ्यावंध्यादोषविनाशनी ॥

अर्थ-पुत्रदात्री, वातारि, भ्रमरी, श्वेतपुष्पिका, वृत्तपत्र, अतिगंधातु, वैशीजाता और सुवल्लरी। **गुण** पुत्रदात्री, वातनाशनी और वंध्यापनेको दूर करे। कटु गरम और कफको जीते सुगंधित तथा सदैव पथ्य है।

विधायरा.

वृद्धदारुकआवेगीजंगकोदीर्घवालुकः ।
वृद्धकोटरपुष्पीस्यादजांत्रीछागलांत्रिका ॥
जीर्णदारुद्वितीयास्याजीर्णाफंजीसुपुष्पिका ।
अजरासूक्ष्मपत्राचविज्ञेयाचषडाह्वया ॥
वृद्धदारुद्वयंगौल्यपिच्छलंकफवातहृत् ।
बल्यंकासामदोषघ्नंद्वितीयंस्वल्पवीर्यदम् ॥

अर्थ-वृद्धदारुक, आवेगी, जंगक, दीर्घवालक, वृद्धकोटरपुष्पी, अजांत्री, छागलांत्रिका। दूसरा जीर्णदारु, जीर्णाफंजी, सुपुष्पिका, अजरा और सूक्ष्मपत्रा ए छ नाम है। **गुण**। दोनों विधायरे गौल्य (मिष्ट), पिच्छल, कफवातहर, बलदाई, खासी, आमदोषको नष्ट करे। इन दोनोंमे पहला उत्तम है, दूसरेमे स्वल्पवीर्य है। इसको जड और बीजही ग्रहणीय है। **मात्रा** २ मासेकी है,

पलासी.

पलासीपत्रवल्लीचपर्णवल्लीपलाशिका ।
सुरपर्णीसुपर्णीचदीर्घवल्लीविषादनी ॥
अम्लपत्रीदीर्घपत्रीरसाम्लाचाम्लकाचसा ।
अम्लातकीकांजिकाचस्याश्चतुर्दशधाभिधा ॥
पालाशीमधुराम्लाचमुखदोषविनाशिनी ।
अरोचकहरापथ्यापित्तकोपकरीचसा ।

अर्थ- पलासी, पत्रवल्ली, पर्णवल्ली, पलाशिका, सुरपर्णी, सुपर्णी, दीर्घवल्ली, विषादनी, अम्लपत्री, दीर्घपत्री, रसाम्ला, अम्लका, अम्लातकी और कांजिका १४ नाम हैं। **गुण**। पलासी-हलकी, खट्टी मुखदोषनाशक, अरुचिहर, पथ्यरूप-और यह पित्तको हरण करनेवाली है।

समष्टील (नयाम्र).

समष्टीलश्चभंडीरोनयाम्रश्चाम्रगंधधृक् ।
काकाम्रःकंटकिफलोऽप्युपदंशोनगाह्वयः ॥

नद्याम्रः कटुरुष्णश्च रुच्यो मुखविशोधनः ।
कफवातप्रशमनो दाहकृद्दीपनः परः ॥

अर्थ-समष्ठील, भंडीर, नद्याम्र, आम्रगंधधृक्, काकाम्र, कटकिफल, और उपदंश ए ७ नाम समष्ठीलके है। यह नदीकिनारे कांटेदार एक फल होता है। **गुण** नद्याम्र-चरपरा, गरम, रुचकारी, मुखको शोधन कर्त्ता, कफवातनाशक, दीपन और दाहको करे है।

छविका.

बृहत्यन्यासर्पतनुश्छविकापीततंडुला ।
पुत्रप्रदाबहुफलागोधनीतिषडाह्वया ॥
छविकाबृहतीतिक्ताकटुरुष्णाचतत्समा ।
युक्त्याद्रव्यविशेषेणधारासंस्तंभसिद्धिदा ॥

अर्थ-दूसरे प्रकारकी जो कटेरी होतीहै वह सर्पतनु, छविका, पीततंडुला, पुत्रप्रदा, बहुफला, और गोधनी इन छ नामसे प्रसिद्ध है । यह सापकेसमान पीलेबीज और बहुत फलवाली होतीहै। **गुण**। सवाद कडवा, चरपरा, गरम, यह युक्तिपूर्वक अन्यद्रव्यके साथ देनेसे धाराके समानभी दस्तों को बंद कर देवे ।

सपेद बृहती.

श्वेतान्याश्वेतबृहतीज्ञेयाश्वेतमहोटिका ।
श्वेतसिंहीश्वेतफलाश्वेतवार्त्ताकिनीचषट् ॥
विज्ञेयाश्वेतबृहतीवातश्लेष्मविनाशिनी ।
रुच्याचांजनयोगेननानानेत्रामयापहा ॥

अर्थ-सपेदबृहती अर्थात् सपेद कटेरीके श्वेतबृहती, श्वेतमहोटिका, श्वेतसिंही, श्वेतफला, श्वेतवार्ताकिनी, ए छः नाम है। **गुण**। यह वातकफको नष्ट करे, रुचिकरै. और इसको अंजनके योगसे नेत्रोंमें लगावे तो नेत्रोंके अनेक प्रकारके रोग दूर करे है ।

शितावरी.

शितावरीशितवरःसूचव्याह्वःसूचिपत्रकः ।
श्रीवारकःशिखीवभ्रुःस्वस्तिकःसुनिषण्णकः ।
कुरुटःकुक्कुटःसूचीदनःश्वेतावरोऽपिसः ।
मेधाकृद्ग्राहकश्चेतिज्ञेयःपंचदशाह्वयः ॥
शितावरस्तुसंग्राहीकषायोष्णस्त्रिदोषजित् ।
मेधारुचिप्रदोदाहज्वरहारीरसायनः ॥

अर्थ-शितावरी, शितवर, सूच्याह्व, सूचीपत्रक, श्रीवारक, शिखी, वभ्रु, स्वस्तिक, सुनिषण्णक, कुरुट, कुक्कुट, सूचीदन, श्वेतावर, मेधाकृत्, और ग्राहक ए पंद्रह नाम शितावर रूखडीके है । **गुण** । यह ग्राही, कषेली, गरम, त्रिदोषनाशक, मेधा (बुद्धि) और रुचिदायक, दाह और ज्वरको हरण करै तथा रसायन है ।

तैरिणी.

तैरिणीतेरणस्तेरःकुनीलीनामतश्चतुः ।
तेरणःशिशिरस्तिक्तोव्रणघ्नोरुणरंगदः ॥

अर्थ-तैरिणी, तेरण, तेर और कुनीली ए चार नाम तेरणीके है। यह नीलके जातिकी रूखडी है। **गुण**। तेरण- शीतल,कडवी, व्रणनाशक और लालरंग देनेवाली है ।

चंचु.

चंचुश्चविजलाचंचुःकलभीवीरपत्रिका ।
चंचुरश्चंचुपत्रश्चसुशाकक्षेत्रसंभवः ॥
चंचुस्तुमधुरातीक्ष्णाकषायामलशोधनी ।
गुल्मोदरविबन्धार्शोग्रहणीरोगहारिणी ॥

अर्थ- चंचु, विजलाचंचु, कलभी, वीरपत्रिका, चंचुर, चंचुपत्र, सुशाक, क्षेत्रसंभव ए चंचूके नाम है । **गुण** । मधुर, तीक्ष्ण, कषेली, मलशोधनकर्त्ता, गोला, उदर, विवन्ध, अर्श और संग्रहणीरोगको नष्ट करै ।

महाचंचु.

बृहच्चंचुर्विषारीस्यान्महाचंचुःसुचंचुका ।
स्थूलचुंचुर्दीर्घपत्रीदिव्यगंधाचसप्तधा ॥
महाचंचुःकटूष्णाचकषायामलरोधिनी ।
गुल्मशूलोदरार्शोर्तिविषघ्नीचरसायनी ॥

अर्थ- बृहच्चंचु, विषारी, महाचंचू, सुचंचुका, स्थूलचंचू, दीर्घपत्री और दिव्यगंधा ए सात नाम महाचंचूके है । **गुण** । चरपरा, गरम, कषेला, दस्तरोकनेवाला, गोला, शूल, उदर, ववासीर और विषके विकार, इनको नष्ट करै तथा रसायनी है ।

क्षुद्रचंचु.

क्षुद्रचंचुसुचंचुःस्याच्चंचुःशुनकचंचुका ।
त्वक्सारभेदनीक्षुद्राकटुकाकटुपत्रिका ॥
क्षुद्रचंचुस्तुमधुराकटूष्णाचकषायिका ।
दीपनीशूलगुल्मार्शःशमनीचविबंधकृत् ॥

अर्थ– क्षुद्रचंचु, सुचंचु, चंचु, शुनक, चंचुका, त्वक्सारभेदनी, क्षुद्रा, कटुका और कटुपत्रिका । गुण । छोटाचंचु–मधुर, चरपरा, गरम, कषेला, दीपनकर्त्ता, शूल, गोला, बवासीर को नष्ट करै और विबंधकर्त्ता है ।

चंचुबीज.

चंचुबीजंकटूष्णंचगुल्मशूलोदरार्त्तिजित् ।
विषत्वग्दोषकंडूलीकंडूकुष्ठरुजापहम् ॥

अर्थ–चंचुके बीज कडवे, गरम, गोला, शूल, उदर, विषके रोग, त्वचाके रोग, खुजली, कंडूलीरोग, कुष्ठ इन सब रोगोंको नष्ट करै ।

भेंडा.

भैंडाभिंडातिकाभिंडोभिंडकःक्षेत्रसंभवः ।
चतुष्पदश्चतुःपुंड्रःसुशाकश्चाम्लपत्रकः ॥
करपर्णोवृत्तबीजोभवेदेकादशाह्वयः ।
भेंडात्वम्लरसासोष्णाग्राहिकारुचिकारिका ॥

अर्थ–भेंडा, भिंडातिका, भिंड, भिंडक, क्षेत्रसंभव, चतुष्पद, चतुःपुंड्र, सुशाक, अम्लपत्रक, करपर्ण, वृत्तबीज, ए ग्यारह नाम भिंडीनाम शाकके है । गुण । भिंडी खट्टे रसवाली, गरम, ग्राही और भोजनमे रुचि प्रगटकर्ता जाननी ।

पुत्रदा.

पुत्रदागर्भदात्रीचप्रजादापत्यदाचसा ।
सृष्टिप्रदाप्राणिमातातापसद्रुमसन्निभा ॥
पुत्रदामधुराशीतानारीपुष्पादिदोषहा ।
पित्तदाहश्रमहरागर्भसंभूतिदायिका ॥

अर्थ–पुत्रदा, गर्भदात्री, प्रजादा, पत्यदा, सृष्टिप्रदा, प्राणिमाता, तापसद्रुमसंभिभ, ए पुत्रदा रूखडीके संस्कृत नाम है । गुण । मधुर, शीतल, स्त्रियोंके पुष्पदोष आदिको दूर करै । पित्त, दाह और श्रमको हरण करै, तथा गर्भकी देनेवाली है ।

तक्रा.

तक्राह्वातक्रभक्ष्यातुतक्रपर्यायवाचका ।
पंचांगुलीसितामास्यादेषापंचाभिधास्मृता ॥
तक्राकटुःक्रिमिघ्नीस्याद्व्रणनिर्मूलनीचसा ।

अर्थ–तक्राह्वा, तक्रभक्ष्या, तक्रपर्यायवाचक, पंचांगुली और सितामा ए पांच नाम हैं । गुण । तक्राख्यखडी चरपरी, कृमिनाशक और व्रणको निर्मूलकर्त्ता है ।

स्वर्णुली.

स्वर्णलीहेमपुष्पीस्यात्स्वर्णपुष्पध्वजातथा ।
स्वर्णुलीकटुकाशीताकषायाचव्रणापहा ॥

अर्थ–स्वर्णली, हेमपुष्पी, स्वर्णपुष्पध्वजा ए नाम है । गुण । स्वर्णुली चरपरी, शीतल, कषेली और व्रणको नष्ट करै ।

तरवड.

आहुल्यंहलुराख्यंचगरंतरवटंतथा ।
शिबीफलंसुपुष्पंस्यादर्बुरंदंतकाष्टकम् ॥
हेमपुष्पतथापीतपुष्पंकांचनपुष्पकं ।
नृपमंगल्यकंचैवशरत्पुष्पंत्रिरेकधा ॥
आहुल्यंतिकशीतंस्याच्चक्षुष्यंपित्तदोषनुत् ।
मुखरुक्कुष्ठकंडूतिजंतुशूलव्रणापहम् ॥

अर्थ–आहुल्य, हलुराख्य, गर, तरवट, शिबिफल, सुपुष्प, अर्बुर, दंतकाष्ठ, हेमपुष्प, कांचनपुष्प, नृप, मंगल्यक और शरत्पुष्प, ए तेरह नाम है । गुण । आहुल्य-कडवा, शीतल, नेत्रोंको हितकर, पित्तदोषनाशक, मुखविकार, कुष्ठ, खुजली, क्रिमिरोग, शूल और व्रणको दूर करै ।

कसौदी.

कासमर्दोरिमर्दश्चकासारिःकासमर्दकः ।
कालःकनकइत्युक्तोजारणोदीपकश्चसः ॥
कासमर्दःसतिक्तोष्णोमधुरःकफवातनुत् ।
अजीर्णकासपित्तघ्नःपाचनःकंठशोधनः ॥

अर्थ–कासमर्द, अरिमर्द, कासारि, कासमर्दक, काल, कनक, जारण और दीपक ए संस्कृत है । गुण । कसौदी–कडवी, गरम, मधुर, कफवात नष्टकर्ता, अजीर्ण, कासपित्तकी नाशक, पाचन और कंठशोधन जाननी ।

सफेद इमली.

श्वेताम्लीत्वंविकाप्रोक्ता ।
पिष्टोंडिःपिंडिकाचसा ॥

श्वेताम्लीमधुरावृष्या।
पित्तघ्नीबलदायिनी॥

अर्थ-सफेद इमलीको संस्कृतमें अंविका, पिचौंडि और पिच्छिका कहतेहैं। गुण। सफेद इमली-मधुर, वृष्य, पित्तनाशिनी और बलदायिनी है।

नीली इमली.

नीलाम्लीनीलपिच्छौंडी।
श्यामाम्लीदीर्घशाखिका॥
नीलाम्लीमधुरारुच्या।
कफवातहरापरा॥

अर्थ-नीलाम्ली, नीलपिच्छौंडी, श्यामाम्ली और दीर्घशाखिका ए नीली इमलीके संस्कृत नाम है। गुण। मधुर, रुचिकारी, और कफवात हरणकर्ता है।

हुरहुरका भेद.

आदित्यपत्रोर्कदलोर्कपत्रः।
स्यात्सूक्ष्मपत्रस्तपनच्छदश्च॥
कुष्ठारिरर्कोविटपःसुपत्रो।
रविप्रियोरश्मिपतिश्चरुद्रः॥
आदित्यपत्रःकटुरुष्णवीर्यः।
कफापहोवातरुजापहश्च॥
संदीपनोजाठरगुल्महारी।
ज्ञेयःसचारोचकनाशनश्च॥

अर्थ-आदित्यपत्र, अर्कदल, अर्कपत्र, सूक्ष्मपत्र, तपनच्छद, कुष्ठारि, अर्कविटप, सुपत्र, रविप्रिय और रुद्र, ए हुरहुरकी एक जाती उसके नाम है। गुण। कटु, उष्णवीर्य, कफनाशक, वातरोगनाशक, दीपन, वायगोला और अरुचिको नष्ट करैहै।

कामवृद्धि.

स्यात्कामवृद्धिःस्मरवृद्धिसंज्ञो।
मनोजवृद्धिर्मदनायुधश्च॥
कंदर्पजीवश्चजितेन्द्रियाह्वः।
कामोपजीवोपिचसप्तसंज्ञः॥
कामवृद्धस्तुबीजंस्या-।
न्मधुरंबलवर्द्धनम्॥
कामवृद्धिकरंरुच्यं।
बहुलेंद्रियवृद्धिदम्॥

अर्थ-कामवृद्धि, स्मरवृद्धि, मनोजवृद्धि, मदनायुध, कंदर्पजीव, जितेन्द्रिय और कामोपजीव ए सात नाम कामवृद्धिके है। गुण। कामवृद्धिके बीज-मधुर, बलवर्द्धन, कामवृद्धिकर्ता, रुचकारी और लिंगेन्द्रीयको बढाने वाले है।

झिझरीट.

झिंझिरीटाकंटफलीपीतपुष्पाऽपिझिंझिरा।
हुडरोमाश्रयफलावृत्ताचैवषडाह्वया॥
झिंझिरीटाकटुःशीताकषायाचातिसारजित्।
वृष्यासंतर्पणीबल्यामहिषीक्षीरवर्द्धनी॥

अर्थ-झिंझिरीटा, कंटफली, पीतपुष्प, झिंझिरा, हुडरोमा, आश्रयफला,और वृत्ता ए छः नाम झिंझिराके है। गुण। चरपरा, शीतल, कषेला, अतिसारनाशक, वृष्य; तृप्तकारी, बलकर्ता, स्त्रियोंके छातीमें दूध बढाती है।

रुदंती (रुद्रवंती).

स्याद्रुदंतीस्रवत्तोयासंजीवन्यमृतस्रवा।
रोमांचिकामहामांसीचणपत्रीसुधास्रवा॥
रुदंतीकटुतिक्तोष्णाक्षयक्रिमिविनाशिनी।
रक्तपित्तकफश्वासमेहहारिरसायनी॥

अर्थ-रुदन्ती, स्रवत्तोया, संजीवनी, अमृतस्रवा, रोमांचिका, महामांसी, चणपत्री, सुधास्रवा ए रुद्रवंती रुखडीके संस्कृत नाम है। गुण। रुदंती, चरपरी, कडवी, गरम, क्षयरोग, रक्तपित्त, कफ, श्वास और प्रमेहको नष्ट करै; तथा रसायनी है।

चणपत्रसमंपत्रंक्षुपंचैवतथाम्लकम्।
शिशिरेजलबिंदूनांस्रवंतीतिरुदंतिका॥

अर्थ-रुद्रवंती (रुदंती) क्षुपजातिकी रुखडी है। इसके पत्ते चनेकेसे छोटें छोटें होतेहैं; और खानेमें खट्टे मालूम होते है, शरदीकी ऋतुमें इसमें जलकी बूंदट पका करती है इसीसे इसको रुदंतिका कहते है।

कुटुंबिनी.

कुटुंबिनीपयस्याचक्षीरिणीजलकामुका।
वज्रशल्यातुरावर्षाक्रूरकर्मासिरिंटिका॥
शीताप्रहारजायाचशीतलाचजलेरुहा।
विख्याताकिलविज्ञैरेषाद्वादशनामभिः॥

कुटुंबिनीतुमधुराग्राहिणीकफपित्तनुत् ।
व्रणाखदोषकंडूतिनाशिनीसाररसायनी ॥

अर्थ-कुटुंबिनी, पयस्या, क्षीरणी, जलकामुका, वज्रशल्या, दुराधर्षा, क्रूरकर्मा, झिरिंटिका, शीता, प्रहारजा, शीतला और अलेडहा ए बारह नाम हैं। गुण। कुटुंबिनी स्वादमें मीठी, दस्तवद्धक, कफपित्त, व्रण, रुधिरके विकार और खुजलीको नष्ट करै तथा रसायनी है।

गोरक्षी.

गोरक्षीसर्पदंडीचदीर्घदंडीसुदंडिका ।
चित्रलागंधबहुलागोपालीपंचपर्णिका ॥
गोरक्षीमधुरातिक्ताशिशिरादाहपित्तनुत् ।
विस्फोटवांत्यतीसारज्वरदोषविनाशिनी ॥

अर्थ-गोरक्षी, सर्पदंडी, दीर्घदंडी, सुदंडिका, चित्रला, गंधबहुला, गोपाली और पंचपर्णिका ए गोरक्षीके संस्कृत नाम है। गुण। मधुर, कड़वी, शीतल, दाह, पित्त, विस्फोट (फोड़ा), वांति, अतिसार और ज्वरके दोषोंको नष्ट करै है।

दुग्धफेनी.

दुग्धफेनीपयःफेनीफेनदुग्धापयस्विनी ।
लूतारिर्व्रणकेतुश्चगोजापर्णीचसप्तधा ॥
दुग्धफेनीकटुस्तिक्ताशिशिराविषनाशिनी ।
व्रणापसारिणीरुच्यायुक्त्याचैवरसायनी ॥

अर्थ-दुग्धफेनी, पयःफेनी, दुग्धा, पयस्विनी, लूतारि, व्रणकेतु और गोजापर्णी ए सात नाम संस्कृत है। गुण। दुग्धफेनी, चरपरी, कटु, शीतल, विषनाशक, व्रणनाशक, रुचिदायक और युक्तिपूर्वक रसायन है।

अश्मंतक.

अश्मंतकश्चेन्दुकश्चकुद्दालश्चाम्लपत्रकः ।
श्लक्ष्णत्वक्पीलुपत्रश्चस्मृतोयमलपत्रकः ॥
अश्मांतश्चेन्दुसफरीशिलांतश्चांबुदस्मृतः ।
पाषाणांतकइत्युक्तोवन्हिचंद्रमिताह्वयः ॥
अश्मंतकःस्यान्मधुरःकषायः ।
सुशीतलःपित्तहरःप्रमेहजित् ॥
विदाहतृष्णाविषमज्वरापहो ।
विषार्त्तिविच्छर्दिहरश्चभूतजित् ॥

अर्थ-अश्मंतक, इन्दुक, कुद्दाल, अम्लपत्रक, श्लक्ष्णत्वक्, पीलुपत्र, यमलपत्रक, अश्मन्त, इन्दु, शफरी, शिलांत, अंबुद और पाषाणांतक ए अश्मंतकके संस्कृतके नाम है। गुण। अश्मंतक मधुर, कषेला, शीतल, पित्तहरणकर्ता, प्रमेह, दाह, तृष्णा, विषमज्वर, विषजन्यपीडा, वमन इनको दूर करै और भूतबाधाको नष्ट करै है।

वृश्चिकाली.

वृश्चिकालीवृश्चिपत्रीविषघ्नीनागदंतिका ।
सर्पदंष्ट्रामराकालीचोष्ट्रधूसरपुच्छिका ॥
कटुतिक्तावृश्चिकालीहृद्वक्त्रपरिशोधिनी ।
बलकृद्रक्तपित्तघ्नीकासश्वासप्रणाशिनी ॥
विषघ्नीरोचनीवन्हिमांद्यनुज्ज्वरनाशिनी ।

अर्थ-वृश्चिकाली, वृश्चिपत्री, विषघ्नी, नागदंतिका, सर्पदंष्ट्रा, अमरा, काली, उष्ट्र, धूसरपुच्छिका यह संस्कृत नाम है। गुण। यह कटु, तिक्त, हृदयविशोधक, मुखशुद्धिकर, बलकर, विषघ्नी, और रुचिदायक। प्रयोग। रक्तपित्त, खांसी, श्वास, मंदाग्नि और ज्वरनिवारण करै। इसकी जड लैनी। मात्रा ४ रत्तीकी है।

आच्छुक.

आच्छुकस्तुरंजनद्रुःपक्षीकाक्षिकपक्षिका ।
रक्तपित्तमतीसारंरक्तस्रावंहरेदयम् ॥

अर्थ-आच्छुक, रंजनद्रु, पक्षीक और अक्षिकपक्षिका। गुण। इसके द्वारा रक्तपित्त, अतिसार और रुधिरस्राव नष्ट होय। मात्रा ६ रत्ती है।

आलवनावृक्ष.

तीव्राचालवणासास्यात्कफमेदकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-आलवणा और तीव्रा ए दो नाम पर्याय वाचक है। गुण। यह कफ, मेद, कृमिरोगको नष्ट करै। मात्रा १ माशे।

राजघास.

राजघासस्तृणपतिःसपित्तानिलदाहनुत् ।
हरेद्रक्तातिसारंचरक्तपित्तमसृग्दरम् ॥
अर्शांसिषड्विधान्येवमूत्रकृच्छ्रंचदारुणम् ।

अर्थ-राजघास और तृणपति ए दो नाम, काली, सुगंधित घासके है। इसे कालीघासभी कहते हैं। गुण। वायुपित्तनाशक और दाहनिवारक। प्रयोग। रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रदर, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र-को नष्ट करै। इसका स्वरस लिया जाय है। मात्रा २ तोलेकी है।

गंधपत्र.

गंधाढ्यासौरमेयीचगंधपत्रंनपुंसकम्।
गंधपत्रंवातहरंशीतलंवन्हिवर्द्धनम्॥

अर्थ-गंधाढ्या, सौरमेयी और गंधपत्र ए संस्कृत नाम है। गुण। गंधपत्र वातहर, शीतल और अग्नि-वर्द्धक है।

आकाशमांसी.

आकाशमांसीशैवालीनिरालंबाखसंभवा।
अभ्रमांसीसूक्ष्मपत्रीगौरीपर्वतवासिनी॥
आकाशमांसीशीतास्याच्छोथव्रणविषापहा।

अर्थ-आकाशमांसी, शैवाली, निरालंबा, खसंभवा, अभ्रमांसी, सूक्ष्मपत्री, गौरी और पर्वतवासिनी ए संस्कृत नाम है। गुण। शीतल है यह सूजन व्रणको और विषको नष्ट करै। यह छोटी जटामांसी है।

ईशावासकपूर.

ईशावासस्तुकर्पूरोशुभ्रोन्मादतृषापहः।
कृमिकासक्षयश्वासमदहारीसुवासकृत्॥
वृष्योभेदीचांगदाहंस्वेदंहरतिनिश्चितम्।

अर्थ-ईशावास कपूर, रंगमें सफेद, उन्माद, तृषा, कृमिरोग, खांसी, क्षय, श्वास, और मदतपनेको दूर करै। वृष्य, दस्तावर, अंगदाह और पसीनोंका आना दूर होय तथा सुवासकरनेवाला है।

हिमकपूर.

हिमकर्पूरकःशुभ्रोशीतोवृष्यःकटुस्मृतः।
तृषादाहस्वेदमोहनाशकोमुनिभाषितम्॥

अर्थ-हिमसंज्ञक कपूर सफेद, शीतल, वृष्य और चरपरी हैं तथा यह तृषा, दाह, पसीने मोहको नाश करती है।

पर्णकपूर.

पर्णकर्पूरकस्तिक्तःपावनोन्मादकारकः।
पीनसंदाघहन्मूत्रकर्ताचोष्माविनाशकः॥

अर्थ-पर्णसंज्ञक कपूर कडवी, पवित्र, उन्माद करै, पीनस, दाह, और गरमीको नष्ट करै तथा मूत्र लाने वाला है।

उदयभास्करकपूर.

कर्पूरोदयभास्करोनिगदितःपीतसरःस्व-च्छकः।
संप्रोक्तःकठिनःकटुःसमुदितःस्याद्दीपकोम्ले-र्लघुः॥
श्रीदःपित्तकरःकफकृमिविषान्वातंचनासा-स्रुतिम्।
लालास्रावमलग्रहौचशमयेज्जिह्वाजडत्वा-पहः॥

अर्थ-उदयभास्कर कपूर पीलेरंगका होता है, दस्तावर, स्वच्छ, कठिन, चरपरा, अग्निको दीपनकारी, हलका, शोभाकारक, पित्तकारी, कफकृमि, विष-वादी और नाकसे जलका गिरना, लारका बहना, मल और ग्रहको दूर करै तथा जिव्हाके जडभावको नष्ट करै है।

मुश्कविलावकस्तूरी.

ओतुद्भवाचकस्तूरीचक्षुष्योष्णासुखावहा।
सुगंधिकाचसुस्निग्धावातेशस्ताचवान्तिदा॥
शुक्रवृद्धिकरीवृष्याअंगकांतिकरीमता।
कंडूकिटिभकुष्ठंचघर्मंगंधंविषंतथा॥
कंठरोगंचशीतंचनाशकःसंप्रकीर्त्तितः।

अर्थ-ओतुद्भवा (मुश्कविलावसें) निकली कस्तूरी नेत्रोंको हितकारी, गरम, सुखकारी, सुगंधियुक्त, चिकनी, वादीके रोगमें हितकारी, वमन लानेवाली, वीर्यवृद्धिकर्त्ता, वृष्य, देहमें कांतिकारी, खुजली, किटिभकुष्ठ, पसीने, दुर्गंध, विषरोग, कंठरोग और शीतको नष्ट करती है।

हेरंब.

हेरंबःखरपत्रोथकंटकीदंतधावनः।
हेरंबवृक्षःकफहावातनाशकरोमतः॥
हेरंबवृक्षमूलंतुवांतिकारीमतावुधैः।

अर्थ-हेरंब, खरपत्र, कंटकी, और दंतधावन ए संस्कृत नाम है। गुण। कफ और वातनाशक, तथा हेरंब वृक्षकी जड पीसकर पीनेसे वांति कराती है।

ब्रह्मदंडी.

ब्रह्मदंड्यजदंडीस्यात्कंटपत्रफलास्मृता ।
ब्रह्मदंडीभवेदुष्णातिक्ताकफविनाशनी ॥
शोथवातोद्भवरोगनाशनीसंप्रकीर्तितः ।

अर्थ–ब्रह्मदंडी, अजदंडी और कंटपत्रफला ए ब्रह्मदंडीके संस्कृत नाम है । गुण । ब्रह्मदंडी गरम, कडवी, कफनाशिनी, सूजन और वादीके रोगोंको नष्ट करे है ।

समुद्रफल.

समुद्रनामप्रथमंपश्चात्फलमुदाहरेत् ।
सबाब्धिफलसंप्रोक्तःसरित्पतिफलस्तुसः ॥
फलंसमुद्रस्यकटूष्णकारि ।
वातापहंभूतनिरोधकारि ॥
त्रिदोषदावानलदोषहारि ।
कफामयभ्रान्तिविरोधाकारि ॥

अर्थ–समुद्रफल, अब्धिफल और सरित्पतिफल ए समुद्रफलके नाम है । गुण । समुद्रफल चरपरा, गरम, वातनाशक, भूतबाधानाशक, सन्निपात हरणकरता और कफरोगोंको नष्ट करैहै । इसके चूर्णको पालीके ज्वर रोकनेके वास्ते भी देते है ।

महाराष्ट्री.

महाराष्ट्रीचराष्ट्रीचतीक्ष्णासामरहट्टिका ।
महाराष्ट्रीकटुस्तीक्ष्णासोष्णावातकफार्त्तिहा ।
व्रणकीटादिदोषघ्नीरसदोषनिवर्हणी ।

अर्थ–महाराष्ट्री, राष्ट्री, तीक्ष्ण और मरहट्टिका । गुण । महाराष्ट्री, चरपरी, तीक्ष्ण, गरम, वातकफनाशक, व्रण, कीटादिदोषनाशक और पारदके दोष नष्ट करता है ।

हारसिंगार.

प्राजक्तःपारिजातश्चहारशृंगारपत्रस ।
नालकुंकुमकारागपुष्पीचखरपत्रकः ।
रसःप्राजक्तपत्रस्यज्वरघ्नस्तिक्तकःस्मृतः ।
पर्णखंडसमायुक्तस्त्वचाकासविनाशनः ॥

अर्थ–प्राजक्त, पारिजात, हारशृंगार, नालकुंकुमक, रागपुष्पी और खरपत्रक । गुण । हारशृंगार के पत्तोंका रस ज्वरनाशक, कडवा, पत्ते और खांड मिलायके सेवन करनेसे त्वचाके रोग और खांसीको दूर करैहै ।

हिमावली.

हिमावलीचहृद्धात्रीकुष्ठघ्नोरंगकुष्ठकः ।
अंगारग्रंथिकोग्रंथीग्रंथिलोवसुसंज्ञकः ॥
हिमावलीसरातिक्ताप्लीहगुल्मोदरापहा ।
कृमिकुष्ठगुदात्युग्रखर्जूकंडूतिहारिणी ॥

अर्थ–हिमावली, हृद्धात्री, कुष्ठघ्न, रंग, कुष्ठक, अंगार ग्रंथिक, ग्रंथी, ग्रंथिला । गुण । हिमावलीको हितावलीभी कहते है. यह दस्तावर, कडवी, प्लीह, गुल्म, उदर, कृमि, कुष्ठ, गुदाके रोग, खुजली, और कंडू इनको नष्ट करै ।

हस्तिमद.

हस्तिमदोगजमदोगजदानंमदस्तथा ।
कुंभीमदोदंतिमदोदानंद्विपिमदोष्टधा ॥
स्निग्धोहस्तिमदस्तिक्तःकेश्योपस्मारनाशनः
विषहृत्कुष्ठकंडूतिव्रणदद्रुविसर्पनुत् ॥

अर्थ–हस्तिमद, गजमद, गजदान, मद, कुंभीमद, दन्तिमद, दान और द्विपिमद ए हाथीमदके आठ नाम है । गुण । स्निग्ध, कडवा, बालोको बढानेवाला, अपस्मार, विष, कोढ, खुजली, व्रण, दाद, और विसर्परोगको नष्ट करै ।

रुद्राक्ष.

रुद्राक्षश्चशिवाक्षश्चशर्वाक्षोभूतनाशनः ।
पावनोनीलकंठाक्षोहराक्षश्चशिवप्रियः ॥
रुद्राक्षमम्लमुष्णंचवातघ्नंकफनाशनम् ।
शिरोर्त्तिशमनंरुच्यंभूतग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ–रुद्राक्ष, शिवाक्ष, शर्वाक्ष, भूतनाशन, पावन, नीलकंठ, हराक्ष और शिवप्रिय । गुण । रुद्राक्ष खट्टा, गरम, वातनाशक, कफनाशक, मस्तकपीडा, रुचकारी, भूत और ग्रह विनाश कर्ता है ।

ढोलसमुद्रिका.

ढोलसमुद्रिकाप्रोक्ताकीटादीनांविषप्रणुत् ।

अर्थ–ढोलसमुद्रिकाका प्रयोग बिच्छू आदि कीट विषको नष्ट करै है ।

मद्रवल्ली.

भद्रवल्लीशीतभीरुर्भूमिमंडोऽष्टपादिका ।
व्रणंभ्रमामयंनाडीव्रणमेषाविनाशयेत् ॥

अर्थ-भद्रवल्ली, शीतभीरु, भूमिमंड और अष्टपादिका ए संस्कृत नाम है । भाषामें इसे हापरमाली कहते है । गुण । भ्रमरोग, व्रण (घाव) और नाडीव्रण (नासूरको) नष्ट करै ।

ग्रीष्मसुंदर.

ग्रीष्मसुंदरकस्तिक्तोलघुःपित्तकफप्रणुत् ।
रुचिकृत्कामलापांडुज्वरप्लीहनिकृंतनः ॥

अर्थ-ग्रीष्मसुंदर एक प्रकारका शाक है इसें गौडिया गिमाशाक बोलते है । गुण । कडवा, हलका, कफपित्तनाशक, रुचिकारक । प्रयोग । कामला रोग, पांडु, ज्वर और तिल्लिके रोगको नष्ट करै ।

हारिद्रु.

हारिद्रकःपीतवर्णःश्रीमान्गौरद्रुमोवरः ।
हारिद्रुःकटुकःपाकेवीर्योष्णस्तुवरःकटुः ॥
लघुःकफहरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः ।
तिक्तोबल्यःकांतिदश्चत्वग्दोषांश्चविनाशयेत् ॥

अर्थ-हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान् और गौरद्रुम यह हलदिया वृक्षके नाम है । गुण । हारिद्रवृक्ष पाकमें कटु, उष्णवीर्य, कषेला, चरपरा, हलका, कफहरणकर्त्ता, वर्ण्य, वृणको शोधन और रोपण करैहै ; कडवा, बलकर्ता, कांतिदाता और त्वचाके समग्र दोष दूर करे है ।

माड.

माडोमाडद्रुमोदीर्घोध्वजवृक्षोवितानकः ।
मद्यद्रुमोमोहकारीमद्यद्रुरज्जुरष्टधा ॥
माडस्तुशिशिरोरुच्यःकषायःपित्तदाहकृत् ।
तृष्णापहोमदत्कारीश्रमहृच्छ्लेष्मकारकः ॥

अर्थ-माड, माडद्रुम, दीर्घ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यद्रुम, मोहकारी, मद्यद्रु, और, रज्जु ए आठ नाम है । गुण । माड शीतल, रुच्य, कषेला, पित्त और दाहका नाशक, तृषानाशक, वादी करै, श्रमहरणकर्त्ता और कफकारी है ।

साजड.

साजडोवनजोवृक्षःकृष्णत्वक्श्यामसारकः ।
धाराफलोऽथनिस्सारफलकोवीरवृक्षकः ॥
पार्श्वक्षतेऽनिलेभ्रमेरक्तस्तंभेकफेहितः ।

अर्थ-साजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक्, श्यामसारक, धाराफल, निस्सारफलक और वीरवृक्षक ए संस्कृत नाम है । गुण । यह पसलीका घाव, वादी, भ्रमरोग, रुधिरका स्तंभ, और कफके रोगमें हितकारी है ।

किंकिणी.

किंकिणीव्याघ्रघण्टीचगोविन्दीकटुकन्दरी ।
किंकिणीतुवरस्तिक्तःपित्तश्लेष्महरोहिमः ॥
तत्फलंवातलंत्वामंपक्वंस्वादुत्रिदोषहृत् ॥

अर्थ-किंकिणी, व्याघ्रघंटी, गोविन्दी, कटुकंदरी, ए संस्कृत नाम है । गुण । किंकिणी, कषेली, कडवी, पित्तकफ हरणकर्त्ता, शीतल, किंकिणीके कचे फल वातल और पके फल स्वादिष्ट तथा त्रिदोष हरणकर्त्ता जानने ।

फंजी.

फञ्ज्यांतुफंजिकापद्माब्जांत्रीचापराजिता ।
फंजीतुशीतलावृष्याग्राहकातुवराकटु ॥
ऊष्णामधुराबल्यास्निग्धाकफकराग्रुरुः ।
विष्टंभकारिणीवातपित्तहृद्रोगकासहा ॥
श्लेष्मामदोषशमनीचोष्णवातनिवर्हणी ।

अर्थ-फंजी, फंजिका, पद्मा, अजांत्री, अपराजिता ए संस्कृत नाम है । गुण । फंजी-शीतल, वृष्य, ग्राही, कषेली, चरपरी, गरम, मधुर, बलदायिनी, स्निग्ध, कफकर्त्ता, भारी, विष्टंभकारिणी, वातपित्त, हृदयरोग, खांसी, कफके दोष, आमदोषको शमन करै । गरम और वातको नष्ट कर्त्ता है ।

समुद्रशोष.

समुद्रशोषःसंग्रोक्तोवातलोग्राहकोमतः ।
अतिपित्तकरस्सैवश्लेष्मकारीतुसंमतः ॥

अर्थ-समुद्रशोष वातल दस्त रोकनेवाला, अत्यंत पित्तकर्त्ता और कफ करनेवाला है ।

समुद्रपुष्प.

समुद्रपुष्पंतुवरंमधुरंशीतलंतथा ।
रक्तदोषंकफंपित्तंकामलांहरतेध्रुतम् ॥
गर्भिण्याकष्टहारीस्वात्पांडुत्वंकुष्ठदोषहृत् ।

अर्थ–समुद्रपुष्प, कषेला, मधुर, शीतल, रुधिरदोषनाशक, कफपित्त, कामला, पांडु और कुष्ठको हरण करै तथा गर्भिणीके कष्टको दूर करता है ।

कर्कट–गांगेरुक.

कर्कटःकार्कटःकर्कःक्षुद्रधात्रीसमःस्मृतः ।
क्षुद्रामलकसंज्ञश्चप्रोक्तःकर्कफलश्चषट् ॥
तोदनंग्राहकंचाम्लंलघूष्णंचाग्निदीपनम् ।
पित्तलंचफलंचास्याःपक्वंतुमधुरंमतम् ॥
स्निग्धंचतुवरंप्रोक्तंकफवातहरंस्मृतम् ।

अर्थ–कर्कट, कार्कट, कर्क, क्षुद्रधात्रीसम, क्षुद्रामलकसंज्ञक और कर्कफल ए कर्कटके संस्कृत नाम है । गुण । नोचने कीसीपीडा कर्त्ता, दस्तरोधक, खट्टा, हलका, गरम, अग्निदीपन, पित्तकर्त्ता, ए कच्चे फलके गुण है । पका हुवा कर्कटफल मधुर है, स्निग्ध और कषेला कफवात हरण करै है ।

गांगेरुककामूल.

गांगेरुकंतुतुवरमम्लंचोष्णंगुरुस्मृतम् ।
रक्तपित्तंकफकरंसारकंवातहारकम् ।
पक्वंगांगेरुकफलंरुचिरंचलघुस्मृतम् ॥
वातरक्तहरंपित्तनाशकाःसंप्रकीर्त्तितः ।

अर्थ–गांगेरुक कषेला, खट्टा, गरम और भारी है, रक्तपित्त और कफकर्त्ता है । दस्तावर, वातनाशक । पका गांगेरुकफल–रुचिकारी और हलका है । वातरक्त हरणकर्त्ता, पित्तनाशक जानना ।

भ्रमरछल्ली.

भृंगाह्वाभ्रमराह्वाचक्षीरद्रुर्भृंगमूलिका ।
उग्रगंधाचभृंगत्वक्छल्लीभ्रमरिछल्लिका ॥
भृंगाह्वाकटुकाचोष्णातिक्तारुच्याग्निदीपिनी ।
कंठ्याचसर्वदोषघ्नीमुनिभिःसंप्रकीर्त्तिताः ॥

अर्थ–भृंगाह्वा, भ्रमराह्वा, क्षीरद्रु, भृंगमूलिका, उग्रगंधा, भृंगत्वक्, छल्ली, भ्रमरि छल्लिका । गुण । भ्रमर छल्ली चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारी, अग्निदीपन कर्त्ता, कंठको सुधारे, तथा मुनीश्वरोंने सर्व दोषनाशिनी कहा है ।

मर्यादवल्ली.

मर्यादामारवल्लीचसागरामन्मथापिच ।
युग्मपत्रारक्तपुष्पातथासागरमेखला ॥
मर्यादवल्लिकाशीताग्राहिणीसारकागुरुः ।
पाककालेचोष्णास्याद्वातलागर्भकर्षिणी ॥
विषूचिकांचशूलंचवांतिचामंविनाशयेत् ।

अर्थ–मर्यादा, मारवल्ली, सागरा, मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, और सागरमेखला ए मर्यादवल्लीके संस्कृत नाम है । गुण । मर्यादवल्ली शीतल, ग्राही, दस्तावर, भारी, पाकके समय गरम, वातकर्त्ता, गर्भके खींचनेवाली, विषूचिका, शूल, वमन और आमरोगको शमन करता है ।

झिली.

झिलीरक्तापहोनीलःसुझिल्लोमृदुपत्रकः ।
झिलीवातास्रकंहंतिशीतवीर्योऽग्निदीपनः ॥

अर्थ–झिली, रक्तापहा, नील, सुझिल, मृदुपत्रक । गुण । झिली वातास्र (वातरक्त) को नष्ट करै, शीतवीर्य और जठराग्निको दीपन करै है ।

इन्दीवरी.

इन्दीवरीयुग्मफलादीर्घवृत्तोत्रवारुणी ।
पुष्पमंजरिकाद्रोणीकरंभानलिकाचसा ॥
इन्दीवरीकटुःशीतापित्तश्लेष्मापहारिका ।
चक्षुष्याकासदोषघ्नीव्रणकृमिहरापरा ॥

अर्थ–इन्दीवरी, युग्मफला, दीर्घवृत्त, वारुणी, पुष्पमंजरिका, द्रोणी, करंभा, और नलिका । गुण । चरपरी, शीतल, पित्तकफनाशिनी, नेत्रोंको हितकर्ता, खांसी, व्रण और कृमिरोगको हरण करै ।

धूम्रपत्रा.

धूम्रपत्रातुधूम्राह्वासुलभातुस्वयंभुवा ।
गृध्रपत्राचगृध्राणीकृमिघ्नीकृमिमलापहा ।
धूम्रपत्ररसेतिक्ताशोफघ्नीकृमिनाशनी ।
उष्णाकासहराचैवरुच्यादीपनकारिणी ॥

अर्थ–धूम्रपत्रा, धूम्राह्वा, सुलभा, स्वयंभुवा, गृध्रपत्रा, गृध्राणी, कृमिघ्नी और कृमिमलापहा ए नाम है । गुण–धूम्रपत्राका रस कडवा, सूजन, कृमि, और खांसीको नष्ट करै । गरम, रुचिकर्त्ता, और दीपनकारिणी है ।

हस्तिशुंडी.

हस्तिशुंडीमहाशुंडीशुंडीधूसरपत्रिका ।
हस्तिशुंडीकटुष्णास्यात्सन्निपातज्वरापहा ॥

अर्थ–हस्तिशुंडी, महाशुंडी, शुंडी और धूसरपत्रिका ए संस्कृत नाम है । गुण । हस्तिशुंडी, चरपरी, गरम, और सन्निपातज्वरको नष्ट करै है ।

कुटुम्बिनी.

कुटुम्बिनीपयस्याचक्षीरिणीजलकामुका ।
वज्रशल्यादुराधर्षाक्रूरकर्माक्षिरिंटिका ॥
शीताप्रहारजायाचशीतलाचजलेरुहा ।
विख्याताकिलविद्वद्भिःरेषाद्वादशनामभिः ॥
कुटुंबिनीतुमधुराग्राहिणीकफपित्तनुत् ।
व्रणास्रदोषकंडूतिनाशनीसारसायनी ॥

अर्थ-कुटुम्बिनी, पयस्या, क्षीरणी, जलकामुका, वज्रशल्या, दुराधर्षा, क्रूरकर्मा, क्षिरिंटिका, शीता, प्रहारजा, शीतला, और जलेरुहा ए बारह नामोंसे विख्यात है । **गुण** । कुटुंबिनी स्वादमें मधुर, ग्राही, कफपित्तनाशक, व्रण, रुधिरके विकार, खुजली को नष्ट करै और रसायनी है ।

श्वेता.

श्वेतातुच्छुरिकापत्रीपर्वमूलाऽप्यविप्रिया ।
श्वेतातिमधुराशीतास्तन्यदारुचिकृत्परा ।

अर्थ-श्वेता, छुरिकापत्री, पर्वमूला, अविप्रिया ए संस्कृत नाम है। **गुण** । श्वेता, प्रत्यंत मीठी, शीतल, स्त्रीके दूध बढावे, और अत्यंत रुचि प्रकट करै है ।

झंडू.

झंडूःस्यात्स्थूलपुष्पातुर्झंडूकोझेण्डुकस्तथा ।
झण्डूःकटुकषायास्याज्ज्वरभूतग्रहापहा ॥

अर्थ-झंडु, स्थूलपुष्पा, झंडूक, और झेंडुक ए संस्कृत नाम है । **गुण** । झंडु, चरपरा, कषेला, ज्वरभूत और बालग्रहोंको नष्ट करै ।

गोरक्षदुग्धी.

गोरक्षदुग्धीगोरक्षीताम्रदुग्धीरसायनी ।
बहुपत्रामृताजीवीमृतसंजीवनीमुनिः ॥
गोरक्षदुग्धीमधुरावृष्यासाग्राहिणीहिमा ।
सर्ववश्यकरीचैवरसेसिद्धिगुणप्रदा ॥

अर्थ-गोरक्षदुग्धी, गोरक्षी, ताम्रदुग्धी, रसायनी, बहुपत्रा, मृताजीवा और मृतसंजीवनी, ए सात नाम है। **गुण** । गोरक्षदुग्धी, मधुर, वृष्य, ग्राहिणी, शीतल, सबको वश्यकर्त्ता, रस(पारद)में सिद्धके देने वाली है ।

शोली.

शोलीवनहरिद्रास्याद्वन्यारिष्टाचशोलिका ।
शोलिकाकटुर्गौल्याचरुच्यातिक्ताचदीपनी ॥

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा, वन्या, अरिष्टा और शोलिका ए नाम है । **गुण** । शोलिका, चरपरी, मीठी, रुचिकर्ता, कड़वी और जठराग्नि दीपन करै ।

पेऊ.

पेऊवनार्द्रकाप्रोक्तावनजाऽरण्यजाऽऽर्द्रका ।
पेऊतुकटुकाम्लाचरुचिकृद्बल्यदीपनः ॥

अर्थ-पेऊ, वनार्द्रिका, वनजा, अरण्यजा और आर्द्रका ए संस्कृत नाम है । **गुण** । पेऊ, चरपरा, खट्टा, रुचिकारी, बलदाता, और दीपनकर्ता है ।

दग्धा.

दग्धादग्धरुहाप्रोक्तादग्धिकाचस्थलेरुहा ।
रोमशाकर्कशदलाभस्मरोहासुदग्धिका ॥
दग्धाकटुकषायोष्णाकफवातनिकृंतनी ।
पित्तप्रकोपनीचैवजठरानलदीपनी ॥

अर्थ-दग्धा, दग्धरुहा, दग्धिका, स्थलेरुहा, रोमशा, कर्कशदला, भस्मरोहा और सुदग्धिका ए संस्कृत नाम है । **गुण** । दग्धा-कटुक, कषेला, गरम, कफवातनाशक, पित्तको कुपित कर्त्ता, और जठरानलको दीपन करै है ।

आरामशीतला.

आरामशीतलानन्दाशीतलासासुनन्दिनी ।
रामाचैवमहानन्दागंधाढ्यारामशीतला ॥
आरामशीतलातिक्ताशीतलापित्तहारिणी ।
दाहशोषप्रशमनीविस्फोटव्रणरोपणी ॥

अर्थ-अरामशीतला, नन्दा, शीतला, सुनन्दनी, रामा, महानन्दा, गंधाढ्या और रामशीतला ए संस्कृत नाम है । **गुण** । आरामशीतला कड़वी, शीतल, पित्तहरणकर्ता, दाह, शोष, विस्फोटकको नष्ट करै तथा व्रणको रोपण करने वाली है । यह एक प्रकारका पुष्प होता है ।

पुष्पद्रव.

पुष्पद्रवःपुष्पसारःपुष्पस्वेदश्चपुष्पजः ।
पुष्पनिर्यासकश्चैवपुष्पाम्बुजःषडाह्वयः ॥
पुष्पद्रवःसुरभिशीतकषायगौल्यो ।
दाहभ्रमार्त्तिवमिमोहमुखामयघ्नः ॥
तृष्णार्त्तिपित्तकफदोषहरःसरश्च ।
संतर्पणश्चिरमरोचकहारकश्च ॥

अर्थ–पुष्पद्रव, पुष्पसार, पुष्पस्वेद, पुष्पज, पुष्पनिर्यास और पुष्पांबुज ए छः नाम पुष्पसे निकले हुए सुगंध अर्कके है । गुण । पुष्पद्रव, सुगंधित, शीतल, कषाय, मीठा, दाह, श्रम, पीडा, वमन, मोह, मुखके रोग, तृषा, पित्तकफ इनको नष्ट करे और दस्तावर है, संतर्पण, तथा बहुतदिनकी अरुचिको नष्ट करे है ।

आत्मादिपुष्पोंकी सुगंधी.

जातीमालतिसुर्मनोज्ञमधुराऽऽमोदोमुहूर्त्तद्वयम् ।
वैगुण्येनचमल्लिकामदकरीगंधाधिकायूथिका ॥
पक्षाहंवनमल्लिकामदकरंचाह्नांत्रयंचंपकम् ।
तीव्रामोदमथाष्टवासरमितामोदान्विताकेतकी ॥

अर्थ–चमेलीकी नम्र और मीठी सुंदर गंधी चार घडी पर्यंत रहतीहै । मल्लिकापुष्पकी सुगंधी ८ घडी पर्यंत रहै, जुहीकी सुगंध सबसे अधिक मस्त करनेवाली है और वनकी मल्लिका की सुगंध १ दिन मस्तकरती रहतीहै, चंपेकी सुगंध तीन दिन पर्यंत तथा तीव्र गंध ऐसी केतकी केवरेकी सुगंध मस्त करनेवाली आठ दिनतक बनी रहती है ।

सीताफल.

सीताफलंगंडगात्रंवैदेहीवल्लभंतथा ।
कृष्णबीजंचाग्निमाख्यमातृप्यंबहुबीजकम् ॥
सीताफलंतुमधुरंशीतंहृद्यंबलप्रदम् ।
वातलंकफकृत्स्वादुपुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥

अर्थ–सीताफल, गंडगात्र, वैदेहीवल्लभ, कृष्णबीज, अग्निम, आतृप्य और बहुबीजक ए संस्कृत नाम है । गुण । सीताफल मधुर, शीतल, हृद्य, बलदाई, वातल, कफकारी, स्वादु, पुष्टकारी और पित्तनाशक है ।

रामफल.

रामस्यचफलंरामफलंरामाह्वयंतथा ।
रक्तत्वचंचवासंतंकृष्णबीजंमृदुफलम् ॥
फलंरामकषायंस्यात्स्वाद्वम्लंकफकारकम् ।
वातलंचास्रतृड्दाहपित्तश्रमक्षुधापहम् ॥

अर्थ–रामफल, रामाह्व, रक्तत्वच, वासंत, कृष्णबीज, मृदुफल, ए संस्कृत नाम । गुण । रामफल कषेला, स्वादु, खट्टा, कफकारी, वातल, रुधिरविकार, तृषा, दाह, पित्त, श्रम और क्षुधाको शांति करता है ।

मूंगफरी.

भूशिम्बिकारक्तबीजात्रिबीजास्नेहबीजिका ।
मंडपीभूमिजाभूस्थातथाभूचणकास्मृता ॥
मंडपीमधुरास्निग्धावातलाकफकारिका ।
ग्राहिकाबद्धवर्चाश्चतत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥

अर्थ–भूशिंबिका, रक्तबीजा, त्रिबीजा, स्नेहबीजिका, मंडपी, भूमिजा, भूस्था, तथा भूचणका ए मूंगफरीके संस्कृत नाम है । गुण । मंडपी, (मूंगफरी) मधुर, चिकनी, वातकर्ता, कफकारी, दस्त रोकनेवाली, मलको गाढा करै है । इसके तेलमें भी इसी प्रकारके गुण है ।

काजू.

काजूतकोवृत्तपत्रोगुच्छपुष्पश्चपार्वती ।
स्निग्धपीतफलश्चैवपृथग्बीजोह्यरुष्करः ॥
काजूतकस्तुतुवरोमधुरोष्णोलघुस्मृतः ।
धातुवृद्धिकरोवातकफगुल्मोदरज्वरान् ॥
कृमिव्रणाग्निमांद्यानिकुष्ठंचश्वेतकुष्ठकम् ।
संग्रहण्यर्शआनाहान्नाशकोमुनिभिर्मतः ॥

अर्थ–काजूतक, वृत्तपत्र, गुच्छपुष्प, पार्वती, स्निग्धपीतफल, पृथग्बीज, और अरुष्कर ए काजूके संस्कृत नाम है । गुण । काजूतक कषेला, मधुर, गरम, हलका, धातुवृद्धिकारी, वातकफ, गोलेका रोग, उदर, ज्वर, कृमिरोग, व्रण, मंदाग्नि, कुष्ठ, सफेदकुष्ठ, संग्रहणी, बवासीर, अफरा इनको नष्ट करै ।

अंजीर.

अंजीरंमञ्जुलंज्ञेयंकाकोदुम्बरिकाफलम् ॥
अजीरकंफलमतीवसुशीतलंच ।
सद्योनिवारयतिशोणितपित्तमुग्रम् ॥
पथ्यंविशेषमपिपित्तशिरोविकारे ।
नासाप्रवृत्तरुधिरेचविशेषतस्तु ॥
अंजीरकंगुरुहिमंमधुरंचवात ।
पित्तास्ररोगहरणंकरणंरुचीनाम् ॥

सुस्वादुपाकरसयोर्गुरुशीतलंच ।
श्लेष्मामवातकरमस्त्रविकारहारी ॥

अर्थ-अंजीर, मंजुल, काकोदुंबरीका फल। गुण। अंजीर-शीतल, रुधिर और पित्तके विकारोंको नष्ट करै। पित्तके शिरोविकारोंमें अत्यंत गुणदायक है और नकसीर फूट गई होयतो उसको दूर करै। अंजीर भारी शीतल, मीठी, वातपित्त और खूनके विकार नष्ट करै। रुचिदायक, सुस्वादु, पाक और रस में भारी और शीतल है। कफ और आमवात करै और रुधिर विकारको शांति करै है।

हिन्ताल.

हिन्तालोमधुराम्लश्चकफकृत्पित्तदाहनुत् ।
श्रमतृष्णापहारीचशिशिरोवातदोषनुत् ॥

अर्थ-हिन्ताल-मधुर, खट्टा, कफकारी, पित्तदाहनाशक, श्रम, तृषाको हरण करै। शीतल और वादीके दोषको नष्ट करै है।

शीताल.

शीतालोमधुरोत्यंतमीषच्चैवकषायकः ।
पित्तजित्कफकारीचवातमीषत्प्रकोपयेत् ॥

अर्थ-शीताल-अत्यंत मधुर, कुछ२ कषेला, पित्तको जीते, कफ करै और कुछ कुछ वातको कुपित करै है।

अखरोट.

अखरोटमधुरःकिंचिदम्लःस्निग्धश्चशीतलः।
वीर्यवृद्धिकरश्चोष्णोरुचिदःकफपित्तकृत् ॥
गुरुःप्रियोबलकरःकफकृन्मलवद्धकृत् ।
वातपित्तक्षयंवातंहृद्रोगंरक्तदोषकम् ॥
रक्तवातंचदाहंचनाशयेदितिनिश्चितम् ।

अर्थ-यद्यपि अखरोटके नाम गुण पहले लिख आए है परंतु जो विशेषता है उसको यहां पर फिर लिखते है। अखरोट-मधुर, खट्टी, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवृद्धिकारी, गरम, रुचि प्रगट करै। कफ और उन्नतिके करने वाली है। भारी, प्यारी, बलकर्ता, कफकर, मलके बांधनेवाली, वातपित्तका क्षय, वादिके रोग, हृदयरोग, रुधिरदोष, वातरक्त, दाह, इन सबको नाश करै है।

§

वनफशा.

स्निग्धंशीतंत्रिगुणितंतत्क्वाथोयवपिष्टयुक् ।
प्रलेपाद्रुष्णशोथघ्नःपानतोऽपस्मृतिंहरेत् ॥
प्रदेहःपूर्ववत्तच्छीर्षतोदसंतोदनःस्मृतम् ।
खसूनतहल्कशीनेहमूजुकामगरमीभवम् ॥
जरबमशानेसोजाकसंहरेत्तत्कषायकः ।
दर्पघ्नंदेवकुसुमंबदल्कशनीजतरमतः ॥
बस्तीपीडोष्णवातघ्नोमात्रास्यदिरमद्वयम् ।

अर्थ-वनफशा तीसरे दर्जेमें शरदतर, इसके क्वाथमें जौका चून मिलाय लेप करै तो गरमीकी सूजन दूर हो और पीनेसे मृगीका रोग दूर हो। पूर्वोक्त जौका चून मिला वनफशेके क्वाथका लेप मस्तक पीडाको दूर करै कंठ और छातीकी खसनत (गंदेपने) को दूर करै। गरमीके जूकामको दूर करै। इस कषायके पीनेसे मसाने (वस्ती) का दाह, सूजाक नष्ट होय। यदि वनफशा कुछ बिगाड करै तो इसके दर्पनाशक लौग है। और बदल इसका हरा धनिया है। तथा वस्तीकी पीडा और उष्णवातको नष्ट करै। मात्रा इसकी दो दिरम (तीन मासे) की है।

बाजरा.

वर्जरोबलकृत्हृद्योवातलोकांतिकारकः ।
वन्हिदीप्तिकरश्चोष्णोरुक्षःपित्तप्रकोपनः ॥
स्त्रीकामदोवुर्जरश्चपुंस्त्वपुष्टिहरस्मृतः ।
शैशिर्यौष्ण्येसमोरीश्येद्विगुणंसमुदाहृतः ॥
शक्तिकाविजजीर्णश्चेदजीर्णस्तुसरोभवेत् ।
कुव्वतमुजफ्फिफःप्रोक्तामुदिर्रअपिसंमता ॥
परीपाकेगरिष्टःस्याद्रक्तकोपप्रवर्तकः ।
चिरंहज्मअल्पसारोऽस्यदर्पघ्नंक्षीरमुच्यते ॥

अर्थ-बाजरा-बलकर्ता, हृद्य, वातल, कांतिकारक, अग्निको दीपनकर्त्ता, गरम, रुखा, पित्तको कुपित कर्त्ता, स्त्रियोंके कामदेव प्रकटकर्त्ता, पुरुषार्थ और पुष्टिकारी। दूसरे दरजेमें शरद और गरम किसीके मतसे खुश्क है। पचने पर इसमें कब्ज करनेकी शक्ति है और नहीं पचै तो बाजरा दस्त कराता है। इसमें मुजफ्फिफ और मुदिर दो प्रकारकी शक्ति है। पचनेपर गरिष्ट है। खूनको कुपित करै है। देरमें पचै और अल्पसार

है। यदि काजरा अवगुण करै तो इसका दर्पनाशक रूब है।

महदी.

रंजनीयवनेष्टाचमेदिकानखरंजिनी ।
दाहघ्नीकांतिकृच्छ्लेष्मकुष्ठहारकवर्णदा ॥
संग्राहीशोषकंतस्याबीजानिसमुदाहृतम् ।
ज्वरंभूतग्रहाणांचनाशकंसुविरेचनम् ॥
द्विगुणंरूक्षशीतास्यादार्द्रांशस्तानचाहरेत् ।
कब्जिकाविजलेपेनव्रणपाकंविनाहरेत् ॥
अष्टावशेषःपत्राणांकषायःससितोपलः ।
ईषद्गुलाबयुक्पीतःकोष्ठशूलनिबर्हणः ॥
कंठग्रहकरीप्राज्याकतीरादर्पहास्मृतः ।
रुब्बसूसतथैवस्याद्बनफ्सावदलस्मृतः ॥

अर्थ-रंजनी, यवनेष्टा, मेदिका और नखरंजनी ए मेहदीके संस्कृत कल्पित नाम है। गुण। दाहनाशक कांतिकर्त्ता, कफ कुष्ठको नष्ट करै; लालरंगके देनेवाली, इसकेबीज ग्राही, शोषकारी है। यह ज्वर, भूतग्रहनाशक, दस्त करानेवाली दूसरे दरजेमें खुश्क और शीतल है। यह ताजी और हरी उत्तम होती है। इसमें काबिज शक्ति है। इसका लेप करनेसे फोड़ेको बिना पकाए ही बिठाल देती है। इसके पत्तोंका अष्टावशेष क्वाथ कर उसमें मिश्री और थोडासा गुलाब डालके पीनेसे कोठेके शूलको नष्ट करै। खानेसे कंठको पकड़ती है इसके दर्पका नाशक कतीरा है तथा रुब्बसूस (मुलहटी) है और बदल इसका बनफ्सा है।

मका.

मकायस्तुमहाकायोकटिजःकांडजःस्मृतः ।
शिखालूःसंपुटांतस्थःयावनालसमोगुणैः ॥
महाकायःस्तृप्तिकरोवातलःकफपित्तजित् ।
विष्टंभकारकोरूक्षःकोमलोरुचिपुष्टिकृत् ॥

अर्थ-मकाय, महाकाय, कटिज, कांडज, शिखालु, संपुटांतस्थ, ए मकाके संस्कृत नाम है। गुण। इसके गुण प्रायः ज्वारके समान है विशेषकर तृप्तिकारी, वातल, कफपित्त हरणकर्ता, विष्टंभकारी, रूक्ष, कोमल, रुचिकारी। और पुष्टकरनेवाला है।

नर्तक.

नर्त्तकोनृत्यकुंडश्चभूचराचमलीयसः ।
कठिनोगुच्छकणिशोलांछनश्चबहुदलः ॥
नर्त्तकस्तुवरास्तिक्तोमधुरस्तर्पणोलघु ।
बल्यःशीतःपित्तहरस्त्रिदोषशमनोमतः ॥
रक्तदोषहरश्चैवइतिशास्त्रेषुनिश्चितम् ।

अर्थ-नर्तक, नृत्यकुंड, भूचर, मलीयस, कठिण, गुच्छकणिश, लांछन और बहुदल। गुण। कषेला, कडवा, मधुर, तृप्तिकारी, हलका, बलकरता, शीतल, पित्तहरणकारी, त्रिदोषनाशक, रुधिरदोषनाशक है। नर्तक एक प्रकारका धान होता है।

पातालतुम्बी.

गर्त्तालाबुचभूतुम्बीदेवीवल्मीकसंभवा ।
दिव्यतुंबीनागतुम्बीशक्रचापसमुद्भवा ॥
भूतुम्बीकटुकातिक्ताविषदोषविनाशनी ।
प्रसूतिदोषसंभूतमतिसारंविनाशयेत् ॥
शोथंज्वरंदंतबंधंस्वेदंसप्रलापकम् ।
जयेदात्मप्रभावेणअचिंत्याबस्तुशक्तयः ॥

अर्थ-गर्त्तालाबु, भूतुंम्बी, देवी, वल्मीकसंभवा, दिव्यतुंबी, नागतुंबी और शक्रचापसमुद्भवा ए पातालतुंबीके नाम है। गुण। भूतुंबी चरपरी, कडवी, विषदोषनाशनी, प्रसूतके कारण जो दस्त होते हो उनको बंद करै; सूजन, ज्वर, दांतोंका भिचना, पसीने और प्रलापयुक्त ज्वरको दूर करै। औषधोंकी अचिंत्य शक्ति है।

आरी.

आरिसंदानिकोद्दालश्चेयाखदिरपत्रिका ।
आरीकषायकटुकातिक्तारकार्त्तिपित्तजित् ॥
त्रिदोषघ्नीरसेपाकेचाम्लोष्णानिलकासहा ।

अर्थ-आरि, संदानिका, उद्दालक और खदिरपत्रिका ए संस्कृतनाम है। गुण। आरी कषेली, चरपरी, तिक्त, रुधिरकी बीमारी, पित्त, और त्रिदोषको जीते; रस और पाकमें खट्टी और गरम है। यह बादीकी खासीको दूर करै है।

एकबीर.

एकबीरोमहाबीरःसकृद्वीरःसुबीरकः ।
एकादिवीर्यपर्यायैर्वीरश्चषडबिधाह्वयः ॥

एकवीरास्मृतातिक्ताचात्युष्णावातहामला ।
पक्षाघातंपृष्ठकटीशूलंचैवनिवारयेत् ॥

अर्थ–एकवीर, महावीर, सकृद्वीर, सुषीरक, एकादिवीर्य नामवाचक ये छः नाम है । गुण । कड़वी, अत्युष्ण, वादी, पक्षाघात, कमर, और पीठका शूल, इनको नष्ट करै ।

कीटमारी.

कीटारीःकीटमारीचभृंगीकीटहरातथा ।
वातश्लेष्मज्वरहरासंध्यस्थिरुक्प्रसारिणी ॥

अर्थ–कीटारी, कीटमारा, भृंगी, कीटहरा नाम ए है । गुण–कीटमारी वातकफज्वरको संधि और हड्डीकी पीडाको नष्ट करै ।

सर्पदंष्ट्रा.

सर्पदंष्ट्रापीतपुष्पागुच्छपत्राविषापहा ।
सर्पदंष्ट्रासराचोष्णातिक्ताकफविनाशिनी ॥
वातनाशकरीप्रोक्ताइतिशास्त्रेसमीरितम् ।

अर्थ–सर्पदंष्ट्रा, पीतपुष्पा, गुच्छपत्रा और विषापहा ए संस्कृत नाम है । गुण । सर्पदंष्ट्रा दस्तावर, गरम, कड़वी, कफनाशनी, वातघ्न कही है ।

ऊंटकटेरा.

उष्ट्रकंटोथकंटालुःकरभादनएवस ।
उत्कंटारुचिदाचोष्णातिक्तावृष्याप्युदाहृता ॥
मूत्रकृच्छ्रंपित्तवातंमेहंतृष्णाचहृद्रुजम् ।
विस्फोटकंनाशयतिबीजमस्यास्तुशीतलम् ॥
वृष्यंतृप्तिकरंचैवमधुरंचप्रकीर्त्तितम् ।

अर्थ–उष्ट्रकंट, कंटालु, करभादन, ए संस्कृत नाम । गुण । उत्कंटा (ऊंटकटेरा) रुचिदाता, गरम, कड़वा, वृष्य । प्रयोग । मूत्रकृच्छ्र, पितवात, प्रमेह, तृषा, हृदयका रोग, विस्फोटकको नष्ट करै । इसके बीज शीतल, वृष्य, तृप्तिकारी और मधुर है ।

अंडखरबूजा.

एरंडचिर्भिटोवृक्षःसचैवमधुकर्कटी ।
वातकुंभफलःसैवचिर्भिटानलिकादलः ॥
वातकुंभफलंरुच्यंमधुरंपक्वमादिशेत् ।
कफवातकरंग्राहीपित्तहारीपरंगुरु ॥
वृष्यमुन्मादहरणंवक्त्ररोगविनाशकम् ।
हृद्यंस्निग्धंविदाहघ्नंग्रहणीनाशकंतुलम् ।

अर्थ–एरंड चिर्भिटवृक्ष, मधुकर्कटी, वातकुंभफल, चिर्भिटा, नलिकादल, ए अंडखरबूजेके नाम है । गुण । वातकुंभफल पका, रुचकारी, मिष्ट, कफ वात करै । दस्तबंद्धक, पित्तहरणकर्त्ता, अत्यंत भारी है । पुष्टकारी, उन्माद, वदनका रोग, दाह और संग्रहणीको दूर करै । तथा हृदयके रोगोंकी हितकारी और स्निग्ध है ।

अनन्नास.

अनन्नासंपार्वतिकंस्मृतंकौतुकजंफलम् ।
अपक्वंरुचिकृद्धृद्यंकफपित्तकरंगुरुः ॥
अन्नेरुचिप्रदंशीतंदुर्जरंसंप्रकीर्त्तितम् ।
आमंक्लमंतुहरतेरसातपविकारहृत् ॥
तत्पक्वंस्वादुपित्तघ्नंभ्रमंमूर्च्छांतुदाहहृत् ।

अर्थ–अनन्नास, पार्वतिक, कौतुकजफल, ए संस्कृत नाम है । गुण । कच्चा अनन्नास रुचि करै । हृद्य, कफपित्तकर्त्ता, अन्नमें रुचिदाता, शीतल, बडे कष्टसे पचे, आम, क्लम (ग्लानि, , हरण करै । रस और धूपके विकार नष्ट करै । पका । अनन्नास स्वादु, पित्तनाशक, भ्रम, मूर्च्छा, और दाहको हरण करै ।

अमरूद.

दृढवीजंपेरूकंचमांसलंचापृथक्त्वचम् ।
अमरूदंजांवफलंवर्तुलंमृदुपीतकम् ॥
तुवरंमधुरंचाम्लंपक्वंस्वादुसमीरितम् ।
पेरूकंशुक्रलंवातपित्तघ्नंशीतलंमतम् ॥
श्लेष्मागारंभ्रमंदाहंमूर्च्छांहंतिगुरुस्तथा ।

अर्थ–दृढबीज, पेरुक, मांसल, अपृथक्त्वच, अमरूद, जांवफल, वर्तुल, मृदुपीतक, ए अमरूदके नामांतर है । गुण । कषेला, मधुर, खट्टा है और पका अमरूद स्वादिष्ट होता है । यह वीर्यदायक, वातपित्तघ्न, शीतल, कफका स्थान है तथा भ्रम, दाह और मूर्च्छाको नष्ट करै तथा भारी है ।

सोमल (संखिया.)

गौरीपाषाणकःप्रोक्तःसतमल्लस्तुमल्लकः ।
आखुपाषाणकःसैवलोहद्रावकरकारकः ॥

मात्राधिक्यमाक्षातंदाहवांतिविरेककृत् ।
मात्राधिकंसेवनेनमृत्युंसंतनुतेध्रुवम् ॥
स्वेदनंभेदनंचैवकामवीर्यविवर्द्धनम् ।
श्रेष्ठंसर्वधातूनांसारणंपारदेरसे ॥
गगनेग्राहकेदिव्येरसयुग्मेसमेलनम् ।
सुभगंभावुकंमालेबालेकालेचशीतहा ॥
गौरीहशवंखादेचंदुलमानंघृताशादे ।

अर्थ–गौरीपाषाण, सतमल्ल, मल्लक, आखुपाषाणक, लोहसंकरकारक, यह विष आकरज (खान) है । गुण । यह दाह और वमन और विरेचन कर्ता है । अधिक मात्रा सेवनसे मृत्यु करता है । स्वेदन, भेदन, अत्यंत कामवर्द्धक, धातु मात्रका मुख है । पारद रसमें सारणकर्मकर्त्ता है, गगन (अभ्रकको पकडने वाला) दोरसोंको मिलानेवाला, सुभग भावुक और शीतकालमें शरदी नाशक है । सोमलविषको घृतप्लुत भोजन करने वालेको १ चावलके अनुमान खाना चाहिये ।

सोमलके अन्यगुण.

गौरीपाषाणकःस्निग्धःपारदस्यनियामकः ।
लोहभेदकरश्चैवकांतिकृद्वीर्यवर्द्धनः ॥
वातादिसर्वव्याधीनांनाशकोऽग्निबलप्रदः ।
अशोधितस्तुसर्वेषांव्याधिनामाश्रयामतः ॥
रसादिधातुसोमघ्नोकुष्ठकृच्छ्वासकासकृत् ।
दाहंपित्तंतृषांचित्तभ्रमंसकुरुतेहठात् ॥
तस्मान्नचाज्ञुधेहस्तेदेयंनैवप्रकाशयेत् ।
रक्षणीयंविशेषेणस्त्रीबालादितरास्तथा ॥

अर्थ–गौरीपाषाण, चिकना, पारदका रोधकर्ता, लोहभेदनकर्ता, कांतिकारी, वीर्यवर्द्धन, वातादि सर्व व्याधिका नाशक, जठराग्निबलवर्द्धक । यदि इसको अशुद्ध कार्यमें लावे तो सर्व रोग प्रगट करै है । रसादिधातु और देहस्थ सोमको नष्ट करै, कुष्ठकर्ता, श्वास, कास करै । दाह, पित्त, तृषा, चित्तभ्रमको करै । इसवास्ते इस सोमल विषको मूर्खप्राणीके हाथमें कभी न देय और उसको कहेभी नहीं । इसे स्त्री, बालकादिसे रक्षा करै । विशेष देखना होय तो रसराजसुंदर ग्रंथमें देखो ।

आलुबूखारा.

आरुकंवीरसेनंचवीरंवीरारुकंमतम् ।
चतुर्विधास्तुकथितःपत्रपुष्पादिनाखलु ॥
आरुकोग्राहितुवरोहृद्यःशीतोगुरुःशरः ।
पित्तहृत्पाचकश्चाम्लोमधुरश्चमुखप्रियः ॥
मुखस्वच्छकरप्रोक्तोमेहगुल्मार्शनुत्परः ।
रक्तवातरुजांजेतासपक्वोमधुरोगुरुः ॥
कफपित्तकरःसैवरुच्योधातुविवर्द्धनः ।
ज्वररोगेतृषायांतुमुखस्थोहरतेतृषाम् ॥
म्लेच्छाम्लिकापारसीकफलंतद्रेचनंसरम् ।

अर्थ–आरुक, वीरसेन, वीर, वीरारुक, यह पत्र पुष्पादिकके भेदसे चार प्रकारका कहा है । गुण । आरुक (आलुबुखारा) ग्राही, कषेला, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, दस्तावर, पित्तहरणकर्ता, पाचक, खट्टा, मधुर, मुखको प्रिय लगे है । मुखको स्वच्छ करै । प्रमेह, गोळा, बवासीरको नष्ट करै । वातरक्त पीडाको नष्ट करै, यह पकाहुआ मोटा और भारी होय है, तथा कफपित्तकर्ता, रुच्य, धातुवर्द्धक, यदि ज्वरकी अत्यत तृषा लग रही होय और आलूबुखारेको मुखमें रखेतो उसी वक्त प्यास दूर होय । कोई कोई देशवाशी इसे म्लेच्छाम्लिका और पारसीकफल कहते है । यह अत्यंत दस्तलाने वाली है ।

अत्यम्लपर्णी.

अत्यम्लपर्णितीक्ष्णाचकंडुरावल्लिसूरणा ।
अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाम्लाप्लीहशूलविनाशिनी ।
दीपनीवातहृद्रुच्यागुल्मश्लेष्मक्षयापहा ।

अर्थ–अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कंडुरा, वल्लिसूरणा; ए संस्कृतनाम । गुण । अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, खट्टी प्लीह और शूलको नष्ट करै । दीपनी, वातहरणकर्ता रुचिदायक, गुल्म, कफ और क्षयरोगको नष्ट करै ।

सातर.

सातरःपारसीकेषुप्रसिद्धःपीतवर्णकः ।
सूक्ष्मपत्रःकृष्णपुष्पःपत्रमौषधियोगिकम् ॥
तीक्ष्णःसुगंधःस्वादुस्याद्रूक्षोष्णगुणकारकः ।
वातश्लेष्मरुजांहंतापाचकःक्षुत्करोमतः ॥

वमनोदरजंतूनांसूचीयकृतिशूलिनाम् ।
गुल्मोन्मादप्लीहिनांचपांडुरोमेहितोमतः ॥
अर्द्धांगग्रंथिवातेषुकंपकर्णशिरोरुजि ।
तैलयोगेनसंयुज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः ॥
तक्रेणपांडौमधुनाविषेषु ।
क्वाथेनकासेगलदंतरोगे ॥
गंडूषयोगेनाशिरोरुजायाम् ।
नस्येननेत्रेंजनतःप्रयुंज्यात् ॥
बीजंतस्यविपांडुनुत्समुदितंपुष्पंविरेकेहितम् ।
लेपंशोथनिवारकंबलकरंमेधाभिवृद्धिप्रदम् ।
संतापादिनिवारकंज्वरहरंमात्राद्विकार्षीशुभा
देयावन्हिबलंसमीक्ष्यविविधोपायेनतत्सद्रुजि

अर्थ-सातर यह फारसमें प्रसिद्ध पीलेरंगका-छोटे पत्ते कालेफूलका वृक्ष है ; इसके पत्ते औषधके काममें आते है। इसकी गंध बडी तीक्ष्ण है । स्वादिष्ट, रूक्ष, गरमी करनेवाला, वातकफके रोगनाशक, पाचक, क्षुधाकारी, वमन, उदर, कृमि, हैजा, यकृत (कलेजेके रोग) शूलरोग, गोला, उन्माद, तिल्ली और पांडुरोगमें हितकारी है। अर्द्धांगवात, ग्रंथीवात, कंप, कानके और मस्तकरोगमें तेलके साथ वर्त्तना चाहिये । छाछके साथ पांडुरोगमें, सहतके साथ विष रोगमें, खांसी गलेके रोग, दांतके रोगमें क्वाथ करके कुल्ले कराना । एवं मस्तक रोगमें नस्य नेत्रमें अंजनके योगसे वर्त्तना चाहिये । सातरके बीज-पांडुरोग नष्ट करै ; सातरका फूल दस्त करावे, इसका लेप सूजनको निवारण करै, बलकरै, बुद्धिको बढावे, संतापादि रोग और ज्वरको नष्ट करै । इसकी मात्रा २ कर्ष अर्थात् दो तोलेकी है । तथा बुद्धिवान वैद्य रोगीका बलाबल विचारके पृथक् पृथक् रोगोंमें अपनी युक्तीसे कम या बढमात्रासे देय ।

कुष्ठवैरीशैलरोहीमहागदमहीरुहः ।
चैवस्वतद्रुमःप्रोक्तःभिषग्भिःसुविनिश्चितम् ॥
पामाविचर्चिकाखर्जूसिध्माचोदर्दनाशनः ।
विपादिकाचामवातंवातरक्तंसुदारुणम् ॥
कुष्ठंहन्याद्विशेषेणरसायनवरश्चसः ॥

अर्थ-कुष्टवैरी, शैलरोही, महागद, महीरुह, वैवस्वतद्रुम ए संस्कृत नाम है । भाषामें चोखमोगरा कहते है । गुण । बल बढावे, पामा, विचर्चिका, खाज, सिध्मा, उदर्द, विपादिका, आमवात, वातरक्त और विशेषकर कुष्ठोको नष्ट करै तथा रसायन हैं ।

अगद.

अगदोदद्रुमर्दिस्याकीटारिश्चांगसुंदरः ।
दद्रुमर्दीहरेद्दद्रूपामाकंडुविचर्चिकाः ॥

अर्थ-अगद, दद्रुमर्दी, कीटारी और अंगसुंदर । गुण । दादमर्दन दाद, पामा, खुजली, और विचर्चिकाको दूर करै ।

तालजतोय (ताडी).

तालजंतरुणंतोयमतीवमदकृन्मतम् ।
अम्लीभूतंतदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ-ताडी (तत्कालका ताडीरस) अत्यंत मद (नसा) कर्त्ता है । और जब धरे रहनेसे खट्टा हो जाता है तब पित्त करनेवाला और वातपित्त दोषोंको हरण करै है ।

गिलोयके पत्तोंका साग.

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु ।
कषायंकटुतिक्तंचस्वादुपाकंरसायनम् ॥
बल्यमुष्णंचसंग्राहिहन्याद्दोषत्रयंतृषाम् ।
दाहप्रमेहवातासृक्कामलाकुष्ठपांडुताम् ॥

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका साग जठराग्निवर्द्धक, सर्वज्वरहरता, हलका, कषेला, कडवा, चरपरा, और पाकमें स्वादिष्ट तथा रसायन है । बलकारी, गरम, संग्राही त्रिदोषनाशक, तृषा, दाह, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कुष्ट और पांडुरोगको नष्ट करै ।

चनेका साग.

रुच्यंचणकशाकंस्याद्दुर्जरंकफवातकृत् ।
अम्लंविष्टंभजनकंपित्तनुद्दंतशोथहृत् ॥

अर्थ-चनेका शाक रुचकारी, दुर्जर (बडी देरमें पचनेवाला) कफवातकर्त्ता, खट्टा, विष्टंभकारी, पित्त और दांतोंकी सूजन हरण करै है ।

(इन्द्रगोप) बीरबहूटी.

इन्द्रगोपेतिसंज्ञायालोकेबीरबहुटिच ।
सैवइन्द्रवधूप्रोक्तायोसौकृमिविशेषकः ॥

[illegible]ध्रुतिककर्मप्रशस्यते ।
[illegible]नाम्क्लीबेषुपयोगिकः ॥
[illegible]सेवितोयदिमानवैः ।
कामेन्द्रियःस्थौल्यकरस्तत्कठोरत्वकारकः ॥
शिश्नशैथिल्यहर्त्ताचतथार्धांगकफामये ।
वातादि[illegible]रोगेतांबूलेनसहाशनात् ॥
तद्रोगहारीनिश्चयंकथितोयंभिषग्वरैः ।

अर्थ–जिसके संस्कृतमें इन्द्रगोप या इन्द्रवधू नाम है इसीको हिन्दीभाषामें बीरबहुटी कहते है । यह एक जातिकी कृमि है । जब प्रथमही प्रथम वर्षा होती है तब यह लाल २ रंगकी कृमि खेतोंमे तथा घरकी छतोंमें बहुत प्रगट हो जाती है । इसमें रूक्ष और उष्ण गुण है । इसीसे नपुंसक प्राणियोंकी औषध के अत्यंत उपयोगी है । यदि प्राणी इसके योगसे तैल बनाकर कुछ दिनतक इन्द्रीपर मालिश करै तो इन्द्री स्थूल और मोटी होय तथा लिंगकी शिथिलतादि दोष दूर हो, तथा इसका तेल अर्द्धांग वातमें और कफकी व्याधिमें गुण करै वादीके रोगोंमें इस तैलको पानमें लगायके भक्षण करै तो निश्चय सर्ववादीके रोग दूर हो ऐसा वैद्योंने कहा है ।

नेत्रदा (ममीरा.)

नेत्रदानेत्रजननीचक्षुष्यानेत्ररोगहा ।
ममीरादिविख्यातोभवेन्मूलविशेषकम् ॥
चीनदेशोद्भवत्वेनममीराचीननिश्रुतम् ।
जलप्रायप्रदेशेषुतुतदुत्पत्तिप्रजायते ॥
लघुरूक्षस्वरूपोऽसौसूक्ष्मशाखाच्छदाश्रयः ।
तन्मूलंग्रंथिलंभूरिहरिद्रासदृशंतथा ॥
किंतुसूक्ष्मंपीतवर्णंभवतीतिविनिश्चितम् ।
तस्यचैतेगुणाप्रोक्ताशास्त्रेयवनवैद्यके ॥
केचिद्वनहरिद्रायाभिदमेनंप्रचक्षते ।
तस्यबीजानितुतिलैःसमानिप्रभवंतिही ॥
तन्मूलस्यप्रचारस्तुनेत्ररोगेबहुश्रुतः ।
जन्मांधतापिशीघ्रंपविनाशयातियोगराट् ॥
परीक्षाकथ्यतेतस्यनीलवर्णेतुचैलके ।
घृष्टेचपक्वतांचपेतप्राह्यवैद्यसत्तमैः ॥

अर्थ–नेत्रदा, नेत्रजननी, चक्षुष्या, और ए संस्कृत नाम है । इसीको हिन्दीमें ममीरा कहते है । एक जडी है । चीनदेशमें इसकी उत्पत्ति है । चीनीममीरा कहलाता है । यह जलप्राय पृथ्वीमें प्रगट होता है और छोटा रूक्ष तथा छोटी छोटी शाखा और डालीवाला क्षुप होता है । इसकी जड अत्यंत गांठदार होती है और वह हलदीके सदृश होती है परंतु हलदीकी गांठसे कुछ छोटी और अधिक पीली होती है । उसके गुण हिकमतके ग्रंथों (तिब्बों) में बहुत कहे है । कोई २ वैद्य इसको वनहलदीकाही भेद मानते है । इसके बीज तिलके समान होते है । इस ममीराका प्रचार नेत्ररोगपर बहुत है इस ममीरेका प्रयोग जन्मान्धको दूर करता है । विशेष क्या कहे । इसकी परीक्षा इस प्रकार करते है कि ममीरेकी गांठको नील कपडेपर रगडनेसे सपेद रंगका हो जाता है वही लेना चाहिये ।

पीतिका.

पीतिकारुणनागश्चसास्याद्व्रणनिसूदनी ।

अर्थ–पीतिका और अरुणनाग ए संस्कृतनाम, भाषामें मुद्राशंख कहते है । गुण । कुछ २ पीला अथवा लालवर्ण, यह घावको दूर करै है ।

शितनाग.

शितनागःश्वेतनागःआयुर्वेदेप्रकीर्तितः ।
सफेदाइतियोलोकेप्रसिद्धःश्वेतवर्णकः ॥
चित्रादिरंजनेचास्यव्यवहारःप्रदृश्यते ।
यूनानीवैद्यकेनामअस्फीदाजइतिश्रुतम् ॥
पारशीकस्तुभाषायांसफेदानामकथ्यते ।
उपधातुःकृत्रिमोऽयंसिन्दूरमिवसीसजः ॥
शीतोरूक्षोव्रणादिनामौषध्यादौप्रयुज्यते ।
अग्निदग्धस्यचांगस्यएतल्लेपोहितोमतः ॥
उष्णेनजातमूर्द्धन्यपीडायांयदिमानवः ।
लेपयेच्छिरकायुक्तंपीडातस्यप्रशाम्यति ॥
असाध्यपित्तजेशोथेकुमारीमातृदुग्धतः ।
लेपेचास्याकृतेपुंसांशीघ्रंशोथोविनश्यति ।
उष्णतोनेत्रजेरोगेतवारिदुग्धयोगतः ।
संघृष्यचांजितेनेत्रेनेत्रपीडांव्यपोहति ॥

वमनोदर्दकंनश्येत्तैलेनसहमर्दनात् ।
गुल्मोवंधकेरोगेलेपनंतात्रिवर्तकम् ॥
अस्यक्षेपणंकुर्याद्यदिरक्तस्रवोपरि ।
तदेवस्तंभनंतस्यजायतेनात्रसंशयः ॥
नभक्षणस्ययोग्योयंयतोऽस्यविषतुल्यता ।
चतुर्माषकमानेनभक्षणान्मरणंध्रुवम् ॥

अर्थ–शितनाग और श्वेतनाग ए दो नाम संस्कृत हे. हिंदीभाषामें सफेदाकाशगरी नामसे प्रसिद्ध हैं। यह सफेदरंगका होता है विशेषकर चित्राम आदि बनानेके काममें आता है । यूनानीवाले अस्फीदाज कहते है और फारसीभाषामें सफेदा कहते है । यह शीशेकी सिंदूरके समान कृत्रिम उप धातु है । गुण । शीतल है, रूक्ष है, यह घावआदिकी औषध (मह्लम आदि) में काम आता है । आगसे जले हुए प्राणीके लेप करनेसे तत्काल दाह (जलन) नष्ट होय । जिसका गरमीसे मस्तक दूखता हो यदि सफेदाको सिरकेमें घोलकर लेप करे तो तत्काल पीडा दूर होय । असाध्य पित्तजन्य सूजनके रोगमें कन्याकी माताके दूधमें सफेदाको रगडकर लेप करनेसे तत्काल सूजन दूर होय । गरमीसे नेत्र दूखत होय तो कन्याकी माताके दूधमें घिसके सफेदाको आँजे तो आँख अच्छी हो जाय । खर्जू पामारोगमें सफेदेको कडवे तेलमें मिलायके मालिश करे तो हित करे । वगलकी दुर्गंधमें लेप करनेसे वगलगंध दूर होय । किसी प्रकार मनुष्यके खून वहता हो यदि उसके ऊपर सफेदा बुरक दीना जाय तो खूनका वहना बंद होय । इसको कदापि भक्षण न करे क्योंकि यह विषके समान है । चार मासे सफेदा खानेसे आदमी निश्चय मर जाय है ।

सोसन.

सोसनेतिचविख्यातोयस्तुपुष्पविशेषकः ।
नीललोहितवर्णोऽसौपारसीकेषुजायते ॥
बहुधातस्यपंचांगमुक्तमुष्णगुणंभुवि ।
कफवातजरोगेषुप्रचारोबहुधोदितः ॥
अस्यमूलस्यइर्णेतिसंज्ञायूनानसंभवा ।
गुणाढ्यंमूलकंतत्तुमानंचांगुलिकंमतम् ॥
ग्रंथिलंश्यामपीतंचवर्णेसग्रवदंतिहि ।
रूक्षस्चोष्णगुणवान्त्रिदोषघ्नोऽकस्मकः ।
कफवातजपित्तेषुमूत्रुरेचककारकः ॥
श्वासकासकफश्वंसीयकृत्प्लीहक्षयापहः ।
औदर्यपांडुरोगाणांनिहंतायोनिजव्यथे ॥
स्त्रीणांरोगेषुसततंप्रशस्तंप्रोक्तवान्भिषक् ।
चर्वणेदंतपीडायांहारकंदृढताकरम् ॥
जीर्णसाध्यव्रणेचास्यचूर्णप्रक्षेपमात्रतः ।
व्रणावरोहशुष्कत्वंशीघ्रमेवप्रजायते ॥

अर्थ–सौसन नामसे विख्यात फूल नील और लालरंगका फारस देशमें उत्पन्न होता है इसके पंचांगको गरम मानते हे । इसे कफवातजन्य रोगोंमें बहुधा देते है । इस सौसनकी जडको यूनानी हकीम ईर्ण कहते हे । यह अत्यंत गुणवाली जड १ अंगुलीके बराबर होती है । यह गांठदार काली पीली रंगवाली होती है । रूक्ष और उष्ण गुणवाली है, त्रिदोषनाशक, कफवात और पित्तके रोगमें नरम जुल्लाव कराने वाली ; श्वास, खाँसी, कफ, कलेजेके और तिल्लीके रोगको नष्ट करे । उदररोग, पांडुरोगको दूर करे । स्त्रियोंके योनिरोगमें देना कहा है । यदि सौसनकी जडको चवावे तो दांतोंकी पीडा दूर हो और दांत दृढ होय । जो घाव पुराना और साध्य है उसमें इसके चूर्णको बुरकनेसे तत्काल घावको भरलावे और सूखाय देवे ।

शकाकुलमिश्री.

शकाकुलेतियूनानीवैद्यकेयत्प्रसिद्धिभाक् ।
भवेन्मूलविशेषोयमंगुलीमानकंस्फुटं ॥
पुष्टंदीर्घंतथाश्वेतंचिक्कणंमधुरंमनाक् ।
जायतेघनवृक्षाणांतलेचसजलस्थितौ ॥
तस्यतृणंग्रंथिलंचप्रतिग्रंथिसपत्रकम् ।
नीललोहितवर्णाभंपुष्पंचणकसन्निभम् ॥
श्यामरूपंफलंचास्यभवतीतिविनिश्चितम् ।
मिश्रदेशोद्भवत्वेनमिश्रीनामेतिकथ्यते ॥
सकाकुलमिश्रीनामप्रसिद्धोजगतीतले ।
स्निग्धस्तथोष्णोबलवीर्यपुष्टिं ।
करोतिशुक्रस्यबहुत्वकारी ॥

वाजीक्रियासिद्धकरौषधीषुच ।
प्रायःप्रवृत्तिर्बहुधास्यजायते ॥
वाजीक्रियाकटिशुपीडननाशकारी ।
किंचित्क्षुधामांद्यकरोनकिंचित् ॥
[एकोहिदोषोगुणसन्निपाते ।
निमज्जतीन्दोःकिरणेष्विवाङ्कः॥]

अर्थ–जिसको यूनानवाले सकाकुलमिश्री कहते है वह एक उंगलीके बराबर जड़ होती है। मोटी लंबी और सफेद काले रंगकी चिकनी और कुछ २ मीठी होती है। यह सजीवन पृथ्वीमें जहां बहुतसे वृक्ष हो उनके नीचे उत्पन्न होय है। इसका तृण गांठदार और प्रत्येक गांठमें एक एक पत्ता होता है। इसका फूल नीला और लालरंगका चनेके बराबरका होता है। फल इसका कालेरंगका होता है। मिसरदेशमें उत्पन्न होनेके कारण इसको शकाकुलमिश्री बोलते है। स्निग्ध गरम बलवीर्य और पुष्टिको करै तथा शुक्रको बढाता हैं औषधोंमें वाजीकरणकर्त्ता होनेसे विशेष वर्त्तावमें आती हैं कमरकी पीडाको नाश करै। यह क्षुधाको मंद करै है। यही इसमें एक दूषण है (जैसे किसीने कहा है कि गुण समूहमें एक दोष अवश्य होता है कि सुंदरचंद्रकी किरणोंमें कलंक जैसे विद्यामान हैं)।

शीतलचीनी.

शीतलचीनीतियालोकेविख्यातासर्वतोभवेत् ।
यूनानीवैद्यकेसातुकबाबेनामतःस्मृता ॥
मरिचश्यामरूपेयंकिंचित्सौगंध्यसंयुता ।
उष्णंरूक्षगुणंचास्याकासश्वासरुजापहा ॥
प्लीहोदराश्मरीमूत्रावरोधनिधनक्षमा ।
शिरोर्त्तिजीर्णातिसारहृत्कंपेषुसदाहिता॥
मुखेनिक्षेपणाच्छैत्यकारिणीचसुगंधिकृत् ।
दंतमूलोऽस्रसंभूतस्फोटादिमुखरोगहृत् ॥
शोथोपरिप्रलेपेनसद्यस्तच्छांतिदायिनी ।
दीपनीपाचनीहृद्याचांतिहृद्रुचिकारिणी ॥
मुखेनचर्वितांकृत्वायदिशिश्नेप्रलेपयेत् ।
वाजीकरणहेतुःस्यादितिप्राहुर्भिषग्वराः ॥

अर्थ–शीतलचीनी नामसे जो औषध प्रसिद्ध है उसे यूनानीवैद्य कबाबा कहते है। यह मिरचके सदृश कालेरंगका सुगंधयुक्त पदार्थ है। गरम रूक्ष है, खाँसी, श्वास, प्लीह, उदर, पथरी, मूत्ररोध, मस्तकपीडा, अजीर्ण, अतिसार, हृदयका कंप, इन सबको नष्ट करै। इसे मुखमें डालतेही शीतलता मालूम होती है और मुखमें सुगंध आने लगे है। दांतोंकी जडमें खुनकी जो बिमारी होती है, तथा छाले आदिको हरण करै। यदि इसको पीसकर सूजनपर लेप करा जाय तौ तत्काल सूजनको दूर करै। दीपनी और पाचनी है। हृदयको हितकरै वमनको रोकै, रुचि प्रगट करै है। यदि इसको मुखमें चबायकर उसकी लारसे लिंगपर लेप करै तो वाजीकरण करै अर्थात् कामसंभोगमे आनंद देय।

शीरखिस्त. *

शीरखिस्तेतिविख्यातोयूनानीवैद्यकेतुया ।
विरेचनौषधीयोगेप्रचारोबहुदृश्यते ॥
हिरातदेशेकेषांचित्वृक्षेषुमिहकाजलम् ।
पतितंकठिनीभूतंशर्करावत्प्रजायते ॥
शुक्लवर्णंचमधुरंज्वररेचनकेहितम् ।
पित्तरेचनकेचापिविशेषेणहितावहम् ॥

अर्थ–यूनानीवैद्य जिसे शीरखिश्त कहते हे यह जुलावके अत्यंत उपयोगी होनेसे इसका प्रचार अधिक है। यह हिरातदेशमें कितनेक वृक्ष [कोई कोई कहते है कि जवासोंके वृक्षों] परजो ओस पडती है वही सूखकर मिश्रीके सदृश सफेद रंगकी मीठी डली बन जाती है। यह ज्वरमें दस्त करानेको या पित्तके दस्त करानेमें अत्यंत उपकारी है।

सालबमिश्री.

सालबनाम्नालोकेयद्वस्तुसर्वतःख्यातः ।
मिश्राभिधानदेशेबहुधासंजायतेयस्मात् ॥
तस्मात्सालबमिश्रींवदंतितांभूरिशःकुशलाः।
नानागुणैर्विशिष्टंतद्धिपरीक्ष्यंविशारदैर्मनुजैः॥

* शीरखिस्त और शीतलचीनीका पाठ प्रथम लिख चुके है परंतु इन दूसरे पाठोमें विलक्षणता होनेसे फिर लिखे एग है।

यूनानीवैद्यकेखांखुपशितुस्सालवेतिच ।
वदंतितस्यनामार्थोयथामतिनिरूप्यते ॥
खुपशिइत्यंडकोशस्यनामप्राहुर्भिषग्वराः ।
सालवंतुलोष्टरीतिविख्यातपशुनामकम् ॥
तस्याण्डकोशसदृशस्वरूपत्वेनतांविदुः ।
खुपशितुस्यालवेत्येवंसचकंदविशेषकः ॥
कसेरुसदृशःकिंतुचिपिटःश्वेतपीतकः ।
अतीवकठिनश्चास्यजन्मशैलेजलक्षितौ ॥
जायतेतस्यवृक्षस्यमानंलघुवितस्तिकम् ।
पलांडुसदृशाःपत्राजायतेतस्यसर्वतः ॥
किंचिद्विस्तृतरूपाचपीतपुष्पःद्वयान्विताः ।
प्रतिशाकंतच्चकंदंऔषधीषुप्रयुज्यते ॥
मनुष्यशुक्रगंधाभस्तत्कंदेगंधदृष्यते ।

स्निग्धःसचोष्णोबहुशुक्रवृद्धेः ।
कर्त्ताविशिष्टोबलवीर्यवृद्धौ ॥
तथाशिरःपुष्टिकरोनिरूप्यते ।
वाजीक्रियासाधकमौषधीषु ॥
बहुप्रचारःप्रथितोविशेषः ।
कफस्यवातस्यरुजानिहंता ॥

अर्थ–सालवनामसे जो वस्तु प्रसिद्ध है वह मिसर देशमें प्राय अधिक होय है, इसीवास्ते उसको सालबमिश्री कहते है। वह अनेक गुणयुक्त है उसकी परीक्षा करनी चाहिये। युनानी वैद्यकमें उस्से खुप्शितुस्सालव कहते है। इस नामकी व्युत्पत्ति कहते है। खुप्शि नाम अंडकोशोंका है और सालव लोमटी (स्यार) को कहते है। उस लोमटीकेसे अंडकोशोंके सदृश होनेसे ही मनुष्य इसे खुप्शितुस्सालव कहते है। यह एक प्रकारका कंद है कसेरूके समान होता हैं किंतु चिपटा सपेद और पीले रंगका होय है, और यह अत्यंत कठोर होताहै। जल प्राय पृथ्वीमें उत्पन्न होय हैं इसके वृक्षका विस्तार एक बालिस्तका है। पत्ते प्याजकेसे होतेहै और यह फैला हुआ ऊपर पीले दो फूलवाला होय हैं। इस कंदको औषधोंके साथ मिलायके देते है। इसमें मनुष्यके वीर्य (मनी) कीसी दुर्गंध आती है। गुण। स्निग्ध, गरम, अत्यंत शुक्र वृद्धि करे, बल वीर्य बढावे, तथा मस्तकको पुष्ट करे और औषधोंमें वाजीकरण करनेवाला है; तथा कफवातका नष्ट करने वाला है।

हंसराज.

हंसराजस्तुयूनानीभाषायांपरसानुसा ।
स्यात्तृणविशेषस्तुजलार्द्रभुविजायते ॥
बहुश्यामारुणंशाखमुष्णंज्वरहरंपरम् ।
प्रतिश्यायत्रिदोषघ्नंकासप्लीहकफप्रणुत् ॥

अर्थ–हंसराजको युनानीवाले परसानुसा कहते है यह एक तृण है जलसे भीगी पृथ्वीमें प्रकट होता है। बहुतकाली और लाल शाखावाला होय है। गुण। ज्वर, सरेकमा, त्रिदोष, खांसी, प्लीह और कफको नष्ट करे है।

शोरा.

सोराइतिप्रसिद्धोयोलोकेविदितएवसः ।
यूनानीवैद्यकेचास्यअबूकरइतिस्मृतः ॥
सोयंक्षारविशेषस्यात्पृथिव्यास्तुविकारजः ।
भूम्यालवणवत्क्षारभूमौसंजायतेकिल ॥
जलाग्नियोगतःपाकेक्रियमाणस्यसर्वतः ।
अतिश्वेतंभवेद्रूपंक्षारवत्तद्गुणाःस्मृताः ॥
रूक्षोष्णश्चकफघ्नश्चद्रावकप्लीहरोगहा ।
मूत्रावरोधेतिहितःकटिपीडानिवारकः ॥
लोकेचैतस्यसंगेनजलंशीतीप्रकुर्वते ।
जनास्तत्सकलंस्वादुरोचकंपाचकंहिमम् ।
पानेसमीचीनमितीप्रसिद्धंलोकरीतितः ॥

अर्थ–जिसको मनुष्य सोरा कहते है यूनानीवैद्य इसे अबूकर कहते है। यह पृथ्वीका क्षार है। पृथ्वीके निमकके समान यह भी प्रकट होता हैं। इसकी मिट्टीको जल और अग्निके योगसे पाक करनेपर इसके सकल पारेके माफिक चकती सुफेदरंगकी बन जाती है; इसके गुण अन्यक्षारोंके समान जानने। जैसे रूक्ष, गरम, कफनाशक, द्रावक, तिल्लीरोगका नाशक, मूत्रकी रुकावटको दूर करे। कमरके दरदको नष्ट करे। प्राणि इसके संयोगसे जलको शीतल करते है। इसके टुकडे स्वादु, रोचक और पाचक मानते है। इसको पीनेमें भी उत्तम समझते है।

सुंद्रस.

यस्तुसुन्द्ररसंनामवस्तुगुंद्रविशेषकम् ।
कापिदेशेतदेवाहुर्बुधाश्चंद्ररसेतिच ॥
कर्पूरमणिनातुल्यरूपंतच्चप्रजायते ।
तृणकर्षणकर्ताचकूरादेवेतिनिश्चितम् ॥
रूक्षस्तथोष्णोनिष्ठीवपुरीषोत्सर्जनादिषु ।
पुंसांचरुधिरस्त्रावोतस्यशांतिप्रदायकः ॥
अर्शोघ्नश्चकफश्वासकासकृमिहरस्तथा ।
कफहन्याज्वरहरोजीर्णातीसारनाशकः ॥
प्लीहरोगप्रशमनोहृत्कंपपरिहारकृत् ।
हृद्रोगशांतिकारीस्यात्तथामांसलदेहिनः ॥
कृशताकारकस्यापिसेवितोमनुजैःसदा ।
कर्णशूलनिवृत्तिश्चधूपेनास्यप्रजायते ॥
तैलयोगेनकर्णेतुप्रक्षिप्तंयदिजायते ।
सद्योबाधिर्यहारीस्यात्कर्णशूलहरोऽपिच ॥
श्लेष्मरोगेशर्करयासहितस्यनिषेवणात् ।
सद्यःश्लेष्मोपशमनंजायतेप्राणिनांसदा ॥
दंतरोगेसमुत्पन्नेचूर्णितस्यास्यमज्जनात् ।
दंतानांदार्ढ्यमतुलंपीडाहानिश्चजायते ॥
नेत्रांजनेनतस्यैवनेत्रजालकमेवयत् ।
पक्ष्मप्रपतनंनेत्रप्रांतस्थौल्यादिकंचयत् ॥
तत्सर्वंशांतिमाप्नोतिलेपनेनतथानृणाम् ।
असाध्येषुव्रणेष्वस्यकर्णप्रक्षेपमात्रतः ॥
व्रणानांशुष्कतासद्योभवतीतिविनिश्चितम् ।
तैलयुक्तंचतच्चूर्णंदद्रुव्रणभगंदरान् ॥
सद्योविनाशयेत्पुंसामितिवैद्यावदंतिहि ।
तन्निरीक्ष्यंबुधजनैर्यन्मयात्रसमीरितम् ॥

अर्थ-सुंद्रस जो एक प्रकारका गोद है उसको किसी किसी देशके मनुष्य चंद्ररस कहते हैं । वह कपूरकी मणिके समान होता है, इसमें अद्भुतशक्ति यह है कि इसके नजीक तिनकेको रखिये तो जैसे चुंबक लोहको खींच लेताहै उसी प्रकार यह तृणको खींचता है । गुण । रूक्ष, गरम, थूंकना, मलको निकालना, तथा निकलते हुए खूनके रोकने वाला है । बवासीर, कफ, श्वास, खांसी, कृमि, ज्वर, जीर्णातिसार, प्लीहरोग, हृदयका कांपना नाश करै है । रत्त पुष्टदेह वालोंको कृश करै, कानमें धूनी देनेसे कानकी पीडा नष्ट करै । तैलमें मिलायके कानमें डाले तत्काल बेहरेपनेको दूर करै, और कानकी पीडा नष्ट होय । कफके रोगमें मिश्रीके साथ सेवन करनेसे कफ शांति होय । इसके चूर्णको दांतोंमें मंजन करनेसे दां पुख्ता हो और पीडा दूर होय । नेत्रोंमें आंजनेसे नेत्रका जाला, पलकके बालोंका गिरना और नेत्रके औरपासका मोटा हो जाना शांति होय । यही गु इसके लेप करनेसे होय । असाध्यव्रण (घावों)में इसके चूर्णको बुरक देनेसे तत्काल घाव सूख जावे । तेलके साथ इसके चूर्णको लगावे तो दाद व्रण भगंदर को तत्काल नष्ट करै । इन सब बातोंकी वैद्यको परीक्षा जरूर करनी चाहिये ।

समाक.

समाकसंज्ञकंनामपदार्थद्वयबोधकम् ।
एकंफलविशेषस्यात्पारसीकसमुद्भवः ॥
तिंतिडीकफलंसूक्ष्मफलमम्लरसंभवेत् ।
स्वादुःप्ररोचकंचापिपाचकंपित्तहारकम् ॥
संग्राहीचतथावांतिमहत्संभावनाहरः ।
यूनानीवैद्यकेचास्यप्रचारोबहुदृश्यते ॥
औषध्यादिप्रयोगेषुविज्ञेयोबुद्धिमत्तरैः ।

अर्थ-समाक संज्ञक पदार्थ दो प्रकारका है, एक तो पारसदेशमें होनेवाला फल होता है । यह इमलीके फलसे कुछ छोटा और खट्टे रसवाला होय है । स्वादिष्ट, रुचिकारी, पाचक, पित्तहरण कर्त्ता, दस्तबद्धक, बहुत वमन (रद्द) का होना दूर करै । यूनानी वैद्यकमें इसका औषधादिमें बहुत प्रचार देखा जाय है ।

दूसरा समाक.

द्वितीयस्तुपदार्थोऽसौदृढपाषाणरूपभृत् ।
तथैवारुणवर्णोऽपिश्वेतबिन्दुभिरंकितः ॥
कठोरतरएवातोविज्ञैस्तस्याविधीयते ।
खल्लपेषणपाषाणंमणिमुक्ताफलस्यच ॥
विधातुपेषणंतत्रघर्षणंनास्यजायते ।

अर्थ-दूसरा पदार्थ जो समाक कहाता है वह

पाषाण (पत्थर) और लालरंगका होय है और सफेद बूंदके छींटे होते है । यह अतीव ...नेके कारण इसके खरल, सिल, मूसला आ... बनाए जाते है इसके खरलमें पद्मरागआदि मणि ...सनेसे तोलमें ठीक उतरते है खरलका पाष... नहीं घिसता ।

सूरंजान.

...ामकंवस्तुयूनानीवैद्यकेस्मृतम् ।
...ीपारसीकदेशेशैलेषुजायते ॥
...ायधरण्यांचतत्रकंदविशेषकम् ।
...स्तिमात्रमेतस्यवृक्षोभवतिचोन्नतम् ॥
...नयामेवचास्यपुष्पाणिप्रभवंतिहि ।
...सूक्ष्मकंदश्चस्वरूपंचास्यवर्णितम् ॥
...ालशुनश्वेतवर्णवद्वर्णसंयुतम् ।
...विधमाख्यातंमधुरंकटुकंतथा ॥
...भक्षणेग्राह्योद्वितीयस्तैललेपने ।
...पस्तथारूक्षोरोचकःकफवातनुत् ॥
...ास्थिजपीडायांशोथेलेपनतःस्फुटम् ।
...कोथास्यतैलयोगेनांगविमर्दनात् ॥
...ाणेवातजातपीडाशांतिर्भवेद्ध्रुवम् ।
...वघृतेनास्यकृतेलेपेऽर्शस्यच ॥
...ंभूतपीडायाःप्रशमश्चोपजायते ।
...किंचित्कालंचूर्णमेतस्यशुंठ्या-
...सार्द्धंपीतंदुग्धयोगेनपुंसाम् ॥
...वाजीभावेकारणंवास्यपुष्पा-
...घ्राणंवातश्लेष्ममूर्द्धव्यथाहृत् ॥
...नयोगतःप्रभवतिप्रायेणपुंसांसदा ।
...दुविनाशनंचसुतरांग्रंथिचातर्व्य-
थाम् ॥
...गगवातसंभवगुरुक्लेशश्चसर्वेतथा ।
...ःप्रशमंप्रयांतिचमहारोगाइतिख्या-
यते ॥

...सूरंजान जो वस्तु यूनानी वैद्यकमें कही है ...देशके पर्वतोंमें होती है । यह जलप्राय पृथ्वीमें और इसका कंद होता है । वृक्ष एक बिलस्त ऊंचा होय है; और इसके फूल नालमेंही होते है। इसका कंद कठोर छोटा होता है । जैसा पोतीया लहसन सफेद होय है उसीके माफिक होता है, यह दो प्रकारका होता है एक मीठा और दूसरा कड़वा, तहां मीठा सूरंजान वर्त्तावमें आता है और दूसरा तेलादि लेपनमें वर्त्ता जाय है। इसका पीला फूल होता है रूखा, रोचक, कफवातनाशक है। गरम, हड्डीकी पीडा, सूजनमें लेप करनेसे पीडा शांति होय। तथा तेल मिलायके लेप करे तो वादीकी पीडा शांति होय । बकरीके घीसे लेप करे तो बवासीरकी पीडा नष्ट होय । कुछ काल पर्यंत इसके चूर्णको सौंठके साथ मिलाय दूधसे पीवे तो वाजीकरण होय । इसके फूलको सूंघनेसे वात कफजन्य मस्तक पीडा नष्ट होय । इसके सेवनसे मनुष्योंके पांडु,प्लीह, गांठकी पीडा, रिंगणवातकी दुःसह पीडा तथा सर्ववादीके घोररोग नष्ट होय ।

हब्बुलखिजरा.

पारसेतत्समुत्पत्तिर्भवेत्फलविशेषकः ।
धान्यकाकारसदृशहरितत्वकृतथापुनः ॥
स्निग्धमज्जामयश्चायंपौष्टिकौषधियोगयुक् ।
तथारूक्षश्चोष्णगुणःप्रथितःपृथिवीतले ॥
कासश्वासाध्मानरोगनाशकःपरिकीर्त्तितः ।
अर्द्धांगवातवदनवक्रतामयनाशकः ॥
उदरव्याधिहरणेकारणंपरमंमतम् ।
स्त्रीपुष्पस्यावरोधघ्नस्तथार्शोरुधिरापहः ॥
मूत्रावरोधःपांडुत्वंनाशकोकीर्त्यतेजनैः ।
भुक्तान्नपाचकश्चापिस्वयंदुर्जरपाचनः ॥
तृषाविवर्द्धकश्चापिपित्तकृत्कामदीपनः ।
गलरोगनिरासेचप्रथितोभक्षणेकृते ॥
शिरकायोगतश्चापिविषभक्षणदोषहृत् ।
हब्बुलखिजरस्यपताहक्गुणदोषोनिरूपितः॥

अर्थ-हब्बुलखिजरा यह पारसदेशमें होता है, धनियेके सदृश हरीत्वचावाला, इसकी मज्जा चिकनी होनेसे पुष्टिकारी औषधोंके उपयोगी है रूक्ष गरम है। गुण । खांसी, श्वास, अफरा, अर्द्धांगवात, मुखका टेढापन (लकवा), उदरव्याधि और स्त्रियोंके पुष्पाव-

रोषको नष्ट करे है । बवासीरके खून गिरनेको रोके मूत्ररोग और पीलियाको नष्ट करै । भोजन करे अन्नको पचावे, परतु आप पचनेमें दुर्जर है । प्यास लगावे पित्त करै और कामवर्द्धक है । गलरोगको नष्ट करै सिरकाके साथ भक्षण करनेसे विषमक्षण दोषको हरण करै । यह हब्बुलखिजराके गुणदोष कहे गए।

हब्बुलास

हब्बुल्लासइतिख्यातोयूनानीवैद्यकेतुय ।
सोयफलविशेष स्यात्पारसीदेशसभव ॥
एतद्वृक्षस्यनामोपिख्यातआसइतीवाहि ।
पारसीकजभाषायामूरदनाम्नासुविश्रुत ॥
दाडिमीसदृशोवृक्ष किंतुसूक्ष्मच्छदोभवेत् ।
श्यामबीजयुत.किंचिद्बिजेषुचसुगधिता ॥
शीतलोष्णगुणग्राहीप्रथित सर्वतोभवेत् ।
एतत्पचागसभूतगुणा सर्वेसमानता ॥
परंतुबीजसभूतगुणाज्ञेयाविशेषका ।
बाह्याभ्यतरसंजातरुधिरस्रावणस्यच ॥
प्रतिबंधककारीचहितोऽतीसारवार
हृदयानंदकरस्तद्वदश्मरीविनिवर्त्तक
बीयोनिपुष्पाधिक्यस्यनिवर्त्तकव
विषदोषापहारीचवृश्चिकादेर्विषेट

अर्थ हब्बुल्लास नामसे जो वस्तु यूनानी वह एक प्रकारका फल है । पारशदेशमें उत्प इस वृक्षका नाम आस विख्यात है, औ षामें मूरद नामसे बोलते है । यह अनारके वृक्ष होता है, परतु डाली अनारकी डाल होती है । बीज काले रगके और सुगधदार गुण । शीतल और गरम गुणग्रहण करने यद्यपि इसके पचांगमें समान गुण है, तथापि कुछ अधिक है । बाहर और भीतरी रुधिरके राकता है, अतिसार नष्ट करै । हृदयानदकर्ता नष्ट करै, स्त्रीकी योनिसे अधिक रुधिर दूर करै । विषदोषका अपहरणकर्ता है जै आदि जाव है इनके विषको नष्ट करै है ।

समाप्तोऽयं परिशिष्ट भागः